



मुद्रक—पं० बिहारीलाल शुक्ल
शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस,
लायनऊ

भूमिका:

श्री गणेशाय नमः ॥ तीर्थ शब्द का सामान्य अर्थ होता है कि जिसके द्वारा पापादि से तेरा जाता है अर्थात् पापों के अथवा अज्ञानादि के फल रूप दुःख सागर में डूबने से बचा जाय। वह तीर्थ शब्द वाच्य कहलाता है। तीर्थ शब्द के अनेक अर्थ होते हैं अर्थात् तीर्थ बहु शब्द वाच्य है। यथा—अङ्गुष्ठ मूलस्य तले ब्राह्म तीर्थ प्रवृत्ते रुयनं गुली मूलेऽग्रे देवं पित्र्यं तयो रधः ॥ मनु ॥ याज्ञवल्क्यस्मृति में भी लिखा है कनिष्ठ देशिन्यं गुष्ट मूला न्यमं करस्य च प्रजाप्रति तीर्थं। और अमभाग में देव तीर्थ और प्रदेशिनी तर्जनी तथा अङ्गुष्ठ के बीच में पितृ तीर्थ कहलाता है। अतः इन इन स्थानों से ही ब्रह्मा आदि देवताओं के लिये तर्पणादि का जल छोड़ना चाहिये शंखोपासन आदि के समय ब्राह्म तीर्थ से आचमन करना चाहिये प्राजापत्य तीर्थ काशी नाम ऋषि तीर्थ है। क्योंकि कनिष्ठिका के मूल पृथ्वी अन्तरिक्ष स्वर्ग में साढ़े तीन कोटि तीर्थ हैं। परन्तु यहां तो वर्णनीय केदारादि पृथ्वी के ही तीर्थ स्थावर मुख्य हैं। इसका कारण यह है कि जिस प्रकार रस रुचि-रादि सात धातुओं वाले एक ही शरीर में कोई अंग पवित्र कोई मध्यम कोई निकृष्ट माना जाता है। यथा—ऊर्ध्व नाभेर्मध्य तर पुरुषः परि कीर्तितः परमात्मेऽधतमस्त्वस्यमुख मुक्त तपं भुवाः। मनु॥ अतएव पृथ्वी का कोई खास स्थान अथवा जलाशय अति पवित्र माना जाना है। अतः वही मुख्य तीर्थ कहलाता है। पृथ्वी में कहीं पापाण गृत्ति का आदि अंशों में सत्य गुणी प्रभाव है ॥ और कहीं जल में स्वच्छता पवित्रता आदि गुण हैं इसीलिये इन भूमिस्व केदारादि तीर्थों में जप तप दान स्नानं तर्पण पिण्ड आहुत पटु रात्रि निवसादि रेतोश्कगन मय विनू करने का बड़ा महात्म शास्त्रों में वर्णित है। अर्थात् मत्वादि रूप धर्मों का आचरण करने से तीर्थ में ही (यात्री) उत्तम फल को पाता है। और जन्म जन्मान्तरीय कर्म बन्धनों को दूर कर निर्वाणपद (मोक्ष) को भी प्राप्त कर लेता है। गृहस्थों के लिये तीर्थाटन तीर्थ सेवन ही एक ऐसा शान्ति प्रद मार्ग है जिसमें जाकर वम क्षण के लिये अपने सभी भ्रमों को भूलकर परमात्मा के चिन्तन में लग लग जाना है। तथा ममंसादि के कारण सत्य बोधना संयम पर रहना अहंजिरा भगवद् भक्ति

में लौन होजाना दया शीलता क्षमता दानता आदि का होना सुलभ होजाता है । जिससे वह तीर्थ यात्री अपने सर्व प्रकार के पापों से तैर कर इस संसार सागर से भी पार होकर अन्त में स्वर्ग मुख का अनुभव करने लगता है । इन्हीं तीर्थों में मनुष्य के लिये विशेष सद्य लाभालिख फल कहे गये हैं । इसी कारण ज्ञानि महर्षियों ने तथा अवतारी पुरुषों ने तीर्थों का ज्ञान महात्म स्थापित किया है । अतः एव पूर्व काल में ही विरक्त ज्ञानी पुरुष वही केदार काशी आदि तीर्थों में यागज्ञा (हरद्वार) के एकान्त स्थान में निवास करते हैं । इन विरक्त ज्ञानी तथा उत्तम कोटि के धार्मिकों से भिन्न मध्यम कोटिके साधारण मनुष्य बहुत से हैं । उन सब के लिये तीर्थ सेवन सबसे अधिकतर उपयोगी है जिसका होना पूर्व पुराण के अनुसार स्थिर है । ब्रह्म पुराण में लिखा है कि—*यो य कश्चिन् तीर्थं यात्रां गच्छेत् । सु सयतः स च पूर्वं गृहे स्वे कृतो वास शुचिर् प्रमत्त सं पूजयेद् भक्ति रसाद् गणेशम् ॥ देवान् पितॄन् ब्राह्मणान् पूजयेच्च एवं कुर्वतस्तस्य तीर्थे* यदुक्त फल तस्या ज्ञात्र सन्देहं एवं इत्यादि अनेक शास्त्रों से कथित तीर्थ सम्बन्धी कर्त्तव्य कर्मों की विहित ता होने से तदनुसार तीर्थ यात्रा करने से मुख्य शुभ फल मिलता है । अतः में अपनाभूत पूष लिखित तीर्थ कर्म पद्धति की पूर्व त्रुटियों को न्यूनाधिक रूप से तथा उक्त पद्धति के प्रथम संस्करण के प्रकाशक महोदय ने पद्धति लेखक के अलिखित प्रमाणों से भूमिका लेखक के साथ अभिय शब्दों का उल्लेख किया उसके लिये उक्त पद्धति के लेखक को अमान्य हुये । जिसके कारण उक्त महोदय की आज्ञा का पालन कर पूर्व पद्धति की सगरी त्रुटियों को न्यूनाधिक रूप से तथा (अवशिष्ट कर्मों) विधः इस द्वितीय संस्करण तीर्थ विधान नामक पद्धति को निम्नतकिण जो सभी पुरोहिताई कर्म कराने वालों के लिये अत्यन्त ही उपयोगी रहेगी । पद्धति का प्रकाशित करने का अधिकार सम्पन्नता की ही रहेगा यद्यपि आजकल तीर्थों में प्रचलित कर्मों के करने वाली बहुत पद्धतियाँ प्रकाशित हो गई हैं और हो रही हैं किन्तु ये कोई तो विरल और कोई सन्निवृत्त होने के कारण कर्म कराने में नून पुरोहितादियों को विशेष मौक्य नहीं प्रतीत हं ता है और अब इस पद्धति में मुझे पूर्ण विश्वास है कि सभी कर्म कराने वाले पुरोहितों की यह पठनाईयाँ दूर काँदी गई यदि संग्रह करते हुये तथा प्रेश द्वारा भी त्रुटियाँ रह गई हों तो निदजन सूचित कर समा करेंगे । यहां पर

अत्यन्त रोद से लिखना पड़ता है कि स्वर्गवाशी पं० रवीन्द्र शर्मा पोस्ती तथा स्वर्गवाशी पं० तारादत्त जी शर्मा कुर्माञ्चली इन पितरों की कृपा से मुझे कुर्माञ्चल देशीय तथा अन्य देशीय पद्धति अद्वय-यनार्थ प्राप्त हुई जिनके द्वारा मुझे इस विषय पर राष्ट्र सेवा कुछ ही अंशों पर करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। और अपने मान्नीय आठ सयाना अट्टारह बीशी पञ्च पञ्चा मण्डनी का सादर अभिवादन करते हुये अपना शुभ शौभाग्य प्रकट करता हूँ कि जिनके द्वारा श्री देशरनाथ संस्कृत विद्यालय शोणित पुर में स्थापित होकर जिसके सुमंचालक तथा शिलान्यास स्वर्गीय पण्डित नारायणदत्त शर्मा शास्त्री लाल मोहरिया तथा स्व० पं० जगन्नाथ शर्मा बगवाड़ी तथा स्व० पं० विहारीलाल शर्मा सेमवाल तथा पं० रामकृष्ण जी शर्मा पोस्ती जी द्वारा हुआ इन्हीं महर्षियों की अशीम कृपाओं से इस अन्धकार मय जगत् में अपनी पूर्व संस्कृती का स्वप्न देखा जिसके फल स्वरूप ग्रन्थ संप्रद कर्ता के सम्मतीय तथा संशोधक कविरत्न पं० भोलादत्त शर्मा शास्त्री पं० हरिशंकर शर्मा त्रिपाठी व्याकरणार्थ तथा पं० पीताम्बरदत्त शर्मा सेमवाल शास्त्री तथा पं० रघुनाथ प्रसाद शर्मा पुरोहित शास्त्री जी द्वारा हुवा। तथा श्रीमान् पं० पुरुषोत्तमदत्त जी शर्मा बगवाड़ी बी० ये यल् यल् बी० तथा पं० शिव प्रसाद जी शर्मा बगवाड़ी बी० ये यल् एल् बी० पं० गुणानन्द शर्मा खाली बी० पं० तथा पं० मदिमानन्द जी शर्मा मेठानी शास्त्री तथा पं० तुलशीराम जी शर्मा पोस्ती तथा पं० दिवाकर दत्त जी शर्मा नेमवाल तथा पं० स्यामादत्त जी शर्मा पुरोहित प्रवृत्ति आदि शज्जनों ने अनेक प्रकार से ग्रन्थ पुराणों द्वारा तथा विषय सूचनाओं द्वारा सहायता पहुंचाकर अनुगृहीत किया। तथा ग्रन्थ संप्रद कर्ता के सर्वोच्च सहायक श्रीमान् डा० नरेन्द्र सिंह भण्डारी एम० ए० महोदय ने श्री पं० विहारी लाल शर्मा शुक्ला प्रेसिडेंट प्रेस लखनऊ द्वारा मुद्रित कराकर सफल परिश्रम किया क्योंकि आप उपरोक्त सज्जनों ने अपना २ अमूल्य समय नष्ट कर और मेरे इस पूज्य पितरों के स्मृति उपलब्ध कार्य पर महान् कृपा की जिसका कि मैं आभारी हूँ। शुभंभूयात् ॥ गच्छतः स्वर्गनकरापि भवतेव प्रमादतः। हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥ इति शम् ॥

लेखक-प्रचारक—

पं० विरवनाथ शर्मा लालमोहरिया

पुरोहित श्री देशरनाथ जी गढ़वाल उत्तर प्रदेश

तीर्थ विधान पद्धतिः

(ग्रंथ संशोधन कर्तुः स नम्र किञ्चिन्न वेदनम्)

अयि हृद्या भावुना पाठक महोदयाः इत्थं प्रवृत्तो मम चेतसि समु
देति महान् हर्षोन्नाम । यदिय तीर्थं विधान पद्धतिं वाञ्छयेय
पं० विश्वनाथ शर्मण लालमोहरियो पाह्येन शोणित पुर गुप्तकाशी
गढ़वाल मण्डल वास्तव्येन समस्त तीर्थं कर्मा नुरागिणां पुरोहिता
नां कृते तीर्थं कर्मतया देवी पूजनादौ नवरात्र विधाना दिना द्वितीय
संस्करणे किञ्चिन्मात्र वृद्धितया विविधा गम पुराण ग्रन्थेभ्य स्तो-
त्रादि कर्म सम्पादनाय संगृह्य स्वर्गीय स्वोय कनिष्ठ पितृव्य श्री के०
संस्कृत विद्यालयस्य प्रथम संस्थापक पण्डित श्री नारायण दत्त
शास्त्रिणां स्मृति, उपनये । तीर्थं विधान पद्धतिः मद्गन्ति के च सं
शोधनाय प्रवृत्तासीन् । मयापिहि नरकर कमल स्वर्णाक्षर विनिहित
तीर्थं विधान सरणि रासादितो पलभ्या द्यो पान्त यथा मति सं
शोयिता तदर्थं मेपदयालु मंहानुभावो भूयो भूयो धन्य वादाहः ।
यतो लोको पकाराय महता श्रेमेण विरच्य प्रकाश्यं नीता । अतो
ग्रन्थ प्रचारायः तीर्थं कर्म प्रवर्तकाः पुरोहिता अपरे कर्म काण्ड
विशेषज्ञाः सञ्जना बहुशो विनि वेदन्ते यत्किन्तु ग्रन्थोऽयं समस्त
पाठशाला (विद्यालयेषु) सकल छात्राणां पाठय पुस्तकेषु निवाय
मर्तो पठ्यये प्रचारणीय स्याद्वित कर उपयोगी च प्रतीयतेति
निवेदनम् ।

भामर्कः—कविरत्न पं० भोला दत्त शास्त्री थाला भूतपूर्व
अभ्यापक माछाडौ संस्कृत पाठशाला मीर घाट काशी बनारस ।

श्री के० संस्कृत विद्यालय शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल
श्री रघुनाथ कीर्ति संस्कृत विद्यालय देवभ्याग गढ़वाल ।

तीर्थ विधान पद्धतिः

श्री हरिशंकर त्रिपाठी साहित्य केशरी व्याकरणाचार्य —
श्रीकैदारनाथ संस्कृत विद्यालय प्रधानाध्यापक महोदयानां

सम्मतिः

अद्य महान् प्रमोदाऽऽमरोऽयं यन्मयेयं लेखनी तत्र सम्मति दानाय प्रचार्यते । यद्यपि एतावन्तं कालं सर्वे पुरोहिता विद्वांसः साभिलाषाः सोत्कण्ठाश्चासन् ।

मन्ये तीर्थं कर्म प्रवर्त्तकानां पुरोहितानां पाठक महोदयानां विदुषां चकृते नतादृगन्यत्कर्म काण्ड पुस्तकं यथा बहुपकारकं यथा विविध पूजा समलङ्घ्यतं । तीर्थ विधान पद्धति, नामकं पुस्तकं मयाः दृष्टं तत्र काल प्रमायेण कर्म काण्ड पद्धतिं लुप्तं प्रायता मुपगता । सम्प्रतिमहती दुःख स्यामालोच्य लोकस्य महो पकाराय गढ़वाल मण्डलान्तर्गत गुप्त-काशि पार्वं वर्त्ति-शोणितपुर ग्राम वास्तव्य विद्या रसिक पण्डित श्री विश्वनाथ शर्मा बाजपेय लालमोहरिया, इत्यु पनामकेन नेपालराज्य (राष्ट्र) पुरोहितेन विरचित मतोव मनोहरं तीर्थ विधान पद्धति नामकं पुस्तकं वर्तते श्रौत—स्मार्त विधिना कर्मकाण्डो पयोगि विविध विषय मन्त्रिवेश नमनोहरं विधिवन्व्यास-प्रतिज्ञा-मन्त्र भेद पुरस्तरंज्य वितन्यते । एतादृशं ग्रन्थ रत्नं सम्यगा लोच्य ब्रह्मानन्दः समजनि । अनेक ग्रन्थतः भवद्भिर्महता प्रयत्नेन सारमुद धृत्य प्रकाश्यते । स्थले-स्थले समुपयुक्त टिप्पण्यादिभिः सर्वेषामन्तु नूनमेव बहुप कृतम् । मेयं महतीन्यूनता संस्करणे नैतेन पूरितेति । संस्करण मिदं समेषामयस्य मेवो पाठेयतां भजते । वस्तुतः परिचाष्यन् महोदयैः कर्मकाण्डपरीक्षामु-पन्योऽयं नियोजितः स्याच्छिं नून मेव भारतीयानां महानुप कारोभवेत् । इति मदीयो विश्वासः । सर्वेभ्यः ग्रन्थः संप्रायः प्रचारणोपयन् । इति संन्यास्यं विरामि ॥

जाताः पूर्वं मनेक शाय कुराला विग भविष्यन्ति,
मन्तोत्प्रेय तथापि कैरचन युधै लोको पकार क्षमा ।
इदं तीर्थ विधान पद्धति रिचं यन्नेन नो निर्मिता ।
धन्याः मन्तु मुदा नृता विरचिता श्री विश्वनाथेनया ॥ १ ॥

पण्डित श्री हरिशंकर शर्मा त्रिपाठी

मा० वैरागी—ध्यातृणां ध्यातृन् ।

तीर्थ विधान पद्धति:

आर्य वैदिक धर्म समुपास का विद्वांसः । भारतेऽस्मिन् विविधानि पुस्तकानि सन्ति कानि चितु कार्यं सम्पादने विपमानिकानिचितु सरलानि तीर्थेषु गत्वा सर्वे तीर्थं कर्म कर्तारः स्य कार्याणो साव यन्ति कार्याणीतु येन केनाप्यु पायेन साध्यन्ते एव किन्तु वैदिक कर्म कर्तृणां सहृदया नां कर्णं कुहरिषु इदं तिरोहितं नस्यात् यद् वाजपेय वंशा उपमन्यगोत्रा वर्तंसः पं० विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया महोदय संगृहितेमां तीर्थ-विधान पद्धति मवलोक्य नितरां मोदते मन्मनः यदि पूर्वा पेक्ष्यन्यून विषयेभ्यः सम्पूरिता निखिल कर्म कर्तृणाञ्च सौख्याय वर्धिता अतीयां पयोगी च वर्तते तीर्थेषु वा अन्य पर्व वसरेषु यदाकदापि अनया पद्धत्यानुसारेण पूजा पाठ पिण्ड तर्पणादि कर्म कारयितुं अविज्ञो पिविज्ञो भवति सर्वेषां सुपकाराय च अति परि श्रेमेण संगृहिताः अतः धन्य वादा र्हाः इमे महानु भावाः लुप्त वैदिक धर्मस्य महती रक्षा कृता सर्वे तीर्थ पुरोहिताः तथा चान्य पुरोहिताः पद्धति संग्रहं कर्तुं कसाहं वर्धन्ताम् बहु फलव्य यितेनकिम् इति शम् ॥

श्री मत्स्य पं० पीताम्बर दत्त शर्मा शास्त्री

सेमवाल द्वि० अ० श्री के० संस्कृत विद्यालय

शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल उ० प्रदेश

श्री मान् लालमोहरियाजी मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप तीर्थविधान पद्धति प्रकाशित करने जा रहे हैं यद्यपि आप अनेक शास्त्र विशारद मेवात्री पंडित हैं ही तथापि कर्मकान्ड की दृष्टी से आपका स्थान विशेष ऊँचा है क्योंकि कर्मकान्ड के स्तर को उन्नत करनेके हेतु आप जो अनवरत प्रयत्नशील रहते हैं फल स्वप्न तीर्थ कर्म पद्धति आदि प्रयाप्त साक्षी हैं, यहाँ यह कहना आवश्यक होगा कि समय २ पर आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों ने किन्तु महान् श्रुतियों की पूर्ती की है विशेषतः तीर्थ पुरोहित प्राज्ञाणां के लिए आपकी यह महान् देन है, अस्तु

आज भी मुझे पूर्ण आशा तथा विश्वास है भगवदनुग्रहसे आपकी तीर्थविधानपद्धति अवरय ही सबके लिए उपयोगी सिद्ध बनकर कर्मकान्ड जगत्में चूड़ामणि की तरह देदीप्यमान होकर आपके मन कमल को विरजित करने के लिए मूर्धन्य रूप धारण करेगी भगवान् हमारी आशा को मण्डल करें यही हमारी कामना है।

भवदीय—

दि: १-४. ५४ }

रघुनाथप्रसाद पुरोहित शास्त्री

मीना मणिग्राम पो० गुप्तकाशी, जिला गढ़वाल पीड़ी

विषयाऽनुक्रमणिका:

विषय संख्या	पृष्ठ संख्या	विषय संख्या	पृष्ठ संख्या
१ मन्त्रलोधारणम्	१	२६ अथ शिव महिम्न स्तो०	१२६
२ अथ प्रातः स्मरणं सुक्तम्	१	३० अथ वेङ्गो पूजनम्	१३२
३ गणेश स्तुतिः	१	३१ अथ देव्या आर्तिः-वेङ्गोक्त	१३४
४ नमस्काराः	२	३२ अथ देव्या अथर्वशीर्षम्	१३५
५ हेमाद्रित्त स्नान सङ्कल्पः	२	३३ अथ हवन विधिः	१३७
६ अथ नवादौ नित्य स्नान प्र०	७	३४ अथ सूर्योपस्थान प्रयोगः	१७०
७ गङ्गा पूजनम्	१२	३५ अथ प्रायश्चित्तगोदान प्र	१७५
८ अथस्वस्ति वाचनम्	१४	३६ सर्व प्रायश्चित्तगोदान सं०	१७७
९ गणेश पूजनम्	१५	३७ व्रत प्रतिष्ठा गोदान सं०	१७७
१० अथभूत शुद्धिः	२२	३८ पापा पनोद धेनु दानम्	१७८
११ अथ गणेशाथर्वशीर्षम्	२३	३९ श्रृङ्गा पनोद धेनुदानम्	१७८
१२ अथ सङ्कल्पम्	२५	४० अथ मोक्षधेनुदानम्	१७५
१३ दीपकलशपुर्याह वाचनम्	२५	४१ तिल दान विधिः	१७६
१४ नान्नीमुग्न आहुति विधिः	२०	४२ उत्कान्ति धेनु दानः	१७६
१५ अथ गिर्य आहुति प्रयोग	४०	४३ अथ दशदान संकल्पः	१७६
१६ अथतीर्थ आहुति विधिः	४१	४४ अथ गोदाने विशेषः	१८५
१७ अथ शय्यादानम्	४६	४५ अथ ब्रह्मव्रत प्रयोगः	१८६
१८ अथ भूमिदानम्	४७	४६ अथ भायली प्रयोगः	१८८
१९ पञ्चोदित आहुति विधि	३८	४७ अथोत्सर्ग तर्पणम्	१८६
२० अथ पावण आहुति प्रयोग	४६	४८ वशानां व्रतम्	१८७
२१ अथ गुप्त वारी दान प्र०	७४	४९ अथ श्रुति आहुति	२०५
२२ अथ शिवायर्व शीर्षम्	७६	५० अथोपवर्ग प्रयोगः	२०६
२३ अथ शिवा परावृत्तमापनालो०	७०	५१ अथ तीर्थ भद्र विधिः	२१०
२४ अथ प्राण प्रतिष्ठाः	८२	५२ अथ पावर्णा तीर्थ आहुति	२१०
२५ अथ महासुप्तपूजनप्रमाणम्	८४	५३ भीमहृष्ट प्रवर्णम्	२११
२६ अथ शिवपूजा पद्धतिः	८४	५४ अथहेमाद्रोमाहृष्टप्रमाणम्	२२४
२७ अथ कृष्णभिक्षा प्रयोग	८४	५५ अथ शृङ्गोनी श्रृंषम्	२२७
२८ अथ भीमशिव शरणा नाम	११६	५६ अथ तर्पण प्रयोग	२२८

विषयाऽनुक्रमणिका:

विषय संख्या	पृष्ठ संख्या	विषय संख्या	पृष्ठ संख्या
५७ अथ श्री चक्र पूजनम्	२३५	६६ अथ श्रीशारदाश्लीय नव०	२७८
५८ श्रीचक्र पूजन यंत्रम्	२३७	७० अथ श्री दुर्गा सप्तशती प्र०	२७८
५९ पात्र स्थानम्	२४०	७१ श्री सर्वतो भद्र मण्डलम्	२७८
६० पीठ पूजा माह	३४८	७२ अथ महा महाष्टमीव्रत प्र०	३२८
६१ अथ उपचार पूजनम्	२३६	७४ अथ कुमारी पूजनम्	३२६
६२ अथ मन् चण्डी विधानम्	२६७	७५ अथ श्रीविष्णु अनन्तपू०	३३०
६३ अथ त्रिमूर्ति पूजनम्	२६८	७६ अथ श्री पावती (माघ) पू०	३५२
६४ अथ श्री बटुरु पूजनम्	२६६	७७ अथ श्री रेवतीकपान विधि	३६३
६५ अथ चण्डीविधे प्रकार मा०	२६६	७८ अथ अभिषेक विधि:	३६४
६६ श्री देव्या आर्ति:	२७०	७९ अथ आशीर्वाद मन्त्रा	३६४
६७ अथ श्री अग्नि स्थापनम्	२७५	८० अथ वंशाष्टका:	३६४
६८ अथ श्री अग्नि पूजनम्	२७६	८१ समाप्त:	३६५

श्री तीर्थ विधान पद्धत्याऽनुक्रमणिका:

विद्वज्जनानां अभिप्रायाः

नोट—पुस्तक के बृहद् हो जाने के कारण वेद मंत्र भी छूटते हैं। अक्षरों में
 दिया गया है समा ॥

श्री केदारनाथजी
कार्यालय श्री केदारनाथ मन्दिर कमेटी

श्री माननीय प० जी

सादर अभिवादन

आपकी तीर्थ विधान पद्धति की पुस्तक प्राप्त हुई धन्यवाद । पुस्तक बहुत सुन्दर है आपको इस प्रयास के लिये बधाई है, यहाँ तीर्थ विधान पद्धति की सभी ची आपने उसे पूरा कर दिया ।

नारायणदत्त बहुगुणा
सेक्रेटरी श्री केदारनाथ
मन्दिर, कमेटी
३१-५-५४

श्री कालीमाताजी
कार्यालय मंदिर श्री कालीमठ गढ़वाल

वत्सलवान् श्रीमान् पं० जी सादर प्रणाम !

आज आपकी तीर्थ विधान पद्धति की १ पुस्तक उपलब्ध हुई । सधन्यवाद ! पुस्तक बहुत सुचारु हैं आपने इस प्रयास के लिए बधाई है । यहा तीर्थ विधान पद्धति की न्यूनता ची आपने उसे पूरा कर दिया ।

नारायणसिंह राना मठ मठापति
मंदिर कालीमठ
६-६-५४

प्रेषक—मैनेजर श्री केदारनाथ संस्कृत विद्यालय
शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल ।

प्रापक—श्री विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया मौजा
शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल

महोदय आपकी लिखी हुई तीर्थ विधान पद्धति विद्यालय की उपलब्ध
हुई पुस्तक प्रत्येक कर्म करने के लिये उपयुक्त एवं प्रशसनीय है ।

अतः विद्यालय की ओर से आपको हार्दिक धन्यवाद है आपकी शुभ
कामनाओं की सफलता चाहते हैं ।

मैनेजर राजनारायण
श्री केदारनाथ संस्कृत विद्यालय
शोणितपुर, पो० औ० गुप्तकाशी
गढ़वाल

दिनांक १६ २-५५

श्रीमान् पं० विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया
ग्राम—शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल

आपके द्वारा प्रकाशित “तीर्थविधान पद्धति” नामक पुस्तक प्राप्त
हुई । इसको देखने से इस समय जो कर्मकान्ध में आवश्यकता थी
उसका आपने इस पुस्तक में पूर्ण संग्रह किया । पुस्तक अत्यन्त उपयोगी
है । इसके लिये आपको हार्दिक धन्यवाद ।

मिपक् चूडामणि प० प्रेमवल्लभ शास्त्री
रजिस्टर्ड वैद्य
पो० सिगाही (खीरी)
दिनांक ३ मार्च १९५५ ई०

PRIME MINISTER'S SECRETARIAT, INDIA.

पत्र संख्या ५-६४-५४.

New Delhi-2, the 10 अगस्त १९५४.

प्रिय महोदय ,

आपका ३० जुलाई का पत्र तथा साथ में भेजी हुई 'तीर्थ विधान पद्धति' नाम की पुस्तक प्रधान मंत्री सचिवालय में प्राप्त हुई । तदर्थ धन्यवाद ।

श्री विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया,
पो० श्रीकेदारनाथ,
जि० गढ़वाल, उत्तर प्रदेश ।

भवदीय—
(सर्व प्रकाश)
प्राइवेट सेक्रेटरी

श्री ५ नेपाल सरकार

श्री माननीय प्रधान मंत्रीज्यूको सचिवालय

पत्र संख्या.....

नेपाल २७-७-०११

प्रिय महाशय ,

तपाईंले २०११ कार्तिक ११ प्र० मा पठाउनु भएको पत्र तथा तिर्थ विधान पद्धती सधन्य धाद, प्राप्त भये फोले सूचित गरेकोछु ।

भवदीय—

Bay खनाल,
विष्णुप्रसाद खनाल,
प्राइवेट सेक्रेटरी,
प्रधान मन्त्री, नेपाल ।

श्री विश्वनाथ शर्मा,
लालमोहरिया पंढा,
पो० गुप्तकाशी,
गढ़वाल, उत्तर प्रदेश ।

श्री दर्बार पुलचोक काठमाण्डौ

इण्डियन इग्वेशी नेपाल

श्रीमान पं० विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया पण्डित,

आपका कृपा पत्र तथा तीर्थ विधान पद्धति प्राप्त हुआ, जिसके लिये आपको हार्दिक धन्यवाद, हमारे यहाँ पर सभी लोग आपका प्रशंसा करते हैं।

आपका शुभेच्छु—

प्रा० से० देदारमणि शर्मा पाश्याय

२६-६-४४

कार्यालय सं० प्रा० स० लि० लमगौंठी गुप्तकाशी गढ़वाल
श्री विश्वनाथजी शर्मा लालमोहरिया गुप्तकाशी गढ़वाल उ० प्र०।

आदरणीय पं० जी आपकी लिखित तीर्थ विधान पद्धति नाम की पुस्तक प्राप्त सम्मति को प्राप्त हुई। पुस्तक बर्मकाण्ड के लिये अत्यन्त उपयोगी है। आपने पूर्व भी बर्मकाण्ड के विषय पर एक पुस्तक लिखी थी जिसकी कि परिशुद्धित कर बर्मकाण्डी जनों का महान उपकार किया, आपकी इस पुस्तक में समस्त भारतवर्ष भी परिचित है।

आप्तु फल प्राप्त सं० लि० लमगौंठी आपको हार्दिक धन्यवाद देती है। और आशा करने हैं कि आप अपना उक्त कार्य करते रहेंगे। पञ्चायन आरंभ निरादुषा के लिये भगवान में प्रार्थना करती है।

भवदीय

(मोहर) शिवकुमार दगशर्मा

१४-६-४४

तीर्थ विधान पद्धतिः

ओं नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमो पृथिव्यै नमः ओष-
धीभ्यः । नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो धिष्णवे महतेकरोमि ॥ प्रा० ॥



ब्राह्मण पूजनम्

ओं भू० भुव० ॥ ब्रह्मणे इदमासनं—स्वसनम् । ओं भू०
भुव० स्व० ब्रह्मणे इदं पाद्यं—सुपाद्यम् । ओं भू० भुव० ॥ ब्रह्मणे
इदं मर्ग्यम् अम्बुज्यम् । ओं भू० भुव० स्व० ब्रह्मणे इदमानम
नीयम् । ओं भू० भुव० स्व० ब्रह्मणे गन्धापान्तु-सौमहृत्य चास्तु ।
अक्षतापान्तु—आयुष्यमस्तु पुष्पाणि पान्तु—सौधियमस्तु । ताम्बूलं
पान्तु—ऐश्वर्यमस्तु० दक्षिणा पान्तु—गृहेय चास्तु । नमोऽस्त्र
नन्ताय सहस्र मृतये सहस्र पादाशि-शिरोरुग्राहये । सहस्र नाम्ने
पुरुषाय शारवते सहस्र काटी युग वारिणेनमः ॥ सकलाराधनै-
स्वर्चितं मस्तु । ब्राह्मण—अग्नौ भवन्ति मितिप्रतिवदेन् ॥ अस्ति
मन्त्रार्था सफलाः सन्तु ॥ तथास्तु—इति प० ॥

प्रकाशः—

ग्रन्थकार—विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया

श्री केदारनाथजी, जिला गढ़वाल उत्तर प्रदेश

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ

मङ्गलोच्चारणम् ।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा ऽ स्वस्ति न ऽ पूषाविशखवेदा ऽ ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽ अरिष्टनेमि ऽ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ
भद्रकृणोभि ऽ शृणुयाम देवा भद्रम्पश्ये माक्षमिर्य जत्रा ऽ । स्थिरैरङ्गै-
स्तुष्टुवा ॐ सस्तनू भिर्यशेमहि देवहितं यदायु ऽ ॥ २ ॥ तम्पस्की-
भिरनुगच्छेमदेवा ऽ पुत्रैर्ज्जातृभिरुत वा हिरण्ये ऽ । नाकङ्गृभ्याना
ऽ सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्टे ऽ अवि रोचने दिव ऽ ॥ ३ ॥

अथ प्रातः स्मरणसूक्तम्

हरि—ॐ आतरग्निं प्रातरिन्द्र ॐ इवामहे आतन्मिञ्चावहणो
प्रातरश्चिन्ना । आतन्मिञ्चावहणम् अत्राणस्पतिमप्रातऽसोम मुतहृद्भ
ॐ हुवेम ॥ १ ॥ आतरजितम्भगमुग्र ॐ हुवेमयम्पुत्रमदितेर्ष्यो विधत्ता ।
आदुद्ध शिश्चयम्ममयमानस्तुरश्चिद्द्राजाचिन्नाम्भगम्भक्षीत्याह ॥ २ ॥
भगप्त्रणे त्वर्भगसस्य राधो भगे मान्धिथ मुदवाद् दन्न ऽ । भगप्त्रणे
तनय गौभिरश्चिद्भगम्पुत्रमिन्द्र ॐ व-त ऽ स्याम ॥ ३ ॥ उतेदानीम्भगवन्त
स्यामो तप्त्रपितृवऽउत मद्धथे ऽ अन्नहाम् । उतोदिता मघवन् न्तूप्यस्य
व्ययन्देवाना ॐ सुमतो स्यामः ॥ ४ ॥ भगऽएव भगवो ऽ अस्तुदेवास्तेन
व्ययम्भगवन्त ऽ स्याम । तन्वाभग सर्वऽइजोऽधीतिसनोभगपुऽएताभवेह
॥ ५ ॥ समद्धरायोपसो नमन्त दधिक्रान्तेव शुनये पदाय । अर्वाचीनं
व्यसु विद्रम्भगन्नोरथमिवाश्वा व्वाजिन ऽ आचहन्तु ॥ ६ ॥ अश्वा
वर्तीर्गोमतीर्नऽउपासोव्वीरवती ऽ सदमुजन्तु भद्रा ऽ । घृतन्दुक्षाना
विश्रवत ऽ अपीता यूपं पात स्वस्तिमि ऽ सदा न ऽ ॥ ७ ॥ इति प्रातः
स्मरणसूक्तम् ।

गणेश स्तुति-स० चि० ।

प्रातः स्मरामि गणनायमनाय वन्धुं सिन्दूरपूर्णपरिशोभितगण्ड-
युग्मम् । उददण्ड विघ्न परिगण्डन चण्ड दण्डमारण्डलादि सुरनायक
घृन्द वन्दाम् ॥ प्रातर्नाममि चनुरानन वन्द्यमानमिन्द्रानुभूलमखिलं च
वरं ददानम् । तं तुन्दिलं दिग्गताधिपयज्ञमूत्रं पुत्रं विलास चतुरं शिवयोः
शिषाय । प्रातर्भक्त्या मयदं खलु भक्त शोक दावानलं गणविमुं

वरकुञ्जरास्यम् । अज्ञान कानन विनाशन इव्यग्राहमुत्साह वर्धन मह
सुतमीश्वरस्य श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा सांभ्राज्यं दायकम् । प्रातरुत्थाय
सततं यं पठेत्प्रयतं पुमान् ॥

नमस्काराः ।

श्री महागणाधिपतये नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः ।
ग्रामदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः ।
वाणिहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । श्री
चन्मामहेश्वराभ्यां नमः ।

हेमाद्रिकृतः स्नान सङ्कल्पः

अथ हेमाद्रिकृतं स्नान सङ्कल्प — आचम्य प्राणानायम्य ॥ श्रीमन्म
हागणाधिपतये नमः । श्री गुरुभ्योनमः । श्री सरस्वत्यैनमः । वेणायनमः ।
वेङ्कटपुष्पायनमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुल देवताभ्यो नमः । ग्रामदेवता
भ्योनमः । स्थान देवताभ्यो नमः । श्री वास्तुदेवताभ्योनमः । पतरुर्ध्वं प्रधान
देवताभ्योनमः । सर्वेभ्यो नमो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्योनमः । अविघ्न
मस्तु । सुसुरतश्चैकं दन्तश्च कपिलो गनकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो
विघ्ननाशो गणाधिपः । धूम्रकेतुर्गणध्वजोभाल चन्द्रोगनाननः । द्वादशै
तानि नामानि यं पठेच्छृणुयादपि । विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा
संप्राप्ते सङ्कल्पे चैव विघ्नस्तस्य न जायते । शुक्लानरधरं त्रैलोक्येशं चतु
र्भुजम् ॥ प्रसन्नं वदनं ध्यायेत्सर्वं विघ्नोपशान्तये । अभीष्टित्तार्थं सिद्धार्थं
पूनीतोयं सुरा सुरैः ॥ सर्वं विघ्नं हरस्तस्मै गणाधिपतयेनमः ॥ सर्वमङ्गलं
माङ्गलये शिवे सर्वार्थं साधिकः । शरण्यां यम्बके गौरि नारायणि नमो-
स्तुते । बभ्रु तुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभः । निविन्दुः कुरु मे देव सर्वं
कार्येषु सर्वदा ॥ वागीशाद्यां सुमनसं सावार्थां नामुपाक्रमे । यं गत्वा
शृत्वा स्युस्तं नमामिगजाननम् ॥ गणनाथ नमस्तुत्य नमस्तुत्य पितामहम् ।
विष्णु रदं ध्रियं त्रैलोक्यं वन्दे भक्त्या मरस्वतीम् । स्थान क्षेत्रम् नमस्तुत्यं दिन
नाथ निशाङ्गरम् । धरणी गर्भं मम्युत शशि पुत्रं गृहस्पतिम् ॥ दैत्याचार्यं
नमस्तुत्यं मूयपुत्रं शनैस्वरम् । राहु केतु नमस्तुत्यं यज्ञारम्भे विशेषतः ।
शक्रादि देवता सर्वानृषीश्चैव तपावनान् । गगनं मुनि नमस्तुत्यं नारद
पर्वत तथा ॥ यमिष्टं मुनि शार्दूल शिश्यामित्रं च गाभिलम् । अगस्त्यं च
पुष्यम् च दशमित्रं पराशरम् । भरद्वाजं च माण्डव्यम् याज्ञरत्नं च
गालवम् ॥ अन्ये विष्णोस्तपोयुक्ता यः शम्भुं त्रिरात्राणि । तान्मर्यान् प्रणि
पत्याद् शुभं कर्म समारम्भे । कामं स्नेहं जयं स्नेहां कुलम्भं परानय । येषां

मिन्दी वर श्यामो हृदय स्थो जनार्दनः ॥ अग्रतः श्री नृसिंहश्च पृष्ठतो
 देवकीसुतः । रक्ततां पार्श्वयोर्देवौ श्वातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ ॐ स्वस्ति श्रीमुकुन्द
 सच्चिदानन्दस्य ब्रह्मणोऽनिर्वाच्य माया शक्ति विजृम्भिता विद्या योगात्
 काल कर्म स्वाभावाविर्भूत महत्तत्त्वोदिताहङ्कारोद्भूत वियदादि पञ्च
 महा भूतेन्द्रिय देवतानिर्मितेऽण्डकटाहे चतुर्दश लोकात्मके लीलया तन्मध्य-
 वर्ति भगवतः श्री नारायणस्य नाभिकमलोद्भूत सकल लोक पितामहस्य ब्रह्मण
 सृष्टि कुर्वतस्त दुर्दुरणाय प्रजापति प्रार्थितस्य समस्तं जगदुत्पत्ति स्थिति
 लयकारणस्य जगद्रक्षा शिक्षा विचक्षणस्य प्रणत पारिजातस्य अच्युता
 नन्त वीर्यस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य अचिन्त्या परिमित शक्त्या ध्येय
 मानस्य महाजलोद्य मध्ये परिभ्रमणा नाम नेक कोटि ब्रह्माण्डा नामे कतमे
 ऽव्यक्तमहद्ब्रह्मण पृथिव्यप्ते जो वाट्वा काशा द्या वरणे रावृत्तै अस्मि-
 न्महति ब्रह्माण्ड खण्डे आधार शक्ति श्री मदादि वाराह दंष्ट्राप्रविराजिते
 कूर्मान्त धासुकि तक्षककुलिक कर्कोटक पद्म महा पद्म शङ्खाद्यष्ट महा
 नागैर्धन्यमाणे ऐरावत पुण्डरीक वामन कुमुदाञ्जन पुष्पदन्त सार्वभौम
 सुप्रतीकाष्ट दिग्गज प्रतिष्ठिता नाम तल वितल सुतल तलातल रसातल
 महातल पाताल लोकानामुपरिभागे भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महोर्लोक
 जनोलोक सप्तलोक सत्य लोकास्त्य सप्त लोका नामधो भागे चक्र बाल
 शैल महाबलय नागमध्य वर्तिनो महाकाल महाफणिराज शेषस्य सहस्र-
 फणानां मणि मण्डल मण्डिते दिग्दन्ति शुण्डो तन्मिमे अमरावत्य
 शोकवती भोगवती सिद्धवती गान्धर्ववती कांच्यवन्त्य लकावती यशोवती-
 तिपुण्य पुरीप्रतिष्ठते इन्द्राग्नि यम निश्चरति वरुण वायु कुबेरेशानाष्ट
 दिक्पाल प्रतिष्ठिते वर ध्रुवा धर सोमया प्रभञ्जना नल प्रत्यूष प्रभापात्याष्ट
 वसुभिर्विराजिते हरश्चाम्बक रुद्र भृग व्याधा पराजित कपाली भैरव शम्भु
 कपर्दि युषा कपि यदु रूपाख्यै कादश रुद्रै संशोभितेरुद्रोपेन्द्र सवितृधा
 तृत्पृथ्व्येन्द्रे शानभग मित्र पूषास्य द्वादशादित्य प्रकाशिते यम नियमासन
 प्राणायाम प्रत्याहार धारणाध्यान समाध्यष्टाङ्ग निरत वसिष्ठ बाल त्वित्य
 विश्वामित्र दक्ष कात्यायन, कौण्डिन्य, गौतमाङ्गिरस पाराशर्य ध्यास
 वाल्मीकि शुक शौनक भरद्वाज सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार
 नारदादि मुख्य मुनिभिः पवित्रते लोका लोमा चलवलयिते खण्डे ध्रुव
 समुरा सर्पिर्दधिक्षीरोदक युक्त सप्ताण्यवपरिवृते जम्बूद्वीप शालूमलि पुत्रा
 कौशिक शाक पुष्कराण्य सप्त द्वीपयुगे इन्द्र कांस्य ताम्रगमस्ति नाग सौम्य
 गन्धर्व वारुण भारतेति नव खण्ड मण्डिते मुर्वणगिर कर्णिको पेत
 महासरो महाकार पंचारात्कोटि योजन विस्तीर्ण भूमण्डले अयोध्या
 मथुरा माया काशी काञ्च्यवन्तिका द्वारा वर्तीति मन्तपुरी प्रतिष्ठिते महा

किमु प्रदस्थले शाल ग्राम शम्भल नन्दि ग्रामेति ग्राम त्रय विराजिते चम्प-
 कारण्य चट्टिकारण्य दण्डनारण्य बुन्दारण्य धर्मारण्य पद्मारण्य गुह्यारण्य
 जम्बुनारण्य विन्ध्यारण्य द्राक्षारण्य नहुषारण्य काम्यकारण्य द्वैतारण्य
 नैमिषारण्यदीनामध्ये सुमेरु निषध कूट शुभ्रकूट श्रीकूट हेमकूट रजतकूट
 चित्रकूट त्रिकूट किष्किन्ध श्वेताद्रिकूट हिम विन्ध्या चलानां हरि वर्ष
 किम्पुरुष वर्ष योश्च दक्षिणं नव सप्त योजन विस्तीर्णं भरतपण्डे मलय-
 चल महाचलविन्ध्या चला नामुन्तरेण स्वर्णप्रस्थ चण्डप्रस्थ सूक्तिरु आध-
 तकरमणक महारमणक पाञ्चज-यसिहल लंकाअशोक घृत्य लकावती-सिद्ध-
 वती गान्धव वत्यादि पुण्यपुरी विराजिते नन रण्डोपद्वीप मण्डिने
 दक्षिणा वा स्थित रेणुका द्वय सूकर काशी काञ्ची कलिकाल वटेश्वर
 फालांतर महाफालेति नवी रार युते द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग गङ्गा (भागीरथी)
 (गौतमी) गोदाक्षिप्रा यमुना सरस्वती नर्मदा तापीपयोप्पिणी चन्द्रभागा-
 कावेरी मन्दाकिनी प्रवरा कृष्ण वेण्या भीमरथी तुङ्ग भद्रामलायहा इत
 माता साक्षरणीविशालाक्षी वज्जुला वर्मण्यवती वेत्रवती भोगवती
 विशोका कौशिकी गण्डकी धासिष्टी प्रमदा विश्वामित्री फाल्गुनी चित्र
 फार्यपी सरयू सनेपाप हारिणी रततोया प्रणीता वज्रा वक्र गामिनी
 सुवर्णरेखा शोणामन नाशिनी शीघ्रगाकुश वर्तिनी ब्रह्मा नन्दा महितन-
 येत्य नेरु पुण्य नर्द भिविलसिते ब्रह्मपुत्र सिन्धु नदादि परम पवित्र जल
 विराजिते हिमवन्मेरु गोवर्धन ग्रीच चित्रकूट हेमकूट महेन्द्रमलय
 सङ्गन्द्र कीलपारि यात्राघनेक पत्रत समन्विते मतङ्ग माल्यकिष्किन्ध
 श्रुपि गृणेति महाना ममन्विते शङ्ख वङ्ग कलिङ्ग काश्मीर फाम्बोज
 सौवरि सौराष्ट्र महाराष्ट्र मगध नेपाः करेल चारेल पाञ्चाल गौड मालव
 मलय सिद्धलद्रविड कर्नाटक ललाट वरदाट वरदाट पानाट पाण्ड्य निषध
 मागध आन्ध्र दशार्ण्य भोजपुर गान्धार विदर्भ विदेह आह्लीक वर्वर
 कैकेय वाराणसविराट शूरसेन कौकण कैरट मत्स्य मद्रपा रमिक गरजूर-
 यावन मलेच्छ जालन्धरेति सिद्धवत्यन्य देश विशेष भाषा भूमिपाल
 विचित्रते इला वृत्त गुरु भद्रास्त्रकेनु मालकिम्पुरुपरमणक हिरण्यमयादि
 नय वर्याणां मध्ये भान्द नन्दे यदुल चम्पक पाटलाञ्ज पुञ्जाग जातिनर
 वीररमाल बह्मर केनक्यादि नानाविधि कुसुम स्तर वविराजिते फोक्कन्त
 हिरण्य गङ्गकुन्जकुन्द मणि कर्णो वट शाल ग्राम सूकर मथुरा गया निष्क-
 मण लोहारगंजपोतम्भ भिषमाम वङ्गोनि वनुर्दश गुण यिलसिते जम्बूद्वीपे
 कुम्भेश्वरदि समगू मण्यग्यायाः पश्चिमदिग्भागे कुल सेतोर्दक्षिणदिग्भागे
 विन्ध्यस्य दक्षिणे देशे श्री शैलस्य वायव्ये देशे कृष्ण घणयोर्मध्ये मत्स्य
 पूर्व वाराह नृसिंह वामन परशुराम रामकृष्ण बुद्ध वन्द्यीति दशानवताराणां

मध्ये वौद्धावतारे गङ्गादिसरिद्धिः पाविते एवं नव सहस्र योजन विस्तीर्णं
 भारत वर्षे निखिल जन पावन परम भागवतोत्तम शौनकादि निवासिते
 नैमिषारण्ये आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मा वर्तक देशे सूर्यान्वयभू भृत्प्रष्ठिते श्री
 मन्नारायण नामि कमलोद्भूत सकल जगत्स्रष्टुः परार्द्ध द्वय जीविनो ब्रह्मणो
 द्वितीये परार्धे एक पञ्चासत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे
 अह्ने द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंश त्कल्पानां मध्ये अष्टमे
 श्वेतवाराह कल्पे स्वायम्भुवादिमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे
 कृत त्रेता द्वापर कलि संज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टा
 विंशति तमे कलियुगे तत्प्रथमे विभागे (पादे) श्री मन्वृपविक्रमाकांक्ष
 श्री मन्वृप शालिवाहनाद्वा यथा संख्या गमेन चान्द्रसावन सौर नक्षत्रादि
 प्रकारेण गतानां प्रभवादि पण्डित सम्बत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि संवत्सरे
 उत्तरगोलावलम्बिनि श्री मार्तण्ड मण्डले अमुकर्तु अमुक मासे अमुक
 पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे
 अमुक राशिस्ये चन्द्रे अमुक स्थे सूर्ये अमुक स्थिते देवगुरो शेषेषु ग्रहेषु
 यथा यथा स्थान स्थितेषु सत्सु एवं गुण विशेषेण विशिष्टायां शुभ पुण्य
 तिथौ अमुक शर्मणः (भार्यया सहाधिकृतस्य) मम इह जन्मनि जन्मान्तरे
 वा बाल्य यौवन वार्धक्या वस्थासु वाक्मणि पाद पायू पथ्य घ्राण रसना
 चक्षुः स्पर्शन श्रोत्रमनोभिरचरित—ज्ञाता ज्ञात कामा काम महापातको-
 पपातकादि सन्धिवानां पापानां ब्रह्महन्त मुरापान सुवर्णस्तेयगुरु तत्त्यगमन
 तत्संसर्गरूपमहा पातकानां युद्धि पूर्वकाणां मनो बाकाय कृतानां बहु
 फालाभ्यस्तानां उपपातकानां च स्पृष्टास्पृष्ट संकरी करणमणिनी करण
 पात्री करण जातिभ्रंश करण विहिता करण कर्मलोप जनितानां रसविक्रय
 कन्या विक्रय हय विक्रय गो विक्रय खरोष्ट्र विक्रय दासी विक्रय अजादि
 पशु विक्रय स्वगृह विक्रय नीली विक्रय अक्रेय विक्रय पण्य विक्रय जल
 चरादि जन्तु विक्रय स्थल चरादि विक्रय खेचरादि विक्रय सम्भूतानां
 निरर्थक वृत्तच्छेदेन अणानपा करण ब्रह्मस्वाप हरण देवस्वाप हरण राजस्वापि
 पर द्रव्याप हरण तैलादि द्रव्यापि हरणफलादि हरण लोहादि हरण नाना
 वस्तु हरण रूपाणां ग्राह्यण निन्दा गुरुनिन्दा वेद निन्दा शास्त्र निन्दा पर
 निन्दा मद्य भक्षणा मोक्ष भोजना चोष्य चोपणा लेख लेहना पेय पानास्पृ-
 श्य स्पर्शना आव्य अव्यण्डिस्य हिंसना वन्द्य वन्दना चिन्त्य चिन्तना याज्य
 याजना पूज्य पूजन रूपाणां मान् पितृ तिरस्कार स्त्री पुरुष प्रीति भेदन
 परस्त्रीगमन विधवागमन वैश्यागमन दासीगमन चाण्डालादि हीन जाति
 गमन गुदगमन जस्त्रला गमन परचादिगमन रूपाणां कृत साहित्य पैशून्य
 वाद मिथ्या पवाद श्लेच्छ सम्भाषण ब्रह्मद्वेषकरण ब्रह्मवृत्तिहरण वृत्ति-

च्छेदन पर गृह्तिहरण रूपाणामिन्नवञ्चन गुरुवञ्चन स्वामि वञ्चनासत्य
भाषण गर्भ पातन पथि ताम्बूल चवर्णहीन जाति सेवन पराज
भोजन गणान्न भोजन लशुन पलाण्डु गृह्जन भक्षण तालवृक्ष फलभ
क्षणोच्छिष्ट भक्षणमाजारोच्छिष्ट भक्षण पर्युषितान्न भक्षणरूपाणा पक्ति
भेत्करण भ्रूणहिंसा पशुहिंसा जलहिंसाद्यनेक हिंसोद्भूताना शौचत्याग स्नान
त्याग सन्ध्यात्यागो पासनाग्नि त्याग वैश्वदेव त्याग रूपाणा निषिद्धा चरण
कुप्रासवास ब्रह्मद्रोह गुरुद्रोह पितृ मातृ द्रोह पर द्रोह पर निन्दात्मस्तुतिदुष्ट
प्रतिपद दुर्जन स सर्गरूपाणा गोयान वृषभयान महिषी यानगर्दभयानोष्ट
याना पयानभृत्याभरण स्वधाम त्याग गोत्रत्याग कुलत्याग दूरस्थमन्त्रण
विप्राशभेदना वन्दिताशोर्वाग्महर्षपतिर सम्भाषणरूपाणा पतितजन
पक्तिभोत्रनाह सज्जम वृथा मनोरथादि पापाना तथा महा पापोपपापाम्या
नानायानिपु यत्कृतम् । बालमावेन यत्पाप जुत्तुद्धये च यत्कृतम् ॥ आत्मार्य
चैव यत्पाप परार्थे चैव यत्कृतम् । तीर्थेषु चैव यत्पाप गुर्ववज्ञाकृतम् च
यत् ॥ रागद्वेषादि जनित काम क्रोधेन यत्कृतम् ॥ हिंसानिद्रादिजपामभेद
दृष्ट्याच यन्मया ॥ देहामि मानन पाप सर्वदा यन्मया कृतम् । भूतभक्ष्य
च यत्पाप भविष्य चैव गौतमि ॥ शुष्क माद्व च यत्पाप जानता ऽ जानता
कृतम् । महलघु च यत्पाप तन्मे नाराय आह्वयि ॥ ब्रह्महायद्यप स्तेयी
तयैवो गुरुतल्पग ॥ महापापानि चत्वारि तत्ससर्गा तु पञ्चम् अति पातक
भक्ष्य च तन्मयून मुप पातकम् । गोवधो धात्यता स्तेय ऋणाना चानप
त्रिया अनाहिताग्निता पण्यविक्रय परिवेदनम् । इन्धनार्थे द्रुमच्छेद स्त्री
दिनौपवि जीवनम् ॥ हिंसाया प्राविधान चभूतका ध्यापन तथा प्रथमा
श्रममारम्यपरिकृष्टिकल्पिष्य कृतम् ॥ इमि कीटादिहननपरिकृष्टित
प्राणिहिंसनम् । माता पित्रो रशुश्रूषा तद्वाक्या करण तथा ॥ अपूज्य पूजन
चैव पूज्याना च व्यतिक्रम ॥ अनाश्रमस्य ताग्यादि देवापु श्रूषण तथा
पर कायापहरण परद्रव्योप लीयनम् । ततोऽज्ञानकृत वापि कायिक वाचिक
तथा ॥ मानस त्रिविध पाप प्राक्सचत्तेरे नारितम् । तस्मादशेष पापेभ्य
रनादि त्रैलोक्य पात्रनि । निष्पापो ऽस्म्यभ्युनाप्तेवि प्रसादा तत्र नान्यथा ॥

स्त्रीणां विरोध :—पाणिग्रहण मारम्य स्वकर्मा परिपालनम् ।

इन्द्रयाभिरति पुंसु नाना योनिपुयाभजेत ॥ कृमि कीटादि हनन पक्तिभेदा
धिक तथा लृप्त लृप्मनाचार मनसा दोष कल्पनम् ॥ तत्सर्वं नाशये
त्तिप्रर्णने त्वयात्रया नया ॥] इत्यादि प्रकीर्ण पातकाना एतत्काल पर्यंत
मद्विताना लघुगृह्यूल मूढमाणा च निश्रोष परिहारार्थं श्रावणान् श्रावणान्
दरापरान् ध्यानागासदितान् एक विंशति पुरुषा सुदनु ब्रह्मलोका वधि पञ्चा

शक्नोदियोजन [विस्तीर्णोऽस्मिन्भूमण्डले सप्तर्षिर्मण्डलपर्यन्तं बालुकाभिः
 कृतरारोः वर्षसहस्रा वसाने एकैकं बालुका पकर्ष क्रमेण सर्वराख्यपकर्ष-
 समित काल पर्यन्तं ब्रह्मलोके ब्रह्म सायुज्यता प्राप्त्यर्थं कुरुतेत्रादि सर्व
 तीर्थेषु स्नान पूर्वकं सहस्रगोदान जन्य फल प्राप्त्यर्थं तथा ममसमस्त-
 पितृणां आत्मनश्च विष्णवादि लोक प्राप्तये अधीतानामध्येष्य माणानां
 चा ध्यायानां स्थापनविच्छेदक्रोश घोषण दन्त विवृति, द्रुबृत्तद्रुतोधारित
 वर्णानां पूर्वं सवर्णानां गलोपलम्बितविधृतोधारित वर्णानामृश्ट्रा स्पष्ट
 वर्णं विषट्ठनादिभिः पठितानां श्रुतीनां यथा तथा मत्वं तत्परिहारार्थं
 अष्टत्रिंशदध्यायाध्ययने रथ्या सञ्चरतः शूद्रस्य शृण्वतोऽध्ययने म्लेच्छा-
 न्त्यजादे शृण्वतोऽध्ययने ऽशुचिदेशे ऽध्ययने आत्मनोऽशुचित्वेऽध्ययने
 अक्षर स्वरानुस्वारपदच्छेद कण्टिका व्यञ्जन ह्रस्व दीर्घ प्लुत कण्ठ तालु
 मूर्धन्योष्ठ्य दन्त्य नासिका नुनासिक रेफजिह्वा मूली यो पध्मानीयो
 दात्ता नुदात्त स्वरितादीनां व्यतये नो आरेमाधुर्याक्षर व्यक्तिहीन त्वा
 घनेक प्रत्यवाय परिहार पूर्वकं सर्वस्य वेदस्य मवीर्यत्व सम्पादन द्वारा-
 यथाव त्फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं देव ब्राह्मण सवितृ सूर्यनारायण
 सनिधौ गङ्गाभागीरथी मन्दाकिनी-अलक नन्दायां अमुक तीर्थं वा
 प्रयाहाभिमुखं स्नानमहं करिष्ये ॥ इतिसङ्कल्प स्नायान्—[यदि यजमानो
 वेदाधिकारी न स्यात्तीर्हं तेनायं संकल्पः पुराणोक्त विधिना कार्यः उपाध्या-
 येन तत्करतः कारयितव्यश्च ॥] इति हेमाद्रिकृतः सङ्कल्प प्रयोगः ।

अथनद्यादौनित्य स्नान प्रयोगः—शुचिभूत्वाकर्ता

शुभ्रां यथा देश सम्भवां वा मृदमात्रं गोमयं कुशान् विलातवान्मुरभीणि
 पुष्पाणिभस्मं चात्राय तीर्थं तटे गच्छेत् । तदनन्तरंमूयामुग स्तीर्थानि-
 प्रार्थयेत् । तीर्थं प्रार्थना, नमामिगङ्गेतव पादं पङ्कजं सुगमुरै र्वन्दिव्य
 रूपम् । भुक्तिं च सुक्तिं च ददासिनित्यं भावानुसारेण सदा मरणाम् ॥
 यागति योग युक्तानामुनीना मूर्धरेतसाम् । सागनिःसर्वं जन्तूनां गौतमी
 तीरं यामिनाम् ॥ पुच्छरा यानि तीर्थानि गङ्गायाः स्मरितस्तथा ।
 आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकालेमदामम ॥ त्वं रात्रा सर्वं तीर्थं नां
 त्वमेव जगतः पिता । याचितं देहिमे तीर्थं तीर्थं राष्ट्रजयोस्तुते ॥
 अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु पसतिस्त्व । वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नाना
 नुशांप्रपद्यमे ॥ अधिष्ठात्र्य अ तीर्थानांतीर्थेषु विषरन्ति याः देवता स्ताः
 प्रपद्यन्तु स्नानाशांमम सर्वदा ॥ गङ्गे पयमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।

(१) वैजितप्राप्तये भावनवादि नैमित्तिकस्नानेहेमाद्रि मोक्षमहा
 महत्त्वं इत्येति स्नानदापन्त्यः कारयन्ति च ।

नवदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्तिधि वुरु ॥ इते सम्प्रार्थ्य हस्तौ
पादौ प्रक्षाल्याचम्य संकल्पः—अद्यपूर्वो श्रावित एवं गुण विशेषण
विशिष्टां शुभ पुण्य तिथौ मम आत्मनः श्रुति स्मृति पुराणीक फलप्राप्त्यर्थं
मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कार्याक वाचिक मानसिक वाचिक सां
सर्गिक ज्ञाता ज्ञात स्पर्शा स्पर्शभुक्ताभुक्त पीतापोतादिसकल पातकनिरास
पूर्वक मासनभोजन शयन गमनादि पवनृतमापणादि दोष निराप द्वारा
श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थममुक तीर्थे स्नानमहं करिष्ये ॥ इतिसंकल्प पश्चान्—
तीर्थो भिमन्त्रेणम्—ॐ इह हं हि राजा ववरुणश्चकारसूर्याय पन्थामन्न-
वेतयाऽव । अपरे पादा पतिघातवे कुरुतापवक्त्रा दृढया विधधित् ।
नमो वरुणायाभिष्टितो वरुणस्य पाशाः ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण न्युज्जा झलिहस्ते-
न तीर्थमभिमन्त्रयेत् ॥ जलावर्तनम्—ॐ ये ते शतं वरुणये सहस्रं यक्षिया
पाशा विततामहान्तः । तेभिर्गो अद्य सवितो विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मम तः
स्वर्गाः ॥ २ ॥ पा० गृ० इति पूर्णाञ्जलिनापोग्रहणम्—॥ सुमिन्त्रया
नऽद्यापऽओपधयऽसन्तु ॥ ३ ॥ इति मन्त्रेण जलाञ्जलिगृहीयात् ॥ तीर्थे
तटे जल ग्रहेणम्—दुर्मिन्त्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्माद्वेष्टियञ्च वयन्दिप्सऽ
॥ ४ ॥ मृत्तिका लेपनम्—ॐ इदं विष्णुर्दिक्क्रमेणैवानिदये पदम् । समूह-
मस्य पा दं सुरे स्वाहा ॥ ५ ॥ अथ मन्त्रि रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे ।
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥ मृत्तिके ब्रह्म पूर्वासि काश्यपे
नाभि वन्दिता । त्वया हतेन पापेन गन्धामि परमां गतिम् ॥ मृत्तिके हरमे
पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् । इतिसंप्रार्थ्य । नाभिमाशंतीर्थं जलं प्रविश्य
सूर्याभिमुखं स्तित्वा स्नायात् । तत्र मन्त्रः—ॐ आपोऽस्रस्मान्मातरः शुन्य
यन्तु घृतेन नो घृतप्लवः पुनन्तु । विश्व दं हि रिप्यस्प्रवहन्ति देवीऽ
॥ ६ ॥ इति मन्त्रेण निमज्जः पुनः—ॐ यदि दाम्बऽशुचिरा पूतऽपमि
॥ ७ ॥ इति मन्त्रेण द्वितीय वारं निमज्ज्य, पुनस्तूर्णो निमज्ज्योन्मज्ज्या चामेत्

(१) विष्णुरमृतिः—ब्रह्माविष्णु शक्रद्रव्यसर्वमो मिति बोध्यते ।
ममन्ते ऽमुरसंपाने नम्यते च युयुत्सुभिः ॥ (१) इति मन्त्रेण जलंदक्षिण हस्ता
हृत्तिभिर्दक्षिणवर्ते विवार मा वर्तयेत् ॥ तत्रामयेत् ॥ (४) इति मन्त्रेण झलित्यं
मुदकं स्वरात्मनः पाविचिन्त्य तत्राण्यं स्वनाम मागेतः यतटे विपेत् ॥ (१)
मृत्तिका मादोष क्षयाभिभागा लब्ध्वा प्रथम मागं वाम हस्ते गृहीत्वा तेन
नाभेरधः कटि प्रदेशं मनुलेपयेत् । हस्तं प्रक्षाल्य ॥ (२) पुनस्ते नैव हस्तेन
द्वितीयमागेन कस्ति उरध्वं जघं चरणी करो चप्रत्येकं तूर्णो विस्मिरतुलिप्य पुन
हस्तं प्रक्षाल्याचम्य तीर्थोदकं नमस्तूर्णम् ॥ (३) इति मन्त्रेण तृतीय मागेन
दक्षिण हस्तेन कक्षादादि नाभिपर्यन्तानि गात्राण्युपलिप्य हस्तं प्रक्षाल्या चम्य
तीर्थो दकं नमस्तूर्णम् ॥

गोमं बलेपनम् अप्रमम चरन्ती ना मोषधीनां बनेबने । तासां वृषभ पत्नीनां
 पवित्रं काय शोधनम् ॥ तन्मे रोगांश्च शोकांश्च पाप मेहर गोमय । (इति मन्त्रेण
 गोमयमभिर्मन्त्र्य) । ॐ मां नस्तोके तनये मा नऽआयुषिमानो गोषु मा
 नोऽअश्वेषुरीरिषऽमानो व्वीरा ब्रुह्माभिनो बधीर्हविष्मन्तऽसदमित्रवा-
 ह्वामहे ॥ ८ ॥ भस्मलेपनम्, क्षेपकम्—जलमिति भस्म, स्थलमिति भस्म,
 वयोमेनि भस्म, सर्वं हवाइदं भस्म, मन एतानि चक्षुषिभस्मानीति ॥ ॐ
 प्रसद्वयभस्मना योनिम पञ्च पृथिवी मग्ने, स ॐ सृज्य मातृभिष्टव
 ऋऽयोतिष्मा न्युनरासदऽ२ । ६ ॥ इति क्षेपकम् मार्जनम्—ॐ इमस्मै
 वरुणायशुधी हयमदथा चमृदय, स्वामवस्युराचके । १० ॥ तत्त्वायामि
 व्रजमणा व्रजमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्रह्मह्वमानो वरुणो ह
 योद्यु रुश ॐ समानऽआयुऽप्रमोषीऽ२ । ११ ॥ स्वर्गोऽअग्नेर्वरुणस्य-
 विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्टाऽ२ यजिष्ठो व्यन्निहतमऽ२ शोशुचानो
 विवश्वाद्ये ॐ सिप्रमुमुग्ध्यस्मत् । १२ ॥ सत्त्वर्गोऽअग्ने वमोभवोती
 नेदिष्ठोऽअस्याऽउपसोव्युष्टौ, अर्चयत्त नोघरुण ॐ रराणोव्वीहि
 मृष्टीक ॐ सुह्वोनऽएधि । १३ ॥ मापोमौषधीहि ॐ सीर्द्धान्नो
 धाम्नो राज स्ततो वरुणानो मुञ्च । १४ ॥ नदुत्तमं वरुणपाश मस्म-
 द्नाथमंविष मध्यम ॐ श्रथाप अथाव्यय मादित्य व्रते तवानागसो
 ऽअदितये श्याम । १५ ॥ मुञ्चन्तु मा शपस्था दथो वरुण्यादुत
 अथोयमस्य पडवीशास्सर्वस्मा हेव किल्बिषात् । १६ ॥ अवभृथनि
 चुम्पुणनिचेरुसि निचुम्पुणऽ१ । अवदेवेर्देव कृतमेनोयासिप मवमर्त्यै
 र्मर्त्यै कुनम्पुरु राव्यो देवरिपस्थादि । १७ ॥ (इति मन्त्रैः सर्वाङ्गा-
 निमार्जयित्वा । पश्चात्तूर्ण्यैः स्नात्वाचम्य) पुनर्दधैर्मार्जनम् ॐ आपो
 हिष्ठो मयोभुवस्तानऽऊर्जे दधातन महरेणाय चक्षसे । १८ ॥
 योवःशिव तमो रसस्तस्य भाजयतेह नःकरातीरिव मातरः । १९ ॥
 तस्माऽअरङ्गमाम वो परस क्षयाय जिन्वथ आपो जन यथा च नऽ
 । २० ॥ इदमापऽप्रवहता वदथञ्च मलञ्चयत् यथाभि दुद्रोहा नृतं
 वयं शेपेऽअभीरुणम् आपोमा तस्मादेनसऽपवमानश्चमुञ्चतु ॥ २१ ॥
 हविष्मतीरिमाऽआपौ हविष्मोऽआर्विवासति हविष्मान्देवोऽआद्वरो

४ पूर्णाङ्गलिति मन्त्रेण सोदकं गोमयं सूर्याय दर्शयित्वा तेन त्रिवार
 मङ्गानि ललाटादिषादवल पर्यन्तानि मल्लेपन वदनुलिप्य क्षालयेत् ॥ १ ॥
 इति मन्त्रेण ललाटा यङ्गेषु भस्म लेपनं कृत्वा ॥ २ ॥ तत्र सज्जलेन कुश
 त्रयेण नाभि दक्षिण पार्श्वमारम्य गिरो नीत्वा नाभि वामपाश पर्यन्तं
 मातमानं पादयेत् ॥

हविर्गर्भोऽश्नु सूर्य-॥२॥ देवीरापोऽ अघ्नपादयोऽ उर्मिर्हविष्यऽ
 इन्द्रियायान्मदि-तम । तन्देवेभ्यो देवन्त्रावत्त शुक्लपेद्भयो येषाम्मागम्य
 स्थादा ॥३॥ कार्पिरसिसमुद्रस्यत्वा चित्त्वाऽ वन्नयामि ममापोऽ-
 अद्रितगमत सप्तोयरोभिरोपधीऽ२॥ २४ ॥ अपोदेवा मधुमतीरगुम्ब्य
 नृर्जस्वसी राजस्वशिश्वतानाऽ याभिर्मिन्त्रा वरुणा वन्मपि वन्नन्वा
 भिरिन्द्रमनयन्नस्यरातोऽ॥ २५ ॥ द्रुपदादिब मुमुचान ५१ स्थितऽ क्तातो
 मलादिब पूतम्यवन्त्रेणै वाज्यमाप-गुन्धन्तु मैनसऽ । २६ ॥
 शन्नोदेवीरमिष्टयऽ आपोमवन्तु पीतये शय्योरभि व्रवन्तु नऽ । २७ ॥
 अपा ॥ रस सुदयस ॥ सूर्ये सन्त ॥ समाहितम् । अपा ॥ रसस्य
 योरसस्त व्योह्वान्म्युत्तम मुपयाम गृहीतोसी-द्रायत्वा जुष्टतमम्
 । २८ ॥ अपो देवो रूप शृज मधुमतीर यत्माप पञ्जाम्य-तासा माःथाना
 दुजिहता मोदधयऽ सुपिषता ५१ । २९ ॥ पुनन्तुमा पितर-सोम्यास
 -पुनन्तुमा पितामहाऽ पुनन्तुप्पितामहाऽ पवित्रेण शतायुषा
 विरश्वायु र्यशतवै । ३१ ॥ अघ्नऽआयू ॥ विषवस आसुवो र्जमि,
 पञ्चनऽ आरे आधत्य दुच्छनाम् । ३२ ॥ पुनन्तुमादेवसत्यऽ पुनन्तु
 मनसा पिय-पुनन्तु विरश्वा भूतानि जामवेदऽ पुनीहिमा । ३३ ॥ पवित्रेण
 पुनीहिमाशुक्त्रेण देवदीहयत् षग्नेकत्र-त्वाककतू । ५२ ॥ ३४ ॥ यत्तेपदिब
 अमर्षिष्यमने पितत मन्तरा ब्रह्ममतेन पुनातुमा । ३५ ॥ पवमातऽस्ताऽ
 अदय न- पवित्रेण विवर्षणिऽ यऽ पीता स पुनातुमा । ३६ ॥
 उमाभ्यान्व सवितऽ पवित्रेण सवेन च माम्पुनीहिद्विरश्वत- । ३७ ॥
 व्यैश्व देवी पुनती वच्यागादवस्थामिमा बह्वयस्तन्वोद्वी तपष्टुऽ
 तयामदन्तऽ सवमादेपुदय ॥ ३८ ॥ पतयोरवीणाम् । ३९ ॥ (इति मन्त्रे
 मर्जयितापश्वा इदक स्पृशेत् ॥) तत -ॐ विस्पतिर्मा पुनातु देवो मा
 सविता पुनास्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिमि-तस्यते पवित्रपते
 पवित्रतस्य पक्षामऽ पुनेतच्छकेयम् । ४० ॥ ४१ ॥ देवो मा सविता
 पुनास्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिमि-तस्यते । ४२ ॥ तत -ॐ
 पुनातु इमग्ने-व । ४३ ॥ इति मन्त्रेण ॐ पुनातु वस्वाया । ४४ ॥
 इति मन्त्रेण ॐ पुनातुस्वप्रोऽ अ । ४५ ॥ (इति मन्त्रेण) ॐ स
 पुनातु-स स्वतोऽअ । ४६ ॥ (इति मन्त्रेण) ॐ मह पुनातु-मापो

(१) इति मन्त्रेण नामेभ्य माजयेत् ॥ (२) इति मन्त्रेण नाम रघो
 मर्जयेत् ॥ (३) इति मन्त्रेण मर्वाङ्गे मा० ॥ (४) अपामार्गेस्तथा
 दूर्वाभिमानेन आवपयदिनैमित्तिक स्नाने कुर्यान्न नित्य स्नाने ॥

मौप० । ४६ ॥ (इति मंत्रेण) ॐ जनः पुनातु-उद्धतमम्० । ४७ ॥
 (इति मंत्रेण) ॐ तपः पुनातु-मुञ्चन्तु मा० । ४८ ॥ (इति मंत्रेण)
 ॐ सत्यं पुनातु-अवभृथ नि० । ४९ ॥ (इति मंत्रेण) ॐ तत्सवितुर्व्यं
 । ५० ॥ सर्वं पुनातु ॥ (इति कुरौर्मार्जयित्वा) ॥ अपामार्गेण मार्जनम्
 (क्षेपकम्) ॐ अपाधमपकिल्वपमप कृत्स्यामयोरपः-अपोमार्गस्त्व
 मस्मदपद्भुः ष्वप्य ६ सुवः । ५१ ॥ (इति मंत्रेणापामार्गेस्त्रिभि-
 र्मार्जयेत्) ॥ ततः-दुर्वाकुरेणं मार्जनम्-ॐ काण्डां स्काण्डा
 ष्णोऽन्तो पतपः परुप स्परि एवानोदूर्ध्वेषतनु सहस्रेण शतेन चः । ५२ ॥
 (इति क्षेपकम्) (इति मंत्रेण दुर्वाभि स्त्रिभिर्मार्जयेत्) ॥ अघमर्पणम्
 ततोऽघमापद् पञ्चाणामन्यतमे नान्तर्जले ममोऽनुच्छ्छ्वन्न सन्न घमर्पणं
 कुर्यात् तद्यथा ॐ द्रुपदादि० । ५३ ॥ (इति वात्रिः पठेत्) ॥ आयज्ञोऽ
 पृथिव्यकमी दसदन्मातरस्पुरः । पितरश्चप्रयन्स्वः । ५४ ॥ (इति वात्रिः
 पठेत्) ॥ सशिरसं प्राणायामं वात्रिः पठेत् । यथा-ॐ भूः ॐ भुवः ॐ
 स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुं स्वरोम्
 । ५४ ॥ इति सप्त व्याहृति त्पूर्विकांस शिरस्कां गायत्रीं वात्रिः पठेत् ॥
 ॐ इति वात्रिः पठेत्) विष्णु ध्यानम्-यद्वापरमात्मानं विष्णुं शेष
 शायिनं सायुर्धस श्री कमेकम मनसाध्यायेत्) एवं स्नानं कृतं स्यात् ॥
 स्नानाङ्ग तर्पणम्-ॐ ब्रह्मादयो देवा स्तुप्यन्ताम् । ॐ भूर्देवास्तु० ।
 ॐ भुवर्देवा स्तु० ॐ स्वर्देवास्तु० ॐ भूर्भुवः स्वर्देवास्तु ॐ सप्तैकादिद्वै
 पायन।दयो ऋषयः स्तुप्यन्ताम् ॐ भूर्ऋषयः स्तु ॐ भुवर्ऋषयस्तु ॐ स्व
 ऋषयस्तु ॐ भूर्भुवः स्व ऋषयस्तु० ॐ कठ्येवाह नलादयः पितर
 स्तुप्यन्ताम् ॐ भूः पितरः स्तु० ॐ भुवः पितरः स्तु० ॐ स्व पितरः स्तु०
 ॐ भूर्भुवः स्वः पितरः स्तु० ॥ (ततः आचम्य सज्येन यक्ष्म तर्पणं
 कुर्यात्) । यक्ष्मतर्पणम्-यक्ष्मया दूषितं तीर्थं शरीरमल सम्भवात् ।
 तस्य पापस्य शुद्धयर्थं यक्ष्मेन ते तिलोदकम् ॥ (इति मंत्रेण तीर्थं तटे
 तिलमिश्रं जलाञ्जलिं निक्षिपेत् ॥) पश्चात् लतादिकेषु शिखोदक
 त्यागः-लतागुरुनेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः । ते सर्वे तृप्तिं मायान्तु

(१) प्रथमे देवतर्पणे पूर्वामिमुखः सन्कुशत्रयं ग्रहीत्वा । तदग्रेः सज्येन
 देवतीर्षे नोङ्कारपूर्वकं देवेभ्य एकेकं यक्ष्मलिदधात् ॥ (२) द्वितीये श्रृग्यादि
 तर्पणे उदगप्रान् दर्मान्धृत्वा तदग्रेर्निषीत्या प्रजायति तीर्थे नोङ्कारपूर्वकं
 मृषिम्यो द्रोढावज्जलीदेवो ॥ (३) तृतीये पितृ तर्पणे भुगाम्दक्षिणा प्रमूलान्
 दर्मान्धृत्वाप सज्येन पितृतीर्षे नोङ्कारपूर्वकं पितृभ्यस्त्रीं स्त्रीनञ्जलीन्दधात् ॥
 इति नद्यादीनित्य स्नान प्रयोगः ॥ (४) वृक्षाः ॥

मयोत्सृष्टैः शिखोदकैः ॥ (इति मन्त्रेण स्कन्तिगन्धामेति राघवं निष्पीडयेत्
तवोद्यौते वाससी परिधाय भस्मादिवारयेत् ततो गृहे ब्रजेत्) इति ॥

गङ्गा पूजनम् ।

तीर्थं गत्वा जलस्पर्शनपूर्वकं गङ्गा प्रणम्य भूतशुद्धिं सविधाय
सूर्यपूजनं कृत्वा च नारिकेलानि फल ताम्बूल चार्पयित्वा पानेन प्रक्षाल्य
आचम्य प्रथमयात्रायां प्रायश्चित्तसकल्यं कुर्यात् । अद्येत्यादि अमुकोऽह
द्वादशाक्षपङ्क्तं सार्द्धाष्ट एकाद वा प्राजापत्याम्नायोभूतहिरण्य
भाक्षणाय दास्ये इति भाक्षणाय सुवर्णं दत्त्वा गङ्गामभिसि प्रविश्य
स्नात्वाचम्य कुरातिलजलान्यादाय अद्येत्यादि अमुकोऽह यानच्छेन्ननाय
वररौ माघवर्षे सहस्रान्तस्वर्गमदित्वं प्राप्तिकामो वपनं करिष्ये ॥ इति
संकल्पः । अथ मन्त्र आत्मन शुद्धिकामो वा पितृणां मुक्तिं हेतवे वपनं
च करिष्यामिनीरेऽह तस्य जाड्वि १ ॥ २१ नि कानि च पापानि
जन्मान्तरघृतानि च पेशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात् केशावपानमहम् ।
महापापोपपापाश्च केशलोभनस्तथा द्विजाः । छुरिद्विभ्र-तु मर्वाह
ते मे दोषा पतन्त्यव । इति जलमुत्सृज्य मुखेन कृत्वा ॥ अनेन
मन्त्रेण गङ्गा प्रार्थयेत् ॥ ॐ नमो देवाधिदेवाय शितिकण्ठाय
दिण्डिनि । रुद्राय चापहृताय अत्रिणे धेनवे नमः ॥ सरस्वती
च सावित्री वेदमाता गरीयसी । सानिध्यन्तु भवत्स्वन्नं तीर्थपाप
प्रणाशनी इति मन्त्रार्थं कुरातिलजलान्यादाय ॥ ॐ विष्णु ३ ।
श्रीमद्भद्रपुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमत्समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिप्रलयकारस्य रक्ष
रिप्ता विचक्षणस्य प्रणपारिजातस्य अष्टपुत्रानन्तवीर्यस्य श्रीमद्भगवतो
महापुरुषस्य श्रीमदादिनारायणस्यावित्या परिमित शक्त्याग्रिममाण
महाजलोपमस्य परिश्रममाणस्यानेककोटिब्रह्माण्डानामेकस्यते महद्ब्र
ह्मरूपव्यपतेजोऽप्यनाशाघानखैरावृते ब्रह्माण्डरूपव्योमस्ये आधार
शक्तिरूर्मान् ताघादिमज्जोपरिमिते सप्तपातालस्योपरिभाग मन्त्रालो
कस्थायो भूत महाकालशेषस्य सहस्रपञ्चावमरिद्धे दिग्गन्तिदन्तशुल्का
द्वयेन लोकाशोकं कलितं मरणसुप्तमर्षिभिर्दुग्धहीरोदार्यं परिषिते
जम्बुद्वीपे सालमलिकवृक्षादींश्च माष पुष्परसतदीपेदीपिते मारुतवर्षे
भरतखण्डे अयोध्या मधुगमाणां काशी काशी अवन्तिका द्वाराघतो कुन्तेने
पुच्छादि नाना तीर्थ युते कूर्म भूमौ मन्त्रेभ्योऽपि पूर्वदिग्मागीरध्या पश्चि
मदीरे सप्तल रूष्टिपराङ्मुखं चामानां पद्मगो द्विजवत्पार्श्वस्य प्रथमाक्षे
प्रथममासे प्रथमाद्वयम अहर्निधितियागत् तृत्विषं मुहूर्ते प्रथमपटिकायां

सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतिमे युगे कलियुगस्य प्रथमे चरणे
 बौद्धावतारेऽअमुक नाम वत्सरे महानक्षत्रे च एवं विधि पञ्चाङ्गादिके
 अमुक नाम दिवसे नक्षत्रे एवं विधि, अमुक योगेऽमुक नाम कर्णेऽमुक
 मुहुर्तेऽमुक समयेऽमुकराशिस्थितेरवौऽमुकरोशिस्थिते चन्द्रेऽमुकराशि
 स्थितेभीमेऽमुक राशिस्थिते बुधेऽमुकराशि स्थिते देवगुरौऽअमुक
 राशिस्थिते शुक्रेऽमुकराशिस्थिते शनौऽअमुक राशिस्थिते केतौऽमुक
 राशिस्थिते राहौ एवं गुण विरोधेण विशिष्टायां अमुकशतौऽअमुक
 मासेऽमुक पक्षेऽमुकतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुक राशिः ॥ अमुक
 नामाहं मनेह जन्मनि जन्मान्तरे वा संचितानां पातकानां ब्रह्महन्त
 मध्यपान सुवर्णस्तेय गुरुतल्प गमनवत्संसर्गकरूप बुद्धि पूर्वकानां
 मनोवाक् काय कृतानां महापातकानां बहुकालाभ्यस्तानां उपपातकानां
 स्पृष्टास्पृष्ट सकरीकर्ण अपात्रिकर्ण जाति भ्रंश करण रसविक्रय
 गोविक्रय खरोष्ट्र महिषी विक्रय अजादि पशु विक्रय ब्राह्मण दुर्भाषण
 निरर्थकद्रुमच्छेदनद्वन्द्वमानया कर्ण ब्रह्मस्वहरण जाति भ्रंश करण
 रविदेवराज स्वापहरण ब्राह्मणनिन्दा वेदनिन्दा शिवनिन्दा अभक्ष्य
 भक्षणं अभोज्यभोज्यं अचोप्याऽऽचोषणं अपेयापानं अस्पृश्य स्पर्शनं
 अश्राव्यस्य श्रवणं अघ्नो याम्राणम् अहिंस्याऽऽहिं सनम् अवन्ध्याऽऽवन्धनम्
 अचिन्तचित्तनम् अयाच्याऽऽयाचनम् अपूज्यपूजनम् व्यतिक्र
 मातृपितृतिरस्करणं स्त्री पुरुष प्रतिभेदनम् परस्त्रीगमनं पशुयोनि
 गमनं अयोनिबीज व्यापनम् कुटसाक्षित्वा गाद मिथ्यापवाद परद्रोह
 पर हानि चौर्य करणं स्लेच्छसं भाषणम् स्लेच्छसंज्ञासनम् ब्रह्म द्वेषणं
 स्वामी भेदनं मित्र ध्वनम् भार्यानिन्दनम् गर्भपातनम् रजस्वला
 मुखस्वापनम् निषिद्धकालमैथुनम् दासीगमनं वैश्य गमनम् सम्भाषण
 स्पर्शनम् पराङ्ग भोजनम् क्रमुपात्र पात्र भोजनम् गणिकाङ्ग भोजनम्
 निकृष्टाङ्गभोजनम् पंक्ति भेद कर्म हिसहभोजनम् परशोष भोजनम्
 लघुस्थूल सुदमण पर्वकराहु केतु पराग निमित्त कुरुक्षेत्राधिकरण
 क्षेत्रीय संग दानक सुवर्ण मारदान जन्य फल दश गुण विध्वंशदानक
 गङ्गास्नान फल सहस्र गुण फल प्राप्ति कामः श्रुतिस्मृति वेद
 पुराणोक्त समस्त फल प्राप्त्यर्थं पूर्वोक्त श्रायश्चित्ता निवृत्ति पूर्वकं
 पश्चिमवाहिन्याः श्रोगङ्गायाः चैतस्याः सचैलं स्नानमहं करिष्ये ॥ इति
 स्नात्वा तत्प्रार्थना०—॥ महापापो पपापंच नानायोनिषु यत्कृतम् । बाल
 भावादिक पापं पर द्रोहादिकौस्तथा ॥ १ ॥ देहादिः मानसं पापं
 सर्वदायन्मया कृतम् । भूतभक्ष्यं भविष्य च पापेदं देहबन्धनम् ॥ २ ॥ तस्मा
 दशोप पापोधान् किञ्चिपापतयावहि, शरणागत दीनार्थं स्नादिजाह्नवि-

सर्वदा ॥ ३ ॥ गतंपापंगतं दुःखं गतं मे व्याधिवन्धनम् ॥ निस्पापाष्ट-
घुनादेवि प्रसादातवनान्यथा ॥ ४ ॥ उचीर्ष्य धौतवासांसि परिधाय
स्नान वासांसि ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ सन्ध्यावन्दननित्यकर्मदिकं कृत्वा ॥

ततो गङ्गां पूजयेत् ॥ गणपतिं नमस्कृत्य—अर्घ्यसंस्थाप्य आचम्य
प्राणायामं कृत्वा अद्येत्यादि अमुकोहं सकल पापक्षयपूर्वकं ।
श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ते यथो पमिक्षित सालंकारैः श्रीगङ्गापूजन
महं करिष्ये ॥ ध्यानभूषितकर निपण्णं शुभ्रवस्त्रां त्रिनेत्रां, क्लृप्त
कलशोद्य सातरला भोत्यभीष्टाम् विविहरि रूपांसि सिन्धु कोठार चुण्डी
कलितसिनदुकृतां जाह्नवी त्वां नमामि ॥ चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च सर्वा
वयव शोभिताम्, रक्त कुम्भा सितां भोज्ञां वरदो नलसत्कराम्, सीत
वस्त्रोपरीधाना मुक्तामणि विभुषिताम्, पर्व तत्सु सौम्यां च चन्द्रायुत
समप्रमान् ॥ २ ॥ इति ध्यात्वा गङ्गायै नमः आवाहनम्, आसनम्
मापत्तानम् मधुपर्कम् आचमनीयम्-वस्त्रम् सर्वं भूपादिद्वैः सौम्यैलोक
लज्जा निवारकैः समो पपादितैर्वस्त्रैश्च सत्रा भवमातरः ॥ धूपम्वराङ्गां
शुभगुलं धूपं सुगन्धि मुमनोहरम्, आग्रेथं सर्वं देवानां गृहाण
परमेश्वरि ॥ दीपम् ॥ गृहाण महलं दीपं घृतवर्ति समन्वितम् ।
रुद्रनेत्रं नमोस्तुभ्यम् ब्रह्म भूर्ति नमो नमः । अथ नैवद्यम् ॥ नैवद्यं
गृह्यतां देवि नानाभक्ष्यसमन्वितम् मयोपपादितं देवि नैवद्यं प्रति
गृह्यताम् ॥ ताम्बूलम् ॥ अथद्वादश नामभिर्गङ्गां पूजयेत् ॥ ॐ नमो
भगवत्यै नमः ॥ ॐ नमो नारायण्यै नमः ॥ ॐ नमो हरायै नमः ॥
ॐ नमो गङ्गायै नमः ॥ ॐ नमो विरवमुत्तायै नमः ॥ ॐ नमो मृतायै
नमः ॥ ॐ नमो दक्षायै नमः ॥ ॐ नमः शिवायै नमः ॥ ॐ नमोरेवत्यै
नमः ॥ ॐ नमः वृत्त्यै नमः ॥ ॐ नमो नन्दिन्यै नमः ॥ ॐ नमः ॥
स्तारायै नमः ॥ इति द्वादश नामभिः सम्पूज्य अथ प्रार्थना-वरदार
परद्वयपरद्रोहोपुमेमति विपश्चुमा अयेद्रक्षे प्रसादा तव सुप्रते ॥
अर्घ्यं दद्यात् ॥ ततो मन्त्रम् ॥ अथाऽमुकोहं सकल पापक्षय द्वारा
श्रीगङ्गाया पूजनस्य सांगवत् प्राप्स्यमिदं सुवर्णंऽमुकटीर्षवांसिने
ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे अभिषेकाठादिकं कुर्यात्

ॐ इति गङ्गापूजनम् ॐ

अथ स्यस्ति पाचनम् ।

ओं स्यस्ति ज इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्यस्तिनः पूषा विश्ववेदाः ।
स्यस्तिनस्तार्क्ष्यो अष्टि नेमिः स्यस्तिनो वृद्धस्पतिर्दधातु ॥ ॐ मयः
वृषिय्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयम्यतिः प्रदिराः

सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्रेस्त्यो विष्णो
 स्यूरसि, विष्णो ध्रुवोसि । वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥ ३ ॥ ॐ अग्नि
 देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता
 रुद्रो देवता मरुतो देवता विश्वेदेवादेवता बृहस्पतिदेवतेन्द्रोदेवता
 वरुणोदेवता ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिं प्रथिवी शान्ति
 राप शान्तिं रोपधय शान्तिं वनस्पतय शान्तिं विश्वेदेवा शान्तिं ब्रह्मा शान्ति
 शान्तिं रेव शान्तिं सामाशान्तिरेधि । विश्वानि देव सवितुदु रितानि
 पराशुव । यद्भद्र तन्न आसुव ॥ शान्ति , शान्ति , शु शान्ति । भवतु ॥

गणेश पूजनम्

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गज कर्णक । लम्बोदरश्च विकटो
 विघ्ननाशो गणाधिप । धूम्रकेतुर्गणध्वजो भालचन्द्रो गजानन ।
 द्वादशैतानि नामानि य पठेच्छृणुयादपि । विघ्नारम्भे विघ्नाहे च
 प्रवेशे निर्गमे तथा । सप्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
 शुक्लाम्बरधर देव शशिबर्ण चतुर्भुजम् । प्रसन्न वदन ध्यायेत्
 सर्वविघ्नोपशान्तये । श्रीपितृव्यार्थ सिद्धयर्थ पूजितोय सुरासुरै ।
 सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः । सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे
 सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमो ऽस्तुते ।
 सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान्
 मङ्गलायतनो हरिः ॥ तदेव लग्न सुदिन तदेव ताराबल चन्द्रबल
 तदेव विद्याबल दैवबलतदेवलक्ष्मी पते तेषां युग स्मरामि ॥ लाभस्तेषां
 जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजय । येषामिन्दि वररयामो हृदयस्थो जनार्दन ॥
 यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्यो धनुर्धर ॥ तत्र श्रीविजयो भूति ध्रुवा
 नीति मतिर्मम ॥ सर्वेष्वात्मनः कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वरा ।
 देवादिरान्तुन सिद्धिं प्रप्तेषां जनार्दन । विनायक गुरु भानु ब्रह्म
 विष्णु महेश्वरान् सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये ।—श्री
 इति गणेश समीपे हस्तस्थ दुर्वाक्षत पुष्पाणि सस्थाप्य ॥
 तिलकुशानलान्या दाय ॥ सङ्कल्पम् ॥ ॐ नमः परमात्मने पुराण
 पुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया ।

प्रवर्तमानस्यास्य ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे श्रीरजेतवाराह कल्पे
 वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे
 भरत खण्डे भारत वर्षे आर्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे हिमवत्पर्वतैकदेशे
 केदारखण्डान्तर्गत मुमेरु पक्षिण पार्वतलक्ष्मण मन्दारिनी
 ममीपे पट्टि सम्बत्सराणां मध्ये अमुक नाभि सम्बत्सरे अमुकाऽयने

अमुक श्रुतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक वासरे अमुक तिथौ
 अमुक नक्षत्रे अमुक राशिरिवते चन्द्रे अमुक राशिरिवते श्री सूर्ये
 अमुक राशिरिवते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थान स्थितेषु
 सन्तु एव गुण विशेषेण विशिष्टाया राशेऽप्युच्यते तिथौ (ममाऽत्मन)
 श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं [मम ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थम् ।
 प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकाल सरक्षणार्थम् । सकल मनईप्सितकामना
 ससिद्धयर्थम् । लोके वा सभाया राजद्वारे वा सर्वत्र यशोरिजय
 स्थाभादि प्राप्त्यर्थम् । इहजन्मनि जन्मान्तरे वा सकल दुरितोपशमनार्थं ॥
 तथा च मन सभार्यस्य सपुत्रस्य सगान्धवस्य अग्निल कुटुम्ब सहितस्य
 मपशो संमस्त भय व्याधि जरा पीडा मृत्यु परिहार द्वारा आयुरारोग्यै
 श्वर्याभिवृद्धयर्थम् तथा मम जन्म राशेरग्निल कुटुम्बस्य वा जन्म
 राशे सकाराद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टम द्वादशास्थान स्थितकूर प्रहासै
 सूचित मूषयिष्यमाण च यत्सर्वारिपुतद्विनाशद्वारा एकादश- स्थान
 स्थित बच्छुभ भल प्राप्त्यर्थम् । पुत्रपौत्रादि सन्ततैरविच्छिन्न घृष्ट्यर्थम् ।
 आदित्यादि नवग्रहानुकूलता सिद्धयर्थम् । तथा इन्द्रादि दशदिक्पाल प्रस
 न्ना सिद्धयर्थम् । अविदेविकाऽधिभौतिकाऽध्यात्मिका । त्रिविध तापो
 पशमनायम् । धर्मार्थ काम मोक्षलाभावाप्त्यर्थं च । ॐ भूर्भुव स्व
 अमुक कर्मणि धर्मार्थकाम हेतवे (अमुक पञ्चायतन देवता प्रीत्यर्थं)
 गणपत्यादि देवता प्रीतये । एवमेव कलशस्थापन पुण्याह नाचन
 कर्मणि वरादी कार्यं निर्विनाशं गणपति पूजन करिष्ये ।
 (इति सङ्कल्प) शुद्ध मानसैरङ्गाचरैः ।—हे हे रम्भ त्वमे होहि
 अभिरक्षा ऋग्भकात्मन सिद्धिं बुद्धिपते यद्वत्तज्ज्ञ लाभं पितु पित ॥
 नागस्य नागं हास्य गणराजं चतुर्भुजं । भूषितं स्थायुधैर्दिव्यै
 पाशाशुभ्र परवधैः आग्राहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः ।
 इहागत्य गणराजं पूजाकर्तुं श्व रत्नमे ॥ आवा ह्येव गणेशन्तम् ।
 पूजादयं प्रपूजयेत् ॥ पतन्ते देव सन्निवर्त्यन्तं प्राहर्षं हृस्पतये । प्रहारेतेन
 यज्ञं मय तेन यज्ञपतिं तेन मामय ॥ मनोजूतिर्जुपता माज्यस्य
 वृहस्पतिर्यज्ञमिमत्तनो त्वरिष्ट यज्ञं च समिधं दधातु । विरये देवामह
 माय यन्तामो प्रतिष्ठेति प्रतिष्ठाप्य । ॐ गणगणेश्वर्येति अन्वापति
 ऋषिर्गुणः = छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने त्रिनियोगः ॥
 ॐ गणानास्त्रा गणपतिं च हवामहे प्रियाणान्त्रा प्रियपति ॥ हवामहे
 त्रिरीतास्त्रा निधिपतिं च हवामहे वसो मम आह्वयानिगर्भधमात्य
 मन्नाभि गर्भधम् । ॐ भूर्भुव स्व गणपते इहागच्छेति । अधासनम्—
 गुणुगाय नमस्तुभ्य गणाधिपतये नमः । गणगणमनमोशत्रु विघ्नपुच्छं

निवारय । ॐ पुरुष ऽः एवेदं स सर्व्वं यद्भूतं ऋचभाष्यम् । उतामृत
 चरस्ये शानोयदन्ने नाति रोहति ॥ इति आसनम् समर्पयामि ॥
 पाद्यम्—उमापुत्राय देवाय सिद्धम् वन्द्यायते नमः । पाद्यं गृहाण देवेश
 विष्णुराज नमोस्तुते । ॐ एतावानस्य महिमातो जयायोश्च पुरुषऽ-
 पादोऽः । स्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि । इति पाद्यम्
 समर्पयामि । अथार्घ्यम् । एकदन्त महाकाय नगयशोपवीतरु ।
 गणाधि देव देवेश गृहाणार्घं नमोस्तुते । ॐ त्रिपा दूद्धऽऽद्वैत्पुरुषऽ-
 पादोऽस्येहा भवत्पुनः । ततो विषण्वव्यक्रामत् साशना नशनेऽग्रभि
 ॥ २४ ॥ इति अर्घ्यम् । समर्पयामि ॥ अथ आचमनम् । मर्त्यतीर्थं
 समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् आचम्यतां मयादत्तं गृहीत्वा परमेश्वर
 ॐ ततो विवराद् जायत विवराजोऽग्रधि पुरुष ऽऽसजातोऽग्र
 चपरिष्यत परचाद्भूमिमयो पुर ऽः ॥ २५ ॥ आनमनीयं समर्पयामि
 ॥ अथ स्नानम् ॥ गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः ।
 स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्वमे ॥ ॐ तस्माद्यज्ञा
 त्सर्व्वं हृत ऽः सम्भृतम्पृषदा ज्यम् पशून्तांश्चक्त्रे वायव्या
 नारण्याग्राम्या शचये । इति स्नानं समर्पयामि ॥ [अथ स्नेपकम्]—
 अथ पञ्चमृतास्नानम्—(एक मन्त्रेण पञ्चामृत स्नानम् । पयोदधिघृतं
 चैव मधु च शर्करायुतम् । पञ्चामृत मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
 ॐ पञ्च नद्य ऽः सरस्वतीमपि यन्ति स स्रोतस ऽः । सरस्वती तु पञ्चधा
 सोदेशोभवत् सरित् ॥ २७ ॥ इति पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि । पञ्चामृत
 स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयम्
 समर्पयामि । अथवा पृथग्मन्त्रेण पञ्चामृत स्नानम् ।—उत्र पयः
 स्नानम्—कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः
 स्नानार्थमर्पितम् ॥ ॐ पय पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे
 पयोधा ऽः । पयस्वती ऽः अदिशः सन्तु ममम् । इति पयः स्नानं
 समर्पयामि । पयः स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक
 स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ दधिस्नानम्—(पयः सन्तु समुद्भूतं
 मधुराम्ल शशिभम् । दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ
 दधिकृत्वाणोऽग्रहारिपञ्चिणोऽरश्चरश्च व्याजिन्ऽः सुरमिनो सुगन्धकर
 च प्रणऽआयुः पितारि षन् ॥ २८ ॥ इति दधिस्नानं समर्पयामि । दधि
 स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं
 समर्पयामि ॥ अथ घृतस्नानम् । नवनीतं समुत्पन्नं सर्वं मन्तोपकारकम् ।
 घृतं नुम्यं पदायामि स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ घृतमग्निदे ।
 घृतमस्योनि घृतेक्षितो घृतम्वस्याम अनुत्पद्यमा षड मादयस्व रसाह

कृतं वृषम व्यतिद्वयम् ॥३०॥ इति घृतस्नानं समर्पयामि-घृतस्नानान्ते
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥
(अथ मधुस्नानम् ॥) तत्र पुष्प समुद्भूत सुखाद्गु मधुरमधु । तेज
पुष्टिर्दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ मधुव्याताऽष्टताय ते
मधुचरन्ति सिन्धवऽ माद्वीर्न्ऽ सन्त्वोषधीऽ ॥ ३१ ॥ मधुनक्त
मुतोपसो मधु मत्वार्यिऽ रजऽ - मधुदधोरस्तु नऽ पिता ॥ ३२ ॥
मधु मान्नो वृन्तस्त्विति स्मधुमा २ऽ अस्तु सुर्वऽ माद्वी गावो भवन्तु
नऽ ॥ ३३ ॥ इति मधुस्नानं समर्पयामि । मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं-
समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ अथ
शर्करास्नानम्-शुक्लस्य समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका
दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥-ॐ अथा ७ रसस्य पोरमस्त वऽ
गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतो मीन्द्रायत्त्रा जुष्टं ह्यहमेव ते योनिरिन्द्राय
त्त्रा जुष्टतमम् ॥ ३४ ॥ ॐ भूर्भुवऽ एव गणपति देवताभ्यो नमः
शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं
समर्पयामि । -अष्ट गन्धोदक स्नानम्-मलया जलसम्भूत चन्दनागद
सम्भवम् । चन्दनं देव देवेरा स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ -ॐ गन्धद्वारा
दुराधर्षा नित्यं पुष्टा करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये
श्रियम् ॥ ३५ ॥ (लक्ष्मा सुक्त मन्त्र)- भूर्भुवऽ एव श्रीगणपति
देवताभ्यो नमः पष्ट गन्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ पष्ट गन्धोदकस्नानान्ते
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥
-अथ उद्धर्तनं स्नानम् ॥-नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ॥
उद्धर्तनं मया दत्त स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ अ ७ सुनाते । ७ पुऽ
इत्यनाम परुषा परु । गन्धस्ते सोमं भवतु मदाय रसोऽ अक्षयुतऽ
॥ ३६ ॥ ॐ भूर्भुवऽ एव श्री गणपति देवताभ्यो नमः उद्धर्तनं स्नानं
समर्पयामि ॥ उद्धर्तनं स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक
स्नानान्ते आचमनं समर्पयामि ॥ ततः पञ्चामृतादि स्नानान्न पूजा-
ॐ भूर्भुवऽ एव श्री गणपतिदेवताभ्यो नमः-वस्रोपरस्त्रार्थं अक्षताम्
समर्पयामि । यज्ञोपवीतार्थंऽक्षतान् समर्पयामि । गन्धं समर्पयामि । नाना
पत्रिमल सीमापत्र द्वय्याणि समर्पयामि । धूपं दर्शयामि क्षीपं दर्शयामि ।
-शर्करोपहारं नैवेद्यम् ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ
व्यानाय स्वाहा । ॐ ममानाय स्वाहा । ॐ उक्ताय स्वाहा ॥ नैवेद्यं
समर्पयामि । नैवेद्यान्ते हस्त प्रक्षालनार्थं मुद्यं प्रक्षालनार्थं जलसमर्पयामि
करोद्वर्तनार्थं पुनीज्जलं ताम्बूलं समर्पयामि । हिरण्यमुद्राक्षिणा
समर्पयामि कपर्शोत्तक्यं दर्शयामि । प्रक्षिणा समर्पयामि । मन्त्रं पुष्पं

युक्त नमस्कारं समर्पयामि ॥ विशेषार्घ्यं—रत्न रत्न गणाय च रत्न त्रैलोक्य
रत्नकः । भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् । वरद त्वं वरं देहि
वाञ्छितं वाञ्छितार्थद । अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ॥
प्राथनां समर्पयामि ॥ अर्पणम्—अनेन पञ्चामृतादि स्नानाङ्ग भूतपूजा-
कृतेन ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतिदेवता प्रीयन्तां नमम ॥ (निर्माल्यं
विसृज्य) पुनश्च (पञ्चायतन) गणपतिदेवताम्यो गन्धाक्षपुष्पाणि
समर्प्य ॥ —स च यथा—हरिः ॐ—ॐ सइस्त्र शीर्षां ॥ ३३ ॥ पुरुषऽप०
॥ ३४ ॥ एतावतास्य० ॥ ३५ ॥ त्रिपादूर्ध्वऽ० ॥ ३६ ॥ ततेन्विराड०
॥ ३७ ॥ तस्माद्यज्ञात्स० ॥ ३८ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽष्टवऽः
सामानि जज्ञिरे । छन्दा ॐ सि जज्ञिरे तस्माद्यज्ञुतस्मादजायत ॥ ३ ॥
तस्माद्दृष्ट्वाऽ अजायन्त ये के चोभयादत्तऽः गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा-
ब्जाताऽ अजावय ः ॥ ४० ॥ संयज्ञम्वर्हिषि षौक्षन्पुरुष ऋजातमग्रत
ऽः । तेन देवाऽ अजयन्तसाद्वयाऽऽप्ययश्चये ॥ ४१ ॥ यत्पुरुषं
व्यदयुऽः कतिधाव्यकरूपयन् । मुखाङ्गिमस्यासीत्किन्वाहू किमूरुपादाऽ-
वृक्षयेते ॥ ४२ ॥ व्याह्वणोस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यं कृतऽं वृक्षतदस्य
यद्वैश्यं ः पद्भ्या ६ शुद्ध्रोऽअजायत ॥ ४३ ॥ चन्द्रमा मनसो
जातश्चक्षोऽः सूर्योऽअजायत श्रोत्राद्वायुश्चष्माणश्च मुखादग्निरजायत
॥ ४४ ॥ नाभ्याऽमासीदन्त रिच्छ ६ शीर्ष्णोऽधौऽ समवर्त्तत ।
पद्भ्याम्भूमि र्दिशऽः ओत्रा तथा लोको र्शाऽ अकल्पयन् ॥ ४५ ॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । व्वसन्तो र्पासी दाज्यद्व्मीष्मऽ
श्चम्सऽः शरद्विऽः ॥ ४६ ॥ सप्तास्या सन्पारिधया स्त्रिऽः सप्त समिध
ः कृताऽः । देवा यद्वर्हा तन्वतानाऽः अवव्दन्पुरुषम्पशुम ॥ ४७ ॥
यज्ञेन यज्ञ मय जन्त देवास्तानि धर्माणिप्रथमान्यासन् । तेहनाक
म्सहिमान ः सचन्त यत्र पूर्वे साद्वयाऽः सन्ति देवाऽः ॥ ४८ ॥ स
च यथा—ॐ धौऽः शान्तिरन्तरिक्ष ६ शान्ति ः पृथिवी शान्तिरापऽः
शान्तिरोपधयऽः शान्ति ः व्वनस्पतयऽः शान्तिर्विरश्वे देवाऽः
शान्तिर्वर्द्धा शान्तिऽः सर्व्व ६ शान्ति रेव शान्तिऽः सामाशान्तिरेधि
॥ ५० ॥ यतो यतऽः समोहसे ततो नोऽअमयङ्कुरु शन्नः कुरु प्रजाभ्यो-
मयन्न पशुभ्य ः ॥ ५१ ॥ ॐ सर्वेषां वाऽप्य वेदाना ॥ रसोयत्साम
सर्वेषामेवैनमेतद्देवाना ॥ रसेनाभियञ्चति ॥ ५२ ॥ (आह्वणमन्त्रः) ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः सुरान्तिर्मवतु । ॐ अमृताविपेकोऽस्तु ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः श्रीगणपतिदेवताम्यो नमः अभिषेकं समर्पयामि । (इति
क्षेपकम्) ॥ पश्चात् देवतीर्थं धृत्वा । ततो देवायाचमनम्—ॐ केशवाय
नमः स्वाहा । ॐ नारायणाय नमः स्वाहा । ॐ माधवाय नमः स्वाहा—

इत्याचमनं समर्पयेत् ॥ हस्तप्रक्षालनम् । ॐ गोविन्दाय नमः ॥ वस्त्रम-
सर्गभूषाधिकं सौम्ये लोक लज्जा निवारणे । मयोप पादिते तुम्य वाससी
प्रतिगृह्यताम् ॥-तस्माद्यद्यह्नात्सर्गद्वयं ऽ ऋच ऽ सा० ॥ १२ ॥ ॐ
भूर्भुव स्व श्रीगणपतिदेवताभ्यो नम वस्त्रं समर्पयामि । ॥ वस्त्रा-
भावेऽक्षतान् अथ यक्षोपवीतम्-नवमिस्तनुभिर्मुक्तं त्रिगुण देवतामय
पवीतं चात्तरीय गृहाण परमेश्वर ॥)-ॐ वस्त्रादस्त्रा ऽ अ० ॥ १३ ॥
-ॐ भूर्भुव स्व श्रीगणपति देवताभ्यो नम यक्षोपवीतं समर्पयामि ॥
यक्षोपवीता भावेऽक्षतान्) ॥ अथ गन्धम्-ॐ (श्रीलण्ड चन्दनं विंश
गन्धाक्षतं सुमनोहरम् जलेपनसुरमेष्ट चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥) ॐ
तद्यज्ञान्निर्दिष्टपिण्डीचन्दनपुरुषं ज्ञातमग्रतः ऽ तेन दे० ॥ १४ ॥ ॐ भूर्भुव
स्व गणपति देवताभ्यो नम गन्धम् समर्पयामि ॥ (अथ अक्षता ॥
अक्षतारचं सुरश्चन्द्र कुङ्कुमाक्षतां सुशोभिता । मया निवेदिता भक्त्या
गृहाण परमेश्वर ॐ अक्षतमीमदन्तद्वयभिरपि ऽ अभूषत । अक्षतोपव
स्वमन्तरोक्षिप्रमानविष्णुयामतियो ज्ञान्निन्दते हरि ॥ १५ ॥ ॐ भूर्भुव
स्व गणपति देवताभ्यो नम अक्षतान्समर्पयामि इति लेपकम् । अथ
पुष्पाणि-माल्यादानं सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै श्रमो । मयानीतानि
पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ यत्पुरुषं नमस्कृत्य ॥ १६ ॥ ॐ भूर्भुव
स्व गणपति देवताभ्यो नम पुष्पाणि (सोमस्यद्रव्यं सहितं च)
समर्पयामि ॥ (देवेभ्य गन्धं सोमस्यद्रव्यादीनि अनामिकाङ्ग गुह्येन
अर्पयेत् अथ गणेशाय दुर्वाङ्कुशाग्रं लम् ।-विष्णुवादि सर्वदेवानां दुर्गतं
प्रीतिदा मया । चौरसागरं सम्भूते वरा वृद्धिं वरं भव ॥)-ॐ
काण्डहारहापडात्पराहन्ती परुष ऽ परुषस्वरि । एवानो दुर्वै प्यतनु
सहस्रेण शतेन च ॥ १७ ॥ अथ धूपम् ।-अनस्पति रसोद्भूतो गन्धान्यो
गन्ध इवम आमेव सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । ॐ व्याघ्रणोस्य
सुगन्धं मानी द्वाष्ट्राजन्म्य - हृत ऽ (गुरु तदस्य ॥ १८ ॥ ॐ भूर्भुव
स्व गणपति देवताभ्यो नम धूपं दशयामि ॥ अथ धूपपूरितं नीराजनं
दीपम्-(आज्यं च यनि मयुजं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेरा
प्रेतोक्त्वा विमिराषद् ॥ ॐ चन्द्रमा मन्मथो ॥ १९ ॥ ॐ भूर्भुव स्व
गणपति देवताभ्यो नम धूपं पूरितं नीराजनं दीपं दशयामि ॥ अथ
नेत्रेणम्) गर्भराष्ट्रं मयुजं मधुरं म्हादु चोत्तमम् । उपाहारं समायुक्तं
नेत्रं प्रतिगृह्यताम् । ॐ नाम्न्याऽभामीदन्नं रिक्तं धृ शी० ॥ २० ॥
ॐ प्राणायामः स्यात् । ॐ अजाताय स्यात् । ॐ व्यानाय स्यात् । ॐ
उदाताय स्यात् । ॐ मयानाय स्यात् । ॐ भूर्भुव-भोगणपति
देवताभ्यो नम नेत्रेण समर्पयामि । शिवेयान्तेना नोयम्-(एकोशीर

लवङ्गादि कपूरं परिवासितम् ॥ प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥)
 उत्तरापोशनं हस्तं प्रच्छालनं मुखप्रच्छालनं आचमीनयं च समर्पयामि ॥
 मुखवासार्थं ताम्बूलम् (पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम् । एता
 चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ यत्पुरुषेण ० ॥ ६० ॥ ॐ
 भूम्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः ॥ ताम्बूलं समर्पयामि (अथ
 शेषक) फलं—इदं फलं मया देवस्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफला
 वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि । ॐ या ऽः फलिनीर्या ऽः अफला ऽः अपुष्पा
 य्याः श्वपुष्पिणी ऽः । बृहस्पतिं प्लुतं स्तानो मुञ्चन्त्व ६१ हस ॥ ६१ ॥
 ॐ भूम्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः फलं समर्पयामि ॥ (दक्षिणा)
 हिरण्यं गर्भं गर्भस्थं हेम । बीजं विभावसोः । अनन्तं पुण्यं फलदं मतः
 शान्तिं प्रयच्छ मे ॥) ॐ हिरण्यं गर्भं ऽः समं वत्सं मे भूतस्य जातं ऽः
 पतिरेकं ऽः आसीत् । सदाधारं पृथिवीं न्यामुतेमाङ्गं स्मै देवाय हविषा
 विधेम ॥ ६६ ॥ ॐ भूम्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः दक्षिणा
 समर्पयामि ॥ अथ—कपूरं रार्तिक्यम्—कदली गर्भसम्भूतं कपूरं च प्रदीपितम्
 आरार्तिक्यमहं कुर्वे परमं मे वरदो भव ॥ ॐ इदं ६७ हवि ऽः पञ्च ननम्मे
 ऽः अस्तु दशवीरं ६८ सर्व्वगणं ६९ स्वस्तये । आत्मासनि प्रजासनि
 पशुसनि लोकसन्त्य भयसनि ॥ अग्निनीः ऽः अजाम्बहुलाम्मेकरो
 त्वन्नम्पयो रेतो ऽः अस्मा सुधत् ॥ ७० ॥ ॐ भूम्भुवः स्वः श्रीगणपति
 देवताभ्यो नमः कपूरं रार्तिक्यं दर्शयामि ॥ (इति शेषकम् ॥) प्रदक्षिणा—
 (यानि कानि च पापानि जन्मान्तरं कृतानि वै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु
 प्रदक्षिणं पदे पदे ॥) ॐ सप्तास्या ० ॥ ७१ ॥ ॐ भूम्भुवः स्वः
 श्रीगणपति देवताभ्यो नमः आर्तिक्यं सहितं प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ ० ॥
 अथ मन्त्रः पुष्पं युक्तो नमस्कारः ॥ (नाना सुगन्धं पुष्पाणि यथा
 कालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिं मया दत्तां गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ यज्ञेन
 यज्ञं ॥ ७२ ॥ ॐ भूम्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः मन्त्र-
 पुष्पाञ्जलियुक्तं नमस्कारं समर्पयामि प्रार्थना—विष्णेश्वराय वरदाय सुर
 प्रियाय लम् गोदराय सकलाय जगद्धिताय नागाननाय श्रुतिज्ञ विभूषिताय
 गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥ [क्षमापनम् ॥] आवाहनं न जानामि
 न जानामि तवार्चनम् । पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ गतं पापं
 गतं दुःखं गतं दारिद्र्यं मेव च—आगता सुखं मम्पत्तिः पुण्याश्च तव दर्शनात् ॥
 अन्यथा शरणान्ति त्वमेव शरणं मम तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परम-
 ेश्वर ॥ मन्त्रं हीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं
 तदस्तु मे ॥ यदक्षरं यद् भ्रष्टं यात्राहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव
 प्रसीद परमेश्वर (इति शेषकम्) अर्पणम्—अनेना वाहनासन पाद्यार्था

चमनीय स्नानवस्त्रो पवीत गन्धपुष्प घृण दीप नैवेद्याम्बूल दक्षिणा
प्रदक्षिणा मन्त्र पुष्प रूपैः षोडशो पचारैः अन्योपचारैश्च यथा ज्ञानेन
यथा मिलितो पचार द्रव्यैः कृतेन पूजनारब्ध कर्मणा ॐ भूभुवः स्वः
श्रीगणपति देवताः प्रोयन्तां न मम ॥ ॐ वत्सन् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ (इति
श्रीगणपति देवता पूजनम्) ।

अथ भूतानिशुद्धिः ।

कर्ता कर्मविषये प्राप्तकथाय स्नात्वा नित्यकर्म समाप्य दीपाय
गन्धाक्षतपुष्पादीन् समर्प्य आचम्य पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत्—

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिधरं चतुर्भुजम् । प्रमत्तवदनं ध्यायेत्
सर्वक्षिप्तोपशान्तये । लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराश्रय । येषामिन्दी-
वरस्यामो हृदयस्यो जनार्दनः ॥ इति विष्णवे समर्पयेत् ।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकांति समप्रभ । अविर्घ्न कुरु मे देव
सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ २ ॥ इति गणेशाय समर्पयेत् । ततोऽर्चन्यापनं
कुर्यात्, गन्धादिना—

भूमौ त्रिकोणं कृत्वा चतुरस्रमण्डलं च लिखित्वा सद्गुणैः आसन्नम्
आसनस्थोपरि पात्रम् पात्रस्थोपरि पवित्रैः चो वेष्टयन्वा इति पवित्रं
निक्षिपेत् “शन्नोदेवीति जलम्” चो शन्नोदेवीरभिष्टुभ आपो भवन्तु
पीतये । शंध्योरभिष्टुभन्तु नः । इति जलेनापूर्य “गङ्गे” च यमुने चैव
गोदावरि सख्यति । नर्मदे मिन्धु काप्येरी जलोऽस्मिन् सन्निधिं कुर्व
इति अङ्कुरामुद्रया तीर्थान्यावाह्य गन्धाक्षतपुष्पादि तूष्णीं निक्षिप्य
अर्धयात्रं सुसम्पन्नमस्तु ३ तेन जलेन आत्मानं करिष्यमाण श्रीसूर्यादि
पञ्चदेवपूजन कर्मणि निर्विघ्नता मिदये मम सकलमनोरथसिद्धयर्थञ्च
भाग्यतः सूर्यदेवस्य प्रीतये सूर्यदेवपूजा सामर्मी च सम्प्रोदय प्राणायामप्रथं
विधाय पुण्डरीकाक्षाय स्मरणम् ।

अथ ध्यानम्—ध्येयः सदा सविन्मण्डलमम्बुधरी । नारायणः
मरसिजामरतन्निविष्टः । केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी
हिरण्यवपुर्नृशङ्खचक्रः ॥ १ ॥ ततः सूर्यमात्रादयेत् “ॐ भूभुवः स्वः
कलिङ्गदेशोद्भव वाश्यपगोत्र रत्नवर्ण भगवन् सूर्य इहागन्ध इह तिष्ठ
पूजार्थं त्वामावाहयामि इत्यावाह्य अर्पं दद्यात् । एहि सूर्य सद्भारो
वेजोदारो जगत्पते । अतुल्यस्य मां भक्त्या गृहाणार्थं दिवाकर । ततो
गन्धाक्षतैः सूर्यं पूजयेत् । ॐ आकृष्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न-
मृतमम्यं च । हिरण्ययेन यकिना रयेन देवो जनि भुवनानि परवत् इति

ॐ आदित्याय नमः इति मन्त्रेण च नीराजनान्तं सम्पूज्य । धूप दीपं
नैवेद्यं पुष्पाणि च सूर्याय समर्पयेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ आदित्यं च
नमस्कार ये कुर्वन्ति दिने दिने । जन्मान्तरसदस्त्रेण दारिद्र्यं नोपजायते ।
इति ध्यात्वा ततः सर्पपाक्षतैर्भूतोत्सादनं कुर्यात् ॥ अपक्रामन्तु भूतानि
पिशाचः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारम्भे । अपस-र्पन्तु
ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया,
इति । निर्गच्छतां च भूतानां वर्त्म दद्यात् स्ववामतः । तालत्रयेण
सर्वान्बिघ्नानुत्सार्य । पृथिव त्वयेति मेरुपृष्ठशृङ्गिः सुतलं छन्दः, कूर्मो
देवता आसनोपवेशने विनियोगः ॥ ॐ पृथिव त्वया धृता लोकाः देवि
त्वं विष्णुना धृता । त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु आसनम् ॥ ततो
गन्धाक्षतपुष्पैः । ॐ आधारशक्त्यै पृथिव्यै नमः ॐ कूर्माय नमः ॐ
शेषनागाय नमः ॐ चित्तशक्त्यै नमः इत्यासनं सम्पूज्य पुनरर्घं संस्थाप्य
च पूजासङ्कल्पं कुर्यात् 'गन्धाविना भूमौ त्रिकोणवृत्तं चतुरस्रं मण्डलञ्च
लिखित्वा तदुपरि आसनं आसनस्योपरि पात्रम् पात्रस्योपरि पवित्रं
पवित्रेस्यो वैष्णव्यौ-इति निक्षिपेत् ।

शन्नो देवीति जलम् ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शैत्योरभिस्तवन्तु नः । इति जलेनापूर्य गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि
सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निविं कुरु, इत्यङ्कुशमुद्रया
तीर्थान्यावाह्य गन्धाक्षतपुष्पाणि तुष्णीं निक्षिप्य अर्घपात्रं सुसम्पन्नमस्तु
३ तेन जलेन आत्मानं, करिष्यमाणं मुक्तकर्मणि निर्विघ्नतया कार्य-
सिद्धयर्थं सकलेषितसिद्धयर्थञ्च श्रीमहागणपतिदेवप्रोत्यर्थमिमां पूजा-
सामग्रीञ्च सम्प्रेक्ष्य प्राणायामत्रयं विधाय पुण्डरीकाक्षाय स्मरणम् ।
ततः प्रार्थनाभ्यां नमः । मातृपितृवरणकमलाभ्यां नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो
नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः ।
निर्विघ्नमस्तु ।

अथ गणेशार्चवर्षशीर्षम् ।

ॐ नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि । त्वमेव केवलं
कर्त्तासि । त्वमेव केवलं धर्त्तासि । त्वमेव केवलं इर्त्तासि । त्वमेव सर्वं
व्यवहृदं ब्रह्मासि । त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् । अतं वच्मि । सत्यं
वच्मि । अव त्वं माम् । अव वक्तारम् । अव श्रोतारम् । अव दातारम् ।
अव धातारम् । अवान् चानमवशिष्यन् ॥ अव परचातान् । अव
पुरस्तात् । अवोत्तरात्तात् । अव दक्षिणात्तात् । अव चौर्ध्वात्तात् । अवा-
धरात्तात् । सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् । त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः ।

त्वमानन्दमयत्वं ब्रह्ममय । त्वं सच्चिदानन्दो द्वितीयोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं
 ज्ञानमि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि । सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेप्स्यति ।
 सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति । त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिनो नम त्वं चत्वा
 रिवाक् पदानि । त्वं गुणत्रयातीत । त्वं देहं त्रयातीत । त्वं काल
 त्रयातीत । त्वं वस्था त्रया तीत । त्वं मूलावास्थितोऽसि नित्यम् ।
 त्वं शक्तिरयात्मकः । त्वां योगिनां ध्यायन्ति नित्यम् । त्वं ब्रह्मा त्वं
 विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं मिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म-
 भूभुवः स्वोम् । गणादीन्पूर्वगुणार्थं वर्णादींस्तदन्तः । मनुष्या-
 पत्नरः । अर्धेन्दुलसितम् । तारेणरुद्रम् एतच्च व मनुस्वरूपम् । गकार-
 पूर्णरूपम् । अकारो मध्यमरूपम् । अनुस्वाररचान्तरूपम् । बिन्दुस्तत्त-
 रूपम् । नादः सन्धानम् । स ॐ हितसन्धिः । सैषा गणेश विद्या गणक
 श्रुतिः । निचुद्गायत्री छन्दः । गणपतिर्देवता । ॐ न गणपतये नमः ।
 पञ्चदन्ताय विद्महे षष्ठ्युण्डायवीमहि । तन्नोदन्ती प्रचोदयात् । पञ्चदन्त
 चतुर्लस्य पारामर्शं कुशधारिणम् । रक्तञ्च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मूपकध्वजम् ।
 रक्तं तन्मोक्षरं शूर्पैर्युक्तं रक्तवाससम् । रक्तं गन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपूज्यः
 सुभूषितम् । भक्तानुकम्पितं देवं जगत्कारणमध्युतम् । आबिभूतञ्च
 मृदयादीं प्रवृत्ते पुरुषात्परम् । एतं ध्यायति यो नित्यं मयोगी योगिनां
 पर । नमो व्रतपतये नमो गणपतये नमः । प्रथमपतये नमस्तेऽस्तु तन्मो-
 दरायैन्दन्ताय विघ्ननाशिने शिवमुनाय श्रीवामदेवमूर्तये नमः । एतदयर्थ-
 शीर्षं योऽरीते । स ब्रह्ममूयाय कर्तव्ये । स सर्वं विघ्नेन बाध्यते स
 सर्वं सुप्रमेचने । स पञ्च ब्रह्मापापात्प्रमुच्यते । मायं मदीयानो दिवस
 कृतं पार्थ नाशयति । प्रातरपीयानोरात्रि कृतं पार्थ नाशयति । सायंकालं
 ममुज्ज्वानो अभाषो भवति सर्वत्रा धीयानोऽप विघ्नो भवति धममर्थ
 कामं मोक्षञ्चविन्दति । इदमयर्थशीर्षमशिष्याय नरेयम् । यो यदि
 मोहादभ्यस्यति । स पापिधान् भवति । मद्भ्रातृवर्तनाय ये काममधीते स
 तमनेन मारयेन् । अनेन गणपतिमभिषिञ्चति । मन्त्राग्नी भवति ।
 अनुर्ध्वामनश्चञ्चरति । स त्रिद्यावान् भवति । इत्यथर्वण वाक्यम् ।
 ब्रह्माणां रण्यु विद्यान्त्र विप्रैति वक्ष्ये अनेति । यो दुर्वाङ्मुखैर्यजति । स
 यमत्र जीवमो भवति । यो सात्रीर्यजति । स बाधित फलमवाप्नोति । यः
 सत्यममेद्वियजति । स सर्वं लभते । स सर्वं नमते । अष्टौ माह्यलान्
 मन्त्रमाह्वयति । सूर्यं वर्चस्वी भवति । सूर्यं ग्रहे महानथां प्रतिमा
 मन्त्रिणी । स त्रयसि विदुः मन्त्रो भवति । महाविघ्नोऽत्रमुच्यते । ब्रह्मा-
 द्वापात्रमुच्यते महान्त्यवायात्रमुच्यते । स सर्वविद्भवति । स सर्वं
 विद्भवति । य एवं वेद । इत्युपनिषत् । ॐ शान्ति शान्ति शान्ति । इति ग० ।

सङ्कल्पः ।

ॐ विष्णुर्विष्णु विष्णुः श्रोमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अथब्रह्मणो द्वितीयेपरार्धे भीश्वेतवाराहकल्पे वैवश्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमै कलियुगेकलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गतक्षेत्रे हिमवत्पर्वतैकदेशे वेदारखण्डान्तर्गत-वद्रिकाश्रमेसुमेरु दक्षिणपार्श्वेऽलकनन्दा मन्दाकिन्योर्मध्ये (समीपे) पष्टिसंज्ञसराणां मध्येऽनुकनामसंज्ञत्सरे अमुकाऽयने अमुकश्रुतौ अमुक-मासे अमुकपक्षे अमुकवासरे अमुकतिथौ अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते देवगुणौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु पथं गुणविशेषे विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रोत्पन्न-अमुकराशि अमुक शर्मा-वर्मा-गुप्तो वा-ममाऽत्मनः श्रुतिस्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थम् । अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थम् । प्राप्तलक्ष्म्यारिचरकालसंरक्षणार्थम् । सकलमम ईप्सितकामनासं-सिद्धयर्थम् । लोके वा सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादि-प्राप्त्यर्थम् । इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितो पशमनार्थं । तथा मम सभायस्य स पुत्रस्य सन्धानवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशोः समस्तभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्व-र्याभिवृद्धयर्थम् । तथा मम जन्मराशोरखिलकुटुम्बस्य वा जन्मराशोः सकाराद्ये केचिद्विरुद्धवतुर्थाष्टमद्वादशस्थान स्थितक्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा एकादशस्थानस्थितवज्रह्नुभ-फलप्राप्त्यर्थम् । पुत्रपौत्रादिसन्ततेरविच्छिन्नवृद्धयर्थम् । आदित्यादिन-वप्रहानुकूलतासिद्धयर्थम् । तथा इन्द्रादिदशदिक्पालप्रसन्नता सिद्धयर्थम् । आधिदेविकाऽआधिभौतिकाऽध्यात्मिकत्रिविध तापेऽपशमनार्थम् । धर्मार्थ-काममोक्षफलप्राप्त्यर्थं च । ॐ भूर्भुवः । इवः श्रीअमुकपञ्चायतनदेवता-प्रीत्यर्थं यथा ज्ञानेन यथामिलिगोपचार द्रव्यैः पुरुषसूक्तेन ध्यानाऽवाह-नादिषोडशांश्चारैः वा पूजनमहं करिष्ये ।

दीपकलशपूजनम् पुण्याहवाचनम् ।

ततः—अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिमाभिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ अप क्रामन्तु भूतानि पिशाचाः मर्त्यतो दिशम् ॥ सर्वेषामविरोधेन शिवकर्म समारम्भे । इति सर्पपात-तान् विकीर्य, आत्मरक्षां शिववन्दनेन कुर्यात् । तत्र क्रमः ईश्वरपूजय नमः ।

पूर्वे ॥ आग्नेयेश्वराय नम आग्नेये ॥ यमेश्वराय नम दक्षिणे ॥ निर्वृ-
 तीश्वराय नम नैऋत्ये ॥ वरुणेश्वराय नम पश्चिमे ॥ वायवेश्व-
 राय नम वायव्ये ॥ सोमेश्वराय नम उदीच्याम् ॥ ईशानेश्वराय नम
 ईशाने ॥ आकाशेश्वराय नम ऊर्ध्वागाम् ॥ अनन्तेश्वराय नम पृथि-
 व्याम् । सर्वेश्वराय नम । सर्वत ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ इति
 मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यान् तत्र पूरके ॥ ३६ ॥ कुम्भके ॥ १२ ॥
 रेचके ॥ १२ ॥ मन्त्रसत्या ॥ तत्र आचार्य दीपकस्तशमणेशादीनां पूजां
 कुर्यान् । तत्प्रकारश्च यथा अथ दीपपूजा । पृष्ठो दिशेति प्रज्वाल्य,
 ॐ पृष्ठो दिशि पृष्ठोऽग्निं पृथिव्या पृष्ठो विश्वा औपधोरानिवेश ॥
 तैरानार महमा पृष्ठोऽग्नी सनो दिवा सरिष स्थातु नक्तम् ॥ नमो
 स्तनन्तायेति पूजयेत् ॥ नमोस्तनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरो-
 रुवाहवे ॥ सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाररते सइक्षकोटियुग धारिणे नमः ॥
 नमस्ते इत्यादिना प्रणमेत् ॥ नम कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने ॥
 नमस्ते केशानान्त बासुदेव नमोऽस्तुते ॥ बासनाढ्यमुदेवस्य वासित भुवन-
 त्रयम् ॥ सर्वभूतनिर्दामाभि बासुदेव नमोऽस्तुते ॥ शुभं भवतु कल्याण
 मातंग्य शुभमवद ॥ नमः सद्गुदिनाराय वीरयोगिनमोऽस्तु ते ॥ इति
 दीपपूजा ॥)-अथ कलशस्थापनम् ॥ ईशानदिग्भागे ऽ ग्रणं मुशोभित
 वैजतं मृदमयं वा कलशं घान्त्योपरि स्थापयेत् ॥ तत्प्रकारश्च यथा-
 भूरमीति भूमिं मशोष्य ॥ ॐ भूमि भूमिस्तपदितिरसि विदग्धाया
 विश्वस्य सुनस्य धर्मो ॥ पृथिवीं यच्छ्वं पृथिवीं ६ ६ पृथिवीं मदि
 ६ सीं वाङ्ममीति घान्त्यं सत्वाप्य ॥ ॐ घान्त्यमसि विनुद्विदेना
 न्प्राणायामोदानायका ध्यानात्वा । दीर्घामनुप्रमितिमायुषेयान्तेनोष
 सर्वना हिरण्यपाणिं प्रतिगृह्णास्वन्निश्च त्रेण पाणिना चक्षुषेना महीनां
 महीनां पयासि ॥ आनित्रेति कलशं स्थापयेत् ॥ ॐ आजिग्र कलशं
 मयात्मा निराश्विनन्त ॥ पुनर्जां निवर्तस्वसानं महस्रं धुद्वोरुधारा
 पयस्वती पुनर्मां विशतां द्रवि ॥ इममे इत्यादिना गङ्गे चेत्यादिना
 पनीथपलं प्रक्षिपेत् ॥ ॐ इममे घण्टाश्रुधोहमणा च गृह्य ॥ त्वां
 यम्पुरायके ॥ गङ्गे च यमुने चैव गोदायि सारस्वति । नमस्ते सिन्धु
 कावेरि जलेभ्यो नमः प्रियं कुरु ॥ या औपधी इति मर्षोपधीं प्रक्षिप्य ॥
 ॐ या औपधीं पूर्वां जामां न्ये ग्गन्धियुगं पुनः । मनेनुयध्ना मह ६०
 शतं घामानि मज्ज ॥ हिरण्यममं इति पद्मरत्नानि । ॐ हिरण्य
 ममं ममयन्तामे भूतस्य नातं पविरेक आसीन् ॥ मदा गार प्रविधी-
 न्नामुनेनाश्रुमैन्वायं पविषा विषेम ॥ या पद्मिनी इति पत्रम् ॥
 ॐ या पद्मिनीयां अक्षय्यं अमुनां पारं पुष्पिणी ॥ पृथग्धितं प्रमृता

स्तानो मुञ्चन्त्व-६ हसः ॥ यवोसीति यवान् ॥ ॐ यवोसि यवया-
 स्मद्वेपो यवयारातोर्दिवेत्त्वान्तरिक्षायत्वा पृथिव्यै त्वाशुन्वन्तोल्लोकाः
 पितृसदनाः पितृपदनमसि ॥ गन्धद्वारमिति गन्धम् ॐ गन्धद्वारां
 दुराधर्षा नित्यपुष्टां क्रीडिणीम् । ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपहृये
 श्रियम् ॥ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ति परुषः परुषः स्वरि ॥ एवानो दुर्वे
 प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ स्योना पृथिवीति मृदः ॥ स्योना पृथिवि
 नोभवानृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छानः शर्म सप्रथाः ॥ अश्वत्थेव इति
 पञ्चपल्लवैस्तन्मुखमाच्छद्य ॥ ॐ अश्वत्थेवो निपदनं पर्णे वो व
 सतिष्ठता ॥ गोभाज इत्किता सथयत्सनवथ पूरुपम् ॥ बृहस्पते इति
 वक्ष्युरमेन वेष्टइत्वा ॥ ॐ बृहस्पतेऽअति यदयोऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतु
 मवजनेषु ॥ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजानतदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥
 उप ॥ मगृहीतोसि बृहस्पतये त्वैपतेयोनिर्बृहस्पतयेत्वा ॥ प्रजा-
 पतेनेति दृष्यत्तैभूपयित्वा ॥ ॐ प्रजापतेनवदेता मन्यो विश्वारूपाणि
 परितावभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वय ६ स्याम पतयो
 रयोणाम् ॥ पूर्णार्वाति कलशोपरि पूर्णपात्रं निधाय पूर्णादर्वि परापत
 सुपूर्णा पुनरापत ॥ यश्नेव विक्रीणा यहा इपमूर्ज ६ शतक्रतो ॥ तत्र
 तत्त्वायामिति वरुणमावाह्य पञ्चोपचारैः पूजयेत् ॥ ॐ तत्त्वायामि
 ब्रह्मणावन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्मिः ॥ अहं मानो वरुणेह
 षोदपुरुश ६ समान आयुः प्रमौषीः ॥ तत्रैव सर्वे समुद्रा इति तीर्था-
 न्यावाहयेत् ॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ आयान्तु
 यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥ ततः कलशं स्पृष्ट्वाऽभिमन्त्रयेत् ॥ कल-
 शस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ॥ मूले त्वस्य स्थितौ ब्रह्मा मध्ये
 मातृगणः स्मृतः ॥ कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥ ऋग्वे-
 दोऽय यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वणः ॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु
 सनाश्रिताः ॥ ततः कलशं प्रार्थयेत् ॥ देव दा नवसंवादे मध्यमाने
 महोदधौ ॥ अयन्नोसि तदा कुम्भः विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ त्वत्तो ये
 सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिता । त्वयि तिष्ठन्ति भुतानि त्वयि
 प्राणा, प्रतिष्ठिता ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
 आदित्या वसत्रो रुद्रा विरवेदेवाः सपैतृकाः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेपि
 यतः कामफलप्रदाः ॥ त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ॥ सान्नि-
 ध्यं कुरुमेदेव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

• ब्राह्मणेभ्यो नमः सम्पूज्य । अयेत्यादि० अमुकोहं मम अमुक-
 कर्मणि पुण्याद्वाचनाख्यकर्म कर्तुमैमिर्वा मोक्ष गुलाव कासने गृह्मपति-
 दैवतैरमुकगोत्रान् अमुकसम्मणो ब्राह्मणान् पुण्याद्वाचकत्वेन युज्मान

वृणो स्वस्ति प्रतिवचनम् ॥ ॐ कारपूर्णे विप्रस्य भवेत्पुण्याहवाचनम् ।
 ततोऽवनिर्कृतजानुमण्डल कमलमुकुलसदृश
 मञ्जलि शिरसा धारयेत् । दक्षिणेन पाणिना सुवर्णपूर्णकलश धारयित्वा
 अङ्गानि धारयित्वा अङ्गानि स्पृशेत् । शिरसि मे सौभाग्यमस्तु मस्तके
 श्रीरान्तिरस्तु चक्षुषो सुतेजोस्तु श्रोत्रयो श्रवणेन्द्रियमस्तु इत्यङ्गानि
 स्पृशन् । ॐ दीर्घा नागानद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपद्मानि च । तेनायु
 प्रमाणेन पुण्य पुण्याह दीर्घमायुस्तु । शिवा आप मन्तु सौमनस्य
 मस्तु अक्षत चारिष्ठम् चास्तु गन्धा पान्तु सौमगल्य चास्तु पुष्पाणि
 पान्तु सौ भ्रयमस्तु । अक्षता पान्तु बहुदेय च नोस्तु शान्ति पुष्टिवृष्टौ
 श्रीयसो मिथा विनयो बहु पुत्र चायुष्य चास्तु । य कृत्वा सर्व वैर
 यक्षक्रिया करणकर्मा रम्भा शुभा शोभना प्रयतन्ते तमहमोङ्कार मार्दि
 कृत्वा ऋग्रजु सामाथर्वणाशीर्जनं बहुश्रुतिसम्मत समनुज्ञात भवद्भिरनु
 ज्ञात पुण्य पुण्याहम् वाचयित्ये, वाच्यताम् ॥ भद्र कर्णेभि शृणुयाम
 देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा । स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवा ॥ सस्तनु भिज्यसो
 मदि देवहित यदायु ॥ ॐ देवानाम्भ्रा सुमतिश्चक्षुषा देवाना ॥
 रातिरभिनो निवर्तताम् । देवानां ॥ सद्यमुपसेदिमा वय देवान आयु
 प्रतिरन्तु जीवसे । दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ॥
 अथात्वदीर्घायुमूर्त्वा रात वरुणानिरोहतात् ॥ न तद्रक्षा ॥ सिन पिशाचा
 स्तरन्ति नानामोन प्रथमज ॥ भोतेन् । यो विमर्ति दाक्षायण ॥
 हिरण्य ॥ सदेवेषु कृणुवे दीर्घमायु । ॐ द्रविणोदा द्रविण सस्तु-
 रस्यद्रविणोदा सनरस्य प्रय ॥ सद् । द्रविणोदा वीरवती मिपनो द्रविणो
 दारा सने दीर्घमायु ॥ सनिता परबान् सविता पुरस्तान् । सवितात्तरातात्
 सनितावराचान् । सनितान सुयुतु सर्वताति सवितानो रासता
 दीर्घमायु ॥ ननो ननो भवति जायमानोऽह्ना केनुरुपसामेत्यमम् ॥ भाग
 देवेभ्यो निद्यात्वाद्यन्प्रथमं मास्तिरस्ते दीर्घमायु ॥ वृक्षादिविद्
 विणानन्तो अस्त्युष्ये अस्त्यदा सहने मूर्ध्ने । हिरण्यदा अमृतत्व भजन्ते
 वासोदा साम प्रतिरन्तु आयु । व्रतजपयम नियमतपस्थाध्यायकनुद
 मनदाननिशिष्टाना सर्वेषा प्राह्मणाना मन समाधीयताम् ॥ समाहित
 मनस स्म । प्रमादन्तु भवन्त । प्रसन्ना स्म । शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु
 तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु श्रद्धास्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु
 कमममृद्धिस्तु वेदममृद्धिस्तु शास्त्रममृद्धिस्तु पुत्रोपप्रसमृद्धिस्तु इष्ट
 सम्पदस्तु ॥ ततो बहिरक्षतान् सिपेन् । अरिष्टनिरसनमस्तु । यत्पापं
 रोग शोऽहमकृपाणातत्तद्दूरे प्रतिहतमस्तु । तन पुनर्मार्षनम् । यद्यद्येय
 म्मदस्तु उत्तरे कर्मण्ययिन्नमस्तु कनरोत्तरमहरहरमिष्टिस्तु । उत्तरोत्तरा

क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम् ॥ तिथिफलमुहूर्तनक्षत्रप्रहजना-
धिदेवताः प्रीयन्ताम् । तिथिकाले सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सप्तहे सलग्ने सदैवते
प्रीयेताम् । दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् । अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीय-
ताम् । इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् । वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः
प्रीयन्ताम् । महेश्व पुरोगाः अमामातरः प्रीयन्ताम् । अरुन्धतीपुरोगाः
पतिव्रताः प्रीयन्ताम् । विष्णु पुरोगाः सर्वदेवा प्रीयन्ताम् । ब्रह्मपुरोगाः
सर्वदेवाः प्रीयन्ताम् । आदित्यपुरोगाः सर्वेप्रजाः प्रीयन्ताम् । ब्रह्मच
ब्राह्मणारच प्रीयन्ताम् । भीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् । अद्वामाहेरवरी प्रीयताम् ।
भगवतो ऋद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती
तुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवतो पुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवन्तौ विष्णुविना-
यकौ प्रीयेताम् । सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् । सर्वाभामदेवताः प्रीयन्ताम् ।
सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् । पुनरुत्ताना बहिस्त्यागः । हस्तारच ब्रह्म-
विद्धिपो हस्तारच परिपन्थिनः । हस्तारच कर्मणो विष्णुकर्तारः शत्रवः
पराभवं यान्तु शाम्यन्तु घोरानि शाम्यन्तु पापानि शाम्यन्तवीतयः ।
पुनर्मार्जनम् । शुभानि वर्धन्तां शिवा आपः सन्तु । शिवा अतिथयः
सन्तु । शिवा ऋतयः सन्तु । शिवा अग्नयः सन्तु । शिवा अतिथयः
सन्तु । शिवा आहुतयः सन्तु । शिवावनस्तयः सन्तु । शिवा ओपधयः
सन्तु । महोरात्रे शिवे स्याताम् । निकामे निरामे नः पर्जन्यो धर्पंतु
फलवत्यो न ओपधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् । इति योग-
क्षेमो वै तत्र कल्पते यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते क्लृप्तप्रजातां योगक्षेमो
भवति ॥ शुक्राङ्गारकबुधशुक्रस्पतिशनिश्चरराहुकेतु सोमसहिताः आदित्य-
पुरोगाः सर्वे प्रजा प्रीयन्ताम् । भगवान्पर्जन्यः प्रीयताम् । भगवान्स्वामी
महासेनः प्रीयताम् । भगवान्नारायणः प्रीयताम् । पुण्यं पुण्याहं वाच-
यिष्ये ब्राह्मणा ब्रू युवाच्यताम् । ब्राह्मं पुण्यमहर्ष्यकच सृष्टयुत्पालन-
कारकम् । वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं भुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणाः मम
गृहे अमुक कर्मणि पुण्याहं भवन्तो ब्रू वन्तु ॐ पुण्याहं ॥ ३ ॥ पुनन्तु
मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदाः पुनीहि
मा ॥ पृथिव्यामुद्घृता यान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम् । ऋषिभिः सिद्ध
गन्धर्वः तत्कल्याणं ब्रू वन्तु नः भो ब्राह्मणा मम गृहे अमुकर्मणि
कल्याणं भवन्तो ब्रू वन्तु ॥ ॐ कल्याणं ॥ ३ ॥ यथेमा वाचं कल्याणि
मावदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्या ॥ शुदायचार्याय च स्वाय चार-
णाय च ॥ प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिदं भूयासमयं मे कामः समृद्ध-
यतामुपपादौ नमतु ॥ सागरस्य यथा ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृताः ॥
सम्पूर्ण सप्रभावा च तां च ऋद्धिं भवन्तो ब्रू वन्तु ॥ ॐ ऋद्धयताम्

॥३॥ सप्तस्य ऋद्धिस्त्यगन्म ज्योतिस्मृता अभूम् । दिवम् पृथिव्या आध्या
 रुदामाविदामदेवानस्वर्जोति । स्वस्तिस्तु याऽ विनाशाख्यया पुण्यकल्याण
 वृद्धिदा । विनायकप्रिया नित्य ताड्य स्वस्ति ब्रु वन्तु न । भो ब्राह्मण
 मम गृहे अमुककर्मणि ह्यस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ आयुष्मते स्वस्ति
 ॥३॥ ततो वरुण जलेनाग्रपल्लवगृहीतेन यजमान ब्राह्मण अभिपि
 ष्येयु ॥ ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्ध भवा स्वस्तिन पूषा विश्ववेदा । स्व
 स्तिनस्तादृषो अरिष्टनेमि स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु । पथ पृथिव्या पथ
 ओषधीषु पथोद्विष्यन्तरिक्षे पथोधा । पथस्वती प्रदिश सन्तु ममम् ।
 त्रिधोरगदमसि विद्वोरनप्रेस्वो विष्णो स्यूरसित्रिष्णोर्ध्रुवोति ॥
 वैष्णवमसि विरुणवे त्वा । अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमा
 देवता वसरो देवता बृहस्पति देवता रुद्रो देवतादित्या देवता मरुतो देवता
 विश्वेदेवा देवता इन्द्रो देवता वरुणोदेवता, मूर्धासिराड्ध्रुवासि-
 र्दधयसि परणीआयुषे त्वा वचंसेत्वा धृष्ये त्वा क्षेमाय त्वा ॥ ॐ यौ
 शान्तिरन्तरिक्षे ॥ शान्ति पृथिवी शान्तिराप शान्तिरोषधय शान्ति
 उत्तरपथय शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व ॥ शान्ति शान्ति
 देव शान्ति सामाशान्तिरेवि ॥ विश्वानि देवसन्ति दुरितानि परासुव
 यमूत्र तन्न आसुव इत्यभिषेक । ततो यजमानो वरुणदक्षिणासकल्प
 कुर्यात् अद्येत्यादि अमुकोऽह ममामुककर्मण साङ्गफलावाप्तये तद्वा-
 क्षिणार्थमिमानि सापस्कराणि सद्दक्षिणादिकानि तानि पूजितब्रह्मणेभ्यो
 विभज्य दातुमुत्सृजेत् ॥ इति ।

नान्दीमुख आह्वयविधिः ।

अथ नान्दीमुखआह्वयविधिः प्रारम्भ्यते ॥ तत्र तावद्वाह्ये जुहुते
 इत्याद्य, यथापदरा स्नान सध्यादि नित्यकर्म समाप्य प्रातरष्टो चतुरो
 वा ब्राह्मणान्निमज्जयेत् ॥ ततो वेद्या गणपतिसहिता गौर्यादिप दश
 मानुषा गनिमाकृतपुद्गजलेषान्यतमेष्वधिष्ठानेषु स्थापयेत् ॥ तपरा ॥
 कृता प्रक्षालितवस्त्ररत्न म्वाचान्ति सहस्रोपमद्वयाणि गृद्धासने
 प्राह्मुख उपविश्य कुरात्रयवजलान्वादाय देवाणां स हृत्य ॥ ॐ
 अद्यामुककर्मोद्भूतगणपति सदिगपोह्यमापूजनमह वक्षिष्ये ॥ इति
 सक्ल्पयेत् ॥ तत पुनराह्वयानादाय ॥ ॐ गणानान्त्या गणपतिः
 इवामां विष्णोऽन्त्या प्रियवति ॥ इवामहे निर्धनान्दधानिधिपति ॥
 इवामह स्वामीमम ॥ आह्वयता निगर्भमात्ममनामिगर्भम ॥ ॐ
 धुर्धुव स्व गणपते इवागच्छ इह त्रिष्टुति गणपति स्वापयेत् ॥ ॐ

प्रदक्षिण क्रमेण गौर्यादिस्थापनम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्गौरि इहागच्छ
 इह तिष्ठ ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ २ ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः मेवेइहा ॐ भूर्भुवः स्वः शशि इहागच्छ इह
 तिष्ठ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्री हा ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवः
 स्वः विजये इहा ॥ ६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जये इहा ॥ ७ ॥ ॐ
 भूर्भुवः स्वः देवसेने ॥ ८ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधे इहा ॥ ९ ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहे इहा ॥ १० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्मातर
 इहागच्छत इह तिष्ठत ॥ ११ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्लोकातर इहागच्छत
 इह तिष्ठत ॥ १२ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः हृष्टे इहा ॥ १३ ॥ ॐ भूर्भुवः
 स्वः पुष्टे इहा ॥ १४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्तुष्टे इहा ॥ १५ ॥ ॐ
 भूर्भुवः स्वः शारदात्मकुलदेवते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
 श्रीरिहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १७ ॥ इति गणपति सहिता एता मातुः
 प्रत्येकमोकारव्याहृतिपूर्वकं मावाह्यं स्थापयित्वा ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषता-
 माज्यस्येति प्रतिष्ठां कृत्वा ॥ प्रणम्यदिनमोन्तेन स्वस्व नाम्ना षोडशोप-
 चारेः पूजयेत् ॥ ततः केनचित्पात्रेण सगुडं विलीनघृतमावाप्य ॐ ऋसोः
 पवित्रमसि शतधारं ऋसोः पवित्रमसि सहस्रधारं देवस्त्वा सविता
 पुनानु ऋसोः पवित्रेण शत धारेण ऋषाः कामदुक्तः ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण
 मातृणामुपरि भित्तिलग्नाः सप्त पञ्च वाधाराहृत्तरोत्तरक्रमेण पातयेत् ॥
 तारक्षपूजयेत् ॥ ततः ॐ आयुष्यं वर्षस्य ६ रायस्योपमोद्भिदम् ॥ १ ॥
 हिरण्यं वर्षं स्वर्गजैत्राया विशताडुमाम् ॥ १ ॥ नतद्रक्षा ६ सिन पिशाचा-
 स्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ६ द्वीतत् ॥ यो भिमर्ति दाक्षायण ६
 हिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ २ ॥ यदावन्तन्दाक्षायणा हिरण्य
 ठं शक्तानीकाय सुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽआवक्ष्णामि शत शारदायायुधम् ।
 ऋजरदष्टिर्यथासम् ॥ ३ ॥ इति वृद्धि सूक्तं पठेत् ॥ अथ नान्दी भ्रातृ-
 प्रयोगः ॥ तत्रादौ गोमयोपलिप्ते देशे भ्रातृसामग्रीं संपाद्य प्रागप्रकुशोत्त-
 रेष्वा सनेषु प्राङ्मुखान् दक्षिणापेकमानुदगपद्गार्गान् पट्टर्ध्ववट्त्रेवरय
 प्रत्यासनसमोपे विलतैलेन दीपं प्रज्वालयेत् ॥ ततः कर्त्ता प्रक्षालितकर-
 चरणः स्वासने उदङ्मुख इषविरय सपवित्रोपकुशः सज्येन आचम्य
 प्राणानायम्य ॥ सजघनं दक्षिणं जान्वा च्य ॥ ताम्बूलादिकमादाय ॥
 ॐ अद्य करिष्यमाणामुरु कर्म निमित्तिकाम्युदधिक भ्रातृ अस्मन्मात्रा-
 दित्रयभ्रातृसम्प्रयिनः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः अनेन ताम्बूलादि

तीर्थं यात्रागमने-भ्रातृघृत भ्रातृविधेयम् । यात्रान्ते गृहमागत्य-
 पूर्ववत् दधि भ्रातृविधेयम् ॥

द्रव्येण कुशरदुरूपा भन्वतो मया निमन्त्रिता ॥ ॐ आमन्त्रिता स्म ॥
 इतिसर्पतो दक्षिणगत मात्रादिदेवदर्भं वदु निमन्त्रय एवमेव तदुत्तगौ
 पित्रादि मातामहादि देवदर्भं वदु च क्रमेण निमन्त्रय तत ॐ अक्रोधनै
 शौचपरैरिति पठित्वा स्वागतम् भवता सुस्वागतमिति प्रार्थयेत् ॥ तत
 पुनस्ताम्र्यूनादिक्मादाय ॐ अद्यामुक्कगोत्राऽस्मन्मातृपितामही प्रपिता
 मह्योऽमुकामुक देव्यो नान्दीमुख्य अनेन ताम्र्यूनादिद्रव्येण कुशरदुरूपा
 भवत्यो मया निमन्त्रिता ॥ ॐ आमन्त्रिता स्म इति निमन्त्रय एवमेव
 पित्रादिमातामहादि दर्भवदुद्वय क्रमेण निमन्त्रयेत् ॥ तत ॐ अक्रोधनै
 शौचपरैरिति पठित्वा ॥ स्वागत भवताम् सुस्वागतमिति प्रार्थयेत् ॥ ततो
 गन्धपुष्पादियुत पाद्य गृहीत्वा ॐ अद्याऽस्मन्मात्रादित्रयसम्बन्धिन
 सत्यसुसप्तका विश्वेदेवा एतत्पादार्घ्यं व स्वाहा नम इति दत्त्वा एवमेव
 पित्रादि मातामहादिदेव्योऽर्घ्यं दद्यात् ॥ पुन ओं अमुकगोत्राऽस्मन्माता
 पितामही प्रपितामहोऽमुकामुकदेव्यो नान्दीमुख्य एतत्पादार्घ्यं त्रेधा
 विभज्य व स्वाहा नम इति मातृवर्गेऽर्घ्यं दत्त्वा, पित्रादिमातामहादि
 यगद्वयऽर्घ्यं क्रमेण दद्यात् ॥ तत ओं अद्याऽस्मन्मात्रादित्रयसम्बन्धिन
 सत्य वसुसप्तका विश्वेदेवा व स्वाहा नम । इति मातृवर्गदेवेभ्य आच-
 मन्तार्थं जल दत्त्वा एवमेव पितृवर्गमातामहवर्गदेवेभ्योऽप्याचमनं दद्यात् ॥
 पुन ॐ अमुक गोत्रास्मन्मातृपितामहीप्रपिता मह्योऽमुकामुकदेव्यो
 नास्मिन्मया इदमाचमन त्रेधा विभज्य व स्वाहा नम इति मात्रादिभ्य
 आचमनं दत्त्वा, पित्रादिभ्यो मातामहेश्वरयाचमनं दद्यात् ॥ तत ओं
 अत्रामघ्नमेति पठेत् । इति निमन्त्रणम् ॥ तत कर्त्ता स्वपुरतः कर्म-
 पात्रं जलेनापूर्य गन्धपुष्पद्रव्यादधियक्षरित कुशास्तत्र निक्षिप्य ॥ ओं
 कर्मपात्रं सम्पन्नमिति प्रयात् ॥ ओं सुसप्तमित्यनुशात ओं अपवित्र
 पत्रिप्रो वा० ओं पुण्डरीकाक्ष पुनात्विति पठित्वा कुशानीत जलेन आ-
 न्धीयोपकरणानि प्रोक्ष्य ओं वैष्णवे नम ॥ ओं कार्तिके नम । ओं
 भूम्यै नम ॥ इति भूमिं सम्पूज्य ओं विष्णवे नम ॥ इति विष्णुं मन्त्रो-
 वाक्कफायै नमस्तारं कुन्यात् ॥ ततो दूर्वाकुशयवजलान्यादाय ॥ देवा
 कानो मह्योर्त्य ओं अद्यामुकगोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीना
 ममुकामुरदेवीना नान्दीमुखीनाम् अमुकगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपि-
 तामगनाममुकामुकरामणा नान्दीमुख्यानाम् तथा च-अमुकगोत्रा
 णामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानामुकामुकरामणा सपत्नि
 कानाममुककर्मनिमित्तारं मयासुसप्तक- विश्वेदेव्यर्घ्यं सपिण्डकमां
 ण्डुरयिकभादमं हरित्ये इति संकल्प्य ॥ ॐ कुशपत्रेतिप्राप्त्यानुशात
 रामणयव्यादृष्टं गायत्रीं त्रिपठित्वा विष्णु स्मरेत् ॥ तत ॐ नमो

नमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम ॥ इदं श्राद्धं द्विपीकेश रक्षता सर्वतो
दिश ॥ इति सर्वत्र यवान् गौरसंपपाश्च विकीर्य ॥ वाम कटिं सलग्न
वस्त्राञ्चले नीवींश्चनीयात् । ततः कूष्माण्डं सूक्तेन पावमानेन च
जलमभिमन्त्र्य तेन हरितैः कुशैः पार्श्वं प्रोक्षयेत् । अथासनादिदानम् ॥
तत्र तावदुदङ्मुखः कुशत्रयवज्रलान्यादाय ॥ ॐ अथाऽऽत्मन्मा-
त्रादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनः सत्यवसुसहस्रका विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः
इति कुशत्रयरूपं सत्यं दक्षिणगतमासनं पूर्वाग्रमुत्सृजेत् ॥ एवमेव
पित्रादिमातामहादिदेवैः ऋष्याऽप्यासनमुत्तरोत्तरं दद्यात् ॥ ततः ॐ अथा
मुरुगोत्राऽस्मन्मातृपितामही प्रपितामहो नादीमुख्य इदमासनं त्रेधा विभज्य
वत्वाहा इत्युच्चार्य मातृवर्गे देवतीर्थेन पूर्वाग्रं कुशत्रयमुत्सृजेत् ।
एवमेव पित्रादिमातामहादि वर्गद्वयोरपि दद्यात् ततः ॐ सत्यवसुसहस्र-
का विश्वान्देवानावाहयिष्ये इति ब्रूयात् । आवाहय इत्यनुज्ञातं सत्यवकरः ॥
ॐ विश्वे देवाः सऽग्रागतं शृणुतामऽइमं ॥ हवम् ॥ एदं वहिन्निपीदत
इत्यावाह ॥ ॐ यत्रोसि यवयास्मद्वेपो यत्रयारावीरित्यनेन यवान्विकीर्य,
ओं विश्वे देवाः शृणुतेमं ॥ हवम्मेयेऽन्तरिक्षेयेऽऽग्नि-
जिह्वाऽऽवतरायजत्राऽऽममथाऽऽस्मिन् वहिंमिमादयध्वम् ॥ इति जपेत् ॥
निश्वेदेवोत्पत्तिनाम्नोरक्षाने ॥ आगच्छन्तु महाभागाविश्वे देवा महा-
वता ॥ ये यत्र योजिता भ्रात्रे साधधाना भवन्तु ते ॥ इति श्लोक
पठेत् ॥ ततः ओं नादीमुखीर्मातृश्राद्धाहयिष्ये इत्युच्चार्य आवाहयेत्य-
नुज्ञातं सत्यवकरः ओं उशन्तस्त्वा निधीमहाशन्तं समिधीमहि । उशन्तु-
शतऽऽवाहमातृर्हविषेऽअत्तवे ओं मातामहान्हविषेऽअत्तवे इति मन्त्रो-
हेन यथा क्रमं पित्रादीन्मातामहादींश्चावाह ॥ प्रदक्षिणं यत्रान्विकीरेत् ॥
ततोदेवपूर्वकं पटसु स्वर्णादिपात्रेषु प्रतिपात्रं पवित्रं द्वयं पवित्रं वा निधाय
ॐ शन्नो देवीरभिष्यन्त्यापो भवन्तु पीतये ॥ शन्न्योरभिष्यन्तुन ॥
इति प्रत्येकं पात्रेणैव निषिध्य ॥ ॐ यत्रोसि यवयास्मद्वेपो यवयारावी-
रिति देवपात्रत्रयेषु यवान्निक्षिप्य यत्रोसि सोमदैवत्यो गोसधो देवनि-
र्मितः ॥ प्रत्नमङ्घ्रिं प्रक्ष्णं पुष्टयानां दीमुखालोकान् श्रीणाहिनं स्वाहा ॥
इति मन्त्रेण श्राद्धार्घ्यपात्रेषु यवान् क्षिपेत् ॥ तत्र सर्वत्र तृष्णीं गन्धं
पुष्पाणि च दत्त्वा ॥ ॐ अर्घ्यपात्रं संपत्तिरस्त्विति ॥ अस्त्वर्घ्यपात्रसंपत्ति-
रित्यनुज्ञातो देवार्घ्यपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रे पलाशादिपात्रे पूर्वाग्रे
विन्यस्य ओं यादिव्या आपः पयसा सवमूवुर्य्याऽऽन्तरिक्षाऽऽवतपा-
र्धिवीर्य्या ॥ हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान्ऽआपः शिवा सर्तं स्योना
सुहवा भवन्तु इत्यभिमन्त्र्य कुशत्रयवज्रलान्यादाय ॥ ओं अथाऽऽत्मन्मा-
त्रादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनः सत्यवसुसहस्रका विश्वेदेवा एव वोऽर्घ्यो नमः इति

जुहोमि स्वाहा इति ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य
 पा ६ सुरे स्वाहा, इति च पठित्वा ॥ ॐ विष्णो हव्यं ठं रक्ष इत्यनया स्वा-
 ह्मष्ट मयोमुखमनस्य मन्नेऽवगाह्यदमन्नम् इमा आपः-इदं माग्यम् इदं हवि-
 रित्युक्त्वा ॥ ॐ अपहताऽअसुरा रक्षा ६ सिवेदिषद ॥ इति यवान् विकीर्य
 वामकरेण पात्रं स्पृशन् कुशत्रयवजलान्यादाय ॐ अद्यास्मन्मात्रादि-
 ग्रयश्रावसम्बन्धिनः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा इदमन्नं घृताद्युपस्कर-
 सहितं परिविष्टं हव्यममृतरूपं वो नमः ॥ इति संकल्प्यासनदक्षिणा
 भागे जलमुत्सृजेत् ॥ एवमेव पित्रादिमातामहादिदेवेभ्योऽप्यन्नमुत्सृजेत् ॥
 पुनः गात्रादिपात्रमात्मन्य ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य
 सुरेऽअमृतेऽअमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा
 निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पा ६ सुरे स्वाहा ॥ इति पठित्वा, ॐ विष्णो
 हव्यं ठं, रक्ष इत्यन्ने अङ्गुष्ठं निषेस्य ॐ अपहता इत्यन्नपात्रं परितो
 यरान्विकीर्य कुशत्रयवजलान्यादाय ॐ अमुकगोत्राऽस्मन्मातृपितामही-
 प्रपितामहोऽमुकामुक देव्यो नान्दीमुख्य इदमन्नं घृताद्युपस्करसहितं
 परिविष्टं हव्यममृतरूपं त्रेधा विभज्य वः स्वाहा नमः इत्युत्सृजेत् ॥ एवमेव
 पित्रादिपात्रं मातामहादिपात्रं च क्रमेण पात्रालम्भनादिपूर्वकं संकल्प्य
 दद्यात् ततः ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्व-
 मच्चिद्रमस्तु इति प्रार्थ्य नान्दीमुखान्मात्रादीन्प्रायश्चित्तं दधपूर्वकं भोजन-
 पात्रेषु किञ्चिद्विचिदपो दत्त्वा यथासुखं जुपस्वमिति ब्रूयात् ॥ ततः प्राग-
 प्रकुशोत्तरासनो प्रविष्टः प्रणवव्याहृति पूर्विकां सकृत्त्रिंशं गायत्रीं
 जपत्वा ॥ ॐ मधु मधु मध्विति च जपेत् ॥ न मधुयाता इति द्यूचन
 पितृमन्त्रान् ॥ ततः ॐ कृणुष्वपाजः असितिन्नं पृथ्वीं व्याहि राजेवामर्षो-
 ऽइमेन ॥ तृप्तीमनुप्रसितिन्द्र णानोस्तासि विवद्वधरक्षस्तपिष्टैः ॥ १ ॥
 तत्रब्रह्मासऽ आसुया पतन्त्यनुस्पृशधृपताः शोपुधानः ॥ तपू ६ द्युमे
 जुह्वा पतङ्गा नसन्दितो द्विस्तृज विष्णुगुल्फाः ॥ २ ॥ प्रतिस्पृशो-
 विमृतं तृणितमा भवा पायुं विंशो ऽ अस्या ऽ अदब्धः ॥ यो नो
 दूरेऽ अवशर्तं, सीयो ऽ अंत्यग्ने मास्तिष्ठे वयश्चिरा दधरान् ॥ ३ ॥ वदग्ने
 तिष्ठ प्रत्या तनुष्यन्था मित्रां ऽऽ आपतात्तिग्महेते ॥ योनोऽअरातिष्ठं,
 समिधानं चक्रे नोवा तवक्ष्यत सन्न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वोभयप्रतिविद्धया
 स्मदा विष्णुष्वप्य देव्यान्त्यग्ने ॥ अवस्थिरा तनुदि या ॥ जूनाञ्जना मिम-
 जामिप्रमृणीहि शत्रून् ॥ अग्नेष्टृना तेजसा सादयामि ॥ ॥ इति रक्षोघ्न
 सूक्तम् ॥ ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाविद्यः ॥ पुनन्तु द्विश्वा,
 भूतानि जातवेदाः पुनोहि मा ॥ १ ॥ आप्यायन् समेतुते विररतः मीम,
 वृष्यं भवा याजस्य सङ्गये ॥ २ ॥ शिरो मे श्रौर्यशो मुयं दिरधिः केतांश्च श्म

श्रृणु ॥ राजा मे प्राणोऽ अमृतं, सम्प्राट् चतुर्विराट् श्रोत्रम् ॥३॥ जिह्वा
मे भद्र वाङ्महो मनो मन्यु स्वराह् भाम भोदा प्रमोदा ऽ अङ्गुली
रगानि मित्रम्मे सह ॥ ४ ॥ घाहू मेवलमिन्द्रिय ठं हस्तौ मे कर्म
वीर्यम् ॥ आत्मात्तत्रपुरो मम ॥ ५ ॥ पृष्टीम्मे राष्ट्र मुदरमठं, सो प्रीवारश्च
श्रोणी ॥ ऊरु ऽ अरतिन जानुनी त्रिशोमेहानि सर्वत ॥ ६ ॥ नाभिम्मे
चित्त विज्ञानम्पायुम्मेऽ पचिति भसत् ॥ आनन्दनन्दा वाङ्मो मे भग
सौभाग्य पस जघान्या पद्मया धर्मो ऽ स्मि विशि राजा प्रतिष्ठित ॥ ७ ॥
पय पृथिव्या पय ऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधा ॥ पयस्वती
प्रदिश सन्तु मह्यम् ॥ ८ ॥ इति पवमानसूक्तम् ॥ ॐ सहस्रशीर्षा
पुरुष इत्यादि षोडशर्चपुरुषसूक्तमभ्यानि शिवसङ्कल्पप्रभृतीनि पवित्राणि
मङ्गलानि च जपेत् । तत सर्वव्यजनोपेतमन्त्रादय सयवमादाय वारिणा-
प्लाव्य प्रागप्रास्तुत कुशोपरि ॐ अग्निदग्धारश्च ये जीवा येऽप्यदग्धा कुले
मम ॥ भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायान्तु परा गतिमिति विकीर्य ॥ आचम्य
विष्णु स्मृत्या पुन किंचित्किंचिदपो दत्त्वा गायत्री मधुमधुमध्विति च
जप्त्वा ॐ सम्पन्नमिति नूयात् सुसम्पन्नमित्यनुज्ञात पिण्डानहं करित्ये ॥
इतिपृच्छेत् ॥ कुरुप्तेष्व नुज्ञातो बालुकाभिरचतुरस्र प्राकृष्टव मुदकृष्टव
वा मण्डकत्रयं कृत्वा तन्मध्ये । ॐ अपहृता ऽ असुरा रक्षाधिसि वेदिपद
इति प्रागर्च रेखात्रय कृत्वा प्रत्येकरेलोपरि, ॐ ये रूपाणि प्रतिगुह्य
मानाऽअसुरा सन्त स्वाहया चरन्ति ॥ परा पुरोनिपुरोये भरन्त्यग्नि
घ्रातृकाऽकान्प्रणुदात्यस्मादित्यगारान् ध्यामयेत् ॥ तत्र रेखात्रयोपरि समूलान्
प्राप्तानुदगमान्या कुरानास्तोर्य ॐ देमताम्य इति त्रिजपेत् ॥ ततो
नवपुत्रकेषु जलययगन्धपुष्पाणि कृत्वा एक पुरकं वामहस्ते कृत्वा
कुरादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रेऽस्मन्मातरमुकदेवी नादीमुखि
अत्राग्नेनिदरते स्वाहा इति धर्ममूले मात्र अवनेजनं दत्त्वा एवमेव पिता
महीप्रपितामहोऽपि मध्यामयो धमेण दद्यात् ॥ तत ॐ अद्यामुक
गोत्राऽस्मदित्यनरमुकशर्मन् नादीमुखा ऽत्रावने निदर ते स्वाहा इति
द्वितीयमण्डलमितकुरात्रयमूले पित्रेऽवनेजनं दत्त्वा एवमेव पिता
महप्रपितामहोऽस्तत्तत्कुरामध्यामयोऽखोजन दद्यात् ॥ एवमेव माता
महादिबद्धर्म गूलमप्यपु दद्यात् । तत सर्वव्यजनोपेत मन्त्रविध
मन्नयुद्धत्य दूत शोणान्दधि बदरयवे ममिरयनयपिण्डान विन्लोप
माग्निमाय एक पिण्ड कुरार्णा रक्षादाय ॐ अमुकगोत्रेऽस्मन्मातामुकदेवि
नान्दामुगिष्य दधि बदराक्षत मिश्र पिण्डस्ते नम ॥ इत्यवनेजनममेणा
वनेजनस्थानेषु मात्रादिभ्य पिण्डान दद्यात् ॥ तत ॐ अमुक गोत्राऽ
स्मदित्यामुक शर्मन्मार्ता मुग्य एव दधि बदराक्षत मिश्र पिण्डस्ते नम ॥

इति पितृस्थाने दद्यात् । ततो दर्भं मूलेषु मूपाणिस्थं पिण्डलेपं विमृज्य
हस्तौ प्रक्षाल्याचम्य हरिं स्मरेत् ॥ ततो मात्रादि पिण्डाभिमुखान्जलिं वृद्धा ॥
ओं अत्रमातरो मादयध्वं यथा भागमावृषायध्वमिति जपित्वा उदङ्मुखी
भूय श्वास नियम्य प्रदक्षिणं परावृत्य, ओं अमीमदन्त मातरो यथा भागमा
वृषायिषन्, इति जपेत् ॥ एव पित्रादि पिण्डाभिमुखो भूत्वा ओं
अत्रपितरोमादयध्वमित्यादि जपित्वा मातामहादिपिण्डाभिमुखोभूत्वा ॐ
अत्रमातामहादयो मादयध्वमित्यादि जपित्वा ऽ सूत्रियम्य ॐ अमी-
मदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत् ॥ ॐ अमीमदन्त मातामहा यथा-
भागमा वृषायिषतेति जपेत् ॥ ततोऽवनेजनपात्र जलेन ॐ अमुक गोत्रे
मातरमुकदेवि नांदि मुखि अत्र प्रत्यवने निक्ष्वते स्वाहा ॥ इति मातृपिण्डो-
परि प्रत्यवनेजनं दत्त्वा ॥ एवमेव पितामही प्रपितामहीभ्यां तथा ॐ
अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन्नांदीमुखि अत्रप्रत्यवनेजननिक्ष्वते स्वाहा, इति
पितृपिण्डोपरिदद्यात् ॥ एवमेव पितामहादिभ्यः पञ्चम्यस्तत्तत्पिण्डोपरिद-
द्यात् ॥ ततो नीवीं विस्रंस्य आचम्य ॐ नमो वो मातरो रसाय नमो
वो मातरः शोषाय नमो वो मातरो जीवाय नमो वो मातरः स्वाहायै नमो
वो मातरो घोराय नमो वो मातरो मन्यवे नमो वो मातरो मातरो नमो
वो गृहान्नो मातरो दत्ततोवो मातरो देधम ॥ इति मात्रादि वर्गं नम-
स्कृत्य ॥ ॐ नमो पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो
जीवाय नमो वः पितरः स्वाहायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो
मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरोदत्त सतो वः पित-
रादधम इति पित्रादि मातामहादि वर्गद्वयं नमस्कुर्यान् ॥ ततः ॐ एतद्वो-
मातरो वास इति मात्रादि पिण्डेषु सूत्राणि दत्त्वा ॥ ॐ एतद्वः पितरो-
वास इति पित्रादि षट् पिण्डेषु प्रति पिण्डं सूत्रत्रयं दद्यान् ॥ ततो गन्ध
पुष्प धूप दीप द्राक्षांमलकमूलयवतांबूल दक्षिणादिभिः प्रतिपिण्डम-
भ्यर्च्य ॥ ॐ शिवा आपः सन्तु इति भोजनपात्रपुष्किलिङ्गजलं दत्त्वा
ॐ सोममस्यमस्त्विति पुष्पाणि ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति यथांश्च
दद्यान् ॥ ततः ॐ नान्दीमुख्योमातरः पितामहाः प्रपितामहाः प्रीयंतामिति-
क्षीर यमोदकमक्षय्य स्थान देवः ॥ एवमेव पितरः पितामहाः प्रपितामहाः
प्रीयंतामिति पित्रादियमं ॥ मातामहाः प्रमातामहाः वृद्धप्रमातामहाः
सपरितकारच प्रीयन्तामिति मातामहादिवर्गे च प्रत्येकमक्षय्योदकं दद्यात् ॥
ततः कृताञ्जलिः प्रायेत् ॥ ॐ अघोरा मातरः सन्तु ॐ अघोराः पितरः
सन्तु ॥ ॐ अघोरा मातामहाः सप्तजीवाः सन्त्विति चोत्था ॥ मन्त्रित्य-
नुज्ञातः ॥ ॐ गोत्रंनोवर्द्धतां दातारो नोभिवर्द्धन्ता वेदाः संततिरेव च ॥
भद्राचनो माव्यगमन् बहुदेवं चनोऽस्तु ॥ अघ्नं चनो बहुमघेदित्यारचनमे

मही । याचितारश्चन सन्तु माचयाचिष्मकचन एता सत्याश्रिप
 सत्विति ब्रूयात् सत्वित्युक्ते सपवित्रान्कुशान्प्रत्येकं मात्रादित्रयपिण्डे
 पित्रादित्रयपिण्डे मातामहादित्रयपिण्डे च कृत्वा ॥ नान्दीमुखीर्मतृपिता
 मही प्रपितामही नान्दीमुखान् पितृपितामह प्रपितामहान् नान्दीमुखान्
 मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमाता महान् सपत्निकान् स्वान् वाचयिष्य इति
 षुष्ट्रा वाचयतामित्यनुज्ञात ॐ नान्दीमुखो मान् पितामही प्रपि
 तामहो नान्दीमुखा पितृपितामह प्रपिता महा नान्दीमुखा
 मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महा सपत्निकाश्च प्रीयन्ता
 मितिप्रार्थ्य प्रीयन्तामिति द्विजैश्च्यमानो पिण्डेषु जल निषिचेत् ॥
 ततः सस्रव पात्राण्युत्तानीकृत्य दक्षिणा दद्यात् कुशत्रय यवजलान्या
 दाप, ओं अद्यात्मन्मात्रा दित्रय आह सप्तभि वैश्वदेविक इध
 प्रतिष्ठार्थमिमा द्राक्षाभलकर्द्रक मूलकादिरूपा दक्षिणा विष्णु दैवत्याम-
 मुक्कगोत्रायामुक्कशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज ॥ इत्युच्चाप्य दद्यात् ॥
 एतमेव पित्रादि मातामहादि वर्गदक्षिणा दद्यात् । ततः ॐ अद्यामुक्क
 गोत्राणां मान् पितामही प्रपितामहीना नान्दीमुखीना इतै तदाशुर्दायिन्
 आह प्रतिष्ठार्थमिमा द्राक्षाभलकर्द्रक मूलकादिरूपा दक्षिणा विष्णु
 दैवत्याममुक्क गोत्रायामुक्कशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज ॥ इति मात्रादि
 वर्ग दक्षिणा दद्यात् ॥ एतमेव पितृवर्ग मातामहवर्गापि दक्षिणा च
 दद्यात् ॥ ततः पिण्डानुत्थापयामि इति षुष्ट्रा उत्थापय इत्यनुज्ञात
 पिण्डानुत्थाप्य पात्र दृष्ट्वाऽऽत्रायदभानुलमुक् च बह्वै क्षिपेत् ॥ ततो
 जलदानं पूर्वम् । ॐ निश्नेदेया प्रीयन्तामित्युक्तरा । प्रीयन्तामित्य
 अनुज्ञात न्यसिभरन्तो ब्रुवन्तु इति ब्रूयात् स्वस्तो ह्युक्ते प्रणिपत्य ॐ
 वाचरात्रत वाचिनो नापनेषु त्रिमाऽ अमृताऽ अमृतज्ञा ॥ अम्यमभ
 पितर मादयन् तृष्णायात् पथिभिर्देयशाने ॥ इति मात्रादीन् पित्रादीन्
 मातामहादीन् च सिस्तृत् ॥ ततः ॥ आमायाजस्य प्रमरा जगम्यादेमेष्टा
 या पृथिवीयिष्य रूप ॥ आमागता पितरा मानरा चामा मोमाऽअमृ-
 तत्वेन गम्यान् ॥ इति पठित्वा प्रक्षालणी कृत्य रक्षादीप निर्वापण पाणि-
 भ्या कृत्या हस्तो पादौ प्रक्षाल्याचम्य पिडां गत्रादिभ्योऽन्त्याऽ अष्टौ
 पद पा विप्रान्प्रभूत घृतान्नेन भोजयेत् ॥ ततः उच्यते माजंतादि करणा-
 नन्तर येन्यदेव बलिर्ब्रह्म कृत्या ॐ प्रमादा न्युयंता ब्रह्म इति पठित्वा
 ब्रह्मपूजि कामो विष्णु ब्रह्म ॥ ततो येन्य न्यान्ने सुवभृत्यवायवानिधि
 संयुक्ताऽग्नीषान् ॥ इत्याग्युदयिष आहवदति ॥ अथ सारथिर नान्दी-
 भादपदति ॥ तत्र नावा गण्यर्षामहि पादशमाया पृथन घृतारा
 पूथन य पूर्वोक्त्यन कृत्या ॐ आयुष्य यंभ्यमिति मन्त्रत्रय पठेत् ॥ ततः

उद्दु मुग् उपविश्य । आचम्यप्राणा नायम्य ॥ नेशकालौ सकीर्त्य अथ
अर्त्तव्यामुक्त कर्म निमित्तक सारल्यिक नादीमुखश्राद्ध करिष्ये ॥ इति
मरुत्पयेत् ॥ तत दक्षिणोत्तर क्रमेण ॐ सत्यशु सज्ञका विश्वेदेवा
नादीमुखा ॐ भूर्भुव स्व इद व पाद्य पादावनेजन पादप्रक्षालन
वृद्धि ॥ तत ॐ अमुक गोत्रामातृपितामह प्रपितामहो नान्दीमुख
ॐ भूर्भुव स्व इद व पाद्य पादावनेजन पादप्रक्षालन वृद्धि ॥ ॐ
अमुक गोत्रा भितृपितामह प्रपिता महा नादीमुखा ॐ भूर्भुव स्व इद व
पाद्य पादावने जन पाद प्रक्षालनवृद्धि । ॐ अमुकगोत्रा मानामह प्रमाता
तत वृद्धप्रमातामहा सपत्निका नादीमुखा ॐ भूर्भुव स्व इद पाद्य पादावने
नेन पादप्रक्षालन वृद्धि ॥ अथासन गानम् ॥ स प्रसुसज्जकाना विश्वेपा
त्रेयाना नान्दीमुगानाम् ॥ ॐ भूर्भुव स्व इदमानम सुग्रासन स्वाहा
ति कुरात्र स र्ननो दक्षिणगत पूर्वाप्रमुत्सजेन ॥ एर स र्नन ॥ ॐ
नान्दीश्राद्ध जगोत्रियेताम् तथा प्राप्नुता भयन्तौ प्राप्नुता भयन्तौ
प्राप्नुयाव इति पठेत् ॥ तत ॐ अमुक गोत्राणा मातृपितामही प्रपिता
महीना नान्दीमुगीताम् ॥ ॐ भूर्भुव स्व इदमानम सुग्रासन स्वाहा,
ॐ नान्दी श्राद्धे जणे क्रियेता तथा प्राप्नुता भ न्तौ प्राप्नुयाव ॥ ॐ
अमुक गोत्राणा भितृपितामह प्रपितामहाना नान्दीमुगानाम् ॐ भूर्भुव
स्व इदमानम सुग्रासन स्वाहा । ॐ नान्दीश्राद्धे जणे क्रियेता तथा
प्राप्नुता भयन्तौ प्राप्नुयाव ॥ ततो गन्धाविधानम् ॥ ॐ सत्यशु
मतक्षेयो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्य ॐ भूर्भुव स्व इद
व वाद्यर्चन स्वाहा सपचना वृद्धि ॥ ॐ अमुक गोत्रेशो मातृपितामही
प्रपितामहेभ्य नागीमुखेभ्य ॐ भूर्भुव स्व इद गन्धार्चन स्वाहा
सपचना वृद्धि ॥ ॐ अमुक गोत्रेश भितृपितामह प्रपितामहेभ्यो
नादीमुखेभ्य ॐ भूर्भुव स्व इदगन्धार्चन स्वाहा सपचना वृद्धि ॥
ॐ अमुक गोत्रेशो मानामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्य सपत्निकेशो
नान्दीमुखेभ्य ॐ भूर्भुव स्व इदगन्धार्चन सपचना वृद्धि ॥ ततो
नोचन निश्रय द्रव्य दातम् ॥ ॐ मायवमुनयथा विश्वेदेवा नादी
मुखा ॐ भूर्भुव स्व इद वायुम प्राणमोचन पर्याप्त दास्यमान भद्र
तिष्ठत्य भूत किञ्चिद्विद्यममनस्त्वेण स्वाहा सपचना वृद्धि ॥ ॐ
अमुक गोत्रा भितृपितामह प्रपितामह नादीमुखा ॐ भूर्भुव स्व इद
यो युग्म दातम् ॥ तत मत्तीर मुदकदानम् ॐ नादीमुखा सत्यशु
मत्तीरविश्वेदेवा प्रीयताम् ॐ अमुक गोत्रा मातृ पितामही प्रपितामहो
नादीमुख गिरिश मह प्रपितानना नादीमुखा द्वितीयगोत्रानामाह
प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा नान्दीमुखा सपत्निकाश्च प्रीयताम् ॥ तत

ॐ स्वस्तिनऽऽन्द्रो वृद्धश्रवा इति मन्त्रं पठेत् ॥ अथ दक्षिणा दानम् ॥
 ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दी-
 श्राद्धस्य फलं प्रतिष्ठा सिद्धिर्न्यथं द्राक्षामलकयवमूलं निष्कयी भूतां दक्षिणां
 दातुमहमुत्सृजे ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यो मातृपितामही प्रपितामहीभ्यो
 नान्दीमुखीभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलं प्रतिष्ठा सिद्धिर्न्यथं द्राक्षामलक
 यवमूलं निष्कयी भूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्य
 पितृपितामह प्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल-
 प्रतिष्ठा सिद्धिर्न्यथं द्राक्षामलकयवमूलं निष्कयीभूतां दक्षिणां दातुमह-
 मुत्सृजे ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामह
 वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्तिभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य
 फलप्रतिष्ठा सिद्धिर्न्यथं द्राक्षामलकयवमूलं निष्कयीभूतां दक्षिणां दातुमह-
 मुत्सृजे ॥ माता पिता महीचैव तथैव प्रपितामही ॥ पितापितामहश्चैव
 सद्यैव प्रपितामहः ॥ १ ॥ मातामहस्तृपितावप्रमातामहकादयः ॥ एते
 भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु सुमङ्गलम् ॥ २ ॥ इति प्रार्थयेत् ॥ अस्य नान्दी-
 श्राद्धस्य कर्माङ्ग देवताः प्रीयन्ताम् अस्मिन्नान्दी श्राद्धेन्युनातिरिक्ताया विधिः
 सोपविष्ट ब्राह्मणानां यवनाभ्रान्दीमुखप्रसादात्सर्वः परिपूर्णोऽस्तु अस्तुप-
 रिपूर्ण इति विधाः ॥ समाप्ताः ॥

अथ नित्यश्राद्ध प्रयोगः ।

आचम्य प्राणानायम्य । ॐ पवित्रेस्थो वै० इति मन्त्रेण दक्षिण
 यामश्नयोरनामिकायां कुशपवित्रे धृत्वा ॥ सङ्कल्पः ॥ अद्भ्येत्यादि एवं
 विरोपणं विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ ममाऽत्मन भुति स्मृति पुराणोक्त गुण
 फल प्राप्तरथं (अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां सप्तर्षीकानां तथा च
 अमुक गोत्राणां अमुक शर्मणां अस्मन्मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमाता-
 महानां सप्तर्षीकानां नित्यश्राद्धं भर्तुं करिष्ये ॥ ततः दक्षिणां दत्त्वा ।

अथ सामग्री

रोली । मोली । गुगरी । ४० । अक्षत । रक्तवज्र गज १ । माला
 मोही । पुष्प । धूप । नेवेय । नागर पान । २१ ईलायची । लीम । मेवा ।
 नानोर । घृत । कपूर । सिन्दूर । श्यामबी । मुपेद सरसो । कुरा । पूर्वा ।
 पता । दोना । ४० । जव । तिल । सरादंनग । ४० । दधि । दुग्ध
 मधु । मीठ । शर्बिला । बेर । दाल । अंगोछा । १२ । थोनी मोहा । १० ।
 बेनर । पट्टन । जवेऊ मोहा ११ । गुण्यं दक्षिणा । १ वज्रदक्षिणा । १२ ।
 पाक । इति नान्दीमुख श्राद्ध सामग्री ॥ इति ॥

यथा, अमुकगोत्राणामस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुक शर्मणां सपत्नीकानां दक्षिणां दत्त्वा भवद्भिः प्रसादः कर्तव्यः सुकर्तव्यः । एवं मातामह प्रमातामह शुद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां गोत्रनामोच्चारपूर्वकं दक्षिणां दद्यात् ॥ ततः पित्राद्यो मातामहाश्च इदं वः पादयमिति पाद-
यन्दस्वाऽऽचम्य कुशासने उद्बहुमुख उपविश्य पितॄणां मातामहानां चेदमासनम् ॥ पित्र्येक्षणः क्रियाताम् । प्राप्नोतु भवान् प्राप्नुवानि । पितरो मातामहाश्च एव वो गन्धः सुगन्धः । इमानि पुष्पाणि सुपुष्पा-
णि । अयं धूपः सुधूपः अयं दीपः सुदीपः । आच्छादनं दत्त्वा पूर्णतां वाचयित्वा द्विगुणं मामान्नं पात्रे संस्थाप्य प्रोक्ष्य पात्रमालम्ब्य तिलान्बि-
कोर्य आमन्त्रेऽङ्गुष्ठं दत्त्वा । पितरः इदं वः आमन्त्रं सोपत्करं गयेयं भूः गदाधरो विप्रः ब्रह्मरूपमिदं पितॄभ्यः अमुक गोत्रेभ्यो-
अमुक शर्मभ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः स्वधा मातामहादिभ्यश्चेदमा-
मन्त्रं स्वधा सम्प्रदातां जमः । दत्तमामान्नं मरुच्यमस्तु । अस्तस्त्वक्षयम् । श्रीगयागदाधरः प्रीतो भवतु । ब्रह्मार्पणमस्तु । ॐ मधुज्वाताऽऽहतायते मधुक्षरान्ति सिन्धवऽः । मादूधीर्न्तऽः सन्त्वोषधीऽः ॥१॥ मधुनक्त मुहो पतो मधुमत्पार्थिव ॥ रजः । मधुदधौ रस्तुनऽः पिता ॥२॥ मधुमात्रो व्यतम्पतिम्मधुमौ २ ॥ अस्तुसूर्यः । माद्रीर्गावो भवन्तु नऽः ॥३॥ (इति मन्त्रा ब्रह्मणेन पठनीयाः) ॥ ॐ मधु मधु मधु ॥ सुप्रोक्षितमस्तु । अस्तु सुप्रोक्षितम् । शिवा आपः सन्तु । सन्तु शिवा आपः । सौमनस्य-
मस्तु । अस्तु सोमनस्यं । अक्षतं चारिष्टं चास्तु । अस्तु अक्षतं चारिष्टं च । दीर्घमायुःश्रेयः पितरः ॥ ॐ पितॄभ्यः स्वधायिभ्यः । स्वधानमः । पितामहेभ्यः । स्वधायिभ्यः । स्वधानम् । प्रपिता महेभ्यः । स्वधायि-
भिः । स्वधानमः । अक्षन्नपितरो ममिदन्त पितरो वीतृपन्त पितरऽः पितरऽः शुन्यदम् ॥५॥ इति मन्त्रेण स्वस्तीति ब्रूयात् कुशपवित्र त्यागः) अर्पणम्-अनेन मयाकृतेन । नित्यभ्रातृ कर्मणा मम पित्रादि स्वरूपी-
जनार्दन वामुदेव प्रीयताम् ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति नित्यभ्रातृ प्रयोगः ॥

अथ तीर्थभ्रातृ विधिः ॥

तत्र क्रमः । आसनमित्युद्धदानं च पुनः प्रत्यक्षनेजनम् दक्षिणा-

सहस्रं तितुसाग्रदकारिकं तमन्वगुहजप्यवर्ता तितुतीपेनरेदम् ॥ ४ ॥
पूर्वप्रयोगवद् ॥ —अत्र सिद्धेऽः गोरीचन्दन तिलाक्षरैश्च मुगन्धि पुष्पाणि
सगन्धि पुष्पाणि वृक्षबीजं मधुरादीनितितुसां देवानि ॥

चान्न सङ्कल्प्य स्तीर्थं श्राद्धेष्वयं विधिः ॥ अर्घमावाहनञ्चेद्विजाह
गुणनिवेशनम् । तृप्तिं पश्च च विकिर तीर्थं श्राद्धे विवर्त्तयेत् । नावा
हन नदिगवन्ध्यो न दोषो दृष्टि सम्भव सकारुण्यञ्च कर्त्तव्य तीर्थश्राद्ध
विचक्षणैः । तीर्थं श्राद्धे धूरि लोचन विश्वेदेवा पूर्वक अमुकतीर्थं प्राप्ति
निमित्तक श्राद्ध करिष्ये । इति सङ्कल्प इति तीर्थस्नान विधिः । अथ
तीर्थोपनाससङ्कल्पः । अथ हेत्यादि अमुकशर्माह सकलपापक्षयार्थं अमुक
तीर्थे क्षेप्रोपवासं व्रतमहं करिष्ये । अद्यस्थित्वा निराहार सर्वभोग
विवर्त्तित भो मोक्षे पुण्डरीकाक्ष शरणं मे भवाच्युत इति पठेत् । अथ
श्राद्धः । य इह यद्वान्तविदो वदन्ति परमं प्रधानं पुरुषस्तथान्ये विश्वो
द्गते कारणमारवरन्त्या तस्मै नमो विष्णुविनाशनाय ॥ शुक्लावरधर
विष्णु शशिबण चतुर्भुजम् प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
इति नमस्कृत्य दक्षिण भागे भूमौ चन्दनेन शस्त्रधाम् लिखित्वा तत्रासनार्धं
कुशत्रयं धृत्वा तत्रा सनाथं तत्र कर्मपात्रे संस्थाप्य पात्रे पवित्रम् । ॐ
पवित्रेऽस्यो वैष्णव्यौ सवितुर्व्यं - असवऽ वत्पुनाम्य द्वि
द्वद्वेणपत्रिद्वेण सूर्यस्य रश्मिभिः - तस्यते पवित्रं पते पवि
त्रं पतस्यतकाम पुनेतच्छक्रेयम् ॥ इति मन्त्रेण कर्म
पात्रे । पवित्रीं निधाय, स्वदक्षिणं हस्ता नामिकाया कुश
पवित्रीमत्रधारयेत् ॥ शन्नोदेवीति जलम् । ॐ शन्नोदेवीर
मीष्टयो आपो भवन्तु पीतये शैव्यौ रश्मि भवन्तु ॥ इति जलम् । इति
मन्त्रतः । तिलोपी सोमं त्र्येत्यो गोसत्रो देवनिर्मितं प्रत्नमद्भिः पृक्तं
स्वयया पितृल्लोमान्प्रप्रीणादिन स्वाहा । इति तिलान्क्षिप्त्वा । यावो
क्षितिं यवान् ॥ ॐ यरोसि यवयास्मद्वेपो यवया रातीर्द्वित्वान्तरिक्षा
यत्वा पृथिव्यैत्वा शुन्धता स्लोका पृथिवदता मित्रिपदनमसि । इति
यवान् क्षिपेत् ॥ तत्र परुणानाहनं कुर्यात् ॥ ॐ आवाहयाम्यहं देवीं
गात्वा त्रैलोक्यमातरम् । यस्यास्मरणमात्रेण सर्वपापप्रणासनम् ॥ ॐ भू
भुवः स्व वरुणोऽयं तदा इहागच्छ इहातिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ।
गन्धाक्षतं रजतपुष्पाक्षतादि तूष्णीं निक्षिप्य । कमपात्रं तु सम्पन्नमस्तु ।
अस्तु सुसम्पन्नम् । तेन चनेनात्मानं सर्वाश्राद्धसामर्प्यं सम्प्रोक्षयेत् ।
तद्यथा । अपपित्रं । प्राणानायम्य । ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः । ३ ॥
अपमन्त्र्येन नौदीवन्धनम् । सोमस्य निर्विरसि विष्णो शर्माशि शर्म
यनमानस्येन्द्रस्य योनिरसि शुषस्या कृषीच्छुधो इति निविबन्धनम् ॥
वामकन्यामात्रोपयेत् । ततः सन्ध्येन । ॐ देवताम्यपितृभ्यः महायोगेभ्य एव
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः । इति त्रिर्नपेत् । अपसन्ध्येन ।
ॐ श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गन्धर्वम् । मनमात्रं पितृन्

ध्यात्वा तीर्थं श्राद्धं समारमेत ॥ इति स्मृत्या । सन्ध्येन । प्रतिष्ठा संकल्पः ॥
 अथेत्यादि देशकालौ सङ्गकीर्त्य अमुकगोत्राणां अस्मत्पितृपितामह
 प्रपितामहानां अमुकाऽमुक शर्म्माणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य
 स्वरूपाणां तथा अस्मन्मातामह प्रमाता मद वृद्ध प्रमाता महानां
 अमुकाऽमुकशर्म्माणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां अक्षय
 तृप्रत्ययं पावर्णं श्राद्धं त्रिधानेन धूरिलोचन संज्ञक विश्वेदेवा पूर्वकं अमुक
 तीर्थं प्राप्ति निमित्तकं सपिण्डकमामात्रतीर्थं श्राद्धं करिष्ये । कुरु चेति
 प्रत्युक्तिः । सन्ध्यम् । ततः विश्वेदेवा आसनदानं । अथेत्यादि अमुक
 गोत्रोऽस्मत्पित्रादित्रय श्राद्धं सम्बन्धिनां तथा स्मन्मातादित्रय श्राद्ध-
 सम्बन्धिना धूरिलोचन संज्ञकानां विश्वेषां देवानां इदमासनमस्तु । ॐ
 भू भुवः स्वः इदमामनमास्यतामास्ये । अपसव्यं कृत्वा । अमुक गोत्राणा-
 मस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानाममुकामुकशर्म्माणां वसुरुद्रादित्य
 स्वरूपाणां इदमामनमस्तु भू भुवः स्वः इदमासनमास्यतामास्ये इति
 आसनं दत्त्वा । अस्मन्मातृपितामही प्रपितामहीनां अमुकामुकी देवीनां
 वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां इदमासनमस्तु । भू भुवः स्वः इदमासनमास्य-
 तामास्ये । इति आसनं दत्त्वा । अमुक गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह
 वृद्धप्रमाता महानां अमुकामुकशर्म्माणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य-
 स्वरूपाणां इदमासनमस्तु । ॐ भू भुवः स्वः इदमासनमस्तु । ॐ भुभुवः
 स्वः इदमासनमास्यतामास्ये । इति आसनं दत्त्वा । ततः सव्यं कृत्वा ।
 विश्वेदेवा पूजनम् ॐ नमोऽस्तु नन्ताय सहस्रमूलये सहस्रपादाक्षि-
 शिरो ठवा हवे । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटि युगधारिणे
 नमः । इति मन्त्रेण पाद्य गन्धाक्षतेरच सम्पूज्य, अपसव्येन । पितृवा-
 द्याणं सम्पूज्य ॐ पितृभ्य इत्यादीनां पितॄणां ओं नवो वः इत्यादीनां
 मातामहानां च पूजनं कुर्यात् । वेदां कृत्वा । अपसव्यं कृत्वा । ॐ
 अपहताऽअसुरा रक्षा धा सि वेदिषद् इति रेव्याश्रयं कृत्वा । प्रथम रेव्या-
 मने अथेत्यादिअमुक गोत्रः अस्मत्पितामह अमुक शर्म्मा वसु स्वरूपपिण्डा-
 सनेऽयने निक्ष्व ॥ अथः अमुक गोत्रः अस्मत्पितामह अमुक शर्म्मा रुद्र-
 रवरूप पिण्डासनेऽयने निक्ष्व । अथः अमुक गोत्रः अस्मत्पितामह
 अमुक शर्म्मा आदित्यस्वरूप पिण्डासनेऽयने निक्ष्वः । द्वितीय रेव्यामने ॥
 अथ अमुक गोत्रः अस्मन्माता अमुकि देवि वसुस्वरूपे पिण्डासनेऽयने
 निक्ष्व । अथ अमुक गोत्रः अस्मत्पितामही अमुकि देवि रुद्र स्वरूपे
 पिण्डासनेऽयने निक्ष्व । अथ अमुक गोत्रः अस्मत्पितामह अमुक
 शर्म्मा आदित्यस्वरूप पिण्डासनेऽयने निक्ष्वः । द्वितीय रेव्यासने ॥ अथ
 अमुक गोत्रः अस्मन्माता अमुकि देवि वसुस्वरूपे पिण्डासनेऽयने निक्ष्व ।

अथ अमुक गोत्रः अस्मत्पितामही अमुकि देवि रुद्र स्वरूपे पिण्डासने-
 ऽवने निक्ष्व । अथ अमुक गोत्रे अस्मत्प्रपितामहि अमुकि देवि आदित्य
 स्वरूपे पिण्डासनेऽवने निक्ष्व । तृतीय रेखा सने । माता महादीनां
 अवनेजनानि दत्वा । सव्येन । भो ब्राह्मण युष्मदनुज्ञया पिण्डप्रदान
 मह करिष्ये । अपसव्यं कृत्वा । स मोटकं तिल गुड पिण्ड वायवान् पिण्डं
 गृहीत्वा । अथेत्यादि अमुक गोत्रः अस्मत्पिता अमुक शर्मन् वसुस्वरूप
 अस्मिन् तीर्थ आदौ एवं तिल गुड पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्तेस्वधा । ॐ
 अमुक गोत्राय अस्मत्पित्रे अमुक शर्मणे वसु स्वरूपाय । इति प्रथम रेखा
 मूलेऽवनेजनो परिपिण्ड दद्यात् । अमुक गोत्रः अस्मत्पितामह अमुक
 शर्मन् रुद्रस्वरूप अस्मिन्तीर्थ आदौ एवं तिलगुड पिण्डोऽमृत कल्पो
 महत्तस्ते स्वधा । अमुकगोत्रः अस्मत् प्रपितामह अमुक शर्मन् आदित्य
 स्वरूपः अस्मिन्तीर्थआदौ एवं तिल गुड पिण्डोऽमृत कल्पो महत्तस्ते
 स्वधा । इयं भूमिर्गयातुल्या इदमुदकं गात्र-द्वितिय रेखामूले-अमुक
 गोत्रोऽस्मत् माता अमुकी देवी वसुस्वरूपस्मिन् तीर्थआदौ एष तिल
 गुड पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्ते स्वधा०-इयं भूमिरिति-अमुक गोत्रो
 अस्मत् पितामही अमुकी देवीरुद्रस्वरूपं स्मिन् तीर्थआदौ एष तिलगुड
 पिण्डोऽमृतकल्पो पद्धस्ते ते स्वधा । इयं भूमिरिति । अमुक गोत्रोऽस्मत्
 प्रपितामही अमुकी देवी आदित्य स्वरूपा अस्मिन्तीर्थआदौ एष तिल गुड
 पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्ते स्वधा । इयं भूमि रिति० ॥ त्रितयि ॥ रेखासने
 मूले-अमुक गोत्राय अस्मिन् मातामह अमुक शर्मन् सपत्निक वसु-
 स्वरूप अस्मिन् तीर्थआदौ एष तिल गुड पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्ते
 स्वधा । इयं भूमिरिति अमुक गोत्राय अस्मत्मातामहाय अमुक शर्मणे
 रुद्रस्वरूपाय सपत्निकाय एष तिलगुड पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्ते
 स्वधा । इयं भूमि रिति० ॥ अमुक गोत्र अस्मत् बृद्धप्रमातामह अमुक शर्मन्
 आदित्य स्वरूप सपत्निकाय एष तिलगुड पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्ते
 स्वधा-इयं भूमिरिति० ॥ औ लेपभागिन भय भागोस्तु इति लेपभाग्न्य
 प्रतिपक्षिलेप भाग्न्य चदद्यात् । सव्येनाचम्य पुण्डरीकाक्षं स्मरन् ततः
 अपसव्येन । प्रत्यवनेजनम् । अमुक गोत्रः अस्मत् पिताअमुक शर्मन्
 वसुस्वरूप अस्मिन् तीर्थ आदौ पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व ॥ अमुक गोत्रः अस्मत्
 पितामह अमुकशर्मन्रुद्र स्वरूप अस्मिन् तीर्थ आदौ पिण्डे प्रत्यवने
 निक्ष्व । अमुकगोत्रः अस्मत् प्रपितामह अमुक शर्मन् आदित्य स्वरूप
 अस्मिन् तीर्थआदौपिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अमुक गोत्रः अस्मत् माता
 अमुकी देवी वसुस्वरूपे अस्मिन् तीर्थआदौपिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अमुक
 गोत्रः अस्मत् प्रपिता मही अमुकी देवी रुद्रस्वरूपा अस्मिन्तीर्थ आदौ

पिंडे प्रत्यवने निद्व । अमुक गोत्रः अस्मत् मातामह अमुक शर्म्मन्
 सपत्निक वसु स्वरूप अस्मिन् तीर्थश्राद्धे पिंडे प्रत्यवने, निद्व ॥ अमुक
 गोत्रः अस्मत् प्रपितामहीअमुकी देवी आदित्य स्वरूपे अस्मिन्तीर्थ श्राद्धे
 पिंडे प्रत्यवने निद्व । अमुक गोत्रः अस्मत् प्रमाता मह अमुक शर्म्मन्
 रुद्रस्वरूप सपत्निक अस्मिन् तीर्थश्राद्धे पिंडे प्रत्यवने निद्व । अमुक
 गोत्रः अस्मत् वृद्ध प्रमातामह अमुक शर्म्मन् सपत्निक आदित्यस्वरूपे
 अस्मिन् तीर्थश्राद्धे पिंडे प्रत्यवने निद्व । गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप वस्त्रा-
 दिभिः पिण्डं सम्पूजयेत् । ॐ पितृपितामह प्रपितामहीभ्यो नमः । ॐ
 मातृ पित्तमही-प्रपिता महीभ्यो नमः । ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमाता-
 महेभ्यः सपत्निकेभ्यो नमः । निर्विस्तृज्य । सव्यं कृत्वा दक्षिणां दानं देव
 द्रव्यं सम्पादाय सम्पूज्यः ॥ ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रः पित्रादित्रय
 तथा मातादित्रय तथा अमुक गोत्र मातामहादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनानां
 धूरि लोचन संज्ञकानां विश्वेषां देवानां प्रीतये कृतेत इश देविकं पूर्वकं
 तीर्थप्राप्तनिमित्तकं श्राद्धकर्मणां सांगतासिद्धये इमां सुवर्णं निष्कृत्यं
 ब्राह्मणं दास्ये । ॐ तत्सन्न मम तथा अमुक गोत्राणां पितृपितामह प्रपिता
 महानां अमुकामुक शर्म्माणां तथा मातृ पित्तमही प्रपितामहीनां तथा
 अमुक गोत्राणां अस्मत्माता मह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाय अमुकाऽमुक
 शर्म्माणां सपत्निकानां वसु रुद्रादित्य स्वरूपाणां तीर्थश्राद्धनिमित्तकं इदं
 रजत निष्कृत्यं ब्राह्मणान्दास्ये ॥ तत्सन्न मम ॥ विश्वेदेवाग्ने अन्नं संस्था-
 प्य । ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रः पित्रा दित्रय तथा मातामहादित्रय
 श्राद्धसम्बन्धिभ्यो धूरिलोचन विश्वेभ्यो देवेभ्यो इदमाग्नं सोदकं सोप-
 स्करं निषिद्ध वज्रं अमृत स्वरूपं ब्राह्मणस्य तृप्तिपर्य्यप्तं यथा विभाग
 वः स्वया ॥ यथा सुतेन भुङ्क्ते भुङ्क्ते । अपसव्यम् । ॐ येचेह
 पितरो येच तेह्यांश्च विद्यायां २ वचनं प्रविद्यात्वंवेत्थ यतिते जात वेदः
 स्वाध्यामिर्यज्ञ १५ सकृत्तन्त्रजुषस्व इति पठित्वा । मधु ३ । अद्येह अमुक
 गोत्रेभ्यः अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यः अमुकामुक शर्म्मेभ्यः स-
 पत्निकेभ्यो वसु रुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः तीर्थश्राद्धे इदमामाग्नं सोदकं सो-
 पस्करं निषिद्ध वज्रं अमृत स्वरूपं ब्राह्मणस्य तृप्ति पर्य्यप्तं यथा विभागं
 वः स्वया । तथा अमुक गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्योः
 अमुकाऽमुक शर्म्मेभ्यः सपत्निकेभ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः इदं मामाग्नं
 सोदकंसोपस्करं निषिद्धवज्रं अमृत स्वरूपं ब्राह्मणस्य तृप्ति पर्य्यप्तं
 यथा विभागं वः स्वया । सव्येन । पितृ गावर्जा जपेत् - देव ताम्य-इति
 त्रिषारं जपेत् । अपसव्य अक्षयोदक दानं ॥ अद्येह अमुक गोत्राऽस्त-
 त्पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनानां तथा अमुक गोत्रा समाता महादित्रय

श्राद्ध सम्पन्निना धूरिलोचनसन्न काना विरवेपा देवाना तीर्थप्राप्ति निमित्तक श्राद्धे इदमन्नोदकादियश्च तदक्षय्यमस्तु ॥ अस्त्वक्षयम् । एष पितामह प्रपितामहयो । अद्यामुक गोत्रस्थास्मन्मातामहस्य अमुक शर्मण सपत्निकस्य वसुस्वरूपस्य अस्मिन् तीर्थश्राद्धे इदमन्नोदकादि यश्च तदक्षय्यमस्तु । अस्त्वक्षयम् । एष प्रमातामहयोरपि । सव्येन । अधोरा पितर सन्तु सन्तु गोत्रन्नो वर्द्धन्ता २ सन्ततिवर्द्धता वेदा वर्द्धन्ता वर्द्धन्ता दातारो नोपि वर्द्धन्ता वर्द्धन्ता श्राद्धाचनो मास्यव्यगमन्मागात् । अन्नवचनो बहुभवेत् । भवतु अतिथीञ्चलभेमही क्षमन् या चित्तरञ्चन सन्तु सन्तु, मास्मयाविष्मकञ्चन मायाविषा इत्याशिष प्रविशुह्य । स्वतिलक सत्यानुष्ठान सम्पन्ना सर्वदायज्ञबुद्धय पितृमातृ परारचन सन्वस्मत्कुलजगिरा इति पठित्वा । देवताभ्य इति त्रिर्जपा ॥ इदं श्राद्ध विसर्जयेन् । अथेह अमुक गोत्राणा इति उक्त्वा धूरि लोचन विरवेदेवा पूर्वक इदं श्राद्ध, तीर्थश्राद्ध विधिहीन श्राद्धाक्रिया रहित सत्सु कृतमस्तु यन्न्यूनान्तिरिक्त सत्सवविष्णो प्रसादात् ब्राह्मणवचनात्सर्वं परिपूर्णमस्तु अस्तुपरिपूर्णम् ॥ उत्तिष्ठ ब्राह्मणस्पते इति पठित्वा विसृज्य आमा वाजस्येति प्रदक्षिणीकृत्य नोर्विसृज्य । आचम्य यस्य स्मृत्येति पठेन् अच्युताय नम इति तीर्थश्राद्ध विधि । तीर्थवासी ब्राह्मणो यजमान चन्दन पितृप्रसादाञ्च दद्यान् । पुन कर्ता अयोध्या मधुरामाया का० ॥ इति ॥

अथ शय्यादानम् ।

दीप प्रज्वालयाचम्य गणेशपूजा कृत्वा दक्षिणोत्तरा शय्या स श्याप्य—तत्रादौ सारदारुमयी दृढा इन्तपत्रे हेम-यद्वयोरलकृता इसतूली प्रविच्छन्ना गुग्गुणखोपवानिका प्रच्छादनपटो युता गन्धधूपादि वासिता पुष्प ताम्बूल कुङ्कुम कर्पूरागवचन्दनदीपकोपानच्छत्रचामरव्यजनासन मत्तघान्यपृतपूर्णं कुम्भादिसहिता शय्यामासाद्य, तत्र हेम काञ्चन-पुरुष स्थापयेत् । तत पूर्वाभिमुखं सङ्खमुखो वा वपविरय । आचम्य प्राणानायम्य । अथेत्यादिनेशकाली सकीर्त्याऽमुकोह यथोक्त फला वाप्तये । इन्द्रदेवताया प्रीतये शय्यादानं करिष्ये । (इति सकल्प) । पुन शय्यादानप्रतिपदार्थं ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वरणं करिष्ये इति सकल्प्य भूमि देवाम जन्मासिन्वं विप्र पुरुषोत्तम प्रत्यङ्ग यज्ञपुरुष अर्घ्यं प्रति गृह्णताम् । गन्वादिभि सम्पूज्य । एमिगन्वात्तम् पुष्पपूगीफल द्रव्यवासी मकरादिभि करिष्यमाण शय्यादान प्रतिपदार्थं त्याग्य कृते । वृत्ते

स्मीति प्रत्युक्ति ततो लक्ष्मीनारायणप्रतिमा पूजनं कुर्यात् । अथेह अ-
मुकोऽहं करिष्यमाण शय्यादानकर्मण पूर्वांगत्वेन सुवर्णप्रतिमाया
लक्ष्मीनारायणयो पूजनमहं करिष्ये । प्रतिमा मन्व्युत्तारण पूर्वक-पञ्चा-
मृतैः संस्नाप्य । एतन्त इति प्रतिष्ठा ॥ ध्यानम् । दक्षिणाधः करे पद्म-
शय मूर्द्धं करे न्यसेत् । वामोर्ध्वं च भवेद्वक्त्रं लक्ष्मीं पृष्ठे कर पर ।
दक्षिणास्तु भुजे दिव्या पृष्ठे देवस्य चक्रिण वामेप्येक गतालक्ष्मी रत्न-
पात्रकराभवेत् । इति ध्यात्वा षोडशोपचारे सम्पूज्य ॥ ततो लक्ष्मीनारायण
प्रतिमा शय्यो परिस्थापयित्वा-शय्या संपूज्य कृताञ्जलि पुटो भूत्वा,
शय्या प्रदक्षिणीकृत्य प्रमाण्यदेव्योनम । इति चतुर्दिशं प्रणम्य, सकल्प
कुर्यात् । अथेहाऽमुकोहं ययोक्तफलवाप्तिं कनकोत्पल नानारत्न सम-
कीर्णं नानाद्रव्योपसंयुक्तं नानादिव्यापसनमेव्य विमान रोहण पूर्वक
पष्टि सहस्रवर्ष पर्यन्तं इन्द्रलोकावासप्राप्तिकाम, इष्ट देवताया
प्रीतये, इमा शुभ गणदोषघानिका प्रख्यादनपटयुतां गन्धपुष्पादिवासिता
सुपूजित लक्ष्मीनारायण प्रतिमायुता । उच्छीर्षक स्थापित घृतकुम्भपूर्ण-
ताम्रकलशोपिता, पार्श्वस्थापित सान्द्रूल कुंकुम मृगमद कपूरागरुचन्दन
जातापत्र जाताफल लग्नपूगीफन नालिकर दापिकोपानह छत्रचामर
दशादुरपरस्करवर्ती पाकादि पात्रात्रादुरपरस्करवर्ती सालकारा चतुष्कोणेषु
यथा क्रम संस्थापित घृतकुंकुम गोधूम जलपूर्णपात्र युता, प्रजापति
देवताया, अमुक गोत्राय । अमुक वेदाध्यायिने अमुक शम्भणे ब्राह्मणाय
तुभ्यमहं संप्रददे । ॐ तत्सन्न मम दानवाक्य, यथान कृष्ण शयन
शून्य मागरजातया शय्या ममाप्य शून्यास्तु शय्या जन्मनि जन्मनि ।
ब्राह्मण शय्योपरि स्थित्वा, प्रतिगृह्यात् । कृतस्य शय्या दानस्य मागता
सिद्धिर्पर्य इह सुवर्ण अग्नि देवत ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे । तत्स
न्नमम । ततो भूयसी सकल्प । ब्राह्मणान् । भोजयित्वा । प्रणिपत्य विस-
र्जयेत् ॥ इति शय्यादानविधिः ॥

अथ भूमिदान विधिः ॥

ताग्रगत्रे देयभूमि सम्बन्धि मृत्पिण्ड संस्थाप्य विधि ना अयं
संस्थाप्य सकल्प । अथेत्यादि-अमुकोऽहं गोत्रे पत्तावाप्तये भूमिदान
करिष्ये । भूमिदानकर्मण पूर्वांगत्वेन भूमे ययानिलितोपचारे, पूजन-
महं करिष्ये । ध्यानम् ॥ शुक्लवर्ण महाकाया, दिव्याभरणभूषिता । चतु-
र्भुजासौम्यवपुःषण्डामुख दशप्रमा । रत्नपात्र रास्यपात्रं पात्रम्भोषधि-
मयुतम् । पद्मशेरक कर्त्तव्यं मूयो वासद चन्दन, दिग्नामाना चतुर्णा-

प्राकार्या तृप्तगतामहो, इति ध्यात्वा, भूम्यै नमः ॥ इति गन्धास्त पूषैः
संपूज्य । दान संकल्प । अथेहाऽमुकोहं सकलपाप क्षयपूर्वकं यथोक्त
कृताप्राप्तये, इमां सुपजिताभूमिं लयोत्पत्तियोभ्या विष्णु देवत्या अमुक
गोत्रायऽमुक शर्मणे ब्राह्मणाय दास्ये । तत्सन्न मम ॥ दान वाक्यम् ।
यथा भूमि प्रदानस्य, कलानाहन्ति षोडशी, दानान्यन्यानि मे शान्ति
भूमिदानाद्भवत्विह । कृतस्य भूमिदानस्य साङ्गता सिद्धयर्थं इदं सुवर्णं
अग्निदेवतं दानं प्रतिष्ठात्वेन तुभ्यं संप्रददे । तथा इमां दक्षिणा भूमिं दान
कर्मण -साद् गुणचार्यं । ब्राह्मणेभ्यो त्रिविमज्य दास्ये, तथा माधव प्रीतये
सिद्धान्तेन आमन्त्रेण वा यथा सख्याकान् ब्राह्मणान्मोजयिष्ये इति
संकल्प अमियेकतिलक मन्त्र पाठादिकं कुर्यात् । इति भूमिदानम् ॥

एकोदिष्ट आद्य विधिः ॥

अथैकोदिष्ट आद्यविधि । तत्र पास्कर सूत्रम् ॥ अथैकोदिष्ट
मेकोर्ध एकं पवित्रमेकं पिण्डोना वाहन नाग्नौ करणं नात्र विस्पेदेव ।
स्वदिवमिति तृप्तिं प्रश्नं सुखदितमिति इतरे ऋयुरुपतिष्ठतामिर्यक्ष्य स्थाने-
ऽभिरम्यतामिति विसर्गोभिरमतास्म इति तरे ॥ तत्र मध्याह्ने स्नात्वा,
घौतवाससी परिधाय ब्रह्माह तर्पणं कृत्वा, आद्यदेवे गत्वा, दीप प्रज्वा-
लयाचम्य । पवित्रपाणिभूत्वा पिण्डं संपूज्य, इत्तौ सद्वतीकृत्वा ।
ॐ यन्मन्त्रवेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं त्वान्ये । विस्वोद्वते
कारणमीश्वरम्वा तस्मै नमो विष्णुनाशनाय । अमीप्सितार्थसिद्धयर्थं
पूज्यते । त्रिदशैरपि । सर्वविष्णुद्विदेवस्मै गणाधिपतये नमः । इति पुष्प-
जलिं दत्त्वा, ब्राह्मणं तैलाम्यगं कारयित्वा सस्नाप्य । कुशोरि कुश-
पुत्रोसि । ब्राह्मणा निर्मितपुरा । त्वय्यर्चिते सोचितोस्तु यस्याहं नाम
कीर्तये । एतन्त इति पठित्वा । ॐ एतन्ते देव सवितर्य्यक्ष्मन् । हृदस्पतय ।
ब्रह्मणे तेन यज्ञमवतेनयज्ञं पठित्वेन मामव मनाजूतिं ऋषिपता माग्न्यस्य,
वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तन्नोत्ववशिष्टं यज्ञं धे समिगन्दधातु विरयेदेवासऽ
इमादयन्तो नोम् प्रतिष्ठु । ॐ भूभुव स्व भिन्मान्, सम्पन्धि ब्रह्मन्
सुप्रविष्टितो मय । ततोऽपसन्ध्यमविधाय । विलान् गृहीत्वा, अथे इत्त्यादि
अमुक गोत्रस्या स्मरितुं अमुक शर्मणो वसुस्वरूपस्य सावत्सरोक्तेका-
दिष्टयथाह आद्ये ब्रह्मन् भवान् भवानि मन्त्रित । निमन्त्रितोऽस्मीति
इत्युक्तं । इमा सदनी कृत्वा । अत्रोघनै शौच परं सततं ब्रह्मचारिभिः,
भक्तिन्य भग्निरस्य मया च आदधरिणा । सर्वापास निनिमुक्तेः
हामत्रोय विरग्नितै मयितव्यः । भव कुर्नोघनेन आद्य कर्मणि सव्यन ।

आगतवः सुस्वागतम् । अपसव्येन, एतद्वः पाद्यमस्तु । इत्युक्तं कपि-
लादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठ पुष्ये तत्फलं पाण्डव श्रेष्ठ विप्राणां-
पाद शौचने । इति पठित्वा । पादपूजायां अत्र सुगन्धं अक्षताः पुष्पाणि
तुलसीदलानि च समर्प्य । पादार्घदानम् सव्येन ॥ भूमौ शंखचक्रादिकं
लिखित्वा आसनं आसने पात्रं, पात्रे पवित्रं, पवित्रे स्थौ वैष्णव्यौ ।
शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पोतये । शय्योरभिस्रवतुनः । इति
जलम् । तिलोसि सोम देवत्यो गोसवो देव निर्मितः प्रत्नमद्भिः पृष्ठः
स्वधया पितृलोकान् प्रोणाद्भिः स्वाहा । इति तिलान् प्रक्षिप्य । गन्ध-
पुष्पाक्षतादि प्रणयेन तृष्णीं वा यथाधिकारं निक्षिप्य । भो ब्राह्मणाः
पादार्घपात्र सम्पत्तिरस्तु । अस्तु सम्पत्तिः । इति प्रत्युक्तिः । अपसव्येन ।
पितृब्राह्मण पादार्चनं विधाय त्रं नमः गन्धोस्तु स्वधा । अक्षताः पुष्पाणि
तुलसीदलानि नमः । अथेह अमुका गोब्राह्मणपितुः अमुक शर्मन्
वसुस्वरूप अद्यकर्तव्ये साम्बन्तसरीकैकोदिष्टक्षयाद् भाद्रे ब्रह्मन्नेपते
पादार्घोऽस्तु । पादार्घदानाचमनम् । सव्येन । स्वयमाचम्य अपसव्येन ।
ब्राह्मणमाचामयेत् । सव्येन । आद्वदेशोपवेशनं इत्युदङ्मुखं उपवेशयेत् ।
ततः कर्मपात्र पूरणम् । ॐ भूरसि भूमिस्थ दिक्षिरसि विश्वधाया
विवरयस्य भुवनस्यधर्मा पृथिवीं यच्छ पृथिवीं द १ ह पृथिवी म्मादि १
सोः । भूमौ शंखचक्रादिकं लिखित्वा । आसनं आसने पात्रं पात्रे
पवित्रम् । पवित्रस्थौ वैष्णव्यौ, शन्नो देवीरिति जलम् । यवोमियव याम्भ
द्वेपो यययारातिर्द्विषत्त्वान्त रिक्षायत्वा । पृथिव्यैत्वाशुन्धन्तांस्तोभाः
पितृरदनाः पितृपदनमसि । तिलोसीति तिलान् । गन्ध पुष्पाक्षतादितुष्णीं
निक्षिप्य । कर्मपात्रं सुमंपत्रमस्तु, अस्तु सुसम्पन्नम् । तेन जलेनात्मानं
मंजोक्ष्य प्राणायामं विधाय । पुण्डरीकाक्षाय नमः ॥ अपवित्रः पवित्रो
या सयारिस्थां गतो पित्रा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सवाद्याभ्यन्तरः
शुचिः । हस्तौ मंहतो कृत्वा । दैवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिम्यरेव च ।
नमः स्वाहाये म्यगये नित्यमेव नमो नमः । इति श्रिः पठित्वा ३ ।

स्नान षडङ्गः । सर्वकुशजलान्पादाय । ॐ विष्णु ३ अथेदत्वा-
शुच्चायामुक्तगोरोऽनुक्त शशिशुक्ल शर्मन् । अस्तव्यं विषाय । तिल मोट-
कगदित्वा अनुक्त गोपस्यातिवृत्तमुक्तशर्मन्ः यमुम्बन्तस्यानुक्त गोप्राया अस्म-
न्मात्र, अनुक्ती देव्याः यमुम्बन्तपायाः अद्य तुष्टिकामनाय साम्बन्तसरीकैकोदिष्ट
क्षयाद् भाद्रे अधिकार निक्षिप्य आत्मनः कायशुद्धये मय्याह स्नानमहं करिष्ये,
कुरुष्व । अनुक्त गोप्रायाः अस्मन्मात्रः अनुक्ती देव्याः यमुम्बन्तपाया यः सुरैरपि
वसिदित्पति पाठोत्पन्ने ।

सप्तव्याधादशाणेषु मृगा कालं जरे गिरौ । चक्रवाका मरुद्वीपे हसा
 सप्तसि मानमे । सेपिजाता कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगा । प्रस्थिता दीर्घ
 मध्यान गृय क्रिमवसीन्थ । आद्धकाले गया ध्यात्वा ध्यात्वा देव गदाधर
 इति पठित्वा । अपसन्ध्य विधाय मनसा च पितृन्मातृ) ध्यात्वा । तत
 अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितु अमुक शर्मणे वसुस्वरूपस्य सावत्सरीकैकोदिष्ट
 क्षयाद् आद्ध समारमे इति पठेत् । मध्येन पचक्रोश गयाक्षेत्र क्रोशमेकं
 गयाशिर । यत्र यत्र स्मरिष्यामि पितृ खादत्तमक्षयम् । ततोऽपस-येन ।
 तिलमाटक गृहीत्वा वामहस्ता । ॐ सोमस्य नीविरसि ध्विष्णो
 शर्मासि शर्मयाचमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुमस्या वृषीव वृधी इति
 नीवां यध्या । ततोदिग्यन्वनम् । मोटफान् गृहीत्वा । अग्निप्राप्ता
 पितृगणा प्रार्थारक्षतु मेदिशम् तथा उडिपद् पान्तु यामी येपितरया ।
 प्रतीची माभ्यपा पातु उदीची मयि सोमपा । त्रिदिशश्चगणा सर्वे
 रक्षन्तूध्व मृतो पिवा रनोभूत पिशाचेभ्यस्तयै वासुर दोषत । मर्यतश्चा
 विरस्तेषा यमोरक्षा करोतुमे । तिलारक्ष तु इति । जान्दभारक्षन्तु राक्षसान्
 पक्षिं वैश्रोत्रियो रक्षेदिति सर्वरक्षन् । अध ऊर्ध्व चकाणेषु हविष्मतश्च
 सर्वदा । तत सव्येन सामान् कुशान् गृहीत्वा । कर्म पात्रस्थ जलमभि-
 लोडयेत् । ॐ यद्देवादेव हेडज नेवासश्च वृमान्वयम् । अग्निर्मात्तमा
 देन सो विरयानमुचत्यध्वस यदि दिवा यदि नक्षमेना ध सिचवृमाव्व
 यम् । वायुर्मा तस्मादेनसो विरयान मु चत्वध्वस याद जाप्र यदि-
 स्वप्नध्वनाधसिचवृत्रयम् । सूर्योमातस्मा देनसो विरयान्मु चत्वध्वस ।
 गायत्र्या । ततो दर्भतिलयुत तञ्जल गृहीत्वा, पियानमुताव्य । शुद्धि-
 दृष्टिदूषित पाक पूनोऽस्तु । गायत्र्या सरोक्ष्य । प्रतिज्ञा । ॐ त्रिष्णु
 ३ नम परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय । अत्र । पृथिव्या जम्बूद्वीपे
 भरतग्रण्डे, आर्यावर्ते पुष्पक्षेत्रे । हिमवत्पर्यंतेकेशे । ब्रह्मणे द्वितीय
 परार्द्धे । श्रीरामायाराहकल्पे वैत्र प्रसङ्गान्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे
 वृत्तत्रेता द्वापराते कलियुगस्य प्रथमचरणे पश्यन्दाता मध्य, अमुकनाम
 मरुतमरे, अमुकायने, अमुकतो, अमुकामे, अमुक पक्षे तिथौ अमुक
 गोत्रोत्पन्न, अमुक राशि, अमुक शर्माह, अपसन्ध्य । अमुकगोत्रस्या
 ऽस्मत्पितु अमुक गमणो वसुस्वरूपस्य अक्षय तृप्ति कामनया अर्घपिण्ड
 सहित, एव हिष्टक्षयाद् आद्धविधिना पर्यान्नेन सावत्सरीकैकोदिष्ट
 क्षयाद् आद्ध कर्ष्ये । ॐ कुरुप् । इति प्रत्युक्ति । तत आसन ।
 तिलमोत्रक गृहीत्वा । अत्र अमुक गोत्राम्याऽस्मत्पितु अमुक शर्मणो
 वसुस्वरूपस्य — अस्मत् सावत्सरीकैकोदिष्ट क्षयाद् आद्धे इदमासनमस्तु ।
 मय्यन । भूर्भुव स्व इन्द्र मासागाम्यता मास्ये । ततो दस्तायै संपातम् ।

भूमौ शंख चक्रादिकं लिखित्वा आसनं आसने, पात्रं पात्रे, पवित्रम् पवित्रेस्थौ वैष्णव्यौ० शन्नो देवौ रिति जलम् । तिलोसीति तिलान् गन्ध पुष्पाक्षतादि तूष्णीं निक्षिपेत् । भो ब्रह्मन् पित्रर्घपात्रं सम्पन्नमस्तु अस्तु सपन्नम् । इत्यर्थः । सव्येन । पवित्रं गृहीत्वा । विप्रहस्ते समर्प्य, सपवित्रेषु हस्तेषु ॐ यादिभ्यः आपः पयसा संभवुर्वर्था ऽ अन्तरिक्षा ऽ उतपाथ-
वोर्याः हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान् ऽ आपः शिवाः श ॥ स्यो नाः सुहवा भवन्तु । अद्येह, अमुक गोत्रः अस्मत्पिता अमुक शर्मन् । वसुस्वरूप, अस्मिन् साम्बत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह आदौ, एतदेहस्तार्घ्योऽस्ति । पुनः प्रत्यर्घ्यं । अर्घ्योदकं त्रियं दद्यात्पुत्र पौत्रादि वर्द्धनम् । यस्मात्तस्माच्छिबं-
मेत्यादिह लोके परत्र च । इति मूर्ध्नि अभिषिच्य । अपसव्येन, पितृ वामभागे । कुशानास्नीर्य्य । तदुपरि सपवित्रम् अर्घपात्रम् । पितृभ्यः स्थानमसीतिन्युयजं कृत्वा तदुपरिस्वधा वाचनीयान् स पवित्रान् श्रान्-
कुशान् दक्षिणामान् संस्थाप्य । आचारात् शुन्धन्तां लोकाः पितृपदना पितृपदन मसीति संप्रोक्ष्य । पितृभ्यः स्वधायिभ्य इति पूजनम् । ततोऽगुष्टं पवित्रे त्यक्तवा । पितृब्राह्मणार्चनंविधावत्रन्मः ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः
न्यधानमः, प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्न पितरो भीम-
दन्त पितरो तीनृपन्त पितरः पितरः शुंभश्चम् । गन्धोऽस्तु स्वधा । अक्षताः पुष्पाणि तुलसीदलानि । धूप दीप वस्त्र भूषण ताम्बूलादि दत्त्वा पुनः पवित्रे करे कृत्वा । अद्येह अमुक गोत्रः । अस्मिन्पितः । अमुक-
शर्मन् । वसुस्वरूप अस्मिन्साम्बत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह आदौ विप्रार्चनं विधाधिमानि गन्धाक्षत, पुष्प, तुलसीदल दीप, वासो भूषण ताम्बूला-
दीनि मदत्तानि ते स्वधा । विप्रार्चनं विधेः सर्वपरिपूर्णमस्तु । अस्तु परि-
पूर्णम् । गन्धादि दानाचमनम् । सव्येन । स्वयमाचम्य । अपसव्येन । ब्राह्मणमाचामयेत् । सव्येन । अच्युत स्मरणम् । ततो विष्णवे नैवेद्यं परिवेद्य समर्पयेत् । नाव्या ऽ आसीदन्तरिक्ष ॥ शीष्णौघौः समवाप्तं त पद्भ्यां भू० ॥ इति नैवेद्यं । अपसव्यं विधाय । यथाचक्रायुधो विष्णुरस्त्रै-
परिरक्षति । एवं मण्डलमत्माकं सर्वभूतानिरक्षतु । इति प्रश्मना चतुष्कोण मण्डलं विधाय । तदुपरि भोजनपात्रं संस्थाप्य । सव्यं प्रणिधाय । अन्नं परिवेद्य । गायत्र्या अन्नं संप्रोक्ष्य । अपसव्येन । अन्वाचितवाम जानृः ।

अमुक गोत्रायाः अस्मत्मातुः अमुकी देव्याः वसुस्वरूपायाः x अमुक गोत्रायाः अस्मत्मातुः अमुकी देव्याः वसुस्वरूपायाः x अमुक गोत्रे अस्म-
त्मातः अमुकी देवि वसुस्वरूपे । +

स्वस्तिका कृतिना उद्धमुग्नेन । दक्षिणो परिस्थितेन । वाम दस्तेन ।
मधु मधु इति पात्रमालम्ब्य जपति । पृथिवीत्ते पात्रं । दूरपिधानं ब्राह्मणस्य
मुग्ने । अमृतेऽमृतं जुहोमि । विष्णो कव्य ६३ रक्त अप्रा दाक्षिण्येन
तिलान्विकीर्ष्य । अपहृता ऽमुरारक्षा ६३ सि ज्वेदिपदः । अंगुष्ठमहणम् ।
इदं विष्णुविचक्रमेतेषा निदधे पदम् समूदमस्य पा ६३ सुरे । इदमन्नं
इमा आपः इदमाज्यं इदं शाकादिकं सर्वं कव्यम् । अद्येह अमुक गोत्राय
अस्मन्पित्रेऽमुक शर्मणे वसुस्वरूपाय साम्बत् मरीकैकोदिष्ट क्षयाह
आद्धे । इदमन्नं इमा आपः । इदमाज्यं इदं शाकादिकं यत्परिविष्टं ।
यत्परिवेष्ट्यमाणं ब्राह्मणास्त्यात्पति पर्यन्तं । ब्राह्मणेभ्य आत्पतिदास्यमान
मन्नं च अमृतस्वरूपं महत्तं तेस्यथा । ॐ येचेह पितरो येच नेह योष्व
विदमथां २५ उचनप्र० इति पोशानदत्त्वा । भो ब्राह्मणा यथा सुग्नेन
मुह्यन्म । मुंजममहे । ततः सज्येन प्रणव व्याहृति पूर्विका । गायत्रीं
मध्विति मधुमतीं ऋक् त्रयञ्च पठेत् । ॐ मधु ३ मधुवाताऽ ऋतायते ।
मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वी० ॥ ॐ मधु ३ यथा शक्त्या पितृ शुक्तं,
आयुः शिशान० इत्यादि पूरुप सूक्तं सप्तदशर्षीरुचिस्त्वधादीनश्नतमु
ब्राह्मणेषु पठेत् । ततस्तुलसी शर्करा गव्यदुग्धात्तम मधुतिल गङ्गाजल-
युतमन्नं तान्नादि पात्रे कृत्वा । कर्मपात्रोदकं विष्णुनिषेदितं भस्मपि-
दत्त्वा । अपसज्येन पिण्डनिर्माय । विकिरदानं । नैऋत्यां दिशि कुशत्रय
भूमौ क्षिप्त्वा आसनं । असंसृजत प्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनां ।
वच्छिद्यभागधेयानां दमेपुविकिरासनम् । इत्यासनम् दत्त्वा । सजल
तिलमोटक युतमन्नं विकिरेत् । अग्निदग्धारचयेजीवा येष्य दग्धाः कुलेमम
भूमौ दत्तेन तृण्यन्तु तृप्ता यातुं परांगतिम् । येषानं पचते माता येषानं पचते
पिता । वच्छिद्यं ये च काक्षन्ति । तेभ्योऽन्नं दत्तमक्षयम् । वच्छिद्य
भागधेयेभ्योनमः । इति गन्वास्तत पुष्पैः पूजनं । अंगुष्ठ पवित्रे त्यक्त्वा ।
इत्नीं पादौ प्रक्षाल्य । सज्येनाशम्य । ततः आद्ध देशमागत्य । अन्येऽंगुष्ठ
पवित्रे करयोः कृत्वा चमेन् । अपसज्येन । ब्राह्मणहस्ते सङ्कटयो दत्त्वा ।
सज्येन । पूर्ववद्गायत्रीमधुमतीं मध्विति च जपित्वा । भो ब्राह्मणा
अस्मिन् पाकमध्ये यन्किंचिद्रोचने तत्प्रतिगृह्यताम् । सुन्दितं । शेषान्नेन
किं क्रियताम् । इष्टैः सहनुज्यतां । अपसज्येन । पिण्डदानार्थं वेदिका
लेपनं गोमयेन अपहृताः अमुरारक्षा ६३ सिज्वेदिपदः । इति रेखां करणं
कुरोत । तलमुकमूधारणम् , ॐ येषुपाणि प्रतिमुञ्चमानाः । अमुग संत-
म्बधया चरन्ति परापरो निपुरो ये मरत्यग्निष्टां तन्नोकात्मणादात्यस्मात् ।
अपनेजनम् । सतिनमोटक जलं गृहीत्वा । अद्येह अमुक गोत्रः ।
अस्मदिगतः अमुक शर्मन् । वसुस्वरूप । अस्मिन्साम्बत्तमरीकैकोदिष्ट

क्षयाह श्राद्धे पिण्डासने अग्नेनिच्य तत उपमूल लूनकुशास्तरणम् ।
 सव्येन । पदस्मरणम् ईशान विष्णुकमलासन कातिकय वह्नित्रार्क
 रजनीश गणेश्वराणां क्रौंचामरेज्य कलशौद्धवकाशयपाना पादान्नमामि
 सतत पितृ मुक्तिहेतो । गङ्गागयानीन मस्मृत्य । गङ्गायै नम गयायै
 नम । गदाधराय नम । कुरुक्षेत्राय नम । श्रीतीर्थराजप्रयागाय नम ।
 पितृस्वरूप ध्यात्वा । भो ब्राह्मण युष्मदनुज्ञया पिण्डप्रदानमह करिष्य ।
 ॐ कुरुष्व तनोपसव्येन । तिलमोटकयुत । पिण्ड गृहीत्वा । वाम
 जान्वाच्य । अग्नेह अमुक गोत्र अस्मत्पित । अमुक शर्मन् वसुस्वरूप ।
 अ स्मन्साम्बत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्धे । एपाऽन्न पिण्डोऽमृत स्वरूपो
 महत्तस्ते स्तु । इय भूमिर्गयातुल्या । इदमुदक गाङ्ग गङ्गोदकेऽसति
 गङ्गाजल तुल्य वा अमुक गोत्राय 'गोत्राये' अस्मत्पित्रे । (अस्मिन्मात्रे)
 अमुक शर्मणे (अमुकीदेव्यै) वसुस्वरूपाय वसुस्वरूपायै । आचारात् ।
 लेप भागिनाभय भागोऽस्तु । इति लेप भाग पिण्डपार्ष्वे दद्यात् ।
 पिण्डास्तरण कुशोप । करोन्मार्जन कृत्वा । हस्त प्रक्षालनम् । सव्येन ।
 उदङ्मुनेन मरुन्नियमन । तत परायुष्य । अपसव्येन । अमीमदन्त
 पितरो यथा भाग मा वृषायिपत । तत प्रत्यग्ने जनम् । अग्नेह — अमुक
 गोत्र अस्मत्पित । अमुक शर्मन् वसुस्वरूप अस्मिन् साम्बत्सरीकैकोद्दिष्ट
 क्षयाह श्राद्धे पिण्डे प्रत्यग्ने निच्य । किञ्चिन्नीविषिस्त सनम् । नमोव इति
 पङ्कजलक्षणम् । ॐ नमो व पितरोरमाय नमोव पितर पोषाय ॥
 त्रिगुणित सूत्रदानम् । एतद् पितरो वास आधत्त । उर्ज्जकरणं
 कर्मपात्रोदकेन । ॐ ऊर्ज्ज्वरहन्तीरमृत घृत पय कीलाल परिधत्तम्
 स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन् । सव्येन । देवताभ्य इति त्रिर्जप भो ब्राह्मणा
 युष्मदनुज्ञया पिण्डार्चनमह करिष्ये । ॐ कुरुष्वेति प्रत्युक्ति । तत
 अपसव्येन । पिण्डार्चा । पिण्डार्चनविधावन्नम । गन्धोस्तु स्वधा ।
 अक्षता पुत्राणि तुलसी दलानि । पितृभ्य स्वधायिभ्य स्वधानम
 पितामहेभ्य स्वधायिभ्य स्वधानम ष्यपिता ॥ वस्त्र । धूप, दीप, नैवेद्य,
 ताम्बूल भूषण च समार्य । अग्नेह अमुक गोत्र अस्मत्पित अमुक शर्मन्-
 वसुस्वरूप अस्मिन्साम्बत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्धे । पिण्डार्चनविध
 विमान गन्धाक्षततुलसीदल वासो धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल भूषणानि

अमुकगोत्र अस्मन्मात्र अमुकीदेवावसुस्वरूप — अमुकगोत्रे अस्मन्मात्र
 अमुकीदेवा वसुस्वरूप ।

अनुज्ञा न अस्मन्मात्र अमुकीदेवा वसुस्वरूपे — अनुज्ञागोत्रे अस्मन्मात्र
 अमुकीदेवावसु स्वरूप ।

मंदतानि तैश्चधा । सव्येन । पिण्डार्चन विधेः सर्वपरिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् । ततः पिण्डाभ्यं भूमौ सुप्रोक्षितमस्तु । अस्तु सुप्रोक्षितम् । शिवा आपः सन्तु २ । विप्रकरे जलदानं । अपांमध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् । ब्राह्मणस्य करे न्यस्तः शिवा आपो भवन्तु मे । सौमनस्यमस्तु । अस्तु सौमनस्यम् । लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु । लक्ष्मीर्वसति पुष्करे । लक्ष्मीर्वसति सदा गोष्ठे सौमनस्यं सदास्तु मे । अक्षता चारिष्टं धन्तु । अक्षतं चास्तु मे नित्यं शांति पुष्टिकरं परम् । यद्यच्छेयस्करं लोके । तत्तदस्तु सदा मम । ततः कुशैः फलेपात्रोदकेन । मूर्द्धन्याभिपेकं कुर्यात् । मम कुले दीर्घमायुःस्तु । अस्तु शान्ति रस्तु । अस्तु पुष्टिरस्तु अस्तु वृद्धिरस्तु । यद्यच्छेयस्तदस्तु । यत्पापं रोगः शोको दुःखः दारिद्र्यं तत्प्रतिहतमस्तु, अमृताभिपेकोऽस्तु । ततोऽक्षयोदक दानम् । अक्षय्यन्तु विप्रकरेण अप-सव्येन । अघेह + अमुक गोत्रस्य अस्मत्पितुः अमुक शर्मणो वसुस्वरूपस्य । अस्मिन्साम्बत्सरीकैकोदिष्ट क्षयाह श्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं यद्वत् तदक्षयमस्तु । अस्तु । अक्षय्यम् । सव्येन प्रार्थनाशीप्रदणम् । अघोराः पितरः सन्तु २ । गोत्रन्नो वद्धंतां । दातारोभोभि वद्धंताम् । देवाः वद्धंताम् वद्धंताम् । सन्वदि वद्धंताम् । अद्धा च नोमा ह्यगमत् मागाः । बहुदेयं चनोऽस्तु । अस्तु अन्नं चनो बहुमवेत् भवतु । अतिथि रुचक्षमेमहि लभष्यम् । याचितारश्चनः सन्तु मास्मयाचिष्मक्रंचन माया-वेधाः एता एव आशिपः सत्याः सन्तु २ । ततः स्वधावाचनम् । सव्येन । भो ब्राह्मणः युष्मदनुज्ञया स्वधां वाचयिष्ये वाचयताम् । अपसव्येन । स्वधावाचनीयान् ग्रीन् कुशान् पिण्डो परि संस्थाप्य । तिलमोटकंज-लञ्च गृहीत्वा । अघेह + अमुक गोत्रेभ्यो ऽ स्मत्पितृभ्यो ऽ अमुक-शर्मण्यो वसुस्वरूपेभ्योऽस्मिन् साम्बत्सरीकैकोदिष्ट क्षयाह श्राद्धे । ब्रह्मन् मधु स्यधोच्यताम् अस्तुस्वधा । स्वधावाचनीये ध्वपोनिपं चति । ॐ उर्जव्वहन्तिरमृतं घृतं पयः कीलालं परिश्रतम् । स्वधास्य तर्पयत मे पितृन् । दुग्धेनाभूर्जकरणं माचारात् । केचिन्मते नीराजनम् । उत्तानं पात्रं कृत्वा ॥ पितरः स्वर्गलोके प्रस्थिता भवन्तु । सव्येन दक्षिणाम-कल्पः । अघेह अमुक गोत्रस्य । अस्मत्पितुः अमुक शर्मणे वसु स्वरूपस्य । अक्षय तृप्तिं प्राप्त्यर्थं कृतस्यास्य । साम्बत्सरीकैकोदिष्ट क्षयाह श्राद्धस्य । साज्ञता सिध्यर्थं न्यूनातिरिक्तं परिप्रत्यर्थं इदं रजतं वा

अमुक गोत्रायाः ऽ अस्मन्नातुः अमकी देव्याः वसुस्वरूपायाः ॥
अमक गोत्रयाः अस्मन्नातुः अमकी देव्याः वसु स्वरूपायाः ॥ गोत्राभ्यः
मन्मातृभ्यः अमकीदेवीभ्यः वसुस्वरूपाभ्यः ।

रजतनिपक्रयिणीं इमां दक्षिणा आद्धभोक्तृ नाह्वणेभ्योऽन्येभ्योपि विभज्य
 दानुमुत्सृजे । ॐ तत्सन्मम । सत्यानुष्ठान सम्पन्नाः । सर्गदायज्ञ-
 दुद्धय पितृमातृपराश्चैव । सत्त्वस्मन् इज्जनानरा, अक्षताः, पान्तु स्वार्सितु
 भवन्तो ध्रुवन्तु । स्वस्तीतिविप्रोक्ति । विशेष पूजाः । पित्रिभ्य
 स्वधायिभ्य इति । आयु प्रजाधनं विद्या । स्वर्गं
 मोक्षं सुखानि च । प्रयच्छन्ति तथा राज्य नृणां प्रीता पितामहा । आयु-
 पुत्रान् यशः स्वर्गं । कीर्तिं पुष्टिवलं श्रियम् । पशून् सुखं धनं धान्य
 प्राप्नुयां पितृपूजनात् । ततोपसन्धेय । पिण्डमुत्थाप्य । सव्येनाग्राह्या
 अपसन्धेय । पात्रान्तरेनिधाय । पिण्डस्थाने शंखचक्रादिक लिखित्या ।
 गन्धपुष्पपाक्षतै पूजयेत् । पिण्डस्थाने अन्ननम गन्ध अक्षता पुष्पाणि ।
 सव्येन सत्र दीपं सस्थाप्य । पट ऋतुन् पूजयेत् । ॐ वशन्ताय नम ।
 ॐ प्रीष्माय नमः । ॐ वर्षाम्यो नम । ॐ शरदे नमः । ॐ हेमन्ताय
 नमः । ॐ शिशिराय नमः । ततो हस्तौ संहती कृत्वा । पातु पितृगणाः
 सर्वे यस्मात्स्थानाद्दुपागता । सर्वे ते हृष्टमनस सर्वान् कामान्ददन्तु मे ।
 ये लोका दानशीलाना । येलोका पुण्य कर्मणाम् । सम्पूर्णान्सर्वभोगैस्तु ।
 तान् ब्रजध्वसुपुष्कलान् । इहास्माक शिर्शातिरायुरारोग्यसम्पदः । वृद्धि
 मन्तानवर्गस्य जायनामुत्तरोत्तरा । दीपस्थाने दीप । अपसन्धेय । पिण्ड-
 स्थाने पिण्डा । अमञ्जरम भुक्ष्य । य कश्चित्पितृरूपेण । तिष्ठते
 परमेस्वर । सोऽयं आद्व प्रदानेन तृप्तिं यायतु शारवतीम् । गयाया पितृ-
 रूपेण स्वयमेको जनार्दन । यं दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्ष मुच्यते च ऋण-
 त्रयान् । पञ्चमोश गयानेत्रं । कोशमेक गयाशिर । यत्रयत्रस्मरिष्यामि
 पितृणा दत्तमक्षयम् । शमीपत्रमाणेन पिण्ड दद्याद्गयाशिरे, उद्वरेत्सख
 गोत्राणा कुलमेकोत्तर शतम् । पितु शत गुणं पुण्यं महत् मातु रुच्यते ।
 भगिन्या शतमाहम्, मौदव्यं दत्तमक्षयम् । सव्येन । अद्यदिने अपरमपि
 आर्तं पश्चिमिरेण उद्यास्तमर्च्यते, यत्तं यदास्ये तन्मृगं द्वारे अमृतौ भूतते
 स्वया । देवताभ्य पितृभ्यश्च, महायोगीभ्यश्च । नमः स्वहाये । नित्य
 मेव नमो नम । त्रि पटित्वात्मन व्याधा दशार्णेषु । मृगा कालजरेगिरी
 चक्रनाका सरद्रीपे, हस्ता मरमिमानमे । तेति जाता रुद्रक्षेत्रे, माक्षणा
 वेदपारगा । प्रस्थितादीर्घमध्वानं नृप किंमवमीदय । आद्धस्थाने गयां
 ध्यात्वा ध्यात्वा देवगदाधरम् । मनसा चपितरध्यात्वा । मानरं वा ततो-
 पसन्धेय । अमुष्मगोत्रस्य अस्मत्पितु अमुकगर्भंणो । वसुवर्षस्य
 माम्बन्तुमुदीरैकोदिष्टयाद् आद्ध विमृते । सव्यम् । इदं आद्धमया
 विधिहीनं-कालहीनं, वाक्यहीनं, अर्थाहीनं, दक्षिणाहीनं, भायनाहीनं
 यत्कृतं तत् मुक्तमस्तु । प्रमादानोभाङ्ग्यादयाभ्यर्चनं तन् विष्णो प्रमाणात् ।

ब्राह्मण वचनात्सर्वं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् । अपमन्त्र्येन । कुशेन
विप्रस्पर्शः । उत्तिष्ठेति ब्राह्मणमुत्थापयेत् । ॐ उत्तिष्ठब्राह्मणस्पते देवयं
तत्वेमहे । उपयन्तुमरुतः स्वधानवऽइन्द्रप्यशर्मं वाचा । इति ब्राह्मण-
मुत्थाप्य । स्थानान्तरे निधाय । अभिरम्यताम् । इतिविसर्जयेत् । अभि-
रतारम् । इति प्रत्युक्तिः । सन्ध्येन । कर्मपात्रं गृहीत्वा । आमावाजस्ये
त्यनुब्रज्य । प्रदक्षिणी करणम् । ॐ आमावाजस्यप्रसवो जगम्या ।
देमेद्यावा पृथिवीद्विष्वरूपे । आमागन्ताम्पितरा मातरा यामासोमोऽ-
मृतत्वेनयस्यात् इत्यनुब्रज्यप्रदक्षिणीकृत्वा नमस्कुर्यात् । कर्मपात्रं विप्रपा-
द्वाप्तेनिनीत्वा । अपसन्ध्येन । कुशब्राह्मणस्यशिरसा मोचनंकृत्वा । नीवीं
विसृज्य पाणिना दीपं निर्वाप्य सन्ध्येनाचम्य । यस्यमृत्वा च नामोक्त्या ।
तपोयज्ञ क्रियादिषु न्यूनं सम्पूर्णं याति सद्योवन्दे तमच्युतम् । ॐ
अच्युताय नमः ३ कायेनवासचा मनमेन्द्रियैर्वा बुद्धयात्मना वानु सृतिः
त्यभावान् । करोमि यद्यत्सकलं पार्श्वे नारायणयेति समर्पयेत् । चतुर्भिश्च
चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च हूयने च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यद्वात्मने नमः ।
अद्यमे सक्तं जन्म-अद्यमे सक्तं तपः । अद्यमे गोत्रजाः सर्वे यातावोऽ-
नुमहादिवम् । पत्रशाकादि दानेन क्लेशिता युयमी दराः ४ तत् क्लेशमिह
संजातं विमृत्युत्तन्तुमर्हथ । सूक्तस्तोत्रं जपं त्यक्त्वा । पिण्डावाणञ्च दक्षि-
णाम् । आह्वानं स्वागत्तं चार्घ्यं विना च परिवेषणम् । विसर्जनं सौमनस्यम् ।
माशिषं प्रार्थनं तथा । पित्रामन्यन् प्रकर्त्तव्यं प्राचीना बीतिनासना ॥
इति एकोविष्टश्राद्धविधिः ।

अथ पार्वणश्राद्धप्रयोगः ।

तत्रा पराह्णे स्नात्वा । मध्याह्नं सङ्कल्पः । यवकुश जलान्यादाय ।
ॐ विष्णु ३ । नमः परमात्मने श्रीब्रह्मपुराण पुरुषोत्तमाय तत्सदिह
पृथिव्यां जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आप्यावर्त्ते पुण्यक्षेत्रे हिमवत्पर्वतैश्च देशे
ब्रह्मणो द्वितीचपराद्धं श्रीश्वेत वाराहनाग्निकल्पे कृतत्रेताद्वापरान्ते अष्टा-
विंशति मे कलियुगे कलियुगस्य प्रथमचरणे वैवस्वतनाम मन्वन्तरेप-
ष्टयद्वानाममध्येऽमुक नाममन्वत्सरे दक्षिणायने शरदर्त्तो (भ्राद्रश्चेत्
पर्षा श्रुतो) आश्विनमासे कृष्णपक्षे यथानाम नक्षत्र योग करण मुहूर्त
वारान्वितायामुक् वारान्वितायां गमुक् पुण्यतिथौ । अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुक-
राशिऽमुकशर्माऽऽत् । अपमन्त्र्यं कृत्वा तिलमोटकमहितं जपं गृहीत्वा ।
अमुक गोत्राणामन्मन्त्रिण्युपितामह प्रपितामहानाममुकामुक् शर्मणां-
मपनीयानां यमुग्नादित्यस्वरूपाणामक्षयन्ति प्राणिकामनया पुरुर्यो-

द्रवसंज्ञकविश्वेदेवपूर्वकं सकलपापक्षयार्थं पार्वणश्राद्ध विधिना ऽ
 मुकपार्वणश्राद्धाधिकार सिद्धयर्थमात्म शुद्धयर्थं ॥ मध्याह्नस्नानमहं
 करिष्ये ॥ ॐ कुरुष्वेतिप्रसन्नयुक्तिः ॥ इति सङ्कल्प्य ॥ धौतवामसी परि-
 धाय तर्पणं कृत्वा ॥ श्राद्ध देशोगत्वा । दीपं प्रज्वालयाचम्य पवित्रपाणि-
 भुंत्वा । शुक्लां चरधर विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्याये-
 त्सवविष्णोपशान्तये । इति विष्णु सम्पूज्य हस्तौ संहतौकृत्वा । ॐ यं
 ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुराणं स्तथान्ये । विश्वोद्गतेःकाण
 मोश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय । अमीप्सोतार्थसिद्धयर्थं पूज्यते +
 त्रिदशैरपि सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः । इति पुष्पाञ्जलि-
 दत्त्वा । ब्राह्मणान् तैलाम्यङ्गपूर्वकमण्डलाद्वहिः संस्नाप्य प्रतिष्ठा । एतन्ते
 देवसवितर्यज्ञमग्राहुर्वृहस्पतये ब्रह्मणेतेन यज्ञ मवसेनयज्ञरसिन्तेन मानव
 मनोजूतिञ्जुपतामाञ्ज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञ ११ समिमं
 द्यातु । विश्वेदेवासऽऽहमाद्यनतामो २ म्प्रतिष्ठ । ॐ भूभुवः ।
 वैश्वदेविक कुशब्राह्मण सुप्रतिष्ठितोभव । एवं पैतृक ब्राह्मणादीनामपि ।
 ॐ एतन्त इति पठित्वा । ॐ भूभुवः । पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धि
 कुशब्राह्मण सुप्रतिष्ठितो भव । कुशोसि कुशपुत्रोसि
 ब्रह्मणा निर्मितः पुरा । त्र्यारचिते सोर्चितोस्तु शम्याहं नामकीर्तये ।
 एव मातामह ब्राह्मणस्यापि प्रतिष्ठा । मातामह सम्बन्धि कुशब्राह्मण
 सुप्रतिष्ठितोभव । कुशोसिकुशपुत्रोसीति पठित्वा । यथान् गृहीत्वा
 अचोहेत्यादि । अमुकसम्बत्सरे । दक्षिणायने । शरदृतौ अश्विन मासे ।
 महालयपरपक्षेकन्यांगतेसवितरि । (भाद्रे सिंहस्थिते इतिपठेत्) अमु-
 कतिथौ । अमुकगोत्राऽस्मत्पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनः । अमुकगोत्रा-
 स्मन्मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनः । पुरुषो मार्षसंज्ञकानां ।
 विश्वपान्देवानां । अथकर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे । वैश्वदेविक कृत्ये ।
 कुशब्राह्मणं त्वं मया निमन्त्रितः निमन्त्रितोऽस्मीति प्रत्युक्तिः । हस्तौ-
 संहतौकृत्वा अक्रोचनैः शोचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः । भवितव्यं भव-
 द्विरच मयाच श्राद्धकारिणा । सर्वायास विनिर्मुक्तैः कामक्रोध विव-
 र्जितैः । भवितव्यं भवद्विर्नोद्यतने श्राद्धकर्मणि आगतं वः सुखगतम् ।
 एतद्दः पादमस्तु । यत्फलं कपिलादाने कार्त्तिकयां ज्येष्ठपुष्करे । तत्फलं
 पाण्डवश्रेष्ठ विप्राणाम्पादपूजने । ततोपसव्येन । तिस्रान् गृहीत्वा ।
 अचोह अमुक सम्बत्सरे दक्षिणायने शरदृतौ अश्विने मासि । महा-
 लायापरपक्षे । कन्यांगते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुक गोत्राणां । अस्म-
 न्पितृ पिनामहप्रपितामहानां । अमुकामुक शर्मणा । सपत्निकानां
 बसुन्दादित्य स्वरूपाणां । अथ कर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे, पित्रा-

दित्रय श्राद्धवृत्त्ये कुशप्रद्वान् त्वमया निमन्त्रित निमन्त्रितोऽस्मि । इति प्रयुक्ति । वहुत्येतु भो नृद्वान् भवतो मया निमन्त्रिता निमन्त्रिता स्म । अक्रोधनैरिति पठित्वा । सव्येन । आगतव सुखागतम् । अपसव्येन । एतद्व पाद्यमस्तु । पत्फलमिति पठेत् । ततो मातामहाना । अपसव्यम् । अद्येहेत्यादि अमुक गोत्राणा । अस्म न्मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमाता महाना । अमुकामुक शर्मणा सपत्निकाना । वसुन्नादित्य स्वरूपाणा । अद्यकर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे । मातामहादिवत्रय श्राद्धवृत्त्ये । कुश-
प्रद्वान् त्वमया निमन्त्रित ॥ निमन्त्रितोऽस्मि । इति प्रयुक्ति ॥ अक्रो-
धनैरिति पठित्वा । ॥ येन । आगतं सुखागतम् । अपसव्येन । एतद्व पाद्यमस्तु । यत्फलमिति पठेत् । सव्येन पादार्घ्यं सपाद्यगन्धपुष्पाक्ष-
तादि तूष्णीमिति पठेत् । पादार्घ्यान् गृहीत्वा । अद्येह अमुक सम्वत्सरे ।
अमुकायने । अमुकतो । अमुकमास । अमुकपक्षे । अमुक तिथौ । अमुक
गोत्राऽस्मत्पित्रा दित्रय श्राद्धसम्बन्धिन । अमुकगोत्राऽस्मन्मातामहादिवत्रय
श्राद्धसम्बन्धिन । पुरुषो मार्द्रव सप्तक विरवेदेवा + अद्यकर्त्तव्ये
अमुक पार्वणश्राद्धे । वैश्वदेविक ब्रह्मन्नेपते पादार्घ्योऽस्तु । तत पैतृक-
कर्म । अपसव्येन । पादार्घ्यं सपाद्य । हस्ते गृहीत्वा । अद्येह अमुक
सम्वत्सरे दक्षिणायने । शरद्वतीवाश्विने मासे । महालयापरपक्षे । कन्या-
गते सजितरि । अमुक तिथौ । अमुक गोत्रा अस्मत्पितृ पितामहपिता
मह । अमुकामुक शर्मणा सपत्निका । वसुन्नादित्य स्वरूपा । अद्यकर्त्तव्ये ।
अमुक पार्वणश्राद्धे पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धि कुशप्रद्वान्नेपते पादार्घ्योऽस्तु ।
अद्येह । अमुक सम्वत्सरे । दक्षिणायने । शरद्वती वाश्विने मासे ।
महालया परपक्षे कन्यागते । सजितरि । अमुकतिथौ । अमुक गोत्रा ।
अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धमातामहा । अमुकामुक शर्मणा
सपत्निका । वसुन्नादित्य स्वरूपा । अद्यकर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे ।
मातामहादिवत्रय श्राद्धसम्बन्धि कुशप्रद्वान्नेपते पादार्घ्योऽस्तु । पादार्घ्याना
यमतम् । सव्येन । स्वयमाचम्य । विरवेदेवा नाचामयेत् । अपसव्येन ।
पितृनाश्रणे मातामह ब्रह्मणानाचामयेत् । सव्येन । श्राद्ध देशोपवेशनम् ।
ब्रह्मन्नुत्तिष्ठ । अत्रोपविशतामिति । श्राद्धमुच्यते । वैश्वदेविक ब्राह्मणम् ।
अपसव्येन । उद्दमुच्यते । पित्रादि ब्राह्मणेनुपवेशयेत् सव्येन । तत
कर्मपात्रपूरणम् । भूमिं स्मृत्युच्यते । भूमिं भूमिरस्यदितिरस्य विरवेदेवा
त्रिरस्य सुवनस्य घर्त्री प्रथिधी प्यच्छ प्रथिनी द १५ दृथिधी म्मादि
१५ मी । भूमौ गच्छन्नादिर्लिंगित्वा । आसन आसने पात्रम् । पात्रे

पवित्रम् पवित्रेस्थोवैष्णव्यौ० ॥ शन्नोदेवीरितिजलम् । शन्नोदेवीरभिष्टयऽ
 आपो० । यवोसि यवयास्म द्वेपोयत्रया राती द्विवेत्वान्तरिक्षा यत्त्वापृथि-
 व्यैत्त्वा शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृपदनाः पितृपदनमसि । इति यवानृक्षिपेत् ।
 तिलोसि सोम दैवत्यो गोपत्रो देवनिर्मितः । प्रत्नमद्भिः प्रहृक्ः । स्वधया
 पितृल्लोकान्प्रीणाहिनः स्वाहा । गन्धपुष्पाक्षतादि तृष्णां निक्षिप्य । कर्मपात्रं
 सुसम्पन्नमस्तु । अस्तु सुसम्पन्नम् । तेन जलेनात्मान सम्प्रोक्ष्य । आद्व-
 सामप्रीश्च सम्प्रोक्ष्य । प्राणायामं विधाय । पुण्डरीकाक्षाय नमः ३ ।
 ॐ अपवित्रः पवि० । हस्तो संहतो कृत्वा । देवताभ्यः पितृभ्यश्च ।
 महायोचोगीभ्य एवच । नमः स्वहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः । इति
 त्रिः पठित्वा ऽ सप्तव्याधा दशार्णेषु मृगाः कालं जरे गिरो चक्रवाकाः
 सरद्वीपेहंसाः सरसि मानसे तेषि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः ।
 प्रास्थिता शीर्षं मध्वानं यूयं किमवसीदथ । आद्वकाले गयाध्यात्वा ध्यात्वा-
 देयं गदाधरम् । मनसा च पितृभ्यात्वा । ततोऽपसव्येन । अग्नेहत्याद्युल्लिख्य ।
 अमुक गोत्राणां । अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां । अमुकामुक शर्मणां
 सपत्नीकानां वसुरुद्रा दित्यस्वरूपपाणां । तथाऽमुक गोत्राणां अस्मन्माता-
 मह प्रमातामह दृढप्रमातामहानां । अमुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां
 वसुरुद्रादित्य स्वरूपपाणां । अक्षयतृप्तिं प्राप्स्यथ पुरुषो मार्द्रं व सङ्गरु
 विश्वेदेव पूर्वकम् । अमुक पार्वणश्राद्धं समारभे । सव्येन । पञ्चक्रोशं
 गयाक्षेत्रं क्रोशमेकं गयाशिरः । अनन्त गर्भिणीं सार्धं क्रौशं द्विदलं मैवच,
 प्रादेशमात्रं त्रिद्वयं पवित्रं यत्र कुत्रचित् । सप्तव्याधा दशार्णेष्विति पठ-
 नेभ्यऽपसव्यमस्ति कुत्र चित् । यत्रयत्र स्मरिष्यामि । पितृणां दत्तमक्षयम् ।
 ततोऽपसव्येन । तिलमोटकं गृहीत्वा । वामं कट्याम् । आरोपयेन् ॐ
 सोमस्य नीविरपिविष्णोः शर्मसि शर्मं यत्र मानस्वेन्द्रियस्य योनिरसि
 सुसत्याः कृपीरुधि । इति नीवीं धृत्वा ततो दिग्गन्धनम् । मोटकान-
 गृहीत्वा । अग्निध्वाताः पितृगणाः प्रार्चयन्तु मे दिशम् । तथा वहिपदः
 पान्तु यामीये पितरस्तथा । प्रतीची माज्यपापान्तु । उदीचीमपि सोमपाः ।
 विदिशश्च गणाः सर्वैरक्षन्तुर्दमघोपिवा । रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवा
 सुरदोषतः, सर्वतश्चाधिपस्तेषां, यमोरक्षां करोतुमे । तिलारक्षन्तु दिति-
 जान्दर्भारक्षन्तु राक्षसान् । पक्षि वैश्रोत्रियोरक्षेर्दार्तिथिः सर्वैरक्षकः । अत
 ऊर्ध्वं च कोणेषु हविष्मं तश्च सर्वदा । ततः सव्येन । सामान्कुरान् गृही-
 त्या । कर्मपात्रस्य जलमभि लोडयेत् । ॐ यदेवादेरहेदनं देवामश्चक्रमा-
 व्ययम् । अग्निर्मा तस्मादेन सो विश्वान्मुञ्चस्व ६ ह.म. । यद्विदि-
 वायदि मैना ६ सिचकृमाव्ययम् । व्ययुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चस्व
 ७ ह.स. । यद्विजायदप्रदिश्व प्रऽपना ६ सिचकृमा व्ययम् । मृत्यो

मातस्मा देनसो विवश्वान्मुञ्चत्वा ॐ हसः । गायत्र्याच । ततो दर्भतिल
युतम् । तज्जलं दिग्बन्धे । सव्यमस्ति । एकेवाम्पुस्तके ।) गृहीत्वा ।
पाकविधानमुत्तार्य । शूद्रादि वृष्टिद्रूपिन् पाकपूतोस्तु श्राद्धयोग्यो भवतु ।
इति गायत्र्यान्न सम्प्रोक्ष्य । अथ प्रनिष्ठा । यवकुश जलान्यादाय । ॐ
विष्णुः ३ नमः परमात्मने श्रीपुराण पुरुषोत्तमाय । अत्र पृथिव्यां
जम्बूद्वीपे भरतखण्डे । आर्यावर्तेषष्ठ्याद्वानां मध्ये । अमुकनामसम्बत्सरे ।
दक्षिणायने शरदृतौ (आश्विने वर्षा ऋतौ ।) आश्विन मासे । महालया
परपक्षे कन्यागते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुक गोत्रोत्पन्नः । अमुक
राशिः । अमुक शर्माहं । अपसव्यम् । तिलमोटकं बगृहीत्वा । अमुक-
गोत्राणां । अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां । अमुकामुक शर्माणां
सपत्निकानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां । तथामुकगोत्राणां । अस्मन्मातामह
प्रमातामह वृद्धप्रमात महानां अमुकामुक शर्माणां सपत्निकानां । वसु-
रुद्रादित्य स्वरूपाणां । अक्षय तृप्तिकामनया पुरुरयो मार्द्रव सन्नक
विश्वेदेव पूर्वकं अर्घपिण्डसहित पञ्चान्नेन पाषाणश्राद्ध विधिनामुक-
पार्षणश्राद्धं करिष्ये । ॐ कुरुष्व इति प्रत्युक्तिः । ततः सव्येनासनम् ।
ऋजु कुराद्वय यवानादाय । अघोहेत्येयादि । अमुक नामसम्बत्सरे ।
दक्षिणायने शरदृतौ आश्विन्य मासे महालयापरपक्षे । कन्यागते
सवितरि । अमुकतिथौ । अमुक गोत्राऽस्मत्पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिना ।
तथामुक गोत्रास्मन्मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनां पुरुरयो मार्द्रवसंज्ञ-
कानां । विश्वेषां देवानां इदमासनमस्तु । ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनभा-
ष्यताम् आसामहे । तत्रोपसव्येन तिलमो टकं गृहीत्वा । पैतृकं कर्म ।
अघोहेत्यादि । अमुक नाम सम्बत्सरे । दक्षिणायने । शरद ऋतौ
आश्विन मासे । महा लयापरपक्षे । कन्यागते सवितरि अमुक तिथौ ।
अमुक गोत्राणां । अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां । अमुकामुकशर्माणां ।
सपत्निकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां । अमुकपार्षणश्राद्धे पित्रादित्रय
श्राद्धमभ्यग्यकुशप्रदान् । इदमासनमस्तु । सव्येन । भूर्भुवः स्वः इदमासन
भाष्यताम् । आमे । अपसव्यम् । पुनरितिलमोटकम् गृहीत्वा । अघोह ।
अनुक गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां । अमुकामुक
शर्माणां । सपत्निकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां । अमुक पार्षण-
श्राद्धं । मातामहादित्रय श्राद्धमभ्यग्य कुशप्रदान् । इदमासनमस्तु ।
सव्येन भूर्भुवः स्वः इदमासन भाष्यताम् । आमे ततः आवाहनम् ।
सव्य विधाय । कुराद्वययवान गृहीत्वा । अघोह । अमुक गोत्रा
स्मत्पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनः तथामुक गोत्रास्मन्मातामहादित्रय
श्राद्धसम्बन्धिनः पुरुरयो मार्द्रव मष्टकान्विश्वान्देवानहमावाहयिष्ये ।

ॐ आवाहय इति प्रत्युक्तिः । ॐ विश्वदेवास ऽ आगत ऋणुताम् ऽ
 इमं च हवम् । एदंर्वहिंन्निपीदत । इत्यावाह्यं प्रदक्षिणं यवान्
 विकीर्य । ॐ विश्वदेवाः ऋणुतेमं च हवम्मे येऽअन्तरिक्षे य ऽ
 उपविष्ट । येऽअग्निजिह्वाऽ उतवा यजत्राऽ आसद्यास्मिन्वहिं पि
 भादयध्वम् । आगच्छन्तु महाभागा विश्वदेवाभहावलाः । ये यत्र
 विहिता आद्वे सावधाना भवन्तुते ॐ आगच्छत ।
 तसोपसव्येन पितृनावाहयेन् । तिलमोटकं गृहीत्वा । अयेह । शरद्
 ऋतौ । अश्विनमासे महालयापरपक्षे कन्यां गते सवितरि । अमुक-
 तिथौ । अमुक गोत्रान् । अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुका
 अमुकशर्मणः सपत्निका नावसुरुद्रादित्य स्वरूपान् पितृन् । आवाह-
 यिय्ये । ॐ आवाहय । ॐ वसन्तस्त्वा निधिं मधु शंतः समिधीमहि ।
 वशन्तु शतऽआवाह पितृन् हविषेऽअत्तवे । इत्यावाह्याऽ प्रदक्षिणं
 तिलान् विकीर्य-आयन्तुनः पितरः सोम्या सोमिष्यात्ताः पथिभिर्ह-
 वयानैः । अस्मिन्व्यज्ञे स्वधया भदन्तोऽफिन्नुन्तुतेव वन्त्वस्मान् । ये
 मया निमन्त्रिताः पूर्वं पितरः पितृपक्षगाः । आश्रित्य पितृ कार्येषु साव-
 धाना भवन्तुते । आगच्छन्तु । इति जपेत् । मातामहानावाहयेत् ।
 अपसव्येन । तिलमोटकं गृहीत्वा । अयेह । शरद्ऋतौ । अश्विनमासे
 महालया परपक्षे । कन्यांगते सवितरि अमुकतिथौ । अमुकगोत्रान् ।
 अस्मन्मातामह प्रमातामह धृद्धप्रमातामहान् । अमुकासु क शर्मणः
 सपत्निकान्वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणाम् मातामहानावाहयिय्ये । ॐ आवा-
 हय । वसन्तस्त्वेत्य नया वाह्याऽप्रदक्षिणं । तिलान् विकीर्य । आयन्तुनः
 इति जपेत् । आगच्छन्तु । ततः सव्येन । हस्तार्धस्थापनम् । देवाप्र
 द्वावेकवा । ततो भूमौ शंखचक्रादिकं लिखित्वा । आसतम् आसने
 पात्रं । पात्रे पवित्रम् । पवित्रे स्थौ ऋष्यग्नौ सवितुर्व्यः ऋषय
 ऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रद्वेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । इति
 पवित्रम् निक्षिपेत् । शन्नोदेवीरभिष्ठयऽ आपोभवन्तु

(यमः) समूहस्तु भवेद्दर्शः पितृणा आदूषकर्मणि । मूलेत लोकाञ्ज-
 यति शकस्पृष्ट महात्मनः । (व्यासः) तर्पणादीनि कार्याणि पितृणा यानि
 कानिच तानिस्तुदिगुणं हर्मैस्त्वत्पत्रोवपेयतः । अथ वज्याः कुराः आद
 प्रदीपे । पितृदार्पा स्तरयेच तर्पणविधौ त्याजानिबुक्ताः कुराःशद्गर्भाः अर्पि-
 यतास्य पथियेभुक्तौ मलोत्तसर्जने । नो वो ब्रह्मगुणो भयास्थित परे दग्वास्तथा
 बन्दिना इति वज्याः । दर्मादीन्स्वयमा हरेत्तद्वपलानौते स्तुकायां क्रिया ।
 कृपाभावेकाराः । अग्न्योरिषन्ति विस्तरमयात्र लिखितम् ।

पीतये । शय्योरभिश्रवन्तुन । इति जलम् । यवोसीति यवान् गन्धपुष्पा-
 च्छतादि प्रणवेन तृष्णीं वा यथाधिकार निक्षिप्य । एवं रीत्या
 त्रीणि पित्रार्घ्यं पात्राणि । आसनं । आसने पात्रं पात्रं पवित्रम् । पवित्रे-
 स्थीव्येष्णुव्याविति । शन्नोदेवीरिति जलम् । तिस्रोसीति तिस्रान् ।
 गन्धं पुष्पाक्षतादि प्रणवेन तृष्णीं वा निक्षिप्य । ततः भो ब्राह्मण-
 देवार्घ्यं पात्रपरिपूर्णं स्ताम् । इति प्रत्युक्तिः । एकार्घ्यं देवार्घ्यं पात्रं
 परिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् । ॐ एवं रीत्या पित्रादीनामपि ।
 पित्रार्घ्यं पात्राणि परिपूर्णानि सन्तु । सन्तु यथा माता महार्घ्यं पात्राणि
 परिपूर्णानि सन्तु । २ ततः सव्यं विधाय । पवित्रं गृहीत्वा । विप्रहस्ते
 समार्यं । सपवित्रेषु हस्तेषु ॐ यादिव्याऽ आपः पयसा संवभूयुयाऽ
 अन्तरिक्षाऽ उत पार्थि वीर्याः हिरण्यं वर्णा यज्ञियास्तानऽ आपः शिवाः
 शंभुः स्योनाः सुहवा भवन्तु । अघोह अमुकं सम्बन्धितः । दक्षिणायने ।
 शरद् ऋतौ आरिष्वनमासे महालयया परपक्षे कन्यागते सवितरि । अमुक
 त्रिथौ अमुक गोत्राऽस्मत्पित्रादित्रयं श्राद्धं सम्बन्धितः । यथामुक
 गोत्रास्मन्मानामहादित्रयं श्राद्धं सम्बन्धितः पुरुर वार्द्रं सप्तकविश्वेदेवाः ॐ
 अमुक पार्वणश्राद्धे एषवो हस्तार्घ्योऽस्तु । पुनः प्रत्यर्घ्यं । पैतृकं कर्म ।
 सव्येन । सपवित्रेषु हस्तेषु यादिव्या इति पठित्वा । अपसव्येन । अर्घ्य-
 पात्रं गृहीत्वा । अघोह । अमुक गोत्र । अस्मत्पितः अमुक शर्मन्
 सपत्निकं वमुस्वाग्र । अमुकपार्वणश्राद्धे एषते हस्तार्घ्योऽस्तु सव्येन ।
 पुनः प्रत्यर्घ्यं । पुनः सपवित्रेषु हस्तेषु यादिव्या इति पठित्वा ।
 अपसव्यं विधाय, अर्घ्यपात्रं गृहीत्वा । अघोह । अमुक गोत्रः । अस्मत्पि-
 तामह । अमुक शर्मन् सपत्निकं रुद्र स्वरूप । अमुक पार्वण श्राद्धे ।
 एषते हस्तार्घ्योऽस्तु । सव्येन पुनः प्रत्यर्घ्यं । पुनः सपवित्रेषु यादिव्या
 इति पठित्वा । अपसव्येन । अर्घ्यपात्रं गृहीत्वा । अघोह । अमुक गोत्र ।
 अस्मत्पितृनामह । अमुक शर्मन् सपत्निकः । आदित्य स्वरूपं । अमुक
 पार्वणश्राद्धे । एषते हस्तार्घ्योऽस्तु । सव्येन पुनः प्रत्यर्घ्यं । सपवित्रेषु
 हस्तेषु यादिव्या इति पठित्वा । अपसव्येन । हस्तार्घ्यपात्रं गृहीत्वा ।

अथ विश्वेदेवाः तत्र शब्दहस्ततिः । इष्ट श्राद्धे अह्नू दक्षी मत्स्योनादी
 त्वेवम् । नेति किं कैफा एकालोका मेनभुगिलाचनौ । पुरुरवां मार्वंश्च पार्वणे
 ममुदाहृत्य । यत्र यनेषा नाम न ज्ञायते । तत्र श्लोका उच्चनारर्थायः ।
 आगन्धान्विति ।

ॐ विश्वेदेव विषय शंख दृढहति वचनं पूर्वशक्तं तत्र पुरुरवो
 भार्गवश्चेति पाठे पुरुरवश्चान्द्रवश्चेति वेदितव्यम् ।

अथेह अमुक गोत्र । अस्मन् मातामह । अमुक शर्मन् सपत्निक
 वसुस्वरूप । अमुक पार्वणश्राद्धे एषते हस्तार्घ्योऽस्तु । सव्येन । पुनः
 प्रत्यर्घ्यं च । सपवित्रेषु हस्तेषु यादिव्या इति पठित्वा । अप-
 सव्येन । हस्तार्घ्यपात्रं गृहीत्वा अथेह । अमुक गोत्रः अस्म-
 न्मातामह । अमुक शर्मन् सपत्निक रुद्रस्वरूप । अमुक
 पार्वणश्राद्धे एषते हस्तार्घ्योऽस्तु । सव्येन । पुनः प्रत्यर्घ्यं च सपवित्रेषु
 हस्तेषु यादिव्या इति पठित्वा । अपसव्येन । हस्तार्घ्यं पात्रं गृहीत्वा ।
 अथेह । अमुक गोत्र । अस्मद्वृद्धप्रमातामह अमुक शर्मन् सपत्निक ।
 आदित्यस्वरूप । अमुक पार्वण श्राद्धे एषते हस्तार्घ्योऽस्तु । सव्येन ।
 पुनः प्रत्यर्घ्यं च । ततः सर्वान् संश्रवान् प्रथमे पितृ ॐ पात्रे समवनीय ।
 अर्घोदकं श्रियं दद्यात्पुत्रपौत्रादि वद्धनम् । यस्मोत्तस्माच्छ्रियं मेस्या दिह
 लोके पस्त्रश्च । इति मूर्द्धनि अभिषिच्य । अपसव्येन । पितृधामभागे
 कुशानास्तीर्य । तदुपरि सपवित्रं पित्रर्घ्यपात्रं मातामहार्घ्यपात्रं च पितृभ्यः
 स्थानं मसीति न्युवर्जं कृत्वा । तदुपरि स्वधावाचनीयान् सपवित्रान्
 त्रीन्कुशान्दक्षिणामान् संस्थाप्य । आचारत् । ॐ शुन्धतांल्लोकाः
 पितृपदनाः पितृपदनं मसीति संप्रोक्ष्य । पितृभ्यः स्वधायिभ्य इतिपूजनम् ।
 दतोङ्गुपु पवित्रे स्यक्तवा सव्येन पूजनं । विश्वेषां देवानाम् अर्चनवि-
 धावन्नं नमः । इति विश्वेदेव ब्राह्मणहस्ते जलं दत्त्वा । नमोस्त्वनंताय
 सहस्रमूर्तये सहस्र पादाक्षिसिरोरुवाहवे । सहस्र नाम्ने पुरुषाय शारथ्ये
 सहस्रकोटि युगधारिणे नमः । अनेन गन्धादिभिः पूजनम् । गन्धोऽस्तु
 स्वाहा । यवाः पुष्पाणि । तुलसीदलानि अपसव्येन । पितृणाम् ।
 संविन्धकुशविप्रस्य । अर्चनविधावन्नं नमः । ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः
 स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधा-
 यिभ्यः स्वधानमः अक्षन्पितरो मीमदन्तपितरो वोतृपन्त पितरः पितरः
 शुंघष्टम् । अनेनपितृणाम् पूजनम् । नमो यः पितरो रसायेति माताम-

* अत्र श्राद्ध माप्यम् । प्रथमे पात्रे संश्रवान् समवनीय । पात्रं न्युवर्जं
 कृत्य पितृभ्याः स्थानं मसीति पात्रेण ततः प्रथमं पात्रं न्युवर्जं करोति भूमौ ।
 तिलं कुशान्दक्षिणं मूलाक्षिदक्षिणं तेषां मुपरिन्यवर्जं मधोमुखं करोति गन्ध्या-
 दिभिः पूजयेदित्युक्तम् । वैश्यदैविकं पात्रं संश्रवा अपि प्रथमे पात्रे निक्षिप्यन्ते-
 एवं मातामह प्रथमं पात्रेऽपि संश्रवान् समवनीय न्युवर्जं कृत्वा वक्ष्यमाणं
 कुर्यात् । अत्र प्रथमं पात्रं दैवरात्रं माहुः । तदयुक्तम् । पितृयानं तदुत्तारं
 कृत्वा । विप्रान्विसर्जयदिति । आहूतास्त तत्रतिष्ठति पितरः शौनर्वा ब्रवीत ।
 सं श्रव शब्देनार्घ्यं पात्रलग्नापावयनाऽभिधीयन्त नहस्तदन्तच्युताः ।

हानां श्राद्धसम्बन्धि कुशविप्रार्चनविधावत्र नमः शेषं पूर्ववत् । गन्धास्तु
स्वधा । अक्षताः पुष्पाणि तुलसीदलानि । धूप दीपौ पुनः पवित्रकरे
कृत्वा । सव्येन । यत्र कुशान जलञ्च गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्रा-
स्मत्पित्रादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनः तथाऽमुक गोत्रास्मन्मातामहादित्रय श्राद्ध
सम्बन्धिनः । अमुक पार्वणश्राद्धे । पुरुरमाद्वं संज्ञकाः विश्वेदेवाऽर्चन-
विधाविमानि गन्धाक्षत् पुष्पतुलसीदल धूपदीपवासोभूषणादीनि
महत्तानि यथा विभागं वः स्वाहा । विश्वेदेवसम्बन्धि कुशविप्रार्चन
विधेः सर्वं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् । तलोपसव्येन । तिला-
मोटक युतं जलं गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्राः । अस्मत्पितृ
पितामह प्रपिता महाः । अमुकामुक शर्मणः सपरिका वसु-
रुद्रादित्य स्वर्गपाः । अमुकपार्वणश्राद्धे । कुशविप्रार्चन विधा-
विमानि जलगन्धाक्षत्पुष्पतुलसीदलधूपदीपवासोभूषणादीनि महत्तानि
यथा विभागवः विप्रार्चन विधिस्मर्त्तं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परि-
पूर्णम् । गन्धान् दिदानाचमनम् । सव्येन स्वयमाचम्य । विश्वेदेवमाक्षण-
माचामयेत् । अपसव्येन-पित्रादिमाक्षणा माचामयेत् मातामहादि-
माक्षणानप्याचामयेत् । सव्येन । अच्युतस्मरणम् । ततः यथा चक्रायुधो
विष्णुश्चैलोक्यम्परिरक्षति । एवंमण्डलभस्मां क सर्वभूतानि रक्षतु । इति
विश्वेदेवमाक्षणसमीपे । अपसव्येन । पितृमातामहब्राह्मणसमीपे भस्मना
मण्डले कार्यम् । भस्मना चतुष्कोणमण्डलानि विधाय ॐ तेषामुपरि
भोजनवात्राणि संस्थाप्य । पितृद्वित्रसमीपे जलपात्रं संस्थाप्य । धृताक्त-
मन्नं विहितमादाय वदत्य सम्प्रोदय पृच्छति । भो ब्राह्मणा युष्मदनुहाया
जज्ञे, अग्नीं करणमहं करिष्ये । ॐ कुरुष्व । विप्रपाणौ जलेवाग्नौ करण-
होमः । ÷ अपहोमः ÷ अपसव्येन । तिलमोटकयुतमन्नं गृहीत्वा । ॐ
आनमये कव्यवाहनाय स्वाहा । इदमन्नये कव्य वाहनाय । ॐ सोमाय
पितृमते स्वाहा । इदं सोमाय पितृमते । किञ्चिद्वतशेषं पित्रादि-
माक्षणेभ्यो दत्त्वा । शेषं पिण्डार्थे स्थापयेत् । ततः सव्येन । परिवेषणम् ।

ॐ अग्नौ वाग्वाहोमश्च वसन्त्य उपवीतिना । अपसव्येन वा कार्यम्
दद्यात् । अग्नौ नमः । इति छन्दोगपरिशिष्टे । कस्मीपानां त्वष्ट्रमेवपरिव-
रिगृपश्च नदधु भुवेति सर्वातिदेशात् । सव्यं तु छन्दोगपरम् । छन्दोगा शुद्धयुः
सम्पेनारसव्येन वाहुयः । इति वृद्धयाञ्जल्यस्योक्तेः । अगोप्यं च दद्याद्
मानुदग्निरिति । तिलमतेन रक्षितं इवमप्यकुरुष्वेत् । चतुष्कोणं द्वि-
बापरं विधेयं दारिपत्यम् । मन्त्रज्ञानादतिपैरवस्य सहास्यामुपार्थं
गृह्यम् । इति भृगुः ।

प्रथमं विष्णवे नैवेद्यम् । ॐ नाम्याऽआसीदन्तरिक्ष ६
 शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां २ ॥
 अकल्पयन् । विष्णो साङ्गसपरिवारसबाहन इदं अमृतस्वरूपन्नैवेद्यं
 गृहाण स्वाहा इति निवेद्य । ततो वैश्वदेविकपूर्वकं सुशीतजलसहितो-
 ष्णान्न परिवेषणम् । रजतादि पात्रेषुकुर्यात् गायत्र्या अन्नसम्प्राप्त्यै ।
 अन्वाधितदक्षजानुः स्वस्तिकाकृतिनाऽधोमुखेन वामोपरि स्थितेन दक्षि-
 णहस्तेन क्लृ मधु३ इति पात्रमालम्ब्य जपति । पृथिवी तेपात्रं द्यौर-
 पिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमितेऽमृतं जुहोमि । विष्णो हव्यऽरक्ष ।
 इति प्रादक्षिण्येन यवान् विकार्य । अपहताऽअसुरा रक्षऽसिखेदिपदः
 अङ्गुष्ठमहणम् । ॐ इदं विष्णुर्विवचक्रमे त्रेधान्दिधे पदम् । समूढमस्य-
 पाठसुरे । इदमन्नम् । इमा आपः इदमाज्यम् । इदं शाकादिकं
 सर्वं हविः । अघोहः अमुकसम्बत्सरे । दक्षिणायने शरद ऋतौ अश्वि-
 नमासे महालयापरपक्षे । कन्यागते सवितरि । अमुकर्तित्यौ । अमुक-
 गोत्रास्मत्पित्रादित्रय ब्राह्मणसम्बन्धिन्यः तत अमुगोत्रा अस्मन्मातामहा-
 दित्रयब्राह्मणसम्बन्धिन्यः पुरुरवार्वसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्योऽस्मिन्
 अमुकपार्वणब्राह्मण इदमन्नं इमा आपः इदमाज्यं इदं शाकाः दिकं
 यत्परिविष्टं यत्परिवेष्यमाणं ब्राह्मणस्यातृप्तिपर्यन्तं अमृतस्वरूपं महत्तं
 यथाविभाग वः स्वाहा । इति भूमौ जलं प्रदद्यात् । ब्राह्मणहस्तदानै
 प्रत्यवायः । ॐ ये देवासो दिव्यौकादसस्यपृथिव्या मध्वयेकादशस्थ ।
 अपसु क्षितौ महिनैकादशस्थ तेदेवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् । इति
 पठित्वा । विप्रहस्ते जलमपयेत् भूमौ देवेभ्यः । तथा गायत्र्याऽन्नं
 सम्प्राप्त्यै । अपसव्यम् कृत्वा । अन्वाधितवामजानुः । स्वस्तिकाकृतिना
 ऊर्ध्वमुखेन दक्षिणोपरिस्थितेन वामहस्तेन मधु३ । इति पात्रमालम्ब्य
 जपति पृथ्वीते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते । अमृतं जुहोमि ।
 विष्णो कव्यऽरक्ष । अप्रादक्षिण्येन तिस्रान्विकीर्य । अपहताऽअसुरा-
 रक्षऽसिखेदिपदः । अङ्गुष्ठमहणम् इदं विष्णुरिति पठित्वा । इदमन्नम् ।
 इमा आपः । इदमाज्यम् । इदं शाकादिकं सर्वं कव्यम् । अघोहः ।
 अमुकगोत्रेभ्योऽस्मत्पितृपितामह प्रपितमहेभ्यः । अमुकामुकशर्मभ्यः
 सपत्निकेभ्यो वसुरुद्रादित्यस्वरूपेभ्यः । अमुकपार्वणब्राह्मणे । इदमन्नं ।
 इमा आपः । इदमाज्यम् । इदं शाकादिकं यत्परिविष्टं यत्परिवेष्यमाणं

छदैवे नुत्तानहस्ताभ्यामुत्तानाभ्यान्तु पैतृके । दवे सम्यमपः कृत्वा अपसव्यन्तु-
 पैतृके इति वचनात् ॥—॥ पृथ्वीपात्रमिति पात्रमिन्द्राणम् । कृत्वेदं विष्णुरि-
 त्येने द्विजाङ्गुष्ठं निवेशयेत् । (स्मृतिसङ्ग्रहे) २) १) या,

ब्राह्मणस्यातृप्तिपर्यन्तं ब्राह्मणेभ्य आतृप्तिदास्यमानमन्नंच अमृत स्वरूपं
मदत्तं यथाविभागं वः स्वधा । ॐ ये चेह पितरो येचनेह्यांश्च विवद्
मया ३ ॥५ उचत्रप्रविदमत्वं ज्वेत्थ यतिते जातधेदस्वधामिदं ॥६
मुहुतं जुषव । इति पितृब्राह्मणहस्ते । आपोशानं, दत्वा ॥ पुनः माता-
महपात्रे । उत्तानाम्यां पाणिभ्यां । मधु ३ इति पात्रमालभ्य जपति । पृथिवी
ते पात्रमिति । विष्णोक्तव्यं ॥ रक्ष । इति । आप्रादक्षिण्येन तिलान्वि-
कीर्य । अपहृताऽअसुरा रक्षा ॥ सि ज्वेदिषद्ः अह्मुष्टमदणं इदं विष्णु-
रिति पठित्वा । इदमन्नं । इमा आपः । इदमाज्यं । इदं शाकादिकं सर्वं
कव्यं । पुनः । तिलमोटकं जलञ्च गृहीत्वा । अद्येह । अमुकगोत्रेभ्यः ।
अम्नन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः । अमुकाअमुक शर्मभ्यः ।
सपत्तिकेभ्यो वसुरुद्रादित्यस्वरूपेभ्यः । अमुकपार्वणश्राद्धे । इदमन्नं ।
इमा आपः । इदमाज्यं । इदं शाकादिकं यत्परिविष्टं यत्परिवेष्यमाणं
ब्राह्मणस्यातृप्तिपर्यन्तं ब्राह्मणेभ्य आतृप्तिदास्य मानमन्नं च । अमृत-
स्वरूपं मदत्तं यथाविभागं वः स्वधा । येचेह पितर इति पठित्वा इति
मातामहब्राह्मणहस्ते । आपोशानं दत्वा यथासुखेन मुह्यम् । इत्याज्ञां
दद्यात् मुग्धम् । इति विप्रोक्तिः ततः सव्येन । प्रणवव्याहृतिपूर्वकं
गायत्रीन्मधुमतीश्रुक्त्रयं च पठेत् । ॐ मधु ३ । मधुव्याताऽ-
श्रुतायने मधुक्षरति सिन्धवः माध्वीनः सन्त्वोषधीः । मधुमक्त-
सूनापमा मधुमत्पार्थिव ॥ रजः मधुचोरस्तु नः पिता । मधुनाश्रोवन्स्प-
तिर्मधुमा ॥५ अस्तु मूर्त्यः । माध्वीर्गावो भवन्तुनः मधु ३ यथाशक्त्या
पितृसूक्तं आगुः शिशान इत्यादि सप्तदशार्थां रुधिरस्तवादीनश्स्तु विप्रेषु
पठेत् ततः शुक्लसीशर्करागव्यदुग्धाज्यमधुविलगंगाजलयुतमन्नं ताजपात्रे
कृत्वा । कमरात्रोदकं विष्णुनियेदितमक्तमन्ती करणान्नशेषमपि दत्त्वा ।
अपमन्येन । विषहान्निर्मा-य । विकिरदानम् ॥ नेष्टृत्यान्दिशि कुश-
त्रयं भूर्मा क्षिप्त्वा । आसनम् । असंस्कृतप्रमोतानां त्यागिनां कुलभाशि-
नाम् । अष्टिदृष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम् । इत्यासनं दत्त्वा ।

आतांरुर्न याममागे मुगपानसमम्पवेत् । ददमागे ॥ ४ : कुर्वाणो-
मगानरत्नं लभेत् । + (प्रचेताः) आतांशानम्प्रदोषाय सावित्री विष्टपेदथ ।
मधुशता इति श्रुत्वा मध्विष्टेत्तु विक्रम्यथा । + प्रचेताः मुग्धानेषु ॥
विप्रेषु श्रुत्वापुनः सामन्तवृक्षम् । जपेदभिमुखो भूत्वा विष्णुन्त्रेव विष्टेत्ततः ।
इत्य मीनिः । आद्रिमन्त्रमात्रांस्तु विषहान् कुर्वाणं पार्षणे । विष्टोपपाते
अग्निमाहोः मृगक रगो विष्टे च विरली इने पुनः विष्टा प्रदत्तव्या ग्नेन
पार्षणे एदन्तम् ।

सजलतिलमोटकयुतमन्नं विकिरेत् । अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः
कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् । येषान्न पचते
माता येषान्न पचते पिता । उच्छिष्टं ये च काञ्चन्ति तेभ्योऽन्नं दत्तमक्ष-
यम् । उच्छिष्टं मागधेयेभ्य नमः । इति गन्धाक्षतपुष्पैः पूजम् । अङ्गुष्ठ-
पवित्रे त्यक्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षल्य । सव्येनाचम्य । ततः आद्धदेशमा-
गत्य । अन्ये अङ्गुष्ठपवित्रे करे कृत्वाचमेत् । अपसव्येन । पितृपूर्वं ।
सकृत्सकृदापो दत्त्वा । सव्येन । विश्वेदेवब्राह्मणहस्तोऽपि चुलुकदानम् ।
पूर्वमद्गायत्री । मधुमतीं मध्विति च जपित्वा भो ब्राह्मणा अस्मिन्पाक-
मध्ये यत्किञ्चिद्बोचते तत्प्रतिगृह्यताम् । तृप्ताः स्थः । तृप्ताः स्मः ।
शेषान्नेन किं क्रियताम् इष्टैः समुज्यताम् । अपसव्येन पिण्डदानार्थं
वेदिकालेपनं गोमयेन । अपहता इति रेखाकरणं कुशेन + ॐ अपहतोऽ-
असुरा रक्षा ॐ सिन्धेदिपदः । उरमुकधारणम् । ॐ येरुपाणि
प्रतिमुञ्चमानाऽमुराः सन्तः स्वधया चरन्ति । परा पुरा निपुरो ये
भरंश्चग्निस्तोऽङ्गोकात्प्रणुदात् त्यस्मान् सतिलजलमोटकं गृहीत्वा । अघोह ।
अमुकसन्वत्सरे । दक्षिणायने शरदश्रुतौ आश्विन मासे । महालया
परपक्षे कन्यागते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुकगोत्रः अस्मत्पिता ।
अमुकशर्मन् । सपत्निक वसुस्वरूपः । अमुकपार्ष्णश्राद्धे पिण्डासने
अवनेनिक्ष्व । अघोह । अमुकगोत्रः । अस्मत्पितामहः । अमुक-
शर्मन् सपत्निक वसुस्वरूपः । अमुकपार्ष्णश्राद्धे पिण्डासने
अवने निक्ष्व । अघोह । अमुकगोत्रः । अस्मत्पितामहः । अमुक-
शर्मन् सपत्निक आदित्यस्वरूपः अमुकपार्ष्णश्राद्धे पिण्डा-
सने । अवनेनिक्ष्व । ततः । उपमूललूनकुशास्तरणम् । सव्येन ।
पदस्मरणम् । ईशान विष्णुकमलाशनकार्तिकेयवहन्नपार्करजनीश-
गणेश्वराणां क्रौंचामरेज्यकलशीद्वयकाश्यपानां पादन्नमाभि सप्ततं पितृ-

ॐ (क) ततस्सर्वाशनं पात्रे गृहीत्वा विविधं दुधं । तेषामुच्छेपण-
स्थाने विकिरं निदिपेद्भुवि । (कात्यायनः) विकिरोतर गायत्र्यादि-
जपं तृप्तिप्रश्नं चाह । (आश्वलायनः) सव्येन लेत्रमुल्लिखेत् । अपहता
असुरा इज्जाजिम्बेदिप्रद इति । ब्राह्मणपुराणे विशेषः । निदिग्मि सर्वयदमेध्य-
मंत्रहताश्च सर्वे । सुरदानवा मया । रक्षाणि यक्षाश्च पिशानसद पा इवा
मया यातुधानाश्च सर्वे । एतन्मन्त्रेण सुसंयतात्मा दर्मेण देवी विलिखे
दिति । पिण्डपितृयज्ञे कात्यायनः) दक्षिणेनोल्लिखत्पहता । इत्यरे-
ण वा । अग्नेपेक्षाया दक्षिणात्वेन पुरस्ता करोति ये रूपासीति । आश्वलायनः)
४ सदाच्छिन्नैरवस्तोर्येति ।

मुक्ति हेतो । गङ्गा गया गदाधरादीन् संस्मृत्य । गङ्गाय नमः । गदधराय नमः । कुरुक्षेत्राय नमः । ॐ श्री तीर्थराजाय प्रयागाय नमः । पितृस्वरूपं ध्यात्वा । भो ब्राह्मणा युष्मदनुज्ञया पिण्डप्रदानामहं करिष्ये । ॐ कुरुष्व । ततोऽपसव्येन । तिलमोटकयुतं सजलं पिंडं गृहीत्वा । वामजान्याच्य । अघो ह । दक्षिणायने । शरदश्रुतौ आश्विनमासे । महालयापरपक्षे । कन्या गते सवितरि । अमुरुतिथौ अमुकगोत्रः । अस्मत्पितः । अमुकशर्मन् सपत्निक वसुस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे । एषोऽन्नपिण्डोऽमृतस्वरूपो महत्स्तेऽस्तु । इयं भूमिर्गयातुल्या । इदमुदक गाङ्गम् । गङ्गोदके ऽसति गङ्गाजल तुल्यं वा । अमुक गोत्राय । अस्मत्पित्रे । अमुकशर्मणं सपत्निकाय वसुस्वरूपाय । अघो ह । अमुक गोत्र । अस्मत्पितामह अमुक शर्मन् सपत्निक रुद्रस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे । एषोऽन्नपिण्डोऽमृतस्वरूपो महत्स्तेऽस्तु । इयं भूमिर्गयातुल्या इदमुदक गाङ्गम् (गङ्गाजलतुल्यं) वा । अमुकगोत्राय । अस्मत्पितामहाय अमुकशर्मणे । सपत्निकाय । रुद्रस्वरूपाय । अघो ह अमुकगोत्र । अस्मत्पितामह । अमुकशर्मन् । सपत्निक । आदित्यस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे । एषोऽन्नपिण्डोऽमृतस्वरूपो महत्स्तेऽस्तु । इयं भूमिर्गयातुल्या इदमुदगाङ्गम् (गङ्गाजलतुल्यम्) वा । अमुकगोत्राय । अस्मत्पितामहाय । अमुरुशर्मणे । सपत्निकाय । आदित्यस्वरूपाय । अघो ह । अमुकगोत्र । अस्मन्मातामह । अमुकशर्मन् । सपत्निक वसुस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे । एषोऽन्नपिण्डोऽमृत स्वरूपो महत्स्तेऽस्तु । इयं भूमिर्गयातुल्या इदमुदक गाङ्गम् (गङ्गाजलतुल्यम्) वा । अमुकगोत्राय । अस्मन्मातामहाय । अमुकशर्मणे सपत्निकाय वसुस्वरूपाय अघो ह । अमुकगोत्र । अस्मत्प्रमातामह । अमुकशर्मन् सपत्निक रुद्रस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे । एषोऽन्नपिण्डोऽमृतस्वरूपो महत्स्तेऽस्तु । इयं भूमिर्गयातुल्या इदमुदक गाङ्गम् (गङ्गाजलतुल्यं) वा । अमुकगोत्राय । अस्मत्प्रमातामहाय । अमुकशर्मणे सपत्निकाय रुद्र स्वरूपाय । अघो ह अमुकगोत्र । अस्मत् वृद्धप्रमातामहाय । अमुकशर्मणे सपत्निकाय । आदित्यस्वरूपाय । लेपभागिनामंयं भागोऽस्तु । इति लेपभागं पिण्डापार्ष्णं दद्यात् । प्रतिपिण्डं प्रतिशर्मां वा कुलाचारात् । पिण्डास्तरणकुरोषु करोन्मार्जनं कृत्वा हस्तप्रक्षालनम् । सव्येन ।

× (दर्मांस्तरणान्तरमाह सुषमन्तुः) अग्नविश्वे नित्येति पुरुष पुरुषप्रति । विश्वेरेकेन हस्तेन विदधोतावनेजनम् । कात्यायनेन बर्हिस्तरण त्वर्पणवनेजनमुक्तम् । तत्र यथा शंखव्यवस्था ।

पिण्डदानाच्चमनम् ॥ करे पुष्पाणि संगृह्य । उदङ्मुखेन । अपसव्येनात्र
 पितर इति जपः । ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभाग मा वृषायध्वम् ।
 उदङ्मुखेनैव । सव्येन । मरुन्नियमनम् । ततः परावृत्य । अपसव्येन ।
 अमीमदन्त पितरो यथा मागमावृषायीसत । पिण्डोपरि पुष्पं दत्त्वा । ततः
 प्रत्यवनेजनम् । अद्येह अमुकनाम सम्बत्सरे दक्षिणायने । शरद ऋतौ
 आश्विनमासे । कन्यागते सवितरि । महालयारपणे । अमुकतियो ।
 अमुकगोत्र । अस्मत्पितः अमुकशर्मन् सपत्निक वसुस्वरूप । अमुक-
 पार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अद्येह अमुकगोत्र । अस्मत्पितामह ।
 अमुकशर्मन् सपत्निक । रुद्रस्वरूप अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने
 निक्ष्व । अद्येह अमुकगोत्र । अस्मत्प्रपितामह । अमुकशर्मन् सपत्निक ।
 आदित्यस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अद्येह ।
 अमुकगोत्र । अस्मन्मातामह । अमुकशर्मन् । सपत्निक वसुस्वरूप ।
 अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अद्येह अमुकगोत्र ।
 अस्मत्प्रमातामह । अमुकशर्मन् सपत्निक रुद्रस्वरूप अमुकपार्वणश्राद्धे ।
 पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अद्येह । अमुकगोत्र अस्मह वृद्धप्रमातामह । अमुक
 शर्मन् सपत्निक । आदित्यस्वरूप अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने
 निक्ष्व । किञ्चिन्नीवीविलसणम् । नमो वः इति षडब्जनीकरणम् । ॐ
 नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय
 नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्य ये
 नमो वः पितरः पितरो नो वो गृहाङ्ग पितरो दत्त सतो वः पितरोः मेतद्वा
 पितरो ब्राह्मणः ॥ सूत्रदानम् ॥ एतद्वा पितरो वास इति । उर्ज्जकरणकर्म-
 पात्रोदकेन । ॐ ऊर्ज्जं कथहन्तिरमृतं धृतं पयः कीलालं परिश्रुतम् ।
 स्वधास्व तर्पयेन् मे पितॄन् । सव्येन । देवताभ्य इति त्रिजपेत् । भो
 माक्ष्ण युष्मदनुत्तया पिण्डार्चनमहं करिष्ये । ॐ कुरुष्व । अपसव्येन ।
 पिण्डार्था पिण्डार्चनं विधावर्त्रं नमः । गन्धास्तु स्वधा । अचुताः ।

॥ मनु—युष्मदनुत्तया स्ततस्तां सुप्रपतो विधिपूर्वकम् ॥ तेषु दमेषु ते
 इत्तं विमृश्यातेपमाग्निना ॥ मनुः) आचम्योदकं परावृत्य त्रिराचम्य शनैः
 शनः । गद्गद् इत्येव मुस्तुर्वात् पितॄन् नैवचमन्त्वावित ।

* (भादचिन्तामणौ नास्ते) एतद्वा वास इति ब्रह्मन् रूपं पूषकः ।
 अमुकशर्मन्गोत्रे तत्सुम्पं वासः षष्ठेदनुषः (वज्र ब्राह्म) शीरोर्ध्वं क्षीमकार्शं
 दुर्लभं महत् तथा भादे श्वेतानि यो दद्यात् क्षमनामोव चोत्तमान् । (व्यास)
 गन्ध पुष्पाणि धूपश्च । दोरुच्य विनिवेदयेत् (देवश्च) दक्षिणां सर्व-
 भोगश्च । (प्रतिरिच्य गद्गदयेत्) ।

पुष्पाणि तुलसीदलानि । ॐ पितृभ्यः । स्वधायिभ्यः । स्वधानमः ।
 पिताहेभ्यः ॥ स्वधायिभ्यः । स्वधानमः । प्रपितामहेभ्यः । स्वधा-
 यिभ्यः स्वधानमः । अक्षन् पितरो भीमदन्त पितरो तीवृपन्त
 पितरः । पितरः शुंघधम । वधम् । धूपदीपौ नैवेद्यम् ।
 ताम्बूलम् । भूषणञ्च समर्प्य—तिलमोटकं जलञ्च गृहीत्वा ।
 अथेह । अमुकगोत्राः । अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः । अमुकामुक-
 शर्मणः । सपत्निकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः । तथामुकगोत्राः । अस्मन्मा-
 तामहप्रमातामहपृष्ठप्रमातामहाः । अमुकामुकशर्माः । सपत्निकाः । वसु-
 रुद्रादित्यस्वरूपाः । पिण्डार्चनविधाविमानि गन्धाक्षतपुष्पतुलसीदल-
 वासोद्वारादीपनैवेद्यताम्बूलभूषणानि तुलसीपत्राणि च महत्तानि यथा-
 विभागं यः स्वधाः । पिण्डार्चनविधेः सर्वं परिपूर्णमस्तु अस्तु
 परिपूर्णम् । सव्येन । पिण्डापभूमी सुप्रोक्षितमस्तु । अस्तु सुप्रोक्षितम् ।
 शिवा आपः सन्तु सन्तु । विप्रकरे । जलं अपां मध्ये स्थिता देवाः
 सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् । ब्राह्मणस्य करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु
 मे । सौमनस्यमस्तु । अस्तु सौमनस्यम् । लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति
 पुष्करे । लक्ष्मीर्वस्ते सदागोष्ठे । सौमनस्य सदास्तु मे । अक्षतारपारि-
 ष्ठनन्तु । अक्षतञ्चास्तु मे नित्यं शान्तिपुष्टिकरं परम् । यद्यक्ज्यस्करं
 लोके तत्तदस्तुमदा मम । ततः कुशैः कर्मपात्रोदकेन मूर्द्धामिपेकं क्षुर्यात् ।
 ममकुले दीर्घमायुरस्तु । अस्तु शान्तिरस्तु । अस्तु पुष्टिरस्तु । अस्तु
 वृद्धिरस्तु । अस्तु यच्छ्रेयस्तदस्तु । यत्पापं रोगः शोको दुःखं क्षुद्रिद्यम् ।
 तत्प्रतिहतमस्तु । अमृतामिपेकोऽस्तु । ततोऽक्षय्योदकवानम् । अक्षय्यन्तु ।
 विप्रकर एव ॥ अपसव्येन तिलमोटकसहितं जलं गृहीत्वा ।
 अथेह । अमुकमन्वत्सरे । दक्षिणायने । शरद ऋतौ । आश्विनमासे ।
 महालयापरपक्षे । कन्यागते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुकगोत्रस्य ।
 अस्मत्पितुः । अमुकशर्मणः । सपत्निस्य । वसुस्वरूपस्य । अमुकपार्वण-
 आढे । इदमन्नादकादिकं । यदन्नं तदक्षय्यमस्तु । अस्तु अक्षय्यम् ।
 अथेह । अमुकगोत्रस्य । अस्मत्पितामहस्य । अमुकशर्मणः । सपत्नि-
 कस्य । रुद्रस्वरूपस्य । अमुकपार्वणआढे । इदमन्नोदकादिकं । यदन्नं ।
 तदक्षय्यमस्तु । अस्तु । अक्षय्यं । अथेह । अमुकगोत्रस्य अस्मत्प्रपि-
 तामहस्य । अमुकशर्मणः । सपत्निकस्य । आदित्यस्वरूपस्य । अमुक-
 पार्वणआढे । इदमन्नोदकादिकं । यदन्नं तदक्षय्यमस्तु । अस्तु अक्षय्यम् ।

(इदं आश्रितम्) शिव्या नामगोत्रेण करे देयं विलांरुद्र । प्रत्येकं
 विद्वतीयेन अक्षय्यमिदमस्तीति ।

अद्येह । अमुकगोत्रस्य । अस्मन्मातामहस्य । अमुक शर्मणः । सपत्निकस्य
वसुस्वरूपस्य । अमुक पार्वणश्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं । यदत्तं । तद-
क्षय्यमस्तु । अस्तु । अक्षय्यम् । अद्येह । अमुकगोत्रस्य । अस्म
प्रमातामहस्य । अमुकशर्मणः सपत्निकस्य । रुद्रस्वरूपस्य । अमुकपार्वण-
श्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं । यदत्तं । तदक्षय्यमस्तु । अस्तु अक्षय्यम् ।
अद्येह । अमुकगोत्रस्य । अस्मद्वृद्धप्रमातामहस्य । अमुकाऽमुकशर्मणः
सपत्निकस्य । आदित्यस्वरूपस्य । अमुकपार्वणश्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं ।
यदत्तं । तदक्षय्यमस्तु । अस्तु । अक्षय्यम् । सव्येन । यवकुश
जलमाशय । अद्येहाऽमुकगोत्र । अस्मरिपत्रादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनां ।
तथाऽमुकगोत्रास्मन्मातामहादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनां पुरुरवो माद्रवसंज्ञ
कानां । विश्वपादेवानां अस्मिन् पार्वणश्राद्धं वैश्वदेविककृत्ये ।
इदमन्नादकादिकम् । यदत्तं । तदक्षय्यमस्तु । अस्तु अक्षय्यम् । इति
ततः प्रार्थना शीर्महणम् । अघोरा पितरः सन्तु । सन्तु । गोत्रज्ञो वद्ध-
ताम् । वद्धताम् दातारो नोभिषदन्ताम् । वदन्ताम् । वेदाः वदन्ताम् ।
वदन्ताम् । सन्तति वद्धताम् । वद्धताम् भद्राचनो माव्यगमत् । मागाः
बहुदेवं च नोस्तु । अस्तु । अन्नञ्च नो बहु भवेत् । भवद्र । अतिर्योश्च
लभेमहि । लभध्वम् । याचितारश्च नः । सन्तु । सन्तु । मास्मयाचिप्म
कञ्चन । मा याचेथाः । एता एव । आशिपः । सत्याः । सन्तु । सन्तु ।
ततः स्वधा वाचनम् + भो ब्राह्मण युष्मदनुज्ञया स्वधां वाचयिष्ये ।
यान्यताम् । अपसव्येन । स्वधावाचनीयात् धीन् कुशान् । पिण्डोपरि
संस्थाप्य । सजलतिलमोटकं गृहीत्वा । अद्येह । अमुकनामसम्पत्सरे ।
दक्षिणायने । शरदृतौ । आश्विनमासे । महालयपरपक्षे । कन्यागते ।
सवितरि । अमुकतिथौ । अमुकगोत्रेभ्योऽस्मत्पितृभ्योऽमुकशर्मभ्यः ।
सपत्निकेभ्यो वसु स्वरूपेभ्यः । अमुक पार्वण श्राद्धे । ब्राह्मणा । मधु मधु
स्वधोच्यताम् । अस्तु स्वधा । अद्येह । अमुकगोत्रेभ्यः । अस्मत्पिता-
महेभ्यः । अमुकशर्मभ्यः । सपत्निकेभ्यः । रुद्रास्वरूपेभ्योऽमुकपार्वण-
श्राद्धे । ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यतां । अस्तु स्वधा । अद्येह । अमुक-
गोत्रेभ्योऽस्मत्प्रपितामहेभ्योऽमुकशर्मभ्यः । सपत्निकेभ्यः । आदित्यस्वरू-
पेभ्योऽमुकपार्वणश्राद्धे । ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यतां । अस्तु स्वधा ।
अद्येह । अमुकगोत्रेभ्योऽस्मन्मातामहेभ्योऽमुकशर्मभ्यः । सपत्निकेभ्यो

(गोभिलः) अघोराः पितरः सन्तिवत्ययुक्ते स्वधा वाचयिष्ये इति
पृच्छति । पितृभ्यः स्वधोच्यतामित्युक्तेऽस्तुत्वपेत्य च्मानो धारा दद्यात् ऊर्जं
भ्वशरिभुवं मिति ।

रुद्रस्वरूपेभ्यो ऽमुकपार्वणश्राद्धे ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यतां अस्तु
 स्वधा । अथेह । अमुकगोत्रेभ्योऽस्मत्प्रमातामहेभ्योऽमुकशर्मन्भ्यः । स-
 पत्तिकेभ्यो रुद्रस्वरूपेभ्यो ऽमुकपार्वणश्राद्धे ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यतां ।
 अस्तु स्वधा । अथेह । अमुकगोत्रेभ्योऽस्मद् बृद्धप्रमातामहेभ्योऽमुकश-
 र्मन्भ्यः । सपत्तिकेभ्य आदित्यस्वरूपेभ्योऽमुकपार्वणश्राद्धे । ब्राह्मणा मधु
 मधु स्वधीच्यताम् । अस्तु स्वधा । स्वधावाचनीयेष्वपोनिर्पंचति । ॐ ऊर्जं
 ब्रह्मन्तोरमृतं घृतम्पयः कीलालम्परिश्रुतम् । स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन् ।
 दुग्धेनाप्यूर्जकरणमाचारात् । केचिन्मते नीराजनम् । उत्तमं पात्रं कृत्वा
 + पितरः स्वर्गलोके प्रस्थिता भवन्तु । सव्येन । दक्षिणा-
 सङ्कल्पः । देयद्रव्यं सम्प्रोक्ष्य पूजनं कार्यम् । हिरण्यगर्भ-
 गर्भस्थं हेमवीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।
 अथेह । अमुकसम्बत्सरे । अमुकायने । अनुकर्तो । अमुकमासे । अमुक-
 पक्षे । अमुकतिथौ । अमुकतिथौ । अमुकगोत्रोत्पन्नः । अमुकराशि ।
 अमुकशर्माहं । अमुक गोत्राणाम् । अस्मद्विपत् पितामहं प्रपिताम-
 हानां । अमुकामुकशर्मणाम् । सपत्तिकानाम् । वसुरुद्रादित्यस्वरू-
 पाणाम् । तथामुकगोत्राणाम् । अरमन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमाताम-
 हानाम् । अमुकामुकशर्मणाम् । सपत्तिकानां । वसुरुद्रादि यस्वरू-
 पाणाम् । अक्षयतृप्तिप्राप्तयर्थं । पुरुरवोमाद्रवसंज्ञक विश्वेदेवापूर्वकं ।
 कृतस्यास्य अमुकपार्वणश्राद्धकर्मणः । साधु गुणार्थम् । इदं रजतं ।
 सोमदेवतं रजतनिष्कयिणीं दक्षिणाम् । वा अद्भुभोक्तृभ्याम्ब्राह्मणऽन्ये-
 भ्योऽपि दातुमुत्सृजे । ॐ तत्सन्नमम् । पुनः सुवर्णं सम्प्रोक्ष्य । हिरण्य-
 गर्भगर्भस्थं हेमवीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं
 प्रयच्छ मे । इति सम्पूज्य । यवकुशानादाय । अथेह । अमुकगोत्राऽ-
 स्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनानां । तथामुकगोत्रास्मन्मातामहादित्रयश्राद्ध-
 सम्बन्धिनानां । पुरुरवोमाद्रवसंज्ञकानां । विश्वेपां देवानां प्रीतये ।
 वैश्वदेविक कर्मणः । साधुगुणार्थम् । इदं सुवर्णम् अग्निदेवतम् ।
 मनसोपदिष्टां दक्षिणां वा ब्राह्मणेभ्यो दातुमुत्सृजे । ॐ तत्सन्न-
 मम् । स्वस्ति भवन्तो भूवन्तु । स्वस्तीति विप्रोक्तिः । विश्वेदेवाः
 प्रीयन्ताम् । ऋन्ति मूहीति । विश्वेदेव ब्राह्मणा ध्योपणा प्रीयतां वो
 विररेदेवाः स्वविलकं सत्यानुष्ठानसम्पन्नाः । सर्वदा यज्ञबुद्धयः ॥ पितृ-

(नागलवडे) उत्तम मर्षवाचस्तु कृत्वा दद्याच्च दक्षिणम् । हिर-
 यपद्मेवतानां च पितृणां रजतन्तया (कालिकापामाचार्यः) दद्याद्यशोपवीत्ये
 यताम्बुलं दक्षिणा तथा ।

मातृपरश्चैव ॥ संत्वस्मत् कुलजा नराः ॥ अक्षताः पान्तु ॥ अशौ-
 र्ग्रहणमितिन्द्राह्नणार्पणपुष्पाणि सङ्गृह्य ॥ विशेषपूजनं ॥ सव्येनैव ॥
 पितृभ्यः ॥ स्वाध्यायिभ्य इति ॥ आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं
 सुखानि च । प्रयच्छन्ति-तथा राज्यन्नृणां प्रीताः पितामहाः । आयुःपुत्रान्
 यशः स्वर्गं कीर्तिम्पुष्टिं बलं श्रियम् । पशून् सुखं धनं धान्यं
 प्राप्नुयां पितृपूजनात् । ततोऽपसव्येन । पितामहपिण्डमत्थाप्य ।
 सव्येनाघ्राय । पात्रान्तरे निधाय । पिण्डस्थाने शङ्खचक्रादिकं
 लिखित्वा । गन्धपुष्पाक्षतैः ॥ षड्भूतन्पूजयेत् । पिण्डस्थाने अन्ननमः
 सुखन्ध । अक्षताः पुष्पाणि । सव्येन । तत्र दीपं संस्थाप्य । ॐ
 वसन्ताय नमः । ॐ ग्रीष्माय नमः । ॐ वर्षाभ्यो नमः । ॐ शरदे नमः ।
 ॐ हेमन्ताय नमः । ॐ शिशिराय नमः । हस्तौसं हतौ हवा । यान्तु
 पितृगणाः सर्वेयस्मात् स्थानादुद्य गताः । सर्वेने दृष्टमनसः सर्वकाम-
 प्रपूर्णाः । ये लोका दानशीलनां ये लोकाः पुण्यकर्मणाम् । सम्पूर्णान्
 सर्वभोगैस्तु तान्ब्रजध्वं सुष्पुकलान् । इहास्माकं शिवं शान्तिरायुशारोग्य-
 संपदः । वृद्धिः सन्तानवर्गस्य जायतामुत्तरोत्तरा । दीपस्थाने
 दीपः अपसव्येन । पिण्डस्थाने पिण्डः । असंखर मम्युक्ष्य कुर्यात् । यः
 कश्चित् पितृरूपेण तिष्ठते परमेश्वरः । सोऽयं आद्यप्रदानेन तृप्तिं लभतु
 शारवतीम् । गयायां पितृरूपेण स्वयमेको जनादर्दनः । यं दृष्ट्वा पुण्डरी-
 काक्षं मुच्यते च ऋणत्रयात् । पञ्चक्रोशं गयाक्षेत्रं कोशमेकं गया-
 शिरः । यत्र यत्र स्मरिष्यामि पितृ गान्दत्तमक्षयम् । शमीपत्र-
 प्रमाणेन पिण्डेन्दद्याद्गणेशिरे । उद्धरेत्सप्त गोत्राणां कुलमेकोत्तरं
 शतमम् । पितुः शतगुण पुण्यं सहस्रं मातुरुच्यते । भगिन्यां शतसारस्रं
 सोदर्यै दत्तमक्षयम् । सव्येन । अद्य दिने अपरमपिआमं पक्वं हिरण्यं
 उदयास्तमयपर्षन्तं यद्दत्तं यहास्ये । तत् स्वर्गद्वारे । अमृतौभूयवः
 स्वधा । देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै
 स्वधायै नित्यमेव नमो नमः३ । सप्त व्याधा दशार्णेषुमृगाः कालंजरे
 गिरौ । चक्रवाकाः सरदीपे हंसाः सगति मानसे । तेऽपि जाताः कुरुक्षेत्रे
 ब्राह्मणा वेदपारगाः । प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ । आद्य-
 काले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् । मनसा च पितृन् ध्यात्वा ।
 ततोऽपसव्येन । अद्य हेत्याद्युच्यार्थं अमुकगोत्राणाभस्मत्पितृपितामह-
 प्रपितामहानाम् । अमुकानुकगोत्राणां सपत्निकानां । वसुरुद्रादित्यस्व-
 रूपाणां । तथा अमुकगोत्राणां । अस्मन्मातामह । प्रमातामह । वृद्ध-
 प्रमातृतामहानां अमुकामुकशर्मणां सपत्निकानां । वसुरुद्रादित्य-
 स्वरूपाणां । अक्षयनृप्यर्थं पुस्त्रवोमाद्रवसंज्ञकः । विश्वेदेवपूर्वकं ।

अर्घपिण्डसहित । अमुकपार्वणश्राद्ध । विसृजे । सव्यम् । इदममुक
पार्वणश्राद्ध । त्रिधिनीन । कालहीन । वाक्यहीन । श्रद्धाहीन । दक्षिणा
हीन । यत् कृत । तत् कृतमस्तु । प्रमादाल्लोभाद्भयाद्वा यत्रकृत । तत्
श्रीभगवद्विष्णो ब्राह्मणपचनात् । सर्वं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् ।
कुरोन् विप्रस्पर्श । पितृब्राह्मणपूर्वम् । ब्राह्मणानुस्थापयेत् । पितृमाता
महब्राह्मणयोरपमव्यनोत्थापनम् । सव्येन । वैश्वदेविकब्राह्मणस्य । ॐ
उत्तिष्ठ ब्राह्मणस्पते देवयन्त्रस्त्वमेहे । उपमयन्तु मस्तु सुदानवऽइन्द्रप्रा
शुभयासचा । इति । ब्राह्मणानुस्थाप्य पात्रान्तरे निधाय । ॐ स्वाज्ञेवा
जेवतव्याजिनो नोनधनेषु विप्राऽमृताऽऽमृतज्ञा अस्थमध्व पिबत मादध
ध्वनृषागातपथिमिर्ह्वयानै । इति विसृज्य ५ कर्मपात्रं गृहीत्वा
आभावाजस्येत्यनुज्य । ५ दक्षिणीकरणम् । ॐ आभावाजस्येत्यसवो
जगम्यान्मे यावापृथिवीध्वश्वरूपे । आमागताम्पितरा मातराचामासो
मोऽमृतत्वेनगम्यात् । इत्यनुज्य । प्रदक्षिणीकृत्य । नमस्तुभ्यौ । कर्मपात्रं
विप्रपादामे निनीय । अपसव्येन । नीवीं विसृज्य । पाणिना दीप
निर्वाप्य । त्रान् समुद्रान् समस्तपन् स्वर्गान्पाम्पतिवृं पत्रऽइष्टकानाम् ।
पुरोपवसानं सुदृश्यलोके तत्र गच्छ यत्र पूर्वे परता सव्यं विधायावस्य ।
हस्ते जलं गृहीत्वा । यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यून सम्पूर्णता याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् । ॐ अच्युताय नमः ३ ।
चतुर्भिरच २ द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च हृयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥
प्रमादात्कुर्यता कर्म प्रच्यरेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव ताद्विष्णो
सम्पूर्णं प्यादिति श्रुतिः ॥ अद्य मे सफलं जन्म अद्य मे सफलं
तप । अद्य मे गात्रं वा सर्वं याता वेनुमदादिवम् ॥ पत्रशानादि
दानेन क्लेशिता यूयमीदृश । तत्सलेशमिह संपातं विसृत्य
चन्तुमर्हथ । मूक्तोस्तोमजयत्यवत्तापिण्डाग्राणं च दक्षिणाम् । आह्वारं
स्वागतं धार्यं विना च परिवेषणम् ॥ विसर्जनसौमनस्य आशिषप्राधानं
तथा । पितृमन्यतश्चैतन्मया प्राचीनावानिना सदा ॥ देवपूर्वमिदं श्राद्धं
पितृपूर्वमिसर्जनम् । सर्वकर्मोपसव्येन दक्षिणाग्नयन्वितम् ॥ इति ॥

गुप्तकाशी गुप्तदान प्रयोग

गुप्तशरणा पुरातनं तीर्थस्थानं यथा गुमा । 'वशनायनिवामल्य

७ (पाल्म्य) वापना ३ इति अथनुराग्रेण विमज्जत् (प्रोला)
मात्रिणा पल्लव इत्यादिपुर्वविमर्जनम् । (इत्येवम्) आमागता इति मन्त्र
दुर्गन्ता च प्रदक्षिणम् ।

लोकमहलदायकम् ॥ १ ॥ कर्णयामि समासेन सावधानेन वै शृणु ।
यच्छ्रुत्वा सर्वपापानि विलययान्ति यात्रिणाम् ॥ २ ॥ पुराणवचनचेत्य
शिवाश्रयनमानसै ॥ सिद्धैस्तस्यापनं पूर्वं कृतं सिद्धाश्रमं ततः ॥ ३ ॥
केचिद्वदन्त्याधुनिका विश्वनाथस्य सङ्गते । यदा यवनराजोऽसौ काशी
गन्तुं प्रचक्रमे ॥ ४ ॥ सदात्रान्तर्हितो देवो गुप्तकाशी ततः स्मृता । न
चेत्तद्विना शक्यं स्थानात्स्थानं भवेदिदम् ॥ ५ ॥ कुन्तलश्यामलो मन्ये
विनाश्रयनेन वै कथम् । न वा पूर्वप्रणीतेषु ग्रन्थेष्वित्यपि दृश्यते ॥ ६ ॥
तस्मान्मन्ये शङ्करेण गगायमुनयोरिह । गुप्तिरूपं सुविज्ञाय यदा कृत्वा
च मन्दिरम् ॥ ७ ॥ प्रतिनष्टाप्य च भूगाथं तदात्थायि ततस्त्वयिदम् ।
अन्यथा पूर्वग्रन्थेषु कथं नाम न दृश्यते ॥ ८ ॥ स्थानमासाद्य लोकेन
धार्मिकेण तथाविधं । गुप्तदानं च कर्त्तव्यं यथाविभवस्तिरै ॥ ९ ॥
स्वर्णं च त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं फलैः । गुप्तदानं प्रकर्त्तव्यं यात्रासफल
मानसै ॥ १० ॥ आदौ कायिकशुद्धयर्थं धेनुदानमपि फलम् । चोत्तम
मुनिभिः प्रोक्तं सर्वदा शुभकर्मणि ॥ ११ ॥ एव कृत्वैव यात्रार्थी समा
राध्य च विश्वम् । यथादेवं ततो द्रष्टुं केदारं वर्यो ततः ॥ १२ ॥ एव
कृत्वैव यात्रार्थी केदारे लभते शिवम् । निर्धूय सर्वपापानि कृपया शङ्करस्य
च ॥ १३ ॥ ततो गुप्तदानकर्त्ता यात्रार्थी (र्थिनी वा) सामग्रीं (१)
सम्यक् सम्पाद्य प्रत्युपे च तत्र गङ्गायमुनयोर्धाराद्वयेन पूजनपूर्वकं
सङ्कल्पस्तनान् कुर्यात् । शुद्धमूलं परिधाय श्रीशिवनाथाय नमः नमः
केदारेश्वराय नदीश्वराय चेति नमस्कृत्य मन्दिरप्राङ्गणं पञ्चोपविश्व तीर्थ
पुरोहितः सङ्कल्प्य विष्णु ३ त्रिराचम्य सिद्धम् ३ ॐ अपवित्रं पवित्रो
वा सर्वत्रस्था गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्यैकात् स यात्राम्यन्तरं शुचिः ॥
इत्यनेन वामहस्तं नलमभिमन्य शिरसि निक्षिपेत् । ॐ अपसर्पन्तु ते
भूता ये भूता भूमिसंस्थिता । येभूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिराज्ञया ।
इति भूतशुद्धिं सविधाय । अस्य श्री आसनमन्त्रस्य मेरुश्च ऋषिः सुतल
ह्रस्वः कूर्मो देवता आसने विनियोगः । ॐ हिरण्यवर्णा सुभगा
हिरण्यकश्यपुर्मही तत्त्वा हिरण्या दापये सत्या अकरं नमः । इत्युक्तवान्
ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वी १ इहागच्छेह तित्त पापानिनि ममर्पयामि पृथिव्यै
नमः सम्पूज्य । ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका र्वि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मा मन्द्रे पवित्रं कुरु आसनम् ॥ इति साम्प्रथ्यं जलपूजनं
पूर्वकं सूर्यं पूजयेत् ततो गणपतिं नमस्कृत्य च शरीरशुद्धयर्थं गोदानं

[१] मानवी सुवसा, रजत, तापदुन, माना, च नी, माता, स्वर्णरात्र
तदभाव रजत, तदभावे कल्परात्र, अभाव ताम्ररात्र, गन्ध पुष्पादि ।

कुर्यान् अथवा गोप्रत्याम्नायीभूतं द्रव्यं तीर्थपुरोहिताय दत्त्वा तत्कुर्यात् ।
 ततो गुप्तदानसामग्रीं पाद्यगन्धाक्षतपुष्पधूपादिभिस्तत्तन्मन्त्रोच्चारणपूर्वकं
 ममन्पे सङ्कल्पं कुर्यात्-ॐ नमः परमात्मने पुराणपुरुषोत्तमाय श्री-
 मद्भगवतो महापुरुषस्य त्रिष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीये
 प्रहरार्धे श्रीरजेश्वाराह्नकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे
 प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतग्रन्थे भारतपर्णे आर्याक्तीन्तर्गतगुप्तप्राणस्या
 क्षेत्रे हिमखल्वर्धतैऋदेशे केदाररत्नदान्तगतसुमेरुद्रक्षिणपार्श्वे मद्रा-
 णिन्यास्तटे समीपे वा पृथिसंवत्सराणां मध्येऽमुकनाम्नि संवत्सरे अमुका-
 यनेऽमुकतां अमुकमासे पक्षे तिथौ वारे नक्षत्रे योगे च अमुकराशि-
 रियते सूर्ये चन्द्रे मीमे बुधे गुरौ शुक्रे शनौ राहौ केतौ एव गुणवशो-
 पणविशिष्टाया तिथौ-अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकराशि अमुकवेदाध्ययी
 अमुकवेदशास्त्रप्रवरसूत्रादिभिर्युत अमुकपुरोऽमुकपौत्रोऽमुकदेशप्राम-
 वास्तव्योऽहं अमुकशर्मा वर्मा वा गुप्तो वा श्रीकेदारवद्दीश्वरदादि
 देवदर्शनार्थी यात्री ममात्मनः सकलदुरितोपशमनार्थं तथेह जन्मनि
 जन्मान्तरे वा कृतकामिक्रमानसिक्वाचिकपापनिवारणाय त्रिविधता-
 पोपशमनार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तसत्कलावाप्तये सूर्यादिनवमहजनितसर्वा-
 रिष्टनिवृत्तये राजद्वारे सभानिषु सर्वत्र विजयहर्षादिमनोवाञ्छितप्राप्तये
 पुत्रपौत्रादिआयुरारोग्यलाभाय च धनधान्यादिममृद्धये श्रीनेदारवद्दीश्वर-
 प्योत्तराग्रहयात्रायामस्याम गुप्तवागाणस्याञ्चात्र यात्रा सफलीकरणाय
 गुप्तदानरूपेणोद्दिश्यमग्निदैवत्यं रजतं चन्द्रदैवतं ताम्रमर्कदैवतं त्रिषणु
 दैवतं वा काश्यप्यश्विनदैवत्यं नारिकेलं वनस्पतिदैवत्यं वस्त्रादिभिरस्य
 दैवत्यं अमुकपुरोहिताय तुभ्यं संप्रददे-इति संकल्प्य तदानं
 तत्रत्य तीर्थपुरोहिताय दत्त्वा तदाशीर्वाचनं मोभिषेकं लज्जा च विश्वनाथं
 पौंडरीपचारं पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य भक्त्या प्रणम्य क्षमा याचयेन्
 त्रि परिक्रमेण्येति शुभम् । इति गुप्तदानम् ।

प्रयोगविधिः अत्र शय्यादानकरणमपि मन्तव्यम् । अतः शय्या-
 दानकरणादिभिर्वात्राभिस्तु प्रयोगविधिरस्यामेव पद्धती-अन्यत्रालोक-
 नाय इति ।

अथ शिवाथर्वशीर्षम् ।

(शिव उपनिषद्) ॐ देवाहर्षं स्वर्गलोकमार्गमे रज्जुमण्डन
 यो मयानिति । सोऽवकीदहमेह प्रथममामोदं नामि च नान्य

करिचन्मत्तो व्यतिरिक्त इति । सोऽन्तरादन्तर प्राविशत्सोऽह नित्यनित्यो
 व्यक्ताव्यक्तो ब्रह्माब्रह्माह प्राञ्च प्रत्यञ्चोऽह दक्षिणाञ्च उदञ्चोऽहम
 धन्वोर्ध्वश्चाह ऋशश्च प्रतिदिशश्चाह पुमानपुमान्स्त्रियश्चाह सावित्र्यह
 गायत्र्यह त्रिष्टुबूजगत्यनुष्टुप्चाह छन्दोऽह सत्योऽह गार्हपत्यो
 इक्ष्वाग्निराहवनीयोऽह गार्ह गौर्यह मृगह यजुह सामाहमथर्वाङ्नि
 रसोऽह ज्येष्ठोऽह श्रेष्ठोऽह वारिष्ठोऽहमापोऽह तेजोऽह गुह्योऽहमरण्योऽ
 हमक्षरमह क्षरमह पुष्कामह पत्रिमहमुप्रञ्च वलिश्च पुस्ताज्ज्योति
 रित्यहमेव सर्वेभ्यो मामेव स सर्वं समो यो मा वेद स वेदान् वेद
 सर्वाञ्च वेदान् साक्षा नपि ब्रह्मनाह्यैरश्च गा गोभिर्वाह्येणान् ज्ञाह्येण
 हरिर्हविषा अत्युरायुषा सत्य सत्येन धर्मेण धर्मं तर्पयामि एतेन तेनसा ।
 ततो ह वै ते देवा रुद्रमप्रच्छन् ते देवा रुद्रमपश्यन् ते देवा रुद्रमध्ययान्
 ते देवा ऊध्रवाहयो रुद्र स्तुवन्ति ॥ १ ॥ ॐ यो वै रुद्र स भगवान्
 यश्च ब्रह्मा तस्मै धे नमो नम ॥ १ ॥ ॐ यो वै रुद्र स
 भगवाद् यश्च विष्णो तस्मै धे नमो नम ॥ २ ॥ ॐ यो वै रुद्र स
 भगवान् यश्च स्कन्दस्तस्मै धे नमो नम ॥ ३ ॥ ॐ या वै रुद्र स
 भगवान् यश्चेन्द्रस्तस्मै ॥ ४ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्चाग्निस्तस्मै ॥
 ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च वायुस्तस्मै ॥ ६ ॥ यो वै रुद्र स
 भगवान् यश्च सूर्यस्तस्मै ॥ ७ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च सोम
 स्तस्मै ॥ ८ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् येऽष्टौ प्रहास्तस्मै ॥ ९ ॥ यो
 वै रुद्र स भगवान् ये चाष्टौ प्रतिग्रस्तस्मै ॥ १० ॥ या वै रुद्र स
 भगवान् यश्च भूस्तस्मै ॥ ११ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च
 भुवस्तस्मै ॥ १२ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च स्वस्तस्मै ॥ १३ ॥
 यो वै रुद्र स भगवान् यश्च महस्तस्मै ॥ १४ ॥ यो वै रुद्र स भगवान्
 या च पृथिवी तस्मै ॥ १५ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्चावरिक्त
 तस्मै ॥ १६ ॥ या वै रुद्र स भगवान् या च द्यौस्तस्मै ॥ १७ ॥
 यो वै रुद्र स भगवान् याश्चापस्तस्मै ॥ १८ ॥ यो वै रुद्र स भगवान्
 यश्च तेजस्तस्मै ॥ १९ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च जालस्तस्मै
 ॥ २० ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च यमस्तस्मै ॥ २१ ॥ या वै रुद्र
 स भगवान् यश्च मृत्युस्तस्मै ॥ २२ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च मृते
 स्तस्मै ॥ २३ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्चाकाशं तस्मै ॥ २४ ॥
 यो वै रुद्र स भगवान् यश्च त्रिदिवं तस्मै ॥ २५ ॥ यो वै रुद्र स भगवान्
 यश्च ग्लानं तस्मै ॥ २६ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च मूत्त तस्मै ॥
 २७ ॥ या वै रुद्र स भगवान् यश्च शक्ल तस्मै ॥ २८ ॥ यो वै रुद्र
 स भगवान् यश्च दृष्टस्तस्मै ॥ २९ ॥ या वै रुद्र स भगवान् यश्च

दृष्टं तस्मै० ॥ ३० ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यच्च सत्य तस्मै० ॥ ३१ ॥
 यो वै रुद्र स भगवान् यच्च सर्वं तस्मै० ॥ ३२ ॥ ० ॥ भूस्ते आदि-
 र्यध्य भुवस्ते स्तंति शीर्षं त्रिस्वरूपोऽसि त्रिहैकस्त्व द्विधात्रिधा वृद्धिस्त्य
 शान्तिस्तत्र पुष्टिस्तत्र हुतमहुत दत्तमदत्ता सर्वभक्षार्थं विश्वमधिरां कृत-
 महुत परमपर परायणश्च त्वम् । अपामसोमममृता अभूमा गन्ध व्योति
 रनिदाम देवान । किं नूनमस्मान् कुरुवदसि किमु धृतिरमृत मर्त्यस्य
 सोमसूर्यं प्रस्तातूह्यम् पुरुष । सर्वं जगद्धित या एतद्भार प्राजापत्य
 सौम्यं सूर्मं पुरुषं प्राज्ञमप्राज्ञेण भार्यं भावेन सौम्य सौम्येन सूक्ष्म
 सूक्ष्मेण धायव्य धायव्येन अक्षति तस्मै महाप्रासाय वै नमो नम ।
 इतिस्था देवता सर्वा इदि प्राणा प्रतिष्ठिता । इदि त्वमसि यो नित्य
 तिष्ठो मात्रा परस्तु म । सत्योत्तरत शिरो दक्षिणत पादौ च उत्तरत
 म ओङ्कार य ओङ्कार स प्रणव य प्रणव ॥ सर्वव्यापी स मर्षव्यापी
 सोऽनन्त योऽनन्तस्तत्तारं यत्तार वच्छ्रक्त यच्छ्रक्त वस्तून् यत्नून्
 तद्वैद्युत यद्वैद्युत तत्पर ब्रह्म यत् पर ब्रह्म स एक य एक स रुद्र यो
 रुद्र स ईशान य ईशान स भगवान् महेश्वर ॥ १ ॥ अथ कस्मादुच्यते
 ओङ्कार । यस्मादुच्चार्यमाण एव प्राणानूर्ध्वमुत्क्रामयति तस्मादुच्यते
 ओङ्कार । अथ कस्मादुच्यते प्रणव । यस्मादुच्चार्यमाण एव श्रवणं
 सामाथर्वाहिरस मदानाक्षणेभ्य प्रणामयति नामयति च तस्मादुच्यते
 प्रणव । अथ कस्मादुच्यते सर्वव्यापी । यस्मादुच्चार्यमाण एव यथा
 स्नेहेन बललपिण्डमिदं शान्तरूपमोतप्रोतमनुषाधो व्यतिसत्तत्र च तस्मा
 दुच्यते सर्वव्यापी । अथ कस्मादुच्यतेऽनन्त । यस्मादुच्चार्यमाण एव
 तीर्थगङ्गासमधरनाम्नान्तो नोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽनन्त । अथ कस्मा
 दुच्यते तार । यस्मादुच्चार्यमाण एव गर्भजन्मव्यापिजराकरणसंसार-
 मशामयात्तारयति त्रायते च तस्मादुच्यते तारम् । अथ कस्मादुच्यते
 शुक्लम् । यस्मादुच्चार्यमाण एव कलन्दते कलामयति च तस्मादुच्यते
 शुक्लम् । अथ कस्मादुच्यते सूर्मम् । यस्या दुच्चार्यमाण एव
 मूत्रं भूत्वा शरीराद्यधिष्ठितिष्ठति सर्वाणि बाह्यान् यमिभूरयति तस्मादुच्यते
 सूर्मम् । अथ कस्मादुच्यते वैद्युतम् । यस्मा दुच्चार्यमाण
 एव व्यक्ते महति तमसि द्योतयति तस्मा दुच्यते वैद्युतम् ।
 अथ कस्मादुच्यते परं ब्रह्म । यस्मान् परमपर पराय
 ण्यस्य पृष्ठहत्या शुद्ध्यति तस्मादुच्यते परं ब्रह्म ।
 अथ कस्मादुच्यते एक य सत्त्वात् प्राणान सम्मदय
 सम्मरणेनान भ्रमृजति विमृजति धीर्यमेके प्रजन्ति धीर्यमेके दक्षिण
 मन्दस्य रुद्रश्च प्राण्योऽभिप्रचस्येके मेधा सर्वेषामिह सङ्गति साकं

स एकोऽभूदन्तश्चरति प्रजानां तस्मादुच्यते एकः । अथ कस्मादुच्यते रुद्रः । अथ कस्मादुच्यते ईशानः यः सर्वान्देवा २ । नीशते ईशानी-
भिर्जननीभिश्च शक्तिभिः । अभित्वा शूर नो नुमो दुग्धा इव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्रतस्थुष इति तस्मादुच्यते ईशानः ।
अथ कस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः । यस्माद्भक्तान् ज्ञानेन भजत्यनुगृह्-
णानि च वाचं संसृजति विसृजति च सर्वान् भावान् परित्यज्यात्म
ज्ञानेन योगैश्वर्येण महति महीयते तस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः ।
तदेतद्रुद्रचरितम् ॥ ४ ॥ एषोऽष्ट देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पुर्वोऽह जातः
स उ गर्भे अन्तः स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जना तिष्ठति
सर्वतोमुखः । एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै य ईमँल्लोकानीशत्
ईशानीभिः । प्रत्यङ् जना तिष्ठति चान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि
गोत्वा ॥ यो योनि योनिमधितिष्ठत्येको येनेदं सर्वं विचरति सर्वम् ।
तमीशानं वरदं देवमीड्यनिचाय्ये मां शान्तिमत्यन्तमेति । क्षमां
दित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वा तुरुद्रे ।
रुद्रमेकत्वमाहुः शाखतं वै पुराणमिषमुर्जेण पशवोनुनायन्तं मृत्यु-
पाशान् । तदेतेनात्मन्नेतेनार्धचतुर्थेन मात्रेण शान्तिं संसृजति पशु-
पाशविमोक्षणं या सा प्रथमा मात्रा ब्रह्मदेवत्या रक्षावर्णेन यस्तां ध्यायते
नित्यम् स गच्छेद्ब्रह्मपदम् । या सा द्वितीया मात्रा विष्णुदेवत्या
कृष्णवर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यम् स गच्छेद्द्वैष्णवं पदम् । या सा तृतीया
मात्रा ईशानदेवत्या कपिलावर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यम् स गच्छेद्देवानं
पदम् । या सार्धचतुर्थी मात्रा सर्वदेवत्याऽव्यक्तीभूता स्वं विचरति शुद्धा
स्फटिकसन्निभवर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यम् स गच्छेत्पदमनामयम् ।
तदे तंदुपासीत मुनयो वाग्यदन्ति न तस्य ग्रहणमयं पन्था विहित उक्तरिण
येन देवा यान्ति येन पितरो येन श्रवणः परमपरं परायणं चेति ।
बालामदमात्रं हृद्ग्रस्य मध्ये विश्वदेवं जातस्त्वं वरेण्यम् । समात्मस्थ
येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिर्मवति नेतरेषाम् । यस्मिन् क्रोधं यावच्च
तृष्णं क्षमाञ्चाक्षमां दित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्ध्या सञ्चितं स्थाप-
यित्वा तु रुद्रे रुद्रमेकत्वमाहुः रुद्रो हि शाखनेन वैर्जे पुराणे नेपमुर्जेण
तपसा निरन्ताग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म व्योमेति
भस्म मर्त्यं इषा इदं भस्म मन एतानि चतुर्षि यस्मादग्रतमिदं पाशुपतं
यद्भस्म । नाहानि भंष्टरोन् तस्माद् ब्रह्म तदेतस्याशुपतं पशुपाशविमो-
क्षणाय ॥ ५ ॥ योऽग्नी रुद्रोऽप्यवन्तर्धं ओषधीर्वीर्यं आविरेत् ।
य इमा धिरवानुरनानि चस्त्वपे तस्मै रुद्राय नमोऽन्यन्नये । यो रुद्रोऽ-
ग्नी यो रुद्रोऽप्यवन्तर्धं रुद्रं ओषधीर्वीर्यं आविरेत् । यो रुद्र इमा

विश्वा भुवनानि चक्रुः तस्मै रुद्राय वै नमो नमः ॥ यी रुधोऽप्यु
 यो रुद्र औपवीपु यो रुद्रो वनस्पतिपु । येन रुद्रेषु जगद्ध्वं धारितं
 पृथिवीं दिवा त्रिवा धर्त्ता धारिता नागा येन्वरिचोत्तमै रुद्राय वै नमो
 नमः । मूर्धानमस्य संसेव्य प्यवर्वा हृदयश्च यत् । मस्तिष्कादूर्ध्वं
 प्रेरयत्यव मानोऽभिशीर्षतः । तद्वा अथर्वणशिरो देवकोशः समुज्जितः ।
 तन् प्राणोऽभिरक्षति शिरोऽन्तमथो मनः । न च दिवो देवजनेन गुप्ता
 नचान्तरिक्षाणि न च भूम इमाः । यस्मिन्निदं सर्वमोतप्रोत्तं
 तस्मादन्यत्र परं किञ्च नास्ति । न तस्मात्पूर्वं न परं तदस्ति न भूतं
 नोत भव्यं यदासीत् । सङ्क्षपादेकमूर्ध्ना व्याप्तं स ए वेदमावरोवर्ति
 भूतम् । अक्षरान् सञ्जायते कालः कालान् व्यापक उच्यते । व्यापको हि
 भगवान् रुद्रो भोगायमानो यदा शेते रुद्रमदा सहायते प्रजाः । उच्छ्र-
 वमिते तमो भवति तमस आपोऽरबद्भुल्या मथिते मथितं शिशिरे शिशिरं
 मध्ययमानं फेनं भवति फेना दण्डं भवत्यण्डादण्डा भवति ब्रह्मणो वायुः
 वायोरोङ्कारः ओङ्कारात्मावित्री मावित्र्या गायत्री गायत्र्या लोका भवन्ति ।
 अर्चयन्ति तपः मन्यं मयु क्षरन्ति यधद्रुवम् । एतद्धि परमं यपः । आपो
 ज्योति रमोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो नम इति ॥ ६ ॥ य इदमथर्वणिरो
 प्राज्ञाणोऽरीते । अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति । अनुपनीत उपनीतो भवति ।
 मोऽग्निपूतो भवति । स वायुपूतो भवति । स सूर्यपूतो भवति ।
 स सोमपूतो भवति । स सत्यपूतो भवति । स सर्वैर्देवैर्ज्ञातो
 भवति । स सर्वैर्देवैरुध्यातो भवति । स सर्वेषु सर्वेषु स्नातो भवति ।
 तेन सर्वैः क्रतुमिरिष्टं भवति । गायत्र्या पश्चिमः स्त्राणि जातानि भवन्ति ।
 प्रणयानामयुतं जप्तं भवति । स चतुषः षड्ङ्क्त पुनाति । आसन्नमात्
 पुरुषपुगान्पुनानीत्याह भगवानथर्वशीर्षः सहोत्रैर्वैव शुचिः स पूतः
 कर्मण्या भवति द्वितीयं जपत्या गत्याधिपत्यमवाप्नोति । तृतीयं जप्यैव-
 मैत्रानु प्रविशत्यो शत्यो मत्यमो मत्यमो मत्यम् ॥ इति ॥

अथ शिवापरः पञ्चमापनस्तोत्रम् ।

अथ कर्मप्रमंगारालयति कर्तुषं मायूष्मती म्रियत माविष्मन्ना-
 म्यमप्ये पश्ययति नितरां जाठरो जातवेदा ॥ यत्तद्ने त्रय दुःस्वं व्यय-
 गति नितरां शक्यते केन वक्तुं संतप्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो
 श्रीमहादेव नमो ॥ १ ॥ यत्तद्ने दुःस्वान्तिरेकान्मकर्तुमिति तपः स्तन्यपाने
 पितामा नौगमयत्येन्द्रिययो भवगणजनिता जंतवो मां नृदति ॥ नाना-
 रोगान्निदुःखाद्दन्तपराशः शंकर न मगामि संतप्यो मेऽपराधः

शिव ३ भो श्रीमहादेव शम्भो ॥२॥ प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः
 पञ्चभिर्मर्मसंधौ दष्टो नष्टो विवेकः सुतघनयुवति स्वाधु सौख्ये निप-
 ण्णः ॥ शौवी चिंताधिहीनं मम हृदयमहो मनगर्भाधिरूढं क्षंतव्यो मेऽप-
 राधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥३॥ वार्धक्ये चेन्द्रियाणां
 विनतगतिमतिश्चाधिदैवावितापैः पापै रोगैर्वियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढि-
 हीनं च दीनम् ॥ मिथ्या मोहाभिलाषैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यं
 क्षंतव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव० ॥४॥ नो शक्त्यं स्मार्तकर्मप्रतिपद
 गहन प्रत्यवायाकुलास्थं शीते वार्ता कथमं द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गे
 सुरारे ॥ ज्ञातो धर्मो विचारैः श्रवणमननयोः किं निविध्यासितव्यं क्षन्त-
 व्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव० ॥५॥ स्नात्वा प्रत्यूपकाले स्नपनविधि-
 कृते नाहृतं गांगतोयं पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनात्प्रण्डयिल्वीवलानि ॥
 नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धपुष्पैस्त्वदर्थं क्षंतव्यो मेऽपराधः
 शिव शिव शिव० ॥६॥ दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितमहिर्तैः स्नापित नैव
 लिंगं नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितं पूजितं न प्रसूनैः ॥ धूपः कपूर-
 दीपैर्विधिधरमयुतैर्नैव यद्योपहारैः क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव० ॥७॥
 ध्यात्वा चित्ते शिवायप्रचुरतरधनं नैव दत्तां द्विजेभ्यो हव्यं ते लक्षसंख्ये
 हुतबहवदने नापितं बीजमग्नैः ॥ नो तप्तं गांगतोरे प्रवजपनियमै रुद्र-
 जायैर्न वेदैः क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव० ॥८॥ स्थित्वा स्थाने
 सरोजे प्रणवमयमस्तुष्टुहृदले सूक्ष्ममार्गे शान्ति स्वान्ते प्रलीने प्रकटित
 विभवे ज्योतिरूपे पराख्ये ॥ लिंगज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शङ्करं न
 स्मरामि क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव० ॥९॥ नमो निःसंगशुद्धस्निग्ध-
 विरहितो घ्नस्तमोक्षांधकारो नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः
 फटाचित् ॥ उन्मन्यावस्यया त्वां विगतकलमलं शंकरः न स्मरामि
 क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव० ॥१०॥ चन्द्रोद्भासितसेखरे स्महरे गंगाधरे
 शङ्करे सर्पभूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोस्थ ये वानरे ॥ दंतित्वं कृतमुन्दरा-
 वरधरे त्रैलोक्यसारे हरे मोक्षार्थं कुरु चित्तावृत्तिमन्त्रिलामन्त्रैश्च
 कर्मभिः ॥११॥ किं यानेन घनेन याजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं किं वा
 पुत्रवृत्तप्रमित्रपगुभिर्देहेन गेहेन किम् ॥ शाल्वैर्नक्तगुणमंगरं मयदिरे
 त्याज्यं मनो दूरतः स्वात्मार्यं गुरुवाक्यतो भजपत्र भोषार्थतो बलमम् ॥१२॥
 प्रायुर्नश्यति परयज्ञं प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनम् प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न
 दिरसाः दाना जगद्भूतकः ॥ लक्ष्मीस्तोयतरंगमंगवपला विद्युच्चयं
 जीविनं लम्भाणां शरणागर्भं शङ्खदत्तं रत्न रत्नाधुनाः ॥१३॥ कश्चरत्त-
 कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा धनजननजं वा मानमं वाऽपराधम् । विहित-
 मविदितं वा मयमेतत्तुमस्य जय जय वरुणादरे श्री मन्त्रेण जग्मो

॥ ४० ॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं ' शिवापराधक्षमापनस्तोत्रं
सम्पूर्णम् ॥८॥

अथ प्राणप्रतिष्ठा :

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य । ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ।
ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि । जगत्सृष्टिः प्राणशक्तिर्देवता । आं बीजम् ।
ह्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् । प्राणप्रतिष्ठापने विनयोगः—ॐ 'ब्रह्मविष्णु-
महेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि । ऋग्यजुःसामच्छन्दोग्यो नमः—मुख्ये ।
जगत्सृष्टये प्राणशक्त्यै नमः—हृदये । आं बीजाय नमः लिङ्गे । ह्रीं
शक्त्यै नमः—पादयोः । क्रौं कीलकाय नमः—सर्वाङ्गेषु । एवं न्यास
कृतेऽपि । ॐ अ, कं, रं, गं, घं, ङं, ओ—पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने-
अद्गुप्ताभ्यां—नमः । ॐ इ, च, छं, जं, झं, ञं, ई—शब्दस्पर्शरूपरस-
गन्धात्मने तर्जनीभ्यां—नमः । ॐ उ, टं, ठं, डं, ढं, णं, ॐ त्वक्चक्षु-
श्रोत्रो जिह्वाग्राणाऽऽत्मने मध्यमाभ्यां—नमः । ॐ ए, वं, यं, दं, धं, नं, ए
याक्पाणिपादपोयूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ओ, प, फं, बं,
भ, मं, औ, वचनादानगमनानन्दविसर्गात्मने नमः । कनिष्ठिकाभ्यां—
नमः । ॐ अं, य, र, लं, व, शं, पं, सं, हं, चं, अः—मनोबुद्धयहङ्कारचित्त-
विज्ञानाऽऽत्मने फरतलवरपृष्ठाभ्यां—नमः । एवं हृदयादि । (नामैराभ्य
पादन्तिम् । आं, इति, पोशबीजम् । हृदयाहारम्य नाम्यन्तं ह्रीं, इति,
शक्तिबीजम् । (मस्तकादारम्य हृदयान्तम् 'क्रौं' इति, अङ्गुलीबीजमन्य-
मेत् ॥ अथभ्यानेम्—रक्तः श्मोधिस्त्र्यपोतेलसदंरुणसरोजोऽधिरुद्धाकरा-
ब्जः । पार्श्वं कोदण्डविस्तृतं देवमथ गुणमत्यद्भुतं शब्दं च बाणानि विभ्राणा-
ङ्गकपाले त्रिनयननसिना पीनवक्षोरहोहायो देवी बालार्कवर्णा भवतु
सुखरुरो प्राणशक्तिः परा नः ॥ (शिरसि तथा हृदि करं दत्त्वा)—ॐ
आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, पं, सं, हं, सः—सोऽप्य प्राणा इह
प्राणाः । ॐ, आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, पं, सं, हं, सः—जीव
इह रियतः । ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, पं, सं, हं, सः—
मयैन्द्रियाणि वाह मनस्त्यक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाग्राणाश्चक्षणापादपायूपस्था-
नोद्देशागम्य गुणं चिर तिष्ठन्तु स्वाहा ॐ१, ॐ२, ॐ३, ॐ४, ॐ५,
ॐ६, ॐ७, ॐ८, ॐ९, ॐ१०, ॐ११, ॐ१२, ॐ१३, ॐ१४, ॐ१५,
इति प्रणवस्य पञ्चदशरावृत्ती । (कृत्वा) अनेन मम देहस्य पञ्चदश
संस्थाः सम्पद्यन्ताम् । इत्युक्त्या पञ्चषष्टिम् (ॐ नमो भगवते गन्धर्व)

इति त्रीन्प्राणायामान्कृत्वा ॥ यथा पर्वतधातूनां दोषान्दहति पावकः ।
एवमन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दह्यते ॥ इति प्राणप्रतिष्ठा ।

अथ महामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः ।

सङ्कल्प.—अद्येत्यादि पूर्वोच्चारित एषं गुणविशेषेण विशिष्टायां
शुभपुण्यतिथौ मम आत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्ताफलप्राप्त्यर्थं यजमानस्य
शरीरेऽमुकपीडा निगश-द्वारा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जय-
देवताप्रीत्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये—ॐ अस्य श्रीमहा-
मृत्युञ्जयमन्त्रस्य । वसिष्ठ ऋषिः । श्रीमृत्युञ्जय रुद्रो देवता । अनुष्टुप्
छन्दः । हौं बीजम् । जूं शक्तिः । सः कीलकम् । मृत्युञ्जयप्रीत्यर्थं
जपे नियोगः । न्यासाः—वसिष्ठऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे
नमः, मुखे । श्रीमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदये हौं बीजाय नमः
गुह्ये । जूं शक्तये, नमः पादयोः । सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु ।
ॐ त्र्यम्बकं अङ्गुष्ठान्यां नमः । ॐ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः । ॐ
सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात्
अनामिकाभ्यां नमः । ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ
मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एषं हृदयादि ॥ ध्यानम्—चन्द्रो-
द्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं महद्वस्त्राञ्जेन दधन्सुदिव्यममलं
हास्याभ्यपङ्क्तं रुद्रम् । सूर्येन्दुग्नियिलोकनं कतलैः पाशाक्षसूत्राङ्कुशां
भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे ॥ १ ॥ मानसोपचारैः
सन्पूज्य ॥ ॐ तं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि । ॐ ह्वाकाशात्मकं
पुष्पं समर्पयामि । ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि । ॐ र तेजआत्मकं
दीपं दर्शयामि । ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि । ॐ सं सर्वात्मकं
मन्त्रपुष्पं समर्पयामि ॥ मन्त्रोद्धारः—ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः
ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे ॥ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ
भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ । उत्तरन्यासं कृत्वा ॥ गुह्यातिगुह्यगोप्यं
त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रासादान्महेश्वर ॥
मृत्युञ्जय महारुद्र ग्रीहि मो शरणागतम् । जन्ममृत्युजरारेणिः
पोडितं कर्मबन्धनैः ॥ अर्पणम्—अनेन महामृत्युञ्जयपात्रेण कर्मणा
श्रीमहामृत्युञ्जयः—प्रीयतां न मम ॥ अथ पट्प्रणवयुक्तं मृत्युञ्जय-
महामन्त्रः—सङ्कल्पं पूर्ववत् । ॐ हौं जूं सः ॐ भूभुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं
यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान् ॐ सः
जूं हौं ॐ स्वः भूभूः ॥ अर्पणम्—पूर्ववत् ॥ इति पट्प्रणवयुक्त-

मृत्युञ्जयमहामन्त्रः ॥ एवं जपानन्तरं देवपूजनं कृत्वा ॥ प्रार्थना—
मृत्युञ्जय महेश्वर त्राहि मां शरणागतम् । जन्ममृत्युजरारोगैः पीडित
कमपन्थनेः ॥ तावत्तत्त्वद्वयत्प्राणारत्त्वर्चितोऽहं सदा मूढ । इति
विद्वाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं तु ज्यन्वकम् ॥ जपनिवेदनम्—जपसाङ्गता-
सिद्धयर्थं यथाकामनया द्रव्येण दर्शांशहोमतर्पणमार्जनवाक्ष्यभोजनानि
कुर्यात् ॥ इति धर्माष्ट्युञ्जयमन्त्रजपविधिः ॥

अथ शिवपूजापद्धतिः ।

अथ मन्त्रोद्धारः ॥ अनुक्तं कल्पेयंस्तु लिखेत्पद्मदलाष्टकम् ।
पद्मकोणं कर्णिकं तत्र वेदं द्वारोपशामितम् । अथ मन्त्रोद्धारः । नमस्कारं
समुद्घृत्य चाममेत्र समन्वितम् । घोरुणं सुरवृष्टं च यामुं ललाट
संयुतम् । अनूपवाचरं मन्त्रं पञ्चाकाम फल प्रदम् । प्रणवादिर्वैष्ण-
वेशि तदा मन्त्रः पङ्क्तुः इति । अथ मन्त्रः ॥ ओ३म् नमः शिवाय, इति
मूलमन्त्रः । अथ पूजाप्रयोगः । सामग्रीसंवाद्यं नित्यकर्मविधाय, नव-
वस्त्रं परिवाद्य ओ३म् विष्णुर्विष्णुर्हृदिः ३ त्रिरावम्य ॐ सिद्धं ३
ॐ नमो भगवते रुद्रायेति प्राणानायम्य, कर्मपात्रजले, गङ्गाद्यावद्भक्तं
कुर्यात् । गन्धमुष्पाद्यै रचसम्पूज्य तेन जलेनाऽऽत्मनं सम्प्रोक्ष्य ॥ ॐ
अपवित्रः पवित्रोवा सर्वाश्स्थां ॥ ॐ परहरीकाशमुनातु ३ । नम-
स्कारः । इक्षिणे ॐ सरस्वत्यै नमः । ॐ शंखनिधये नमः । वामे, ॐ
सहस्रे नमः । ॐ पद्मनिधये नमः । आसनशुद्धिः । ॐ पृथ्वीत्वयेति-
मन्त्रम्य मेरुपुत्र ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मोद्दिष्टा, आसनोपवेशने विनि-
योगः ॥ ॐ हिरण्यवर्णां सुमग्नं हिरण्यकशिपुमंहि । तस्या हिरण्यदायये
सत्या अक्षरं नमः । इत्युक्तान् क्षिपेत् । पुनः ॐ विरवराक्षये नमः । ॐ
महाशक्तये नमः । ॐ कूर्मामनाय नमः । ॐ योगसनाय नमः । ॐ
अनन्तासनाय नमः । ॐ विमला मनाय नमः । मध्ये, ॐ परम सुम्यास-
नाय नमः । ॐ मूर्धुर्वरः आत्मात्मनाय इति मन्त्रेण पुष्पादिनाऽऽत्मन
आसनदानम् ॥ पादादिभिर्मूत्रि, आसनं च सम्पूज्य ॥ प्रार्थयेत् ॥ ॐ
प्रदत्तपा गृताः कोका देवित्यं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि
पथित्रं पुरवासनम् ॥ ॐ तृदिक्यं नमः ॥ ततः शिखां चोपायान् ॥ ॐ
उर्ध्वं देशिविरूपाक्षि मां शोणितं भोजने । त्रिष्ट देवि शिवायाम्ये, चा-
मुद्वेपा पराजिते । विष्णोर्नाम मरुद्दीप्तु, शिखाकण्ठं करोम्यहम् ॥
अथदिगन्धनम् ॥ ॐ अपमर्त्यन्तु भूता ये भूताः सुवि मन्त्रिताः । ये
भूता विनक्तारस्तोनयन्तु शिवाय ॥ इति मूलाशीनुत्तमार्थं ॥ ॐ

सवभूतानिधारकाय, शौर्गाय सशराय सुदर्शनायास्त्रावाय हु फट् स्वाहा ॥
 इति तालत्रयकृत्वा ॥ तत स्वदक्षिणभागे पुष्पाक्षतै । ॐ गुरुभ्यो नम ।
 ॐ परमगुरुभ्यो नम । ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नम । ॐ पूर्वोत्तिष्ठिभ्यो
 नम । ॐ आचार्येभ्यो नम । तत स्ववामभागे ॥ ॐ गणेशाय नम ।
 ॐ दुर्गायै नम । ॐ क्षेत्रपालाय नम । ॐ योगिनीभ्यो नम । ॐ क्षेत्रे
 शाय नम । पुनर्दिग्वन्धनम् ॥ ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा सर्वं
 तोदिशम् सर्वस्य हविरोधेन ब्रह्म कर्म समारभे ॥ वाम हस्तेन भूमिं
 त्रिवार ताडयेत् ॥ अथ भूशुद्धि ॥ ॐ भूरसीत्यस्य प्रजापति ऋषि
 मातृका देवता, प्रस्तारपङ्क्तिञ्छन्द, भूशुद्धौ विनियोग । भूमौ हस्तौ
 कृत्वा । ॐ भूभूमि भूमिरस्य दितिरसि त्रिश्ववाया विश्वस्य भुवनस्य
 धनी । पृथिवीयच्छ प्रथिवीष्ट ॐ इ पृथिवी माहिर्तसि । भैरव नमस्कार ॥
 ॐ भूतानामित्यस्य कौडिन्यऋषि, नारायणा देवता, अनुष्टुप्छन्द,
 भैरव नमस्कारे विनियोग ॥ पुष्पाजलिचम्पा ॥ ॐ यो भूतानामधिप
 तिर्य्यस्मिन्लोकानाऽअधिभिता यऽईशो महतो महास्तेन गृह्णामि स्वामहं
 मयि गृह्णामित्वामहम् ॥ ॐ लीक्षण दंष्ट्र महाकाय कल्पात दहनोपम ॥
 भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञादातु महसि ॥ इति भूतशुद्धि । ॐ नम शिवा
 येति प्राणायाम त्रय कृत्वाऽऽचम्य । ॐ सुशान्तिर्भवतु ॥ ॐ स्वस्तिनऽ
 इन्द्रो वृद्ध भवा स्वस्तिन पूषा विश्व वेदा स्वस्तिनऽस्तात्स्व्योऽअरि-
 ष्टनेमि स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु । ॐ भद्र कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्र
 पर्ये माक्ष भिर्य्यचक्षुः । स्थिरैरङ्गैश्चक्षुष्वार्थं मस्तनूभिर्भ्यस महि, देवहित
 यदायु ॥ त पत्नी भरुगुण्डे मन्वा पुत्रं व्यातु भिरुवाहिरण्यै ॥ नाक
 गृह्णाना सुहृत्तस्य लोके तृतीये ऋष्टे अधिरोक्षणे दिव ॥ अथ नम-
 स्कारा । आचिन्तनाशिने मंगल मूर्तये नम । श्रीरंगेदेवताभ्यो नम ॥
 श्रीप्रामदेवताभ्यो नम । श्री स्थानदेवताभ्यो नम । श्री वास्तुदेवताभ्यो
 नम । श्री वा गैहिरण्यगर्भाम्भ्या नम । श्री लक्ष्मीनारायणाम्भ्योनम ।
 श्री उमामहेश्वराम्भ्या नम । श्री शचीपुरंदराम्भ्या नम । श्री मानृपिन्-
 चरणधर्मलोभ्या नम । ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नम । ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणे
 भ्यो नम ॥ निविन्धमस्तु ॥ ॐ अग्नीमित्तार्य मिद्वधर्यपू जतोय सुरा
 सुरै । सर्वविघ्न हन्तस्मै श्री गणाधिपतये नम । ॐ सर्व मंगल मागल्ये
 शिरे मर्गार्थसाधके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥ ॐ
 लाभतेषा नयस्तेषा कुतस्तेषा पराजय । येषामिन्दीवर श्यामा दृढस्थो
 जनार्दन । ॐ लम्बोदर नमस्तुभ्य सतत मोदक प्रिय । अविघ्नं कुरु
 मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ॐ तत्सत्परब्रह्मणे नम ॥ तत सकल्य
 कुर्यात् ॥ ॐ विश्वविष्णुर्हृदि ॥ त्रिराचम्य । ॐ नम परमात्मन

पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवतो० एवं गुण विसेषणविशिष्टायां शुभ-
 पुण्यतिथौ । अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माहं ममात्मनः वा, आमुष्क
 यजमानस्य श्रुति स्मृति पुराणेतिहासोक्त सत्फल प्राप्तये सकलैश्व-
 र्याभिः वृद्धयर्थं, अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं, प्राप्तलक्ष्म्याश्विरसं
 रक्षणार्थं, सकल मनेप्सित कामना संसिद्धयर्थं, लोके वा सभायां, राज
 द्वारे वा । सर्वत्र यशोविजय लाभानि प्राप्त्यर्थं इह जन्मनिजन्मान्तरेवा,
 सकल दुरितोपशमनार्थं, तथा मम सभार्यस्य, सपुत्रस्य, मग्नांधवत्या-
 खिलकुटुम्बसहितस्य, सपशोः समस्तभयव्याधिजरापीडालुप्त्यु परिहार
 द्वारा, आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धयर्थं । तथा, ममाखिल कुटुम्बस्य जन्म-
 राशेः सकाशाद्येकेचिद्विरुद्ध, चतुर्याष्टम, द्वादशस्थान स्थितकूरमहास्तैः
 सूचितं, सूचयिष्यमाणं, यत्सर्वारिष्टं, तद्विनाशद्वारा, एकादशस्थानस्थित,
 षष्ठ्युभयफलप्राप्तये, पुत्रपौत्रादिसंततेरिवच्छिन्न वृद्धयर्थं आदित्यादि-
 नवमहानुक्ततासिद्धयर्थं, तथा, इन्द्रादिदशदिक्पालप्रसन्नतासिद्धयर्थं,
 आधिदैविकाविमौक्तिकाध्यात्मिक, त्रिविधतापोपशमनार्थं, धर्मार्थकाम-
 मोक्षकृतप्राप्त्यर्थं च, ॐ भूभुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिव प्रीतये, पद्म-
 न्यासपूर्वकं यथा ज्ञानेन, यथा लब्धे नोपचारेण श्री साम्बसदाशिव-
 पूजनकर्माहं करिष्ये ॥ ततः ॐ अस्य श्री शिव पञ्चाक्षर मन्त्रस्य वाम-
 देव, ऋषिः, पंक्तिच्छंदो, श्रीसाम्बसदा शिवोदेवता, ॐ धीर्जं, शंशक्तिः,
 शिवायेति कीलकं, चतुर्युगं कलाघातये जपे विनियोगः । ॐ शिरसि
 वामदेव ऋषिः नमः । मुरे, ॐ पकिरद्वन्द्वे नमः । हृदि ॐ साम्बसदा
 शिवाय नमः । गुह्ये, ॐ बीजाय नमः । पादयोः ॐ शंशक्तये नमः ।
 सर्वाङ्गे, ॐ शिवायेति कीलकाय नमः ॥ ततः ॐ हृदयाय नमः ।
 नै शिरसे स्वाहा । मं शिवायैवपट् । शि कवचायहुम् । यौ नेत्रत्रयाय-
 धौपट् । यै अन्नायफट् । ततोऽध्यायेत्—ॐ एज्जबक्रा दशभुजो सर्व
 देवोत्तम प्रभुः । वेदोपगीतः सर्वज्ञः सोम सूर्याग्नि लोचनः ॥ गौरीभूपति
 वामाङ्गो कल्याण गुणसागरः । सर्वलोकपतिः शोभान सर्व देवाचितो
 विभुः ॥ निष्कलोपिगुणो नित्यो निर्मलो निरुपादिकः । निरञ्जनो
 निराकारो निरवन्धो निरामयः ॥ ज्योतिः स्वरूपो विमलो चिद्वचनः
 सकलात्मकः । एकः पूर्णः शिवः शान्तो मायावीतोऽक्षरो वः । इति
 हृदयेऽध्यात्वा । ॐ नमः शिवायेति दशधाजप्त्वा ॥ अर्घ्यं स्थापन
 कुर्यान् ॥ भूमौ रक्तचन्दनेन त्रिकोणं घृतं चतुरस्रं मण्डलं विलिख्य ।
 ॐ ऐं व्यापकं मण्डलाय नमः । इति सम्पूज्य । ॐ मं वह्निमण्डलाय
 दश कलात्मने नमः । शिवायैवपाराय नमः । इति आधारं सम्पूज्य
 ॐ पटइनिअर्घ्यं पात्रपञ्चालनम् ॥ ततोऽर्घ्यं पात्रमाचारोपरि मंस्थाप्य

ॐ अं अर्कमण्डलायद्वादशकलात्मने शिवार्घ्यं पात्राय नमः । इत्या-
 धारो परि पात्रं सम्पूज्य ततः ॐ नमः शिवायेति मूलमन्त्रेणार्घ्यं पात्रं
 वारिणा परिपूर्य्य ॐ गङ्गे च यमुने चेति० । ततः ॐ संसोममण्डलाल
 षोडशकलात्मने श्रीशिवार्घ्यामृताय नमः । इति सम्पूज्य नम इति ।
 गन्धम् वषट् इति पुष्पम् । अक्षतारवक्षिपेत् ॥ अंकुश मुद्रया सूर्य
 मण्डलात्तीर्थावाह्य, मत्स्यमुद्रयाऽऽद्यावेनुमुद्रया धृ मृतोक्त्य योनि-
 मुद्रयापरमीकृत्य सुगन्धाद्रि द्रव्यं च निःक्षिपेत् । तेनार्घ्योदकेन
 सर्वासान्मर्षी सन्प्रोक्ष्य, आपोहिष्ठेति मन्त्रेण, आत्मानं चामिसि-
 ङ्गयेत् ॥ ततः घण्टा पूजयेत् ॥ ॐ आगमार्थं तु देवानां
 गमनार्थं तु रक्षसाम् । सर्वभूतहितार्थाय घण्टानादं करोम्यहम् ।
 इति वादयित्वा घण्टां प्रपूजयेत् ॥ ॐ सुपर्णो सि० ॥ ॐ भूभुवः
 स्वः घण्टास्थ गुरुणायनमः—आवाहयामि वंसर्वोपचारार्थैः पाद्य
 गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि घण्टा मुद्रां च प्रदर्शय ॥
 ततो वामे धूपपात्रं ॥ दक्षिणे दीपपात्रं संस्थाप्य, पाद्यादीनि समर्प-
 यामि, गन्धर्वदेवाय धूपपात्राय नमः । बन्धि देवताय दीपपात्राय
 नमः । सम्पूज्य । आदौ गृह वास्तु पुरुषं पूजयेत् । गृहाभिषौ, वा,
 भूमौ, अक्षतैः । ॐ वास्तोस्वते प्रतिजानी ह्यस्मान्स्वावेशो अनभीषो
 भवानः । पे यत्वेमहे प्रति तन्नो जुपस्वः शन्नो चवद्विपदेशं चतु-
 पदे ॥ ॐ भूभुवः स्वः, गृह वास्तु पुरुषाय नमः । पाद्यादिभिः
 सम्पूज्य नमस्कारः । ॐ पूजयोऽसि मयावास्तो होमोद्यैर्जनैः शुभैः ।
 प्रसीद वह्निदेवेश देदि मे गृहर्जं सुखम् । ॐ वास्तु पुरुषाय नमः ॥
 ततः पीठ पूजां कुर्यात्पूष्पाक्षतैः ॐ मण्डूकायनमः । ॐ कालाग्नि
 रुद्रायनमः । ॐ आधारशक्तये नमः । ॐ आनन्दकन्दाय नमः । ॐ
 प्रपञ्चघ्नाय नमः । ॐ कूर्माय नमः । ॐ शेषाय नमः । ॐ वाराहाय
 नमः । ॐ इन्द्राय नमः । ॐ सुधार्यवाय नमः श्वेत द्वीपाय नमः ।
 ॐ मणिमण्डपाय नमः । ॐ फल्गुवृक्षाय नमः । ॐ स्वर्णसिंहासनाय
 नमः । ॐ सितक्षत्राय नमः । ॐ श्वेतचामर्यय नमः । ॐ धर्माय
 नमः । ॐ ज्ञानाय नमः । ॐ वैराग्याय नमः । ॐ जनैश्चर्याय नमः ।
 ॐ अनन्ताय नमः । ॐ सवित्रलायनमः । ॐ प्रकृतिमयपत्रे म्योनमः ।
 ॐ विकारमयकेशरेभ्यो० । ॐ पञ्चाराद्वर्ण बीजाक्षय वरिवायै नमः ।
 ओं सं सत्वाय नमः ॥ ओं रं रजसे नमः । ओं तं तमसे नमः ॥ ओं
 मायायै नमः । ओं विद्यायै नमः । ओं सूर्येन्दु वह्निमण्डलेभ्यो नमः ।
 ओं आत्मने नमः । ओं अन्तरात्मने नमः । ओं परमात्मने नमः । ओं
 ज्ञानात्मने नमः । ओं मायातत्त्वाय० । ओं विद्यातत्त्वाय० । कलातत्त्वाय० ।

ओं परतस्याय नमः ॥ ततः पूर्वातिक्रमेण । ओं वामदेवाय नमः । ओं
ज्येष्ठाय० । ओं रुद्राय० । ओं कालाय० । ओं कालविकरणाय० । ओं
यलाय० । ओं चलविकरणाय० । ओं वज्रप्रमथिने० । ओं सर्वभूतद-
मनाय० ओं मनोन्मनाय । मध्ये, ओं नमो भगवते सकल गुणात्मने
अनंत पीठात्मने नमः ॥ अथावाहनम् ॥ ओं आगच्छ देवदेवेशलि-
ङ्गेऽस्मिन् सुस्थिरोभव । स्थिरोभूत्वा महादेव पूजां गृह्ण नमोऽ-
स्तुते ॥ श्रीसांवसदाशिवाय नमः ॥ ततः नूतनमूर्तीनां प्राणप्रतिष्ठां
कुर्यात् ॥ तद्यथा । ओं अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मयिष्णु
महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामथर्वाणि छन्दासिक्रियामय यपुः प्राणा-
ख्या देवता ओं योजं ह्रीं शक्ति क्रौं कीलकं आसां नूतनमूर्तीनां
प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ अनामिकाङ्ग प्रयोगेन । पञ्चगव्येन
पञ्चामृतेनवा । ॐ ओं ह्रीं क्रौं यं रं ल वं शं पं सं सोऽहं हंसः एषां
शिवस्य नूतन लिङ्गानां प्राणा इहप्राणाः ॥ पुनः अनेनैव मंत्रेण
एषां शिवस्य नूतनलिङ्गानां जीव इह स्थितः ॥ पुनः एषं । शिवस्य
सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि एषां शिवस्य नूतनलिङ्गानां
सर्वेन्द्रियाणि । वाङ् मनस्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण
पाणि पाद पाय पस्थानि इहैवागत्य सुखचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥
पुनर्वैदोक्त मन्त्रेण । ओं एतन्तेदेव सवितुर्यज्ञं प्रादुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन
यज्ञमग्नेनयज्ञपतितेन मामत्र । ओं मनांजुति० ॥ पश्चात्संस्कारसिद्धये
पञ्चदश प्राणवाट्टीः कारयेत् ॥ यथा ओं ओं ओं इति पञ्चदश बार
१५ पठेत् ॥ अनेन आमां नूतनमूर्तीनां जातकर्मगर्भाधानादि पञ्चदश-
संस्कारान्मपादयामि । इति वदेत् ॥ प्रायना । ओं स्वागतं देवदेवेश
मद्भाग्यात्तमिद्रागतः । सानिध्यं तु महादेव स्वार्चायां परिकल्पय ॥ अनेन
प्राण प्रतिष्ठादि कर्मकृतेन श्रीसाम्बमदाशिवोदेवता प्रीयतां नमम ॥ ततः
प्रतिव्रजे प्रत्येक पञ्चामृतेनामिषेकं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ दुग्धेन ओं
आप्याय स्येति गोक्षतम ऋषि पयोदेवता ऊर्ध्ववङ्गे ईशानाय क्षीरस्नाने
विनियोगः ॥ ओं कामयेतु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यक्ष
हेतुग्व पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ ओं पयः पृथिव्यां० ॥ स्नानार्थं दुग्धं
समर्पयामि श्रीसांवसदाशिवाय नमः । एषः गन्धः ॥ एतानक्षतान् ।
इमानि पुष्पाणि समर्प० । धूपमाध्यापयामि । दीपं दर्शयामि । नैवेद्य-
निवेदयामि श्रीमां० ॥ ततोऽननैः ओं ईशानः सर्वविद्यानामोश्वरः
मयंभूतानां ब्रह्माविर्ब्रह्मणिऽविपति शिरोमे अम्नु मदाशिवोम ॥
तन्मगुदोदरम् । ओं आपो आमान्निति ब्रह्माग्नीनाम ऋषिन्निष्टुद्धन्दः
विश्वे देवादेवता आपः स्नाने विनियोगः । ओं आपो अस्मान्मातरः

शुन्ध्यन्तु धृतेन नो धृतष्वः पुनन्तु विश्व ठँ हिरि ग्रं प्रवहन्तिदेवी
 रुद्रदादिभ्यः शुचिरा पूतयेमि । दीक्षातपसस्तिनुरसि त्वां तां शिवा ओ
 शगमां परिदधेभद्रं धर्णपुष्यन् स्नानार्थं शुद्धोदकं समर्पयामि श्रीसाम्ब-
 सदा० ॥ एवं सर्वत्र । ततः दधिस्नानं ओ दधिक्राव्येति वामदेव अपि
 रनुष्टुप्छन्दः दधिदेवता पूर्ववक्त्रे वामदेवाय दधिस्नाने विनियोगः । ओ
 दधिक्राव्ये अकारिपं जिप्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभिनोमुखा करत्प्रणऽआयु
 ठँ पितारिपत् ॥ ओ पयसस्तु समुद्रमूर्तं ॥ स्नानार्थं दधिं सम०
 श्रीसाम्बस० एष गन्धः । एतानक्षतान् इमानि पुष्पाणि स० धूपमाग्रा-
 पयामि । दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं निवेदयामि, श्रीसाम्बहेश्वराभ्यां नमः ।
 ततः शुद्धोदकं पूर्ववत्, वा, ॐ असोयस्ताम्रो० । दधिस्नानान्तरं शुद्धो-
 दकं समर्पयामि ॥ ततोऽक्षतः । ॐ वामदेवाय नमोज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठा-
 य नमोरुदाय नमः कालय नमः कलधिकरणाय नमोवलविकरणाय नमो ॥
 ततो घृत् ॥ ओ घृतं मिमीक्षेति गृत्समद अपि रनुष्टुप्छन्दः दक्षिण
 वक्त्रे अघोराय घृत्स्नाने विनियोगः । ओ घृतं मिमीक्षे घृतमस्य योनि घृते-
 श्रितो घृतं वस्य धाम । अनुष्टुप्छमावहमादयस्त्र स्वाहा घृतं वृषभ व्यक्षि-
 ह्वयम् । ओ अवनीत समुत्पन्नं स्नानार्थं घृतं सम० श्रीसांव० ।
 एष गन्धः । एतानक्षतान् । इमानि पुष्पाणि । धूपमाग्रापयामि ।
 दीपं दर्शयामि । नैवेद्यं निवेदयामि । श्रीसाम्बशिवाय नमः । अक्षतैः
 ओ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरेभ्यो । तरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वं सर्वेभ्यो
 नमस्तेऽस्तुरुद्र रूपेभ्यः ॥ शुद्धोदकम् । ओ असोपस्ताम्रोऽ
 अ० । घृत स्नानानन्तरं शुद्धोदकं सम० । श्रीसाम्ब० ॥
 अय मधुस्नानम् । ओ मधुवातेति गोत्तम अपि गायत्रीछन्दो मधुदेवता
 परिचमवक्त्रे तत्पुरुषाय मधुस्नाने विनियोगः । ओ मधुवाताऽऽश्वायते
 मधुक्षरन्ति सिधवः माध्वीर्यः सन्त्वोषधीः मधुनक्तुमोपसां मधुमत्पार्थिव
 ठँ रजः मधुगौरस्तुना पिता मधुमात्रो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तुसूर्य माध्वी-
 गाँवो भवन्तुनः । ओ तरुपुत्र समुद्रमूर्तं । स्नानार्थं मधु स० । श्री-
 सांव० ॥ एष गन्धः । एतानक्षतान् । इमानि पुष्पाणि । धूपमा० ।
 दीपं दर्श० । नैवेद्यं निवेद० । श्री साम्बशिवाय० ॥ अक्षतैः ॥ ओ०
 तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नोरुद्रः प्रचोदयान् । शुद्धोदकं० ।
 ओ असोय० । मधुस्नानानन्तरं शुद्धोदकं सम० । श्री साम्ब० ॥ अथ-
 शर्करास्नानम् । ओ अपाँ रसमित्यस्य इन्द्रवृहस्पति अपो अनुष्टुप्छन्दः
 उत्तपवक्त्रे सद्यो जाताय शर्करास्नाने विनियोगः । ओ अपा ठँ रस मुदय
 स ठँ सूर्ये संतँ समाहितम् । अपा ठँ रसस्य योरस स्तवोगृहो म्मुचम-
 मुपयाम गृहीतो सीद्रायत्वा जुष्टं गृहाम्येपते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टनम् ॥

ओं इक्ष्णु सार समु० । स्नानार्थे शर्करां सम० श्री साम्ब० । एष गन्धः ।
 एतानर्क्षतान । इमानि पुष्पाणि । धूपमा० । दीपं दर्श० । नैवेद्यं नि० ।
 श्री साम्बसदाशिवाय० । अर्चतेः ॥ ओं मद्योजातं प्रपद्यामि मद्यो जाताय
 वैनमः । भवे भवे नाति भवे भवस्य मां भवद्भवाय नमः । पुनः शुद्धो-
 दकं । ओं असोयस्ताम्रोऽम्ब० । शर्करास्नानानन्तरं शुद्धोदकं मम० श्री
 साम्बसदाशिवाय० ॥ ततः पुनरावाहनादि षोडशोपचारैश्च पूजयेद्यथा ॥
 (उत्तरोम शिवपूजनम्) अथपुष्पाञ्जलिगृहीत्वाऽऽवाहनं कुर्यात् । ओं आ-
 गच्छ भगवन्तदेव स्थानेचात्र स्थिरोभव । ओं नमः शम्भवाय० । इत्यावाह्यं
 ओं भूभुवः स्वः मोग सपरिवार सायुध सशक्तिक भोसाम्बुशिवे हाग
 च्छेह तिस्र इहसु प्रतितितो वरदोभव । अथासनम् । ओं रम्यं सु शोभन
 दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभं । आसनं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वर । ओं
 यातेहद्रशिवा० इत्यासनार्थे, पुष्पाणि समः श्री साम्ब० ॥
 अथपाद्यम् । ओ३म् उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध संयुतं । पाद-
 प्रक्षालयनार्थायदत्तं ते प्रतिगृह्यताम् । ओं यामिपुंगिरि शं० । इदं पाद्यं
 सम० श्रीसाम्ब० । अथाप्यम् । ओं अयं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः
 सह । कठण । करमेदेव गृहाणाप्यं नमोऽस्तुते ॥ ॐ शिवेनयचसात्वा०
 अर्घ्योदकं मम० श्रीसाम्ब० ॥ अथाचमनीयम् । ॐ सर्वतीर्थममायुक्तं
 मुरभिर्निर्मलं जलम् । आचम्यतां मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ ओं अद्य
 षोचदधि० । इदमाचमनीयं सम० श्री साम्ब० । अथस्तनम् । ओं
 गंगा सप्तस्वतीरेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः स्नापितोसि मयादं व तथा शांति
 कुरुष्वमे । ओं असोयस्ताम्रो० । इदं जल समर्प० श्रीसाम्ब० । अथ
 गन्धोदकम् । ॐ मलया बलसं भूतं चन्दनागरु सम्भवम् । चन्दनं देव
 देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ओं गन्धद्वारां दुराय० । गन्धादकं समर्प०
 श्रीसाम्बसदा० । पुनः शुद्धोदकं च समर्प० ॥ श्रीसाम्ब० । अथ हरिद्रादि-
 चूर्णम् । ओं नाना सुगंधि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् । दद्रुतं न
 मयादत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ दद्रुतं नार्थमिदं हरि ओ३म् अठ् शहः
 शुनाते अठ् शुहः इच्छयापरुणापरु० । गन्धस्ते सोमयनु मेराय
 सोऽश्चन्युतः । पुनः शुद्धोदकं सम० श्रीसाम्ब० अथ पञ्चामृतम् ।
 ओ३म् पयोदधिपृतं चैव मधुच शर्करायुतम् । पञ्चामृत मयानीतं
 स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ओ३म् पञ्चनयः सरस्वती० । स्नानार्थं पञ्चा-
 मृत म० श्रीसाम्ब० । पुनराचनीयं । ओ३म् पुनराचनीयं चक्षायते
 तव सुप्रसंगगृहाणदेवदेवेश ममो भव वैप्रभा । ओ३म् अमोयोयसर्गति० ।
 पुनराचनीयं मम० श्रीसाम्ब० । ततः पुरुष सूक्तेन, ओ३म् मद्भ्य-
 गोपेतिः महानिषेकं कुर्यात् ॥ ओ३म् अमृतमिषकोऽनु ३ इति प्रियार

वदेत् ॥ अथ यज्ञोपवीतम् । ओ३म् नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणदेवतामयम् ।
 उपवीतं चोत्तारोयं गृहाण परमेश्वर । ओ३म् नमोस्तुनील० । यज्ञोपवीतं
 सम० श्रीसाम्ब० ॥ अथ वस्त्रम् ॥ ओ३म् सर्वभूताधिके सौम्ये लोक-
 लज्जानिवारणे । मयेऽपपादिने तुभ्यं वाससो प्रतिगृह्यताम् । ओ३म्
 प्रमुच्यन्व्रत० । वस्त्रं समर्प० श्रीसाम्ब ॥ अथ गन्धम् । ओ३म्
 श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं
 प्रतिगृह्यताम् । ओ३म् विज्येधनु—क० ॥ इदं गन्धं सम० श्रीसाम्ब-
 सदा० ॥ अथाक्षतान् ॥ ओ३म् अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठकुङ्कुमाक्ताः
 सुशोभिताः । मयानिवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर । ओ३म् परिते-
 धन्वनोद्देवि० अक्षतान्तिवेदयामि श्रीसाम्ब० ॥ अथ पुष्पाणि ॥ ओ३म्
 माल्यादीनि सुगन्धिनि मालत्यादीनि वैप्रभो । मयानीतानि पुष्पाणि
 पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ओ३म् यातेहेतिन्मीदुष्ट० ॥ पुष्पाणि सम०
 श्रीसाम्ब० ॥ अथ विल्वपत्रम् । ओ३म् त्रिदलं त्रिगुणाकार त्रिनेत्रं च
 त्रियायुधम् । त्रिजन्म पाप संहारमेकविल्वं शिवार्पणम् । ओ३म्
 शिवभक्त प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः । मायाया पृथिवीऽभिशो-
 पीर्मातरिचं भावनस्पतीन् ॥ विल्वदलानि सम० श्रीसाम्ब० ॥ अथ पुष्प-
 याला ॥ ओ३म् नाना सुगन्धिभिर्युक्तं ऋतुजैः कुसुमैः शुभैः । मया या
 प्रथिता माला गृहाण त्व सुरेश्वर । ओ३म् यद्यशोप्सरसा ॥ इमां पुष्प-
 माला सम० श्रीसाम्ब० ॥ अथ सौभाग्यद्रव्यम् ॥ ओ३म् हरिद्रां कुङ्कुमं
 चैव सिंदूरं कज्जलान्वितम् सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाणा-
 न्विक्रया सह । ओ३म् अहिरिषभोगैः पर्य्येति० । सौभाग्यद्रव्यं
 सम० श्रीसाम्ब० ॥ अथ दूर्वाङ्कुराणि ॥ ओ३म् हरिताः श्वेत वर्णा वा
 पञ्चत्रिपत्रं संयुताः । दूर्वाङ्कुराः मया दत्ताः गृहाण भवनायक । ओ३म्
 वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आग्नेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं
 प्रतिगृह्यताम् । ओ३म् अघतत्त्व धनु० ॥ धूपमग्रापामि श्रीसाम्ब० ॥
 अथ दीपम् ॥ ओ३म् आज्यं सद्गतिं संयुक्तं वह्निमायो जित्तमया दीपं
 गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह । ओ३म् नमस्तेऽप्रायुधाया० ॥ दीपं
 दर्शयामि श्रीसाम्ब० ॥ अथ नैवेद्यम् ॥ ओ३म् शर्कराघृत संयुक्तं
 मधुरं स्वादुचोत्तमम् । उपहारं समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् । ओ३म्
 मानोमहान्तं मुत्त० । ओ३म् प्राणाय स्वाहा०, ओ३म् अपानाय
 स्वाहा, ओ३म् व्यानाय स्वाहा, ओ३म् उदानाय स्वाहा, ओ३म् सामानाय स्वाहा,
 एभिर्पञ्चभिर्मन्त्रैः ग्राममुद्राः प्रदर्श्य । इदं नैवेद्यं निवेदयामि श्रीसाम्ब० ।
 मध्ये गानोयम् ॥ ॐ प्लोमीर लवंगादि कपूरं परिवामितम् । प्रारानार्थं
 कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ वरुणभ्यो नमः ॥ पुनर्जलम् ॥ ओ३-

माधारण जलं ययंकरस्यात्रि विशुद्धये । सततदेवदेवेश गृहाण मम
भक्तिनः । ॐ शक्तोदेवीर भी० । उत्तरोपामनार्थं करमुख प्रक्षालनार्थं
पुनर्जलसम० श्रीसाम्ब० । अथताम्बूलम् । ॐ पूंगीकल महादिव्य
नागवल्लीदलैर्युतम् । एताच्चादिमथुक्त ताम्बूल प्रति गृह्यताम् ॐ
पत्पुष्पै० । मुख शोभनार्थमिदं ताम्बूलसम० श्रीसाम्ब० ॥ अथ
फलानि ॥ ॐ नानात्रिधानिपक्वानि फलानि ऋतु जानिच गृहाण देव
देवेश प्रसन्नोभवैरैकियो । ॐ या फलानिर्य्याऽऽफ० ॥ एतानिफलानि-
सम० ॥ श्रीसाम्ब० ॥ अथदक्षिणाम् ॥ ॐ हिरण्य
गर्भगर्भस्थं हेम धीचं विभावसो । अनन्त पुण्यफलदमतः शान्ति प्रय-
च्छमे ॥ ॐ हिरण्यगर्भ सम० ॥ उमादक्षिणा सम० ॥ अथकपूरा
र्त्तिक्यम् ॥ ॐ कदलीगर्भसभूत कपूरं च प्रदीपितम् । आर्त्तिक
क्यमह कूर्चं पर्यमेवरदोभय ॥ ॐ इदं हरि प्रजन० ॥ इदं कपू-
रार्त्तिक्यं दर्शयामि श्रीसाम्ब० ॥ अथप्रदक्षिणा ॥ ॐ यानिकानिच
पापानिजन्मान्तर कृतानिदे । तानिसर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे
पदे । ॐ मानस्तोमेस्तनये० । सर्व पापा पनुत्तये प्रदक्षिणा करोमि
श्रीसाम्ब० ॥ अथ पुष्पाब्जजलम् । ॐ नाना सुगन्ध पुष्पाणि
यथाशालोद्भवानि च । पुष्पाब्जजलिमयादत्ता गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ
नमस्तऽआयुधा० । इमापुष्पाब्जजलिसम० श्रीसाम्ब० तत सफला
र्घ्यम् ॥ ॐ रक्त रक्त महादेव रक्त त्रैलोक्यरक्तक । मक्तानाग
मयःत्वां ज्ञातामह मदार्यवान् ॥ वरदत्वं वरदेहि वाञ्छितं-
वाञ्छितार्थद ॥ इति मन्त्रेणार्घ्यस्थं पूगीफलं देवता सम्मुखे निवेद्य ॥
ॐ अनेन सफलार्घ्यफलदोन्मुमदामम । इत्यर्चोदकेनदेवताम्नापयेन् ॥
अथ प्रार्थना ॥ ॐ भूत्वालेपनभूषित प्रविलमन्नेत्राग्निदीपाङ्कुर
कण्ठेयत्रगपुष्पदाम मुमगो गङ्गा जलं पूरित । ईषनाम्र जराप्रपल्लव-
पुगोन्मन्त्रोत्तममण्डपे शम्भुवङ्गन शुम्भता मुगगो भूयात्मताश्रेयसे ।
श्रीसाम्ब शिवाय० । ततो रामारत्नेन पुष्पाङ्गनेष्टमूर्त्तिन्यूजयेन् ॥
ॐ मर्षायचिति भूतयेनम ॥ ॐ मर्षायजनभूतयेनम ॥ ॐ मृ-
यागिनभूतयेनम । ॐ उपायशायुभूतये नम । ॐ भीमायाःशामू-
नयेनम ॥ ॐ पशुपतयेवमान भूतये० । ॐ महादेवाय मोम
भूतये० । ॐ ईशानाय मूये भूतये० ॥ तत्र पूर्वं ॐ यामदेवाय
नम । इति ॐ अयोराय नम । पश्चिमे ॐ तत्पुरुषाय नम ॥
उत्तरे ॐ ईशानाय नम । मध्ये-ॐ माम्ब मन्त्र शिवाय नम ॥
पाषादिभिर्नैवेद्यन्त मयूज्य ॥ पुष्पं गृहीत्वा ॐ देव देव
महादेव ममानुमदम पर । अनुमतिदिदेशेन परिधारपनायमे ॥

इमामावरणां पूजां गृहाण सुमुखोभव ॥ श्रीसाम्ब० ॥ अथ मधुप-
 कर्केण, वा शिवाध्यामृतेन पुष्पाक्षत युतैः सर्पयेत् ॥ अष्टदलेप्रागादि-
 क्रमेण ॥ ॐ नन्दिने नमः ॥ इहागच्छेद्वतिष्ठ । नन्दीश्रीपादुकां पूजया-
 मितर्पयामि नमः । ॐ महाकालाय नमः । इहागच्छेद्वतिष्ठ । महाका-
 लंश्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः । ॐ गणेश्वराय नमः । इहाग० ।
 गणेश्वरं श्रीपादुका० । ॐ वृषाभाय नमः । इहागच्छे० । वृषभश्री-
 पादुकां० । ॐ भृगिरिदिनेनमः । इहाग० भृगिरिति श्रीपादु० । ॐ
 स्कन्दायनमः । इहाग० स्कन्दंश्रीपा० । ॐ वीरभद्रायनमः । इहाग०
 वीरभद्रंश्रीपा० । ॐ चण्डीश्वरायनमः । इहाग० । चण्डीश्वरं
 श्रीपादु० । ततोऽध्यामृतम् ॐ अभीष्टसिद्धिस्मेदेहि शरणागतवत्सल ।
 भक्त्यासमर्पयेत्तुभ्यमिदमारणार्चनम् ॥ इदमाव रणार्चनं श्रीसाम्बस-
 दाशिवस्यदक्षिणहस्ते समर्पयामि । इति प्रत्यावरणार्चने । ततः पाद्या-
 दिभिर्नैवेद्यान्तं सम्पूज्य । पुनस्तर्पयेत् ॥ मन्त्रे—ॐ ईशानायनमः ।
 इहागच्छेद्व० ईशानं श्रीपादुकांपूज० । ॐ अचोरायनमः । इहाग०
 अचोरंश्रीपादु० । ॐ सद्योजातायनमः । इहाग० सद्योजातंश्रीपा० ।
 ॐ अनन्तायनमः । इहाग० अनन्तंश्रीपादु० । ॐ सूक्ष्मश्रीपा० ।
 ॐ शिवाय नमः । इहाग० शिवश्रीपा० । ॐ एकपतयेनमः । इहाग०
 एकपतिश्रीपा० । रुद्रायनमः । इहाग० ॥ रुद्रंश्रीपा० । ॐ त्रिमूर्त्तये-
 नमः । इहाग० त्रिमूर्त्तिश्रीपा० । ॐ श्रीकण्ठायनमः इहाग० श्रीक-
 ण्ठंश्रीपा० । ॐ सत्पतये नमः । इहाग० । सत्पतिं श्रीपादु० ।
 ॐ शान्त्यै नमः । इहाग० ॥ शान्तिं श्रीपा० । ॐ विद्या-
 यै नमः । इहागच्छे० । विद्यांश्रीपा० । ॐ निवृत्त्ये-
 नमः । इहाग० निवृत्तिं श्रीपा० । ॐ प्रतिष्ठायै नमः । इहाग०
 प्रतिष्ठांश्रीपा० ॐ वामदेवायनमः । इहाग० वामदेवं श्रीपा० । ॐ
 ज्येष्ठायनमः । इहाग० । ज्येष्ठं श्रीपा० । ॐ श्रेष्ठाय नमः ।
 इहाग० । श्रेष्ठं श्रीपा० । ॐ रुद्रायनमः । इहाग० रुद्रंश्रीपा० । ॐ
 कालायनमः । इहाग० कालंश्रीपादुकां० । ॐ कलविकरणायनमः ।
 इहा० कलविकरणं श्रीपा० । ॐ बलायनमः इहाग० बलश्रीपादु० ।
 ॐ बलविकरणायनमः ॥ इहाग० बलविकरणश्रीपा० । ॐ बलप्रमथिने-
 नमः ॥ इहाग० बलप्रमथिनंश्रीपा० । ॐ सर्वभूतदमनायनमः । इहाग० ।
 सर्वभूतदमनंश्रीपा० । ॐ मनोन्मनायनमः । इहाग० मनो न्मनंश्रीपा० ॥
 ततोऽध्यामृतम् ॥ ॐ अभीष्टसिद्धिस्मेदेहि शरणाग० ॥ ततः पाद्या-
 दिभिर्नैवेद्यान्तं संपूजयेत् ॥ पुनस्तर्पयेत् पूर्वं ॐ हृदयायनमः । इहाग०
 हृदयंश्रीपा० । अग्नये नंशिरसेस्वाहा । इहाग० शिरः श्रीपा० ।

ईशाने मं. शिखायै वषट् । शिखांश्रीपा० । नैऋत्वां शिखवाय-
 हुम् । कवचंश्रीपा० वायव्ये वां नेत्रत्रयायत्रीपट् । नेत्रत्रयं श्रीपा ।
 मध्ये—यै यन्त्रायपट् । अस्त्रं श्रीपा० ॥ ततः परितः ॥ ओं अणि-
 मायै नमः । इहाग० अणिमांश्रीपा० । ओं महिमायै नमः ।
 इहाग० महिमांश्रीपा० । ओं लघिमायै नमः । इहाग० ल-
 गिमांश्रीपा० । ओं गरिमायै नमः । इहाग० गरिमांश्रीपा० । ओं प्रा-
 नमः ॥ इहाग० प्राणेश्रीपादु० । ओं प्राक्काम्यै नमः । इहाग० प्राणमो-
 श्रीपा० । ओं इषितायै नमः । इहाग० इषितांश्रीपा० । ओं वसितायै-
 नमः । इहाग० वसितांश्रीपा० । ओं ब्राह्म्यै नमः । इहाग० ब्राह्माश्रीपा० ।
 ओं माहेऽव्यै नमः । इहाग० माहेऽव्यै श्रीपा० । ओं कौमाय्यै नमः ।
 इहाग० कौमाय्यै श्रीपा० । ओं वैष्णव्यै नमः । इहाग० वैष्णवी श्रीपा० ॥
 ओं वाराह्यै नमः । इहाग० वाराह्यै श्रीपा० ॥ ओं रुद्रायै नमः ॥ इहाग०
 रुद्राणीश्रीपा० ॥ ओं चामुण्डायै नमः ॥ इहाग० चामुण्डाश्रीपा० ॥ ओं
 चण्डिकायै नमः ॥ इहाग० चण्डिकाश्रीपा० । पुनः प्राणादिकर्मणः ॥
 ओं असितागमैरवायनमः ॥ इहाग० असितागमैरवायनश्रीपा० । ओं रु-
 मैरवायनमः ॥ इहाग० रुद्रमैरवायनश्रीपा० । ओं चण्डमैरवायनमः । इहाग०
 चण्डमैरवायनश्रीपा० ॥ ओं क्रोधमैरवायनमः ॥ इहाग० क्रोधमैरवायनश्रीपा० ।
 ओं उन्मत्तमैरवायनमः ॥ इहाग० उन्मत्तमैरवायनश्रीपा० ॥ ओं कालमैरवाय-
 नमः ॥ इहाग० कालमैरवायनश्रीपा० ॥ ओं भीषणमैरवायनमः ॥ इहाग० ॥
 भीषणमैरवायनश्रीपा० । ओं महाभयमैरवायनमः ॥ इहाग० महाभयमैरवाय-
 नश्रीपा० । तत्रोऽर्चनायनम् ॥ ओं अमीष्टमिष्टिमैरवायनमः ॥ पाद्यादिभि-
 नैवेद्यान्तं पूजयेत् ॥ अथ च । ओं मवायनमः ॥ इहाग० ॥ भवंश्रीपा० ॥
 ओं ईशानाय नमः इहाग० ईशानं श्रीपा० । पशुपतये नमः । इहाग० ।
 पशुपति श्रीपा० । ओं रुद्राय नमः । इहाग० । रुद्रंश्रीपा० । ओं उमाय-
 नमः । इहाग० । उमेश्रीपा० ॥ ओं भीमाय नमः । इहाग० । भीमं श्रीपा० ।
 ओं महादेवाय नमः । इहाग० ॥ महादेवंश्रीपा० । ओं अनन्दाय नमः ।
 इहाग० अनन्तंश्रीपा० । ओं वामुकिने नमः । इहाग० वामुकिनेश्रीपा० ।
 ओं उषायाय नमः । इहाग० तत्तयैश्रीपा० । ओं वृक्षीरवायनमः । इहा-
 ग० ॥ वृक्षीरकंश्रीपा० । ओं कर्कोटकवायनमः । इहाग० कर्कोटकंश्रीपा० ।
 ओं शङ्खपायाय नमः । इहाग० शङ्खपायैश्रीपा० । ओं पद्मवायनमः ।
 इहाग० पद्मवर्णश्रीपा० । ओं वज्रवायनमः । इहाग० वज्रंश्रीपा० । ओं
 वैजयन्ताय नमः । इहाग० वैजयन्तंश्रीपा० । ओं वृषिर्वायनमः । इहाग० वृषिर्वा-
 नश्रीपा० । ओं देव्याय नमः । इहाग० । देव्यैश्रीपादु० । ओं अनुनायनमः ।
 इहाग० अनुनायनश्रीपा० । ओं मातृनायनमः । इहाग० मातृनायनश्रीपा० ।

ओं भर्त्रेणमः । इहाग० भर्त्रेणश्रीपा० । ओं नलायनमः । इहाग० नल-
 श्रीपा० । ओं रामायनमः । इहाग० रामश्रीपादु० । ओं हिमवतेनमः ।
 इहाग० हिमवन्तश्रीपा० । ओं निषदायनमः । इहाग० निषदश्रीपा० । ओं
 ध्यानायनमः । इहाग० ध्यानश्रीपा० । ओं माल्यवृतेनमः । इहाग० ।
 माल्यवन्तश्रीपा० । ओं परिजातायनमः । इहाग० पारिजातश्रीपा० । ओं
 हेमकूटायनमः । इहाग० हेमकूटश्रीपादु० । ओं गन्धमादनाय
 नमः । इहाग० ॥ गन्धमादनं श्रीपादुकां० । ततोऽर्घ्यामृतम् ।
 ओं अभीष्टसिद्धिमेदेहिश० इदमावरणार्चनम् । श्रीसाम्ब-
 शिवस्य दक्षिणहस्ते निवेदयामि ॥ ततः पाद्यादिभिः सम्पूज्य
 पुनरावरणम् ॥ ॐ इन्द्रायनमः ॥ इहाग० इन्द्रश्रीपा० ॥ ओं अग्नये-
 नमः । इहाग० अग्निश्रीपा० । ओं यमायनमः । इहाग० । यमश्रीपा० ।
 ओं निष्कृतयेनमः । इहाग० । निष्कृतं श्रीपा० ॥ ओं वरुणायनमः ।
 इहाग० वरुणश्रीपा० । ओं वायवेनमः । इहाग० । वायुश्रीपा० ।
 ओं कुबेरायनमः । इहाग० कुबेरं श्रीपा० ॥ ओं ईशानायनमः ।
 इहाग० ॥ ईशानां श्रीपा० । ओं ब्रह्मणेनमः । इहाग० ब्रह्माणं
 श्रीपा० । ओं अनन्ताय नमः । इहाग० अनन्तश्रीपा० ॥ पुनः प्रागा-
 दिक्रमेण ॥ ओं धन्वाय नमः । इहाग० धन्वश्रीपा० । ओं शंशक्त-
 येनमः ॥ इहाग० शक्तिश्रीपा० ॥ ओं दं दण्डायनमः ॥ इहाग०
 दण्डश्रीपा० ॐ खं खगायनमः ॥ इहाग० खड्ग श्रीपा० ॥ ॐ पं
 पाशायनमः ॥ इहाग० पार्श्वश्रीपा० ॥ ॐ अंकुशाय नमः । इहाग०
 अकुशश्रीपा० ओं ग गदायै नमः ॥ इहाग० गदाश्रीपा० ॥ ओं शं
 शूलायनमः ॥ इहाग० ॥ शूलश्रीपा० । ओं पद्मायनमः । इहाग० पद्म-
 श्रीपा० । ओं चक्रायनमः ॥ इहाग० चक्रं श्रीपादु० ॥ पुनस्त ॥
 त्क्रमेण ॥ ओं ऐरावतायनमः ॥ इहाग० ऐरावतं श्रीपा० ॥ ओं
 मेपायनमः ॥ इहाग० । मेपश्रीपा० ओं महिषायनमः । इहाग० महि-
 पश्रीपा० ॥ ओं प्रेतायनमः ॥ इहाग० प्रेतश्रीपा० ॥ ओं मकराय-
 नमः ॥ इहाग० मकरश्रीपा० ॥ ओं मृगायनमः ॥ इहाग० मृगश्रीपा० ॥
 ओ३म वृषभायनमः ॥ इहाग० वृषभश्रीपा० ॥ ॐ नरायनमः ॥
 इहाग० नरश्रीपा० ॥ ॐ गरुडायनमः । इहागच्छ गरुडश्रीपा० ॥ ॐ
 हंसायनमः ॥ इहाग० हंसश्रीपा० ॥ पुनः पूर्वादिदिक्षु ॥ पूर्व-विप्रवर्ण
 श्वेताभसदस्त्रफण युतशेषायनमः ॥ इहाग० शेषश्रीपा० । अग्नये
 वैश्ववर्ण नीलाभ पञ्चशतं फणयुत तत्तथायनमः ॥ इहाग० तत्तत्श्री-
 पादुकां० दक्षिणे-विप्रवर्णं कुङ्कुमाम सदस्त्रफणयुत अनन्तायनमः ।
 इहाग० अनन्तश्रीपा० ॥ नैऋत्यां-क्षत्रियवर्णं रक्ताभसप्तशत फण-

युतवासुकिने नम ॥ इहाग० वासुकिन श्रीपा ॥ पश्चिमे विप्रवर्ण
पीताभपद्म शतफणयुतशालपालायनम ॥ इहाग० शङ्खपाल श्रीपादु० ॥
वायव्ये—वैश्वरर्णनीलाभ शतफणयुत पद्मायनम ॥ इहाग० पद्म
श्रीपा० ॥ उत्तरेशुद्रवर्णश्वेतामत्रिशत फणयुतकर्कोटकायनम ।
इहाग० । कर्कोटक श्रीपा० ॥ ततोऽर्घ्यामृतम् ॥ ॐ अभीष्टसिद्धिमे
दहि शर० ॥ इदमावरणचनम् । ओं तत्तत्सत्साम्बसदाशिरस्य
दक्षिण हस्ते समर्पयामि ॥ पुन पूर्ववत्पाद्याग्निर्नैवेद्यान्त पूजयेत् ॥
तत गन्धपुष्पाहृतयुत जलेनतर्पयत् ॥ ओं भव देव तर्पयामि ॐ
शिरदेवतर्पयामि । ओं ईशानदेव तर्पयामि । ओं पशुपतिदेवतर्पयामि ।
ॐ रुद्रदेवतर्पयामि ओं उग्रदेवतर्पयामि ओं भीमदेवतर्पयामि । ॐ
महान्तदेव तर्पयामि । ॐ देवदेव तर्पयामि ॥ तत ॥ ॐ उग्रठा-
यनम इतिजलम् । ओं श्रेष्ठायनम इतिमधुपर्कम् । ओं
कालायनमइतिगन्धम् । ॐ फलत्रिकरणायनम इति दीपम् ।
ॐ भवोद्भवयनम इति नैवेद्यम् ॥ ततोऽष्टपुष्पाञ्जलिनि-
वेदयेत् ॥ ध्यानपूर्वकम् ॥ ओं भवायदेवायनम ओं
सर्वायदेवायनम । ओं ईशानायदेवायनम । ओं पशुपतयेदेवायनम । ओं
रुद्रायदेवायनम । ओं उमायदेवायनम । ओं भीमायदेवायनम । ओं
महतेदेवायनम ॥ तत ॥ ओं भवस्यदेवस्यपत्न्यैनम । ओं सरस्य देवस्य
पत्न्यैनम । ओं ईशानस्यदेवस्य पत्न्यैनम । ओं पशुपते देवस्य पत्न्यै-
नम । ओं रुद्रस्यदेवस्य पत्न्यैनम । ओं उग्रस्यदेवस्यपत्न्यैनम । ओं
भीमस्य स्यस्य पत्न्यैनम । ओं महतोदेवस्यपत्न्यैनम ॥ तत धूप दीपनी
राजनचामरादिभि सम्पूज्य ॐ प्रार्थयेत् ॥ ओं वन्दे महेश सुरसिद्ध सेवित
भक्तद्रुमं पुनित पादपद्म । विद्याप्रदभक्तजनैक वन्द्यायेच्छिष्यैरामदुर्घ
मदेशमे । योयोगमाया प्रतितोहिपुंगवा ज्ञान विवक्ते खिलयस्तुनिष्टम् ।
सर्विरयनाथं कलिबलमपन्नध्यायनिष्ठं लिङ्गगत चन्दम् ॥ श्रीमत्साम्ब-
सदा । शिवार्पणमस्तु ॥ ततोऽष्टोत्तरशत आ नम शिवायेति मन्त्रान्
प्रचक्ष्य । पुष्पाञ्जलितुर्थात् ॥ ओं नम ओं धाररूपाय नमोऽक्षरद्वय
धृते । नमोनादात्मने तुभ्यनमो विन्दुबन्ध्यात्मने । ॐ नमस्ते लिङ्गरूपाय
नानारूपायतेनम । त्व मातास्वलाक्षणा त्वमेव जगत्कारिता । ॐ
त्वधात्मा स्व मुद्रामप्रत्यक्षप्रिय प्रपितामह । नमस्ते भगवन् रुद्र मास्तर
मितेजसं । ॐ भीमाय त्वयोम रूपाय परगुणपायीनमः । नक्षदेवाय
मोगाय ऋणाय नमास्तुते । ॐ ज्ञाय धर्माभाय नमो । कर्मरूपेण

ॐ शिव महेश्वर नामभि कमल द्रव्य चारुकर ॥ चम्रेद्वय ॥

लिङ्गानां शिवरूपाणां यन्मया पूजनं कृतम् । तेन त्वं भगवान् रुद्र वाञ्छित-
 तार्थं प्रयच्छ मे । ॐ तत्सत्साम्बसदाशिवार्पणमस्तु । ततः उत्थाय पुष्प-
 पूरितांजलिं कृत्वा ॥ ओ३म् यज्ञेन यज्ञं मयजन्त देवास्तानि धर्माणि
 प्रथमान्यासन् । तेहनाकं महिमानं सचन्त यत्र पूर्वेसाध्याः सन्ति देवाः ॥
 ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने, नमो वयन्वै श्रवणाय कुर्म हे ।
 समेकमान् काम कामायमह्यं कामेश्वरो वै श्रवणो ददातु । कुबेराय वश्रव-
 णाय महाराजाय नमः ॥ ओं स्वस्ति, साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं
 पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यं मयं समन्तं पर्यायी स्यात् । सार्वभौम
 सार्वायुषे आन्तादापराद्धात् । इधैवै समुद्रपर्यन्ता या एक राश्विति । तदप्येष
 श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिविष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे । आधिष्ठतस्य
 कामं प्रेविशे देवाः समासदः ॥ ओं विश्वतः शचक्षुरुतः विश्वतो मुखो
 विश्वो तो बाहुरुतः विश्वतस्पात् । सम्याहुभ्यां धमति सम्पतः श्रैर्धावा-
 भूमीं जनयन् देवऽएकः ॥ ओं साम्बसदा शिवाय नमः इति पुष्पाञ्जलिं
 समर्प्य ॥ प्रदक्षिणां कुर्यात् ॥ ओं सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः
 देवाय द्ययज्ञं तन्धानाऽअवन्दन् पुरुषं पशुम् । ओं यानिकानि च ॥ अथ-
 क्षमापनम् ॥ ओं आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजचैव
 न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
 तस्मात्कारुण्यं भावेन क्षमस्व जगदीश्वर गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ।
 आगता सुखं सम्पत्तिः पुष्ट्या वा च तव दर्शनात् ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधि-
 हीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ यदक्षरं यद्वचनं यद्वा-
 हीनं च यद्वयेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद कुरुणां निधे ॥ ओं करचरण-
 कृतं वा कायजं कर्मजं वा श्रवणं नयनजं वा मानसं वापराधम् । विहित-
 मविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय कुरुणां न्ये श्रीमहादेव शम्भो ॥
 ओं त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव भ्राता च सखा त्वमेव । त्वमेव-
 विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥ ओं साम्बसदा शिवाय-
 नमः ॥ ततः जलसंप्रोक्षणम् ॥ ओं शतं भवति शतायुर्वै पुरुषः शतं त्रि-
 यरैवेन्द्रियं वीर्यं मातृमघत्ते ओं स्वस्ति मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु । आ-
 राध्य देवताः । सुप्रसन्नाः वरदाः भवन्तु । इच्छितमनकामना संसिद्धिरस्तु ।
 प्राद्व्यानाम् युस्तथास्तु ॥

—इति शिवपूजनम् ।

नीराजनम् ।

ओं जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीश, शिव० त्वन्मां पालय
 निर्व्यं, कृपया जगदीश ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥१॥ कैलाशे-

गिरिसिखरे, कल्पद्रुम विपिने शिव० ॥ गुञ्जति मधुकर पुञ्जे बुञ्जधने
 गहने ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥२॥ कोकिल कूजित मञ्चति
 हंसावन ललिता शिव० ॥ विदधति कला पलास्यं मोदान्मद सहिताः ॥
 शिव ओं हर हर हर महादेव ॥३॥ तस्मिन्नलित सुदेशे, शालामणि
 रचिता, शिव० ॥ तन्मद्वे हरनिकटेगौरी मुद सहिता ॥ शिव ओं हर हर
 हर महादेव ॥४॥ भूषण भूषितदेहा रमयति निज रमणम् ॥ शिव० ॥
 प्रहोन्द्रादि सुरेश राधित सधरणम् ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥५॥
 विबुध वधूबहु नृत्यति, इवया ह्लादयुतम् ॥ शिव० ॥ गायति किन्नर-
 राजः सत्तस्वर रचितम् ॥ शिव ओं हर हर महादेव ॥६॥ धिनकत ये
 ये धिनकत मुदङ्ग मारभते, शिव० ॥ क्वण्णकण ललितं वेणुं मधुरं
 नादयते ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥७॥ रुणु रणु वरणे रचयति,
 नृपुरुषान्वलितम् ॥ शिव० ॥ चक्रावर्त भ्रमयति कुरते तां धिकताम् ॥
 शिव ओं हर हर महादेव ॥८॥ तां तां लुप लुप तालं वादयते ॥ शिव० ॥
 मङ्ग गुप्ताङ्ग गुलिनादं तास्यं कृतं कुरते ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥९॥
 कपूरद्युति गौर पञ्चानन सहितम् ॥ शिव० ॥ त्रिनयन शशिधर मोहिं,
 विपथर कण्ठ युतम् ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥१०॥ सुन्दर जटा
 कलापं, पाथक युत भागम् ॥ शिव० ॥ डमरु विशूल पिनाकंकर धृत
 नृक पाकम् ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥११॥ शङ्ख निनादं कृत्वा,
 मङ्गरि मारभते ॥ शिव० ॥ भीराजयते ब्रह्मा वेदार्थं चित्ते ॥ शिव ओं
 हर हर हर महादेव ॥१२॥ इति मृदुवरण सरोजे, हरकमले घृत्वा ॥ शिव० ॥
 अवलोक यति मदेशं काभादिं हित्वा ॥ शिव ओं हर हर हर
 महादेव ॥ १३ ॥ मानवकपाल मालं पद्मवयर कलितम् ॥
 शिव० ॥ धाम विभागे गिरिजा, रूपं बहुललितम् ॥ शिव
 ओम् हर हर हर महादेव ॥ १४ ॥ सुन्दर शीरे
 शिरशिख, कृतमम्माऽऽभरणम् ॥ शिव ॥ इति धूपमध्वजरूपं तापत्रय
 दरणम् ॥ शिव ओं हर हर महादेव ॥ १५ ॥ ध्यानं सन्ध्या ममये शुधि
 ददये श्वा ॥ शिव० ॥ व्यागुं गिरिजानाथं गिरिशं ह्यभि नत्वा ॥ शिव
 ओं हर हर महादेव ॥ १६ ॥ प्रति दिन मेव पठनं भक्त्या यः कुरुते
 शिव० ॥ शिव भावुष्यं गुरुनि भक्त या यः श्रुणुते ॥ शिव ओं हर हर
 महादेव ॥ १७ ॥ ओं इदं ह्येवः प्रजननम्येऽथ चक्षुः दशव्यीर ह्येव-
 गण ह्येव नये ॥ आत्म मनि प्रजामनि पशुमनि लोक मन्व्य मयसनि ॥
 अग्नि ह्येव प्रजाम्बुलाग्ने करो त्यत्रं पयारेनोऽथामासुपथ ॥ १८ ॥
 ओं भूर्भुवः स्वः भीमाम्बानामिवाय नमः आराधयं दर्शयामि । ओं
 सज्जाराया मन्त्रविषयश्चिः गज समिधः कृताः देवाययम न्मन्त्रानाऽ-

अवधन्पुरुषम्पशुम् १ पापानि सर्वाणि पदेपदे या हरत्यहो तत्क्षणमेव नृ-
णाम् । प्रदक्षिणां तांपरि भक्तिं भावात् समाचरेदेव १ मयि प्रसीद
ॐ भूभुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवायनमः प्रदक्षिणां समाचरामि—इति ॥

श्रीमद्रुद्राष्टमिपेकप्रयोगः ।

आचम्य प्राणनायम्भ शान्तिसूक्तं पठित्वा सुमुखश्चेत्यादि गण-
पतिस्मरणं कृत्वा सङ्कल्पः—अथेत्यादि० एवं गुण विशेषण विशिष्टायां
शुभपुण्यतिथौ ममाऽऽत्मनः यजमानस्य वा श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल-
प्राप्त्यर्थं धर्मार्थकाममोक्षसिद्धिद्वारा कंटिति सर्वव्याधिनिरासपूर्वकं
सर्वाशीष्टसिद्धयर्थं ॐ भूभुवः स्वः श्रीभवानीशङ्करमहार्कद्रदेवता
प्रीत्यर्थं यथाज्ञानेन यथामलितोप चारद्रव्यैः षडङ्गन्यासपूर्वकं पुरुषसू-
क्तेन व्यानाऽवाहनादि षोडशोपचारैः अग्न्योपचारैश्च सष्टद्रुद्रावर्त्त-
नेनाभिपेक (रुद्रं महाकद्रमतिद्रं वा) पूर्वकं पूजनमहं करिष्ये ॥

षडङ्गन्यासाः—मनोजूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः बृहतीच्छन्दः
बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे जपे विनियोगः ॥

ॐ मनोजूतिर्जुपतामाञ्जयत्यबृहस्पतिर्ऋषिमिमन्तनोत्वरिष्टयत् ॥
समिमन्न्धातु ॥ विश्वेदेवासऽहमादयन्तामोम्प्रप्रतिष्ठ ॥ ओं
हृदयाय नमः ॥ १ ॥ अबोद्धग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः
त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता शिरोन्यासे जपे विनियोगः ॥ ओं अबोद्धग्-
निर्ऋषिः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुपासम् ॥ युहाऽश्ववप्यव-
यामुञ्जिहाना ॥ प्रभानवः सितवतेनाकमच्छ ॥ ओं शिरसे
स्वाहा ॥ २ ॥ मूर्ध्ना नमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः
अग्निर्देवता शिखान्यासे जपे विनियोगः ॥ ॐ मूर्ध्ना नन्दिबोऽन्न-
रसिष्पृथिव्यावैश्वानरमृत्तऽव्याजातमग्निम् ॥ कवि ॥ सम्भ्राजम-
तिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः ॥ ओं शिरसायै वषट् ॥ ३ ॥
मर्माणि इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः विराट्छन्दः मर्माणि देवता
कवचन्यासे जपे विनियोगः ॥ ॐ मर्माणि तेन्वेर्मणाच्छादयामिसोम-
स्त्वाराजामृतेनानुषस्ताम् । श्रोत्र्वरीयोव्वरुणस्ते कृणोतुजयन्त्वानु-
देवा मदन्तु ॥ ओं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ विश्वतरचक्षुरिति
मन्त्रस्य विश्वकर्मा देवता नेत्रन्यासे जपे विनियोगः ॥ ओं ओं विश्वरवत-
श्चक्षुरुत विश्वरवतो मुखो विश्वरवतो बाहुरुत विश्वरवतस्पात् ॥ सम्बाहु-
भ्यान्धमतिसत्पतञ्जैर्घावाभू मीजनयन्देवऽएकः ॥ ओं नेत्रत्रयाप
वौष्ट ॥ ५ ॥ मानस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः जगतीछन्दः एकद्रो

देवता अन्नान्धमे जपे विनियोगः । ओं मानस्तोके तनयेमानऽआयुषिमा-
नोगोपमानोऽअश्वेषुपरीरिषऽ ॥ मानोन्वीरान्नुद्भामिनो द्यवधीर्द्विदिग्म-
न्तऽ ॥ सदमित्त्वा हृशमहे ॥ ओं अस्त्राय फट् ॥६॥

इति न्यासान् कृत्वा षोडशोपचारैः सान्द्रशिवं सम्पूज्य पुष्प-
ज्जलिं समर्प्य (रुद्रमन्त्रे) अविच्छिन्नजलधारया अभिषेकः कार्यः ॥
ज्ञापनम्—आवाहनं न जनामि न जनामि त्वार्चनम् पूजां चैव न
जानामि ह्यमस्य परमेश्वर ॥ अर्पणम्—अनेनावाहनादिषोडशोपचारैः
अन्योपचारैश्चनयंश्चाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्वयैः कृतेन पूजनाख्येन
कर्मणा ओं भूर्भुवः स्वः श्रीभवानीशंकरदेवताः प्रीयन्तान्न मम ॥ ओं
वत्सद्रवहारंणमस्तु ॥

अभिषेकविचारः—

‘येदावेदाद्विषगमरश्च रामद्विकैकम् । द्वौ द्वौ पृथभिर्मन्त्रैस्तु नम-
कारचमकाः स्मृताः ॥ वाजश्च सस्यमुक्चार्वा रमाचामिर्नरशुष तथाग्निकः ॥
एका चैव चतस्रश्च द्यविर्वाज इति क्रमः ॥ एव’ चमकानेकादशाया वि-
मस्य एकैकमार्गं नमस्केषु संयोग्य पठेत्स ‘रुद्र’ ॥ तैरकादशरुद्रैः ‘सधुत्तः’
तैरकादशगुणैः ‘महारुद्रः’ ॥ तैरेकादशावृत्तैः ‘अतिरुद्रः’ । इति ॥

रुद्रासंपद्याफलं देवि शृणुष्व वदतो मम ।

एकादश्यादिपाठानां यथावत्कथयामि ते ॥ १ ॥

सकल्पपूर्वं सम्पूज्य न्यासाङ्गेषु सहजं सहजम् ।

श्नात्वा पञ्चावृत्तेनैव ध्यानपूर्वं शिवं जपेत् ॥ २ ॥

बालप्रहोपरान्त्ययमेकावृत्तिमुदीरयेत् ।

अपमगौरशान्त्ययं त्रिसावृत्तिं पठेन्नरः ॥ ३ ॥

प्रहोपरान्त्ये कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने १

महामये समुत्पन्ने सप्तावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ४ ॥

नवावृत्त्या भवेच्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत् ।

राजवरये विभूत्यं च रुद्रावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ५ ॥

रुद्रेभिः काममिद्विर्वरिहानिश्च जायते ।

रुद्रैः पद्मभिः शत्रुश्च तथा श्री यशनामियात् ॥ ६ ॥

रुद्रैः सप्तभिः भोक्तृयं स्वाच्छिवमाप्नोति मानवः ।

नवरुद्रैः पुत्रपौत्रवनधान्यमुपान्वितः ॥ ७ ॥

राजभोनिधितागाय वैश्यांश्चाटनाय च ।

धर्मायैकामयः क्षत्र्या मघताय ततः परम् ॥ ८ ॥



अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्ययशःश्रिये ।
 राजघृष्टप्रदेयाय महारुद्रैकसंख्यया ॥ १० ॥
 विभिदचैव महारुद्रैरसाध्यसाधनाय च ।
 पञ्चभिरचमहारुद्रैः राज्यकामः प्रसाध्यते ॥ १० ॥
 सप्तभिरचमहारुद्रैः सप्तलोकः प्रसाध्यते ।
 नवभिरच महारुद्रैः पुनर्जन्मा न जायते ॥ ११ ॥
 अतिरुद्रैकसंख्येन देवर्त्तां प्राप्नुयात्तरः ।
 ङाकिन्यादिभये प्राप्ते एकावृत्तिं जपेन्नरः ॥ १२ ॥
 भूतमेत पिशाचानां भये च गुणवृत्तितः ।
 प्रहरोपदशायाञ्च पञ्चावृत्तिं न संशयः ॥ १३ ॥
 ष्वरातिसारबोपादौ वानपिचकफादिषु ।
 सर्वारोगापशान्त्यर्थं सप्तावृत्तिं न संशयः ॥ १४ ॥
 सर्वार्थसाधनायैव नवावृत्तिं पठेन्नरः ।
 शसाध्य रोगनाशाय मनोऽभीप्सितकर्मणे ॥ १५ ॥
 अल्पमृत्युविनाशाय तथारोगाय वी पुनः ।
 सर्वशान्तिर्भवेत्तन्त्र रद्रावृत्त्या न संशयः ॥ १६ ॥
 शास्ता तपः-पद्मै का दक्षिणीकरी ।
 रुद्रएकादशरुद्रतः एका दशभिरे साधि महारुद्रस्य कथ्यते ।
 एकादशः महारुद्रैः रतिरुद्र इति स्मृतः ॥ १७ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ हरिः० श्री ॥ गुणानांन्वशागुणपति ॥ हवा-
 महे प्रियाणांन्वशाप्रिय पति ॥ हवामहे निधीनान्त्वानिधिपति ॥
 हवामहेवसोमम ॥ आदमंजादिगर्भमा स्वर्भजासिगर्भमुचम् ॥ १ ॥
 गायत्रीमन्त्रिष्टुःशर्गायतुष्टुष्टु क्त्यामुष्टु ॥ बुद्धयुष्टिष्टुष्टु कुत्सुवीभिः
 शम्भयन्तुत्वा ॥ २ ॥ द्विपंश यादश्चतुष्टुपदास्त्रिपंशयास्त्रिपद पदा ऽः ॥
 त्रिचन्द्रान्दायादश्चसच्छन्दः ऽः सूचोभिः शम्भयन्तुत्वा ॥ ३ ॥ सह-
 स्तोमा ऽः सहचन्द्रसऽ आवृतं सहस्रमाऽष्टपद ऽः सप्तदेव्या ऽः ॥
 पूर्वपाम्पन्यामनुहरययीयंऽअन्वाज्ञेभिरेत्य्यो नरम्मीन ॥ ४ ॥ ॐ
 यज्ञाप्रतोदूरमुदैतिदैवन्तदुष्टतस्य नयेवेति ॥ दूरदमव्योतिपाज्यो-
 त्तिरेकन्तन्मेमनेः शिवसंकल्पमस्तु ॥ ५ ॥ येनरुम्मांएयपसोमनी-
 पिणोयज्ञेन कृएवन्तिविदधेपुत्रीय ऽः ॥ यदपुर्वप्यसमन्त ऽः प्रज्ञानान्त-
 न्मेमनेः शिव संकल्पमस्तु ॥ ६ ॥ यत्प्रज्ञानमुवचेतोभृतिरय

ज्योतिरन्तरमृषमृज सु ॥ यस्मान्नश्नुवेकिञ्चनन्कर्मकिञ्चयेतन्मे-
मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ ७ ॥ येनेदम्भुवन्मभविष्यत्परि-
गृहीतममृतेन सर्वम् ॥ येनयन्तायतेसप्तहोतातन्मेमनः शिवसंक-
ल्पमस्तु ॥ ८ ॥ यस्मिन्नुचऽऽ गमयजू ॥ यिश्मिन्प्रतिष्ठि-
ठवारधनाभाविवासाऽऽ यस्मिन्निरेषत्त ॥ सर्वमोर्वम्प्रजानान्तन्मेमनः
शिवसंकल्पमस्तु ॥ ९ ॥ सुपारथिरश्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयतेमीशु-
मिव्याजिनऽइव ॥ इत्यतिष्ठतयन्वजिरक्षविष्ठन्तन्मेमनः शिवसंक-
ल्पमस्तु ॥ १० ॥ इति रुद्रे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

हरिः ॐ ॥ सहस्रंशीर्षांपुरुषऽऽ सहस्राक्ष सहस्रपात् ॥ सभूमिं ॥
सर्व्वतस्तृष्वान्यतिष्ठतददशाङ्गुलम् ॥ १ ॥ पुरुषऽऽ एवेदं ॥ सर्व्व-
व्यम् सैव्यसंभाष्यम् ॥ उतामृतस्त्वस्येशानोयदन्ने नातिरोहति ॥ २ ॥
एतावानस्यमहिमातोऽज्याधौश्च पुरुषऽऽ पादोऽस्यध्विरवाभूतानि
विश्वपावण्यामृतंवि ॥ ३ ॥ विश्वपादूर्ध्वऽऽत्रैरुपुरुषऽऽ पादो-
स्येदामवपुनः सतो विष्वक् च व्यक्रामत्सारानानशनेऽऽभि
॥ ४ ॥ सतो विराट्जायतविराजोऽऽभिपुरुषऽऽ ॥
सजातोऽऽभर्यरिच्यतपरयाङ्गु मिमयोऽऽपुरऽऽ ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञा स्तंभ-
वत् ॥ सम्भृतमृषदाज्यम् ॥ पशून् श्वान्किञ्चिद्वानाख्ययाग्राभ्या-
श्चये ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्संभ्रवत्तुष्टऽऽ सामानि जज्ञिरे ॥ छन्दा ॥
सिजज्ञिरेनस्नाद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥ तस्मादश्वाऽऽभजायन्तये-
केचोभयादतऽऽ गावोऽऽ जज्ञिरेतस्मात्तस्माज्जाताऽऽर्धजायतः ॥ ८ ॥
तैद्युस्तश्चर्हिपिप्रोक्तुन्पुरुषज्जातमग्रतऽऽ ॥ तेन देवाऽऽर्चयन्त साह-
भ्याऽऽघपयचये ॥ ९ ॥ यत्पुरुषं लब्धयुऽऽ कतिगच्छयत्क्षणयन ॥
गुप्तद्विमस्यामोतिश्वाहविमूरुपादाऽऽउच्येते ॥ १० ॥ आर्द्धणोस्य-
मुष्णं मामीदवाहूराजुन्मयः ॥ ११ ॥ उरुतुस्त्ययदद्वैर्यः ॥ पुरुषो ॥
गुदोऽर्धजायत ॥ १२ ॥ घन्त्रमाभनमो जातश्च ॥ १३ ॥ सूर्योऽर्ध-
जायत ॥ १४ ॥ द्वापुस्ययत्तुष्टमृषदाज्यम् ॥ १५ ॥ नास्त्वाऽऽ
भार्मादुन्तरिण ॥ शीष्णोऽऽममं वृक्षानः ॥ पद्वान्मृमि-
रिऽऽ मोष्ट्राण्योऽऽर्ध ॥ १६ ॥ यत्पुरुषेणद्विपा-
देवायममंयत्तुष्ट ॥ १७ ॥ यस्मिन्तोऽऽयामीदममं ॥ १८ ॥

क्षयि ऽः ॥ १४ ॥ सप्ततास्यासन्परि धयस्त्रि ऽः सप्तसमिधं कृताऽः ॥
 देवायद्यज्ञन्तन्व्यानाऽन् अर्धन्तन्पुरुषम्पशुम् ॥ १५ ॥ यज्ञे नयज्ञमयज-
 न्तदेवास्तानिधर्माणिप्यथमान्यास्तन ॥ तेहनाकम्महिमानं सचन्त
 यत्र पूर्वमाद्याया ऽः सन्ति देवा ऽः ॥ १६ ॥ अद्भ्य ऽः सम्भृत ऽः
 पृथिव्यैरसाच्चविविश्वकर्मण ऽः समवर्त्तताग्ने ॥ तस्यत्त्वष्ट् वाविद-
 धंद्रूपमैतितन्मर्त्यस्यदेवत्वमाजानमग्ने ॥ १७ ॥ वेदा हमेतम्पुरुषम्मु-
 हान्तमाद्रित्यवर्णन्तमस ऽः पुरस्तात् । तमेवविदिस्वाति मृत्युमेतिना-
 न्य ऽः पन्थाव्विद्यतेयनाय ॥ १८ ॥ प्रजापतिरश्चरतिध्वंश्च अन्तर-
 जायमानो बहुवाव्विजायते ॥ तस्ययोनिश्परि पर्यन्तिधीरास्तस्मिन्हत-
 स्युष्मन्वना निव्विश्वा ॥ १९ ॥ यो देवेभ्यऽ आतपतियो
 देवानाम्पुरोहितः ॥ पूर्वोयोदेवेवेभ्यो जातो नमोरुचायुग्राक्षये ॥ २० ॥
 रुचम्नाक्षज्जनयन्तो देवाऽभमेस्त दंष्ट्रु चन् ॥ यस्त्वैवम्नाक्षणोविद्या-
 त्तत्पदेवा ऽभसन्वरो ॥ २१ ॥ ओरश्चतेलक्ष्मीश्चक्षुपस्कन्या बहो-
 रात्रे पारश्वे नक्षत्राणि रूपमरिष्वनौव्यात्तम् । इच्छामिपाणामुम्म
 ऽइपाणसर्वलोकर्मऽइपाण ॥ २२ ॥ इति रुद्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

हरिः ॥ आशु ऽः शिशानोवृषभोनभीमोर्धनापुन ऽः क्षोभंश्चरच-
 पणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनोनिमिष ऽ एक वीर ऽः शतं सेना ऽ अज-
 यत्साकमिन्द्रं ॥ १ ॥ सङ्क्रन्दनेनानिमिषेणाजिष्णुनायुक्कारेणदु-
 श्चयवनेन धृष्णुना ॥ तदिन्द्रेणजयत्तत्सहस्रं व्युधान् ॥ २ ॥ सङ्क्रन्दस्ते
 ज्वष्टणा ॥ २ ॥ सङ्क्रन्दस्ते ऽः सनिशङ्किभिर्वशीस ॥ सङ्क्रन्दस्युष्ट
 इन्द्रोऽग्रेत ॥ सङ्क्रन्दस्युष्टजिह्वो मृषावाटुशङ्खुगम धन्नचाप्पति
 हिताभिरस्ता ॥ ३ ॥ गृह्णतेपरिदीयारथेन रक्षोऽमित्रा-
 २ ॥ ऽअपुवार्धमान ऽः ॥ अभज्जन्तसेना ऽः अभृणोयुधा-
 जयन्तस्माकमेद्रगवितारयानाम् ॥ ४ ॥ चलविज्ञायस्वविर-
 ऽः पवीर ऽः सन्त्सान्वाजी सहमानऽ वृष ऽः ॥ अभिर्वीरोऽभिमत्स्या
 सहोजाजैर्जमिन्द्रायमातिष्ठठगोविन् ॥ ५ ॥ गोत्र भिदंज्ञोविद्वज्ज-
 वाहुज्जयन्तमर्जुमप्यभृणन्तमोजमा ॥ इमं ॥ सजाताऽ अनुवारायद्व-
 मिन्द्रं सतायो ऽ अनुस ॥ सरयद्वम् ॥ ६ ॥ अभिमौजारिः सहसा
 गार्हमानोदयोव्वीर ऽः शतमन्युरिन्द्रं ॥ दुरच्यवन ऽः शतनापादं युद्ध

पोसमाक ६ सेनाऽश्नन्तु अयुत्सु ॥ ७ ॥ इन्द्रोऽ आसान्नेतायुहस्पति-
 दक्षिणायुह ६ पुऽपुऽपुसोमं ÷ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीना-
 म्मरुतोयन्त्वामम ॥ ८ ॥ इन्द्रस्य वृष्णो व्वरेणस्य राक्षोऽ आदित्या-
 नास्मरुता ६ शद्धं कुर्मम ॥ भद्रामनसाम्भुवनचयवानाहोपां देवानाञ्ज-
 यन्तामुदस्यात् ॥ ९ ॥ वदपयमचवत्रायुधान्युत्सत्सत्त्वंनाम्नामकानाम्मना ६
 सि ॥ चद्वृत्रहन्वाजिनो वाजिनान्युद्रयानाञ्जनयताय्यन्तुघोपां ६
 ॥ १० ॥ अत्मारुमिन्द्र ६ समृतेपुदध्वजेऽस्माकँद्याऽइषवस्ताजयन्तु ॥
 अस्माकँद्याऽउत्तरेमवन्त्वस्मां २ ॥ ११ ॥ वदेवाऽ अवताहयेपु ॥ ११ ॥
 अमीपाञ्जिप्रचम्प्रतिलोभ यन्तोमृणाङ्गान्यप्येपरैति ॥ अभिप्रेहिनिर्दं
 हवसुशोकेरुध्रे नामिन्द्रास्तयसासन्त्वाम् ॥ १२ ॥ अवसुष्टापरापवशरे
 व्वयेरस स ६ शिते ॥ गच्छामिन्द्रान्य पयस्सुमामीपाकञ्चनोद्विष ६
 ॥ १३ ॥ मेताजयतानरुद्रोऽ शर्म यच्छतु इमार् + सन्तुवाह
 वीना धृष्यायथासव ॥ १४ ॥ असौयामेनामन्तु ६ परे पामन्यै तितऽ
 ओजसासपद्वैमाना ॥ तादं गृह्णतुमुसापञ्जतेनयथामीऽ अन्न्योऽ अन्न्य-
 म्मजानन ॥ १५ ॥ यज्ञवाय्वाऽ सम्पन्तिऽमाराध्विशिवा इव ॥ तन्नऽइन्द्रो
 वृहस्पतिरदिति ६ शर्मयच्छतु अिरश्वाहा शर्मयच्छतु ॥ १६ ॥ मर्माणि-
 तेऽमर्माच्छादयामिसामस्तयाजासृतेनानुवताम । उरोऽयरीयोऽ चरुण-
 स्तेऽयोऽमर्माच्छादयामिसामस्तयाजासृतेनानुवताम ॥ १७ ॥ इति रुद्रे तृतीयोऽध्याय ॥ ३ ॥

हरि = ॐ ॥ विष्णुश्चायुहसिर्वतुसोम्यस्मद्व्यायुर्द्वयहर्षता
 वविऽवृत्तम ॥ चार्जुतोयोऽममिरसोतिगनां प्रजा ६ पुपोपपुग्धाविरा-
 जति ॥ १ ॥ वदुरवज्जातवेदमन्देवैव्याहन्ति वेतव ÷ ॥ दशेन्द्रिरराष्ट्र-
 सूर्यम् ॥ २ ॥ येना पावचक्षुमा भुरणयन्तुज्जनां ॥ ३ ॥ अतु ॥ त्वं मृ-
 ण्यपरयति ॥ ३ ॥ देव्यामप्यययुऽआगत ६ मेनुसूर्यत्वचा ॥ गद्व्यापुश
 ६ समञ्जता । तन्मन्त्रयाऽय्येनरिरचन्नेवानाम् ॥ ४ ॥ तन्मन्त्रनया
 पुत्रं मात्रि वयेमयांम्येत्वातिर्बहिषद ६ म्यरिषम् ॥ प्रतोषोर्नैवृच-
 नऽोऽमैवृतिगुगुञ्जन्तुमनुयामुवद्वं ॥ ५ ॥ अयऽनेनरग्धोऽयुऽदग्निता-
 दग्नागोतिर्नतायूरजसोऽिमाने ॥ इममुपा ६ सांमेऽय्यंशु शिशुज
 विष्णोर्भुतिभोदिग्ना ॥ विष्ण्वेयानामुगुऽदनीऽय्यहुमिन्द्रम्ययरेण
 म्यामनेऽ ॥ आरुपायाश्वयोऽय्यनरिषुऽय्यं म्याय्यम्यागजतुनायु-

पश्च ॥ ७ ॥ आनुऽइडाभिर्विन्दे सुशस्तिर्विश्वानरऽः सवितादेवऽ
 एतु ॥ अप्रिययायुवानोमत्सथानो विश्ववज्रगदभिपित्वेम
 नीपा ॥ ८ ॥ यद्यकचवृत्रहन्तुदगाऽअभिसूर्य्य ॥ सर्व्वन्त-
 दिन्द्रतेव्वशो ॥ ९ ॥ त्रिणिविश्वदर्शतो ज्योतिष्कृद्दसिसूर्य्य ॥ विश्व-
 माभासिरोचनम् ॥ १० ॥ तत्सूर्य्यस्य देवत्वन्तन्महित्वम्मुदयाकः
 त्तोर्व्वितुऽः सञ्जभार ॥ यदेदयुक्तं हरितं सवस्त्यादाद्वान्त्रोवा-
 सस्तनुतेसिमर्य्य ॥ ११ ॥ तन्मिच्छस्यैवकृणस्याप्रिचक्षेससूर्य्योरुपक
 कृणुतेद्योरुपस्ये ॥ अनन्तमन्तुदृशदस्यपार्जः कृणुमन्त्यद्वरितुऽः
 सन्मन्ति ॥ १२ ॥ वराणमहो २ऽ असिसूर्य्यषडादित्यमहो २ऽ
 असि ॥ नृहस्तेसुतोमहिमापनस्यतेद्वादेवमहो २ऽअसि ॥ १३ ॥ बटू-
 सूर्य्यश्रवसाहो २ऽ असिसुत्रादेवमहो २ऽअसि ॥ मुन्हादेवानाम-
 सूर्य्य ॥ १४ ॥ पुरोहितोव्विभुज्योतिरदाव्यम् ॥ १५ ॥ श्राय-
 न्तऽइवसूर्य्यविश्ववेदिन्द्रस्यमत्त ॥ व्वसूनिजुनेजन्मानुऽओजसाप्ति-
 भाग्नदीधिम ॥ १६ ॥ अदयादेवाऽजदितासूर्य्यस्युतिरधैसऽः पिष्ट-
 तानिरवृहयात् ॥ वज्रोमिन्द्रोव्वरुणोमामहन्तामदितिऽः सिन्धुःपृथि-
 वीऽ बुदद्योऽः ॥ १७ ॥ आकृष्णेनरजसाव्वत्तमानोनिवेशयन्मृत-
 म्मत्यञ्ज ॥ हिरण्ययेनसवितारधेनादेवोयातिभुवनानिपरयन् ॥ १८ ॥
 इति रुद्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

हरिः ॐ ॥ नमस्तो रुद्रमन्त्यवऽऽतोतुऽऽपवेनमः बाहुभ्यामु-
 चतेनमः ॥ १ ॥ यावे रुद्रशिवा नृधोरापोपकाशनी ॥ सयान-
 स्तन्वा शन्तमयागिरिशन्तामिचाकशीहि ॥ २ ॥ यामिपुङ्गिरिशन्त-
 हस्तेविमण्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरिऽताङ्गुमादि ॥ ३ ॥ पुरुषञ्जगत्
 ॥ ४ ॥ शिवेनव्वचसात्वागिरिशञ्जवाव्वदामसि ॥ ययानुऽः सर्व्व-
 मिज्जगदयचम ॥ ५ ॥ सुमताऽऽसत् ॥ ६ ॥ अद्वयवोचदधिष्णु-
 क्ताप्रथमोदैव्योभिपक् ॥ अदीर्घसर्व्वोऽम्भयन्तसर्व्वोऽरजयातुपा-
 न्योधराचीऽः परासुव ॥ ७ ॥ अतीयस्ताम्रोऽ अरुणऽततव्वु-
 ऽः सुमद्भजः ॥ येचैव ॥ रुद्राऽ अभितोदिष्टुभिताऽः संदृशो
 वेपा ॥ ८ ॥ देवऽदेमहे ॥ ९ ॥ असौयोऽमर्षतिनीलाग्नोव्वि-
 लोहितऽः ॥ उनेनहोपाऽ अर्धदधन्नदृशन्नुदह्यऽः

सहृष्टोर्मृदयातिनः ॥ ७ ॥ नमोस्तुनीलंगीर्वायसहस्राक्षायमीदुपे ॥
 अथोये ॥ अस्यसत्त्वानो हन्तेचर्योकरत्नमः ॥ ८ ॥ अमुञ्चधन्व-
 नस्त्यमुमयोरात्वन्योर्ज्याम् ॥ याश्चतेहस्तः ॥ इपत्रः ॥ पराताभग-
 वोव्यप ॥ ९ ॥ विज्जन्धनुः कपर्दिनो विवशल्ल्योवाणवाँ २ ॥
 ५३८ ॥ अनेराक्षस्ययाऽइपवऽआभुरस्यनिपद्गधिः ॥ १० ॥ यत्ते
 हेतिर्मादुष्टमहस्तेवभूवतेधनुः ॥ सयास्मान्निशरवतस्त्वमचक्ष्म-
 णपरिभुज ॥ ११ ॥ परितेधन्वर्नोहेतिस्मान्मन्त्र्युणक्तुविशरवतः ॥
 अथोयऽइपुधिस्तवारेऽ अस्मन्निर्घेहितम् ॥ १२ ॥ अथतत्पुधनु
 एव ॥ सहस्राक्षरातेपुधे । निशीच्यशल्क्यानाम्मुखाशिबोनः ॥ सुम-
 नार्मनः ॥ १३ ॥ नमस्तुऽ आयुधायानांतताय धृष्टने ॥ उभा-
 र्म्यामुवतेनमोबाहुभ्यान्तवधन्वने ॥ १४ ॥ मानोमहान्तमुवमानोऽ-
 अस्मैकस्मान् ॥ उच्यन्तमुतमानऽ उज्जितम् ॥ मानोवधीऽ प्रिव-
 स्वोतमातरस्मानः ॥ प्रियास्तुन्वोरुद्रतीरिपः ॥ १५ ॥ मानस्तोके
 तनेयेमान्आयुप्रिमानोगोपुमानोऽ अशरेपुरीरिपः ॥ मानोव्वीरा-
 न् ॥ दूराभामिनोऽभीहविष्मन्तः ॥ सदाभित्वाहवामहे ॥ १६ ॥ नमोहि
 रण्यपराहवे । सेनान्ये दिशारवपतये नमो नमो व्युक्षेभ्योहरिकेशेभ्यः
 ॥ पशुनाम्पतये नमोनमः ॥ शृण्पिङ्गरायस्त्रिषीमने पथीनाम्पतये नमो
 नमो हरिः केरायोपवीतने पुष्टानाम्पतये नमोनमोवधन्तुशायः ॥ १७ ॥
 नमोवधन्तुशायः । व्युधिनेऽर्जानाम्पतये नमो नमो भुवस्थेहेत्यैजगता-
 म्पतयेनमोनमो रुद्रायाः ततायितेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनमः ॥ नमः ॥
 सूतापाहन्त्यैज्वनानाम्पतये नमोनमोरोहिताय ॥ १८ ॥ नमोरोहिताय-
 रथपतयेव्युत्ताणाम्पतयेनमो नमो भुवन्तरेनारिवक्त्रायोपधीनाम्पतयेन-
 मोनमोमन्त्रिणैवापिजायस्त्राणाम्पतये नमो नमः ॥ ५३९ ॥ पार्थिवोपायाकू-
 न्दयेन पथीनाम्पतयेनमोनमः ॥ वृत्तनायकाय ॥ १९ ॥ नमः ॥ वृत्तनायकाय ॥
 पार्थिवोपायाकूनाम्पतयेनमोनमः ॥ मर्दमानायनिःश्यायिनऽ आख्यापि-
 गोनाम्पतयेनमोनमोभिष्किं ॥ वसुमार्यमानाम्पतयेनमोनमो-
 निप्रेत्संपरिवरायारण्यानाम्पतयेनमोनमोव्यक्तः ॥ २० ॥ नमोवक्त्र-
 तेपथिव्यन्तेभ्यायुनाम्पतयेनमोनमो निष्किणः ॥ इपुधितेसर्वराणा-
 म्पतयेनमोनमः ॥ शृण्विभ्योऽपि ॥ २१ ॥ मन्त्रोमुञ्चताम्पतये नमो नमो

सिमद्भयो न कृद्भरद्भयो वि कृन्तानाम्पतयेनमः ॥ २१ ॥ नमः ५ः उष्णी-
पिणे ॥ गिरिचरायंकुलज्ज्वानाम्पतयेनमो नमः ५ः मद्भयो धन्वायिष्य-
श्च योनोनमः ५ आतन्वा नेष्य ५ अतिदधानेष्श्च योनोनमः ५
आयन्द्भयो स्यद्भयश्च योनोनमो विषसृजद्भयः ॥ २२ ॥ नमो वि-
सृजद्भयो विद्भयद्भयश्च योनोनमः ५ स्वप्द्भयो जाग्रद्भयश्च योनोनमो-
नमः ५ शयानेष्य ५ आर्मानेष्यश्च योनोनमो स्तिष्ठद्भयो धारवद्भयश्च-
योनोनमः ५ समाष्य ॥ २३ ॥ नमः ५ समाष्य ५ सभापतिष्य-
श्च योनोनमो रश्च योनोनमो रश्च योनोनमो रश्च योनोनमो रश्च योनोनमो
विषतिष्ठयन्तीष्यश्च योनोनमो ५ नमः ५ उग्राण्यस्तु ५ हृतीष्यश्च यो-
नोनमो गणेष्य ५ ॥ २४ ॥ नमो गणेष्यो ॥ गणपतिष्यश्च योनोनमो-
नमो व्रातेष्यो व्रातपतिष्यश्च योनोनमो गृहसेष्यो गृहसपतिष्यश्च यो-
नोनमो विहरेष्यो विहरवरेष्यश्च योनोनमो ५ सेनाष्य ५
॥ २५ ॥ नमः ५ सेनाष्य ५ सेनानिष्यश्च योनोनमो रुचिष्यो
५ अर्येष्यश्च योनोनमः ५ सृष्ट्य ५ समहीनृष्यश्च योनोनमो
मुद्ग्यो अर्ग्येष्यश्च योनोनमः ५ ॥ २६ ॥ नमस्तर्ष्यो ॥ रथकारे-
ष्यश्च योनोनमः ५ कुलातेष्य ५ कर्मातेष्यश्च योनोनमो निपा-
तेष्य ५ पुच्छिष्ठेष्यश्च योनोनमः ५ श्रवति ष्यो गगुण्युष्यश्च यो-
नोनमः ५ श्वष्य ५ ॥ २७ ॥ नमः ५ श्वष्य ५ श्वपतिष्यश्च यो-
नोनमो भवाय च रुद्राय च नमः ५ शर्वाय च पशुपतये च नमो नो ह्यमी वाय-
पशि विष्णवे च नमः ५ कर्षिणे ॥ २८ ॥ नमः ५ कर्षिणे च व्युत्तके
शाय च नमः ५ मह्यै च यशतः पञ्चने च नमो गिरिशाय च
शिवि विष्णवे च नमो मो दुष्टमाय च पुमते च नमो ह्येभ्यः ॥ २९ ॥
नमो चैभ्यः ५ च्छामनाय च नमो ह्युते च्छर्षीयमेधं नमो च्छर्षाय च न-
मो च्छर्षाय च नमो च्छर्षाय च नमः ५ आसर्व ॥ ३० ॥ नमः ५ आसर्व ॥
चाजिराय च नमः ५ शोभ्याय च शोभ्याय च नमः ५ ऊर्माय च शोभ्या-
य च नमो नादुषाय च शोभ्याय च ॥ ३१ ॥ नमो गजेष्टाय ५ व कृत्ति-
ष्टाय च नमः ५ पृथ्व्याय च नापरग्य च नमो नद्वयमाय च नापरग्य-
य च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च नमः ५ सोम्याय ॥ ३२ ॥ नमः
सोम्याय ५ अष्टनिग्याय च नमो याम्याय च अष्टनिग्याय च नमः ५ रक्षो-

क्यायवा वसन्न्यायचनम् ऽतुर्व्यायचनल्ल्यायचनमोत्तवन्न्याय ॥ ३३ ॥
 नमोन्न्याय चकक्ष्यायचनम् ÷ श्रवायचनतिरश्वायचनमऽश्राशुपेणा-
 यचाशुरथायचनम् ऽ शूरायचावमेदिनैचनमीविल्मिने ॥ ३४ ॥
 नमोविल्मिने । धक्वंचिने चनमाय्यमिगेचव्वमयिनेचनम् ÷ श्रु-
 तायचरश्रु तसेनायचनमोदुन्दुल्ल्यायचाहतन्न्यायचनमोधृष्टावे ॥ ३५ ॥
 नमोधृष्टावे । अश्रुशायचनमोनिपुन्निगेचेपुधिमतेचनमस्तीक्ष्णेपथेचा-
 युपिनेचनम् ÷ स्वायुधार्थचमुभन्वेनेच ॥ ३६ ॥ नमः सुत्याय ।
 उपत्यायचनम् ऽ कात्यायचनीप्प्यायचनम् ऽ क्रूर्यायचसत्याय-
 चनमोनाव्याय चवैशुन्तायचनम् ऽ कृप्याय ॥ ३७ ॥ नमः ऽ
 क्रूर्याय । चावद्यायचनमोव्वीधद्व्यायचातुप्यायचनमोमेध्यायच-
 त्विद्वद्यायचनमो व्वप्यायचचानुप्यायचनमोव्यात्याय ॥ ३८ ॥
 नमोव्यात्याय । यश्चरेप्म्याचनमोव्वास्तुल्ल्यायचश्चरस्तुपायचनम् ऽ
 सोमाय चरुद्राय चनमस्ताम्नायचाहृणायचनम् ÷ शङ्खे ॥ ३९ ॥
 नमः ÷ शङ्खे । चप्युपतयेचनमऽनुप्यार्थमीमायचनमोममेवधा-
 यचकुरेवधायचनमोऽन्नेचहरीयसे च नमो वृत्तेप्म्या हरिकेशेप्म्यो
 नमस्ताय ॥ ४० ॥ नमः ÷ शङ्खवाये । चमयोभवायचनम् ÷
 शङ्खार्यचमयस्करायचनम् × शिवायनाशिवतराय च ॥ ४१ ॥
 नमः ऽ पार्थ्याय । चावाप्यायचनम् ÷ अतरण्यायचोत्तरणाय चनम-
 मीत्यायचरुल्ल्यायचनम् ÷ शप्प्याय चपेन्वायचनम् सिक्क्याय
 ॥ ४२ ॥ नमः ÷ मिद्व्याय । अग्रवाहप्याचनम् ÷ कि ६
 शिन्नायचस्युणायचनम् ÷ कपदिनेचपुस्तयेचनम् ऽ इरि ययायचपु-
 र्वायचनमोव्वग्याय ॥ ४३ ॥ नमोन्न्याय च नमोत्तव्याय
 चनमल्ल्यायचुगेद्व्यायचनमोद्वुत्थायचनिरेप्प्यायचनम् ऽ काट्या-
 यचगद्वरेष्ठायचनम् ऽ शुक्प्याय ॥ ४४ ॥ नमः ऽ शुक्प्याय ।
 अहस्त्रिप्रायचनम् ÷ पा ६ सत्र्यायचनम्यायचनमोकोत्यायचोत्त-
 ल्यायचनम् कट्यायचामृप्यायचनम् ÷ पण्णाय ॥ ४५ ॥ नमः +
 पणाय । अग्रशदायचनम् ऽ उद्वुरमाणायचाभिप्लतेचनम् ऽ
 आभिदुतनामिद्वुतेचनम् ऽ उपद्व्यायचनम् ऽ अन्नेचनमो नमोव
 ऽ मिरिहिकेप्म्यावाना ६ हनेप्म्योनमोव्विचिन्नेचरेप्म्योनमोव्विचि-

न्तुतेयन्दिष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेपाञ्जम्भेदंश्च ॥ ५ ॥ ६४ ॥ नमोस्तु-
 रुद्वेष्ट्योययेन्तरिंक्षेयाव्यात्तऽदपत्र ५ः तेव्योदशप्ताचीदंशदक्षिणा
 दशप्तीचीदंशोदीचीदंशोद्व्या ५ः ॥ तेव्योनमोऽमस्तुतेनोव्वन्तुते
 नोमृदयन्तुतेयन्दिष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेपाञ्जम्भेदंश्च ५ः ॥ ६५ ॥
 नमोस्तु । रुद्वेष्ट्योयश्चिद्व्योय्येपागन्नमिपद ५ः । तेव्योदशप्ती-
 चीदंशदक्षिणादशप्तीची दंशोदीचीदंशोद्व्या ५ः तेव्योनमोऽमस्तु
 तेनोव्वन्तुतेनोमृदयन्तुतेयन्दिष्मोयश्च नो द्वेष्टितमेपाञ्जम्भेदंश्च
 ५ः ॥ ६६ ॥ एत रुद्वेष्ट्योयश्च ५ः ॥ ६७ ॥

हरि ÷ ॐ ॥ इत्यथ ॥ मोमं कृतेनैव मनस्तनूषु विद्यते ॥ १ ॥
प्रजावन्तः ॥ मंचेमहि ॥ १ ॥ एतत्तु कद्रुभाणः ॥ सहस्वस्त्रीभि-
क्यान्तनूषु स्वस्वाहृतेनैव कद्रुभाणः ॥ आत्तुस्तेषु ॥ २ ॥ अत्र
कद्रुमेदीमहावैवर्ग्यम्बरम् ॥ यथा मोमं सत्करं दृश्यते ॥
श्रेयसकद्रुदृश्यते नोऽप्यवमाययान् ॥ ३ ॥ उपजममि मेपुज-
वैरवापुपुर्णायमेपुजम् । सुखमेपायमेत्यै ॥ ४ ॥ इत्यथ कद्रुजामहे
सुगन्धिर्वद्विद्वत्तनम् । नृत्वा कद्रुमि उच्यते नान्मृत्योर्मुक्षीयमासृतात् ॥
इत्यथ कद्रुजामहे सुगन्धिर्वद्विद्वत्तनम् ॥ नृत्वा कद्रुमि उच्यते नान्मृत्योर्मुक्षी-
यमासृतात् ॥ ५ ॥ एतत्तु । कद्रुभाणम् । तेन परे मूर्जवत्तत्तदी ॥ अर्धवत्त-
धन्वापितकद्रुः ॥ कृत्तिवासाऽअहिर् ॥ मन्त्रः ॥ शिषोर्तीहि ॥ ६ ॥
आयुष्यपुनर्मर्त्ये ॥ कृत्तुपश्य कद्रुयुषम् ॥ यद्वैवर्ग्युपयुनन्तर्नोऽश्रु-
युषम् ॥ ७ ॥ शत्रोनामीमिभ्वार्थितस्तेपितानमन्तेऽअश्नुमासीहि ॥
मी ॥ निरन्तयाभ्यानुविज्ञायाय पुनर्नगायः ॥ यत्तुपुष्यमुपजात्या-
पसुरीत्यर्थ ॥ ८ ॥ इति कद्रु पठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

हरि ॐ ॥ उग्रप्रभ ॥ भोमरश्चद्वान्तररश्चधुनिरश्मासहो
रशामियुवाचमिषुचिपुः ॥ १ ॥ अग्नि ॥ ददयेनाशानि ॥
ददणामेष्टं गुपतिं हृत्स्नददयेनमुग्रं युवना ॥ शत्र्वं मनस्नाच्यामीरा-
नमुग्न्युना महादेव संन ॥ १ ॥ अग्ने नो गमयेत्तु निष्कृतां गमिष्यन्तुः
शिङ्गीनि होरयाचमाम् ॥ २ ॥ उग्रमेतोहितेन मिष्य ॥ मोदन्त्येन
रुन्दीप्रैरेनेष्टं प्रहृष्टीहेनमरुतोयनेनमादुदययान्मुदा ॥ मुग्र-
वदथ ॥ रुद्राणां च ॥ पाग्न्यंमहादेवस्य वृष्ट्यं च ॥ अग्निपुः ॥

वशश्चमे वैशश्चा नृशश्चमेऽप्येद्वाग्निशश्चमे महावैशश्चदेवशश्चमे
मे मरुत्वतीयाशश्चमेनिष्कैवल्यशश्चमे सावित्त्रशश्चमेसा
रम्भतशश्चमेपात्कनोवनशश्च मेहारियोजुनशश्चमेयुजेनैकल्पन्ताम् ॥ २० ॥
सुचशश्च मे चमसाशश्चमे व्यायुष्यानिः चमेद्रोणकलशशश्चमे ग्वावाण-
शश्चमेधिपवंगेचमेपूतभृचवमऽआववुनोर्यशश्चमेवदिशश्चमे बर्हिशश्चमेवभूय-
शश्चमे स्वगाकारशश्च मेमज्ञेनैकल्पन्ताम् ॥ २१ ॥ [न०] ॥ अग्निशश्च ।
मेघम्भशश्चमेककशश्चमेसूयशश्चमेष्ठाणशश्च मेरश्चमेघशश्चमेप्रथिवीचमे
द्वितिशश्चमे द्वितिशश्चमेगोशश्चमेड्गुल्यऽ शक्यवरयोदिशश्चमे युज्ञे न
कल्पन्ताम् ॥ २२ ॥ उन्नतश्च । मऽश्नुत वरश्चमे तर्परश्चमे सञ्चतसुर-
शश्चमेहोरात्रेऽङ्गंष्टीवै वृद्धद्रधन्तुरेवमेयुज्ञे नैकल्पन्ताम् ॥ २३ ॥
[न०] । एकाच । मेनिस्त्रशश्चमे निस्त्रशश्चमेपञ्चवचमेसप्तवचमे
सुप्तवचमेनवचमे नवचमऽएकादशचमऽएकादशचमे त्रयोदशचमे त्रयो-
दशचमे पञ्चदशमे पञ्चदशचमेसप्तदशचमे सुप्तदशचमे
नवदशचमेनवदशचमऽएकवि ॥ शनिशश्चमेऽएकवि ॥ शतिशश्चमेत्र-
योवि ॥ शतिशश्च मेत्रयोवि ॥ शनिश्चमेपञ्चवि ॥ शतिशश्चमेपञ्च व ॥
शतिशश्चमेसुप्तवि ॥ शतिशश्चमे सुप्तवि ॥ शतिशश्चमे नववि ॥
शतिशश्चमेनववि ॥ शतिशश्चमेऽएकत्रि ॥ शचमऽएकत्रि ॥ शचमे-
त्रयवि ॥ शचमेयुज्ञे नैकल्पन्ताम् ॥ २४ ॥ [न०] ॥ चर्नस-
श्च । मेघीचमेष्टीचमे द्वादशचमे द्वादशचमेपोडशचमेपोडचमेवि ॥ श्रुति
श्चमेवि ॥ शातिश्चमेचतुर्वि ॥ शतिश्चमे चतुर्वि ॥ शति-
श्चमेष्टावि ॥ शतिश्चमेष्टावि ॥ शतिश्चमेष्टात्रि ॥ शच-
मेष्टात्रि ॥ शचमेपटत्रि ॥ शचमेपटत्रि ॥ शचमेचत्वारि ॥
शचमेचत्वारि ॥ शचमेचतुश्चत्वारि ॥ शचमेचतुश्चत्वारि ॥
शचमेष्टाचत्वारि ॥ शचमेयुज्ञे नैकल्पन्ताम् ॥ २५ ॥ [न०] ॥
य्यत्रिश्च । मेय्यवीचमेदित्युवाट्चमेदित्युहीचमेपञ्चवीचमे
चमेत्रिवृत्सरश्चमे त्रिवृत्सारचमेतुय्युवाट्चमेतुय्युहीचमेयुज्ञेनैकल्पन्ताम् ॥
२६ ॥ पुष्टवाट्च । मेपट्टीहीचमऽउदाच मेवशाचमऽअभरश्चमेव-
हश्चमेनुद्वारश्चमेपेनुशश्चमेयुज्ञेनैकल्पन्ताम् ॥ २७ ॥ [न०] व्याजाय
स्वाहा प्रसवाय स्वाहापिनायस्वाहाक त्रिस्वाहावर्मस्वाहादुपतयेस्वाहा

स्तान्ऽऊर्जेदधातन ॥ महेरषाययक्षसे ॥ १४ ॥ योर्व + शिवतमोरस-
स्तस्यमाजयतेहन ÷ ॥ छश्वीरिवमातर ÷ ॥ १५ ॥ तस्माऽधरंमाम-
योयस्यक्षयायजिन्न्येध ॥ अपोऽनयथावनऽः ॥ १६ ॥ दधौ ऽः शान्ति-
रुन्तरिक्षे ध शान्ति ÷ पृथिवीशान्तिरापऽः शान्तिरोपधयऽः शान्ति
÷ ॥ वनस्पतयऽः शान्तिर्विसर्गदेवाऽः शान्तिर्विश्वशान्तिऽः सर्वं ध
शान्ति ॥ शान्तिरेवशान्तिऽः सागशान्तिरेधि ॥ १७ ॥ हतेह ध हमा-
मित्रस्यमायक्षुपासर्वाणिभूतानिखमीकृन्ताम् ॥ मित्रस्याहवक्षुपा
सर्वाणि भूतानिहरीते ॥ मित्रम्यचक्षुपा समीक्षामहे ॥ १८ ॥ हतेह ध
हमा । ज्योतिर्गन्तृशिञ्जोऽश्वसुञ्जोऽः छेसुन्दृशिञ्जोऽः ॥ १९ ॥
नर्मस्तोहरंशोधिपेनमस्तेऽस्तुर्विष ॥ अन्योर्स्तेऽस्तुस्मत्तपतन्तुहेतयः
पात्रकोऽस्तुस्मत्तयऽ शिवोर्भयऽ ॥ २० ॥ नर्मस्ते अस्तुर्विषतेनर्मस्तेस्तन-
विलये ॥ नर्मस्तेमगवन्तुयऽः स्य ÷ सुमीहसे ॥ २१ ॥ यतोयवऽः
सुमीहसेततोऽस्तुर्मयङ्कु ॥ शम्भु + कुरुष्वजाम्योर्भयन्तऽः पशुर्भय
÷ ॥ २२ ॥ सुमित्रियान्ऽधायऽधोर्भयऽः सन्तुदुन्निद्रियास्तस्मै
सन्तुयोऽस्मान्दद्वेष्टितयऽः कर्चव्यन्दिष्टिधम् ॥ २३ ॥ तर्ध्वरेवहि-
तम्पुरस्ताच्छुक्कगुर्धरत् ॥ परयेर्मशार्ध ÷ शत्रुञ्जीवेनशारद ÷ शत्रु ध
अणुयामशारद ÷ शत्रुर्मन्त्रशामशारद ÷ शत्रुमदीनाऽः स्वामशारद ÷ श-
तन्मयस्वशारद ÷ शतात् ॥ २४ ॥ इति रुद्रे शान्त्यध्यायः ॥ ६ ॥

अथ रुद्रे स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राऽध्यायः

हरि ÷ ओं स्वस्तिनऽह द्रोष्टृद्वर्धवाऽः स्वस्तिनं ÷ पूषादि-
श्रववेदाऽः ॥ स्वस्तिनस्तान्योऽधरिष्टनेमिऽः स्वस्तिनो
बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ओं पर्य ÷ पृथिव्याम्यव-
ऽधोर्भयोपयोर्दु ध्यन्तरिक्षेपयोऽः ॥ पर्यवही त्प्रदि-
शः सन्तुमर्षयम् ॥ २ ॥ ओं त्रिपञ्चोराटमसिध्विपञ्चोऽः
मन्त्रोऽयोर्विष्णोऽः स्युसि त्रिपञ्चोर्दुष्टोसि ॥ त्रिपञ्चम-
सिध्विपञ्चोऽस्त्वा ॥ ३ ॥ ओं अग्निर्देवताव्यतोदेवतापृथ्वी देवता
चन्द्रमादेवताव्यमोदेवतारुद्रादेवता दित्या देवतामरुतोदेवताविररये-

देवादेवताहस्त्वविह्वलेन्द्रोदेवताच्चरणादेवता ॥ ४ ॥ ॐ सुषोजाव-
प्रपद्यामिसुषोजातायवैनमोनम ॥ ५ ॥ भवेमवेनातिमवेमवस्वभामवोद्भवा-
यनम ॥ ६ ॥ वामदेवायनमोऽग्निदेवायनम ॥ ७ ॥ श्रेष्ठायनमोऽग्निदेवायनम
५ः कृतायनम ५ः कृतविरग्यायनमोऽग्निदेवायनमोऽग्निदेवायनमोऽग्नि-
प्रमथनायनम ५ः सर्वभूतमनायनमोऽग्निदेवायनम ५ः ॥ ८ ॥
अधोरेण्योऽग्निदेवायनमोऽग्निदेवायनम ५ः ॥ सर्वभूत ५ः सर्वभूतमनायनम-
स्तेऽग्निदेवायनम ५ः ॥ ९ ॥ सत्पुरुषायविद्महेऽग्निदेवायनम ५ः ॥
तन्नोऽग्निः प्रचोदयात् ॥ १० ॥ इति ५ः ॥ सर्वभूतमनायनम ५ः सर्व-
भूतनाय ॥ ११ ॥ अग्निदेवायनमोऽग्निदेवायनम ५ः ॥ सर्वभूतमनायनम ५ः
॥ १२ ॥ ॐ शिवोऽग्निदेवायनमोऽग्निदेवायनम ५ः ॥ सर्वभूतमनायनम ५ः
सी ५ः ॥ निर्वसंभ्यायुयेन्नाद्यायप्रजननायरायस्योपायसुप्रजास्त्वाय-
सुवीर्याय ॥ १३ ॥ ॐ विश्वानिदेवसवितरुद्रुतितानि परासुव ॥
यद्भद्रन्तन्ऽग्निदेवायनम ५ः ॥ १४ ॥ ॐ श्री ५ः शान्तिरन्तरिक्षे ५
शान्ति ५ः पृथिवीशान्तिराय ५ः शान्तिरपोषय ५ः शान्ति ५ः ॥ चतु-
ष्टय ५ः शान्तिर्विराट् ५ः शान्तिर्व्योम ५ः शान्तिर्व्योम ५ः शान्तिर्व्योम ५ः
५ः शान्तिर्व्योम ५ः शान्तिर्व्योम ५ः शान्तिर्व्योम ५ः शान्तिर्व्योम ५ः
येवमेव ५ः ॥ १५ ॥ इति शान्तिप्रार्थनामन्त्राऽध्यायः ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः सुरान्तिर्व्योम ५ः ॥ सर्वान्तिर्व्योम ५ः ॥
अनेन कृतेन कृतामिषेककर्मणा श्रीमशनीशद्वर- महाकृदः प्रीयताम मम ॥
ॐ सदाजिवाप्यमस्तु ॥ इति ॥

अथ श्रीशिवसहस्रनाम ऋारम्भते ।

ध्याम यथाय ॥ एकदा मुनयः सर्वे दारिकं द्रष्टुमागताः ॥
वासुरेवं च मोहंटाः कृष्णदर्शनसालसाः ॥ १ ॥ तदातु मगधान्
प्रीतः पूजं चक्रे यथाशिव ॥ तेषामाशीगतो गृध्र चद्रुमानपुतःसरम् ॥ २ ॥
तेः पृष्टः कथयामास कुमारप्रभृत् च यत् ॥ चरितं भूमिसारप्त्तं लोकानन्द-
करं यत् ॥ ३ ॥ माहं वदेयमुग्गाः सर्वे माध्याह्निकेऽप्योत्थिताः ॥
कृष्णः रत्नानमयो चक्रे मुदाचत कुम्भादिभि ॥ ४ ॥ सुखोऽयानमन्त्या

च स्मृतिधर्ममनुस्मरन् । शिवपूजां ततः कृष्णो गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ॥
 ५ ॥ चकार विधिवद्भक्त्या नमस्कारयुतां शुभाम् ॥ जय शङ्कर सोमेश
 रत्न रत्नेति ध्यात्रवीत् ॥ ६ ॥ जजाप शिवसादृशं मुक्तिमुक्तिप्रदं विभो ।
 अनन्यमानसः शान्तः पद्मासनपरः शुचिः ॥ ७ ॥ ततस्ते विस्मयापन्ना
 दृष्ट्वा कृष्णविचेष्टितम् ॥ मार्कण्डेयोऽवदत्कृष्णं बहुशो मुनिपुङ्गवः ॥ ८ ॥
 मार्कण्डेय उवाच ॥ त्वं विष्णुः कमलाकान्तः परमात्मा जगद्गुरुः ॥
 तव पूज्यः कथं शम्भुरेतत्सर्वं वदस्व मे ॥ ९ ॥ व्यास उवाच ॥ अथ
 ते मुनयः सर्वे मार्कण्डेयं समर्पयन् ॥ वचोभिर्वासुदेवस्य वृष्टं साधु
 त्वयेति च ॥ १० ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ साधु साधु मुने वृष्टं हिताय
 सकलस्य च ॥ अज्ञातं तव नास्त्येव तथापि च वदाम्यहम् ॥ ११ ॥
 दैवतं सर्वदेवानां सर्वकारणकारणम् ज्योतिर्यत्परमानन्दं सावधानमतिः
 शृणु ॥ १२ ॥ विश्वसाधनमीशानं गुणातीतमजं परम् ॥ जगतस्तत्स्थुपो
 ह्यात्मा मम मूलं महामुने ॥ १३ ॥ यो देवः सर्वदेवानां ध्येयः पूज्यः
 सदाशिवः ॥ स शिवः स महादेवः शङ्करश्च निरञ्जनः ॥ १४ ॥ तस्मा-
 द्भान्यपरो वेदस्त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ सर्वज्ञः सर्वगः शम्भुः सर्वात्मा
 सर्वतोमुखः ॥ १५ ॥ पठयते सर्वं वेदान्ते मिद्धान्ते यो मुनींश्चरैः ॥
 तस्मिन्भक्तिर्महादेवे मम धातुश्च निर्मला ॥ १६ ॥ महेशः परमं ब्रह्म
 शान्तः सूक्ष्मः परात्परः ॥ सर्वान्तरः सर्वसाक्षी चिन्मयस्तमसः परः ॥
 १७ ॥ निर्विघ्नो निराभासो निःसङ्गो निरुपद्रवः ॥ निर्लेपः पुरुषाध्यक्षो
 महापुरुष ईश्वरः ॥ १८ ॥ तस्य चेच्छाभवत्पूर्वं जगत्स्थित्यन्तकारिणी ॥
 वामाङ्गादभवत्तस्य सोऽयं विष्णुरिति स्मृतः ॥ १९ ॥ जनयामास
 धातारं दक्षिणाङ्गात्सदाशिवः ॥ मध्यतो रुद्रमीशानं कालात्मा परमेश्वरः ॥
 २० ॥ तपस्तपन्तु भो यत्सा अग्रवीदिति वाञ्छवः ॥ ततस्ते
 शिवमात्मानं प्रोचुः संयतमानसाः ॥ २१ ॥ श्रुत्वा तु विविधैः स्तोत्रैः
 प्रणम्य च पुनः पुनः ॥ अष्टविष्णुमहेश्वरा ऋचुः ॥ तपः केन प्रकारेण
 कर्त्तव्यं परमेश्वर ॥ २२ ॥ ब्रूहि सर्वमरेणेण स्वात्मानं येति मापरः ॥
 शिव उवाच ॥ कायेन मनसा वाचा ध्यान-पूजाजपादिभिः ॥ २३ ॥
 कामक्रोधादिरहितं तपः कुर्वन्तु भो सुराः ॥ देवा ऋचुः ॥ स्वया
 यत्कथितं शम्भो दुर्ज्ञेयमजितात्मभिः ॥ २४ ॥ सौम्योपावमतो ब्रह्मन्
 यद् कारुण्यवारिधे ॥ शिव उवाच ॥ सहस्रनाममद्विष्टां जपन्तु
 मममुग्रताः ॥ २५ ॥ यथा मंसारमन्त्रानां मुक्तिर्भवति शारवती ॥
 शृण्वन्तु तद्विधानं हि महापावकनाशनम् ॥ २६ ॥ पठतां शृण्वता मनो
 मुक्तिः स्यादनपायिनी ॥ ब्रह्मचारी कृष्णानः शुक्लवासा जितेन्द्रिय
 ॥ २७ ॥ मन्त्रवादी मुनिर्वादी पद्मामनममन्वितः ॥ ध्यात्वा मा कृष्ण-

घोश निराकार मुनीवरम् ॥ २८ ॥ पावतीसहित शर्प जटामुकटमण्डितम् ॥
 तन् ॥ चमान चम्प वैयात्र चन्द्रार्द्धकृतशेखरम् ॥ २९ ॥ यन्मृक द्वि
 वृषान्ते कृत्तिराससमुज्ज्वलम् ॥ सुरचितपदद्वन्द्व दिव्यभोग सुसुन्दरम्
 ॥ ३० ॥ मिथ्याय सुप्रसन्न च कृठार च वरामयम् ॥ दुर्द्धर्ष कनलासीन
 नागपद्मापरातिनम् ॥ ३१ ॥ विरवकाय चिदानन्द शुद्धमनुरमव्ययम् ।
 सदस्रगिरस शम्भुननन्तरसयुतम् ॥ ३२ ॥ सहस्रचरण दिव्य साम
 सूर्याग्निलोचनम् ॥ च शोनिमञ्ज ब्रह्म शिखामाद्य सनातनम् ॥ ३३ ॥
 नृद्वारकात्त दुष्प्रेक्ष्य नृकाटिममप्रमम् ॥ निशाकरकलानाग्नौ मेघच
 मयरागिणाम् ॥ ३४ ॥ विनाकम् विनालाक्ष पशुना पतिमीश्वरम् ॥
 कालात्मान कालकाल नृबदेव महेश्वरम् ॥ ३५ ॥ ज्ञानवैराग्यसम्पन्न
 योगानन्दमय परम् ॥ शारनरैश्वर्यसम्पन्न महायोगीश्वरेश्वरम् ॥ ३६ ॥
 समस्तशक्तिसयुक्त पुण्यनाथ दुरामदम् ॥ तारक ब्रह्म सम्पूर्णमणीयास
 महत्तमम् ॥ ३७ ॥ यतीना परमै ब्रह्म यताना तपस फलम् ॥ सयमिह
 स्समासीन तपस्विपनमम्पम् ॥ ३८ ॥ विनीन्द्रविष्णुनमिह मुनिसिद्ध
 निपेयितम् ॥ महात्मा महाज्ञान नृवानामपि नृवतम् ॥ ३९ ॥ अथ शिव
 कवचप्रारम्भ ॥ शान्त पवित्रमोक्षार ज्योतिषा ज्योतिरुत्तमम् । शङ्करा
 मे शिर पातु ललाट भालोचन ॥ ४० ॥ विरवचक्षुः शी पातु रट्टा
 मम भुजावपि ॥ गरुडी पातु महगान श्रुतौ रघुपु पूर्व ॥ ४१ ॥ कपाली
 मे महात्मा पातु नामा महाशिव ॥ सुग पातु हनिमोक्षा घोष्ठी पातु
 महेश्वर ॥ ४२ ॥ इन्दुान् रघुपु नृवन्तस्तालु सोमकलाय ॥ रसना
 परमानन्द पातु गन्धो शिवाग्रि ॥ ४३ ॥ चिबुक पातु मे शम्भु रम
 धून् शत्रुविनाशक । कूर्च पातु मम कण्ठ नीलकण्ठोऽस्तु भ्रुवम्
 ॥ ४४ ॥ स्कन्धौ स्कन्धपतिवाहु बहुहस्तधर महा ॥ उरवाहु महानाथ्यं
 करो विबुधसत्ताम ॥ ४५ ॥ अङ्गुली पातु पञ्चास्य पद्माणि च सहस्र
 पातु ॥ हृदय पातु सर्वात्मा स्तनौ पातु पितामह ॥ ४६ ॥ नृद्वर कृतनुक्पातु
 मध्य मे मध्यमेश्वर ॥ कुक्षी पातु भवानीशा वृष्ट पातु कुलेश्वर ॥ ४७ ॥
 प्राणान्मे प्राणद गतु नामि भाम कटि बिभु ॥ सक्थिनी पातु मे मगा
 जानुनी जनकाधिप ॥ ४८ ॥ जङ्घे पुररिपु पातु चरणी भवनाशनः ॥
 शाल पातु मे शर्वा बाह्यनाम्यन्तर शिव ॥ ४९ ॥ इन्द्रियाणि हर
 पातु सयत्र चयवर्द्धन ॥ पूर्वे पातु मूढ पातु दक्षिणे यममूर्धन ॥ ५० ॥
 वारुण्या मज्जिनायोरा दीर्घ्या मे महाश्वर ॥ ईशान्या पातु भूतेश
 ग्रामण्या शक्तिजन ॥ ५१ ॥ निष्ठत्या नृनृपातु वायव्या वलयवर्द्धन ॥
 ऊर्ध्व पातु मयद्वपा अथ संसारनाशन ॥ ५२ ॥ सर्वत्र मुखद पातु मुदि
 पातु म गोचन । एव न्यायदिक क्षरा माकाव्यम्पुण्या भवन ॥ ५३ ॥

नमो हिरण्यवाहवे इति पठेन्मन्त्रं तु भक्तितः ॥ नमो हिरण्यवर्णाय
 हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतये पशुपतये नमो नमः ॥ ५४ ॥
 मद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवे भवे नातिभये
 भवस्वमां भयोद्धवाय नमः ॥ ५५ ॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः
 श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरण्याय नमो बलविक-
 रण्याय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो
 मनोन्मनाय नमः ॥ ५६ ॥ अघोरेभ्योऽय घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥
 सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्य ॥ ५७ ॥ ॐ तत्पुरुषाय
 विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ५८ ॥ ईशानः
 सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
 मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ ५९ ॥ सद्यो जातादिभिर्मन्त्रैर्नमस्कुर्यात्सदा-
 शिवम् ॥ ततः सहस्रनामेदं पठितव्यं मुमुक्षुभिः । ६० ॥ सर्वकार्य-
 करं पुण्यं महापातकनाशनम् ॥ सर्वगुह्यतमं दिव्यं सर्वलोकोक्तिप्र-
 दम् ॥ ६१ ॥ मन्त्राणां परमं मन्त्रं भवदुःखपह्निमिदम् ॥ अथाङ्ग-
 न्यासः ॥ ॐ नमः शिवायेति षडङ्गन्यासः । ॐ नमः शम्भवाय च
 ह्रस्वाय नमः ॥ ॐ नमो भवाय च शिरसे स्वाहा ॥ ॐ नमः
 शङ्कराय च गिर्याये वषट् ॥ ॐ नमो मयस्कराय च कवचाय हुम् ॥
 ॐ नमः शिवाय च नेत्रत्रयाय वीषट् ॥ ॐ नमः शिवाय शिवत-
 राय च अस्त्राय फट् ॥ नमोऽस्तु स्थाणुरूपाय ज्योतिर्लिङ्गामृतात्मने ॥
 चतुर्भुविषु स्वाय भूषिताङ्गाय शम्भवे ॥ ॐ अस्य श्रीवेदसाराख्य-
 परमदिव्यशिवसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य नागायण श्रुतिगुण्डुच्छन्दः ॥
 सदाशिवो देवता ॥ ॐ नमः इति योजम् ॥ शिवायेति शक्तिः ॥
 चैतन्यमिति कीलकम् ॥ सदाशिवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथध्या-
 नम् ॥ ॐ कोटिसूर्यप्रतीकाश त्रिनेत्र चन्द्रशेखरम् ॥ शूलदङ्कगदाचक्र-
 कुन्तपाशधरं विभुम् ॥ ॐ नमः पराय देवाय शङ्कराय महात्मने ॥
 कामिने नीलपट्टाय निर्मलाय वषट्तिने ॥ १ ॥ निर्विकल्पाय शान्ताय
 निरहङ्कारिणे नमः ॥ अनर्थाय विशालाय शूलहस्ताय ते नमः ॥ २ ॥
 निर्वज्रनाय शर्पाय निःशङ्काय परात्मने ॥ नमः शिवाय मर्गाय
 गुणाढीताय वैद्यमे ॥ ३ ॥ महादेवाय पीताय पार्वतीपतये नमः ॥
 केशव्याय मदेशाय विदुद्धाय युवात्मने ॥ ४ ॥ वैद्यनाय सुपेराय
 निरुद्धाय स्वरूपिणे ॥ नमः सोमाय भूषाय पान्नायामितेजसे । ५ ॥
 अन्नराय जगत्त्रिणे जनराय विनाग्निने ॥ निराधाराय सिंहाय नाया-
 तोनाय ते नमः ॥ ६ ॥ वीजाय सर्वभूताय पशूनां पश्ये नमः ॥
 पुरन्दराय भवाय पुरुषाय महीयमे ॥ ७ ॥ महाद्यन्तोषरूपाय ज्ञानिने

शुद्धबुद्धये ॥ बुद्धाय बहुरूपाय ताराय परमात्मने ॥ ८ ॥ पूर्वाणाय
 मुग्धेशाय ब्रह्मणेऽनन्तमूर्तये ॥ निरक्षराय मूढमाय कैलासपतये
 नमः ॥ ९ ॥ निरामयाय कान्त्याय निराकाराय ते नमः ॥
 मलिलात्मस्वरूपाय सोऽहं वत्त्वाय ते नमः ॥ १० ॥ नि-
 लम्बाय नित्याय नित्याया पतये नमः ॥ आत्मागमाय
 ऋच्याय पूज्याय परमेष्ठिने ॥ ११ ॥ विवर्तनाय भीमाय
 शम्भवे विश्वरूपिणे ॥ ईसाय हसनाथाय प्रसिद्धाय नमो नमः
 ॥ १२ ॥ परात्पराय रुद्राय भवायालङ्घ्यशक्तये ॥ इन्द्रहन्त्रे
 निधीशाय कालहन्त्रे मनस्विने ॥ १३ ॥ विश्वमात्रे जगद्धात्रे जग-
 न्मो नमः ॥ जटिलाय विरोगाय पवित्राय मृडाय च ॥ १४ ॥ निरयथाय
 धीराय निरावृद्धाय ते नमः ॥ नादाय रविनेत्राय व्योमकेशाय ते नमः ॥
 चतुर्भोगाय साराय योमिनेऽनन्तमायिने ॥ १५ ॥ धर्मिष्ठाय वरिष्ठाय
 पुरज्यविधातिने ॥ गिरिष्ठाय गिरीशाय वरदाय नमो नमः ॥ १६ ॥
 व्याघ्रचर्मन्मरायाय दिशान्मराय ते नमः ॥ परमार्थाय मानाय प्रमथाय
 स्वचक्षुषे ॥ १७ ॥ आघाय शूलहस्ताय शक्तिकण्ठाय तेजसे ॥ उमाय
 यामवेशाय श्रीकण्ठाय च ते नमः ॥ १८ ॥ विश्वेश्वराय सूर्याय गीरीशाय
 पाय च ॥ मृत्युञ्जयाय वीराय वीरभद्राय ते नमः ॥ १९ ॥ विरुपाक्षाय
 त्रिभये बहिर्भनेत्राय ते नमः ॥ जालन्धरशिरच्छेद्ये हविषे दितकारिणे
 ॥ २० ॥ महाकालाय वैद्याय दुस्तूणेराय ते नमः ॥ नमः ॐ काररूपाय
 मोहनाथाय ते नमः ॥ २१ ॥ रामेश्वराय शुचये भीमेशाय नमो नमः ॥
 न्यम्बराय निधीहाय केशराय नमो नमः ॥ २२ ॥ गङ्गाधराय वयसे
 नागनाथाय ते नमः ॥ भीमप्रियाय महसे रश्मीशाय नमो नमः ॥ २३ ॥
 पूर्णाय भूतशयसे सर्वहाय दयालवे ॥ धर्माय धनदेशाय जगन्मन्त्रिणाय
 च ॥ २४ ॥ भालनेत्राय यक्षाय श्रीशैलपतये नमः ॥ कुरानुरेतसे
 नीलकाहिताय नमो नमः ॥ २५ ॥ अम्बकामुखहन्त्रे वा वाचनाय वज्राय
 च ॥ चैतन्याय त्रिनेत्राय दक्षनाशक्याय च ॥ २६ ॥ नमः सहस्रशिरसे
 जयन्त्याय ते नमः ॥ सहस्रचरणाय च योगिहृत्कृष्णपासिने ॥ २७ ॥
 मद्योजानाय यन्त्राय सर्वत्रेयमाय च ॥ आमोनाय प्रगल्भाय गायत्री
 जन्माय च ॥ २८ ॥ व्योमाकाराय विभ्राय नमो विप्रप्रियाय च ॥
 यपोराय मुग्धेशाय स्वस्वरूपाय ते नमः ॥ २९ ॥ विद्वत्तमाय यमाय
 त्रिषण्णसाय नन्दिने ॥ अथर्मशत्रवे ताण्डुलभीमवन्ताय च ॥ ३० ॥
 यथाशत्रवे गुह्ये जगन्नाथाय ते नमः ॥ नमो मन्त्रिच्छेत्रे पञ्चशक्याय
 यक्षिने ॥ ३१ ॥ हरिहरेणाय विमये पञ्चाग्रजं यक्षिणे ॥ नमः
 पञ्चाङ्गाय गोवर्द्धनमाय च ॥ ३२ ॥ प्रभये जनकीनाय कालभू-

विपादिने ॥ सिद्धेश्वराय सिद्धाय सहस्रवदनाय च ॥ ३३ ॥ नमः
 सहस्रहस्ताय सहस्रनयनाय च ॥ सहस्रमूर्तये तुभ्यं विष्णवे जितशत्रवे
 ॥ ३४ ॥ काशीनाथाय गोत्रे ते नमस्ते विश्वासाक्षिणे ॥ हेतवे सर्व-
 धीजानां पालकाय नमो नमः ॥ ३५ ॥ जगत्संहारकाराय त्रिधावस्थाय
 ते नमः ॥ एकादशस्वरूपाय नमस्ते बहुमूर्तये ॥ ३६ ॥ नरसिंहमहादर्प-
 घातिने शरमाय च ॥ भस्माभ्यक्ताय तीर्थाय जाह्नवजीजन काय च ॥ ३७ ॥
 देवदानवदैत्यानां गुह्ये ते नमो नमः ॥ दलितोब्जमभासाय नमो वायु-
 स्वरूपिणे ॥ ३८ ॥ नमः स्वच्छस्वरूपाय प्रसिद्धाय नमो नमः ॥ वृषभ-
 जाय गोष्ठ्याय जगद्यन्त्रप्रयतिने ॥ ३९ ॥ अनाथाय प्रज्ञेशाय विष्णुशर्व-
 हराय च ॥ हरिविधातृकलहनाशकाय नमो नमः ॥ ४० ॥ गदाहस्ताय
 षट्ये गगनाय नमो नमः ॥ कैयव्यक्लदात्रे ते परमाय नमो नमः ॥ ४१ ॥
 ज्ञानगम्याय ज्ञानाय घण्टारवप्रियाय च । पद्मासनाय पुष्टाय निर्वाणाय
 नमो नमः ॥ ४२ ॥ अयोनये सदेहाय ह्युत्तमाय नमो नमः ॥ अन्तर्का-
 लाधिपतये विशालाक्षार ते नमः ॥ ४३ ॥ कुंजरबन्धये तुभ्यं सोमाय
 सुरिने नमः अमृतेशाय सौम्याय स्नेहराय च घन्त्रिने ॥ ४४ ॥ प्रियं-
 यदाय दक्षाय वन्दिने विमलाय च ॥ गिरीशाय गिरिशाय गिरिशान्ताय
 ते नमः ॥ ४५ ॥ पारिजाताय वृहते पद्मपयसाय ते नमः ॥ वरुणाय
 विशिष्टाय बाह्यरूपधराय च ॥ ४६ ॥ जीवितेशाय पुष्टाय पुष्टानां पतये
 नमः ॥ भयहेत्ये हिंसाय कनिष्ठाय नमो नमः ॥ ४७ ॥ मध्यमाय विधात्रे
 च शुभाय सुभगाय च ॥ आदित्यतापनाथाय पुण्यश्लोक्याय ते नमः ॥ ४८ ॥
 महाद्विषाय दृष्ट्याय वामनाय नमो नमः ॥ नमस्तत्पुरुषापाय पतुर्दम्भाय
 मायिने ॥ ४९ ॥ नमो धूर्जटये तुभ्यं जगदीशाय ते नमः ॥ जगन्नाथाय
 महिमे लीलाविप्रधारिणे ॥ ५० ॥ अभयाय नमस्तुभ्यममराय नमो नमः ॥
 अताप्राय नमस्तुभ्यमक्षयाय नमो नमः ॥ ५१ ॥ शोकाप्यक्ष नमस्तुभ्यम-
 नादिनिधनाय च ॥ व्यक्तोत्तराय व्यक्तय नमस्ते परमाणवे ॥ ५२ ॥ लघये
 स्मृलरूपाय नमः परगुणारिणे ॥ नमः गड्ढाङ्गदस्ताय नागहरत्राय ते
 नमः ॥ ५३ ॥ परदामयस्ताय घण्टाहस्ताय ते नमः ॥ पद्मराय नमस्तुभ्यम-
 जिताय नमो नमः ॥ ५४ ॥ अग्निमादिगुणेशाय पद्ममहामयाय च ।
 पुत्रान्ताय गुह्याय वक्त्रमयनाय च ॥ ५५ ॥ पुण्योदकाय पद्माय विमुक्ताय
 नमो नमः ॥ उदाराय विवित्राय विवित्रगतये नमः ॥ ५६ ॥ वासिगुह्याय
 गिरिपे निगुह्याय नमो नमः ॥ परमेशाय शेषाय नमः परशराय च ॥ ५७ ॥
 मोहनाय गुरोभाय कर्षोदनाय च ॥ महापराजमादाय नमस्ते वाक्-
 रूपाय ॥ ५८ ॥ विष्णवे शोभ्यमानाय ते नमः । मन्त्राय वक्त्रपूषाय
 वरुणाय नमः च ॥ ५९ ॥ अनपाय वरुणाय वक्त्रपूषाय ते नमः ॥

परमज्योतिषे पद्मगर्भाय सलिलाय च ॥६०॥ तत्त्वाधिकाय तत्त्वाय नमो
 दीर्घाय रत्निले ॥ नमस्ते पाण्डुरङ्गाय गौराय ब्रह्मचारिले ॥६१॥ अण्वे
 निष्कलायाय सामगानप्रियाय च ॥ नमोऽक्षपाय क्षेत्राय नमस्ते पुण्य
 मूर्तये ॥६२॥ कलाधराय पूज्याय पञ्चाभूतात्मने नमः ॥ निर्वाणाय च
 तथ्याय पापनाशकराय च ॥६३॥ विश्वतश्चक्षुषे कालयोगिनेऽनन्त
 रूपिले ॥ सिद्धसाधकरूपाय नमो भेदनिरूपिले ॥६४॥ अगण्याय प्रता
 पाय सुधाहस्ताय ते नमः ॥ श्रीवत्सलाय निर्वये स्थाणुने मधुराय च ॥६५॥
 उपाधिरहिताय नमः सुहृतराशये ॥ नमो मुनीश्वरायाय शिवानन्दाय
 ते नमः ॥६६॥ रिपुघ्नाय नमस्तेजोराशयेऽनुत्तमाय च ॥ चतुर्मूर्तिनप-
 र्थाय नमो बुद्धीन्द्रियात्मने ॥६७॥ उपद्रवहरायाय प्रियसदृशनाय च ॥
 भूतनाथाय भूताय वीतरागाय ते नमः ॥६८॥ नैऋत्याय निरूपाय षड-
 ऋचाय विशुद्धये ॥ कुलशाय भूतभूते सुजनेराय ते नमः ॥६९॥ हिरण्य
 वाहये जीववरदाय नमोनमः । आदिदेवाय भर्गाय चन्द्रसजीवनाय च ॥७०॥
 हराय बहुरूपाय प्रसन्नाय नमो नमः ॥ आनन्दभारतायाय कूटस्थाय नमो
 नमः ॥७१॥ नमो मोक्षफलायाय शाश्वताय विरोगिले ॥ यक्षमोक्षे सुपे-
 णाय वक्ष्यज्ञविधातिने ॥७२॥ नमः सर्वात्मने तुभ्य विश्वपालाय ते
 नमः । निरवगर्भाय गर्भाय वेदगर्भाय ते नमः ॥७३॥ ससारार्थेन मग्नानां
 दुःखससारहेतवे ॥ मुनिप्रियाय जीवाय मूलप्रकृतये नमः ॥७४॥ समस्त
 बन्धने तेजोमूर्तये ते नमः नमः ॥ आभ्रमस्थापकायाय वणिने सुन्दराय
 च ॥७५॥ मृगयार्णवायाय शारदायललाय च ॥ त्रिचित्रमायिने
 तुल्यमलङ्कारिण्ये नमः ॥७६॥ बहिर्मुखमहार्द्रमयनाय नमो नमः ॥
 नमोऽष्टमूर्तये तुभ्य निष्कलङ्काय ते नमः ॥७७॥ नमो इक्ष्वाय भोज्याय
 यन्नाथाय ते नमः ॥ नमः ॥ नमो मध्याय मुख्याय घृतिष्ठाय नमो नमः
 ॥७८॥ अम्बिकापतये तुभ्य महादन्ताय ते नमः ॥ सत्यप्रियाय मत्स्याय
 प्रियनृदाय ते नमः ॥७९॥ नित्यतृप्ताय वेदिने मृगहस्ताय ते नमः ॥
 अद्भुतदीश्वरायाय कुठारयुतपाण्ये ॥८०॥ वरामयप्रदात्रे ते बहुरूपाय
 ते नमः ॥ मर्त्याय मुमत्तराय कीर्तिस्तम्भाय ते नमः ॥८१॥ नमः
 कृतगमायाय यदन्तर्पट्टिनाय च ॥ अत्राताय श्रुतिमते बहुश्रुतिराय च
 अत्राणाय नमस्तुभ्य गन्धाक्षप्रहकारिले । पान्दीनाय षोढाय संप्रगताय
 नमः ॥८३॥ अक्षाय जननपाय नमस्तुभ्य चिदात्मने ॥ रम्याय
 नमस्तुभ्य रमनारहिताय च ॥८४॥ अमूर्त्याय मृताय मदसम्पत्तये
 नमः ॥ त्रिभिन्नाय तटस्थाय परज्योति म्बरूपिले ॥८५॥ नमस्ते
 मयंगाय नमोऽद्वयं द्यामय ॥ मर्गस्थितिविनाशानां फलं ते प्रेरणाय
 च ॥८६॥ नमोऽन्तर्यामिने मयं ददित्याय नमो नमः ॥ चन्द्रमण्डल्ये ते

पुराणाय नमो नमः ॥ ८७ ॥ वामदक्षिणपार्श्वाय लोकेश हरिशालिने ॥
 नमः सकलकल्याणदायिने प्रसवाय च ॥ ८८ ॥ स्वभावो मारुतीराय
 सूत्रकाराय ते नमः ॥ विषयार्णवमग्नानां समुद्धरणसेतवे ॥ ८९ ॥ अस्ने-
 हस्नेहरूपाय वार्ताविक्रान्तवर्तिने ॥ यत्र सर्वयतः सर्वं सर्वं यत्र नमो नमः
 ॥ ९० ॥ नमो महार्णवाय मास्कराय नमो नमः ॥ भक्तिगम्याय
 भक्तानां सुलभाय नमो नमः ॥ ९१ ॥ दुष्प्रवर्षाय दुष्टानां विक्षेपाय
 विवेकिनाम् ॥ अलौकिकाय लोकाय ह्यलोकाय नमो नमः ॥ ९२ ॥
 पूरयित्रे विशेषाय कुशलाय शुभाय च ॥ नमः कर्पूरगौराय सर्पहाराय ते
 नमः ॥ ९३ ॥ नमः संसारपाराय कमनीयाय ते नमः ॥ वह्निदर्पविघाताय
 वायुदर्पविघातिने ॥ ९४ ॥ जरातिगाय धीर्याय वेद्याय व्यापिने नमः ॥
 सूर्यकोटिप्रकाशाय निष्क्रियाय नमो नमः ॥ ९५ ॥ चन्द्रकोटिसुशीलाय
 कपिलाय नमो नमः ॥ नमो गूढस्वरूपाय निश्चलाय पराय च ॥ ९६ ॥
 नमः सत्यप्रतिज्ञाय नमस्ते सुसमाधये ॥ एकरूपाय भून्याय विश्वनाभि-
 हृदाय च ॥ ९७ ॥ पर्वोत्तमाय लोकाय प्राणाय सुहृदे नमः ॥ नमः
 परायणायाय चिन्मात्राय नमो नमः ॥ ९८ ॥ ध्यानगम्याय ध्येयाय
 ध्यानरूपाय ते नमः ॥ नमस्ते शारवतैश्वर्यविभवाय नमो नमः ॥ ९९ ॥
 नमः प्राणेश्वराय सर्वशक्तिधराय च ॥ धर्माधाराय धन्याय पुष्कलाय
 नमो नमः ॥ १०० ॥ प्रतिष्ठाये धर्मगोप्त्रे निवनायाप्रजाय च ॥ योगेश्वराय
 योगाय योगगम्याय ते नमः ॥ १ ॥ महेंद्रोपेन्द्रचन्द्रार्कनमिताय
 नमो नमः ॥ महर्षिर्वन्दितायाय प्रकाशाय सुधर्मिणे ॥ २ ॥ नमो हिरण्य-
 गर्भाय नमो हिरण्यमाय च ॥ जगद्धीजाय हाराय सेव्याय क्रतवे नमः
 ॥ ३ ॥ आधिपत्याय कामाय स्वराय यशसे नमः ॥ नमः प्रचेतसे ब्रह्मम-
 थाय सकलाय च ॥ ४ ॥ नमस्ते रुक्मवर्णाय नमस्ते ब्रह्मणेनये ॥ योगा-
 त्मनेऽचिन्तिनाय दिव्यनृत्याय ते नमः ॥ ५ ॥ जगतामेकनाथाय माया-
 धीजाय ते नमः ॥ सर्वहृत्तन्त्रिष्टाय ब्रह्मनरुभ्रमाय च ॥ ६ ॥ ब्रह्मा-
 नन्दाय भवते ब्रह्मण्याय नमो नमः ॥ भूमिभारतिसंहर्त्रे भयसारथये
 नमः ॥ ७ ॥ हिरण्यगर्भपुत्राणां प्राणसंरक्षणाय च ॥ दुर्वाससे षड्विकार-
 रदिताय नमो नमः ॥ ८ ॥ नमो देहाद्भक्तान्ताय चतुर्भिरहिताय च ॥ प्रहृत्यै
 भवनाशाय ताम्राय परमेष्ठिने ॥ ९ ॥ अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायकाय नमो
 नमः ॥ एकाकिने निर्मलाय द्रविणाय दमाय च ॥ १० ॥ नमस्त्रिलोचना-
 थाय शिपिविष्टाय बन्धवे ॥ त्रिविष्टपेश्वराय नमो व्याघ्रेश्वराय च
 ॥ ११ ॥ त्रिश्वेश्वराय दात्रे ते नमश्चण्डेश्वराय च ॥ व्यामेश्वराय धुमिने
 कण्डवेश्वराय ते नमः ॥ १२ ॥ योगेश्वराय च नमो दिव्येश्वराय च ॥
 नागेश्वराय न्यायाय न्यायनिर्वाहकाय च ॥ १३ ॥ शरण्याय मुखाय

कालचक्रवर्तिने ॥ विचक्षणाय वंष्ट्राय स्वैतारवाय नमो नमः ॥१४॥
 नीलजीमूतदेहाय परात्मज्योतिषे नमः ॥ शरणागतपालाय महाबलपराय
 च ॥१५॥ स्वपापहराय महानादाय ते नमः ॥ कृष्णस्य जयदात्रे ते
 विन्वक्रोशाय ते नमः ॥ १६ ॥ दिव्यमोगाय वृण्डाय कोविदाय नमो
 नमः ॥ कामपालाय चित्राय विचित्राय नमो नमः ॥ १७ ॥ नमो मात-
 महाय नमस्ते म. तस्विस्ते । निःसङ्गाय मुनेत्राय विम्लेशाय जयाय च ॥
 १८ ॥ व्याजसंमर्दनाय मध्यस्थाय नमो नमः ॥ अगुष्टशिरसा लंका-
 नाय दुर्गदाय च ॥१९॥ व्याघ्रपूरनिवासाय नमः सर्वेश्वराय च ॥ नमः
 परावरेणाय जगत्स्थावरमूर्त्ये ॥२०॥ नमोऽप्यणुप्रमेयाय शाङ्गिणे विष्णु-
 मूर्त्ये ॥ नारायणाय वामनाय सुदीपाय नमो नमः ॥२१॥ नमो ब्रह्माण्ड-
 मालाय गोधराय वरुधिने ॥ घण्टानाशाय सूत्राय नमः पातालवासिने
 ॥२२॥ नमस्ताराधिनाथाय वामोशाय नमो नमः ॥ सदाधाराय गौराय
 पुराणपुरुषाय च ॥२३॥ संसात्मोचकाय वरुणिने लिंगरूपिणे ॥ सवि-
 दानन्दरूपाय पापराशिहराय च ॥२४॥ अतर्क्याय प्रमेयाय प्रमाणाय
 नमो नमः ॥ कलिपासाय भक्तानां मुक्तिमुक्ति प्रदायिने ॥२५॥ राजारणे
 विदेहाय त्रिलिङ्गरुद्रिनाय च ॥ नमो राजाधिराजाय चैतन्यविम्बाय च
 ॥२६॥ नमः शुद्धात्मन ब्रह्मज्योतिषे स्वतिदाय च ॥ मयोमवे च दक्षाय
 समर्थाय च यज्ञवे ॥२७॥ अश्वेश्वराय रुचये नमो नमः ॥ नमः ॥ अन-
 र्यनाशकाय भक्तलेपकराय च ॥२८॥ सदानन्दाय विदुषे सगुणाय
 विरोधिने ॥ दुर्गमाय शुभाङ्गाय भृगव्यायाय ते नमः ॥२९॥ प्रियाय
 धर्मधाम्ने ते प्रयागाय विमागिने ॥ आद्यायामृतशमाय मोमपाय
 सपत्निने ॥३०॥ नमो विचित्रवेपाय पण्डितसंवर्द्धनाय च ॥ विरक्तनाय घटुपे
 स्थत्रिणाय धुनाय च ॥३१॥ नियमायामगण्याय व्योमावाताय ते नमः ॥
 संवत्सराय लोप्याय स्थानदाय स्वविष्णवे ॥ ३२ ॥ व्याधमाय कला-
 न्ताय महाकर्त्रे प्रियाय च ॥ गुणत्रयस्वरूपाय नमः सिद्धिस्वरूपिणे
 ॥ ३३ ॥ नमो नमः स्वरूपाय स्वच्छाय पुरुषाय च ॥ कालान्तराय
 वेदाय नमो ब्रह्माण्डरूपिणे ॥ ३४ ॥ अनित्यनिस्थरूपाय तदन्तर्गतने
 नमः ॥ ममभार्याय मृगलाय पुण्याय पटये नमः । ३५ ॥ पद्मनन्मात्र-
 रूपाय पद्मार्धमन्त्रियात्मने ॥ विशृङ्खलाय पूर्णाय नमस्ते विषयात्मने
 ॥ ३६ ॥ अनवशाय शस्त्राय स्वतन्त्राशामृताय च ॥ नमः प्रोढ़ाय
 प्राज्ञाय योगारूढाय ते नमः ॥ ३७ ॥ मन्त्रज्ञाय प्रमायाय प्रदीप-
 विमलाय च ॥ विरचयामाय दण्डाय वेदनिःखविनाय च ॥ ३८ ॥
 यज्ञाङ्गाय मुनीनाय नागचूडाय ते नमः । व्याघ्राय वाणहस्ताय
 मन्त्राय पण्डिते नमः ॥ ३९ ॥ श्रेष्ठाय रक्षाय स्वस्याय न

वरीयसे ॥ गहनाय विरामाय सिद्धान्ताय नमो नमः ॥ १४० ॥
 महीधराय होत्रे ते वटवृक्षाय ते नमः ॥ ज्ञानदीपाय दुर्गाय सिद्धान्तनिश्चयाय च ॥ श्रीमने मुक्तिबीजाय कुशलाय विलासिने ॥ ४१ ॥
 प्रेरकाय विशोकाय हविर्द्वानाय ते नमः ॥ गम्भीराय सहायाय भोजनाय सुभोगिने ॥ ४२ ॥ महायज्ञाय तीक्ष्णाय नमस्ते भूतचारिणे । नमः प्रतिष्ठितायाथ महोत्साहाय ते नमः ॥ ४३ ॥ परमार्थाय शिशवे प्रांशवे च कपालिने ॥ सहजाय गृहस्थाय सन्धानाथाय जिष्णवे ॥ ४४ ॥ पद्भुभिः सुपजितायाथ त्रिदलासुरघातिने ॥ जनानन्दाय योग्याय कामेशाय किरीटिने ॥ ४५ ॥ अमोघविक्रमायाथ भग्न्याय दलघातिने ॥ सप्रामाण्ये नरेशाय शुचिहास्याय ते नमः ॥ भूतिप्रियाय भूम्ने ते श्येनाय मधुराय च ॥ ४६ ॥ मनुष्ययाह्यगतये कृतज्ञाय शिखण्डिने ॥ निर्लेपाय जटाद्राय महाकालाय भीरवे ॥ ४७ ॥ नमो विरूपरूपाय शक्तिगम्याय ते नमः ॥ नमः सर्वाय सद्यस्तपराय सुव्रताय च ॥ ४८ ॥ नमो भक्ति प्रियायाथ श्वेतश्वापराय च ॥ सुकुमारमहापापहराय रथिने नमः ॥ ४९ ॥ नमस्ते धर्मराजाय धनाभ्युक्षाय सिद्धये ॥ महाभूताय कल्याय कल्पतरुहिताय च ॥ १५० ॥ ख्याताय जितविश्वाय गोकर्णाय सुचारवे ॥ भोत्रियाय वदान्याय दुर्बलाय कुटुम्बिने ॥ ५१ ॥ विरजाय सुगन्धाय नमोविश्वम्भराय च ॥ भवातीताय पष्ठाय नमस्ते सामगाय च ॥ ५२ ॥ अद्वैताय द्वितीयाय कल्पराजाय भोगिने ॥ चिन्मयाय नमः शुक्लज्योतिषे क्षेत्रगाय च ॥ ५३ ॥ सर्वभोगसमृद्धाय साम्बाय च नमो नमः ॥ नमस्ते स्वप्रकाशाय स्वच्छन्दाय सुतन्त्रवे ॥ ५४ ॥ सर्वज्ञमूर्तये तुम्यं हिरण्यरेतसे नमः ॥ शौरदाय सुशीलाय कौशिकाय धनार्य च ॥ ५५ ॥ अभिरामाय तत्त्वाय व्यक्तकल्पाय ते नमः । अरिष्टमयनायाथ सुप्रतीकाय ते नमः ॥ ५६ ॥ आशवे ब्रह्मगर्भाय बह्मणायेन्द्रे नमः ॥ नमः कालाग्निरुद्राय श्यामाय सुजनाय च ॥ ५७ ॥ अद्विर्बुध्न्यायाजराय गुह्येशाय सशान्तये ॥ नमः समयनाथाय सोमपाय गुहाय च ॥ ५८ ॥ निर्मलाय नमस्तुम्यं छन्दसाराय दंष्ट्रिणे ॥ ज्योतिर्लिङ्गाय पित्रे च जगत्सुहृत्कारिणे ॥ ५९ ॥ नमः कारुण्यनिधये श्लोकाय जयशालिने ॥ ज्ञानोदराय बीजाय जनविधामहेतवे ॥ ६० ॥ अग्रधूताय शिष्टाय छन्दसां ग्रधवे नमः ॥ नमः फेण्याय गुहाय सवर्बन्धविमोचिने ॥ ६१ ॥ इन्दारनीर्तये शरवत्प्रसन्नवदनाय च ॥ वसवे वेदकाराय नमो भ्राजिष्णुविष्णवे ॥ ६२ ॥ चक्षिणे देवदेवाय गदाहस्ताय सुत्रिणे ॥ नमस्ते पारिजाताय गणधिपतये नमः ॥ ६३ ॥ सर्वशास्त्रा-

धिपत्ये प्रजनेशाय ते नमः ॥ सूक्ष्मप्रमाणमूर्ताय सुरपार्वगताय च ॥
 ६४ ॥ अशरीराय शुक्लाय सर्वान्तर्यामिणे नमः ॥ सुकेशाय सुपुष्पाय श्रुत्ये
 पुष्पमालिने ॥ ६५ ॥ मुनिष्येभ्यः मुनये बीजस्थाय मरीचये ॥ चामुण्ड-
 जनकाय नमस्ते कृतिवासये ॥ ६६ ॥ व्योमकेशाय योग्याय धर्मपीठाय
 ते नमः ॥ महावीर्याय दीप्ताय बुद्धाय शनये नमः ॥ ६७ ॥ शिष्टेष्टाय मघ-
 धते केतये करुणाय च ॥ कारुणाय भगवते वाणदर्पहराय च ॥ ६८ ॥
 अनीन्द्रियाय रम्याय ज्ञानानन्दकराय च ॥ सदाशिवाय धीन्याय चि-
 न्त्याय चन्द्रमौलिने ॥ ६९ ॥ नमस्ते जातुकर्णाय सूर्याभ्यक्षाय ते नमः ॥
 व्योतिषे कुण्डलीशाय पादायाचक्षाय च ॥ ७० ॥ वसन्ताय सुरभये जया-
 रिमथनाय च ॥ प्रेतपुरञ्जयायाय वृषदशाय ते नमः ॥ ७१ ॥ रोचिष्णवे
 सुरजिते श्वेतपीठाय ते नमः ॥ नमस्ते चञ्चरीकाय समिप्लमथनाय च ॥
 ७२ ॥ प्रमाथिने निदाघाय चित्रगर्भाय ते नमः ॥ शिवालयाय स्तुत्याय
 तीर्थदेवाय ते नमः ॥ ७३ ॥ निरुद्धाय दानाय विचित्रशक्तये नमः ॥
 नमस्तुल्याय महमे वितानपतये नमः ॥ ७४ ॥ अङ्कारस्व-
 रूपाय मेघाधिपतये नमः ॥ विक्रमाय स्वतन्त्राय स्वतन्त्रगतये नमः
 ॥ ७५ ॥ अपाराय तत्त्वविदे क्षुब्धरीराय ते नमः ॥ पञ्चास्याय
 यदान्याय विश्वप्राणेश्वराय च ॥ ७६ ॥ अगोचराय सूक्ष्माय
 क्षीयाय ब्रह्मवाग्मये ॥ फेर्याय पद्महस्ताय नमस्ते जमदग्नये ॥ ७७ ॥
 अनापृताय मुक्ताय मातृकापतये नमः ॥ नमस्ते बीजकोशाय तीव्रा-
 नन्दाय मुक्तये ॥ ७८ ॥ नमस्ते विश्वदेवाय शान्तरागाय ते नमः ॥
 विज्ञोचनाय तोत्राय हेमगर्भाय ते नमः ॥ ७९ ॥ अनाद्यन्ताय
 चण्डाय मनोनाथाय ते नमः ॥ ज्ञानस्कन्धाय तुष्टाय कपिलाय
 महर्षये ॥ ८० ॥ नमस्त्रिकाग्निशालाय देवसिंहाय ते नमः ॥ नमस्ते
 मणिपूराय चतुर्वेदाय ते नमः ॥ ८१ ॥ स्वभावाय सुवासाय हन्त
 ह्नाय ते नमः ॥ नमस्ते शिवधर्माय महाधर्माय ते नमः ॥ ८२ ॥
 प्रमत्ताय नमस्तुभ्यं सर्वान्तर्यामिणे नमः ॥ रावन्मुखे कुलेशाय बह-
 राक्षममन्त्रे ॥ ८३ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ जपन्तु सततं देवा
 नाम्नां दशरातीमिमाम् ॥ मम चातिप्रियकरीं महामोक्षप्रदायिनीम्
 ॥ ८४ ॥ संप्राप्ते जयरात्री च सर्वाभिद्धिमयीं शुभाम् ॥ यः पठेद्भृगु-
 यादाऽपि सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ८५ ॥ पुत्रकामो लभेत्पुत्रं राज्यकामस्तु
 राज्यताम् ॥ प्राप्नुगत्तराया मस्त्या घनवान्यादिकं यद् ॥ ८६ ॥ शिवालय
 नदीतीरेऽथवा मूले विशेषतः ॥ प्रजपेत्सिद्धिदां देवाः शुची देवा शमीतले
 ॥ ८७ ॥ धनकामस्तु जुष्ट्यादृष्ट्याक्तेर्विन्ध्यपत्रकैः ॥ मोक्षकामस्तु
 मध्येन धूतेन प्रतिनामसः ॥ ८८ ॥ पुत्रकामस्तु जुष्ट्यात्

विपनये प्रजनेशाय ते नमः ॥ सूक्ष्मप्रमाणमूर्ताय सुस्फार्वगताय च ॥
 ६५ ॥ अशरीराय शुभ्राय सर्वान्तर्यामिणे नमः ॥ सुकेशाय सुपुष्पाय धृतये
 पुष्पमालिने ॥ ६६ ॥ मुनिभ्येभ्यः मुनये बीजस्थाय मरीचये ॥ चामुण्ड-
 जनकाय नमस्ते कृतिवासे ॥ ६७ ॥ व्योमकेशाय योग्याय धर्मपीठाय
 ते नमः ॥ महावीर्याय दीप्ताय बुद्ध्याय शनये नमः ॥ ६८ ॥ शिष्टेष्टाय मध-
 यते केतये कङ्कणाय च ॥ कारणाय सगवते वाणर्षहराय च ॥ ६९ ॥
 अनीन्द्रियाय रम्याय ज्ञानानन्दकराय च ॥ सदाशिवाय धीन्याय धि-
 न्त्याय चन्द्रमौलिने ॥ ७० ॥ नमस्ते जातुकर्ष्याय सूर्याभ्यन्ताय ते नमः ॥
 ज्योतिषे कुरङ्गलीशाय वरदायाचलाय च ॥ ७१ ॥ वसन्ताय सुरभये जया-
 रिमयनाय च ॥ प्रेतपुरुजयायाय पृषद्भवाय ते नमः ॥ ७२ ॥ रोचिष्णवे
 सुरहिते श्वेतपीठाय ते नमः ॥ नमस्ते चक्रचरीकाय तमिस्रमथनाय च ॥
 ७३ ॥ प्रमाथिने निदाघाय चित्रगर्भाय ते नमः ॥ शिवालयाय स्तुत्याय
 तीर्थदेवाय ते नमः ॥ ७४ ॥ निरञ्जनाय दानाय विचित्रशक्तये नमः ॥
 नमस्तुल्याय महामे वितानपतये नमः ॥ ७५ ॥ अहङ्कारस्व-
 रुपाय मेघाधिपतये नमः ॥ विक्रमाय स्वतन्त्राय स्वतन्त्रगतये नमः
 ॥ ७६ ॥ अपाराय तत्त्वविदे क्षयङ्गीराय ते नमः ॥ पञ्चास्याय
 वदान्याय विश्वप्राणेश्वराय च ॥ ७७ ॥ 'अगोचराय सूरमाय
 क्षीयाय बहवाग्नये ॥ फेराय पद्मास्ताय नमस्ते जमदग्नेय ॥ ७८ ॥
 अनापृताय सुक्ताय मातृकापतये नमः ॥ नमस्ते बीजकोशाय बीज-
 नन्दाय मुक्तये ॥ ७९ ॥ नमस्ते विश्वदेवाय शान्तरागाय ते नमः ॥
 विक्षोभनाय तोयाय हेमगर्भाय ते नमः ॥ ८० ॥ अनाद्यन्ताय
 वण्डाय मनोलाभाय ते नमः ॥ ज्ञानस्कन्धाय तुष्टाय कपिलाय
 महर्षये ॥ ८१ ॥ नमस्ते अग्निनागाय देवसिंहाय ते नमः ॥ नमस्ते
 मणिपूराय चतुर्वेदाय ते नमः ॥ ८२ ॥ स्वभावाय सुवासाय अन्व-
 ज्ञाय ते नमः ॥ नमस्ते शिवधर्माय महाधर्माय ते नमः ॥ ८३ ॥
 प्रसन्नाय नमस्तुभ्यं सर्वान्तर्यामिणे नमः ॥ हावम्भुवे कुलेशाय यक्ष-
 राक्षसमन्महे ॥ ८४ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ जपन्तु सततं देवा
 नाम्नां दशशतीमिमाम् ॥ मम चाविप्रियङ्करा महामोक्षप्रदायिनीम्
 ॥ ८५ ॥ संभामे जगदानीं च सर्वोसिद्धिमयीं शुभाम् ॥ यः पठेच्छृणु-
 याद्वाऽपि सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ८६ ॥ पुत्रकामो लभेत्पुत्रं राज्यकामस्तु
 राज्यवाम् ॥ प्राप्नुयात्परया भक्त्या धनधान्यादिकं बहु ॥ ८७ ॥ शिवालये
 नदीतीरेऽप्यत्रयमूले विशेषतः ॥ प्रजपेत्सिद्धिं देवाः शुचीं देशं रामीदृते
 ॥ ८८ ॥ धनकामस्तु जुहुयाद्दधृवाक्स्तेनित्त्वपत्रके ॥ मोक्षकामस्तु
 गन्धर्वेन धृतेन प्रतिनामकः ॥ ८९ ॥ पुत्रकामस्तु जुहुयात्

श्रीगणेशायनमः ॥ चापेयगौराङ्गशरीरकाये कपूरगौरार्घशरीर-
काय ॥ धमिल्लकायै च जटाधाराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥१॥
रणत्वनृणक्तकणनूपुरायै मिलत्फणाभासुरनूपुराय ॥ हेमाङ्गायै भुज-
गाङ्गाय नमः शिवायै॥२॥ कास्तूरिकाकुङ्कुमचर्चितायै चिन्तारजःपुञ्ज-
चर्चिताय ॥ सुकुण्डलायै फणिकुण्डलाय नमः शिवायै० ॥३॥ मन्दारमाला-
कुलितालकायै कपालमालाङ्कि तशेखराय । दिव्या भ्वरायै च दिगम्बराय
नमः शिवायै० ॥ ४ ॥ मोत्पुञ्जनीलोत्पललोचनायै विकासपङ्के रुहलोच-
नाय ॥ समेक्षणाय विषमेक्षणाय नमः शिवायै० ॥ ५ ॥ अम्भोरुहरयामल-
कुन्तलायै तद्वित्प्रभाभासजटाधाराय ॥ जगज्जनन्यै जगदेकापत्रे नमः शिवायै
च नमः शिवाय ॥ ६ ॥ सदा शिवानां प्रियभूषणायै सदा शिवानां प्रिय
भूषणाय ॥ शिवान्वितायै च शिवान्विताय नमः शिवायै० ॥ ७ ॥
प्रपञ्चसुखसदायै त्रैलोक्यसंसारकृतान्तकाय ॥ कृतस्मरायै विष्णु-
स्मराय नमः शिवायै० ॥ ८ ॥ नमस्ते भगवद्रूपमास्करामितवेजसे ॥
नमो भवाय देवाय शिवाय परमात्मने ॥९॥ शन्याय चित्तिरूपाय सदा
सुरभिदे नमः ॥ ईशानाय नमस्तुभ्यं स्पर्शमात्राय ते नमः ॥१०॥ महा-
देवाय सोमाय अमृतेशायु ते नमः ॥ उषाय यज्ञमानाय नमो भीदुष्टमाय
ते नमः ॥११॥ नमोऽस्तु ते शंकर शान्तिमूर्ते नमोऽस्तु ते चन्द्रकलावतंस ॥
नमोऽस्तु ते कारण कारणाय नमोऽस्तु ते कारणवर्जिताय ॥१२॥ स एव
धन्यस्तव भक्तिभाजा तवाचको यः कुरुते सदैव ॥१३॥ मन्त्रहीनं कि-
याहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥१४॥

इति श्रीस्कन्धपुराणे शिवस्तुतिः सम्पूर्ण ॥

श्रीगणेशाय नमः

शिवमहिम्नस्तोत्रम् ।

श्रीगणेशाय नमः ।

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशो स्तुतिर्भङ्गादी नामपि
तदवसज्ञात्त्वपि गिरः ॥ अथावाच्यः सर्वः स्वमविपरिणामावधिगृण्यन्
ममाप्येष स्तोत्रे ह्य निरपवादः परि करः ॥१॥ अतोतः पन्थानं तव च
महिमा वाङ्मनसपारवद्वयावृत्त्या यं चकितममिधये अतिरपि ॥ स
कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः पदे त्वर्षापोने पतति न मनः

नर्य न रच ॥२॥ मधुस्कीता वाच परमममृतनि मितवतस्त्व व्रह्मन् किं
 वापि सुरगुरोर्विषयपदम् ॥ मम त्वेता वाणीं गुणकथनपुण्येन भवत
 पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिना ॥३॥ तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुद-
 परज्ञाप्रलयकृत् त्रयोऽस्तु व्यस्त तिसृषु गुणभिन्नासु वगुषु । अमन्याः
 नमस्मिन् वरद रमणीयामरणीं विहन्तु व्याघ्रस्यो विदधत इहैके जड-
 धिय ॥४॥ किमीह किं कथं स सलु किमुपायसिमुवर्न किमाधारो
 धावा मृचति किं पादान इति च ॥ अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवस्यदु स्यो हतधिय
 दुर्बलौऽपि कारिन्सुरारयति भौद्वाव जगतः ॥५॥ अजन्मानो लोका-
 किमयमरन्तोऽपि जगताभयिष्ठावार किं भयविधिनादृत्य भवति ॥
 अनीशो मा कुर्याद्भूतजनने क परिकरो यतो मन्वास्त्वा प्रत्यमवर
 सरोस्त इमे ॥ ६ ॥ नयो सादय योगं पशुपतिमत वैष्णवमिति प्रभिन्ने
 प्रस्थाने परभिदमद् पथ्यमिति च ॥ रुचीना वैचित्र्यान्नुकृतिजनाना
 पथजुषा नृणामेको गम्यस्तमसि पयसामर्षव इव ॥ ७ ॥ महोच-
 यद्वाङ्म परशुरजिनं भस्म कलिनः कपाल चेतीयवत वरदन्त्रोपकर-
 णम् ॥ सुरास्त्रा मामुद्धृषि विदधति भयदूध प्रणिहिता न हि स्वयमा-
 रामं विषयमृगलृप्या भ्रमयति ॥ ८ ॥ ध्रुव कश्चित्समं सक्तमपरस्त-
 द्भुषमिदं परो ध्रौव्याध्रौये जगति गदति व्यस्तविषये ॥ समस्तेऽप्ये-
 वस्मिन् पुरमथन चैर्निमित्त इव स्तेयन् जिह्वेभि त्वा न सलु नतु धृष्टा
 सुभरता ॥ ९ ॥ तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिधः परिच्छेत्तु
 पातावतिलमनलस्कन्धयपुष ॥ संतो भक्तिरद्वयभरणरुणद्वया गिरिश
 यन् त्वयं सत्ते ताभ्यो तत्र किमुत्तुत्तिनं फलति ॥ १० ॥ अयनाश-
 पयं त्रिभुवनमपैरस्यतिरुदं दशास्यो यददाहूनभूतरणकद्वपरवशान् ॥
 शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुद्वले स्मिदायास्तदुक्ते त्रिपुरहर विस्त-
 नितमिहम् ॥ ११ ॥ अमुष्य त्वत्मेरासनविगतसार, भुजगलं वनात्कैला-
 सेऽपि त्वयिवसतो विजययन् ॥ अलभ्यापातालेऽप्यल- कलिताङ्गमुष्ट-
 शिसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्भू वमुपाचतो मुह्यति यत्न ॥ १२ ॥ यददधि
 सूत्र म्या नदपमोचरेरपि मतोमरचके वाच परिव्रजविधेयमिमुन ॥
 न तेष्वर तस्मिन् वरिवसितरि त्वचरणयोर्न वस्याप्युत्तयै भवति शि-
 मस्तप्ययनति ॥ १३ ॥ अकाण्डनराण्डवयर्गिष्ठेरासुररुपाविधेयस्या-
 ऽमोघस्थितयन विष सद्ययन ॥ स कन्दमाप, कण्ठे तव न पुरुते न
 भित्तमः शिरसोऽपि ग्राह्यो भुवनमथनङ्गज्यसन्निन ॥ १४ ॥ अस्मि
 द्वागं नैरकाचिन्म सदासुखर निरन्तं नित्यं जगति जयिनो यस्य
 निशिता । स पण्यश्रीरा जगमिदमुत्सापायसुमनूस्वर समतल्याना
 न वि धनिगु-पथ्य- परिमर ॥ १५ ॥ मरीपादापाताद्भजति मदसा

संशयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिधेरुष्णप्रदहणम् ॥ मुहुर्द्यौर्दोर्ध्यं
 यात्यनिर्भृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता
 ॥ १६ ॥ वियेद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहो बारां यः
 पृपतलघुदृष्टः शिरसि ते ॥ जगद्वीपाकारं जलधिक्लृप्तं तेन कृतमित्य-
 नैवोन्नेयं धृतमहिमादिव्यं त्वं वपुः ॥ १७ ॥ रथः क्षोणी यन्ता शतधृति-
 रथेन्द्रो धनुरथो रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथ- चरणपाणिः शर इति ॥ दिघक्षोस्ते
 कोऽयं त्रिपुरवृणमाडम्बरविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभु-
 धियः ॥ १८ ॥ हरिस्ते साक्षस्व कमलवलिमाधाय पदयोर्देकोने तस्मा
 निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ॥ गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा त्रयाणां
 रक्षायै त्रिपुरहर जागति जगताम् ॥ १९ ॥ प्रतो सुप्ते जाग्रत् व्यमांस
 फलयोगे कृतुमतां क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ॥ अतस्त्वां
 संप्रेक्ष्य कृतुपु फलदानप्रतिभुवं भृतौ भद्रां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु-
 जनः ॥ २० ॥ किञ्चिदतो वृक्षः कृतुपतिरधीशस्तनुभृतामृपीणामात्विग्यं
 शरणद सदस्याः सुरगणाः ॥ कृतुप्रपस्त्वत्तः ऋतुफलविधानव्यसनिनो
 ध्रुवं कृतुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥ २१ ॥ प्रजानाथ नाथ
 प्रसभमभिक त्वां दुहितरं तत्तं रोहिदभूतां रिरमयिपुमृष्यस्यपुषा । अनुष्पा-
 णैर्यातं दिवमपि सपत्राकृतमभुं त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याध-
 रभसः ॥ २२ ॥ स्वलावण्याशांसा धृतथनुपमहाय तृणवत्पुः प्लुष्टं दृष्ट्वा
 पुरमथनपुष्पायुधमपि । यदि क्षौणं देवी यमनिरतदेहार्धघटनादवैति
 स्वामद्धा अत वरत् मुग्धा तुवतयः ॥ २३ ॥ श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर
 पिशाचाः सहचराश्चितामस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ॥ अमङ्गल्यं
 शीलं तव भवतु नामैवमखिलं तथापि स्मर्त्तृणां वरदे परमं मङ्गलमसि
 ॥ २४ ॥ मनः प्रत्यक्चित्ते सविधंमवधयात्तमरुतः प्रदृष्ट्यद्रीमाणः प्रम-
 दसलिलोसारितदृशः ॥ यदालोक्याल्हादं हृद् इव निमज्ज्यामृतमये दधत्यन्त-
 स्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल धवान् ॥ २५ ॥ त्वमर्कस्त्व सोमस्त्वमसि
 पवनस्त्वं हुतवहस्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च । परि-
 क्लिप्तनामेवं त्वयि परिणता विभ्रति गिरं न विद्मस्तत् तत्त्वं वयमिह तु
 यत्त्वं न भवसि ॥ २६ ॥ त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रोनपि सुरान-
 काराद्यैर्वैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ॥ तुरीयं ते धाम ब्रजिभिरभिसन्धा-
 नमणुभिः समस्तव्यस्तं त्वां शरणद गृणास्योमिति पदम् ॥ २७ ॥
 भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोमः सह महोस्तथा भीमेशानावि-
 ति यदभिधानाष्टकिदम् ॥ अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव भ्रतिरपि
 प्रियायास्मै घाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥ २८ ॥ नमो नेदिषाय
 प्रियदेव दवीषाय च नमो नमः क्षोदिषाय स्मरहर महिषाय च नमः ॥ नमो

वर्षिषाय त्रितयनं यविष्ठाया च नमो नमः सर्वस्मै ते तदि दमिति शर्वाय च
नमः ॥ २६ ॥ वहलजसे विस्वोत्पत्तौ मवाय नमो नमः । जनसुखकृते
सत्त्वोद्विक्ती मृदाय नमो नमः प्रमदसि पदे निखौ गुण्ये शिवाय नमो नमः
॥ २७ ॥ कृशपरिणतिचेतः क्लेशवर्ष्यं क्वचेदं क्व च तव गुणसीमोल्लं-
घिनी शरवद्विद्धि ॥ इति चक्रितममन्दीकृत्य भां भक्तिराधाद्वय वरण-
योस्ते वाक्यपुष्पोद्धारम् ॥ ३१ ॥ असितगिरिसमं स्यात्कञ्जलं सिन्धु-
पात्रे सुरतस्वरशास्त्रा लेखनीं पत्रमुर्वी ॥ लिखसि यदि गृहीत्वा शारदा
सकलं तदपि तव गुणानामोरा पारं न याति ॥ ३२ ॥ असुसुसु-
नोन्नेरचितयेन्दुमंतेमयितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येवरस्य ॥ सकलगुण-
वरिष्ठः पुष्पदन्तामित्रानो रुधिरमलघुवृत्तेः स्तोत्रमेतच्चकार
॥ ३३ ॥ अहरहरनवधं धूजदिः स्तोत्रमेतन् पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः
पुमान् यः ॥ स भवति शिवलोके कद्रुतुल्यस्तथात्र प्रचुरवधनायुः पुत्रवान्
कीर्तिमोक्ष च ॥ ३४ ॥ महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा
स्तुतिः ॥ अघोरापारो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥ ३५ ॥
दीक्षादानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ॥ महिम्नस्तत्र
पाठस्य कलां नाहन्ति पोदरीम् ॥ ३६ ॥ कुसु-
मदशननामा सर्वगन्धर्वराजः राशिधरचरमौलेर्देवदेवस्य दासः ॥ स यत्तु
निजमहिम्नो भ्रष्ट पद्मास्य रोपास्तयनीमद मकार्षीद्वयदिव्यं महिम्नः ॥
३७ ॥ सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलि-
नान्धचेताः ॥ प्रपति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्ववतमिदममोषं
पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥ ३८ ॥ श्रीपुष्पदन्तमुखर्पकजनिर्गतेन स्तोत्रेण क्विपि-
पदरेण हृदि प्रियेण । कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणिता भवति
भूतपतिमहेशः ॥ ३९ ॥ इत्येषा शाङ्कमयी पूजा श्रीमच्छक्रपादयोः ।
अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः ॥ ४० ॥ इति स्कन्दपुराणे पुष्प-
दन्तगन्धर्वराजविरचिते श्रीसदाशिवमहिम्नाख्ये स्तोत्रे संपूर्णम् । श्रीसदा-
शिवार्पणमस्तु । श्रीरस्तु ॥

देवीपूजनम् ॥

अथ ध्यानम् । नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः नमः
प्रकृत्यै भगव्यै नियताः प्रणवाः स्मृताम् ॥ ॐ मनसः ५ः काममाकृति-
स्याय ३ः मय मरीच । मग्नता १५ रूपमत्रस्य रम्योवरा ५ः श्री ५ः मय-
ताम्सि स्मृता ॥ अथ आवाहनम् ॥ ॐ हिरण्यवर्णां हरिणां सुवर्ण-

रजतव्रजाम् । चन्द्रां हिरण्ययीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥१॥ अथ आ-
 सनम् ॥ तामऽश्वावह जातवेदो लक्ष्मीमनपगाग्निनीम् । यस्यां हिरण्यं
 विन्देयं गामरव पुरुषानहम् ॥२॥ अथ पादम् ॥ अश्वपूर्णां रथमध्यां
 हस्तिनादप्रमोदिनीम् । श्रिय देवोमुपह्वये श्रीर्मा देवो जुषताम् ॥ ३ ॥ अथ
 अर्घ्यम् ॥ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्त्रीं ज्वलन्तीं तृप्तां तपयन्तीम् ।
 पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥ अथ आचमनी-
 यम् ॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
 तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये - अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वावृणोमि ॥ ५ ॥
 अथ स्नानीयम् ॥ आदित्य वर्णे तपसो धिजातो वनस्पतिस्तव वृत्तोऽथ
 धित्वः । तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायांतरायाश्च वाद्याऽअलक्ष्मीः
 ॥ ६ ॥ अथ पञ्चाश्वतस्तानम् ॥ तत्रादौ पयसा—ॐ पयपृथिव्यांमप्य
 ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः
 सन्तु ममम् ॥ अथ शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ आपोषु अस्मान्
 मातरः सुन्धयन्ते घृतेन नो घृत्वः पुनन्तु ॥ विष्वक्श्वेध
 हिरण्यप्रवहन्ति देवीरुद्रिदाभ्यः शुचिरापूतधमि ।—अथ धन्ना ॥ ॐ
 दधि काव्योऽश्वस्य वाजिनः ॥ सुरभिर्नो मुखाकरत्प्रण आयूधं प्रितारिषित् ॥
 अथ शुद्धोदक स्नानम् ॥ आपो अस्मान् ॥ अथ घृतेन ॥ ॐ घृतमिमचे
 घृतमस्य योनिघृतेभियोघृतम्बस्यधाम ॥ अनुष्वधमावह माव्यस्वस्वाहा
 कृतं धृमव्वत्तिहव्यम् ॥ शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ आपो अस्मा ॥ अथ
 मधुस्नानम्—॥ ॐ मधुव्राता ऋताय ॥ शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ आपो
 अस्मान् ॥ अथ शर्करास्नानम् । ॐ अपा ध रसमुद्वयसः सूर्ये
 सन्त ध समाहितम् ॥ अपा ध रसस्य यो रसस्तम्बो गृह्णा न्युत्तम
 उपयाम गृहीतो सीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णान्येषते योनिरिन्द्रायत्वा
 जुष्टतमन् ॥ शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ आपो अस्मान् ॥ गन्धोदकस्नानम् ॥
 ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करोषिणीम् ॥ ईश्वरी सर्वभूतां
 तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ उद्वर्तनस्नानम्—ॐ अथ शुनाते अथ शुः श्रुच्य-
 ताम्पहः ॥ गन्धस्ते सोममवतु मदायस्सोऽअन्युतः ॥ पुनः शुद्धोदकस्ना-
 नम् ॥ ॐ आपो अस्मान् ॥ वतः ॐ श्री जगदम्बायै नमः ॥ इति
 नाममन्त्रेण रक्तगन्धाक्षतरक्तपुष्पधूपरीपनैवेद्यानि समर्प्य ॥ वस्त्रं सम-
 पेयन् ॥ उपेतु मा देवसखः कीर्तिरच मणिना सह । प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रे-
 स्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥ यज्ञोपवीतम् ॥ स त्विपासामलां
 ज्येष्ठामलक्ष्मीं नारायाम्यहम् । अमूर्तिमसर्गद्वि च सर्वां निर्गुणं मे गृहान्
 ॥ ८ ॥ रक्तचन्दनम् ॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करोषिणीमईश्वरीं
 सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥ अक्षतम् ॥ ॐ अक्षन्न मीम-

दन्त ह्यप्रिया अभूत् ॥ अस्तोपतस्व भानवो-न्विष्या नविष्टया मती-
 योजान्विन्दते हरिम् ॥ पुष्पाणि ॥ मनसः इकाममाकृतिं वाचः सत्यमशी-
 महि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥ धूपम् ॥ कर्द-
 मेन प्रजाभूतामयि सम्भ्रमकर्म । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म-
 मालिनीम् । ११ दीपम् ॥ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मेगृहे
 निचदेवा मातरं श्रियं वासय मे कुले । १२ नेवेद्यम् ॥ आर्द्रा पुष्क-
 रिणां पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यादिरस्यमया लक्ष्मीं जातवेदो ममा-
 वह ॥ १३ ॥ दक्षिणाम् ॥ आर्द्रा यः करिणीयष्टिं पिङ्गलां पद्ममालि-
 नीम् । चन्द्रां हिरण्यमया लक्ष्मीं जातवेदो ॥ आवह ॥ १४ ॥ प्रदक्षिणाम् ॥
 तामऽमावह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं
 गात्रो दास्योऽश्वान्विन्देय पुरुषानाम् ॥ १५ ॥ पुष्पाब्जलिमन्त्रम् ॥ यः
 शुचिः प्रयतो भूया जुहुयादाज्यमन्त्रहम् । सूक्तं पञ्चवदशर्चनञ्च श्रीकामः
 सततं जपेत् ॥ १६ ॥—सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्ध-
 मान्यशोभे । भगवति हरिषत्तमे मनोज्ञे त्रिगुवनभूतिकरि प्रसीद
 मह्यम् । १७ । धनमग्निर्धनं वायूधनं सूर्यो धनं वसु । धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरु-
 णं धनमिन्द्रो ॥ १८ ॥ धेनवे सोम पिव सोमं पिवतु
 नृगहा । सोम धनस्य सोमनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥ १९ ॥
 न क्रोवो न च सप्तसर्प न क्रोवो नाशुमा मतिः । भवन्ति कृतपुण्यानां
 भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥ २० ॥ पद्मानने पद्मरु पद्माक्षी पद्मसम्भवे ।
 तन्मे भजसि पद्माक्षि यन् सौख्यं लभाम्यहम् ॥ २१ ॥ विष्णुपत्नीं क्षमां
 देवा माधवी माधवप्रियम् । विष्णु सप्रसी देवा नमाम्यच्युतवहलभाम्
 ॥ २२ ॥ महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमही । तन्नो लक्ष्मीः
 प्रचोदयात् ॥ २३ ॥ पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्ममये पद्मदलायताक्षि ।
 विश्वप्रिये विश्वमनानुकूले त्वत्पादपद्मे मयि सन्निधस्व ॥ २४ ॥
 आनन्दकर्दभः श्रीदक्षिचक्लीत् इति विप्रवाः । ऋषयः श्रियपुत्रारच
 मयिश्रोदेशे देवता ॥ २५ ॥ ऋणरोगादिदारिद्र्यं पापञ्च अपमृत्यवः ।
 भवशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥ २६ ॥ श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्य-
 माविधाच्छ्रीममान महीयते । धनधान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतमर्तदीर्घ-
 मायुः ॥ २७ ॥

देव्या आर्तिः—वेदोक्त-

प्रसरानोरनिवासिनि निवमप्रतिराधे पारावारविहारिणी नारायणि

दृश्ये । प्रपञ्चसारे जगदाधारे श्रीविद्ये प्रपन्नपालननिरते मुनिवृन्दाराध्ये ॥
जय देवि जय देवि जय देवि जय मोहनिरूपे । मामिह जननि समुद्धर
पतितं भवकूपे ॥ १ ॥ दिव्यसुधाकरवदने कुन्दोज्ज्वलरदने पद्मस्रजनजिति
मदने मधुकैटभकदने । विकसितपङ्कजनयने पन्नग पतिशयने खगपति-
वहने गहने सङ्कटवनदहने । जय देवि ॥ २ ॥ मञ्जीराङ्कितचरणे मणि-
मुक्ताभरणे किंचिद्वस्त्राचरणे वक्राम्बुजधरणे शक्रामयमयहरणे भूसुरसुख-
करणे करुणां कुरु मे शरणे गजनक्रोद्धरणे ॥ जय देवि ॥ ३ ॥ ह्रित्वा राहु-
धीमां पसि त्वं विबुधान् ददासि मृत्युमनिष्टं पीयूषं विबुधान् । विहरसि
दानवच्छद्धान्समरे संसिद्धान् मन्त्रमुनीश्वरवरदे पालय संसिद्धान् ॥ जय
देवि ॥ ४ ॥

अथ देव्या अथर्वशीर्षम् ।

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपसृथुः कासि त्व महादेवी । सा त्रयीवर्हं
ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चा शून्यं अहमा-
नन्दानानन्दो अहं विज्ञानाविज्ञाने अहं ब्रह्मात्रहणी द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये ।
इति वाथर्वणी श्रुतिः । अहं पञ्च भूतानि अहं पञ्च तन्मात्राणि अहमस्मिन्
जगन् वेदोहमवेदोहम् विद्याहमविद्याहम् अजाहम् नजाहम् अधश्चोर्ध्वं च
धियंक्वाहम् अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः अहं
मित्रावरुणावुभौ विभर्मि अहमिन्द्राग्नी अहमस्विना उभा अहं सोमं
क्षष्टारं पूरणं भगं द्यामि अहं विश्वामुरुक्रमम् ब्रह्माणमुत्पन्नरपति दधामि
अहं द्यामि द्रविणं हविष्मते सुमान्ये यजमानाय सुव्रते अहं भ्रातृणी
सङ्गमनी वसुनाम् पिफितुषी प्रथमायक्षयानाम् अहं सुवेपितर मरुत्य
मूर्धनमम योनिरप्स्वांतः समुद्रेय एवं वेद सदैवो ह्य सम्पद मानोति देवा
अमुवन् । नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै
भद्रायै निशताः प्रणताः स्मताम् ॥ तामग्निवर्णां तपसा उग्रवन्ती
वैरोचनीं कमफलेषु जुष्टाम् । दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसु-
रान्नाशयिष्यैते नमः देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो
वदन्ति । सा नोमन्त्रेण मूर्जदुहाना धेनुर्वागस्मानुपमुपृतेतु ॥ काल-
रात्रीं ब्रह्मन्नुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् । सरस्वतीमदितिदक्षदुहितरं
नमामः पावनां शिवाम् । महालक्ष्म्यै च त्रिपदे शर्वशक्त्यै
च धीमहि तन्नो देवी भवोदयात् । अदितिर्हजनिष्ठ दत्तया दुहितया
तव । तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृत चन्वयः ॥ कामे योनिवज्र-
पाणिगुहा हंसा मातलिष्याभ्रमिन्द्रः पुनर्गुहा सकला मायया

चापृथक् क्लेशा विश्वमातादि विद्याः ॥ एषात्मशक्तिः । एषा
 विश्वमोहिनी पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा । एषा श्री महाविद्या । य
 एवं वेद स शोकं तरति । नमस्ते भगवति मातरम्भाम्पाहि सर्वतः
 सैषा वैष्णवा वसवः सैवैकादशरुद्राः सैषा द्वादशादित्याः सैषा
 विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि
 पिशाचयक्षप्रिद्धा सैषा सत्वरजस्वमांसि सैषाः ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी
 सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः सैषा महनक्षत्रज्योतिष्कला काष्ठादि विश्व-
 रूपिणी तामहं प्रणोमि नित्यम् । पाशापहारिणी देवी भुक्तिमुक्ति-
 प्रदायिनी । अनन्तां विजया शुद्धा शरण्यां सर्वदा शिवाम् ॥
 विषदाकारसेयुक्त बीतिहोत्र समन्वितम् । अर्द्धेन्दुलसितं देव्या
 बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥ एवमेकाक्षरं मन्त्रं यतयः शुद्ध चेतसः ।
 ध्यायन्ती परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः बाह्यमया ब्रह्मभूतस्मात् पट-
 वक्रसमन्वितम् ॥ तुर्यो वाम ओत्रविन्दु संयुक्तपट तृतीयकम् ॥
 नारायणेन संमिश्रो वायुश्वाधरायुक्तयः ॥ विद्ये नवार्ण कोणस्य
 महानानन्ददायकः ॥ हरपुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम् ।
 पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयदंस्तकाम् ॥ त्रिनेत्रा रक्तवसना
 भक्तकामपुङ्गव भजे । भजामि त्वां महादेवि महाभयविनाशिनि ॥
 महादारिद्र्यशमनी महाकारुण्यरूपिणी । यस्याः स्वरूपं ब्रह्माप्यो
 न जानति ॥ तस्मादुच्यते अक्षेया । यस्या अन्तो न लभ्यते
 तस्मादुच्यते अनन्ता । यस्या लक्षं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्षा ।
 यस्या जननं नोपलक्ष्यते तस्मा दुच्यते अजा । ऐकैव सर्वत्र
 वर्तते तस्मादुच्यते ऐका । ऐकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते इनेका
 अतएवोच्यते इमेयानन्ताल्लक्ष्यैकानेका । मन्त्राणां मातृकादेवी
 शब्दानां ज्ञानरूपिणि । ज्ञानानां बिम्बयातीता शून्यानां शून्यसा-
 च्छिणी ॥ यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता । तां दुर्गां
 दुर्गमां देवीं दुर्गचारविपातिनीम् । नमामि भवभीतोऽहं संसारार्थ-
 वधारिणीम् ॥ इदमथर्वशीर्षम् योऽधीते । सपरुचाथर्वशीर्षफलमाप्-
 नोति । इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योर्चाऽस्यापयति । शतलक्षं प्रजप्त्वापि
 नार्चा शुद्धिं च विन्दति । शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः
 स्मृतः । दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापः प्रमुच्यते । महा-
 दुर्गाणि तरति - महादेव्याः प्रसादतः ॥ सायमधीयानो दि-
 पमहर्षं पापं नारायति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं
 नारायति । सायं प्रातः प्रयुज्यानो अपायो भवति निशीथे तुरीयसंभ्यायां

जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति । नूयनायां प्रतिमाया जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति । भौमाशिवन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति स महा-
मृत्युं तरति । य एवं वेद इत्युपनिषत् ॥

हवनविधिः ।

तत्र कर्त्ता शुभदिने ब्राह्मे मुहूर्त्ते चत्वार्य शौचादिविधिं कृत्वा स्नानं
संभ्यावन्दनादिनित्यं कर्म विधाय नमस्कृत्य वासः परिधाय सर्वा यज्ञसामग्रीं
सम्पाद्य प्राङ्मुखः स्वासने उपविश्य ॐ विष्णुर्विष्णुर्हरिर्हरिः त्रिराचम्य
स्थानदेवतागणेशादि पञ्चाङ्गदेवता सर्वतोभद्रमण्डलदेवता पूजनं विधाय
शान्तिस्तवं पठित्वा ॥ ततः कर्मपात्रजले गंगाद्यावाहनं वा अर्घपात्र
स्थापनं कुर्यात् । यथा—भूमौ जलेन गन्धेन वा त्रिकोणपट्कोणवृत्तचतुरस्र
मण्डलं विलिख्य तदुपरि त्रिपादिकां तदुपरि ताम्रमयार्घ
पात्रं संस्थाप्य तत्र जलं दद्यात् । ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि
सरस्वति । नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ ॐ इममे
गङ्गे यमुने सरस्वति शस्त्रोमं सवता पशुण्या । असिक्त्या मरुद्वृधे
वितस्त-यार्जुकीये शृणु ह्यसुपोमया इति वीर्यान्यावाह्य ॥ यत्राक्षता-
न्तिषेत्-ॐ दशकलात्मने धर्मप्रदं ह्रिमण्डलाय नमः । ॐ द्वादशकलात्मने
ऽर्घ्यप्रदसूर्यमण्डलाय नमः । ॐ षोडशकलात्मने कामप्रदधन्वमण्डलाय नमः ।
ॐ सत्त्वाय नमः । ऐं रजशे नमः । औ अन्तरात्मने नमः । मं परमात्मने
नमः । धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छ्राय योनिमुद्रां प्रदर्श्य ॐ
भूर्भुवः स्वः अर्घस्था गङ्गादिसप्तसरित इहागच्छत, इह तिष्ठत
सर्वतीर्थात्मकार्यार्घमात्राय नमः सन्पूज्य । ॐ नमो त्रिष्वते ब्रह्मन्भास्वते
विष्णु तेजसे । जगत्सवित्रे शुचये सदसपत्नकृत्तदायिने । इति चारत्रय
सूर्यार्घजलं दत्त्वा ॥ अश्लिष्टजलेन सर्वा यज्ञसामग्रीं सिक्त्या ॥

अग्निनामानि—

लौकिकः पावको अग्निः प्रथमः परिकल्पितः ।

अग्निस्तु मास्तौ नामा यर्माधाने विधीयते ॥ १ ॥

जगन्ते प्रत्यहं मन्त्री होमयेत्तद्दशरतः । तर्पणञ्चाभिषेकञ्च विप्रभोज-
नमाचरेत् ॥ अथवा सर्वपूतौ च होमादिकमयाऽऽचरेत् ॥ (होमाप्रशक्ती) -

पुंसवने चान्द्रमसः भस्माकर्मणि शोभनः ।

सीमन्ते मंगलो नाम प्रगल्भी जातकर्मणि ॥ २ ॥

ययदङ्गं भवेद्भग्नं तत्संख्याद्विगुणो जपः । होमाभावे जर, कथौ होमसंख्या

प्राणायामं कुर्यात् । तत्रादी यरणविधिः ॥ पाद्यादीनि सगर्वाणि
स्त्रणांगुलीयसहितवासोम्यो नमः । इति व्रणद्रव्यं सम्पूज्य ॥ वरणं
कुर्यात् ॥ आचार्यो वदेत् आस्ये ॥ ततो यजमानः ॐ नमोस्त्वनन्ता
येत्यादि मन्त्रैः पादप्रक्षालनं विधाय—ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्र-
मूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुवाहवे ॥ सहस्रनाम्ने पुरुषाय शास्वते
सहस्रकोटियुगचारिणे नमः । ॐ आपदघनध्वातसहस्रभानवः समी-
हितार्थार्पणकामधेनवः ॥ अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणप्राद-
रेणवः ॥ ॐ यत्फलं कपिलादाने कार्त्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे ॥ तत्फलं पाठव-
श्रेष्ठ विप्राणां पादधावने । ॐ भूमिदेवाग्नेत्यर्थं दत्त्वा ॐ गन्धद्वारेति
गन्धविज्ञेपनं कृत्वाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य ॐ यदस्त्रायेति वक्ष्यम्, ॐ धेवेभ्य
इति मुहुदकट्टणकुण्डलादिभिः सम्पूज्य ॥ वरणसामग्रीं करे गृहीत्वा ॥
अथोहेत्यादि करिष्यमाणा मुकुटोर्मणि पृथिव्याक्षतपुष्पपूगीफलपुष्पोप-
वीतस्त्रणांगुलीयवासोलङ्कारादिभिरग्निवृहस्पत्यादिदेवतैराचार्यकर्म कर्तुं
आचार्यत्वेनामुक्तोत्रममुक्तशर्माणममुक्तवेदाध्यायिनं ब्राह्मणं त्वामहं
धृणे ॥ इति वरणद्रव्यं आचार्यहस्ते दद्यात् । धृतोस्मीत्याचार्यो वदेत् ।
ॐ धनेन दीक्षामाप्नोषीत पठेत् ॥ अस्य यज्ञस्य होमकर्मणि त्वं मे
आचार्यो भव ॥ अहं भवानीति प्रत्युक्तिः ॥ आचार्यं प्रार्थयेत्—ॐ
आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ॥ तथा त्वं मम यज्ञे-
ग्निप्राचार्यो भव मुनत ॥ ॐ संसारभयं इति सम्प्रार्थ्य ॥ ततो यज-
मानो ब्रूयात् । यथाविहितं कर्म कुरु । करवाणि इत्याचार्यो वदेत् ॥
अथ ब्रह्मवरणम्—पूर्ववत्सम्पूज्य ॥ अथोहेत्यादि० अमुकोहं ममासुक्तयज्ञ-
कर्मणि ममसंरक्षणाय कृताङ्गुलविज्ञेयय मद्भक्तकर्मकर्तुं मेभिः स्त्रणां-
गुलीयवासोभिरग्निवृहस्पति देवतैरमुक्तोत्रममुक्तशर्माणममुक्तवेदाध्यायिनं
ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं धृणे । इति वरणद्रव्यं ब्रह्मणे दत्त्वा प्रार्थ-
येत्—यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा वेदशास्त्रविशारदः । तथा त्वं मम यज्ञे ५-

चतुर्मुखः । विप्राणां च त्रिपाणान्तु रससंख्यागुणः स्मृतः ॥ वैश्वानरो बभू-
व नाभिं वै पार्थिवो अग्निः प्राशने तु शुचिः स्मृतः ।
सम्यनामाय चूडे तु अतारम्भे समुद्रवः ॥ ३ ॥
मान्याकमेवा धीयामयं विधिः ॥ एषां ब्राह्मणानिदामिरवयवः ॥ ब्राह्मणचतु-
शारमेव ब्राह्मणादिभ्योयामपि विधिं विविधावः ॥ अत्राप्यशक्तो तु 'होमकर्म-
गोदाने धर्पनामा च केरान्ते अग्निरुच्यते ।
वैश्वानरो विद्यते तु विवाहे योवकः स्मृतः ॥ ४ ॥
पंचशक्ता विप्राणां द्विगुणो वरः । इतरैरान्तु यथानां त्रिगुणादिः समीरितः ॥

स्मिन्भव ब्रह्मा द्विजोत्तम । अस्य यज्ञस्य होमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव ॥
 अहं भवानि ० ॥ यथाविहितं कर्म कुरु ॥ कृत्वाणि ॥ अथ ऋत्विग्वर-
 णम्—ब्राह्मणान्पूजयेत् अचहेत्यादि० अमुकोहं ममामुकनाम्नि महायज्ञे
 सर्वतः क्षेमाद्युपलब्धये ऋग्वेदपठनाथं, उत्तरद्वारे, एभिर्वासोगुलीयास-
 नफलैर्बृहस्पतिवह्निवनस्पतिदेवतैर्मुक्कगोत्रानमुकशर्मणो ब्राह्मणान् होम-
 कर्त्तृत्वेन युष्मान् वृणे ॥ पुनश्च ॥ तदङ्गवत्या यज्ञसम्बन्धि—शान्ति-
 पाठवाचकेभ्यो गणेशगायत्र्यादिजापकेभ्यो रुद्राभ्यायविष्णुसहस्रनाम-
 चण्डोपाठकेभ्यो तथा प्रामदेवतास्थानदेवतादीनां पूजकेभ्यः
 साधार्यपुराणशास्त्रादिवाचकेभ्यः, अमुकनामगोत्रान् ब्राह्म-
 णान् युष्मानहं वृणे इति तेभ्यो वरणद्रव्याणि दत्त्वा ॥ वृत्ताः
 स्म इति ते प्रतिग्रुः ॥ यथाविहितं कर्म कुरु इति कर्त्ता वदेत् ॥
 कृत्वाम इति ब्राह्मणां वदेयुः ॥ प्रार्थना—अस्य यज्ञस्य होमकर्मणि पूर्य मे
 ऋत्विजो भवन्तु ॥ वयं भवाम इति प्रत्युक्तिः ॥ अथ रक्षावन्धनं कुर्यात्-
 ॐ गणाधिप नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णु रुद्रं श्रियं देवीं
 वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥ १ ॥ स्थानं क्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं निशा-
 कम् । धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥ २ ॥ इत्यादि मंत्रैः
 सर्पपाक्षैः स्वरक्षां कृत्वा कङ्कणमभिमन्त्र्य दक्षिणकरे बध्नीयात् । बन्धन
 मंत्रः । येन बद्धो यत्नी राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वामभिवक्षामि
 रक्षे मा चल मा चल । इति कृत्वा । विधिना मधुपर्कं कृत्वा वैश्वानर
 लक्षणं वाचयेत्—यज्ञपुरुषो वैश्वानरः कपिलो वर्णो ब्रह्मा ऋषिर्विष्णुश्चन्द्रो
 रुद्रो देवता चतुर्वेदा ऋषयो होमं विनियोगः ॥ १ ॥ पूर्वनिनस्थितरचाग्निं
 ऋत्विजः पूर्वदिङ्मुखाः । पूर्वं च देवताः सूर्याः कथन्तु प्राङ्मुखो
 भवेत् ॥ २ ॥ पूज्यपूज्यकयोर्ममध्ये प्राचीदिक् सा स्मृता धुधैः । आवाह-
 येत्ततो ह्यग्निं मन्त्रपूतेन वारिणा ॥ ३ ॥ अतलः सजलं दृष्ट्वा भीत्वा
 प्रत्यङ्मुखो भवेत् । अत एवान्नौ विद्वद्भिर्जलस्पर्शो न कारयितव्यः ॥ ४ ॥
 नारद उवाच—पावकस्यच किं रूपं लक्षणं चैव कीदृशम् । शिखा हृदर-
 जिह्वाश्च चक्षुः श्रोत्रं मुखं कथम् ॥ ५ ॥ ब्रह्मोवाच—पावकोद्विजत्पस्तु
 त्रिनेत्रः त्रिशिरस्तथा । पञ्चलक्षणसंयुक्ताः सप्तविद्धाः प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥

(अथ कुरवतस्थपिडलयिचारः) तत्राष्टविधानि कुरवनि—चतुरस्रं योनिरदं-

चतुर्धा तु शिखी नाम धृतिरग्निस्तयागरे ।

आवस्ये भवो केमो वैश्वदेवे तु पावकः ॥ ५ ॥

ब्रह्मा वै गार्हपत्याग्निरीश्वरो नक्षिणस्तथा ।

विष्णुराहवनीपरश्च अग्निदेवो त्रयेऽनयः ॥ ६ ॥

त्रिभागे तन्मुलं ज्ञेयं ह्यादावन्ते च मध्यके । उत्तरास्ये स्थितो विष्णुर्दक्षि
णास्ये प्रजापति ॥ ७ ॥ मध्यमके शिवो ज्येष्ठो ह्येव ब्रह्मा जगद्देहः ।
मूर्ध्नि स्थितोऽहं ब्रह्मा वै मुले चैत्र तु शङ्करः ॥ ८ ॥ जिह्वाया च स्थितो
विष्णुर्दण्डाग्रे तु ब्रह्मा स्थिता । घ्राणे तु देवता सर्वाश्चक्षुर्यो शशि-
भास्करो ॥ ९ ॥ हृदये यस्य ऋग्वेदो मातुस्थाने यजुस्तथा । उदरे कट्या
च शिरसे वा सामवेदः प्रकीर्तितः ॥ १० ॥ अथर्व पादयोर्जङ्घे-
प्रोवाया प्रणवस्तथा । पृष्ठभागे तु गायत्री एव रूपं बुधः स्ततम् ॥ ११ ॥
नारद उवाच कस्य पुत्रो वैश्वानरः कस्मिन्कुले चोत्पन्नः का माता क
पिता ॥ १२ ॥ ब्रह्मोवाच—शाण्डिल्यगोत्रं शाण्डिलीत्रं शाण्डिल्या
सितदेवलेति त्रिप्रवरं अरुणो माता वरुणः पिता ॥ १३ ॥ अग्नि
स्थापनं सङ्कल्पं कुर्यात् । ॐ नमः परमात्माने पुराणपुरुषो
त्तमाय श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य निष्णोराक्षया प्रवर्तमानस्याद्य-
ह्यायां द्वितीये पार्ष्णे श्रीश्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंश-
तितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे नन्वुद्रीषे भरतस्त्रयं भारतवर्षे आर्याव-
र्षातर्गतक्षेत्रे हिमवत्पर्वतैकदेशे केशारखण्डे वदरिकाश्रमे इह स्थाने
श्रीविष्णुप्रभृति अमुकवतायाः पुण्यतमक्षेत्रे बौद्धावतारे अस्मिन् वर्त-
माने अमुकनाम सम्बन्धसरे ऽमुकायने ऽमुक्तायमुकमाने ऽमुकपक्षे
ऽमुकविद्यायमुकनासरे ऽमुकनक्षत्रे ऽमुकयोगे ऽमुककरणे ऽमुकशरीरे स्थिते
रथो, चन्द्रे, भौमे, बुधे, गुरौ, शुके, शनौ राहौ, केतौ, सन्निर्दिष्टसमये-
ऽमुकगोत्रो० सुरराशि सप्तमीक सप्तमिदिग्दिशो ऽमुकरामर्हि मम
यत्नमानस्य ज्ञाताज्ञातमनोवाक्याकर्मजनितनिरिच्छाघस्तोमनिरसनपूर्वका-
धिप्रीतिकारिदेविकाध्यात्मिकसमुत्पन्नतापत्रयापनोदायदुःस्वप्नदुःशत्रुनदुः-
र्विचिन्तितानिभ्याविप्रत्युद्बुद्धसंमयितदुर्पदवाधोपलिप्तदारिद्र्यदुःसन्निधि

लक्ष्मणे वदन् नामा कटिहोमे इति शतम् ।

अत्रं अथ सुवचुः लम् । पदम् पङ्कजाकारतट्याम् तानि नामतः ॥ सर्वविदि-
कर कुबजं भतुरमुदाहृतम् । पुनश्च वाङ्मिबद्धमपेन्द्राम् शुभप्रदम् । शुभ
प्रापदित्तं विधिश्चैव पाक्यज्ञेषु साहसं ॥ ७ ॥

दवानां इन्द्राहस्तु त्रितृणां अथ्यारुहन् ।

पूषादृत्वा मृदा नाम शान्तिकं वरदस्तथा ॥ ८ ॥

सोष्टिकं बलदश्चैव कागान्तिचाभिन्नाग्निकम् ।

वक्ष्यार्थे कामदा नाम उन्दाहृतं यथन ॥ ९ ॥

यपश्च "यम् चतुशः शान्तिर्भविषी । अदमारवशा कुबजं पदम् पद्मसन्निभम् ।

एषिदं गगनमेव कुबजमप्युन्नासितम् । (वरुं भदन् कुबजभदः)-विवादा

नमः। एडवर्तिचराचर चतुरशीतिलक्षयोनिः समुद्र तनानाविवातङ्कसमुदायदू-
रीकरणमुखदीर्घायुष्यनैरुज्यवलपुष्टिप्राप्त्यनन्तरं सार्वजनीनद्वेदगतचर्मगतम-
स्तिष्कगतामयसंशोधनोत्तरकालिकवर्म्मार्थकाममोक्ष प्रतिबन्धकसमस्तान्त-
ररायक्षपणसाधनकर्त्तव्यभौमांतरिक्षमहोत्पातेतिभयमूलसमुच्छेदनमूलकचतु-
र्वर्गतिद्विकोशोद्घाटकसर्वनिगमागमोक्तशु र्मफलप्राप्तयेऽमुकयज्ञपूर्वाङ्गतया
यजुःशास्त्रीयपद्धत्युक्तप्रकारेणाग्निस्थापन करिष्ये ॥ कुशैर्हस्तमात्रमितांभूमि
परिसमूह्य तान्कुशानैशान्यां दिशि परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य सुवमू-
लेन प्रजापतिभागगृहीतेन यथोरं तिष्ठोरेखा विलिख्यल्लेखनक्रमेणानामि-
कांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्यपूर्वं क्षिप्त्वा जलेनाभ्युक्ष्य पीठं पूजयेत् कुशाक्षतैः ।
ॐ रत्नमल्दिनाय नमः ॐ चतुर्वारमंडलाय नमः, ॐ रत्नवेदिकायै नमः,
ॐ स्वैतच्छत्राय नमः, ॐ रत्नसिंहासनाय नमः, ॐ वैराग्याय नमः
ॐ ऐश्वर्याय नमः, ॐ अधमाय नमः, ॐ अज्ञानाय नमः, ॐ अवैराग-
्याय नमः, ॐ अनैश्वर्याय नमः ॥ इति पञ्चभूस्संस्कारान्कृत्वा ॥ ततः
कात्यादिपात्रे पैपलत्वादिरशम्यारणिज सूयकातज श्रीत्रियागारजं वाऽग्नि
संस्थाप्य, अग्निस्संस्कारं कुर्यात् । ॐ मीयगृह्णाम्यग्ने अग्नि
रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ इति मङ्गलम् ॥ ॐ
गर्भो अस्योपीना गर्भो वनस्पतीना गर्भो विश्वस्य भूतस्यग्निगर्भो अपा-
मसि ॥ इति गर्भाधानम् ॥ ॐ विवस्वानादित्येप ते सोमपीय तस्मिन्मत्स्य-
श्रद्धस्मै नरो वर्चसे दधातन ॥ यदाशीर्दादिन्पतिर्विमिश्रतः पुमान्पुत्रो

कोष्ठे ॥ जाठराग्निः स्यात्कन्यादोऽमृतमक्षणे ।

समुदे वाडबो ज्ञेयः क्षये संवत् को भवेत् ॥ १० ॥ इति ॥

ब्राह्मणतत्त्वम्—

ब्राह्मणश्च कुलीनाश्च वेदवेदाङ्गाः ।

पट्कर्मनिरताः शुद्धाः स्वाध्याये चैव तत्पराः ॥ १ ॥

चतुस्रं स्वाद्राशा वतुलमिष्यते । वैश्यानामर्धचन्द्राभं शूद्राणां म्यस्तमोरितम् ।

चतुरस्रन्तु सर्वपाकेनिदिच्छन्त तात्रिधाः ॥ (दुर्गाहोमे त्रिकोणकुपदं स्थान्)

त्रितेन्द्रिया जितक्रोधा अग्निहोत्रनरायणाः ।

पनदीना निर्बिषया सत्यशीचपरायणा ॥ २ ॥

उभयोः कुलयोः शुद्धा ये शुद्धा वाचकाः स्मृताः ।

कुटुम्बिनो महाभागास्ते विप्राः कलदायकाः ॥ ३ ॥

नृक्षत्र च धिराश्चैव पटुताः श्यामदन्तकाः ।

‘होमार्थं चैवं कर्तव्यं कुचक्षत्रं चैव त्रिकोणम् । स्पष्टदन्तं ना द्रव्यं त्रिकोणं
मानताः राभ्यु’—इति तद्विधाने दशभागवतवचनात् शरदाजितकादिश्रवण-

जायते विंदते कस्वधा निश्वादाश्च पथते गुहे ॥ इति पुंसवनम् ॥ ॐ
 कृत्वा सत्यो मदानामधर्हिष्ठो मत्सदंघ्रिः द्वाचिदाह्वे वसुः ॥ इति
 सोमन्तोन्नयनम् ॥ ॐ अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना
 पयः ॥ गोजोरराध्रमायुः परन्ध्रया ॥ इति जातकर्म ॥ ॐ यदापि
 एष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धनं एतदग्ने अन्नृणो भवान्यदं तौ
 पितरौ मया सम्प्रचरुस्त्वां सन्मा मद्ग्रेण वृक्तो विष्टव्यविमपाप्मना
 गृह्ण ॥ इति नामकर्म ॥ ॐ पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च दिशः चदजयतो
 वज्रेण ॥ सविता पञ्चक्षरेण पङ्क्तुनुदजयत्तानुज्येष्मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त
 मान्यान्पशूनुदजय ॥ स्तानुज्येष्वां बृहस्पतिष्ठाक्षरेण गायत्रीमुदचयत्ता-
 मुज्येष्म ॥ इति निष्क्रमणम् ॥ ॐ अन्नपतेन्नस्य नो धेहानमीवस्य
 शुष्मिणः प्रमदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ इत्यन्न-
 प्रारानम् ॥ ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोवा
 ससिं बर्हिषि ॥ इति चूडाकर्म ॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं
 पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टवाग्भ्यस्तनूभिर्व्यरोमहि देवर्हिषं
 यज्ञायुः ॥ इति कर्णवेधः ॥ ॐ अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत्तमुज्येष्म-
 मन्विनीद्व्यक्षरेण द्विपदो मनुष्यानुदजयत्तानुज्येष्वां विष्णुस्त्र्यक्षरेण
 ब्रह्मलोकानुदजयत्तानुज्येष्वां सोमश्चतुर्क्षरेण चतुष्पदः पशूनुदजयत्तानुज्ये-
 ष्म ॥ इत्युपनयनम् ॥ ॐ अश्वस्याश्वस्य सम्पत्तिः पुत्राणामभिसम्पदे ॥
 आयुर्वलभ्रियाद्दन्त्या सा न एहि रुन्धति ॥ इति वेदारम्भः ॥ ॐ प्रतं
 कृणुताग्निप्रंष्टाग्निर्यज्ञो धनस्पतिर्यज्ञियः ॥ देवी धियं मनामहे समृतीका-
 मभिष्टुये वचो धायज्जवाहसध्रमुतीर्वा नो अस्सरो ये देवा मनोजाता
 मनोयुजो दक्षकृतेवस्ते नोयन्तु ते नो यन्तु तेभ्यः इति समावर्तनम् ॥
 ॐ गाव उपावतावतं यज्ञस्य रमुदा उवा कर्णा हिरण्मया ॥
 इति गोदानम् ॥ ॐ भग पव भगवो अस्तु देवास्तेन वर्यं
 भगवन्तः स्याम तत्परा भग सर्वं इज्जोहवीति म नो भग पुर
 एतामवेद् ॥ इति विवाहः ॥ ॐ अतावानं वेश्वानरमृतस्य

प्रवादी च पराद्रेषा अष्टाचारः शठस्तथा ॥ ४ ॥

नित्यमन्तृतकारी च शठोरं क्रूरकर्मणि ।

पाक्षयश्चनिरतो यश्च देवत्राक्षेणनिन्दकः ॥ ५ ॥

गोलकाः कुपटकश्चैव निन्दकाः प्रेतमानसाः ।

राजतेका पय विप्रा यश्चकर्मणि बन्दिताः ॥

प्रत्येकं न चतुश्चक्षुष्येव प्रायस्त्यगृहम् । समस्तकुपटविधानपतिरादकनिराये-
 ध्येयंवेदः, एवं सर्वकथं देशाचारेण वा व्यवस्था । (कुपटपञ्चकम्)—

ज्योतिष्मती अस्तुर्ध्वर्ममीमहे ॥ इति चतुर्थीः॥ अथावाहनम्—ॐ उपयाम
गृहीतोऽस्यग्ने त्वा वर्चस एष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे अग्ने वर्चस्विन्
वर्चस्वाँस्त्वं देवेष्वसि वर्चस्वानहं मनुष्येषु भूयासम् ॥ इति षोडशसंस्कारा-
न्युक्त्वा ॥ अग्निं येषां वा कुण्डे स्वाभिमुखं स्थापयेत् ॥ ॐ वैरवानरो न
उतय आप्रयातु परावतः अग्निर्नः सुष्टुती रुष ॥ ॐ अग्निं दूतं ॥
इत्यग्निं संस्थाप्य ॥ तत्रं यज्ञियकाष्ठानि ॐ त्वामद्य ऋषय आर्पयेति
मन्त्रेण संस्थापयेत् ॥ ॐ अग्निमूर्द्ध्वेति मन्त्रेणाग्निं प्रज्वालयेत् ॥ अनामि-
कांगुष्ठयोगेन प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्—ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्वृहस्पतये
ब्राह्मणे तेन यज्ञं रतिं तेन मामव । ॐ मनो जूतिर्जु पतामाज्यस्य
वृहस्पतिर्यज्ञमिमं नोत्वरिष्टं यज्ञं धं सभिमं दधातु विरवेदेवास इह माद-
यन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥ ॐ तदस्तु मित्रां ॥ ॐ भृमुवः स्वः भो अग्ने इहागच्छं
इह तिष्ठ ॥ अथ ध्यानम्—ॐ शक्तिं स्वस्ति कामीति मुच्यैर्दोर्ध्वैर्दोर्ध्वैर्भिर्द्वा-
रपामंजपाभम् । हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः ॥
कुशकण्डिकाक्रमः—यजमानोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्ध मासनं दत्त्वा तदुपरि
प्रागग्रान्कुशानास्तीर्य, अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव, भवानीति, तयस्त-
स्मिन्नासने कृताग्निपरिक्रमं ब्रह्माणमुदङ्मुखे उपवेशयेत् । प्रणीतापात्रं
पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छेद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्ने-
रुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्, एकाशीतिदर्भानाद्या विंशतिमाग्नेयावीशा-
नान्तम् । विंशतिं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं विंशतिं नोऽर्ध्याद्याव्यान्तम्, विंशति-
नैर्ध्याद्याव्यान्तम्, विंशतिमग्निनतः प्रणीतापर्यन्तं परितोऽयं कुशम-
वशिष्टमेकं स्वदक्षिणतः लुब्धस्थापनार्थं स्थापयेत् । अग्नेरुत्तः पश्चिमशि-
पवित्रकरणार्थं साममनन्तर्गभं कुशत्रयं, पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम्,

आसनानि स्यातः—

कीशेन कम्बलं चैव अजिनं पटमेव च ।

दाक्षजं तालवर्धं वा आसनं परिकल्पयेत् ॥

कृष्णाजिने शानसिदिमौ तृभौन्यामिचमोऽप ।

वंशाजिने न्याभिनायः कम्बले दुःशमोचनम् ॥

प्राच्यां शिरः समारुह्यातं बाहू दक्षिणतोऽभयोः । उदरं कुशद्वयित्पुच्छं योनिः

पादौ च पश्चिमे च बाहूदुग्धस्य विस्तार्य खननं तदशो गेहम् । कुशानां

अभिनारं नीलवर्णं रक्तं वर्यादिकम्पि ।

शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः कर्षोपां चित्रकम्बलम् ।

पद्मारजिः कर्पूरजम् ॥ त्रयोदशकुण्डः उदयननः ।

कुशद्वयं मध्यमं पार्श्वे मन्वेरास्यं प्रकीर्तितम् ।

प्रोक्षणीपात्र आग्नेयाली, चरयाली, सम्मार्जनरूपं. पञ्चकुशा, त्रेणीरूपोपयमनकुशा सप्त, पलाशसमिधस्तिष्ठ, स्रव, आयम्, पट् पञ्चाशदुत्तरमुष्टिशतद्वयान्च्छिन्न तण्डुलपूर्णपात्रं मदक्षिणम्, एतानि सर्वाणि पत्रि च्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वद्विराक्रमेणासादनीयानि स्थापनीयानि] च्छेदनायैकुरात्रयेण माप्रमन-तर्गार्भकुशद्वयं द्वित्वा सपत्रिदक्षिणरूपेण प्रणीतोदके त्रि प्रोक्षणीपात्रे निधाय, व्यस्तम्, द्वाभ्यामनामिकागुष्ठान्यामुत्तराम् पत्रि घृत्वा तेन प्रोक्षणीजलस्य त्रिस्तत्र कुर्वन् प्रोक्षणीपात्रं वामहस्ते घृत्वा, दक्षिणानामिकागुष्ठाभ्यां पत्रि गृहीत्वा तेन प्रोक्षणीजलं त्रिदक्षिण्य, प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणी विधाय, प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुमचर्चं कृत्वा, अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् आग्न्यस्थान्यामाज्यं निरूप्य, व्यधिमित्य [तापयित्वा] वज्रतुल्यमुकेन प्रदक्षिणक्रमेण इविषेष्टयित्वा वही तत्प्रक्षिपेत्, स्रवमधोमुखं प्रतप्य सम्मार्जनकुशानामर्मरन्तरतो - लौवक्षितं सद्यम्, प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य, पुनः प्रतप्य, रन्दक्षिणतो ध्रुवकुशोपरि निदध्यात्, अग्निं दक्षिणक्रमेणाभ्यमग्नेर्यतायामतो निदध्यात् प्रोक्षणीकम् त्रिदक्षुयावेक्ष्य, सत्यपन्नये वनिरस्य, पूर्ववत्योवण्युत्पन्नं कुर्यात् वेणीरूपोपयमनकुशान् (उपमहार्धायान्कुशान्) वामहस्ते कृत्वा तत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा घृताक्षः पालाशसमिधस्तिष्ठ समिद्धवमे

यस्मिन् सर्वाणि वापाणि वाचनीयानि नित्यं ॥ १ ॥

यारय रूपं मेवज्जानाद्यं तादृशम् ॥ (होमप्रमाणेन कुरहमानम्)—मुष्टिमापयित्वा कुण्डं शकार्थं उपवक्षते । रावहामगितस्तिमान् हस्तमानं तदङ्गं । यजानाकृत्यं कालाये—

आग्नेयाली त्रेजशी वा मृन्मशी वा प्रकीर्तिता ।

द्रादशाद्रुतस्तिष्ठायां प्रादेशोच्यं शुभा स्मृता ॥ १ ॥

आग्नेयाली स्या नैव चरयाली प्रस्यते ।

प्रणीता वारया माग्ना द्वादशाद्रुतसमिता ॥ २ ॥

द्रिहस्तममुते लक्षं चतुरस्तमुदीक्षितम् ॥ (कुरहमानने मलतायामम्)—

उपदाना मन्त्रास्तिस्रां मुष्टिमात्रे तु ता. कयात् । उत्तेषामामतो चेवा

त्वातन दग्धलवदाहृत्या पधस्त्रवत् ।

पुरोवास्त्य पात्री तु चतुरस्ता समान्त ॥ ३ ॥

सातेन वज्रं क्षनेव युवा यजे प्रस्यते ।

सादिरा वादुनायन्तु उरु स्रवश्च स्रव ॥ ४ ॥

प्ररनिनाया हंशरवा वज्रं क्षाद्युं श्रमंता ।

ऽनौ तूष्णीं जुहुयान् ॥ उपविश्य ॥ सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षि-
णक्रमेणाग्निं पयुक्ष्य, प्रणीतापात्रे पवित्रं निधाय पातितद-
क्षिणजानुब्राह्मणान्धारब्धः (ब्रह्मणो दक्षिणहस्तेन दक्षिणस्थ-
कुर्येन वा अनुसृष्टः) समिद्धत्वेऽग्नावाज्याहुतीः सुवेण दद्यात्,
प्रजापत्यादिद्वादशाहुतिर्न्यन्तं सुवावस्थितद्वतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे
प्रक्षीयः कार्यः ॥ इथाहुतयः ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये,
इति पूर्वद्वारहोमः । ॐ इंद्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय, इत्यग्निमध्ये
उत्तरद्वारहोमः । ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये, इत्याधारी दक्षिण-
पूर्वाद्धि ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय इत्याज्यभागौ, उत्तर-
पूर्वाद्धि । इति चतुर्द्वारहोमः ॥ अथ व्याहृतयः ॥ ॐ भूः स्वाहा,
इदमग्नये ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे ॥ ॐ स्वः स्वाहा, इदं
सूर्याय ॥ ॐ भूर्भुवः स्वाः स्वाहा, इदं सवित्रेभ्यः ॥ एता
महाव्याहृतयः ॥ अथ पञ्चवारुणी (प्रायश्चित्त) होमः ॥ ॐ
त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीमाः ॥
यजिष्ठो यद्वितमः शोशुचानो विरवा द्वेपा ॥ १ ॥ ॐ स त्वन्नो अग्नेवमो भवोतीनेदिष्टो अस्या
उपसो न्यष्टो ॥ अवयद्व नो वरुण ॥ २ ॥ ॐ रराणो वीहि मृदीकं ॥
सुहसो न पथि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥ २ ॥ ॐ
अपारचाग्नेस्यनभिशास्तपारव सत्वमित्त्व मया असि ॥ अपानो यन्नं वहा-
स्यगानो धेहि भेषजं स्वाहा ॥ इदमग्नये ॥ ३ ॥ ॐ ये ते शतं वरुण
ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा बितता महान्तस्तेभिर्नो अथ सवित्रोत
विष्णुर्विरवे मुञ्च मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे

द्वयेकायं जुलसग्निताः । विष्टिमान् कुण्डे वेदाग्निनयनागुलाः । कुण्डे
द्विहस्ते ता द्वेपा रसवेदगुणागुलाः । चतुर्हस्तेषु कुण्डे वसुतकपुगागुलाः ।

अथपंचवारुणा च युक्तो नासाकृतिर्भवेत् ॥ ५ ॥

उपभूत् सकृन् वासुकृत् च पुष्करसूक्तयेव च ।

अग्निहोत्रस्य इवपी तथा वैकृतः सु वः ॥ ६ ॥

पवित्रप्रमाणम् ।

द्वयज्जलं मूलतलं मन्यरेकाहुतिर्भवेत् ।

मेलनानां भवेदग्निः परितो नेभिरंगुलार् । एकहस्तस्य कुण्डस्य पंचवेदकप्या-
मुषोः । विष्टारोत्तरेवतो द्वेपा मेलज्य सर्वतो कुषेः । इदमग्ने योनिरागुनु-

चतुर्गुलमत्र स्वात्पवित्रस्य प्रमाणकम् ॥ १ ॥

द्वयज्जलं चित्तं पात्रं द्वयज्जलं व्यासमभ्यर्च्य ।

विष्णवे विश्वेश्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः ॥ ४ ॥ ॐ तदुत्तमं
वरुणशशममद्वाधम विमध्यम ॥ अथाय अथा वयमादित्यत्रते तवा-
नागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणायादितये ॥ ५ ॥ अथाग्नि-
पूजनम्—आग्नेर्दं स्थापयेत्पूर्वं यजुर्वेदन्तु दक्षिणे । पश्चिमे सामवेदन्तु
उत्तरे च हयवर्णम् ॥ इति चतुर्दिक्षु पाद्यादिभिर्वेदान्सम्पूज्य ततोऽग्निजिह्वा-
पूजनम्—ॐ काल्यै नमः, ॐ कराल्यै नमः, ॐ मनोजवायै नमः, ॐ
सुलोहिनायै नमः, ॐ सुधूचवर्णायै नमः, ॐ स्फुलिङ्गिन्यै नमः, ॐ विश्व-
रूचये नमः, ॐ लोलायमानायै नमः सप्तजिह्वामुद्रां प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः
स्वः सप्तजिह्वा इडागच्छत इह तिष्ठत पाद्यादीनि समर्पयामि ॥ अथ
जिह्वाभ्यो नमः सम्पूज्य ॥ अथावाहनम्—ॐ तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वा-
युस्तद्वा चन्द्रमाः ॥ तदेव शुक्रं तद्वा ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ॥ १ ॥
सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि ॥ मैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्चन
मध्ये परित्रमभत् ॥ २ ॥ न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यरः ॥
हिरण्यगर्भं इत्येषः मा मा हिंसीदित्येषा यस्मान्न जात इत्येष ॥ ३ ॥
एषो ह देवः प्रदिशो नु सर्वापूर्वो ह जातः स उर्गर्भे अन्तः स एव
जातः ॥ स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्गं जनांस्तितष्ठति सर्वं लोभुषः ॥ ४ ॥ चत्वारि
श्रृङ्गाश्चमयो अस्व पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य त्रिधा वृद्धो
वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्या आबिवेश ॥ ५ ॥ रुद्रेकल्पे—रुद्रतेज
समुद्रभूतं ॥ इत्यावाहनम् ॥ ॐ पुरुष एवेदं ॥ सर्वं यद् भूतं यद्
भाज्यम् ॥ उतामृततत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति इत्यासनम् ॥ आस-
नार्थं, पुष्पं समर्पयामि श्रोमदग्नये नमः ॥ ॐ शक्तो देवीरभिष्टप

॥ समन्तात्प्रवक्ष्यं मूर्ध्नि पंचपात्रमिति स्मृतम् ॥ २ ॥

पौष्टिके पंच दर्भाश्च चतुर्दर्भाश्च शान्तिके ।

वैश्विके तु त्रिदर्भाश्च द्वौ दर्भौ नित्यकर्मणि ॥ ३ ॥

पर्यश्वरपयवत् ॥ नृप्यगल्पेऽहस्तानां कुण्डानां योनिपरिता । पटवत्पुष्पं
लायाम वेस्तारोन्नतिशालिनी ॥ एकगुलन्तु योन्यमं कुर्यादीपिदधोमुखम् ।

मार्कण्डेयः—

चतुर्दिर्भर्भिजुलैर्ब्रह्मस्य पवित्रम् ॥

पदेकन्यूनमुद्दिष्टं वयं यथाक्रमम् ॥ ४ ॥

अग्निः—

अनामिकाभूतदेशे पवित्रं पारयेद् द्विजः ।

एकगुलज्ञो योनिं कुण्डेभ्योऽप्युपधयेत् । यवयवकमेव योन्यग्रमपि यथं
देत् ॥ स्पृष्टादारव्यं नालं स्वापोन्यं मर्त्यं वरग्निकम् । नार्वं कुण्डलोप्ये

आपो भवन्तु पीतये शंखोरमिषवन्तु नः । इति पाद्यं समर्पयामि ॥
 श्रीमद्भगवते नमः ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोत्प्रेक्षामव-
 द्बुनः ॥ ततो विष्वक् व्यक्रामत्साशनानराने अभि ॥ इत्यर्घ्यं
 समर्पयामि ॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ-
 सर्जनीस्यो वरुणस्य ऋतसद्वन्मसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य
 ऋतसदनमासीद् ॥ इत्याचमनीय सम० ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वदुष्टः सन्भृतं
 पृथदाज्जयम् । पशून्स्तान्चक्रे वायव्यानाराण्यामाम्याश्च ये इति स्नायीय
 सम० ॥ ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्तिस स्रोतसा सरस्वती तु पञ्चभासौ
 देशोभवरसेरित् ॥ इति पञ्चामृत सम० ॥ ततः पञ्चामृतस्नानानानन्तरं
 शुद्धोदकं सम० ॥ ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उभ्रेयान्भवति
 जायमानः ॥ तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाप्यो मनसा देवयन्त ॥ इति
 वस्त्रं सम० ॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यज्ञसहजं पुरस्तात् ॥
 आयुष्यमायं प्रतिमुञ्च शुभ्रयज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः इति यज्ञोपवीतं सम० ॥
 ॐ अलङ्करणमसि भूयोऽलङ्करणं भूयाः ॥ इति भूषणाभावे रजतादि द्रव्यं
 समर्प० ॥ ॐ अक्ष-शुना ते अक्षशुपृच्छतां परुषा परुः ॥ गन्धस्ते
 सोममवतु मदाय रसो ज्युतः ॥ इति चन्दनं सम० ॥ ॐ अक्षन्मीमवन्त
 अक्षप्रियाऽधूवत ॥ अस्तोषस्त्वभानवो विप्रान्त्विष्टयामनी योजान्विन्द्र
 ते हरी ॥ इत्यक्षतान्त्रम० ॥ ॐ याहरद्यमदग्निभद्राये कामायेन्द्रि
 याय ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च । इति पुष्पाणि सः ॥
 ॐ धूसि धूर्ध्वं धूर्ध्वन्तं धूर्ध्वं तंयोस्मान्धूर्ध्वति तं धूर्ध्वं यं वयं धूर्ध्वमः । देवा
 नामसि बद्धितमं धृष्टिनतमं पप्रितमं जुष्टमं देवदूतमम् ॥ इति धूपमाघ्रा-
 पयामि ॥ ॐ चंद्रमा मनस इति दीपं दर्शयामि ॥ ॐ अन्नपतेन्नस्य नो
 घेहानमीवस्य शुष्मिणः ॥ प्रप्रदातारं वारय ऊर्जं नो येहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

अग्निनियमस्तु संभवे-

उत्तमोऽरणि जन्मोऽग्निरुत्तमः सूर्यकान्तिजः ।

उत्तमः भोत्रियागाराण्यमः स्वयहादपि ॥ १ ॥

अथ समिधाहोममन्त्राः—

ॐ समिधाग्निं पुनस्वत प्रवेक्षोपयताविधिम् ।

योनिं ता तन्ववितमः ॥ कुपवानां कल्पयेदन्तर्नामिमन्त्रुजसन्निभाम् । तत्त-
 क्कुपवानुस्पर्शं वा मानमस्य निगद्यते ॥ मुष्टयस्त्येकहस्तं नो जाभिरुत्तेषता-

अस्मिन्हम्या जुहोता स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ सुप्रमिडाप योषिषे धूतं तीव्रं जुहोतन ।

अग्नये जायवेदसे स्वाहा ॥ २ ॥

इति नेवेद्यं निवेद्यामि श्री० ॥ तृषा दूरीकरणार्थमिदं जलं समर्प० ॥
 ततः करमुत्प्रक्षालनार्थं च जलं समर्प० ॥ मुखवासार्थं पूगीफलताम्बूलं
 समर्प० ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्ततामे भूतस्य जातः पतिरेक भासीत् ॥
 स दाधार पृथिवीं स्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ इति दक्षिणा
 सम० ॥ कपूरारार्तिक्यं दर्शयामि ॥ ॐ प्रतिपदसि प्रेतिपदेत्वाऽनुपदसि
 नृपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोसि तेजसे त्वा ॥ इति परिक्रमणम् ॥
 ततो नमस्कारः । ॐ नमस्ते देव देवेश नमस्ते वरद प्रभो ॥ वैश्वानर
 नमस्तेतु सर्वदा मङ्गलं कुरु ॥ इति षोडशोपचारेण अग्निपूजनम् ॥
 अथ पञ्चगव्यहोमः-सामैः सप्तपत्रैर्हरितैः कुरीदंशाहुतोर्जुं हुयात् ॥
 तत्र मन्त्राः—ॐ इरावतीधेनुमनीहि भूत धि सूयवासिनी मनवे वरास्या ॥
 व्यस्कन्ना रोदसी विष्णवे ते दावयं पृथ्वीमभितो मयूखैः स्वाहा ॥
 इदं पृथ्व्यै ॥ १ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदये पदम् ॥ समूह-
 मस्य पांशुसुरे स्वाहा ॥ इदं विष्णवे ॥ २ ॥ ॐ मानस्तोके तनये मा न
 आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषिः ॥ मा नो वीरान् रुद्र भामिनो
 वज्रीर्हविर्मन्तः सद्भि त्वा हवामहे स्वाहा, इदं रुद्राय ॥ ३ ॥ ॐ प्र-
 पन्नानं प्रथमं पुस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः ॥ सुयुष्या उपमा-
 अर्त्ये विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा ॥ इदं ब्रह्मणे ॥ ४ ॥
 ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये ॥ ५ ॥ ॐ सोमाय स्वाहाः इदं सोमाय
 ॥ ६ ॥ ॐ तत्सवितु० इदं सूर्याय ॥ ७ ॥ ॐ प्रजापते न त्वदेतान्य-
 न्यो निरता रूपाणि परिता बभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमरतत्रो अस्तु
 वयमस्याम पतयो रथीणां स्वाहा इदं प्रजाहृतये ॥ ८ ॥ ॐ स्वाहायै
 ॥ ९ ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते ॥ १० ॥
 पुनरर्च्य ॐ देवकृतं ॥ इति पञ्चगव्यहोमः ॥ अथ यरादिहोमब्रह्मपूत-

ॐ तन्ना समिन्द्रिन्द्रो धूयेन यदंशमसि ।

यद्वत्तोवाय विष्टय स्वाहा ॥ ३ ॥

रतः । दिशिवंदागुलोपेता कुर्यदेभ्येषु वर्धयेत् ॥ यवद्रूपकमेणव नामि
 पृथगुदायः । योनिर्बुधे योनिमन्बुधे नामि विवर्जयेत् ॥ कुर्यद्विष्टो

ॐ उरगाग्नेर्हविष्मर्तृषूतचोर्पन्तु इत्यंत ।

नृपस्य समिधो मम राहा ॥ ८ ॥ इति समिधाहोमः ॥

गद्याभियतये देवा प्रथमा तु वरादुतिः ।

अथ यरादिहोमं वेदेनेतद्विनिश्चितम् ऐ

दे माये चरन्माणन्—

चतुर्मां वराहत्वा द्विमां चान्वयेत् च ।

प्रोक्षणम्—ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य
हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशः आदिशो विदिश उदिशो दिभ्यः
स्वाहा ॥ ॐ तेजोसि शुक्रस्यमृतमसि धामनामसि प्रियं देवानामनाघृष्टं
देवयन्तमसि ॥ इति ह मद्रव्याजयेकोकृत्य परवान् ॐ आपो द्विषेतादि
मन्त्रैः सग्गोत्रयेदर्पजलेन ॥ हवनीयद्रव्याय नमः सम्पूज्य, एष गन्धः
एतान्नान् इमानि पुण्याणि धूपमाग्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं
निवर्षयामि, दक्षिणां समर्पयामि ॥ ग्रहसमिधः अर्कः पलाशः स्वदिरो
ह्यगमागोऽथ पिप्पलः ॥ औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशश्च समिधः
क्रमात् । समिधाम्भो नमः पाद्याहानि समर्पयामि इति सम्पूज्य ॥ ततः
तस्मिन् यरादिहोमद्रव्ये यजमानो ब्राह्मण एव वा संकल्पं कुर्यात् ॥
यवकुशजलतेनान्यादाय ॥ अग्नेहेत्यादि० अमुकशर्माहं ममात्मनो वा
अमुक्य यजमानस्य श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासोक्तस्तत्फलप्राप्त्यर्थं
[वा अमुकमामरासिनां] सर्वैश्वर्याभिष्टुद्धयर्थं सकलमनर्ह-
स्तिवकामनासंसिद्धयर्थं लोके वा समायां राजद्वारे वा सर्वत्र
परोविजयलाभादि—ऽप्यर्थः, इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदु-
रितोपशमनार्थं समस्तभयव्याधिरापीडाल्पमृत्युपरिहासद्वार आयुगारोग्यैर-
वर्याभिष्टुद्धयर्थं सकलदुष्टमहजनितानिष्टफलनिराकरणार्थं सर्वोपशेदि-
नाराहेतवे, आदिस्थादिनवमहानुकूलवासिद्धयर्थं आधिदैविकाधिमौक्तिका-
ध्यात्मिकप्रविधितापोपशमनार्थं धर्मार्थकामार्थचतुर्वर्गफलनापत्तये अमुक-
ज्ञेये वा तीर्थे, करिष्यमाणे अमुकनाम्नि महायज्ञे पूर्वाङ्गतयागणपत्या-
दिचतुर्देवानां प्रीतये ऋग्वेदादिचतुर्वेदानां संप्रीत्यर्थं, अधिप्रत्यधिदेव-

दोषः) खातेऽधिके भवद्रोहिनीने चेत् भयदयः । यक्रकुबडे तु स्युतारो, मरणं
भिन्नमेखले । मेखलारहिते शोकोऽप्यधिके विचरन्त्ययः । भार्यविनाशनं प्रोक्तं
कृष्णस्तिलाज्जमार्गं च ह्येकभागं च ताण्डुकम् ।

शर्करावाश्चार्द्धकागं हवनस्य विधित्वम् ॥ १ ॥

अन्यच्च—

तिलं घृतं समं कृत्वा यवान्नं द्विगुणी कृतम् ।

तददं तद्वज्रा देया होमलाभान्यकर्मणि ॥ २ ॥

कुण्डे योन्या विना कुने । आस्य प्वंसनम्रोक्तं कुण्डं यत्कपठवर्जितम् ।

तदेवं कुण्डनिर्माणस्यातीव तुष्करतया ध्यूनाविषयाच्च दोषभयान्त्युप-
पत्तिश्च—

चतुर्भागं तिलान्नं च द्विभागं चान्यमेव च ।

यवान्नम् त्रिभागं स्पाञ्जापमेकम् तद्वज्रम् ॥ ३ ॥

तासद्वितसूयोदिनत्रयहदेवतानां वैदिकमन्त्रैर्घृताभिषारितवत्तत्समिधाभिः
तथा पंचलोकपालभगणपत्यादीनां, अष्टलोकपालानां च । इन्द्रादिद्वाद-
शकाल] अगस्तिध्रुवप्रथिवीवास्तुर्कर्मक्षेत्रपालादिदेवानां सत्रतार्यं तथा
च विष्णुसर्पकृष्णांडीश्रियो मेधायारव रक्षोघ्नीगायत्रीजातवेदेति मन्त्रैः
श्रीलक्ष्मीनारायणयज्ञपुरुषप्रोक्त्यर्थं च सतिलयवतंडुलाज्यैर्नृगीमुद्रानिर्दि-
ष्टैर्यथाविधिना होमं करिष्ये ॥ तथा च सन्वत्सवारभ्य होमपूर्वोत्तरा-
ङ्गपूर्णद्विपर्यन्तं चरुस्थालीपाकेन वा होमं करिष्ये ॥ तदङ्गवया
विश्वेदेवाचनपूर्वकनान्दीमुखश्राद्धं वा घृतच्छाद्यञ्च करिष्ये ॥ इति
सङ्कल्पं होमद्रव्यादौ त्यक्त्वा ॥ अथ पूर्वादिप्रतिचरणे विश्वेदेवापू-
जनम् ॐ विष्णुर्विष्णुर्हिरिः त्रिरचम्य ॥ अक्षत्रलिं वध्वा-ॐ आग-
च्छन्तु महाभगा विश्वेदेवा महावक्ताः ॥ यज्ञकर्मणि ये देवा साव-
धाना भवन्तु ते ॥ ॐ विश्वे देवान्भवन्तु आवाहयिष्ये ॐ आवाहय,
इत्यावाहनमुद्रां प्रक्षर्य पुष्पाक्षतैः—ॐ विश्वेदेवास आगत ऋणुता
महम ॥ इयम् ॥ एदम्यर्हिनिपीदत ॥ ॐ भुभूवः स्वर्गिरेदेवा
इशागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु इह सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ ब्रह्मवि-
ष्णुशिवात्मकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः सम्पूज्य पादं समर्पयामि,
एष गन्धः, एतानक्षतात्, इमानि पुष्पाणि, धूपमाद्यापयामि, दीपं दर्शयामि,
नैवेद्यं निवेदयामि, इच्छिणां समर्पयामि, ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः (यव-
कुशाजलान्यादाय ॥ अमुकयज्ञे आभ्युदयिरुभादे सत्यवसुसंज्ञकानां विश्व-
वेयां देवानामेष हिगुणापादार्घ्यं वो नमः स्वाहा ॥ १ ॥ गणपत्यादिदेवेभ्यो
नवमहोम्य इन्द्रादिदिक्पालेभ्यः पञ्चत्रोरुपालेभ्योऽरिवन्यापष्टाविंश-
तिनक्षत्रेभ्यो नान्दीमुखेभ्य एष एष हिगुणापादार्घ्यं वो नमः स्वाहा ॥ २ ॥

फलम्—

आयुर्नारां घृताधिक्ये पुत्रनारां तिलाधिक्ये ।

स्थाने स्पष्टिलमेव कुर्यात् । वदुक्तम्—नित्यं नैमिषिकञ्चाम्यं स्पष्टिले वा सता-
चरेत् । इत्तलापेण तत्कुर्यादासुकाभिः मुखोभनम् । कुशवल्ग्वेखला कृत्वा योनि
धनधान्यसमुद्भिः स्थापयामिष्ये न संशयः ।

तदुक्तलाधिक्ये हानिः शर्कराधिक्ये तमम् ॥ ४ ॥

अथ—आयुर्नारां वा ॥

अथ होमद्रव्यमहोमे नृदाजुषम्—

मयूरी कुशकुटी ईनी वृक्षी च मूनी तथा ।

इतरा ततः परम् । सोमपन मते श्रोतृत्वं हि ज्ञानचतुरस्रम् । विरक्तगुणमपेक्ष-
यद्वाप्यावरणं चकनं यथा ॥ (अग्नेः वपुर्गच्छाः)—काली काली च मनोवहा

मेवादिद्वादशराशिभ्य उपग्रहेभ्योऽन्येभ्योऽपिग्रहमण्डलसंस्थेभ्यो देवेभ्यो
नान्दीमुखेभ्य एष हिंगुलापादार्धो वो नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ अग्रस्त्यादिभ्यो
ध्रुवदिभ्यो नान्दीमुखेभ्यः एष हिंगुलापादार्धो वो नमः स्वाहा ॥ ४ ॥
कुजदेवताभ्यो वास्तुपुरुषक्षेत्रपालादिभ्यो नान्दीमुखेभ्य एष हिंगुलापादार्धो
वो नमः स्वाहा ॥ ५ ॥ सत्यवसुसुंलकभ्यो देवर्षिपितृमनुष्येभ्यो नान्दी-
मुखेभ्य एष हिंगुलापादार्धो वो नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ इति विश्वेदेवामे
दद्यात् ॥ ॐ आग्रहान्निषि मंत्रेणार्धजलेन विश्वेदेवानामभिषिञ्चनं
कुर्यात् ॥ इति नान्दीमुखश्राद्धम् अथ घृतच्छायाविधानम् । तैजसे पात्र-
घृतं प्रक्षिपेत्-ध्रुवोसीति प्रजापतिर्ध्रुविर्गायत्रीछन्दो ध्रुवो देवता घृतच्छा-
यायां विनियोचः ॥ ॐ ध्रुवोसी ध्रुवोयं यज्ञमानोस्मिन्नायतने प्रजया
पशुभिर्भूयात् ॥ घृतेन याया पृथिवी पूर्यथामिन्द्रस्य च्छदिरसि विश्वजन-
स्यच्छाया स्वाहा ॥ इति वारत्रयं कृत्वा ॥ शेषं घृतं-ॐ जयंती मगला
कालो भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा चमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा
नमोस्तु ते स्वाहा ॥ इति व्वह्नौ प्रक्षिपेत् ॥ ॐ यानि कानीति परिक्रमणं
कृत्वा ब्रह्माचार्यस्विगादिभिर्नामैराशिषं गन्धाक्षतैश्च गृहणीयात् ॥
समिद्धोमं विधाय ॥

अथ यवादिरोमद्रव्याहुतिः प्रारम्भः ॥ आदौ गणपत्यादि चतुर्वेधहोमः-
हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपति ॥ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ॥
हवामहे निधीनात्वा निधिपति ॥ हवामहे वसो मम ॥ आहमजानि
गर्भधमाक्षमजासि गर्भधं स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ता-
द्वितीमतः सुठयो वेन आवः ॥ सबुध्या उपमा अस्य विष्ठाः सतरच
योनिमसतरच त्रिषः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ विष्णोररत्नमसि विष्णोः रत्नप्रस्थो
लिङ्गोः सूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवे स्वा स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमः

पञ्च मुद्रा विजानीयादोमद्रव्यग्रहे बुधः ॥ १ ॥

भुञ्जेन पाणिना द्रव्यं तुजनीरहितेन यत् ।

क्रियते हवनं विप्रैर्मयूरी ता विदुर्बुधा ॥ २ ॥

अङ्गुष्ठरहिताः सर्वा अङ्गुल्योतानलचिताः ।

हवनं क्रियते तामिः कुक्कुरी वा प्रकीर्तिता ॥ ३ ॥

च सुतोहिता चैव मुधुप्रवर्णा । स्फुलिङ्गिनो विश्वरुचिस्तथा च चलायमाना
इति सप्तैजिहाः ॥ ॥ एताश्चोक्ता विशेषपेण शतम्या ब्राह्मणेन तु ॥ (होमे
सूकरी करचङ्कोची मृगी मुक्तकनिष्ठिका ।

हंती स्यात्तर्जनी मुक्ता त्रिषा मुद्राः प्रकीर्तिताः ॥ ४ ॥

शान्ति के च मृगी श्रेया हंती पौष्टिकधर्मणि ।

शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय
 च शिवतराय च स्वाहा ॥ ४ ॥ ततः पञ्चगव्याभिषेकः प्रतिहोमान्ते कर्त्त-
 व्यः ॥ यथा-ॐ यथावाणमहाराणां कवचं वारणं भवेत् ॥ तद्वह्नौ पपा-
 तानां शान्तिर्भवति वारणम् ॥ १ ॥ यथा समुत्थितं यन्त्रं यन्त्रेण प्रतिहन्यते ॥
 तथा समुत्थितं घोरं शीघ्रं शान्त्या प्रशम्यति ॥ २ ॥ प्रज्ञा गात्रो
 नरेन्द्रारच प्रह्वणाश्च विशेषतः ॥ पूजिताः प्रतिपूषन्ते निर्दहन्त्यप-
 मानिताः ॥ ३ ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः
 शान्तिरोपधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विखेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म
 शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ४ ॥
 विखानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव ॥ यद्ब्रह्म तन्न आसुव ॥ ५ ॥
 ॐ शान्तिः ३ ॥

अथ चतुर्वेदहोमः ॥ ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्
 ॥ होतारं रत्नपातमं स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव-
 स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमग्न्या
 इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा गावस्तेन ईशत मापशोसो
 ध्रुवा अरिमन् गोपतौ स्यात बह्नीर्यजमानस पशन्पाहि स्वाहा ॥ २ ॥
 ॐ अग्न आयाहि वीतयेगृणानो हव्यदातये ॥ निहोता ससि
 बर्हिषि स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पातये
 शंयोरभिस्तवन्तु नः स्वाहा ॥ ४ ॥ पूर्ववदभिषेकः ॥ ४ ॥ पूर्ववद-
 भिषेकः ॥ इति ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणहोमः

अथादिप्रत्यभिरेवतासदितनेवप्रहाणां होमः । हरि ॐ अग्निं दूतं
 पुरोदधे हव्यवाहमुपमवे ॥ देवा आसाद्यादिह स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ
 आहुष्येनरजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिंसययेन सविता

अभिषारे एकरी स्वादिद्रेपोच्चाटनादिप ॥ ५ ॥

मुद्रादीनं तु यो भो ॥ ६ ॥ जारमारण्यं कुक्कुटी ॥ इति ॥

मुद्राः) —मयूरी कुक्कुटी, हंसी कुक्करी च मूगो, तथा । पञ्च मुद्रा विजानी
 पादहोमद्रव्यप्रदे बुधः ॥ न्युज्जेन पाणिना द्रव्यं तर्जनोरहितेन यन् ।—क्रियते
 अथाग्निलक्षणाणि शारदायम्—

यत्र काष्ठं तत्र भोजं यत्र धूमस्तत्र नातिका ।

यत्राक्षपवत्तनं नेत्रं यतो मक्ष्म तवः शिरः ।

यत्र मन्त्रनिष्ठो बह्निस्तन्मुखं नातयेदलयम् ॥ १ ॥

हवनं विमर्मेयूरी ता निशुक्रपाः ॥ अंगुडवर्धिता, सर्वा अंगुल्योद्यानलक्षिताः

हवनं क्रियते पाभिः कुक्कुटी या मञ्जीरिता ॥ विकनिष्ठा तु हंसी रयान्मुकुटा

रथेना देवो यातु भुवनानि पश्यन्स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे
सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृता-
त्स्वाहा ॥ इदं हविरादित्याय स्वाहा ॥ ॐ अप्सवने सधिष्ट वसौ-
पधीरनुवृद्धयसे गर्भे सञ्जायसे पुनः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ इमन्देवा
असपत्न ॥ सुवर्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय जानराज्यायेन्द्रस्ये-
न्द्रियाय ॥ इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा
सोमोस्माकं ब्रह्मणानां ॥ राजा स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ जातवेदसे सुनवा-
मसो ममरातीयतो निदहाति वेदः । नः पर्यदतिदुर्गाणि विश्वा-
नावेय सिन्धुन्दुरिता त्यग्निः स्वाहा ॥ ६ ॥ इदं हविश्चन्द्रमते
स्योनापृथिवी नो भवानृचरा निवेशनी । यच्छानः शर्म
सप्रथाः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ अग्निन्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः
पृथिव्या अयम् ॥ अपा ॥ रेता ॥ सि जिवति स्वाहा
॥ ८ ॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथम जायमान उच्यन्समुद्रादुत वा पुरीपात् ॥
रथेनस्य पक्षा हरिणस्य बाहु उपस्तुत्य महिजातन्ते अर्वन्स्वाहा ॥ इदं
हरिर्भौमाय स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेवा निदधे पदम् ॥
समूढमरय पाधसुरे स्वाहा ॥ ॐ उदबुद्धयस्त्वान्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्ते
सधसृजेधामयं च अस्मिन्सवस्थे अद्वयुत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमा-
नरश्च सीदत स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ विष्णोरौराटम ॥ ११ ॥ इदं हविर्बु-
धाय स्वाहा ॥ ॐ महो २ इन्द्रो ब्रह्मस्तः । पोडशी शर्म यच्छतु हन्तु
पाप्मान योस्मान्द्वेष्टि उपयाम गृहीतोसि महेन्द्राय त्वैप ते योनिमहे-
न्द्राय त्वा स्वाहा ॥ १२ ॥ ॐ बृहस्पते अतियदयो अर्हा शुमद्विभाति

कलम्—

वैयज्यत्वं कर्णहोमे नेत्रेऽन्वत्वमवाप्नुयात् ।

नाशिकायाः मनः पीडा शिरोहोमो हि रज्जवदः ॥

अधोमुख ऊर्ध्वपादः प्राङ्मुखो हन्यवाहनः ।

तिष्ठत्येव स्वमावेन आहुतिः कुत्र दीयते । १ ॥

सूकरी भटा । मध्यमानामिकागुह्यमृङ्गी चैवोपलक्षिता ॥ फणमूलयजो शंया

मुद्रा श्रेष्ठा शिलपिडनी । जारमारण्यकचन्धे कुक्कुटी तु प्रकीर्तिता ॥ वश्यो

सर्वित्राम्बुहस्तेन बहूनेः कुर्यात्प्रदक्षिणा ।

हन्यवाट् सलिलं दृष्ट्वा बिभेति सन्मुखो भवेत् ॥ २ ॥ इति भुतेः ॥

अथ सुवधारणविधिः—

अग्ने धृत्वार्यनाशाय मध्ये चैव मृतयजा ।

मूले न म्रियते होता सुवस्थान इय भवेत् ॥ १ ॥

क्रतुमञ्जनेषु । यदीदृशचक्षयस ऋतप्रजात तदस्मासु त्रिविण्मोहि चित्रं
स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं ॥ १५ ॥ इदं हविर्हृदस्पतये स्वाहा ॥
ॐ शुक्रज्योतिरव सत्यज्योतिरव ज्योतिरमोररव ॥ शुक्ररव ऋतपार-
चात्यध्वाः स्वाहा ॥ १६ ॥ ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्तत्रं
पयः सोमं प्रजापतिः ॥ ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं धं शुक्रमन्वस
इन्द्रम्येन्द्रिय मिदं पयोमूर्तं मधु स्वाहा ॥ १७ ॥ ॐ त्रातामिन्द्रध्रुवे
हवे मुह्य धं शूरमिन्द्रं हयामि शकं पुरहूतमिन्द्र स्वस्ति नो मयवा-
धातिन्द्रः स्वाहा ॥ १८ ॥ इदं हविः शुक्राय स्वाहा ॥ ॐ प्रजापतेन
त्वदेतान्यन्यां विरवारूपाणि परिता यमूव यत्कामास्ते त जुहूमस्तन्नो
अस्तु पय धं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा ॥ १९ ॥ ॐ शन्नो देवो
॥ २० ॥ ॐ यमाय त्वा मगाय त्वा सूर्यस्य त्वा उपसे देवात्वा
सञ्चिता मन्वा नक्तु पृथिव्याः सधं स्पृशस्वाहि ॥ अर्विरसि शोचिरसि
तपोसि स्वाहा ॥ २१ ॥ इदं हवि रनैरचराय स्वाहा ॥ ॐ नमोस्तु
सर्वेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये अंतरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्वेभ्यो
नमः स्वाहा ॥ २२ ॥ ॐ कया नरिचित्र भामुव दूती सदाशुभः सदा ॥
कया शविष्ठया वृता स्वाहा ॥ २३ ॥ ॐ कापिरसि समुद्रस्य त्वावित्वा
ब्रह्मयामि । समापो अद्भिरन्मव समोपयोभिरोपधीः स्वाहा ॥ २४ ॥
इदं हवि राहवे स्वाहा ॥ ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणी ब्रह्मवर्चसी जाय-
तामाराष्ट्रे राजन्यः शूरा इषव्य वित्वाधो महारथो जायतां
वाग्ध्रो धेनुर्वेदातद्वानाशुः सन्तिः पुरन्ध्रयोपा जिष्णू रयेष्ठाः समेयो
युवांस्य यजमानस्य वीरा जायतामिरुहामे निरुहामे नः पर्जन्यो अभिवर्षतु
फलवृषो न ओषधयः पच्यन्तां योषहोमो नः कल्पतां स्वाहा ॥ २५ ॥ ॐ

चन्द्रानर्वाणा कर्मणा सुकरी मता ॥ शान्तिके पीष्टिके कार्ये मृगी हंसो तमो-
चना ॥ (शक्त्यप्रमाणम् — वित्तास्तु द्विगुणाः प्रोक्ता यवेभ्यश्चक्षेव संधंदा ।
अप्रमथ्याश्च यन्मन्त्रं जुहमथ्याश्च मर्ष्यतः ।

सुखं धारयते विद्वान् कृत्वा च सदा जुषेः ॥ २ ॥

तजनी च बहिः कृत्वा कनिष्ठाः च बहिस्तथा ।

मन्त्रदानामिकाग्रुष्टेः सुखं धारयते द्विजः ॥ ३ ॥

चतुष्टुत पश्चिमेव षडष्टु लम्भाति वा ।

अमुष्पया यवाग्निके यवग्रास्ये धनत्रयः । सर्वकामसमृद्धयर्थं वित्तापिपथं
सदा हि ॥ (शाक्यनिर्माणे वित्तादीनां यन्मन्त्रं वास्तुविद्यासंग्रहे यथा—

ॐ शं भूमाचक्षाय धारयेच्छुद्धममृदया ॥ ४ ॥

अग्निः शोभश्च गृध्रश्च रुद्रश्चैव प्रजापतिः ।

केतुङ्कश्यन्तकेतवे पेशोमर्या अपेशसे ॥ समुपाद्भिरग्रायथाः स्वाहा ॥ २६ ॥
 ॐ इन्धानास्त्वा शत १३ समिधीमहि वनस्वन्तो वयस्कृत १३ सह स्वन्त-
 सहस्कृतं अग्ने सपत्नदपदं भनामदध्यासो अदाभ्यं चित्रावसो स्वस्ति ते
 पारमशीय स्वाहा ॥ २७ ॥ इदं इविः केतवे स्वाहा ॥ अभिपेकः ॥

अथ पञ्चलोकपालहोमः ॥ हरिः ॐ गणानान्त्वा० इदं गणपतये
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ जातवेद से० इदं दुर्गायै स्वाहा ॥ २ ॥ वाता वामतो
 वा गन्धर्वाः सप्तवि १३ शतिः ॥ ते अयेस्वमयुं जँस्ते अस्मिञ्जवमादधुः
 स्वाहा ॥ इदं वायवे स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ यावाङ्मुशा मधुमत्यस्विना सूनृता-
 वती ॥ वया यज्ञमिमिच्छतम ॥ उपयामगृह्णातोऽस्यस्विभ्यान्वेप ते योनि-
 माँष्वीभ्यान्त्वा स्वाहा ॥ इदमाकाशाय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ अश्विनोभ्यैपज्येन
 तेजसे ब्रह्मवचंसायाभिपिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिपि-
 ङ्गवामीन्द्रस्येन्द्रिणवलाय भियै यशसेऽभिपिञ्चामि स्वाहा ॥ इदमरिवभ्यां
 स्वाहा ॥ ५ ॥ पूर्ववदभिपेकः ॥

अथ गणपत्यादीनामष्टलोकपालानाञ्च होमः । हरिः ॐ नमो गणे-
 म्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो प्रातेभ्यो प्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो
 गृत्सेभ्यो गृत्तपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विरवरूपेभ्यश्च वो नमः
 स्वाहा ॥ ॐ गणपतये स्वाहा ॥ ॐ मूपकाधिपतये स्वाहा । ॐ परशु-
 चाणाय स्वाहा [ॐ ईश्वराय स्वाहा ॥ ॐ सर्वोत्पातप्रशमनाय स्वाहा ॥
 ॐ विद्यये स्वाहा ॥ ॐ तिथिदेवतायै स्वाहा ॥ ॐ धामच्छद्मिनिरिन्द्रो
 ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ॥ सचेतसो विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे स्वाहा ॥
 एवं सर्वत्र] ॐ गणपतये मूपकाधिपतये परशुचाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ११

पठन्तु यज्ञदेवस्य देवतास्तु सुवे सदा ॥ ५ ॥

यमभाग त्यजेन्मूलं षोडशाङ्गुलमग्रतः ।

प्रजामागे लुबो धार्यः, सर्वकर्मप्रसिद्धये ॥ ६ ॥

चतुर्भागास्तिलाः कार्यांश्चभागान्स्वाज्यमेव च । श्वेता यवा द्विभागाः स्युस्तदर्थं
 सपहुलाः स्मृताः । तदर्थं शर्करा शेयेत्यादि यथेष्टं शर्कराऽऽज्यञ्चेत्यपि स्वचि-
 फलम्—

स्रवामे वा॥ते बहिर्बिभागश्चतुरङ्गुलः ।

अग्निस्थानेऽग्निसन्तापः सोमे वलेष उदाहृतः ।

सूर्ये पशुविनाशः स्याद्रौद्रे रौद्रमयं भवेत् ।

प्रजापतौ प्रजावृद्धिर्यमे मृत्युभयं भवेत् ॥ एतिसुवधारणविधिः ॥

दुपलभ्यते । एव शास्त्रसम्मतत्वेऽपि निर्धना यजमाना महर्षत्वादाज्यस्य भाग-
 द्वयं तत्राप्यशक्तावेकभागमेवाऽऽददीरन् तु भागप्यमेव । देशकालावाधिरूपं

ॐ इन्द्रायेन्दु ॐ सरस्वती नरा रा ॥ सेन नग्नहुम् ॥ अवातामस्विना
मधुमेपर्जं भिपजासु ते स्वाहा ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ शचीपतये स्वाहा ॥
ॐ वज्रवाधाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वराय स्वाहेति पूर्ववत् ॥ ॐ इन्द्राय
शचीपतये वज्रवाधाय इदमग्नये स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अग्नि दूतं पुरो ॥
ॐ अग्नये स्वाहा ॥ ॐ मेधाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ ज्वालावाणाय स्वाहा ॥
ॐ ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ॐ अग्नये मेधाधिपतये ज्वालावाणाय इदमग्नये
स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ यमेन दत्तं त्रित एतगायुनगिन्द्राय प्रथमो अद्वय-
तिष्ठत् ॥ गन्धर्वो अस्य रशनामगृष्णात्सूरादश्व वसवो निरतप्ट स्वाहा ॥
ॐ यमाय स्वाहा ॥ ॐ प्रेताधिपतये स्वाहा ॥ ॐ दण्डवाणाय स्वाहा ॥
ॐ ईश्वराय स्वाहेति पूर्ववत् ॥ ॐ यमाय प्रेताधिपतये दण्डवाणाय
इदमग्नये स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छतेनस्येत्यामविदि
तस्करस्य ॥ अन्यमम्मदिच्छसात इत्यातमोदे विनिश्चते तुभ्यमस्तु स्वाहा ॥
ॐ वैश्रवणाय स्वाहा ॥ ॐ यज्ञाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ खड्गवाणाय
स्वाहा ॥ ॐ ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ॐ वैश्रवणाय यज्ञाधिपतये खड्ग-
वाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य
ऋतसदनमासीद् स्वाहा ॥ ॐ वरुणाय स्वाहा ॥ ॐ मकराधिपतये
स्वाहा ॥ ॐ पारावाणाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ॐ
वरुणाय मकराधिपतये पारावाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ वातो
वामनो वा ॥ ॐ वायवे स्वाहा ॐ अन्तरिक्षाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ
ध्वजवाणाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ॐ वायवे अन्तरिक्षा-

कर्मविशेषे नियमाः—

पादेन पादमाकम्प्य जप नैव शु कारयेत् ।

शिरः प्राकृत्य वक्ष्त्रेण ध्यान नैव प्रारभ्यते ॥ १ ॥

न पाणिपादतृणलो न नेत्रचण्डो द्विजः ।

न च शङ्खचक्रलव्हेव जपमिच्छिदमवाप्नुयात् ॥ २ ॥

धर्मस्य वरिष्ठः । समृद्धास्तु शास्त्रनिर्देशानुरूपमेव समानुरोधः । शित्तानां

सर्वाधिर्यं सर्वपापेभ्यः समृद्धानामावश्यकमेव, अन्यथा प्रत्येकामभ-

माशक्त्यसहितायाम्—

मन्त्रो हीनः स्वगतो वर्ज्यो वा

मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह ।

न यावत्तत्र यजमानं दिनस्ति

यमन्द्रश्चतुः स्वरलोऽपराधात् ॥

धिपतये चक्रवाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं सोमो घेनु ॥ सोमो
अर्वन्तमाशु ॥ सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति सादन्यं विदत्थ्य ॥ समेयं
पितृभ्रवणं यो ददारादस्मै स्वाहा ॥ ओं भोमाय स्वाहा ॥ ओं नक्षत्रा-
धिपतये स्वाहा ॥ ओं अमृतवाणाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वरायेति पूर्ववत् ।
ओं सोमाय नक्षत्राधिपतये अमृतवाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ८ ॥ ओं
विष्णोरशट् ॥ ओं विष्णवे स्वाहा ॥ ओं लक्ष्मोपतये स्वाहा ॥ ओं
चक्रवाणाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वराय स्वाहेति पूर्ववत् ॥ ओं विष्णवे
लक्ष्मोपतये चक्रवाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ ईशावास्यमिदं ॥
सर्वं यत्किञ्चिज्जगत्याज्जगत् । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः
कस्यस्विद्धनं स्वाहा ॥ ॐ ईशानाय स्वाहा ॥ ओं उमापतये
स्वाहा ॥ ओं त्रिशूलवाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ओं
ईशानाय, उमापतये त्रिशूलवाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ १० ॥ ओं
ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॥ ओं ब्रह्मणे स्वाहा ॥ ओं ब्रह्माधिपतये
स्वाहा ॥ ओं कुशवाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ओं ब्रह्मणे
ब्रह्माधिपतये कुश [पाणये] वाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ११ ॥ ओं
पातालाधिपतये स्वाहा ॥ ओं विषवाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वराय स्वाहेति
पूर्ववत् ओं सर्गाय पातालाधिपतये विषवाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ १२ ॥
अभिपेक्षः ॥ इत्यष्टलोकपालहोमः ॥

अथागस्त्यादिर्ज्ञेयपालहोमः । हरिः ओं अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः
प्राजापत्यवत् मोक्षयमाणः ॥ उभावर्याद्विष्वक् पुषोप सत्या देवेष्टाशिपो
जगाम स्वाहा ॥ १ ॥ ओं ध्रुवन्ते राजा वरुणो ध्रुवन्देवो बृहस्पतिः ॥
ध्रुवन्त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवं स्वाहा ॥ २ ॥ ओं स्योना
पृथिवी ॥ ३ ॥ ओं वास्तोष्पते प्रति जानाद्यस्मान्स्त्ववेशो अनमीवो भवः
न ॥ यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शञ्चतुष्पदे

यात् ॥ (द्रव्यमेदेनाऽऽहुतिप्रमाणम्)—कर्ममात्रं घृतं होमे शुद्धिमात्रं पयः
स्मृतम् । गुडं पञ्चामात्रं स्याच्छर्कराणि तथा मता ॥ नीहयो धृष्टिमात्राः

सकारे सूतर्कं नाम हकारे नृत्यसूतकम् ।

अक्षरद्वयसंयुक्ता आहुतिः कस्य दीयते ॥ १ ॥

सकारे शङ्कराक्षरेण हकारे हरिरुच्यते ।

अक्षरद्वयसंयुक्ता आहुतिस्तस्य दीयते ॥ २ ॥

कुपटस्य पूर्वदिग्भागे काली जिह्वा प्रतीतिता ।

स्युर्मुदगमापा यवा अरि । तद्युलः स्युस्तदर्भाश्चरुमाषार्धमेक च ॥

आव्ययश्चादित्यादि लुपेण, समिधो, नूलो द्वयद्वयं विहाय मध्यमाना-

स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने चर्द्धया त्वम् ॥ तस्मै
देवा अयिन्नरयज्व ब्रह्मण्यद्वि स्वाहा ॥ ५ ॥ ओं क्षेत्रस्य पतिना
वयं हि तेनैव जयामसि ॥ गमस्व पोषयित्वा सन्नोभृतातीक्ष्णो स्वाहा
॥ ६ ॥ पूर्वदभिषेक इति क्षेत्रपालहोम ॥

अथ विष्णुहोम हरि ओं त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा
अदाभ्य ॥ अतो धमाणि धारयन्स्वाहा ॥ १ ॥ ओं बद्धिप्राप्तो विष्णुर्धवा
जाग्रदाधस समिन्धते विष्णायत्परम पद स्वाहा ॥ २ ॥ ओं अतो
देवा अरन्तु नो यतो विष्णुविचक्रमे ॥ पृथिव्या सत्त्व धामभि स्वाहा
॥ ३ ॥ अभिषेक ॥

अथ सपहोम । हरि ओं नमोस्तु सर्वेभ्यो ॥ १ ॥ ओं या इषवा
यातुधानाना ये वा वनस्पतोऽध्वरु ॥ ये वावटेषु शेरते तेभ्य सर्वेभ्यो
नम स्वाहा ॥ २ ॥ आ ये वामी राक्षसे दिवा ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ॥
येहानप्सु सदृकृत तेभ्य सर्वेभ्यो नम स्वाहा ॥ ३ ॥ अभि ॥

अथ कृष्णायसाहोम । हरि ओं यदेवा देवदेवत
देवासरश्चक्रमा जयम् ॥ अग्निर्मा तस्मान्नसो विश्वान्मुञ्चत्वध्वस
स्वाहा ॥ १ ॥ ओं यदि दिवा यदि नक्तमेना ॥ सि चक्रमा वयम् ॥
यायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चन्त्वध्वस स्वाहा ॥ २ ॥ यदि
नामद्यदि भ्यज एनाधसि चक्रमा वयम् ॥ सूर्यो मा तस्म न्नसो
विश्वान्मुञ्चत्व ॥ हस स्वाहा ॥ ३ ॥ अभिषेक ॥

अथ भियो मधायार्व होम । हरि ओं सदसस्तिसदभूतमिष्य
मिन्नस्य कान्यहम् ॥ सन्निभेधामयाभिषेधस्वाहा ॥ १ ॥ ॐ यान्
मेधा देवगणा पितरश्चोपासते ॥ तथा मामद्य मेधयाग्ने मेधाविन

आग्नेवे तु करालाख्या दक्षिण तु मनाजवा ॥

मुक्तोदिता च नेष्टृत्वे धूमवर्षं तु वारुण ।

स्कृतिनिनी तु वायव्ये साम्ये विश्वरुचिस्तथा ॥ १ ॥

आपुतवदराहोममात्रा —

गायत्र्याग्ने शतं द्वाऽष्टौ शतं इत्यम्बुजेन च ।

मिषागुह्येऽनुपात् । चर यावज्जम हाणिनेव जुहुयात् । प्राणार्थं वरुणित्येव ।

प्राणं सर्वेष्वेव तदभावे यज्ञियान्गुह्येन जुहुयात् । विष्णुभिर्द्वाभिरकाद्वि,

ततो महादिमन्यैश्च जुहुयादष्टायेत्यतः ॥

उपस्पर्शमिग्नप्रथ शतययमभ्युपवते ।

शतययस्य कृष्णायदेवादशशतं च ॥

कुरु स्वाहा ॥ २ ॥ ओं मेधाम्ने चरुणो ददातु मेधामभिः प्रजा-
पतिः मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्वाता ददातु मे स्वाहा ॥ ३ ॥
ओं इदम्ने ब्रह्म च त्वं चोमे श्रियमश्नुताम् ॥ मयि देवा दधतु
श्रियमुत्तमान्तस्यैते स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं ओश्च ते लक्ष्मीश्च पत्या-
वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यातम् ॥ इष्णुनिपाण मुग्ध
इपाण सर्वलोकम् इपाण स्वाहा ॥ ५ ॥ अभि०

अथ रक्षोघ्न । हरिः ओं [ओं त्र्यम्बकं यज्ञा० ॥ ओं काण्डात्
काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण
शतेन च स्वाहा ॥ ओं या शतेन प्रतनोपि सहस्रेण विरोहसे
तस्यास्ते देवीपुके विधेम हविषा वयं स्वाहा । ओं यास्ते अग्ने
सूर्ये रुदो विदमा तन्वन्ति रश्मिभिः ॥ तामिर्नो अद्य सर्वाभी
रुचे जनाय नस्कृधि स्वाहा] कृष्णुष्य पाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं
पाहि गजे या मर्वोर इमेन तृध्वमनु मसितिन्द्रणानोस्तासि विद्वधरस-
स्तपिष्टैः स्वाहा ॥ १ ॥ ओं तव ध्रमास आमुया पतन्त्यनुस्पृश
धृता शोशुचानः ॥ तपृष्ठध्वग्ने जुहा पतद्वा न सन्दिता विसृजविष्-
वगुल्फकाः स्वाहा ॥ २ ॥ ओं प्रतिस्पर्शो विसृज तूर्णितमो भवा
पायुर्विशो अस्या अद्भ्यः ॥ यो नो दूरे अवराधसो यो अन्त्यग्ने
मा धिष्टे व्यथिराद्वर्षीस्त्वाहा ॥ ३ ॥ ओ उदग्ने तिष्ठत्यातनुध्वग्-
मित्रो ओपता तिग्महेते ॥ यो नो आरति ध समिन्ना न चक्रे नीचार्त
यक्षतसन्न शुष्क स्वाहा ॥ ४ ॥ ओ ऊर्ध्वो भव प्रतिविद्धपाद्वस्मदावि-
पृष्णुष्य देव्याग्नये ॥ अवस्थिषा तनुदि या तु जूनां जामि-
मजामि अमृणीहि शत्रुन् अग्नेष्ट्वा तेजसा सद्यामि स्वाहा ॥ ५ ॥ अभि०
अथ दिशोमः । हरिः ॐ प्राच्यै दिने स्वाहाऽवाच्यै दिशो स्वाहा

मीदृष्टेति मन्त्रेण रक्षोघ्नैः शतपञ्चम् ।

रक्षोहाविश्ववर्षणजुहुयात्क चक्रे शतम् ।

क्षेत्रेण विज्ञेयैका । (पूर्वे द्रव्यपरित्यागः)—आदौ द्रव्यपरित्यागः परवाद्धोमो
विष्पते । प्रवाद्धतिद्रव्यत्यागस्त कर्तुंमश्वरत्वादादौ द्रव्यत्यागः । (पश्चि-

महस आतवेति काण्डात्काण्डात्परं च ।

पदशतं भेदं तेनेष निशतं शकदेवतैः ॥

एतेषु दशनाहसं हुत्वा स्नानं समाचरेत् ॥

इत्युत्तरस्यामन्याः ॥

दृष्टाः)—यानोऽन्तास्तप्योपप्लवयेद्ब्रह्माक्षराः । अथवा, दुग्धरो नित्यश्चन्दनः
मालत्स्या । आत्रय देवरात्रयं यदिप्येति याजुष्ठाः । (अग्निः)—(१)

दक्षिणायै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे
स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहोर्वाच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहा ॥ १ ॥
पूर्ववदभिपेकः ॥

अथ गायत्रीहोमः । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो
यो नः प्रचोदयात्स्वाहा ॥ इति जपित्वाष्टोत्तरशतवारं जुहुयात् ॥ अभि-
पेकः ॥ तथैव-श्रौं जातवेदसे० इत्यष्टाविंशत्यधिकशतवारं पठित्वा होमं
कुर्यात् । अभिपेकः ॥ इति यवादिहोमद्रव्याहुतिं दत्त्वा । सूर्यमन्त्रैः
पूजिताग्नौ घृतधारं कुर्यात् ॥ उत्थाय तत्र मन्त्रा-आदित्यं गर्भं पयसा-
मंग्घ्रिसहस्रस्य प्रतिमा विरवरूपम् ॥ परिवृग्धि हर सामभिर्मं ॥ इत्या-
शवायुषं कृष्णुहि चीयमानः स्वाहा ॥ ओं विश्वतश्चक्षु रत विश्वतो मुखः
विश्वतो बाहु रत विरुत विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धर्मति सन्पतत्रैर्धर्वा-
वाभूमी जनयन्देव एकः स्वाहा ॥

अथ सन्वत्सरहोमः । श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिः ओं मीढुष्टम
शिग्रतम शिवो नः भुमना भय ॥ परमे वृक्ष आयुधग्निदाय कृत्ति वसान
आचर पिताकं विभ्रदागहि स्वाहा । १ ॥ ओं अश्वावती ॥ सोमावतीमू
जंयन्तीमुदोजसम् ॥ आश्रितिस सर्वा आपधीरस्मा अरिष्टाततये स्वाहा ॥ २ ॥
ओं सन्वत्सरोसि परिवत्सरोसीदापत्सरोसीद्वत्सरोसि वत्सरोसि ॥ उपसस्ते
कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्द्धमासाप्ते कल्पन्ताम्मासास्ते कल्पन्तामृत
वस्ते कल्पन्ता ॥ सम्पत्सरास्तेः कल्पन्ताम् ॥ प्रेत्या पत्यैसज्जवां च प्रच-
सास्य मुपयाचिदमि तथा देवतयाङ्गिरस्वद्भुवः सीद स्वाहा ॥ ३ ॥
अभिपेकः ॥

अथ ऋतुहोमः । हरिः ओं वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुवाः ॥

जनसंख्याहोममन्त्राः-

गायन्त्रा दशप्रदसं मानस्तोत्रेन पद्गुणम् ।

त्रिशद्वह्नादिमन्त्रैश्च चत्वारि विष्णुदेवतेः ॥ १ ॥

नागुष्ठादिभिः कायां समित्यूलवय कञित् । न त्रिगुणा चत्वारि चैव न वकीडा
न पाटिवा । प्रादेशमात्रा संयोग्या समित्यत्र नाभिका ॥ (समिदादीनामा-

होमायदेतुं द्रव्यावयवः ॥

इत्यादि मन्त्रैः सप्तसंख्याहोममन्त्राः ॥

पूर्वं प्रत्यर्पितो यगिर्द्विर्द्वयं मुमुक्षुर्व्रतः ।

गृध्रो निर्गमनिर्गाला मृशमिः परिधीर्तितः ॥ १ ॥

नयनम्) गमित्युपगुणादीनि ब्रह्मणः स्वरामरेत् । रात्रानोतेः कमकीतेः कम
कुरन्त ब्रह्मणः ॥ समिदं एव होम्यन्-योजनचिपि जुहोम्यन्तो अग्नारिषि

स्त्रिंशोमृतास्तु ताः ॥ सत्येन रेवतीः क्षत्रं हविरिन्द्रे वयो दधुः
॥ ६ ॥ अभिषेकः ॥

अथ मासहोमः [ओं नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाहोरा-
त्रेभ्यः स्वाहाद्विमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः स्वाहार्त्त-
वेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा यावापृथिवीभ्यां स्वाहा चन्द्राय
स्वाहा सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः
स्वाहादित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा
मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः स्वाहा
फलेभ्यः स्वाहाहोपवीभ्यः स्वाहा ॥ ॐ एकस्मै स्वाहा द्वाभ्यां स्वाहा
शताय स्वाहा व्युष्ट्यै स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा ॥ ॐ हिरण्यगर्भः
समवर्त्ततामे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥ सदाधार पृथिवी
द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम स्वाहा] अर्द्धमासाः पक्षेऽपि
ते मासा आच्छन्तु शम्यन्तः ॥ अहो रात्राणि मरुतो विलिष्टं सूदयन्तु
ते स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा
शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहा ईषाय स्वाहा-
र्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय
स्वाहाऽहसस्पतये स्वाहा ॥

अथ पक्षहोमः । हरिः ॐ इमौ ते पक्षावजरो पक्षत्रिणौ याम्या
ऽरक्षाऽक्षरपक्षस्यग्ने ॥ ताभ्याम्पतेमसकृतामुलोकं यत्र ऋपयो जग्मुः
प्रथमजाः पुराणाः स्वाहा १ अभिषेकः ॥

अथ तिथिहोमः । हरिः ॐ अग्नैः पक्षतिर्वायोर्निपक्षतिरिन्द्रस्य
तृतीया सोमस्य चतुर्थ्यदित्ये पञ्चमीन्द्रायै षष्ठी मरुताऽसप्तमी
ष्टस्पतेरष्टम्यर्च्यग्नौ नवमी धातुर्दशमीन्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी

सूक्तविचारः—

अतश्च विवाहेषु भादे होमेऽर्चने जपे ॥

आरम्भे सूतकं न स्यादनारम्भे ॥ सूतकम् ॥ १ ॥

मारम्भो वरुणं यज्ञे सङ्कल्यो अतस्त्रयोः ।

नान्दीभ्रातृ विवाहदौ श्रद्धे पारुपरिक्रिया ॥ २ ॥

च मानवः । मन्दाग्निरामयावी च दरिद्रश्चैव जायते ॥ भवेदन्धः सपूमे ॥

बुद्ध्याघो हुताग्ने । तस्मात्समिद्धे होतव्यं नासमिद्धे कदाचन ॥ (अग्निध-

पेठीनसिस्मृतेः—

विवाहदुर्गायज्ञेषु यात्राया तीर्थकर्मणि ।

न तत्र सूतकं तद्वत् कर्म यज्ञादि कारयेत् ॥ ३ ॥

यमस्य त्रयोदशी स्वाहा १ ॐ नन्दायै स्वाहा, ॐ भद्रायै स्वाहा,
ओं जयायै स्वाहा, ओं. श्रों रिक्तायै स्वाहा, ओं पूर्णायै स्वाहा ॥
इति ॥ त्रिवारमुच्चार्य जुहुयात् ॥ अभिषेकः ॥

अथ सप्तवारहोमः । हरि ॐ आकृष्येन रत्नसा० इति सूर्याय ॥
ओं इमन्देवा अस० इति चन्द्रमसे एव सर्वेषां मन्त्रैर्जुहुयात् ॥ ओं
कापिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या० ॥ इति च क्वचित् ॥ अभिषेकः ॥

अथ राशिहोमः । हरि ओं अश्वस्तूपरोगो मृगस्ते
प्रजापत्याः कृष्णग्रीव आग्नेयोरराटे पुरस्तात्स्मारस्वहीमेष्पध-
स्ताद्ध्वोररिचधोरामौ बाहोः सोमा पौष्णः श्यामो नाम्याधसौर्य-
यामो श्वेतरच कृष्णश्च पार्वयोस्त्राष्टौ लोमशसक्स्थौ सक्स्थोर्वा-
यव्यः श्वेतपुच्छ इन्द्राय स्वपस्थाय वेहद्वैष्णवो वामनः स्वाहा ॥ १ ॥
ओं प्रेतु वाजो कनिकदन्तानदद्रासभः पत्वा भरन्नग्निभुरीष्यमापाद्यायुषः
पुरा ॥ वृषानि वृषण्मभरन्नपाद्गर्भं ॥ समुद्रियं अग्न आवाहि वीतये स्वाहा
॥ २ ॥ ओं अयं वेनरचोदयत्पूरिनगर्भा ज्योतिर्जरायु रत्नसो विमाने ॥
इममपाध सङ्गमे सूर्यस्य शिशुन्न विषा मविभी रिहन्ति उपयाम गृहीतो
सिमर्काय त्वा स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं कमिकदञ्जनुषं प्रववाण इयति
वाचमरिते वना ययम् ॥ सुमङ्गलश्च शकुने भवासि मत्वा का इभिमा-
विरव्या विदित्वाहा ॥ ४ ॥ ओं याव्याग्रं विपू चिकोमो वृक्षं च
रक्षति ॥ स्येनं पतत्रिण ॥ सि ॥ ह ॥ सभ पात्व ॥ हसः स्वाहा ॥ ५ ॥
ओं कोदात्करमा अदात्कामोदात्कामायादात् ॥ कामो दाता कामः प्रति-
गृहीता कामेवचै स्वाहा ॥ ६ ॥ ओं वीभत्सायै पौलकसं वर्णाय हिरण्य-
कारं तुलायै वाणिजं पश्वाहीपाय ग्लाविनं विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिम्पलं
भूत्ये जागरणमभूत्ये स्वपनमार्त्येजनवादिन वृद्धया अप्रगल्भ ॥ सध
शराय प्रच्छिदं स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं नमोस्तु सर्वे ॥ ८ ॥ ओं विज्ये

मनन्) — न वध्रपायुना कुर्वातायिच्छंस्तु वादिभिः । न कुर्वाद् भिषजन कर्ह-
विद म्यन्नादिना । मुखेनेव धमेदग्नि धमन्वा वेणुजातया ॥ 'मुलादेव भ्य-
अथ संख्याहोममन्याः—

ओं नमो वः किरिकेभ्यो देवाना हृदयेभ्यो नमो चित्त्वत्तेभ्यो नमो
विदेषकेभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः स्वाहा ॥ आ रचोहा विश्वचर्पणिरभियोनि-
मया हते ॥ द्रोणे यवस्थमासदस्वाहा ॥ ओं आन्तो निपुद्भिः शक्तिनीभिर-
भर । वरसिणीभिदम्याहि यक्षन् ॥ वायो अग्निगन्धने मादयत्य मूर्धं पत
सस्तिभिः सदा नः स्वाहा ॥ इति ॥

त्रायठ — इति चतुष्पादस्थाने पाठान्तरम् । (स्वयमोक्तमेव वक्ष्यन्) — १६२

धनुः कपर्दिनो विशाल्यो वाणवाँ २ उत ॥ अनेशनस्यया इषव आमु-
रस्यनिपं गथिः स्वाहा ॥ ६ ॥ त्वामवस्युराराचस स्वाहा ॥ १० ॥ ओं
वायव्यौ वायव्यान्याप्नोति शतेन द्रोणकलशम् ॥ कुम्भीभ्यामभृणौ सुते
स्थालोभिः स्वालीराप्नोति स्वाहा ॥ ११ ॥ ओं पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि-
यन्ति स द्योतसः सरस्वती तु पञ्चघासौ देशे भवत्सरित्स्वाहा ॥ १२ ॥
अभिषेकः ॥

अथ नक्षत्रहोमः । हरिः ओं अश्विन पूतेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती
वीर्यम् ॥ वाचेन्द्रो वलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियं स्वाहा ॥ १ ॥ ओं यगाय त्वा
मखा ॥ २ ॥ ओं अग्नि मूर्द्धादि ॥ ३ ॥ ओं प्रजापतेनत्यादता ॥ ४ ॥
ओं सोमो धेनुधंसो ॥ ५ ॥ ओं नमस्ते रुद्र मन्वयव उतोत इषवे
नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ओं अदितिर्द्यौं
रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ॥ विश्वेदेवा
अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनिष्व स्वाहा ॥ ७ ॥
ओं वाचस्पतये पवस्व वृष्णो अ ध शुभ्या गमस्तिपूतः ॥ देवा देवेभ्यः
पवस्व येषां भागोसि स्वाहा ॥ ८ ॥ ओं नमोस्तु सपै ॥ ९ ॥ ओं पितृभ्यः
स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधा-
यिभ्यः स्वधा नमः ॥ अन्नन्वितरो मीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः
शुन्धध्वं स्वाहा ॥ १० ॥ ओं भग एव भगवो २ अस्तु देवास्तेन वयं
भगवन्त त्याम ॥ तन्त्वा भग सर्व इज्जोहवीति सानो भग पुर एता भवेह
स्वाहा ॥ ११ ॥ ओं अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय वोदय । वाचं विष्णुं ध
सरस्यती ध सवितारञ्च वाजिन ध स्वाहा ॥ १२ ॥ ओं सवित्रा प्रसवित्रा
सरस्वत्या वाचा त्वष्टा रूपैः पूष्णा पशुमिरिन्द्रेणांस्ते बृहस्पतिना ब्रह्मणा

सप्तजिह्वामुदा—

मध्यमे संहते धार्ये मिलिताङ्गुष्ठयोरधः ।

— रोपा अङ्गुष्ठयो मुक्ता मुद्रेयं सप्तजिह्विका ॥ १ ॥

वा त्वष्टाकृतं यस्य कर्म प्रकीर्तितम् । तस्य तावति शास्त्राये कृते सर्वं कृतं
भवेत् ॥ (द्रव्यप्रतिनिषयः)—यथोक्तवस्त्ररूपचौ ग्राह्य तदनुकारि यत् ।

स्कान्दे—

अन्नहीनो ददेद्राष्ट्रं मन्त्रहीनश्च श्रुतिबन्धः ।

यजमानमदाक्षिण्यो नास्ति यशसमो रिपुः ।

श्रुत्साममन्त्रा उन्चेर्याजुषा मन्त्रा उपाश्रवः ॥

यावानामिव गोधूमा ब्रह्मिण्यामिव शालयः ॥ दध्यलामे पयः कार्ये मध्यलामे
तथा गुदः । धृतप्रतिनिधिं कुर्यात्तयो वा दधि रो रुर ॥ आग्रहोनेषु सर्वेषु

वरुणेनौजसाम्निना वेजसा सोमेन राज्ञा विष्णुना देशन्या देवतया प्रसूतः
प्रसर्पामि स्वाहा ॥ १३ ॥ ओं त्वष्टावीरन्देवकानं जजान त्वष्टुरवा जायत
आशुरश्वः ॥ त्वष्टदं विश्वं भुवनं जजान वहोः अर्त्तारमिह यस्मि होतः
स्वाहा ॥ १४ ॥ ओं वातो वामनो ६ ॥ १५ ॥ ओं इन्द्राग्नी आगत ६
सुतङ्गीर्भिर्नर्मो वरेण्यम् ॥ अस्य पातं धियोपिता स्वाहा ॥ १६ ॥ ओं
मित्रस्य चर्पणीभृतो वो देवस्य सानसि ॥ शुम्भं चित्रः कवस्तमं
स्वाहा ॥ १७ ॥ ओं आतारमिन्द्र ० ॥ १८ ॥ ओं असुन्वन्त ० ॥ १९ ॥ ओं
अश्वगनेसधि ० ॥ २० ॥ ओं विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती विश्वे
भवन्त्वग्नयः समिद्धाः विश्वे नो देवा अवमा गमन्तु विन्मस्तु प्रविण
पाजो अस्मे स्वाहा ॥ २१ ॥ ओं प्रहजज्ञानं ० ॥ २२ ॥ ओं विष्णो-
राट ० ॥ २३ ॥ ओं वसुभ्यस्त्वादित्येभ्यस्त्वा संजानाथान्नावापृथिवी
मित्रावरुणौ स्वा वृष्ट्यावताम् ॥ न्यन्तु ययोक ६ रिहाणा मरुताम्पृथी-
गच्छ घसा पृष्णिभूत्या दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह ॥ चतुष्वा
अनेसि चक्षुर्मं पाहि ॥ २४ ॥ ओं वरुणस्योत्तर्ह ॥ २५ ॥ ओं अयो-
द्धपग्निः समिधा जनानां प्रविभेनु मियायतीपासम् ॥ २६ ॥ ॐ उत
यवानामिव गोधूमा व्रीहिषाथिव शालयः ॥ दध्यलाभे पवः कार्ये मध्यलाभे
तथा युवः । वृत्प्रोतिनिभि कुर्यात्ययो वा दधि वा नृप ॥ आज्यहंसेषु मर्षेषु
नोदियुध्न्य शणोत्वज एरुपात्पृथिवी समुद्रः ॥ विश्वेदेवा श्रुतावृषा
ब्रुवानास्तु मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु स्वाहा ॥ २७ ॥ ओं पूषन्त्व व्रते
वयन्न रिष्येम फदाधन ॥ स्तोतारस्त इह त्समसि स्वाहा ॥ २८ ॥ अभि-
येरुः ॥ इति नक्षत्रहोमः ॥

अथ विष्कुम्भादियोगहोमः ॥ हरिः ओं ॐ योजे योगे
वपस्तरं याजे याजे इवामहे ॥ सत्याय इन्द्र मूर्त्तये स्वाहा ॥ १ ॥
ओं विष्कुम्भाय स्वाहा ॥ एवं प्रत्येकं जुहुयात् ॥
अथ समुद्रहोमः ॥ हरि ओं [ओं सप्त ऋषयः प्रतिहिताः

पठनीयाः स्वशान्धीवी अन्यथाऽनर्घमाज्जनः ॥

अथ ब्राह्मणभोजनम्—

गर्भाधानादिष्वेव ब्राह्मणभोजयेद्दश ।

प्रायश्चित्ते चतुर्विंशदध्याधाने शतात्तरम् ॥

गन्धमेव पूतं भवेत् । तदभावे महिष्पास्तु आत्रमाविक्रमेव च ॥ (द्रव्यदेवत-
योरनुष्ठी ध्ययथा)—प्राज्यं द्रव्यमनादेशं श्रोतविष विधीयते । मंत्रस्य देवता
प्रायायणे च प्रायश्चित्ते विधान्दश पञ्च वा ।

गृह्यं मात्रयेऽग्ने ब्राह्मणां सर्वं पशो ।

शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम् ॥ सप्तापः स्वपितो लोकमोयुस्तत्र
जाग्रतो अस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ स्वाहा ॥ ओं पितृभ्य स्वधा० ॥
ओं पावका नः सरस्वती वाजोभिर्वाजिनीवती ॥ यज्ञ वष्टु विया
वसुः स्वाहा ॥ ओं मातेव पत्रं ध्रियवी पुरीष्यमग्निं च स्वे योनाव-
भारुपा ॥ तांभ्वि श्वैर्दे वे ऋतुभिः सविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा
विमुञ्चतु स्वाहा समुद्रोसि नमस्वा नार्द्रदानुः शम्भूर्मयो भूरभिमा-
वाहि स्वाहा ॥ मारुतोसि मरुताङ्गणः शम्भूर्मयो भूरभिमावाहि स्वाहा ॥
मारुतोऽसि मरुताङ्गणः शम्भूर्मयो भूरभिमावाहि स्वाहा ॥ वस्यूरसि
वृषस्वाङ्गवृषभूर्मयोभूरभिमावाहि स्वाहा ॥ १ ॥ ओं आपो अस्मान्मातरः
शुन्धयन्तु घृतेन सो घृतप्लवः पुनन्तु ॥ विश्वं हि रिप्रस्पवहन्ति
देवीरुदिदाभ्यः शुचिरातूत एभिर्दीक्षा तपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवां च
शम्भाम्परिवृधे भद्र वर्णम्पुष्यन्ताहा ॥ २ ॥ ओं समुद्रज्येष्ठाः
सलिलस्य मध्यात्पुनानायन्त्यनिविशमानाः इन्द्रो या वज्री
वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं
या आपो दिव्या उत वा स्वन्ति खनित्रिमा ऊत वा याः स्वयंजाः
समुद्रार्थाः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु स्वाहा ॥ ४ ॥
ओं यासां राजा वरुणा याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यं जनानाम् ॥
मधुश्रुतः शुचयो या पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु स्वाहा
॥ ५ ॥ ओं यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा या
सूर्यं मदन्ति ॥ वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह माम-
वन्तु स्वाहा ॥ ६ ॥ ओं नदीभ्यः पीडिज्जष्टमृत्तीकाभ्यो नैपादं
पुरुषं व्याघ्राय दुर्मदं गधर्वाप्सरोभ्यो ब्रातृयं प्रयुभ्यः उन्मत्तं च
सर्पदेवजनेभ्यो प्रतिपदमेभ्यः उन्मत्तं च सर्पदेवजनेभ्यो प्रतिपदमेभ्यः
कितवमीर्यता या अकितवम्पिशाचेभ्यो विदलकारी यातुधानेभ्यः

चातुर्मास्येष चत्वारि शतानि च सुरामखे ।

अयुतं वाजपेये च अश्वमेधे चतुर्गुणम् ॥

चापि प्रजापतिरिति स्थितिः ॥ (काम्यहोमादौ नङ्गिनिवासादिविचारः)—भेका
तिर्विरागुवा कृताप्ता रोपे गुणोऽग्रे भुवि बहिवासः । सौख्याय होमे, शशियु-
ऋत्विग्नियमः—

कन्दमूलफलाहारा दधिदीराशिनोऽपि वा ।

दिनाह्नं हवनं कुर्युः संवीताः विरजोम्बराः ॥ १ ॥

अथ मण्डपान्तर्यामीना दक्षिणानियमः—

मन्त्रेण प्राणार्थनाशो दिवि भूतले च ॥ शुक्लादिनो वर्त्तमानतिथिरेकाधिक

कष्टकोकारं स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं इमस्मे गङ्गा यमुने सरस्वति
शतद्रु स्तोमं सचता पश्यन्त्या ॥ अविस्त्वा मरुद् वृधे वितस्त्या-
र्जोकीये शृणुद्यासु मोपया स्वाहा ॥ ८ ॥ (केपुचित्पुस्तकेषु पर्वहोमः-
ॐ ॥ पर्वतस्य वृषभस्म पृष्ठान्न वरचरन्ति स्वसि च इयानाः ॥ ता आव
धृन्नधरागुदका अहिर्बुध्न्यमनुरीयमाणः ॥ विष्णोर्विक्रमणमसि
विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि स्वाहा) ओ यथावाणप्रहायणां
कवचं० इत्यादि मन्त्रैः पूर्ववदभिषेकः ॥ इति यथादिहोमद्रव्याहुति
कृत्वा द्वितीयवारं सूर्यमन्त्रैः पूर्ववत् धृतवारां कुर्यात् ॥ ओ शारदा
मातरः प्रोक्ता मघश्च सागरास्तथा । ततश्च देवताहोमं क्षेत्राद्याः
कुलदेवताः ॥ असक्याताः सहस्राणि स्वरांमर्त्ये च भूतले । उद्रजाप्यततः
कृत्वा स्वस्ति कुर्यात्ततः परम् ॥ इति संवत्सरादिसमुद्रहोमः समाप्तः ।
ततश्चर्चादिद्रव्यैः स्थालीपाकहोमं कुर्यात् । संख्यामन्त्रैः संख्यायोक्त-
विधानेन जुहुयात् ॥ पश्चादेवं वरिहृद्, वैष्णवी, आदित्य, विमला,
पञ्चभद्र, आदिहोमं कृत्वा ॥

अथोत्तराङ्गहोमः ॥ तत्रादी सङ्कल्पः ॥ ओ अयेहेत्यादि० अमुक-
होमकर्मणि मया कारितस्य ब्राह्मणद्वारा नवप्रहादिमन्त्राङ्गहोमकर्मण
उत्तराङ्गसिद्धये होमं करिष्ये ॥ व्याहृतित्रयस्य प्रजापतिर्ष्टपिर्गार्ग्यश्रुष्टि-
गनुष्टुप्दांसि अग्निवायुमूयां देवता उत्तराङ्गहोमे विनियोगः ॥ ओ
भूः स्वाहा इदमग्नये । ओ भुवः स्वाहा इदं वायवे ॥ ओ स्यः स्वाहा
इदं सूर्याय ॥ ततः ओ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॥ ओ अग्नये
स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते ॥ इति स्विष्टकृद्धोमः ॥ संभवं
कृद्धोमाः ॥ संभवं प्रारय पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे दद्यात् ॥ पायादिभिः
पूर्णपात्रं मंपूज्य ॥ अयेहेत्यादि० मया कारितस्य ब्राह्मणद्वारा, अमुक-
कर्मोङ्गहोमकर्मणः साङ्गफत्तमास्तये सादृश्याय च इदं सद्वहुतपूर्णपात्रं
सदक्षिणं प्रजापतिदेवतमनुकमोत्राय, अमुककर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं

यत्तमानयारेण उदिता अग्रमिर्विभक्तव्या, त्रिशेषे सत्यशेषे च भुवि वासः
स्वर्णे रोष्ये च ताम्रं तद्वतरमपि यदक्षिणा ॥

स्यात्तदेवाऽऽश्वार्याभामर्षं भार्गवं तदनुमदकृताद्वास्यानां तददंम् । १ ॥

अन्वामेभ्यो यद्देवत्वं गृहचिवहनभूपण्यानि प्रदद्यादीन्भामाप्रच यन्-
भ्यु विहवविमतीस्तरयेदभ्यरेऽभ्येः ॥ २ ॥

शुभः, पक्षिणो कर्मादिव भूतमे वागोऽश्वम ईश्वर्यः । एवंभात् त्रिभिरे
ष्वदे एवेति० पञ्चदशः । अन्तरेणामुष्टिभिर्नो नेष्टा होमादृतिः भवे । अयं-
ष्वदे एवेति० पुनरुक्तः । अन्तरेणामुष्टिभिर्नो नेष्टा होमादृतिः भवे । अयं-

सम्प्रदरे ॥ ओं अकन्कमेति दत्त्वा ॥ स्वतीत ब्राह्मणः प्रतिब्रूयात् ॥
 अथ पूर्णाहुतिहोमः ॥ अवेहेत्यादि अमुककर्मागहोमः मरणः साग-
 फलप्राप्तये न्यूनातिरिक्तपरिपूर्त्यर्थं मृडनामाम्नौ पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये ॥
 पाद्यादिभिर्मृद्वाग्निं संपूज्य ओं सुवश्च मे चमसाञ्च मे वायव्यानि च
 मे द्रोणकलशश्च मे प्रावाणश्च मे ऽधिपवणं च मे पृतभृच्च मे आधव-
 नीयश्च मे वेदिश्च मे वहिषश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥
 इति रक्तसूत्रेण सुत्रं येष्टयित्वा संपूज्य ॥ सुवपात्रे सगन्धद्रव्यं पीतव-
 स्त्राच्छादितं घृताभिधारितं नारिकेलपूरीफलादिफलं संस्थाप्य तत्पात्रं
 वामहस्ते धृत्वा उत्थाय यजमानदक्षिणहस्तेन—पूर्णां दर्शयिष्ये हिरण्यगर्भ-
 ऋषिभिर्बुध्नुध्नुः महावैश्वानरो देवता मृडनामाम्नौ पूर्णाहुतिहोमे विनि-
 योगः ॥ ओं पूर्णां दर्शयिष्ये परापत सुपूर्णां पुनरापत ॥ वस्नेव विक्रीणा-
 वहा इपपूजं ॥ शतक्रतो स्वाहा ॥ १ ॥ ओं सप्त ते अग्ने समिधः सप्त-
 जिह्वाः सप्तर्षयः सप्त धाम प्रियाणि सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त
 योगीरापृण स्वधृते स्वाहा ॥ २ ॥ ओं पुनस्त्वादित्या रुद्राः यसवाः
 समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथयज्ञैः ॥ धृतेन त्वन्तन्वन्वद्वयस्व सत्याः
 सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं मूर्ध्ना विषो अरतिं पृथिव्या
 वैश्वानरमृतं ज्ञातमग्निम् ॥ कवि ॥ सन्नाजमदिथिञ्जनानामासन्नापात्रं
 जनयन्त देवा स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं जयन्ती मङ्गला ० ॥ ५ ॥ इति घृतदिग्धं
 पीतभृवस्त्राच्छन्नं सुकृपुदितं नारिकेलादिफलं प्रज्वलितेऽग्नौ घृतावच्छि-
 न्नधारया सह जुहुयात् ॥ ततः ओं वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे
 प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे लोकरश्च मे सुवश्च मे
 ध्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वरश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् [वा० पुराणमन्त्रैः]
 इति पठन्तः सुवहस्तेनाज्यसहिता यजमानब्रह्माऽर्चयित्विजादिब्राह्मणाः

कात्यायनः—

ब्राह्मणे दक्षिणा देवा या यत्र परिकीर्तिता ॥ इति ॥

होमकर्माद्यशक्तानां विप्राणां द्विगुणो जपः ।

इतरेषां तु वर्णानां त्रिचतुःषष्ट्यसंख्यया ॥ १ ॥

वित् कुशः, पंगुः शनिः, आरः भौमः, इज्यः गुरुः, अगुः राहुः, शिली वेतुः ।

कचिदग्निवासादिविचारभावो निर्ययतिषौ]-नित्ये नैमित्तिके दुर्गाहोमादौ न

होमद्विगुणजापेन सम्पूर्णं तर्पणं भवेत् ।

अकृते मार्जने प्रोक्तं तर्पणाद् द्विगुणो जपः ॥ २ ॥

प्रत्याम्नाये ब्रह्मभोज्यो न कुत्रापि मया भुतः ।

सर्वथा भोजयेद्विप्रान् इतथाह्वयतिद्वये ॥ ३ ॥

अग्नेर्देवतायाश्च प्रदक्षिणाचतुष्टयं कुर्युः ॥ अथान्यालम्भनम्—ओं
तन्या अग्नेसि तन्य मे पाहि ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि ओं वचोदा
अग्नेसि वचो मे देहि ॥ ओं सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति
सपवित्राभ्यां हस्ताभ्यां प्रणीताज लेन शिरः सम्मुख्य दृग्मित्रियास्तस्मै सन्तु
योस्मान्द्वेष्टि यं च, ययं द्विष्मः इतिप्रणीतापात्रमैशान्यां न्युञ्जीकुर्यात् ॥
ओं देवा गातुं वित्वा मातुमितमनसस्पत ॥ इमं देवयज्ञं स्वाहा
वातेधाः ॥ इति वहिर्होमः ॥ अथ व्यायुकरम्—ॐ मानस्तोके'तनये मा न
आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ॥ मा नो वीरानुद्र भामिनो
वधीर्द्विष्मन्तः सदमित्वा हमावहे ॥ ओं इमं स्तनमूर्जस्वन्तः ॥ इति
नारिकेलफलस्य वा यज्ञद्रव्यस्य विभूतिं गृहीत्या व्यायुपमिति नारायण
श्रृण्विभूतिं हृन्दः शिवो देवता व्यायुपकरणे विनियोगाः ॥ ओं घृतमि-
मिहे घृतमस्य योनि घृते भित्तो घृतं वस्य धाम अनुष्वधमावह मादयस्व
स्वाहा कृतं घृपभ वक्षि हव्यम् ॥ इति घृतालोडनम् ॥ सत्रादौ देवतायास्त्या-
युपकरणं कृत्वा पश्चाद्यजमानं दद्यात् ॥ ओं व्यायुषं जसदग्नेः इति ललाटे-
ओं कश्यपस्य व्यायुषं इति भीमायाम् ओं यदेवेपुं, इति हृदि ॥ ततः भद्रां
मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं वर्लं श्रियम् ॥ आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे
हव्यवाहन ॥ इति प्रणम्य ॥ यज्ञदशांशं तर्पणम्, तर्पणदशांशं
मार्जनम्, मार्जनदशांशं प्राक्षणभोजनम्, ततो यज्ञदक्षिणासङ्कल्पा ॥
अद्यहेत्यादि० अमुकशर्माहं मया ब्राह्मणद्वारा कारितस्य अमुक
(संख्यक) होमनवमहशान्तिमखकर्मणः साङ्गफलावाप्ते इमां सुवर्ण-
रजतवाघादिदक्षिणां, अन्यादिदेवत्यां, अमुकामुकगोत्रेभ्यो श्रृत्विभ्यो
तथा शन्तिपाठवाचकेभ्यो गणेशगावध्यादिजापकेभ्यो रुद्राध्यायविष्णु-
सहस्रनामपाठकेभ्यो श्रृग्वेदादिचतुर्वेदोक्तचारणकारकेभ्यो तथा दामदेव-
सास्थानदेवतादीनां पूजकेभ्यः साचायंपुराण-शास्त्रादिवाचकेभ्योऽमुका-

विचारयेत् ॥ अन्यन्त्र-दुर्गाहोमविधौ विवाहसमये सीमन्तपुत्रोत्सवे गर्भाधान
विधौ च वालुसमये विष्णोः प्रतिष्ठादिषु । मौञ्जीबन्धनवेश्मदेवकरणे संस्कार-
यज्ञेयकृष्टानि यज्ञपुराण-

पलाशश्वत्थन्यमोघप्लवर्ककतोरवाः ।

शमो चोनुम्बरो बिम्बरचन्दनं सरलस्तथा ॥

शालङ्ग्य देवदण्डश्च सतिरश्च त्रयोदश ॥ १ ॥

तदभावे ऋष्टकवर्ण्यं इति ॥

रैमितिहे होमे नित्यमवे न दोषक्यनं चकत्र बह्वेरपि ॥ जपाद्यंगहोमेऽपि न
दिनं शोष्यं तस्य स्मृत्यभ्रजत्वाभावादिति । (होमे प्रथमादुत्तिर्गन्धपतेः—

मुक्तामभ्यो पूर्वपूजितकर्मकारकब्राह्मणेभ्यो वस्त्राभरणादिकं च विभज्य
दातुमहमुत्सृजे ॥ ॐ तत्सन्न मम ॥ तथा भूयसीं दक्षिणां, अन्येभ्यो
ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये ॥ इति ब्रह्माचार्यद्विजादिव्राह्मणान्सुवर्ण-
वस्त्रादिदानेन संतोष्य ॥ ततोऽग्निं विसर्जयेत्—ओं गच्छ गच्छ
सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ
हुताशन ॥ भो भो वह्ने महाराक्ते सर्वकर्मप्रसाधक ।
कुम्भान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम् ॥ यान्तु
देवगणाः सर्वे पूजामादाय माकिकाम् । इष्टकामसमृद्धयर्थं
पुनरागमनाय च ॥ ओं यज्ञ यज्ञश्च यज्ञपतिं गच्छ स्वां
य्योनिं गच्छ स्वाहा एष ते यशो यज्ञपते सह सूक्तवाकः सर्ववीरस्तं
जुपस्व स्वाहा ॥ ओं धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः । स
चेतसो विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥ अथाभिषेकं कुर्यात् ॥
ओं यत्त यमं वैवश्वतं मनो जगाम दूरकं ॥ यत्त आवर्तयामसि
अक्षयाय जीवसे ॥ १ ॥ ओं यत्तो भूमिं चतुर्भृष्टिं मनो जगाम ॥
३ ॥ ओं देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेरिचनो बाहुभ्यां पूष्णो हस्तान्-
याम् । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यत्रिये दधामि बृहस्पत्ये त्वा साम्राज्ये-
नाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ ४ ॥ ओं अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता
चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता विश्वेदेवादेवता
बृहस्पतिर्देवता इन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ५ ॥ ओं द्यौः शान्तिः ॥ ६ ॥

अथ यशारम्भमुद्धृतः-

सूर्य के उत्तरायण में तथा तीनहूँ उत्तरा, रोहिणी, विशाखा,
कृत्तिका, रेवती, मृगशिर, ज्येष्ठा, पुष्य नक्षत्रों में रिक्तातिथि छोड़
यशारम्भ करना परन्तु आहुति में वह्निवास लगनदान शुद्धि भी देखनी चाहिये ॥
गणाधिपतये देवा प्रथम तु चराहुतिः । अन्यथा विफलं सर्वं भवतीह न
संशयः । इवञ्च प्रथमाहुति पञ्चवाक्यणी [प्रायश्चित्तसंशक] होमान-
आहुति-सूर्य के नक्षत्र से ३ । ३ करके चन्द नक्षत्र पर्यन्त क्रम से
सु०, बु०, शु०, श० च०, मं०, वृ०, रा०, के०, के मुल को आहुति होती है
पापमह की शुभ नहीं है ॥

वह्निवास-वर्तमान तिथि में १ ओढ़ के बार जोड़ना ४ से शेष करना ० ।
३ रहे तो पृथ्वी में अग्नि का वास है होम में सिद्धि होगी २ । १ शेष रहे
तो अग्निवास पृथ्वी में नहीं होमादि कर्म में प्राणचनादि नाश हो ॥
न्तरक्रियमाण होमस्याऽऽदिभूतेति 'ज्येष्म' । पञ्च नक्षत्राणि होमस्तु गणय-
तेरपि प्रागेव भवतीति वाक्यम् ॥ इति 'परिमण्यायां सामान्यभागः ।

ओं अमृताभिपेकोऽस्तु ३ इत्यभिपेकः ॥ ततः कङ्कणं मोक्षयित्वा गोदानं
विधाय गणपत्यादिदेवता विसृज्य । यजमानं तिलकदूर्वाभिराशिपदद्यात् ॥
ब्रह्माचार्यऋत्विग्ब्राह्मणादीन्भोजयित्वा स्वयमपि भुञ्जीत ॥ शुभम् ॥

अथ सूर्योपस्थान-प्रयोगः ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सङ्कल्पः—अथ पूर्वोच्चारित वर्तमान-
एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ समाऽत्मनः श्रुतिस्मृति
पुराणोक्त कृत प्राप्त्यर्थं श्री सचिता सूर्यनारायण प्रीत्यर्थं सूर्योपस्थान
मई करिष्ये । कुश पवित्रधारणम्—ओं पवित्रेस्थो ज्वैष्णव्यो सवि-
तुर्व्व ÷ असवऽवत्पुनाम्यच्छत्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि ÷ १
तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्काम ऽः पुनेवच्छकेयम् ॥ १ ॥ इति
मन्त्रेण दक्षिण वाम हस्तयो रनामिकयोः कुश पवित्रं धार्य ॥ सूर्यपूजनम्—
ओं उदुत्यञ्जास वेद सं० ॥ २ ॥ सूर्यमुदीक्षन्—ओं उदयन्तमसं० ॥ ३ ॥
ओं उदुत्यञ्जा० ॥ ४ ॥ ओं चित्रन्देवानां० ॥ ५ ॥ ओं तच्चक्षुर्द्वे०
॥ ६ ॥ ओं तस्सवितु० ॥ ७ ॥ अनुवाकः—ओं विम्बाइ० ॥ १७ ॥
पुरुषसूक्तम्—ओं सहस्र शीपां० ॥ १६ ॥

शिव सङ्कल्पः—ओं यज्जामतो० सुपारथि रयान्तम् ॥ ६ ॥
एते मन्त्रास्तद्भ्यायेद्व्रज्याः, मण्डलं ब्राह्मणम्,—ओं यदेतन्मण्डलं
तपति तन्मह दुक्यन्ताऽष्टव ऽः स ऋचा लोकोधपदे तद चिर्दीप्यते
तन्महा प्रतं तानि सामानि स साम्नां लोकोध ग ऽप्य ऽप्य
रिन्मण्डले पुरुष ऽः सोमिस्तानियजू ध पि सयजुषां लोक ऽः
॥ १ ॥ सैषा प्रयेव विद्या तपति तदैतदप्य विद्या ध स
आहुस्त्रयी, वा ऽप्या विद्या तपतीति वाग्यैव तत्परयन्ती न्वदति ॥ २ ॥
स ऽप्य ऽप्य मृत्युर्थं ऽप्य ऽप्यस्मि न्मण्डले पुरुषो धे तद
सुतं यदे तदधि दीप्यते तस्मान्मृत्युर्न म्रियतेमृतेर्ह्यन्तस्तस्माद् न दृश्यते
मृतेर्ग्रन्त ऽः ॥ ३ तदेव श्लोको भवति—अन्तरं मृत्योरमृत मित्य वर
धे छेतन्मृत्यो रमृतमृत्या वमृत मादित मित्ये तस्मिन्दि-पुरुष
ऽप्यन्मण्डलप्रतिष्ठितं तपति मृत्युर्व्यवसन्तं वस्तऽइत्यसौ वा ऽद्या-

(१) इति मन्त्रेण सूर्यं मन्वाद्यत पुण्यैः सम्युज्य (२) दक्षिण वाम
पादयो दो दो सामदभोगंन्वाद्यत एते पुण्य गुणशीदल वरिहोभूता
पश्चादेते मन्त्राः पठनीयाः ॥

(इदं एषोपस्थानं भास्वरां तथा भाद्रदिने कुर्वान्ति ॥)

दित्यो विवस्वा नेपग्रहोरात्रे विवस्वस्ते त मेघ वस्ते - सर्वतोद्घोनेन
परिवृतोमृत्यो रात्मा विवस्वती त्ये तस्मिन्निह मण्डलऽपतस्य
पुरुषा तैत देव श्लोको भवति ॥ ४ ॥ तयोर्द्धाऽपतयोरुभयोर
रेतस्य चाचिपऽपतस्य च पुरुषस्यैतन्मण्डलं प्रतिष्ठा तस्मान्महः दुकथ
परस्मै न श ॥ सेत्रे देतांप्रतिष्ठां क्षिनदा ऽइत्येता ओ ह स प्रतिष्ठां
क्षिन्तेऽवो मह दुकथ परस्मैरा ॥ सति तस्मा दुकथ श सम्भूयिष्टं
परि चक्षतेप्रतिष्ठा क्षिन्नोहि भवतीत्यधि देवतम् ॥ ५ ॥

अथाधि यज्ञम्—यदेतन्मण्डलं तपस्य य ॥ स रुक्मोथपदेत
द्विर्द्वाप्यत ऽइदं तत्रपुष्करपर्णं प्रापोहोताऽत्रापऽपुष्कर पर्णः मथय
ऽपपऽपतिस्मिन्मण्डले पुण्यो यमेव स चोय ॥ हिरण्यमयऽः
पुरुषस्तदेतदेवैतन्नय ॥ संस्कृत्ये हो पधत्तेतद्यज्ञ स्यै बानु स ॥ स्था
मूर्धं मुष्कामति तदे तम प्येतिय ऽपप तपति तस्मादग्निं ज्ञाद्रियेत
परि हन्तुम मुत्र होप तदा भवतीत्यु ऽएवाधियज्ञम् ॥ ६ ॥ अथा-
यथात्मम् यदे तन्मण्डलं तपति यरवेण रुक्म ऽइदं तल्लुक्त मक्षत्रथ
यदेतद्विर्द्वाप्यनेयचेतःपुष्कर पर्णं मिदं तत्कृष्ण मक्षत्रथ य ऽपप
ऽपतास्मिन्मण्डले पुरुषो यरवेण हिरण्यमयऽः पुरुषो यमेव सयोयं
दक्षिणे क्षन्पुरुषऽः ॥ ७ ॥ स ऽपप ऽपव लोकं पृथता मेव सवर्षोभि
राभि सम्पद्यते तस्यै तन्मिथुन यो य ॥ सध्येक्षन् पुरुषोर्द्धं महै
तदात्मनो यन्मिथुनं यदा वै सह मिथुने नाथ सवर्षोथ कृत्स्न
ऽः कृत्स्न तायैतद्यत्रेद्वै भवतो द्वन्द्व ॥ हि मिथुनम्प्रजननं तस्मा-
द्वेदे लोकं पृथे ऽचपधीयेते तस्मा दुद्वाभ्यां द्वाभ्यांचित्तिम्प्रण यन्ति
॥ ८ ॥ स ऽपप ऽपवेन्द्रऽः यो यं दक्षिणेक्षन् पुरुषोथेयमिन्द्राणी
ताभ्यां देवा ऽपतां विधृतिमकुर्वन्नसिक्कान्तस्मा जायाया अन्ते
नारनीया द्वीर्ष्य बान्हास्मा जायते वीर्ष्य वन्त मुह साजनयति
यस्या ऽअन्ते नारनाति ॥ ९ ॥ तदेव देवव्रत ॥ राजन्य बन्धवो
मनुष्याणां मनुतमांगोपायन्ति तस्मादु तेपु वीर्ष्य वा जायते मृत-
वाका वयसा सा क्षिप्रस्येन जनयति ॥ १० ॥ सो हृदयस्या
कार्श प्रत्यवेत्य मिथुनी भव तस्ती यदा मिथुनस्यान्तर्गच्छतोथ
है तत्पुरुषऽः स्वपिति तद्यथा है वेदम्मानुपस्थ मिथुनस्यान्त-
र्गत्वा संविदऽऽइव भवत्येव ॥ है वैतद संविद्
ऽइव भवति देव ॥ ह्येतन्मिथुनम्प्रसो ह्यैष ऽअनिन्दऽः
॥ १५ ॥ तस्मा देव वित्सप्यान् ॥ योक्य ॥ है वेऽपुत्रतदेवते मिथुनेन-
प्रियेण धाम्नासमर्द्धयति तस्मादुह स्वपन्तधुरेव न बोधयेन्नेदेते देवते
मिथुनी भयन्त्यौ दिनसानीति तस्मादु है तत्संस्तु पुपऽः श्लेष्मण मिव

सुखम्भवत्येते ऽ एव तदेवतेरेत ऽः सिञ्चतस्तस्मा त्रेवसऽश्द ॥ सर्वं ॥
सम्भवति वदिदं किञ्च ॥ १२ ॥ स ऽ एष ऽ एव मृत्यु ॥ य ऽ एष
एतस्मिन्मण्डले पुरुषो वरुचा यन्दक्षिणे चन्द्रपुरुष स्तस्य हैतस्य हृदये
पादावतिहतौतीहै तदाच्छिद्योत्क्रामति स यदोत्क्रामत्यय हैतपुरुषो
श्रियते तस्मा दुर्ह तत्प्रेतमाहु राच्छेद्य स्येति ॥ १३ ॥ एष ऽ सऽएव प्राण
ऽः । एव हीमा ऽः सर्वा ऽः प्रजा ऽः प्रणयति तस्यैते प्राणा ऽः ध्या
ऽः स यदा स्वपित्य ध्येन मेते प्राणा ऽः स्वाऽश्रपियन्ति तस्मात्स्वाप्यय
ऽः स्वाप्ययोर्हवैत ॥ स्वप्नऽइत्या चक्षतेपरोक्षन्परोक्षकामाहि देवा ऽः
॥ १४ ॥ स ऽ एतै ऽः सुप्तो न कस्य च न च्चेदन् मनसा सङ्कल्पयति
न वाचाग्नस्य रसं चिज्जानाति न प्राणेन गन्धं चिज्जा नाति न चक्षुषा-
पर्यन्ति न श्रोत्रेण शृणोतेत ॥ ह्येते तदापीताभवन्ति स ऽ एषऽ एक
सन्प्रजासु बहुधा व्याविष्ट स्तस्मा देका सती लोकम्पृष्ठा सर्व-
मग्निमनु चिबभवत्यथ यदेक ऽ एव तस्मा देकः ॥ १५ ॥ तदाहु ऽः ।
ऽएको पुरुषवर्हवऽइत्येकश्च बहवश्चेति ह्यग्रायदिहा सायमुत्र तेनैकोथ
यदिह प्रजासु बहुधाव्याविष्ट स्तेनो बहवः ऽः ॥ १६ ॥ तदाहु ऽः ।
ऽअन्तिके मृत्युर्दूराऽइत्यन्तिके च दूरे चेतिह त्रायाय द्वाया मिहाभ्या-
त्मन्ते नान्तिकेय यदसा वमुत्र तेनो दूरे ॥ १७ ॥ तदेष श्लोको भवति ।
अन्ये भात्यपश्रितो रसाना ॥ स चरे मृतऽइतियदेतन्मण्डलं तपति तदन्न-
मय य ऽ एष ऽ एतस्मिन्मण्डले पुरुषः ऽः सोत्ता स ऽ एतस्मिन्नग्ने
पश्रितो भातीत्यग्नि देवतम् ॥ १८ ॥ अथाध्यात्मम्—इदमेव शरीर
मन्नमुथयोयं दक्षिणे चन्द्र पुरुष ऽः सोत्ता स ऽ एतस्मिन्नग्ने पश्रितो भाति
॥ १९ ॥ समेत मग्निरित्यध्वर्षन्नऽउपासते ॥ यजुरित्येष हीद ॥ सर्वं
पुनक्ति सामेति छन्दोगाऽएतस्मिन्हीद ॥ सर्वं ॥ समानमुक्तमिति-
यद्धृचाऽ एष हीद ॥ सर्वं मुत्थाप यति यातुरिति यातुविदऽएतेन
हीद औं सर्वं यतं विषमिति सर्पा ऽः सर्पः ऽइति सर्पं विद
ऽअर्गिति द्वा रयिरिति मनुष्या मायेत्य मुरा ऽः स्वधेति पितरो
देवजन ऽइति देयजन विदो रूपमितिगन्धर्वा गन्धः ऽइत्यप्सर
सस्त यथा ययो पासते तदेव भवति तद्धैतान् भूत्वा वति, तस्मा
देन मेवं विरमर्षे रेवैते कपासीत सर्वं ॥ हैतद्ववति सर्वं ॥
हैनमेतद्भूत्वा ऽवति ॥ २० ॥ स ऽ एष श्रीष्ट कोष्मि ऋगेका
यजुरेका सामेकावद्याद्वा; ऋचात्रयोप दधाति रुक्म ऽएव तस्या
ऽआयत नमथ यां यजुषा पुरुष ऽएवतस्या ऽआवतनमथ औं साम्ना-
पुष्कर पर्णमथ तस्याऽआयतन मेवंत्रिष्टक ऽः ॥ २१ ॥ ते वाऽएते
ऽउभे ऽएष च रुक्मऽएतं पुष्कर पर्णं मेतमपुरुषमपतिऽउभे

क्वसामे यजुरपतिऽएवम्वेकेष्टकऽः ॥ २२ ॥ सऽएषऽएवमृत्युऽः
 ऽएष एतस्मिन्मण्डले पुरुषो याचायं दक्षिणे चक्षुरूपऽः सऽएष
 ऽएवं विदऽः आत्मा भवति स यदेवं विदस्माँ लोकात्रैत्य
 येत मेवा त्मान मभि सम्भवति सो मृतो भवति मृत्युर्वास्यात्मा
 भवति ॥ २३ ॥ तेन वाऽऽदममे सदासी नैव सदासीत्
 ॥ मण्डल ब्रह्मणम् ॥

तदाहुः ऽः—किञ्छन्दऽः कादेवतामे ऽः शिऽइति गायत्री
 छन्दोऽभि देवताशिरऽः ॥ १ ॥ किञ्छन्दऽः का देवता प्रीवा
 ऽइत्युष्णिग छन्दऽः सविता देवताप्रीवा ॥ २१ ॥ किञ्छन्दऽः
 का देवता नूक मिति बृहती छन्दो बृहस्पति देवता नूकम् ॥ ३ ॥
 किञ्छन्दऽः का देवता पक्षाविति बृहद्रथन्तरे छन्दो यावा पृथिवी
 देवते पक्षौ ॥ ४ ॥ किञ्छन्दऽः का देवता मध्य मितित्रि-
 ष्टप् छन्दऽइन्द्रोदेवता मध्यम् ॥ ५ ॥ किञ्छन्दऽः का देवता
 भोणीऽइति जगती छन्दऽआदित्यो देवता भोणी ॥ ६ ॥
 किञ्छन्दऽः का देवता यस्मादिदं प्राणा त्रेतऽः
 सिञ्च्यतऽइत्यत्तिञ्छन्दऽः रश्मिऽप्रजापतिर्देवता ॥ ७ ॥ किञ्छन्दऽका
 देवता योय मवाङ्ग प्राणऽइति यज्ञायज्ञियं छन्दो वैश्वानरो देवता ॥ ८ ॥
 किञ्छन्दऽका देवतोर्ववइत्य लुष्टम् छन्दो विश्वे देवादेवतोरु ॥ ९ ॥
 किञ्छन्दऽका देवताष्टी वन्ता विति पंक्तिरश्मिन्दी मरुतो देवताष्टीवन्तौ
 ॥ १० ॥ किञ्छन्दऽका देवता प्रतिष्टेऽइति द्विपदा छन्दो विश्वानुं देवता
 प्रतिष्टे ॥ ११ ॥ किञ्छन्दऽका देवता प्राणऽइत्तिविश्वन्दऽइन्द्रो वायु
 देवता प्राणाऽ ॥ १२ ॥ किञ्छन्दः का देवतो नातिरिक्ता नीति न्यूना-
 क्षरा छन्दऽआपो देवता नातिरिक्तानि सैषात्म विचै वैतन्मयो हैवैसा
 ऽएतमात्मा नमभि सम्भवति न हात्रान्या लोक्यता याऽआशीरास्ति
 ॥ १३ ॥ धीरोह शातपर्णेयः ॥ ब्राह्मणम् ॥

ॐ अथ वाऽइदन्नामरूपं कर्म तेया नाम्नां वागित्येतदेवा मुख्य
 मत्तोहि सर्वाणि नामान्युतिष्ठन्त्ये तदेपाऽसामैतद्धि सर्वेनामभिऽसममेतदेपां
 ब्रह्मै तद्धि सर्वाणि नामानि विभर्ति ॥ १ ॥ अथ रूपणाम्—चतुरित्येत
 देवा मुख्यमतो हि सर्वाणि रूपाण्यु तिष्ठन्त्येत देवाऽसामैतद्धि सर्वे
 रूपेऽसममेत देवां ब्रह्मै तद्धि सर्वाणि रूपाणि विभर्ति ॥ २ ॥ अथकर्म-
 णाम्—आत्मेत्येतदेपा मुख्य मतो हि सर्वाणि कर्माण्यु तिष्ठन्त्येतदेपा
 ऽसामैतद्धि सर्वेऽकर्माभिऽसममेतदेपां ब्रह्मै तद्धि सर्वाणि कर्माणि

रमति तदेन त्रयधपदेक मयमात्माऽएकऽसम्भेत्तत्रयं तदेतद्मृतक
सन्त्येन धन प्राणोऽतऽमृत नामरूपेस्तन्ताभ्या मयं प्राणारक्षन्ऽ
राक्षणम् ॥ ३ ॥ इत्यत्रालाङ्घ्रिं नूचानो गार्ग्यऽश्वास—भूमिरन्तु त्ति
चोरिति अष्टा। उक्त राख्यप्राक्षरध्वाऽएकम् । गार्ग्ये पदमेत दुहास्या-
ऽरतत्स पादेषु लोकेषु तावद्ध जयति योस्याऽएतदेव पद वेद ॥ १ ॥
सूचोयनूधपिसामा नीत्यष्टा ब्रह्मराख्यष्टा चरध्वाऽएक गार्ग्ये
पदमेत दुहे वास्याऽएतत्सपावतीयं त्रयी विद्या तावद्ध जयति योस्याऽएत-
देव पदं वेद ॥ २ ॥ प्राणोऽद्यानो न्यानऽइत्यष्टा ब्रह्मराख्यष्टा
ध्वा एक गार्ग्ये पदमेतदुहे वास्याऽएतत्स पावतिदप्राणि तावद्ध
नयति योस्याऽएतदेव पदवेद ॥ ३ ॥ अथास्याऽएतदेवतुरीयं दर्शते पद
परोरजायऽएव तपतिपद्वै चतुर्थतन्तुरीयं दर्शतं पदमिति दहराऽइत्येष
परोरजायइति सर्वमुद्येप रजऽउपचुपरितपत्येयध्देव श्रिया व शसा। तपति
यास्याऽएव देवं पद वेद ॥ ४ ॥ सेषा गार्ग्ये तार्क्षिस्तुरीये दर्शते पदे परो
रजमि प्रतिष्ठाता तद्वै तदसत्येप्रतिष्ठताचक्षुर्वै सत्य बलुर्हि वैसत्य तस्माच्चदि
शानोन्दी त्रिषदमाना येयात्तामह मद्रा ॥ वमह मन्वीपमितियऽएवं
मयाद् हमद्राच भिति तस्माऽएव अर्ध्याम ॥ ५ ॥ तद्वै तस्सय
उक्ते प्रतिष्ठतम् । प्रणोवै बल तत्प्राणे प्रतिष्ठत तस्माद्बहु-
बलधमस्याशो जीयऽएत्ये वम्वेपा गार्ग्येयस्म प्रतिष्ठता ॥ ६ ॥
‘मा ह्या गवास्तत्रे,—प्राणा वैगर्वास्तत्प्राणास्तत्रे तद्यद्गवास्तत्रेतस्मा
द्गायत्री नाम स तामेता मूमन्वाहेपेव सासयस्माऽअन्वाह तस्य प्राणा
ऽत्रायते ॥ ७ ॥ ‘ताध्देके—सावित्री मनुष्टुभमन्वाहुर्वाग नुष्टवेत द्वाव
मनु ब्रमऽइति न तथा कुर्वा द्गायत्री मेवानु त्र्याय दिह वाऽअपि
वत्ताव प्रति गृह्णाति न द्वैव तद्गायत्र्याऽएकरच ॥ पदं प्रति । ८ ॥
॥ चऽइमां न्यान्लोकान्यूर्णन्प्रतिगृह्णीयात्सोस्याऽएतत् क्रममप्यदमाद्रुमा-
दययात्रातीयंश्वी विद्या यत्ता यत्प्रतिगृह्णीयात्सोस्याऽएत द्वितीयमप्यद
माद्रुयादयास्याऽएतदेवतुरीयदर्शतंपदपरोरजायऽएतत्तपतिर्नवकेन चनाप्य
कुनऽउत्ता उत्तमि गृह्णीयात् ॥ ९ ॥ तस्या उपसर्वावनम्—[कथाय]—
गार्ग्येयस्तेरपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्य पदसि नदि पदासे । नमस्ते
तुरीयायदर्शताय त्वाय परो रजसे मा वरोमाप्रा पदितिपदिध्या दसा
यामे कामो मा ममर्द्धाति या न हेतामैमनामऽममृष्यते यस्याऽएव-
मुपनिष्टतेहम्भऽत्राभिमिति या ॥ १० ॥ एतद्वै तज्जनको वैश्वेहो तुडिल
माग्नतरारिय मुगाच—यन्तु हेमद्रायप्रो सिद् मयाऽअय क्वधऽहर्मीभूतो
पहर्मी। मुगधऽस्याऽ मम्रापण दिश च करेति होराच ॥ ११ ॥ तस्याऽ
अर्धित्य मुगन् । याद् दशा अपि बली यान्ता यस्या द्याति मयंमय

नत्सदहत्येव ॐ हे वै वं विद्याद्यपि बह्वीव पापं करोति सर्वं मेव तत्संसाय
 गुह्यऽः पूतोत्तरोऽऽमृतऽः सम्भवति ॥ १२ ॥ ब्राह्मणम् ॥ श्वेतकेतुर्द्वाऽ
 आकण्ठेयऽऽप्रदक्षिणां कृत्य नमस्कृत्योपविशेत् ॥ १३ ॥ इति मण्डल
 ब्राह्मणम् ॥ (वायुगृहीत कुशानां कुशपवित्रयोश्च पूर्वस्यां दिशि त्यागः
 कर्तव्यः) ॥ अर्पणम्—अनेन यथा शक्त्या कृतेन सूर्योपस्थान कर्मणा
 श्रीभगवान् सविता सूर्यनारायणः प्रीयतां नममःॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥
 इति सूर्योपस्थान प्रयोगः ।

अथ प्रायश्चित्तादि गोदान प्रयोगः ।

कुशतिल जलमादाय अचेत्यादि भुक्ति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ति
 कामो गोदान कर्माहं करिष्ये । गोदान निमित्तक ब्राह्मण वरणार्थं चंदना-
 दिक्रमादाय ब्राह्मणमभ्यर्च्य अथकर्तव्यगोदाने एभिर्चंदनाक्षतपूंगीफलतां-
 वूलद्रव्यवस्त्रालंकारैरभ्यर्च्य अमुक शर्माणां ब्राह्मणम् एभिर्द्रव्याक्षत पूगी-
 फलैर्गोदानमहितत्वेनचाहंबुखेष्टुस्त्वोस्मीतिप्रति वचनम्, अनेनदीक्षामाप्नोति
 दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् दक्षिणां श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सस्य माप्यते ।
 तसोगोदान सामग्रीं सम्प्रोक्ष्य गां सवत्सां पूज्येत् ॥ गवां मगेषुतिष्ठन्ति
 सुवनानि चतुर्दश ॥ यस्मात्तस्माच्छिवमेस्यादिह लोके परत्रच । गोभ्यः
 आसनम् । पाद्यम् अर्घ्यम् आचमनं स्नानम् ॥ मन्त्रवित् ॥ वस्त्रम्—
 आच्छादनं मया सम्यक् शुद्धं चैव सुनिर्मलम् । सुरभी वस्त्रदानेन
 प्रीयतां परमेश्वरी । इति वस्त्रेण गामाच्छाद्य ॥ गावोमे चामतः
 सन्तु गावो मे सन्तु प्रुष्टवः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवांमध्ये
 वसान्यहम् ॥ इतिमन्त्रेण अक्षत पूजा प्रार्थना पंच गावःसमुत्पन्ता
 मध्यं माने महो दधी ॥ तासां मध्ये तथा श्रेष्ठा तस्यैधेन्वै नमो नमः ॥ इति
 मन्त्रेणगन्धाः दिभिःपूजयेत् ॥ पूजितासिवसिष्टेन विस्वामित्रेणधीमता ॥
 सुरभि हरमे पापं यन्मयादुष्टृतं कृतम् पुष्प माला ॥ नमो गोभ्यः
 श्रीमतीभ्यः सौरमे योभ्य एवच ॥ नमोब्रह्म सुवाम्यश्च पवित्राभ्यो नमो-
 नमः ॥ सुरभि त्वं जगन्माता नित्यं विष्णु पदेस्थिता ॥ मातृगृहाण मे
 दत्तं गोमातृस्वातुमईसि ॥ इति मन्त्रेण गोभ्यो नैवेद्यम् ॥ धूपदीपादिकं
 दत्तं फलानि विविधा निच ॥ गृणाणां ध्वं मया दत्तं देहि मे वाञ्छितं
 फलम् ॥ रूपं देहि जयदेहि भाग्यभवति देहि मे ॥ पुत्रान् देहि धनदेहि
 सर्वान्कामान्श्चदेहिमे ॥ इति मन्त्रेण अर्घ्यं दत्वा ततोब्र पूजा ॥ पृष्ठे ब्रह्मणे
 ब्रह्मणे नमः । गले विष्णवे नमः । मुखेरुद्राय नमः । रोमकूपेषु सर्वे-
 भ्योमहर्षिभ्यो नमो नमः पुच्छे सर्षप नागैभ्यो नमः । स्तनेषु चतुस्समुद्रेभ्यो

नमः । सुराग्नेऽष्टकुल पर्वतेभ्यो नमः । नेत्रयोः शशिमा चराभ्यां नमः ।
 रागयोर्मध्येसर्वतीर्थेभ्यो नमः मूत्रे गगादि सर्वं नदीभ्यो नमः । गोमये
 लक्ष्मै नमः । कर्णयोरश्विनी कुमारभ्यां नमः । जिह्वायां सरस्वत्यै
 नमः नासा पुटयोः सुमुखायनमः उदरे पृथिव्यै नमः । दक्षिण पार्श्वे
 कुबेराय नमः । वामपार्श्वे वह्न्याय नमः । ह्रू—कारे सर्वं वेदेभ्योनमः ।
 इति अंगपूजा ॥ तानि कानि च पापानि ब्रह्महत्या समान्निव ॥ तानि
 तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणपदेपदे ॥ अथप्रार्थना ॥ पठे ब्रह्मा गले विष्णुर्गुले
 रुद्रः प्रतिष्ठितः ॥ मध्ये देवगणाः सर्वे रोमरूपे महर्षयः । नागाः पुच्छे
 सुताम्रेषु चेचाण्टी कुल पर्वताः ॥ मूत्रे गगादयो तद्यो नेत्रयो शशि भारकटी
 एते यस्यास्तनो देवाः साधेनुर्वदास्तु मे ॥ या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या व
 देवेष्ववस्थिता ॥ धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ विष्णो
 र्दक्षि या लक्ष्मीः स्वाहा याच विभावसोः ॥ चन्द्राकं शक्र शक्तिर्या
 सा धेनुर्वरं वास्तु मे ॥ चतुर्मुखस्यया लक्ष्मी लक्ष्मीर्या धन
 दस्य च ॥ या लक्ष्मी लोकां पालानां सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥ या
 स्वधा पितृमुत्थानां स्वाहा यज्ञ भुज स्तथा ॥ सर्वं पापं हराधेनुः
 सामे शक्तिं प्रयच्छतु ॥ मनोमे तर्पयेत् चक्षुः, मेतर्पयेत् । श्रोत्रं
 मे तर्पयेत्, प्रज्ञान्मे तर्पयेत् गणान्मेतर्पयेत् मिति गोपुच्छ तर्पणं
 इति सर्वान्न तर्पयेत् ॥ ततः सकृन्त्यः - पूर्वं सकृन्त्य सिद्धि
 रस्तु देश राजो सहकृत्य—

मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा अज्ञान वशतः प्रकृति वियोगा च
 गुणत्रय कारणं मनोवाक् कर्मा कल्मषत्रिविधं समस्त पापं संघटनं
 परदाशभिर्पर्याप्तं मादृशं हननं मद्यपानं गुरुं कल्पं गमनेभ्यः नार्थं
 द्रुमं पृथेदनं स्त्री हिंसोपथं जीवनं सवित्री विधवा दामी, वैरागिभिः
 गमनं रहस्यं पातको पपातका गम्या गमनाभक्ष्यं भक्षणं लोहनां
 लेपा चोप्या चोपणा भोज्या भोजनं इत्ये स्पर्शानानि च द्राघोन्नतं
 पण्डितं भेदं वेदनिष्पन्नं हयं विष्णुं शुद्धं संसारं देवता हरणं कर्मादि
 हरणाजितं सफलं पातका पनोदनं पूर्णं मायुरारोग्यं धनधान्यं
 मं प्राप्स्यथंम् इमां गां रुद्रं दैवत्या वस्त्रं द्रव्यान्धन्नां इष्यं शृंगी
 रोप्यं रज्जुं गन्तुं पुच्छीं ताद्यं तृणां पंटां चामरं संयुतां कारणं
 दोहनीं श्रीं शिखण्डः श्रीत्वर्थम् अमुकं गोत्राय अमुकं शर्मणे प्राक्ष-
 णाय मुञ्जिताय नम्यमहं संपदं, नमम इति, प्राक्षणम्—प्रति—
 गृहामि—स्वस्ति—कोदोन् मिति अर्थं पठेत् ॥ अयिस्ते सर्वं देवानां
 पूजनीयाणि रोहिण्याम् । तीर्थं देव मयायमा दत्तं शम्भो प्रयत्नः ॥
 शानप्रतिष्ठा—अथ कृतेत् श्री परमेश्वर श्रीतये कृतस्य यन्त्रविधिः

सालंकारादि गोदान प्रतिष्ठार्थं रौप्यं चन्द्र दैवतं हिरण्यम् अग्नि
दैवत अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे,
ओं तत्सत् न मम इति प्रदक्षिणां कृत्वा, गांनत्वा, ब्राह्मणां नत्वा,
भूयसीं दत्त्वा स्तुवीत । गावः पर्याम्यहं नित्यं गावः पर्यन्तु मां
सदा ॥ गावोस्माकं वयं शान्तिः यतो गावस्ततो वयम् ॥
गावःपवित्राः परमं गावो मंगल मुत्तमम् ॥ गावः स्वर्गस्य सौपानं
गावोधन्याः सनातनाः ॥ घृत क्षीर प्रदा गावो घृत योन्यो
घृतोद्भवाः । घृत नद्यो घृतवसा स्वामे संतु सदागृहे ॥ अनेन
गोदानेन श्री गोविन्दः प्रीयताम् योः शान्तिमिति अभिशेव ॥

सर्व प्रायश्चित्त गोदान सङ्कल्प

अथोहऽमुक गोत्रः अमुक प्रवरः अमुक शर्मा मयाजन्म प्रभृति
अथ यावत् आचरितस्य समस्त पातकस्य अकृत प्रायश्चित्तस्य
आमरणान्तं पापापनोद कामः इमां वस्त्र द्वययुतां स्वर्णं शर्मा
रौप्यं क्षुरां रत्न पुच्छां ताम्र पृष्ठां घंटा चामर संयुतां कांस्य बोहनीं
कपिलां धेनुं रुद्र दैवतां (तत्प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य खण्डं
अमुक दैवतं, विष्णोः प्रीत्यर्थं प्रायश्चित्त त्वेन अमुक गोत्राय
अमुक शर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे । न मम-
इति । गो प्रार्थना । प्रायश्चित्ते समुत्पन्ने निष्कृतिर्नष्कृता कश्चित्
तस्य पापस्य शुद्धयर्थं धेनुमेवां ददामिहे ॥ १ ॥ गोदान प्रतिष्ठा—
अथ कृतैवत् श्री—परमेश्वर प्रीतये कृतस्य यत्किञ्चित्सालं कारादियुत
प्रायश्चित्त गो (प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्यदान कर्मणः) दान-
प्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्य खण्डं अमुक दैवताकं अमुक गोत्राय इत्यादि ॥

व्रत प्रतिष्ठा गोदान सं० ॥

मम भ्रुतु स्म स पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्य-
र्थम् एकादश्यादि तत्तद्व्रत कर्मणः प्रतिष्ठार्थम् इमां गां रुद्रदैवतां
(तत्प्रत्याम्नायीभूतं रजतं चन्द्र दैवतां ताम्र खण्डं श्री सूर्य दैवतं)
यथानाम गोत्राय यथा नाम शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे ॥
एकादश्यादि तत्तत् व्रतकर्मणः प्रतिष्ठार्थं गोप्रत्याम्नायीभूतानि द्रव्याणि
तत्तत् दैवतानि नानानाम गोत्रेभ्यो नाना नाम शर्मण्यो ब्राह्म-
ण्येभ्यः संप्रददे ॥

पाप पनोद धेनुदानम् ॥

ॐ तत्सत् पूर्वं संकल्प सिद्धि रस्तु अघोह अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शर्मणो मम मनोवाच्याय कर्मभिराजन्मोपाजित पापापनोदार्थम् इमां कृष्णां पापायनोद धेनुं रुद्रदैवत्यां (तत्प्रत्याम्नायीभूतं रोष्य खण्डं चन्द्रदैवतं) अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे नमम इति । प्रार्थना मन्त्रः ।

आजन्मो पाजितं मनोवाच्याय कर्मभिः । तत्सर्वं नाशमायातु पाप धेनु प्रदानतः ॥ दानप्रतिष्ठा—अथ कृतेतत् पापापनोद धेनुं । प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्यदान कर्मणः] दानप्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्य खण्डं अमुक दैवतं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय दान प्रतिष्ठा त्वेनतुभ्यमहं संप्रददे ।

ऋणापनोद धेनुदानम् ॥

ॐ तत्सत् पूर्वं संकल्प सिद्धिरस्तु अघोह अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शर्मणो मम आजन्मो पाजितैहि कामुष्मिक समस्त ऋण जन्यपातक छेद काम इमां ऋणापनोद धेनुं रुद्र दैवतां [तत्प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य खण्डं अमुक दैवतं] अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददेन मम इति प्रार्थना—देहि कामुष्मिकं यच्च, सप्त जन्माजितमुष्णम् । तत्सर्वं नाशमायातु, गामे कां ददतोमम ॥ दान प्रतिष्ठा—अथ कृतेतत् ऋणापनोद [प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य दान कर्मणः] दान प्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्य अमुक दैवतं ॥ इत्यादि ॥

अध-मोक्षधेनु दान —

मोक्षधो यासु देवस्तु । वेद शास्त्रैस्तु गीयते ॥ तत्प्रीत्यये द्विजाम्नाय, मोक्ष धेनुं ददाम्यहम् ॥ ॐ तत्सत् पूर्वं संकल्प सिद्धिरस्तु अघोह अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शर्मणो मम ममस्त पापत्रय पूर्वक संसार मोक्षा याप्ति कामः पापा मह महा विष्णु प्रीति कामरथ इमां—मोक्षधेनुं रुद्रदैवत्यां [तत्प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य खण्डा अमुक दैवतं] अमुक अमुकगोत्राय शर्मणे सुपूजिताय तुभ्य महं संप्रदो । न मम इति । मोक्षधेनु प्रार्थना मन्त्रः ।—मोक्षं देहि लीकेरा । मोक्षं देहि जनार्दन ॥ मोक्ष धेनु प्रदानेन मममोक्षोऽनुयागतः ॥ दान प्रतिष्ठा अ० कृ० मो० धे० । प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य दान कर्मणः] दान प्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्य अमुक दैवतं इत्यादि ॥

तिल दान विधिः ॥

कौश पात्र कृष्ण तिल सुवर्ण सहित-संकल्प्य ॥—

मम जन्म प्रभूतिं भरणान्तं कृतं नाना विघपाप नाशं नार्थं सहिरण्यं
तिल पात्रं सोम दैवतम् अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय सूपूजि-
ताय तुभ्य महं अंप्रददे । तिलाः पुण्याः पवित्राश्च तिलाः स्वर्गकाराः
स्मृताः ॥ शुक्ला वायुदिवा कृष्णा अपिगोत्र समुद्भवाः ॥ यानि कानि
चपापानि ब्रह्म हत्या समानि च ॥ तिल पात्र प्रदानेन तानि नाशयंतु
सर्वदा महर्षि गोत्र संभूताः करयपस्य तिलाः स्मृताः ॥ तस्मात्ते पां प्रदा-
नेन मम पापं व्यपोहतुं ॥ इति कुश जलान्दत्त्वा ॥ दान प्रतिष्ठा-अद्य
कृतैतत् सहिरण्यं तिलक पात्र दानं प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं दत्तिणां हिरण्यम्
अग्निदैवतं [तन्मूल्योप कल्पितं द्रव्यम् अमुक दैवतं] यथा नाम गोत्राय
इत्यादि ।

उत्क्रान्ति धेनु

मम मुखेन प्रणीत्क्रमणार्थं श्री नारायण प्रीतये इमांस्तु फात्वि धेनु
रुद्रदैवत्यां [तत्प्रत्याम्नानी भूतरजतं चन्द्र दैवत ताम्रखंडं श्री सूर्य
दैवत] यथा नाम गोत्राय यथा नाम शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसंप्रदे
प्रार्थनामृत्युत्क्रान्तीप्रवृत्तस्य दुःखोत्क्रान्तिनिवृत्तयोः तुभ्यं संप्रदेनाम्नां
गांसमुत्क्रान्ति संक्षिकाम् ॥ दान प्रतिष्ठा अद्यकृतैतत् उत्क्रान्तिधेनुप्रत्या-
म्नायोभूत अमुक द्रव्य दान कर्मणः दानप्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्यं अमुक
दैवतं इत्यादि ।

दशदान संकल्पः

मम श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं गो-
भू-तिल-हिरण्य-आज्य-वास-धान्य-गुड-रौप्य लवण प्रत्याम्नायी भूतानि
इमानि रौप्य खण्डानि नाना नाम गोत्रोभ्यो नाना नाम शर्मभ्यो ब्रह्म-
णेभ्यः संप्रददे दान प्रतिष्ठा-अद्यकृतैतत् दश दान कृतप्रत्याम्नायी भूत
कर्मणः प्रतिष्ठा सांगता सिद्धयर्थं यथोक्त फलप्राप्तये श्री नारायणप्रीतये
इमानि रजत खण्डानि चन्द्र दैवतानि गोभूइत्यादि दशदान प्रत्याम्ना-
यद्रव्य दान प्रतिष्ठात्वेन अहं संप्रददं ॥

कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता धाप्य जानता, मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं
पंचत्व मागतम् ॥ १ ॥ धर्माधर्मं समायुक्तं लोभमोहं समावृत्तम् ॥ दहेयं
सर्वं गोत्राणि दिव्यान्लोकान्सगच्छतु ।

अथ वृहद्गोदानविधिः

सर्वाधनार्शनं पुण्यं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ।
 स्वर्गापवर्गदं चाथ वक्ष्ये गोदानमाह्वयम् ॥ १ ॥
 अथने धिपुत्रे याते वैधृती सूर्यसङ्क्रमे ।
 क्षीणेन्दो पौर्णमास्यां वा द्वादश्यां राहुपूर्वेणि ॥ २ ॥
 मन्वादी च युगादौ च जन्मर्क्षे पुत्रजन्माति ।
 यात्राकाले प्रहोत्पाते दुःस्वप्नेऽद्रुमुत्तदर्शने ॥ ३ ॥
 व्रते यागे प्रतिप्रासु गावो देया शिवाधिना ।
 तीर्थे देवालये गोष्ठे सङ्गमे यज्ञमण्डपे ॥ ४ ॥
 शालमामशिलायामे च शिवलिङ्गस्य सन्निधौ ।
 इत्यादिशुभदेशेषु स्वगृहे वा पयस्विनोम् ॥ ५ ॥
 दद्यादस्ति कस्युद्धया वां सहेमां द्विजपुत्रये ।
 कुलोनाय सुशीलाय वेदवेदाङ्गनादिने ॥ ६ ॥
 सद्बुद्ध्यायामप्रसाय दान्ताय कुशवृक्षये ।
 क्रोधहिंसाधिहीनाय सदा सन्तोषजीविने ॥ ७ ॥
 पितृमातृगुरुणां च भक्त्या प्रियवादिने ।
 अनिष्टदेशजातान् सांगाय व्रतचारिणे ॥ ८ ॥
 जपस्वाध्यायनिष्ठाय तथा सत्यपराय च ।
 परदारनिवृत्ताय बहिसे वारताय च ॥ ९ ॥
 सर्वदानानि देयानि विष्णुवत्स विचिन्त्येत् ।
 अपराधाधमक्लेशं स्वयत्नेनाजितं धनम् ॥
 स्वल्पं वा विपुलं वापि देयमित्यभिधीयते ॥ १० ॥

तत्र दाता सुस्नातः गोदानसामार्थी स्वाग्रतः संपाद्य सुजिप्ताया भूमौ
 सप्ततीक्ष्णः स्वासने उपविश्य यथोक्तलक्षणां सवत्सां गां प्राह्मुर्गी-
 मवस्थाप्य वदङ्मुखं ब्राह्मणं संस्थाप्य गणेशं नत्वा स्वाग्रतः गन्धा-
 दिना अर्घ्यं सहाप्य कुरातिलजलयवान्यादाय सकृत्सर्वं कुर्यात् ॥
 ११ विष्णुः ३ अथोद् अमुकगोनोऽमुकराशिरमुकराम्ना सप्ततीक्ष्णोऽहम्
 भूतिस्थितपुराणोक्तभावाप्तये सकलमनोरथसिद्धये च कृतेतद् भोयज्ञ-
 पुरुषप्रोक्तं गोदानं करिष्ये तत्प्रतिप्रहार्थं ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वर-
 णञ्च श्रिये ।

उदङ्मुखं ब्रह्मण्यं अर्घ्यादिभिः सम्पूज्य वक्ष्यसामर्ग्यं करे कृत्वा,
 पविर्गन्वाद्युत्पुष्पमालावस्त्रोपवीतनक्षत्रफलादिभिः गोदानप्रतिप्रहार्थं अमुक-
 गोत्रममुकवशाध्यायियतममुकराम्नां ब्राह्मणं त्वामहं ब्रूये । प्रतोऽसीवि

ब्राह्मणो वदेत् ॥ ततः पुष्पमालादिभिर्ब्राह्मणं चालंकृत्य तत्र मंत्राः ॐ
या अहरदिति भरदाज ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सुमनसो देवता पुष्पमाला-
प्रहणे विनियोगाः ॥ ॐ या अहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामयेन्द्रियाय
अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च ॥ ॐ यद्यशोऽप्सरसमिति भार-
द्वाज ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सुमनसो देवता पुष्पमालावन्दने विनियोगः ।
ॐ यद्यशोऽप्सरसाभिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु तेन संप्रथिताः सुमनसाः
आवध्नामि यशो मयि । ततो ब्राह्मणं प्रार्थयेत् । यदर्चनं कृतं विप्र
तव विष्णुस्वरूपिणः ॥ तत्सर्वं मम दीनस्य विष्णवेऽस्तु समर्पणम् ।
ततः स्वपुरतः पाङ्मुखीं गां सबत्सामवस्थाप्य तदुत्तरतो न्यस्य
पूजयेत् ॥ तत्र सकलसः ॥ ॐ विष्णुः ३ अघेहेत्यादि अमुक
गोत्रोऽमुह्यशिरमुकशर्माहं गोदानपूर्वाङ्गत्वेन सबत्सायाः गोः यथाम-
लितोपचारैः पूजनं करिष्ये । आवाहनम् । आवाहयाम्यहं देवी
गां त्वां त्रैलोक्यमातरम् ॥ यस्याः स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते
॥ १ ॥ त्वं देवी त्वं जगन्माना त्वमेवासि वसुन्धरा । गायत्री
त्वं च सावित्री गङ्गा त्वं च सरस्वती ॥ २ ॥ तृणानि भक्ष्यसे
नित्यममृथं स्रक्षसे प्रभो ॥ भूतप्रेतपिशाचैश्च पितृदेवतमानुषान् ।
सर्वांस्तारयसे देवि नरकात्पापसंकटान् । इत्यावाह्यं पूजयेत् ॥ सर्व
देव० इत्यादी

सर्वसायै गवे नमः पार्थ स्नानं समर्पयामि । पुष्पं गृहीत्वा ॥
नमो विश्वमूर्तिभ्यः विश्वमातृभ्य एव च । लोकाधिवासिनोभ्यश्च
रोहिणीभ्यो नमो नमः ॥ गोः अग्रपादाभ्यां नमः ॥ गोः पश्चात्पा-
दाभ्यां नमः ॥ देहस्था या च रुद्राणां शङ्करस्य सदा प्रिया ।
धेनुरुपेण सा देवी मम पार्थ व्यपोहतु ॥ गोरास्याय नमः ॥
विष्णोर्वक्षसि या देवी स्वाहा या च विभावसोः । चन्द्रार्कशक्र-
शक्तिर्या सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥ गोः शृङ्गाभ्यां नमः गोः कर्णाभ्यां
नमः । चतुर्मुखस्य या लक्ष्मीर्यालक्ष्मीर्धनदस्य च लक्ष्मीर्या लोकापालानां
सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥ गोः शृङ्गाय नमः । स्वधात्वं पितृमुल्यानां स्वाहा
यज्ञभुजां तथा । सर्वपापहरा धेनुस्तस्माच्छ्रान्तिं प्रयच्छ मे ॥ गोः
पुच्छाय नमः ॥ वस्त्रम् ॥ आच्छादनं मया दत्तं सम्यक् शुद्धं
सुनिर्मल । सुरभिवंशदानेन प्रीयतां परमेश्वरि ॥ गन्धम् ॥ सर्वदेव-
प्रियदेवि चन्दनं कुङ्कुमान्वितम् ॥ कर्पूरादिसमायुक्तं गौर्गन्धः
प्रतिगृह्यतामः ॥ अक्षताः ॥ अक्षता अतिशुभ्राश्च कुङ्कुमाक्षाः सुरो-
भनाः । मयानीता प्रियार्थं तान् गृहाण त्वं गवेश्वरि ॥ पुष्पाणि
पुष्पमाला ॥ धूपम् ॥ आनन्दकृतं सर्वलोके देवानाञ्च सदा

प्रिये । गोस्त्वं पाहि जगन्माता धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ दीपम् ॥
सायं सद्यस्त्रिंशद्युक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेशि
सर्वं तस्मिन्मिरापहम् ॥ गोमासः ॥ सुरमिस्त्वं जगन्माता, नित्यं
विष्णुपदे स्थिता ॥ गोमासं च मया दत्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
भूपणार्थं द्रव्यम् ॥ घण्टां चामरञ्च समर्प्य ॥ (क) ततो गोदेह-
तीर्थान् पूजयेत् ॥ अत्र त्रिवारं प्र०

गन्धाक्षतपुष्पैः— शृङ्गमूले ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः । शृङ्गाग्रं सर्वतो-
र्धभ्यो नमः । शिरोमध्ये महादेवाय नमः । कालटेगौर्व्यै नमः ।
नासरन्ध्रे परमुखाय नमः । नासापुटयोः कम्बलाखवतराभ्यां नमः ।
दन्तेषु वायवे नमः । जिह्वायां बरुणाय नमः । ह्रूकारे सरस्वत्यै
नमः । गण्डयोः मासपक्षाभ्यां नमः । ओष्ठयोः सन्ध्याद्वयान्यां
नमः । ग्रीवायां रक्षोभ्यो नमः । कुक्षौ साध्येभ्यो नमः । जंघासु
धर्माय नमः । सुरमध्ये गन्धर्वेभ्यो नमः । सुराग्रे कुलपर्वतेभ्यो
नमः । सुरपरिचरामेषु अप्सरोगणेष्वप्यो नमः । षष्ठे एकादश रुद्रेभ्यो
नमः । सर्वसन्ध्या वसुभ्यो नमः । ओष्ठयोः पितृगणेष्वप्यो नमः । पुच्छे सोमाय
नमः । पुच्छकेरोषु सूर्यरश्मिभ्यो नमः । गोभूवे गङ्गायै नमः । गोमये यमुनायै
नमः । क्षीरे सरस्वत्यै नमः । दक्षिण नर्मदायै नमः । ध्रुवे वह्नये नमः ।
रोमसु कोटिदेवेभ्यो नमः । उर्वरे पृथिव्यै नमः । स्तनेषु चतुः सागरेभ्यो
नमः । एते यस्याः स्तनी देवा सा भेतुर्वरदा मम । स्वर्गाभूमी रौप्यलुप्या
साम्रष्ट्यां मुक्ताफलसमर्पितक्ष्मांगुली कांस्यगोदोहनिष्का विधाय प्रार्थयेत् ॥
नमो गोम्यः श्रीमतीभ्यः सीरमेवीभ्यः पञ्च च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च
पवित्राभ्यो नमो नमः । ततः सकुशाक्षतप्रयं गोपुच्छं गृहीत्वा ॥ प्राङ्-
मुखी यजमानो देववीर्येन देवांस्तर्पयेत् ॥ ॐ वा नन्दिनी सुराज्याः
कामदारश्चैव धेनुः । ताः सर्वाः पुच्छतो येन तपिस्तास्तर्पयन्तु माम् ॥
प्रक्षा विष्णुर्महादेवः कार्तिकेयो गन्धाधिपः । पुष्पचापो महेंद्रश्च भग-
वानभ्युतामजः ॥ देवाः समस्ताः सगणाः सबाह्वन परिच्छदाः । वस-
वोऽष्टौ डादराकां रुद्रा एकादशैव तु ॥ विश्वेदेवाश्च साध्याश्चाष्टीः
मरुतो मातरस्तथा । गन्धर्वा गुह्यकारश्च सागराः सरितस्तथा ॥ राजसा
यक्षपतालाः पूतनाः पर्वता द्रुमाः । तीर्थायन्यप्सरसश्चैव पशवः पन्नगाः
रत्नाः श्रृङ्गाणि यशसो योगा मासवर्षतुवासरा । अथने च युगाः कल्पाः
तथा मन्वन्तराणि च ॥ भुवनानि दिशीक्यश्च तथा सर्वेन्द्रियाणि च ।
ॐ कारश्चैव गायत्री छद्गान्यंगानि चैव हि ॥ वेदाश्च स्मृत्यश्चैव पुरा-

एानि तथैव च । आयुर्वेदो धनुर्वेदो गन्धर्वो मन्त्रगङ्गः ॥ ओषध्यो वनसं
भूता ग्राम्याश्चत्र सुपिप्पलाः । सानुगा देवताश्चैव मुनयः सगणास्तथा ॥
ऋषयः ऋषिपत्न्यश्च सिद्धाश्च सगणास्तथा ॥ प्रजा प्रजापतिश्चैव येऽन्ये
विघ्नविनायकाः ॥ विद्याधराश्च दैत्याश्च आचार्या गुरवस्तथा ।
डाकिन्यः क्षेत्रपालास्व भैरवाश्चाष्टसंख्यकाः ॥ स्थावरा जंगमाश्चैव
भूतप्रामश्चतुर्विधः । अक्षयेनामृतेनैव मंगलेन सुवारिणा ॥ गोपुच्छोदक
च्युतेनेह महत्तैव हितेऽखिलाः । शास्वती तृप्तिमायान्तु दीर्घयुक्तवरप्रदाः
सूर्यः सोमा कुलः सोम्यो गुरुः शुक्रः शनैश्चरः । प्रह्लाश्च तृप्तिमायान्तु
राहुकेतुसमन्विताः ॥ इन्द्रो वह्निर्यमा रक्षः पारसी वायुर्वनाधिपः । ईशोऽ-
नन्तस्तथा ब्रह्मा सर्वे ते तर्पिता मया ॥ सावित्र्या सह लोकेशः सलक्ष्मी
करचतुर्भुजः । महेशश्चोभया सार्द्धं तृप्तिमायान्तु शास्वतीम् ॥ अश्वि-
शिष्टो भृगुगौतमौ च मरीचिदत्तौ पुलहः पुलस्त्यः । प्राचेतसः काश्यपवि-
श्वमित्रौ भरद्वाजसंज्ञौ यदमग्निरेव ॥ अन्ये च सर्वे मुनिपुंगवाश्च
गृह्णन्तु दत्तं जलमद्य तुष्टाः । जीवत्पितृकस्य तर्पणे निषेधोऽतस्तेन
तन्न कार्यम् ॥ ततो यज्ञोपवीतं कण्ठावरोहणं कृत्वा साक्षतकुशैः मनुष्य
तीर्थेन मनुष्यांस्तर्पयेत् ॥ सनकः सनन्दनश्चैव सनातनस्तथैव च । कपिल-
श्चासुरिश्चैव बौधुः परचक्षितस्तथा । ते तृप्तिमस्त्रिमायान्तु गोपुच्छोदक
तर्पणे ॥ ततोऽपसव्यं विधाय । द्विगुणि तदुशतिलजलैः पितृस्तर्पयेत्
कव्यवाङ्मनलः सोमो यमश्चैवाय्यमा तथा । अग्निप्यात्ताः सोमपाश्च
तथा वह्निपदरचये ॥ तर्पितास्तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणे ।
यमाय धर्मराजाय मृत्यये चान्तरात्राय च ॥ वैवस्वताय कालाय
सर्वभूतक्षयाय च । औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने ॥ वृकोद-
राय वित्राय चित्रगुप्ताय ये नमः । पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥
मातापितामही चैवतथैव प्रपितामही । मातामहः प्रमातामही वृद्धप्रमाता मह-
स्तथा । मातामही प्रमातामही वृद्धप्रमातामही तथा अग्र्यां तृप्तिमायान्तु गो-
पुच्छोदकतर्पणे ॥ ये मृता वे पितृव्याश्च मातुलाः स्वगुरास्तथा । आचार्य-
गुरुमित्राद्या गृह्णन्त्येवं जलं मुदा । ये च सन्बन्धिनोऽपुत्रा बह्निदाह विव-
जिताः । अपमृत्युमृता येच ते गृह्णन्तुगुर्जलमपूतं श्रेष्ठायैव मान् वंशेष
येमृताः । गुरुवरगुरवभूतां ये चान्ये बायसा स्मृताः ॥ येमे कुले तुष्टपिष्टा
क्रियालोपगताश्चये । विरूपा आमगभार्षद्वाता द्वाताः कुले मम ॥ ते मयं
तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणे ॥ इत्थं तर्पणं विधाय सज्येनाचम्य ॥
गाम् उदङ्मुखो गाम् उदङ्मुखो विप्रः पुच्छदेरो स्वयं स्थित्वा आभ्य
गात्रं मतिनं कनकंन (मुरलीन) अन्निर्व (युक्तं) प्रष्टुं गोपुच्छं
वत्पात्रे विधाय दानसंकल्पं कुर्यात् ॥ ॐ विष्णुः ३ अग्रेदेवतादि उपायं

अमुन्नामसप्तसरे अमुकायने अमुकर्तो अमुन्नामे अमुकपत्ने अमुक
 रासरे अमुकतिथौ अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशि-
 स्थिते सूर्ये अमुन्नास्थिते देवगुरौ राशेषु मङ्गलपु यथायथ राशिस्थान
 स्थितेषु सत्सु पर्वण्यविशेषेण विशिष्टाया शुभपुरुषतिथौ ममात्मन
 दुनिस्मृति पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिष्टद्वयर्थम्, सकलमनईप्सित
 कामनासंसिद्धयर्थम्, लोके वा सभाया राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजय
 लाभविप्राप्त्यर्थम्, इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपराहनाय,
 तथा मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सवा-यवस्य अग्निस्तुष्टुमन्त्रसहितस्य सपशो
 समस्तभयस्याधिनरापीडा शत्रुपरिहार द्वाय आयुर्गायैश्वर्याभिष्टद्वयर्थम्
 तथा मम चन्द्रमशोरखिल कुटुम्बस्य वा चन्द्रमशो सकाशाद्ये केचिद्विद्व
 वतुर्वाप्त्यं द्वादशस्थान स्थित क्रूरघहास्त्रै सूचित सूचयिष्यमाणैव
 यत्संशान्तिं तद्विनाशद्वारा एकादश स्थान स्थित वच्छुभफल प्राप्त्यर्थम्,
 आदित्यान्तिवमहानुकूलतासिद्धयर्थम् तथा इन्द्रादिवृशदिक्तालप्रसन्नता
 सिद्धयर्थम्, आग्निदेविन्द्र-आविभीतिक-आभ्यात्मिकत्रिविधतापोपराम
 नार्थम्, अमार्थकाममोक्ष फलावाप्त्यर्थमथ यदोक्तफलावाप्त्यये अमुकोनाय
 अमुकनेदाध्यायिनेऽमुकरामणे प्राज्ञेणाय तुभ्यमहं समर्पये । दानवाप्यन् ।
 यज्ञसावनभूता या विश्वस्यापविनाशिनी । विश्वरूपधरो देव प्रीयता
 मनया गवा रयिले सव देवाना पूजनीया शिरोहिणी । वीर्यं देव मयादत्ता
 तस्माच्छान्तिं प्रियच्छमे । इत्युक्त्वाप्यं सकुरागोपुच्छ विप्रहस्ते दद्यात्
 विप्रोऽपि ॥ ॐ घोस्त्वा इदानीं पृथ्वी त्वा प्रतिगृह्णातु ॥ ॐ देवस्य
 त्वा सप्रितु प्रसंगेरिवनोत्राहुम्याम् पूषणो हस्ताम्याम् । ॐ कोवात्
 कामाऽ अदात् कामोदात् कामा दाता कामं प्रतिगृहीता कानैतत् ॥
 स्वस्तीति यदेत् ॥

दानप्रतिष्ठा सकल्प ॥ ॐ विष्णु ३ अष्टोहेत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकरा-
 शिःशुभशामाऽहं दृष्टेत्प्रोक्षनप्रविष्टासिद्धयर्थम् इह सुवर्णमभिदैवत यथा
 परिमितमात्रमात्रसहितं प्राज्ञेणायदास्ये ॐ वसन्त ॥ इति दद्यात् । प्राज्ञेण
 पुन्यादङ्गनाभिप्रेतं कुर्यात् ॥ ॐ शान्ति ॐ शोः शातिरन्तरिक्ष
 शान्तिं प्रथिगोशान्तिराप शान्तिरोपधय शान्तिर्वनस्पतय शान्तिरि
 रनद्वा शातिश्च शान्तिं सर्वं शान्तिं शान्तिरेव शान्तिं सामा
 शान्तिरेव ॥ ॐ विष्णवे नमः सविषुर्दुःखानि परामुष यद्द
 तन्नऽमासुः ॥

यस्य गृ ११ चन्द्रमा ११ वावोतकक्रिया १५

१५ ११ १५ ११ वावि यपो नदे वन-पुत्र ॥ अष्टयुतायनम् ।

इत्यभिपेकं कृत्वा, मन्त्राशिपं च दद्यात् ॥ ततो यजमानः ब्राह्मणेन समन्विता गां त्रिःप्रदक्षिणीकृत्य ॥ प्रदक्षिणामन्त्रौ ॥ नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ॥ तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥ ततो दक्षिणां भूयसीं च दद्यात् । ॐ विष्णुः ३ अथेह अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माह गोदानकर्मणः साङ्गफलवाप्तये सादगुण्यार्थं च इमां दक्षिणां ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रदेदं तथा भूयसीं दक्षिणाम् अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये ॐ तस्मै । तथा यद्योपपन्नेनान्तेन ब्राह्मणांश्च भोजयिष्ये ॥ (क) ततो ब्राह्मण आशिपं दद्यात् मन्त्रपाठः ॥

ॐ गोमो धेनु सोमोऽश्ववन्तमाशु सोमोर्ध्वं रक्ष्मण्यन्ददाति ॥ सादन्यं विदक्ष्य सभेयम्पितृभक्षणं यो ददाश दत्तैः ॥ १ ॥ ब्राह्मणयुक्तां त्रिःप्रदक्षिणीकृत्य गोमतीं पठित्वा ततो गोदानं तिष्ठाभूयसीं कल्पं कुर्यात् । गोमती अग्रे द्रष्टव्या ।

गोदाने विशेषः

त्रिकं मातामहाद्यं च मातामह्यादिर्धं त्रयम् । ते च तान्य प्रदत्तं मे स्वीकुर्वन्तु जलं मुदा ॥ १ ॥ गोत्रे मदीये विमुक्ता मृता ये गोत्रे च मातुर्मम ये विपन्नाः । गर्भंभ्युताः भ्रातृविवर्जिताश्च तेभ्यः स्वाधानेन जलेन कृत्वा ॥ २ ॥ भृशग्निवज्रादिजलादिशस्त्रैर्विपाणदन्तेन खरैर्भुजङ्गैः । पञ्चत्वभाषं विगताश्च ये च तेभ्यः प्रदत्तं शिवमस्तु तोयम् ॥ ३ ॥ ये शीरवादी नरके निमग्नाः क्रियावितुष्टाश्च कृतपकाः । जन्मान्तरे ये मम दासभूतास्तेऽप्यक्षयां तृप्तिमिहाभजन्तु ॥ ४ ॥ ये राधाया अराधया येऽन्यजन्मनि चान्यथाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुरोत्तमवारिभिः ॥ ५ ॥ धेनुपुच्छे हरं कृत्वा तपणं च करोति यः । आत्मानं तारयेद्विप्रो दशपयन् दशापयन् ॥ ६ ॥ सन्तपिता मया ये च गोपुरद्वौ ददतपणं । आयुरर्द्धं तथा तुष्टिं मेधां दद्यां च सन्तः तिम ॥ ७ ॥ अराभ्य घनजान च मन्तुष्टान् ददन्तु मे ॥

गोमती पठेत्-गाय. सुभयो नित्यं गात्रो गुग्गुलुगन्धिरा । गायः प्रतिष्ठा भूतानां गायः स्वस्थयनं नमन् ॥ १ ॥ पावनं सर्वभूतानां

(क) ॐ उत्तर दक्षिण दक्ष-पश्चिम-सूतेनैवादि प्रा अच्युताय नमः इति तिष्ठुं स्मरेत् ।

वितृभ्यान्तमः श्रीवायाम् ॐ बृहती बृहतिभ्यां नमः-अनुके । (हनौ) ॥ ॐ
 बृहद्रथन्तरयात्रा पृथिवीभ्यां नमः-वाहोः । ॐ त्रिष्टुविन्त्राभ्यां नमः-
 नाभौ । ॐ जगत्पादित्याभ्यां नमः-श्रोणयोः । ॐ अतिच्छन्दा प्रजा-
 पतिभ्यान्तमः-लेङ्गे । ॐ यज्ञा याज्ञे वैश्वानाम्यां नमः-गुदे । ॐ अनुष्टु-
 विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः-ऊर्ध्वोः । ॐ पङ्क्ति वरुद्योतमः जान्धोः । ॐ द्विपदा-
 विष्णुभ्यां नमः-पादयोः । ॐ विछन्दा वायुभ्यां नमः । नासापुटस्थ
 प्रणेषु । ॐ म्यूनाक्षरा छन्दोभ्यो नमः-सर्वाङ्गेषु ॥ एव मेवाह्वानि-
 योजयित्वा वेदमयः सम्पद्यते । [न कुत्तारिचङ्कयं विन्दते । शापा नुग्रह
 सामर्थ्यं ब्राह्म तेजश्च वद्धते । स्वर्गं लोकं परं साधनम् । धर्मार्थं काम
 मोक्षस्य च । तस्य दारिद्र्यं दुःखं शोकं रोगमयं न भवति । ऋषि देवता
 छन्दा १५ सिधित्वाः ऋमयो यजुर्मयः साममयोऽथर्वमयोऽमृतमयो
 विश्णु रिदं कात्यायनस्य च ॥ ॐ भूभुवःस्वर्गस्तस्मिन् विभुः ॥ २ ॥ ॐ
 इषेः शोऽं ॥ वायवस्व देवो वसन्ति प्राप्ययतु रश्रेष्ठ तमाय
 कर्मणः ५ आर्षाव्यध्वमन्वयाइन्द्राय भागम्प्रजा वतीर नमीवाऽअयच्छमा
 मा वस्तेन ईदं रात् माचर्श १५ सो ध्रुवाऽआस्मिन्नोपवीत्यात व्रह्मोर्ष्यज-
 मानस्य पशून्प्राहि ॥ ३ ॥ वसोऽपविप्रम् ॥ हिरण्यमेन पात्रेण सत्यस्या-
 ऽपिहितम्सुखम् । पोसावादिस्त्ये पुरुषऽसौ सावहम् ॥ ॐ ३म् ।
 खम्बह । प्रतमुपै ख्यनन्वरेणा हवनीयञ्च गार्ह पत्यञ्ज प्राङ्मिष्टपऽ-
 उप स्युराति तद्यदऽवपस्यरात्य मभ्यो वै पुरुषो यद् नृत्वम्बदति तेन
 पूति रन्तरतो मेभ्यावाऽआपो मेभ्यो भूत्वा प्रत मुपायनीति पवित्रम्
 याऽआपऽपवित्रं पूतो प्रत मुपायनीति तस्माद्वाऽमपऽउत्तरस्युराति ॥ १ ॥
 सोमिन् मेवा भोक्तृमाणो प्रत मुपैति ॥ [ॐ पूर्णं स्रष्टुपूर्णमिदं पूर्णं-
 त्वपूर्णं मुदुच्यते । पूर्णस्य पूर्णं मादाय पूर्णं मेवा वशिष्यते । ॐ तं
 ब्रह्मा । ॐ तं पुराणम् ॐ वायुरेव स मिति स्माद् कौर व्यायणी
 पुत्रो वेदय ब्राह्मणं विदुर्वेदेन न यद्वेदितव्यम्] ॥ ॐ प्रारणी पुत्रादा-
 सुरि वासिनःऽप्रारणी पुत्रऽआसुरायण दासुरायणऽआसुरोसुरि वासि-
 ल्कयादावल्क्य उदालकाऽदुदालकोऽरुणादरुणऽअश्विनो रुद्रदेशिः कुशे-
 ऽहमित्रीज श्रवसो वाजभवाजिह्वावतो वाभ्योगाजिह्वावान् वाभ्योगाऽसि-
 वाद्वर्षगणादसितो वर्षगणो हारि तात् कश्यपाद्वरितःऽशिलादरुण्यप

[१] एते मन्त्राः स्वरपूर्वकं पटनीया इति केशाचिन्मते । परं च
 हतापुत्रः एवंति प्राङ्मुखः प्राग्मेव कुशोपविश्य वामं हस्तं जले कुश
 पवित्रे [दीदमी] कृत्वा तदुपरिदक्षिणं हस्तं यथो मुखं कृत्वा ॐ हारं पूर्विता
 गावन्ती तथा चतुरो वेदादीन् पठेत् ॥ [२] इदं यजुर्वेदोत्तरपत्रम् ॥

चिद्वपऽकृत्यऽकृत्यपात्रे ध्रुवेऽकृत्यपोने अग्निर्वाचो रागमिष्टया
 ऽअग्निमष्टया दित्या दादित्या नामानि शुक्लानि यन् ॥ ५ ॥ यानसने
 यन याज्ञस्तस्य ना रयन्ते ॥ ७ ॥ (इत्युक्तं बृहदारण्यो वेनि
 पदि] ॥ ॐ अग्निं माले पुराहित यज्ञस्य वनमृत्विजम् । होतार एन
 पात मम् ॥ ॐ अग्नऽआर्याहि वातये गृणानो हव्य दातये । तिहोता
 सस्ते रद्विष ॥ १ ॥ ॐ राज्ञो वसोर मिष्टयऽआपोभवन्तु वातये । श
 राग्निमिष्टयन्तु नऽ ॥ ६ ॥ अनुयेदानन्तर यज्ञानि पठेत् अथानुवाकान्
 वशानि । मण्डलं दक्षिणं मन्त्रिं हृदयम् । अथ शिक्षा प्रवक्ष्यामि, अग्रातो
 ऽधिकारं कन युक्ताभिः कर्माणि । अग्रातो गृन्वातो वाकानां कमृडिषा
 र्हेत् । समाप्ताय समाप्ताय मय रसतज्जमनजम सविनम् । पञ्च सम्बन्
 सर मये युगा यक्षम् । गोमता अग्रातो धर्मं चिक्षासा अग्रातो नक्ष
 चिक्षासा रागीत्यर्धं याज्ञस्तस्य । नारायण नमस्तस्य इति । निघातपो
 यानि रातिर्विष्णुराति । रायने नार्चितो देव श्रीयता मे जनादित ।
 (एत नक्ष रागीत्याय पाण्योग्द्विषात कुराता कुश पवित्रस्य च वत्तारपा
 राग कुपात्र) अर्गम्—प्रनेनरक्ष यज्ञास्येन कर्मणा श्री भगवान् पत्ने
 इतर प्रायता न मम ॥ ॐ वसन्तः पञ्चमस्तु ॥ यस्य स्मृत्या ० इति नक्ष
 यज्ञ प्रयोगः ॥ शुभम् भगवत् ॥

अथ आचम्य प्रयोगः ॥

अथ आचम्य प्रयोगः [एतत्र आचम्यस्य पूर्वमादिकाले प्रात
 स्नान सन्धादि नित्यकर्म विवाह्य गुरु शिष्यगणै सह मामाहदि
 प्राच्यामुदाच्या वानघादि रम्य जलाशय गत्वावत्तारे शुभ्रा यथा
 दश सम्भवा या मृदमार्द गोमर्द मसम कुरान् तिलाक्षराद मुर
 नापि पुत्राणि पूरादुपमानाग यमोपनीषादि सयां आचम्य सामर्मी
 मन्वाय अग्निस्वापनार्थपीठ (एते वस्त्ररम्भापत्र या) पूनार्धगम्य
 पुण्याणि पूतासम्भार च मन्वाय मूलेपन पूरकं प्रक्षालित इति
 पाद प्रातः सुय उदङ्मुखा वा सपवित्र करो गुरु कृत्वा च्छी
 चादियुतं गिन्य महाचम्य प्राणा नायम्य दशधनीसद्वैत्यं सर्वे
 मद सद्वैत्यं पुयान् ॥ यथा—सद्वैत्य,—अधीतानामप्यप्यमाणानां
 चाशयना यथापनविच्छेद कोश पापमृन्तवि इति दुर्धस इती
 धारित म्णा नम्रमरणाना गता यन्मियातिदुःखोपासित यथाज्ञा

(१) इदं सूत्रदात्रः (२) इदं प्रामवदात्रः (३) इदं पय
 यद्वत्तस्यन् ॥

श्लिष्टा स्पर्श वणविघट्टनादिभिः पठितानां श्रुतीनां यद्यातयामत्वं
तत्परि हागर्थं अष्टत्रिंशदनध्याया ध्ययनेरध्यायश्चरतः शुद्धस्य शृ-
वतोऽध्ययनेस्लेच्छान्त्य जादेः शृण्वतोऽध्ययने अशुचिदेशोऽध्ययने
आत्मनोऽशुचित्वेऽध्ययने अक्षरस्वरानुस्वार पदच्छेद कण्डिका व्यञ्-
जनहस्य दीर्घानुन कण्ठ तालु मूर्धन्योष्ठ्य दन्त्य नासिका
नुनासिक रेफ जिह्वामूलीयो पद्मा नीयो दाक्षानुदात्त स्वरितादीनां
०० ये नोचरे माधुर्याक्षर व्यक्ति हीनत्वाधनेक प्रत्य वाय परि
हार ०० सर्वस्य वेदस्य स वीर्यत्वसम्पादन द्वारा यथावत्फलप्रा-
प्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं सशिष्योऽहं शुक्तयजुर्वेदोत्सर्गोपा करणं
करिष्ये इति सङ्कल्प्य, गुरुः शिष्यैः सह उभाकवीत्युच्यते पठेत् ॥
तथा—ॐ उभाक वीर्युवा नो धर्मः पठारतत् । परिसंख्यानि धर्मिणो
विसरंभ्यानि विसृजामहे ॥ इति मन्त्रं पठित्वा यथा क्रमेण सर्वे गुरो
रभिवादनं कुर्युः । (पुनश्च देशकालौ स्मृत्या सङ्कल्पयेद्यथा)
सङ्कल्पः—अध्यायोऽर्गं कर्म निमित्तं गण स्नानं महं करिष्ये ।
पुनश्च इषेत्वादि ॐ खं ब्रह्मान्तेषु याः क्रिया स्तत्र विवस्वान् ऋषिः
सर्वाणि यजु ॥ विसर्वाणि छन्दा ॥ सि प्रजापति लिङ्गोक्ता देवता
स्नानादि सर्व कर्मसु विनि योगः इत्युक्त्या स्नाना नुज्ञां प्रार्थयेत् ।
यथा—नमोऽस्तु देव देवाय शिति कण्ठाय वेधसे । रुद्राय चाप
हस्ताय इण्डने चक्रिणे नमः । सरस्वती च गायत्री वेदमावा गरी
यसी । सन्निधात्री भव त्वं च सर्वपाप प्रणाशिनी ॥ यद्वा सागर
निर्घोष दण्ड इत्या सुरान्तक । जगत्स्रष्टर्जगन्निव नमामि त्वामु
रान्तक । तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम । भैरवाय
नमस्तुभ्यं मनुष्यां दातृमर्दासि ॥ नमामि गङ्गे त्वं पादपङ्कजं
सुरा सुरेर्वेन्द्रादिव्यरूपम् ॥ भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यभाषा
नुसारेण सदा नराणाम् ॥ (इमं मन्त्रं समुच्चार्य तीर्थ स्नानं
समाचरेत् । अन्यथा वत्फल स्यात् तीर्थेऽहोहरति धूमम्, उत्तिष्ठन्तु
महाभूता ये भूतानुमि चासिनः ॥ भूता नाम विरोधन स्नान कर्म
समारम्भे ॥ अपसपन्तु ते भूता ये भूता स्तीर्यदूषकाः । येभूता
विघ्न कर्तार स्ते नश्यन्तु शिवाय नमः । पुष्पा यानि वीर्यानि गङ्गाया
सरितस्तथा ; आगच्छन्तु पश्चादि स्नान काले सदा मम ॥ अथा

अरामार्गं निमित्तं स्थिति स्थितिः कुशैः पृथक् पृथक् गायत्री पठित्वा
ब्रह्म प्रणि मुक्ताः सप्तर्षय द्वापाः । ते च शीते नवं स दशं धीवं वरुणं रम्भा
रवं वा प्रसारं वास्तिन्द्रमागन्ता उदगन्ता वास्याय नीयाः । । ।

मावि पति स्व च तीर्थेषु नसतिस्तत्र । वरुणाय नमस्तुभ्य स्ना-
नानुज्ञाप्रच्छमे ॥ अधिष्ठात्र्यश्च तीर्थानां तीर्थेषु विहरन्ति वा ।
त्रेयस्तस्मात् प्रयच्छन्तु स्नानाज्ञानम सर्वदा ॥ गङ्गे च यमुने चैव
गोदावरि मरुत्यति । नन्देसिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
ततः ॐ उरु छ हि राजा वरुणा-नन्तरं इति मन्त्रेणां तोयमभि-
नयेत् ॥ शेष स्नाननिमित्तं प्रयागं गच्छेत् ॥ ततः धीत वा
सप्तो परिवाच दर्भा सनादीं प्राङ्मुख उड्ड-स्थो वा परिवार-
भक्तं गोपी चन्दनादि धृत्वा पवित्रं पोषि शान्त्य माध्याह्नं सन्ध्या
दुर्यात् । ततः सूर्योपस्थानं मण्डलं प्राकृत्य च सम्पाद्य । ततः
वह्म यज्ञं देवाय मनुष्ये पितृ तर्पणं च कुर्यात् । अथ ऋषि-
पूजनम्—तत्रादौ ऋषयः सप्त मिति सूक्तं सर्वं पठनीयम् । (इह सूक्तं
तद् शान्त्याध्याये कृच्छ्रव्यम्) । ऋषिप्रतिष्ठा—ॐ मतो नूतिज्ञं पता
मागवस्य इह सतिर्गन्धमिमन्तनो स्वरिष्टं व्यञ्जं नमिमन्तनात् ।
त्रिदशे देवासऽहं मा दयन्ता मोक्षं प्रतिष्ठा । १२ । एष वै प्रतिष्ठा
नामयज्ञो यत्र तेनयज्ञेन यजन्ते सप्त मेव प्रतिष्ठितं मस्तु ॥ इति
मन्त्रेण ऋष्युपरि अक्षताम् नित्तिपेत् ॥ ऋषि आवाहयामि— ॐ भू-
भुवः स्व ऊरुपाय नम ऊरुप आवाहयामि भोऽरुप इह
गच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण मम समुत्तं सुप्रसन्नोऽरदो भव ॥ १ ॥
ॐ भूभुवः स्व भद्रापाय नम भद्रार्ज आवाहयामि भो भद्र-
द्राज इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण मम समुत्तं सुप्रसन्नो वरदो भव
॥ २ ॥ ॐ भूभुवः स्व गौतमाय नम गौतम आवाहयामि ।
भागीतम इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण मम समुत्तं सुप्रसन्नो वर-
दाभन ॥ ३ ॥ ॐ अर्ये नम अरि आवाहयामि भा अर्ये इहागच्छ
इहातिष्ठ पूजा गृहाण मम समुत्तं सुप्रसन्नो वरदो भव ॥ ४ ॥ ॐ भूभुवः स्व
त्रय द्युमय नम त्रयदिव आवाहयामि भो त्रयदम्ने इहागच्छ इह
तिष्ठ पूजा गृहाण मम समुत्तं सुप्रसन्नो वरदो भव ॥ ५ ॥ ॐ भूभुवः स्व
रक्षिष्ठ इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण मम समुत्तं सुप्रसन्नो वरदो भव
॥ ६ ॥ ॐ भूभुवः स्व त्रिभामित्र नम आवाहयामि । भा त्रिभा-
मित्र इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण मम समुत्तं सुप्रसन्नो वरदो भव
॥ ७ ॥ ॐ भूभुवः अरुन्धत्ये नम अरुन्धत्ये नम अरुन्धत्यो मावा-
हयामि भो अरुन्धति । इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण मम समुत्तं
सुप्रसन्नो वरदो भव ॥ ८ ॥ ॐ भूभुवः स्व याज्ञवल्क्याय नम याज्ञ-
वल्क्य मावाहयामि । भो याज्ञवल्क्य इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण मम
समुत्तं सुप्रसन्नो वरदो भव ॥ ९ ॥ ॐ इमा देव गौतम भद्रार्ज वयसव-

गौतमोऽयं भारद्वाजऽइमावेव विश्वामित्रं जमदग्नीऽअयमेव विश्वामित्रो-
 ऽयं जमदग्निरिमा वेव वसिष्ठ कश्यपा वयमेव वसिष्ठोऽयं कश्यपो
 वागेयात्रि व्याचक्षेत्र मद्यतेतिह वै नामैतद्यद्वित्रिरिति सर्व्वस्यात्ता भवन्ति
 सर्व्वस्यान्नभवति यऽएवं वेद ॥ ४ ॥ सङ्कल्पः—अथोत्पादि शुभपुण्य
 तियौ ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्तयर्थं श्री परमेश्वर
 प्रीत्यर्थं उत्तमर्जनाङ्गत्वेन अरुन्धती सहित करयापादि सप्तपिस्व ऋषि
 पूजनं मई करिष्ये ॥ तत्रादौ निविघ्नता सिद्ध्यर्थं महागणपति पूजनं
 स्मरणं वा करिष्ये । [एष गणपतिपूजां स्मरणं वा कृत्वा ऋषीन्ध्या-
 येत्] ॥ ध्यानम्—ॐ सप्तऽऋषयऽप्रतिहिताऽऽशरीरं सप्त रक्षन्ति सद्
 मप्समादम् । सप्तापऽस्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतोऽस्वप्नजोसरच
 सद्यो चदेवौ ॥ ३ ॥ इदं विष्णुर्विचक्रुमे त्रेधा निश्चे पदम् । समुद्र
 मस्यपा ६ सुरेस्वाहा ॥ ४ ॥ सहस्रशी० ॥ ५ ॥ ॐ भू भुवः स्वः अरुन्-
 धन्ती सहित करयापादि स्व ऋषिभ्यो नमः स्यान् पूर्व्वकं सा वाहनं
 समर्पयामि ॥ आसनम्—सुवर्णं घटित दिव्यं नाना रत्न समन्वितम् ।
 आसनं रुचिरं यच्च गृह्यतांभो मुनीश्वराः ॐ पुरुष ए० ॥ ६ ॥ ॐ भू-
 भुवः स्वः अरुन्धती सहित करयापादिस्व ऋषिभ्यो नमः आसनं समर्प-
 यामि ॥ पाद्यम्—गङ्गाजलं समानीतं गन्ध द्रव्येण संयुतम् । पाद्याय
 प्रति गृह्णन्तु कश्यपाद्या महर्षयः [१]—ॐ एतावानस्य० । ७ ॥ ॐ
 भू भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादि स्व ऋषिभ्यो नमः पाद्यं सम-
 र्पयामि ॥ अर्घ्यम्—सुवर्णं पात्र संयुक्तं गन्ध पुष्पाद्यैर्युतम् । सप्तर्षयः
 प्रगृह्णन्तु इदं मय्ये मयापितम् ॥ ॐ त्रिपाद० ॥ ८ ॥ ॐ भू भुवः स्वः
 अरुन्धती सहित कश्यपादि स्व ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ आच-
 मनम्—कपूरं वासितं तोयं सुवर्णं कलशेस्थितम् । दत्तमाचमनीयं च
 ऋषिणां प्रीतये सदा ।—ॐ ततो द्वि० ॥ ९ ॥ ॐ भू भुवः स्वः अरु-
 न्धती सहित करयापादि एव ऋषिभ्यो नमः ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥
 स्नानम्—सुगन्ध द्रव्य संयुक्तं पवित्रा मङ्गलं जलम् । स्नानार्थं वः
 समानीतं मुनयः प्रतिगृह्णाताम् ॥—ॐ तस्मा ध्यातास्सर्व्व० । १० ॥ ॐ
 भू भुवः स्वः अरुन्धती सहित करयापादि स्व ऋषिभ्यो नमः स्नानं
 समर्पयामि ॥ अथ स्नानम्—पञ्चामृत स्नानम्—पयो दधि घृतं चैव मधु
 च शर्करान्वितम् । पञ्चामृत मयानीतं स्नानार्थं प्रति गृह्णाताम्—ॐ
 पञ्चनद्यस्त० ॥ ११ ॥ ॐ भू भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादि स्व
 ऋषिभ्यो नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि ॥ गन्धोदऽस्नानम्—ॐ
 गन्ध द्वारा दु० ॥ १२ ॥ ॐ भू भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व
 ऋषिभ्यो नमः गन्ध स्नानं समर्पयामि—पूर्व्वपूजां समाप्य । पुरुष सूक्ते

नामिषेभ्यः कृतात् ॥ ॐ सहस्रशी० ॥ ॐ भूर्भुवः स्व अरुन्धती सहित
करपादिस्य ऋषिभ्यो नमः मद्राभिषे० स्नान समर्पयामि ॥ इति स्नेप
कम् ॥ उद्धम्—मूढमाख्य वीर गुह्याणि वस्त्राणि विविदा निव । ऋषयः
प्रति गृह्णन्तु उष्ण शीत निवारणो । ॥ ॐ तस्मात्पा० ॥ १३ ॥ ॐ भूर्भुवः
स्व अरुन्धती सहित करपादिस्य ऋषिभ्यो नमः वस्त्र समर्प
यामि ॥ यनोपवीतम्

यनोपवीतम्—नानामन्त्रैः समद्रुत त्रिष्टुत ब्रह्मसूत्रकम् । प्रत्येक दीपते
स्व-ॐ ऋषयः प्रति गृह्णताम् ॥ ॐ तस्मात्पा० ॥ ४ ॥
ॐ भूर्भुवः स्व अरुन्धती सहित करपादिस्य ऋषिभ्यो नमः यनोप
वीतइतिसमर्पयामि ॥ गन्धम्—आत्मसन्तापहार च सुगन्ध द्रव्य
सयुक्तम् । चन्दनकम्वद्रामि ऋषीणां प्रीतिहेतवे ॥ ॐ तस्यैव ॥ ५ ॥
ॐ भूर्भुवः स्व अरुन्धती सहित करपादिस्य ऋषिभ्यो नमः
गन्ध समर्पयामि ॥ अक्षतम्—अक्षता शुभ्र रन्धुत वा शुक्ला
शङ्ख गुग्गुली मन्तोरमा । अक्षतान्सप्तयज्यामि गृह्णन्तु मुनि पुङ्गवा । ॐ अक्ष
तमी० ॐ भूर्भुवः स्व अरुन्धती सहित करपादिस्य ऋषिभ्यो नमः
अक्षतान् समर्पयामि हरिद्रा—हरिद्रा प्राक्कुम्भ चैव कज्जलभूपणा
निव ॥ कटुण कण्ठ सूत्र च गुरुण पमेश्वरि ॥ ॐ अहिरिव०
॥ १० ॥ ॐ भूर्भुवः स्व अरुन्धती सहित करपादिस्य ऋषिभ्यो
नमः हरिद्रा कुङ्कुमादि द्रव्याणि समर्पयामि ॥ इति स्नेपकम् ॥
पुष्पाणि (तुलसी-तुल—त्रिरुपत्र—कमलानि च ऋषिभ्यो विरोधतः)
मा-व्यादीनि मुग-वीनि मालत्यादीनि सत्तमा । मेषापितानि पुष्पाणि
गृह्णन्तु मुनिपुङ्गवा ॥—ॐ यस्तुपा० ॥ १८ ॥ ॐ भूर्भुवः स्व
अरुन्धती सहित करपादि ऋषिभ्यो नमः ऋतुफलोद्गरपुष्पाणि
समर्पयामि । धूपम्—छण्डानुसमुद्रं तो धूपेऽथ पश्चाद्गङ्गा ।
सुगन्ध करपादिस्य ऋषीभ्यो दीयतेऽधुना ॥ ॐ वाङ्मये० ॥ ॐ
भूर्भुवः स्व अरुन्धती सहित करपादिस्य ऋषिभ्यो नमः धूप
दशयामि ॥ दीपम्—पञ्च वर्ति समायुक्त सप्तै मन्त्रैः शोभन ।
मेषानिर्दिष्टो यज्या दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ चन्द्रगाम० ॥ २० ॥
ॐ भूर्भुवः स्व अरुन्धती सहित करपादिस्य ऋषिभ्यो नमः
दीप दशयामि ॥ नैवेद्यम्—पञ्चमूल सप्तयुक्त नाज्य शाक समन्वि-
तम् । शङ्खपट्ट सप्तयुक्त नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ नाम्क्याऽभा०
॥ २१ ॥ ॐ भूर्भुवः स्व अरुन्धती सहित करपादिस्य ऋषिभ्यो नमः नैवेद्य
समर्पयामि ॥ त्रिग मन्त्रे पानीय समर्पयामि । उत्तरापोश्वा इन्द्र
प्रपातनं मुखं यज्जालनं करोऽवन्तार्यं चन्दनं च समर्पयामि ॥

(अथ क्षेपकम्—फलम्—नारिकेलं कूष्माण्डं च कदली कर्कटी
 फलम् । अतुकालोद्भवं चान्यदीयतेऽयं मुनीश्वराः । १ । ॐ याः
 फलि ॥ २२ ॥ ॐ भूभुवः स्वः अरुन्धतीसहितं करयपादि स्व
 ऋषिभ्यो नमः फलानि समर्पयामि ॥ इति क्षेपकम् ॥ ताम्बूलम्—
 पूगी फलं च कपूरं नाग वल्ली दलैर्युतम् ॥ एता लवङ्ग संयुक्तं
 ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ— यत्पुरुषे ॥ २३ ॥ ॐ भूभुवः
 स्वः अरुन्धती सहितं करयपादिस्व ऋषिभ्यो नमः ताम्बूलसमर्प-
 यामि ॥ अथ क्षेपकम्—दक्षिणा' हिरण्यं गर्भं गर्भस्थं हेमं वीजं
 विभावसौः । अनन्तं पुण्यं फलदं मतः शान्तिप्रयच्छमे ॥ ॐ हिरण्यं
 गर्भः ॥ २४ ॥ ॐ भूभुवः स्वः— अरुन्धती सहितं करयपादि-
 स्व ऋषिभ्यो नमः दक्षिणां समर्पयामि ॥ कर्पूरार्तिक्यम्—ब्रह्मिष्ठा
 ब्रह्मरूपाश्च करयपाद्या महर्षयः । ब्रह्म यज्ञादि दातारः सन्तु मे कीर्तिं
 कर्मणि ॥ ॐ इदं ॥ २५ ॥ ॐ भूभुवः स्वः अरुन्धती सहितं
 करयपादिस्व ऋषिभ्यो नमः कर्पूरार्तिक्यं दर्शयामि ॥ इति क्षेपकम् ॥
 प्रदक्षिणा—यानि कानि च पायानि जन्मान्तरं कृतानि च । तानि
 तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे ॥ ॐ सप्ताय स्वा ॥ २६ ॥
 ॐ भूभुवः स्वः अरुन्धती सहितं करयपादिस्व ऋषिभ्यो नमः
 प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ मन्त्रपुष्पयुक्तो नमस्कारः—शरणागत
 दीनार्थं परि त्राणं परायणाः । रक्षन्तु मुनयः सर्वे मामद्य शरणा-
 गतम् । सत्पर्वयः शुभाः श्रेष्ठाः सर्वेषां च शुभं प्रदाः । पुष्पाञ्जलिं मया-
 दत्तं गृह्णन्तु मुनिसत्तमाः ॥—ॐ यज्ञेन यज्ञ ॥ २७ ॥ ॐ भूभुवः
 स्वः अरुन्धती सहितं करयपादिस्व ऋषिभ्यो नमः मन्त्रं पुष्प-
 युक्तं नमस्कारं समर्पयामि ॥ प्रार्थना—मन्त्रं हीनं क्रिया हीनं भक्ति
 हीनं मुनीश्वराः । यत्पूजितं मया सर्वं परि पूर्णं तदस्तु मे ॥ ॐ
 भूभुवः स्वः अरुन्धती सहितं करयपादि स्व ऋषिभ्यो नमः प्रार्थनां
 समर्पयामि ॥ अर्पणम्—अनेनमया वेदोत्सर्जनाद्भवेन कृतेन
 ध्याना वाहनादिषोडशोपचारादि पूजनेन अरुन्धती सहितं करयपादि
 सप्तर्षिस्व ऋषयः प्रीयन्तां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति ऋषि
 पूजनम् ॥ ततः स्वपितृभ्यो यज्ञोपवीतं दानम्—अमुक गोत्रेभ्यः
 अस्मत्पितृ पितामहं प्रपितामहेभ्यः । तथा द्वितीयं अमुक गोत्रेभ्यः
 अस्मन्माताहं प्रमातामहं वृद्धं प्रमातामहेभ्यः । तृतीयं—कव्यवाड नलादि

(१) प्राचीनावीति दक्षिणाभिमुखः सर्वे कुशोदकं गृहीत्वा पुरतो यज्ञ-
 पवीतानि निधाय ॥

दिव्यपितृभ्य इमानि यज्ञोपवीतानिस्त्रवा सम्पद्यन्ताम् इति
 मृज्यपरि समर्पयेत् ॥ [जीवित्पितृ कै रपि पितु पित्रादि
 भ्यो मातामहादिभ्यश्च यज्ञोपवीतानि देयानि ॥ १॥]
 एत सन्ध कृत्वा सर्वात्राद्वरणान् । गन्धादिना सम्पूज्य तेभ्यो यज्ञोपवी
 तानि दत्त्वा पश्चात् सर्वे स्नय मणिवार्याणि ॥ यज्ञो पवीत धारण
 प्रयोग — आचम्ये प्राणानात्म्य ॥ सङ्कल्प्य अष्टेत्यादि मम श्रीत
 स्मार्त्त कर्मानुष्ठान सिद्धयर्थं उवाच अमुक कर्माङ्गत्वन यज्ञो पवीतधारण
 मह करिष्ये । सूत्र त्रिगुणी करणम् — इव विष्णुरिति मेवातिविश्वं वि ।
 विष्णुर्देवता । गायत्री छन्द सूत्र त्रिगुणी करणे विनियोग — ॐ इह
 विष्णुविष्णुक्रमे त्रेधा निक्षेपे पदम् । समूह मस्य पा ६३ सुरे स्वाहा ॥ १॥

प्रक्षालनम् — आपोहिष्ठेतिस्त्रिगुणास्त्रिधु द्वीप ऋषि । आपा देवता ।
 गायत्री छन्द । यज्ञोपवीत प्रक्षालने विनियोग — ॐ आपोहिष्ठ मयो
 भुव स्तानऽऊर्जं ददातन महोत्थाय वक्षसे ॥ २॥ यो व — शिव तमो रस
 स्तस्यमानयतेह न — उशतीरिवमातर ॥ १॥ तस्माऽऽथरङ्गमाम प्री वस्य
 यस्य हृदय विन्यय । आपो जलपत्रा चतऽ ॥ ४॥ ततो यज्ञो पवीतानि
 प्रक्षाल्या तन्तरं दशगायत्री मन्त्रैरभि मन्थ ॥ तन्तु देवदानामा वाह
 नम् — प्रणस्य । ब्रह्मा ऋषि परमात्मा देवता । गायत्री छन्द प्रथम
 वन्ती ॐ कारा वाहने विनियोग । ॐ प्रथम तन्तो ॐ कार आवाहयामि ।
 अग्निन्तमिति मेवा तिथि ऋषि । अग्नि देवता । गायत्री छन्द ।
 द्वितीय तन्तो मयावाहने विनियोग — ॐ अग्नि तूतसुरोद्रे हव्यवाह
 सुपधुने । देवा रं ऽ आसा दयादिह ॥ ५ ॥ द्वितीय तन्तो अग्निमावाह
 यामि । तमोस्तु सर्वेभ्य इत्यस्य प्रजापतिश्चरि सर्पा देवता । अनु
 ष्टुप् छन्द । तृतीय तन्तो सर्पा वाहने विनियोग — ॐ नमोस्तु । सर्वे
 न्या येकव प्रयिरोमतु । येऽथतरिखेयेदिवि वेभ्यः — सर्वेभ्यो नम — ॥
 ६ ॥ तृतीय तन्तो सर्पा वाहयामि । वय ऽसामेत्यस्य रन्धुर्ऋषि सोमो
 देवता । गायत्री छन्द । चतुर्थ तन्तो सोमा वाहने विनियोग — ॐ
 वय ॥ सोमप्रते नत्र मनस्व नृपुत्रिः प्रवऽ प्रजापन्तऽ मचेमहि ॥ १॥
 पनुव वन्तो सोममावाहयामि ॥ उदीरामित्यस्य शश ऋषि । पितरो
 यत्रा । त्रिष्टुप् छन्द पञ्चम तन्तो पित्रा सहमे विनियोग — ॐ
 उदीरामयऽऽरुतामऽऽन्मद्वयमा ऽ पितरः — सोम्यासः । अनु यऽ
 ईपुर पुराऽथ्य शान्ता नो वन्तु पितरा इत्यु ॥ ८॥ पञ्चम तन्तो
 पित्रा नाशायामि ॥ प्रजापतित्यस्य दिग्ययगभ ऋषि । प्रजापतिऽयता ।

त्रिष्टुप् छन्दः । पष्ट तन्तौ प्रजापत्या वाहने विनियोगः—ॐ प्रजाप
 तेन । त्वदेता न्यन्यो विश्वारूपाणि पश्ता वभूव । यत्कामास्ते जुद्ध-
 मस्तन्नोऽस्तु न्यय ध्र स्याम पयोरयोणाम् ॥ ६ ॥ पष्टतन्तौ प्रजापतये-
 नमः । प्रजापतिमा वाहयामि आनो नियुद्धिरित्यस्य । वसिष्टश्चपि ।
 अनितो देवता त्रिष्टुप् छन्दः । सप्तम तन्तौ अनिला वाहने विनियोगः ।
 ॐ आनो नियुद्धिः शतीनीभिरद्वर ॥ सदसिणीभिरुपचाहि यज्ञम् ॥
 व्यायोऽस्मिन्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदानः ॥
 ॥ १० ॥ सप्तम तन्तौ अनिलाय नमः अनिल मावाहयामि ॥
 सुगाव इत्यस्यात्रिष्टुप् । गृह पतयो देवता । आर्षो त्रिष्टुप् छन्दः ॥
 अष्टमं तन्तौयमा वाहने विनियोगः—ॐ सुगावो देवाः सदानाः
 अरुन्मयः आजगमेदध्र सवनञ्जुपाणाः । भग्माणा वहमाना हवी धृष्य-
 स्मेधत्र यसवो वसूनि स्वाहा ॥ १ ॥ अष्टम तन्तौयमाय नमः यममात्रा
 हयामि ॥ विश्वेदेवासः आगत इत्यस्यामधु छन्दा ऋषिः । विश्वेदेवा
 देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । नवम तन्तौ विश्वेदेवा देवानामा वाहने विनि-
 योगः—ॐ विश्वेदेवासः आगत ऋणुताम् इमध्र इधम् । एदम्यर्हिन्ति
 पीदत ॥ १२ ॥ नवम तन्तौ विश्वेदेवेभ्यो नमः विश्वान् देवा ना
 वाहयामि ॥ यज्ञो पवीत प्रन्थि देवताऽयाहनम्—ऋजजज्ञान मित्यस्य ।
 प्रजापतिश्चपि । ऋजा देवता गायत्री छन्दः । प्रन्थि मध्ये ऋजा वाहने
 विनियोगः ॥ ॐ ऋजयज्ञानमयम स्रस्ता द्विसीमतः सुहृन्वाध्वेनः
 आषः सयुद्धम्याऽ उपमाऽ अस्यव्विष्टराऽ सतत्त्व यानिमसतरच
 व्विरः ॥ १३ ॥ इदं विष्णुरित्यस्यमेधा तिथिश्चपि । विष्णुर्देवता ।
 गायत्री छन्दः । प्रन्थि मध्ये विष्णवा वाहने विनियोगः—ॐ इदम्विष्णु
 ॥ १४ ॥ इदम्यक मित्यस्य । वसिष्ट ऋषिः रुद्रो देवता । विराट्
 ब्राह्मीत्रिष्टुप् छन्दः । प्रन्थि मध्येरुद्रा वाहने विनियोगः—ॐ इयं
 रुद्रः ॥ १५ ॥ ब्रह्मोपवीत प्रन्थि देवताभ्यो नमः—प्रन्थि देवता आवा
 हयामि ॥ ब्रह्मोपवीत वाहित देवताभ्यो नमः यथास्यानमहं न्यसामि ॥
 मानसो पचारः सम्पूज्य । अथ ध्यानम्—प्रजापतेयंसहज परित्र
 कापोस स्रोद्भव मद्य सूरम् । प्रकृत्य सिद्धये च यशः प्रसादा उपस्य
 सिद्धिं कुरु मद्य सूरम् ॥ ॐ नुवा सुरासा परिवीत आगात्सऽउदेवा-
 न्भरति जायमानः । तन्मीरसः कथय इत्यन्ति स्वाभ्या मनमा देव-
 क्तः । यज्ञोपवीत धारणम्—यज्ञोपवीत मिति मन्त्रस्य । परमंष्टी ऋषिः
 जित्रोता देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । यज्ञोपवीत धारणे विनि योग—ॐ
 यज्ञोपवीतम्यमन्त्रविरम्यप्रजापतेयंसहजम्युरस्तान् । आयुष्य मय्यप्रति
 सुरव शुभं यज्ञोपवीतम्यम मन्तु तेजः यज्ञोपवीत मसि यज्ञस्य त्या द्योत-

पर्यते नोपत ह्यमि ॥ अनेन मन्त्रेण यज्ञोपवीतानां षडङ्ग-पुष्पक धारणं
 कुर्यात् । प्रति यज्ञोपवीत धारणं स्यात्तन्मयांराचमम् धारणांते जीर्णसूत्र
 त्याग मन्त्रः—एताद्दिनं पर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया । जीर्णत्वात्त्वत्पि-
 त्यागो गच्छ सूत्रं यथा सुखम् ॥ इति मन्त्रेण जीर्णं यज्ञोपवीतं शिरो
 मार्गेण निःसार्य शुद्ध भूमौ त्यजेत् ॥ परचा यथा शक्ति गायत्री मन्त्र
 जपं कुर्यात् ॥ अपरेणम्—अनेन नव यज्ञोपवीत धारणार्थं कृतेन यदा
 शक्ति गायत्री जप कर्मणा श्री सविता देवता प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्स-
 मन्त्रद्वारपणमस्तु ॥ यस्य० ॥ इति यज्ञोपवीत धारण प्रयोगः ॥

अधोऽर्ग तर्पणम्

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्गीर्षं हृन्दसां क्वचिदपि ज्वाशदि
 काले पठनादनधिकरिमिः आपृष्टं प्राप्तं मालिन्यस्य निरासार्यं मुर्त्सा-
 र्गाद्य तर्पणमहं करिष्ये इति संकल्प्य । देवतर्पणम्—ॐ विश्वेदेवाऽऽ
 आगतं श्रुणुताम इमं ॐ हवम् । एदम्बहिर्निषेदत् ॥ २६ ॥ विश्वे देवाऽऽ
 शृणु तेन ॐ हवम्यवेऽयन्तरिषु पऽउपदप विष्णु । ये अग्नि जिह्वाऽऽतवा
 यन्नन्वाऽऽसह्यारिर्भूर्हवि मादयदम् ॥ ३० ॥ इति मन्त्राभ्यां देवानां
 वाह । ॐ देवास्तुष्यन्तु । इन्द्रा ॐ सि त्प्यन्तु । ॐ वेदास्तुष्यन्तु ॥ ॐ
 ऋषय इत्यन्तु । ॐ पुराणा चार्ता स्तुष्यताम् । ॐ गन्धर्वास्तुष्यन्ताम् ।
 ॐ इतर चार्थास्तुष्यताम् । [अथ चोपकम्—केचित्सर्वस्तरात्रयथापि
 पूयन्त्रेण तर्पयन्ति तद्यथा]—ॐ अहोरात्रा स्तुष्यन्ताम् । अर्धमासा-
 स्तुष्यन्ताम् । ॐ मासास्तुष्यन्ताम् । ॐ ऋतव स्तुष्यन्ताम् । ॐ संवत्सरः
 सावयवस्तुष्यताम् ॥ इति चोपकम् ॥ ॐ भितर स्तुष्यन्ताम् ॥ आचार्या
 स्तुष्यन्ताम् तव सङ्गं जान्वाक्यं दक्षिणामि मुखो उपसङ्गयेन विलिनि-
 धित जलमञ्जलोद्गीत्वाअमुक गोत्राऽअस्मत्पितरः अमुकशर्मणो वसुधुपा
 स्तुष्यन्स्वधानमः । अमुकगोत्राः अस्मत्पितामहाः अमुक शर्मणो वसुधुपा
 स्तुष्यन् स्वधानमः ॥ अन्येतु आग्नि रद्विः उद्गीत्वा मित्वादि नोक्त तर्पण
 विधिना शिष्यैर्ब्रह्मरसः क्रियामाणेन सर्वान् पिबन् तर्पयन्ति । प्रीवतिपुत्री
 पुत्रैरिष्यैश्चाचार्यं पिबन्तर्पणांकार्यमात्मन्—अमुकगोत्राः अस्मदा चार्यस्य
 पितरः अमुक शर्मणो स्तुष्यन्स्वधा । एव भार्यस्य पित्रामहं प्रपिता
 महाना ज्ञेयम् ॥]

(२) दक्षिण जान्वाक्येशानामि मुखाः अन्येन प्रागग्रैर्दग्धेदेवतीर्धेन देवानां
 नञ्जलि प्रथं दद्यात् ॥

ततः आचमनम्,—तूष्णीम् पश्चात् ॥

वंशानां ब्रुवणम्

अथ य ६१ शाऽ समान मासाञ्जीवी पुत्रात्साञ्जीवी पुत्रो माण्डूकायने
माण्डूकार्थानिर्माण्डव्या न्माण्डव्यः कौत्सात्कौत्सो माहित्ये माहित्यि-
वामकक्षायणाव्वाम कक्षायणो वात्स्याद्वात्स्यऽशाण्डिल्या च्छाण्डिल्य-
ऽकुश्रेऽकुश्रियंज वचसो राजस्तम्बायनाद्यञ्च वचा राजस्तम्बायनस्तु रात्का-
वपेयात्तुरऽः कावपेयऽः प्रजापतेऽः प्रजापतिर्ब्रह्मणो ब्रह्मस्वयम्भु ब्रह्मणे नमऽः
। १॥ वशोक्ता ऋषय स्तूप्यन्ताम् । (एवं ऋष्युपरि उक्त्वं क्षिपेत्) अथ
व ६२ शस्तदिदं वय ६२ शौपर्ण्याच्छौपर्ण्यायौ गौतमाद्गौतमो वात्स्यां
द्वात्स्यो वात्स्याच्च पारा शर्य्याच्च पाराशर्य्यऽः सङ्घं कृत्याच्च भारद्वाजा-
च्च भारद्वाजऽऔद्वा हेरच शाण्डिल्याच्च शाण्डिल्यो वैजवाच्च गौतमाच्च
गौतमो वैजवापायनाच्च वैष्ठ पुरे याच्च वैष्ठ पुरेयऽः शाण्डिल्याच्च रौहि-
णायनाच्च रौहिणा यनऽः शौनका च्छात्रेयाच्च रैभ्या च रैभ्यऽः पौतिमाख्या-
यणाच्च कौण्डिन्यायनाच्च कौण्डिन्यायनऽः कौण्डिन्यात्कौरिडन्यः कौरिड-
न्यात्कौरिडन्यः कौरिडन्याच्चाग्नि घेरयाच्च ॥ २॥ आग्नि वैश्यः सैववात्-
सैवयऽः पाराशर्य्यात्पाराशर्य्यांजातुकर्ण्यांजातू कर्ण्यांभारद्वाजा द्वारद्वाजो-
भारद्वाजःश्चा सुरायणाच्च गौतमाच्च गौतमोभारद्वाजा द्वारद्वाजोवैजवा पायना-
द्वैजवा पायनऽः कौशिकायनेः कौशिकायनि घृतकौशिकाद्धृत कौशिकऽः
पाराशर्य्यायणत्पाराशर्य्यायणऽः पाराशर्य्या त्पाराशर्य्यां जातुकर्ण्या जातु
कर्ण्यां भारद्वाजा द्वारद्वाजो भारद्वाजाश्चा सुरायणश्च यास्काश्चा सुरायणश्चो-
बणेस्त्रै वणि रोपजन्धने रौप जन्ध निरासुरेरासुरि भारद्वाजा द्वारद्वाजा
आत्रेयात् ॥ ३॥ आत्रेयोमाण्डे माण्डिगौतमाद् गौतमो-गौतमा द्वौतमो
वात्स्याद्वात्स्यऽः शाण्डिल्याच्छाण्डिल्यऽः कैशोर्य्यात्काप्यात्कैशोर्य्यऽः काप्य-
ऽकुमारहारितात्कुमारहारितोगालवाद्गालवोविदर्भी कौण्डिन्या द्विदर्भीकौण्डि-
न्योवत्सन पातोव्राध्रवावत्सन पाद्वाध्रवऽः पथऽः सौभरात्पन्थाऽः सौभ-
रोऽयास्वादाङ्गि रसाद्यास्यऽ आङ्गिरसऽआभूतेस्त्राष्टां दा भूतिस्त्राष्टो-
द्विवरूपा त्वाष्टाद्विवरूपस्त्राष्टोऽश्विन्यामश्विनोदेधौचा थर्वणादध्य-
ङ्गोऽथर्वणो देवाद् थर्वा हवोमृत्योऽः प्राण्व च सनामृत्युः
प्राध्वं च सनात्प्राध्वऽः च सनऽएकपरेकपि विप्रजितेर्विप्रजिति व्यष्टे
व्यष्टिऽः सनारो ऽसनारु ऽः सनातनात्सनातनऽः सनगात्सनगऽः
परमेष्ठिनऽः परमेष्टी ब्रह्मणो ब्रह्मस्वयम्भु ब्रह्मणे नमऽः ॥ ४॥
वंशोक्तऽऽपयस्तूप्यन्ताम् अथव ६३ रास्त दिदं वयशौपर्ण्याच्छौपर्ण्या-

त्यो गौतमाज्ञीतमोवात्स्याद्या तस्योवात्स्याच्च पाराशर्याच्च पाराशर्यं साङ्ग-
 त्याच्च भारद्वाजाच्चभारद्वाजश्चौदयादेशचराष्ट्रिडल्याच्च शाष्टिडन्योवैजवायाच्च
 गौतमाच्च गौतमो वैजवा पायनाच्च द्रैष्ठ पुरेयाच्च व्वैष्ठयः
 शाष्टिडल्याच्चरोहिण्ययनाच्च रौहिण्ययनः शौनकाश्चलैवन्तायनाच्च
 रैव्याश्चरैभ्यःपौतिमास्त्यायणाच्च कौष्टिडन्यायनाच्च कौष्टिडन्यायनः
 कौष्टिडन्या कौष्टिडन्याः औणवाभेभ्यः औणवामाः कौष्टिडन्या
 त्सौष्टिडन्यः कौष्टिडन्या त्सौष्टिडन्यः कौष्टिडन्याजानि वैत्याच्च ॥ ५ ॥
 आग्निवेश्यः सैतत्रा त्सैतवः पाराशर्यात्पाराशर्याः जातु कर्थाजानु
 कर्णो भारद्वाजाद्भारद्वाजाश्चासुरायणाच्च गौतमाच्च गौतमोभार-
 द्वाजाद्भारद्वाजो वत्ताका कौशिका द्वाताका कौशिकः कपायणात्कायणः
 सौकरायणात्सौकरायणश्चै वसेत्रै वशिरोपजन्वेनरीप जन्वनिः कामकाय
 नत्सायकायनः कौशिकायनेऽ कौशिकायनि घृतं कौशिकाद्धत कौशिकः
 पारुमाण्यायणः पाराशर्यायणः पाराशर्यात्पातशर्या जातुः शर्याजानु
 कर्थाभारद्वाजो भारद्वाजो भारद्वाजाश्चासुरायणाच्चारकाश्चासुरायणश्चैवसे
 रत्रै वशिरीर जन्वन रीप जन्वनिरासुरेरासुरिभारद्वाजभारद्वाजः आत्रेयात्
 ॥६॥ आत्रेयाद्वात्रेयो माण्डेर्माष्टि गावमा द्वौवमागौतमा द्वौतमो वात्स्याद्या
 त्स्यशाष्टिडल्याच्छाष्टिडन्यः कैशोर्यात्काष्या त्सैशोर्यः काष्यः कुमार
 हारिताकुमार हारितोगालवा द्वालत्राव्विदर्भी कौष्टिडन्यो वृत्सन्पातो
 वात्रवाद्रसन पाद्वात्रवः पथः सोभरात्सन्धाः सोभरायास्यावाङ्गिरसा
 द्यास्यः आङ्गिरसः आभूतेस्त्वाष्ट्यादा भूतिस्त्वाष्ट्रोविश्वरूपा त्याद्वाद्
 विश्वस्त्वाष्ट्रो विश्व्यामरिनी दधीवः अथणाहभ्यङ्कावर्णौ दैवाद
 यन्त्रादैवास्त्या प्राथ्य छ सनान्मृत्यु प्राथ्य छ सनात् प्राप्य ॥ सनः
 एतर्पे रेक्षप विप्रजिते विप्रजिनिर्मण्डे व्यष्टिः सनारोऽ सनारुः सनातना
 त्सनातनः सनगात्सनगः परमेष्ठिनः परमेष्ठी 'त्रहण्यो ब्रह्म स्ववम्भु
 त्रहणेतनः वशाकाः ऋषयस्तप्यन्वाम् ॥७॥ अथवथ शस्त दिद ययः भार-
 द्वाजापुत्रा भारद्वाजापुत्रो व्यात्सीमाष्ट्वही पुत्रा द्वात्सीमाष्ट्वही पुत्रः पारा-
 शरी पुत्रा पाराशरी पुत्रो गार्गी पुत्राद्गार्गी पुत्रः पाराशरी कौष्टिडनी
 पुत्रा त्याप शरी कौष्टिडनी पुत्रोगार्गी पुत्रा द्गार्गी पुत्रो वाङ्गरी पुत्राद्वाङ्गरी
 पुत्रा मौषिकी पुत्रा-मौषिकिपुत्रो हारिकर्णौ पुत्राद्धारि कर्णौ पुत्राभारद्वाजी
 पुत्राद्भारद्वाजी पुत्रः पंजी पुत्रात्पंजी पुत्रः शौनकी पुत्राच्छौनकी पुत्रः ॥
 कारयपी याला म्या माटरी पुत्रा त्कारयपी बालास्यामाठरी पुत्रः
 ध्येत्ता पुत्रा त्स्येत्मी पुत्रो वीवा पुत्रा द्वीपीपुत्रः सालद्वयनी पुत्राच्छा-
 लद्वयनी पुत्रा चार्पगण्यो पुत्रा व्वाप गण्यो पुत्रो गौतमी पुत्राद्गौतमीपुत्र
 ओत्रया पुत्रा द्वयेया पुत्रो गौतमी पुत्राद्गौतमी पुत्र व्यात्सी पुत्रा द्वात्सी

पुत्रो भारद्वाजी पुत्राद्भारद्वाजी पुत्रः पाराशरी पुत्रात्पाराशरी पुत्रोच्चाकर्-
रुणीपुत्राच्चाकर्णुणी पुत्रऽऽतर्भागी पुत्रादार्तभागीपुत्रःशौङ्गीपुत्राच्छौङ्गी
पुत्रः साङ्कृती पुत्रात्साङ्कृतीपुत्रः ॥ ६ ॥ आलम्बी पुत्रादालम्बी-
पुत्रऽआलम्ब्यायनी पुत्रादालम्ब्यायनी पुत्रो जायन्ती पुत्राज्जायन्ती पुत्रो-
माण्डूकायनी पुत्रान्माण्डूकायनी पुत्रो माण्डकीपुत्रान्माण्डकी पुत्रः
शाण्डिलीपुत्राच्छाण्डिलीपुत्रो राथीवरी पुत्राद्राथी वरीपुत्रःक्रौञ्चिकी
पुत्राम्यां क्रौञ्चिकी पुत्रोवैदभृती पुत्रा वैदभृतीपुत्रो भालुकी पुत्राद्भालुकी
पुत्रः प्राचीन योगी पुत्रा प्राचीन योगीपुत्रः
साङ्गीवी पुत्रात्साङ्गीवी पुत्रः कार्किकी पुत्रात्कार्किकी
पुत्र ॥ १० ॥ प्राप्ती पुत्रा दासुरि वासिनः । प्राप्तीपुत्रऽआसुरायणा
दासुरायणऽ आसुरेरासुरिर्याज्ञ वल्क्याद्याज्ञ वल्क्यऽउहालकाबुहालको -
रुणादरुणऽउपवेशेरुप्रवेशिः कुम्भेऽ कुम्भिर्वाजश्रवसोन्वाजश्रवसांवाज-
श्रवाज्जिह्वा वतोऽवाध्योगाज्जिह्वावा न्याध्योगोसिताद्वापंगणाद् सितोन्वा
पंगणो हारितात्कश्यपाद्धरिन्ऽ कश्यपः शिल्पा कश्यपा
च्छिल्पऽ कश्यपः कश्यपाम्रेष्ठऽ कश्यपोनैधुर्विर्वाचो वागम्भि-
ण्याऽ अम्भियादित्यादा दित्यानीमानि शुक्लानियजु ध्रुविर्वाज
वल्केयना खयायन्ते ॥ ११ ॥ वंशोक्ताऽष्टपयस्तूप्यन्ताम् ॥ ॐ तत्सवितु-
रिति चतुर्वारं गायत्री पठेत् ॥ इति प्रति वंश वंशोक्ता नाम्नीणां तर्पणम् ।
ततः तत्सं वितुर्वं सावित्र्याश्चतुः कृत्वाऽनुब्रूयन् ॥ सर्वपातदन्ते
ॐ विरताः स्म इतिसकृदुचैर्वृथात् ॥ अध्यायाः—इयेत्वा ॥ १ ।
कृणोसि ॥ २ ॥ समिधामि ॥ ३ ॥ यदम् ॥ ४ ॥ अग्ने-
स्तनूऽ ॥ ५ ॥ देवस्यत्वा ॥ ६ ॥ वाचस्पतये ॥ ७ ॥ उपयाम
गृहीवोसि ॥ ८ ॥ देवसवितः ॥ ९ ॥ अपो देवाऽ ॥ १० ॥
युञ्जानऽ प्रथमम् ॥ ११ ॥ हृशानो रुक्मऽ ॥ १२ ॥ मयि
गृह्णामि ॥ १३ ॥ ध्रुवक्षितिध्रुवयोनिऽ ॥ १४ ॥ अग्ने जातान्
॥ १५ ॥ नमस्ते ॥ १६ ॥ अश्मन्मूत्रम् ॥ १७ ॥ वाजश्च
॥ १८ ॥ स्वादीन्त्वां ॥ १९ ॥ ह्यत्रस्ययोनिः ॥ २० ॥ इमम्मे
॥ २१ ॥ तेजोसि ॥ २२ ॥ हिरण्य गन्धंऽ सम् ॥ २३ ॥
अश्वस्तूपरऽ ॥ २४ ॥ शादन्दद्भिऽ ॥ २५ ॥ अग्निश्च
॥ २६ ॥ समास्त्वा ॥ २७ ॥ हाता यक्षत् ॥ २८ ॥ समिद्धोऽ
अञ्जनऽ ॥ २९ ॥ देवसवितऽ ॥ ३० ॥ सहस्र शीर्षा पुरुषऽ
॥ ३१ ॥ तदेव ॥ ३२ ॥ अस्या जरासः ॥ ३३ ॥ यज्जाग्रतः
ऽ ॥ ३४ ॥ अपेतऽ ॥ ३५ ॥ ऋच वाचम् ॥ ३६ ॥ देव-
स्ववा ॥ ३७ ॥ देवस्य ॥ ३८ ॥ स्वाहा प्रणम्यः ॥ ३९ ॥

ईशावस्वम् ॥ ४० ॥ ॐ हिरण्ययेन पात्रेण सत्यस्यापिहितम्भुगम्
 योसा वादित्ये पुरुषऽ सोसावहम् ॥ ४१ ॥ तन्महः ।
 अध्यायोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ अध्यायसिद्धयः—व्रतमुपैरयन्
 ॥ १ ॥ सर्वै कपालान्ये तान्यत्तरऽत्तरपदवाति ॥ २ ॥ सर्वै स्त्रुच
 ऽः संमाष्टि ॥ ३ ॥ द्विजकृत्या प्रवाह ॥ ४ ॥ सर्वै प्रवराया
 आनयति ॥ ५ ॥ ऋतपोह्वै देवेपुयज्ञोभागमीपिरे ॥ ६ ॥
 सर्वैपणशारण्या कस्तानपा करोति ॥ ७ ॥ मनत्रे हवै प्रातऽ
 ॥ ८ ॥ सयदाह ॥ ९ ॥ स सयदा इत रचेत्तरव सन्मरति
 ॥ १० ॥ उद्धृत्वा हवनीयम्पूर्णाहुतिं जुहोति ॥ ११ ॥ सूर्योद्वाऽ
 अग्नि होत्रम् ॥ १२ ॥ अथ हुतेभि होत्रमुपतिष्ठते ॥ १३ ॥
 प्रजापतिर्हवा इद ममऽएकऽएनास ॥ १४ ॥ पितामहा ऋषिषा हवै
 देवा व्युन्नजन्तु ऽः ॥ १५ ॥ देवयजनं योपयन्ते ॥ १६ ॥ इति-
 णेना हवनीयं प्राचीनं ग्रीवे कृष्णाजिनेऽउपस्तृणाति ॥ १७ ॥
 सप्तपदान्पुनिः क्रामति ॥ १८ ॥ शिरो वै यज्ञस्यातिथ्य वाहू
 प्राथयिषोद्वन्नीयो ॥ १९ ॥ तद्यऽप्य पुरार्घ्योव्यपिदुर्यूणाजो
 भवति ॥ २० ॥ उदरमे वास्यसदऽः ॥ २१ ॥ अग्निमादत्ते ॥ २२ ॥
 तद्यत्रेतत्प्रवृत्तो होवा होत्पदनऽत्रपतिरति ॥ २३ ॥ प्रजा पति-
 र्प्रजा ऽः मसृजानो रिरिचानऽद्वयमन्यत ॥ २४ ॥ प्राणो हवाऽ
 अस्थोपा धऽ शु ऽः ॥ २५ ॥ जलुपोहवाऽअस्य शुक्रा मन्यन्तो
 ॥ २६ ॥ अकृयित्वा समुप हूता ऽः स्मऽस्त्युस्त्वोत्तिष्ठति ॥ २७ ॥
 मनोद्वाऽअस्यसप्रिता ॥ २८ ॥ आदित्येन चक्रयोदय नीयेन
 मचरति ॥ २९ ॥ प्रजापतिर्व्याऽप्य अद धऽ शु ऽः ॥ ३० ॥
 देवारच याऽअमुसदऽः ॥ ३१ ॥ अथस्तु यज्ञवाज्यविलापिनीं चाक्षप
 ॥ ३२ ॥ अस्थोर्मा समारोह ॥ ३३ ॥ केशास्य पुरुषस्य
 ॥ ३४ ॥ आग्ने योष्टा कपाल ऽः पुरोहारो भवति ॥ ३५ ॥
 असदाऽइममऽधासोन् ॥ ३६ ॥ प्रजापतिः परमिस्त्पापयग्न्यान्
 ॥ ३७ ॥ एतद्दे देवाऽअन्तु यन् ॥ ३८ ॥ अवेतमवऽग्नय त्वेन
 ॥ ३९ ॥ यज्ञोपाय निष्पन्नऽश्ताऽआपो भ्रान्ति ॥ ४० ॥
 न्या धऽ सिद्धो धऽ पिमन्ति ॥ ४१ ॥ कन्धमन्ति मुख्य-
 मिर्मात ॥ ४२ ॥ न्यनी याम्ये वाग्नि विभ्रदित्वाहु ऽ ॥ ४३ ॥
 गार्हऽपत्य रेव्यन्नाश शारया व्युद्भवति ॥ ४४ ॥ अयावो
 नैष्टोर्गोर्हन्ति चिनोर्गार्हयोभरति ॥ ४५ ॥ आरयन्मि गृहीते
 व्येयन् ॥ ४६ ॥ दूर्ध्वमुपस्थाति ॥ ४७ ॥ प्राणवृत्तऽउपस्थाति
 ॥ ४८ ॥ द्वितीयाभिऽमुपस्थाति ॥ ४९ ॥ तृतीयाभिऽमुपस्थाति

। ५१ ॥ चतुर्थोचितिमुपदधाति ॥ ५२ ॥ पञ्चमी चितिमुपद-
 धाति ॥ ५३ ॥ षष्ठ्युपदधाति ॥ ५४ ॥ ऋतव्याऽपदधाति ॥ ५५ ॥
 अथातः शतरुद्रियं जुहोति ॥ ५६ ॥ उपवसथीये हन् प्रात रुद्रितऽआदित्ये
 ॥ ५७ ॥ अथातो व्यैश्वानरं जुहोति ॥ ५८ ॥ अथातो राष्ट्र भृतो जुहोति
 ॥ ५९ ॥ अथातः पयोवृत तायै ॥ ६० ॥ अग्निरेष पुरस्ता जीयते
 । ६१ ॥ प्रजापतिः स्वर्गं लोकं मज्जिगां च सन् ॥ ६२ ॥ प्राणो गायत्री
 ॥ ६३ ॥ प्रजापतिर्विस्त्रस्तम् ॥ ६४ ॥ तस्य वाऽप्युत्स्थाऽग्नेः ॥ ६५ ॥
 हेतुदण्डे ॥ ६६ ॥ सम्बत्सरो वै यज्ञः प्रजापतिः ॥ ६७ ॥ त्रिद्वै पुरुषो
 जायते ॥ ६८ ॥ वाग्धवाऽप्युत्स्थाग्निं होत्रस्याग्निं होत्रो ॥ ६९ ॥ उदालको
 हावणिः ॥ ७० ॥ उर्वशी हावसाः ॥ ७१ ॥ भृगुर्द्वै रुद्रिः ॥ ७२ ॥
 पशु बन्धेन यजसे ॥ ७३ ॥ तद्यथा हवै ॥ ७४ ॥ अयं वै यज्ञो योयं पवते
 ॥ ७५ ॥ समुद्रं वाऽप्युत्ते प्रचरन्ति ॥ ७६ ॥ यद्वा लोके ॥
 ७७ ॥ दीर्घसत्रं च हवाऽप्युत्तपयन्ति ॥ ७८ ॥ तदाहुर्यं देवदीर्घं
 सत्री ॥ ७९ ॥ सोमो वै राजायज्ञः प्रजापतिः ॥ ८० ॥ विश्वं रूपं वे
 द्याष्ट्रे भिन्नोऽहन् ॥ ८१ ॥ इन्द्रस्य वै यत्र ॥ ८२ ॥ एतस्माद्वै यज्ञात्पु-
 रुषो जायते ॥ ८३ ॥ ब्रह्मो दनं पवति ॥ ८४ ॥ प्रजापतिदेवेभ्यो यज्ञान्वया-
 निशान् ॥ ८५ ॥ प्रजापते रक्ष्यस्वयत् ॥ ८६ ॥ प्रजापति रक्षामन् ॥ ८७ ॥
 अथ प्रातर्गोतमस्य ॥ ८८ ॥ पुरुषो ह नारायणोऽकामयतः ॥ ८९ ॥ ब्रह्म
 वै स्यन्तु तपोऽतप्यत ॥ ९० ॥ अथास्मै श्मशानं कुर्वन्तः शान्तिः
 ॥ ९१ ॥ देवा हवै सत्रं नृपेदुः ॥ ९२ ॥ अथातो रौद्रिणी जुहोति ॥ ९३ ॥
 सवै तृतीये हन् ॥ ९४ ॥ द्रवा ह प्राजा पत्याः ॥ ९५ ॥ हव वाहा कि
 हान् चान्तोगार्ग्यऽभास ॥ ९६ ॥ जनको हवै देहः ॥ ९७ ॥ जनकऽह-
 न् देहं याज्ञवल्क्यो जगाम ॥ ९८ ॥ पूर्णमदः पूर्णमिदम् ॥ ९९ ॥ श्वेत
 रेतुर्द्विधाऽश्वारुणयोः ॥ १०० ॥ प्रारतो पुत्रा दामुरि वासिनः । चतुर्दश-
 णादेव ध्यायोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ अथ शतस्थानानि—ॐ इपेत्वां
 ॥ १ ॥ परिते ॥ २ ॥ अग्नेनयं ॥ ३ ॥ उपयाम गृहीतोसि सुशम्मांसि
 ॥ ४ ॥ [प्रथमा] सोमस्य त्विणि ॥ ५ ॥ परस्याऽअधि ॥ ६ ॥ अन्याव-
 ॥ ७ ॥ राक्ष्यमि ॥ ८ ॥ नमो हिरण्यं वाहवे ॥ ९ ॥ इन्द्रं मम ॥ १० ॥
 इनीते ॥ ११ ॥ अन्नात्परितु ॥ १२ ॥ अश्विना तेजसा ॥ १३ ॥
 प्रियंवै स्वाहा ॥ १४ ॥ प्रजापतये च ॥ १५ ॥ तेऽमस्य ॥ १६ ॥ तनून
 पात्यः ॥ १७ ॥ अयमिह ॥ १८ ॥ अनुनः ॥ १९ ॥ इपत्यमे ॥ २० ॥
 ([होदं पञ्चसप्ततिः]) ॥ हिरण्यमेव पान्त्रेण ॥ १ ॥ अमन्त्र ॥ शतोक्ता
 ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ त्वसुपैत्यन ॥ २ ॥ तद्युदेवं यिनष्टि ॥ ३ ॥ अथा-
 न्नसिन्ध्याम् पवित्राभ्याम् ॥ ४ ॥ युद्धोवायविष्टवेति ॥ ५ ॥ यमूनां

तानि यदा गृह्णाति ॥ ७३ ॥ योगनौतिष्ठन् ॥ ७४ ॥ कतमऽप्राप्तेति
 ॥ ७५ ॥ अथ हैन मनुष्याऽऽकुचु- ॥ ७६ ॥ अथ यामिच्छेद्गर्भं नृधीतेति ॥ ७७ ॥
 सप्त सदस्र पञ्चशत शेष चतुर्विंश शति ॥ ७८ ॥ प्रारणीपुत्रा दासुरि
 रासिनः ॥ ७९ ॥ चतुर्विंश शतशः शतोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ अथ
 'प्रपाठका'—तत्र सुपैत्यन् ॥ १ ॥ चतुर्धाविहितो हवाऽअपेग्निरास
 ॥ २ ॥ तेनाऽआर्द्राऽस्युऽ ॥ ३ ॥ स स्रुचोत्ररा माघारयिष्यन् ॥ ४ ॥
 यज्ञेन वैदेवाऽ ॥ यज्ञेन वैदेवा दिवम् पोदकामन् ॥ ५ ॥ स वैस्रु
 चोऽब्रूहति ॥ ७ ॥ स यद्वाऽऽन्त्यै रेत्येव ससम्भरति ॥ ८ ॥ वरुणो हैनश्राव्य
 कामऽआदधे ॥ ९ ॥ यत्र वै प्रजापतिऽ प्रजाऽससृजे ॥ १० ॥ प्रजा-
 पतिर्वाऽएते नाम्ने वज्ञेने जे ॥ ११ ॥ महा हरिषा हरै देवा घृत्र
 जन्तुऽ ॥ १२ ॥ देवयजन योष तन्ते ॥ १३ ॥ याचयच्छति ॥ १४ ॥
 नाडे कृष्णा जिन मास्तृणाति ॥ १५ ॥ नद्यऽएषपूर्वोर्ध्वो वपिष्ठ स्थुणा
 राजो भवित ॥ १६ ॥ विजामानो हैवास्यधिष्यथाऽ ॥ १७ ॥ पाश
 कृत्वाऽप्रतिमुञ्चति ॥ १८ ॥ सोत्यप य जति ॥ १९ ॥ प्राणोप्रसे हवा
 अस्पोगु ध पा २० ॥ आत्मा हवाऽअस्त्राप्रयणऽ ॥ २१ ॥ धन्न्तिनाऽऽ
 तयज्ञम् ॥ २२ ॥ सवाऽअवभृथुमभ्य र्यति ॥ २३ ॥ तद्यत्रै तद्वाद्वाहेन
 व्यूह शृङ्गं सायजते ॥ २४ ॥ देवाश्चवाऽप्रसुरारच ॥ २५ ॥ न हस्वत्यन
 चरुणा प्रवरति ॥ २६ ॥ सवाऽअपऽ सम्भरति ॥ २७ ॥ मैत्रायणस्या
 पयस्य या प्रवरति ॥ २८ ॥ असद्वाऽऽदमप्रऽआसीत् ॥ २९ ॥ प्राजा-
 पत्यरश्च रक्षाऽआलम्भन्ते ॥ ३० ॥ प्रदीप्ताऽप्येत्यनयो भरन्ति ॥ ३१ ॥
 तस्याऽएतस्याऽआपादा पूर्वा करोति ॥ ३२ ॥ रुक्म प्रति मुच्यतिमति
 ॥ ३३ ॥ गार्हपत्यञ्ज्येप्यन् पलाश शारङ्गाग व्युद्दहति ॥ ३४ ॥ अथ
 दर्भस्तम्भ मुपदधाति ॥ ३५ ॥ आत्मजग्निं गृहीतचेप्यन् ॥ ३६ ॥ कूर्म
 मुर दधाति ॥ ३७ ॥ प्राणभृतऽउपदधाति ॥ ३८ ॥ अथ विरय ज्योतिषमुर
 दधाति ॥ ३९ ॥ अथा तान्वा वृत्तम् ॥ ४० ॥ गार्ह पत्यमुप दधाति
 ॥ ४१ ॥ अथाव शतक्रुद्विज जुहोति ॥ ४२ ॥ प्रत्ये त्यग्निं मह रिष्यन्
 ॥ ४३ ॥ अथ कान्यज्ञ ऋतु जुहोति ॥ ४४ ॥ अथ प्रातः प्रातः खुरार
 मुपा करिष्यन् ॥ ४५ ॥ अग्निरेष पुस्ता ज्योते ॥ ४६ ॥ अथा तदच
 यन स्येव ॥ ४७ ॥ सम्यक्सर्पेरे प्रजापतिरग्निऽ ॥ ४८ ॥ नेरवाऽऽदममे
 सदासोमेव सदासीन् ॥ ४९ ॥ सर्वत्सरोर्यै यज्ञऽ प्रजापतिऽ ॥ ५० ॥
 अपिवाऽप्यतर्हि ॥ ५१ ॥ प्रजापतिर्वै प्रजाऽमृतमानोऽनृप्यन्
 ॥ ५२ ॥ अथा तऽन्याध्याय प्रशऽना ॥ ५३ ॥ अथ वैयज्ञो
 योऽपयतो ॥ ५४ ॥ पुरुष छद् नागारण पञ्चशतिकुरार ॥ ५५ ॥
 सोमो वै राजा यज्ञऽ प्रजापति ॥ ५६ ॥ प्रजापतिर्वै नमन्तव ॥ ५७ ॥

ब्रह्मोदनं पचति ॥ ५८ ॥ त्रिमुक्ते पशुपु । ५९ ॥ प्रमुच्यार्षं दक्षिणं नव
 दिम् ॥ ६० ॥ पुरुषो ह नारायणोऽस्माभ्यत ॥ ६१ ॥ देवाह वै सप्रनि-
 पेदुः ॥ ६२ ॥ सयत्रैता छ होतान्वाह ॥ ६३ ॥ इवाह प्राजाप्रस्थाः ॥ ६४ ॥
 ह्यत वा नाकिहान्-वानोगार्ग्यऽआस ॥ ६५ ॥ अथैन भुङ्गुर्लोहायतिः
 पमच्छ ॥ ६६ ॥ जनक छ हृष्येदेहं याज्ञवल्क्यो जगाम ॥ ६७ ॥ भूमि
 रन्त रिहं सौरति । ६८ ॥ प्राज्ञो पुत्रादासुरि वासिनः । ६९ ॥ इतिचतुदश
 काण्डे प्रपाठोक्त्य अथ स्तुत्यन्ताम् । इति प्रपाठकाः ॥ अथ त्रय त्रिमु
 जन् म यमिन्हर्तात्र मुल्लोक मेत्यव निग्राम्याभ्योप्रहाभ्यामि
 गृह्णतेऽय गृह्णतिः सु वक्ष्यथा माह यतिता वाऽप्यतास्तानि दश भवन्ति
 ताऽप्यताऽअङ्गुलयोमध्यमैर तृतीयांशितः सद्योवापाथर्व छ दशरत्नाऽ
 ब्रह्मतदुवाचमे वाऽप्ययात्यैर यस्मिन्नामणीमर्ग्यादायाऽएत्रलोष्ट मोहय
 प्राज्ञो पुत्रा दासुरिगसिन ० ॥ १ ॥ अन्त्यकाण्डकोका अमयस्तु-
 न्ताम् । एवं अत विसृजत परमाङ्गतिङ्गच्छतीति तस्माद्धोतृचमसान्
 तस्मिन् समुपह्वयिष्यता स्मिन्नाऽध्याधति द्वादशवा त्रयोदश वा
 दक्षिणा भवन्ति याथा नाग्नया वत्यस्यममात्रा तावत्तद् भवति तस्मा-
 त्समान् सन्त्यन्तास्तस्मानिमे प्राणऽउपरिष्ठाद् सङ्गच्छन्तः सवादे
 नेर्दिव जो लोका इति वक्ष्यते वक्ष स्वयंभु वक्ष्यते नमः रुशिनीरेवेमाऽ
 आये तर्हि मत्रा जायन्ते तस्मादिमावात्मानमधिने वाह तस्मादुहै
 नत्रतीराश्च पितरश्चन सदस्यन्तेन्नाजसनेयसयाज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते ॥ २ ॥
 चतुर्दशकाण्डे अथ काक्री दोस्त अथय स्तुत्यन्ताम् ॥ तमराऽ-
 तसः तदेतद्वक्ष्युक्तं न मृषा आन्त्ययवन्ति देवा इति तहैवेव विदुषः
 किन्तानमृषा भान्तं भवति तयो ह्यास्ये तस्सर्वे देवाऽभ्यवन्ति ॥ ३ ॥
 इति तमराकारः । विसंजनम्—अत्रतिष्ठ व्रज्याण्यप्यते देवयन्तस्त्वमहं ।
 उपपश्यन्तु सकृन्मुदानऽऽद्र पार्श्वं वासवा १५१३४स्य रमयरात्रि
 सत्रंयन् ॥ जते प्रास्यन्—अ समुद्रत्रयं स्याहान्तरिक्षं स्याहो
 देरधमंविता रङ्गद रगहा मित्रा वक्षणी गच्छ स्वादांश्चो रात्रेगद रगहा
 छन्दःसिगद रगहादवावापृथिवी गच्छु स्याहाप्यद्वय स्यादामोमद्वय
 न्नाहादिर्त्यन्तमोगद स्याहान्तरिक्षंस्वान्नाङ्ग स्याहा मनोमैहादियन्दि
 यन्ते प्रमागदु म्यज्योति—यथिरीमभस्मनापुण स्याहा ॥ ४ ॥
 ततो विरापमर्न इयुः ॥ आचार्यादि प्राणेषू पूजन पूजना ॥ (नेम्भो
 दक्षिणे दशरा प्राणप्रतिगो गृहीयान् । कृतम्योत्तमर्गोपाक्रमे कर्मणः
 साङ्गतामिच्छायं यथापकारेण यथा शक्ति भाग्यवान्भाज निष्ये इति
 सङ्कल्प्य ॥) यथेणम्—मनेनाध्यायोत्तमर्गं कर्माद्भवत्येन कृतेन अपि
 पूजन तर्पणादि क्रमंया श्रीमन्पाण्डुरमोऽपरः प्रीयतां न मम । ॐ तस्य-
 रज्ज्यापेण मानु ॥ इति आश्विनोपयोगः ॥

अथ ऋषिभ्रातृम् ।

कृत प्राणायामोदेराकालो सङ्कृत्य—उत्सर्गाङ्गभूतं मृषिं भ्रातृं महं
 करिष्ये ॥ ॐ इदं विष्णुर्वि० ॥ १ ॥ इति मन्त्रेणदिम्बन्धः ॥ ऋषिभ्रातृ-
 स्योपहाराः शुचयोभवन्तु ॥ इत्युपहारं प्रोक्षणम् । देशकाल पात्रसम्पदस्तु ॥
 अरुन्धती सहितं करयपादि स्त्र ऋषयः यथादत्तं विभागं वः स्वाहा अरु-
 न्वतीसहितं करयपादि स्त्र ऋषयः यथा दत्तं गन्धा चर्चनं यथायथा विभागं
 वः स्वाहा । इति गन्धादि दानम् । ऋषिभ्रातृ साङ्गता सिद्धयर्थं सप्त
 मङ्गला कान् ब्राह्मणान् यथाकालं यथा सम्पन्नान्नेन तर्पयिष्ये । तेन
 अरुन्धती सहितं करयपादि स्त्र ऋषयः प्रीयन्ताम् । ऋषिभ्रातृ साङ्गता
 सिद्धयर्थं हिरण्यनिष्क्रयभूतां दक्षिणा आचार्यायं तुभ्यं महं सम्प्रददे
 आचार्यः । ॐ ह्रींऽक्षं वरुणाऽअदात्कामोऽदात्कामायादान् । कामो दाता
 कामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते ॥ २४५ ॥ इति मन्त्रं पठेत् । उपविष्टेषु
 ब्राह्मणेषूद्गादि दानम् ॥ तथा—ॐ शिवा आपः सन्तु । सौमनस्यमस्तु ।
 अक्षतं चारिष्टं चास्तु । अघोरा ऋषयः सन्तु । सर्वत्र सन्तिवति मित्राः
 प्रति वचनं दद्युः । उत्सर्गं कर्मणो न्यूनादि रिक्तं दोष परिहारायं नाना
 नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसां दक्षिणां सम्प्रददे ॥ प्रार्थना—उत्सर्गाङ्गभूतं
 ऋषिभ्रातृं परिपूर्णं मिति आचार्याश्चयः प्रति वचनं दद्युः । ततः सहनोस्तु
 सहनो वतु सहनऽइदं धीर्यं वदस्तु ब्रह्मऽइन्द्रस्तद्वेदेनयथा नविद्विषामह
 इति ॥ परचात्—उभाकं वी० इति मन्त्रं पठेत् ॥ इति ऋषि भ्रातृम् ॥
 इदं ऋषि भ्रातृ कृता कृतं अस्ति ॥ इति श्रावणी पद्धति अध्यायोपाकर्मः
 पारस्करगृह्यसूत्रे—अथातो ऽअध्यायोपाकर्मोपधीनां प्रादु- भावे भ्र णेन
 भाषण्यां पीर्णं मास्याऽऽध्यायस्यपञ्चम्यऽऽहस्तेनवाज्यभागाविष्टा
 ज्याहुती जुहोति । प्रथिव्याऽऽहृत्यग्बवेदे ऽन्तरिक्षायद्यायय इतिपदिषेसूर्या
 येति मामजुर्वेदेदे दिग्भ्य इचन्द्रमसऽइत्यथर्ववेदे ब्रह्मणे छन्दोम्यरवे
 तिसर्वत्र प्रजापतयेदेवेभ्यो ऋषिभ्यः अद्वायै मेवायै सदस्सपतयेऽनुमतये
 ऽइति चैत देवव्रतोद्देशेन विसर्गेषु सदस्सपति मित्यस्त धानास्त्रि सर्वेऽ
 नुपठेयु हुत्वा हुत्वाऽदुम्भ्यस्तिस्त्रस्त्रिस्त्रः समिध ऽब्राह्म्युराद्राः सप्ततारा

प्रश्न गन्धम्—शरीर शुद्धयर्थं पञ्चगव्यप्राशनं कार्यम् ॥

पञ्च गन्धं पवित्रं तु आहरे ताम्रं भाजने (१) गायत्र्या चैव गोमूत्र
 (२) गन्धं द्वारेति गोमयम् (३) आप्याय स्वेति चर्चिरं (४) इति काप्येति
 वेदवि (५) पितृब्रोजि शुक्र मित्राभ्यं (६) देवस्य स्वा कुशोदकम् ॥

मृताका. सावित्र्या नक्ष चारिणश्च पूर्व कल्पेन शत्रो भवति
 त्यक्तवानाऽयसादन्तः प्राशनीयुर्दधि काव्यऽइति दधि भक्षेयुः स
 यावन्तगणमिच्छेत्तावन्तस्तिनाना कर्पफल केन जुहुयात्सावित्र्या शुक्र
 ज्योतिरित्य नु राकेन वाप्राशनान्ते प्रत्यङ्क मुखेभ्यऽवपरिष्टंभ्य ॐ
 कारमुन्त्यात्रिच सावित्रीमध्याया दीनप्रत्रयादपि मुखानि बह्वचाना
 पर्वाणि हन्ते गाना ॥ सूक्तान्या यज्वंणाना ६ सर्वे जपन्ति
 महानास्तु महनोवतुसह न ऽहं वार्यं वदस्तु नक्ष ऽहन्तस्तद्वेद येन
 यथा न विद्विषा महऽइति त्रिरात्र नाधीयीर ह्योम नया नामनिह
 न्तनमेके प्रागुत्सर्गात् ॥

अथोपाकर्मप्रयोगाः—

[गुह. इमौ पादौ प्रज्ञान्य द्विराचम्याव सख्याग्रे लौकिकामेवा
 परचाच्छिदाप्यै सहप्राङ्मुख उपरिच प्राणा याम त्रयं कृत्वा देशका
 लौमहोत्य श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं अध्यायोपाकर्मणि पञ्च भूमस्मार
 पूरकं समिधायनमहं करिष्ये इति मङ्गल्यं पञ्चभूमस्मारान्कुर्यात् ।
 तेच—१—दर्भ. परि समुद्य २—गोमयोदकेनो पलिष्य । ३—मुखेणो
 लिष्य । ४—प्रनामिकाङ्गुष्ठान्यामुद्धृत्य । ५—उदकेनाभ्युक्ष्य ॥ तत
 अग्निं प्रतिष्ठाप्य पात्रं स्थापनादिं कुर्यात् । तत्र पूर्वेण नक्षणो-
 रगलौ । पात्राय समिव । प्राञ्चा वायोरो । समिधतमे आग्य
 भागौ । नित होम सावित्री मन्त्रेण । पूर्णपात्रं दक्षिणा । त्रिरात्रं
 लोमनया नामनि कृन्तनम् ॥) ॥] अपिच्छन्ददेवतास्मरणम्—इषेत्वे
 त्यादिकस्य रस्त्रज्ञान्तस्य माध्यन्दिनीयस्य वाजं मनेय तस्य यजुर्देश
 न्नायस्य त्रिरात्रा वपि । वायुर्देवता । गायत्र्यादीनिसर्वाणि हन्दाति ।
 अथ्यायोपाकर्मणि विनियोगः ॥—देवताभिध्यानम्—तत्र—प्रज्ञापतिम् ।
 इन्द्रम् । अग्निम् । सोमम् । पृथिवीम् । अग्निम् । प्रज्ञाणाम् ।
 इन्द्रा ॥ मि । अन्नरिचम् । वायुम् । प्रज्ञाणम् । हन्दाऽस्ति ।
 दिवम् । मूर्ध्नाम् । प्रज्ञाणम् । इन्द्रा ६ मि । दिशः । चन्द्रम-
 सम् । प्रज्ञाणम् । हन्दा ६ मि । प्रज्ञाणम् । देवान् । शयीन् ।
 प्रज्ञाम् । मेरुम् । सप्तसप्तमिम् । अनुमतिम् ॥ एता- प्रवानदेवता
 चाग्नेन । मदमथनिम् । रनाभिः । मरिचार्निने । अग्निस्तिष्ठ
 हृत्पानारोपेण ! अग्निम् । वायुम् । मूर्ध्नाम् । घन्ता यदणी ।

अग्नीवरुणौ । अग्निम् । वरुणम् । सवितारम् । विष्णुम् । विश्वान्देवान् । मरुतः । स्वर्कान् । वरुणम् । प्रजापतिम् । एता अन्नप्रधानावाँदेवता अस्मिन्कर्मण्यहं यक्ष्ये ॥

[ब्रह्मवरणम् (दक्षिण तो ब्रह्मासनमासीर्य । अमुक शर्मन् अस्मिन्कर्मणित्वं ब्रह्मा भव । भवामीति प्रति वचनम् । ब्रह्मातृष्णी आसनावलोरुनं-आसनात्तृणनिरसनञ्च कृत्वा उपविशेत् ॥ अग्ने रुत्तरतः प्रणीतार्थमासनद्वयनिधाय । प्रणीता चमसं वाम हस्ते कृत्वा आत्माभिमुखं जलेनापूर्य प्रथमा सनेनिधाय चमस दण्डमालभ्यब्रह्मणां अवलोक्य तेन सङ्केतादिना अनुज्ञातः प्रणीयोत्तरासनेनिदध्यात् । तत उद्गमैः प्रागग्रैः कुशैरग्निं परिस्वीर्य । अर्घवदासाय । अग्ने रुत्तरतः प्राक्संस्थ मुदक्संस्थं वा पात्रासादनम् । पवित्रच्छेदनार्थं दर्भास्त्रयः । पवित्रे द्वे । प्रोक्षणी पात्रम् । आज्य स्थाली । सम्मार्जनं कुशास्त्रि प्रभृतयः । उपयमनकुशाः सप्तप्रभृतयः । समिधस्त्रि प्रभृतयः । सुबः । आड्यम् । धानाः पूर्णं पात्रं च ॥

अधोप कल्प नीयानि—प्रति शिष्यं नव नव समिध आर्द्राः मपत्रा औदुम्बरस्य । दधिभक्षणाथ । लौकिका धाना बाहु मात्र मौदुम्बर काष्ठं तिल स्थापनस्थाने सर्पफणाकार मार्कर्षफलकम् । तिलाश्चेति । पवित्र करग्राम् । द्वयोरुपरि श्रीणि निधाय द्विमूलेन द्वौ कुशौ प्रवक्ष्यौ कृत्य सर्वाभ्युपवृत्त्वा नामिका झण्डाभ्यां—क्षित्वा तानुत्तरतः प्रक्षिपेत् । प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतोत्तरतो निधाय । प्रोक्षणीपात्रे पात्रान्तरेण प्रणीताद्विस्तासांप्रोक्षणम् । च पवित्र हस्ते नोत्तानेन, पात्रप्रोक्षणम् । आज्य स्थाल्याः प्रोक्षणम् । सं मार्गं कुशानां प्रोक्षणम् ॥ उपयमन कुशानां प्रोक्षणम् । समिधांप्रोक्षणम् ॥ सुबस्यप्रोक्षणम् ॥ आजस्य प्रोक्षणम् । धानानां प्रोक्षणम् ॥ पूर्णं पात्रस्य प्रोक्षणम् ॥ प्रणीताभ्युपवृत्त्यौ सञ्चरे प्रोक्षणीनिधाय । कुशोप ग्रहेण आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वापः । आज्याणि श्रयणम् । ततो ज्वल दुल्लुकेन पर्यग्निकरणम् । इतरथाशुचिः । अर्वाग्निने सूचंशप्रवक्ष्य । सम्मार्गं कुशैः संमृज्य । अर्घ्यमूलादारम्याय पर्यन्तं मूलेभ्य दारम्यमूलपर्यन्तं प्रणीतोद्वेनाभ्युक्ष्य । पुनः प्रवक्ष्य । दक्षिणतो निद-

(१) औदुम्बरस्य या शाला फलक द्वय संयुता । इत्यर्घं फलकं नामापयच्छेदः परि क्लृप्तम् ॥ २ ॥ एताः सप्तविंशत्युदयः आज्येन ततः प्रेक्षिष्यानामि धारणम् ॥ सूत्रेण धानां श्रवदाय । नदमरगति मद्रुतमित्यनेन मन्त्रेण जुह्यात् ॥

यात् । आद्य मुद्रास्य । उत्तरतो निधाय । ततोऽग्नेः परिचम तो निहत्यात् ।
 पवित्राभ्यामाद्यमुत्पूय । प्रोक्षणीरचपूर्वं बहुत्पूयं । आज्यमवेक्ष्य । अप द्रव्य-
 निरसनम् । उपपमन कुशानादाय । विष्टन् समिधोऽभ्यादाय । प्रोक्ष्ययुक्त
 शेषेण सपवित्रेण हस्ते नेष्टानमारभ्ये शान्तं पर्यन्तं प्रदक्षिणमर्चनं पर्युक्ष्य ।
 इतरथावृत्तिः । पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम् । सोपग्रहं सव्यं हात-
 मुचानं हृदिनिधाय दक्षिणं जानु निपातः ब्रह्मणोन्वारम्भः । दक्षिणं
 हस्तेनद्युषेण होमः ।] मनसा—ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये
 नमः ॥ त्यागान्तेद्रव्यं ग्रहेपः । प्रोक्ष्यणीपात्रे संस्त्रवधारणम्) । ॐ
 इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय नमः ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये
 नमः ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय नमः ॥ १ ॥ ऋग्वेदे—सप्त
 विंशत्याहुतयः । ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै नमः । ॐ अग्नये
 स्वाहा इदमग्नये नमः । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमः । बृहद्वेदे—
 स्वाहा । इदं बृहद्वेदे नमः ॥ यजुर्वेदे—ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदं
 अन्तरिक्षाय नमः ॥ ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे नमः । ॐ ब्रह्मणे
 स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमः । ॐ अग्नेः स्वाहा इदं अग्नेः नमः । साम-
 वेदे—ॐ दिवे स्वाहा इदं दिवे नमः । ॐ सूर्याय स्वाहा । इदं सूर्याय
 नमः । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमः । ॐ अश्विन्यै स्वाहा इदं अश्वि-
 न्ये नमः ॥ ४ ॥ अथर्ववेदे—ॐ दिग्भ्यः स्वाहा इदं दिग्भ्यो नमः ।
 ॐ अन्नमसे स्वाहा इदमन्नमसे नमः । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे
 नमः । ॐ अग्नेः स्वाहा इदं अग्नेः नमः । ॐ प्रजापतये स्वाहा
 इदं प्रजापतये नमः । ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यो नमः । ॐ ऋषिभ्यः
 स्वाहा इदं ऋषिभ्यो नमः ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमः । ॐ
 मेधायै स्वाहा इदं मेधायै नमः ॐ सप्तसप्ततये स्वाहा इदं सप्तसप्ततये
 नमः । ॐ अनुमतये स्वाहा इदं अनुमतये नमः । ॐ सप्तसप्तति-
 मद्भुतम् प्रियमिन्द्रस्य ऋग्वेदम् । सतिधेधामवासिपथे स्वाहा ॥ १३१ ॥
 इदं सप्तमदक्षतये नमः । (इमं मन्त्रं गुरुणायपठयमानं शिष्या आप
 सदानुपठेयुः ॥ तत उदुम्बर समित्तिवय मञ्जिचार्यं हस्ते गृहीत्वा उभयाय
 प्रोक्ष्यमुत्तरिष्टन्तः) ॥ ॐ वत्सवितुवरयेणम् ॥ २ ॥ स्वाहा इदमग्नये
 नमः । (इत्युच्चार्यं पक्षां समिधमादधुः । यत् मन्त्रेण द्वितीयो तथा
 तृतीयाम् । ततः सर्व उपरिरोयुः । आचार्यः पुनः । श्रुतेणोपाना अवा-
 दाय ।) ॥ द्वितीयोपानावृत्तिं पूर्ववत् ॐ वत्सवितुम् ॥ ३ ॥ स्वाहा

(२) पंथाः मन्त्रविग्रहत्वाद्भूतयः आग्नेन ततः शोधितं पानामिषापरिषाम् ॥
 पुनरेवपाना अश्वाय । यदक्षयतिनद्रुव नित्येननमन्तेयुताम् ॥

इदमग्नये नमम ॥ ततस्तिष्ठोऽपराःसमिधो घृत्तेनाभ्यज्य । उत्थाय प्राङ्-
मुखास्तिष्ठन्तः—ॐ तत्सवितुः ॥ १ ॥ स्वाहा इदमग्नये नमम ।
(इत्युच्चार्य एकां समिधमादधुः ।) पुनः ॐ तत्सवितुः ॥ १ ॥ स्वाहा
इदमग्नये नमम । एवं द्वितीया । पुनः ॐ तत्सवितुः ॥ १ ॥ स्वाहा
इदमग्नये नमम ॥ एवं तृतीयां कृत्वा चार्यो धाना हुतिं जुहुयात् । ॐ सद-
सस्प ० । स्वाहा इदं सद सस्पतये नमम ॥ मन्त्रानुपठनं (शिष्याणा-
मपि-समिन्वयं पूर्वं यजुहुयात्) ॐ तत्सवितुः ॥ १ ॥ स्वाहा इदमग्नये
नमम । एवं द्वितीयां । ब्रह्म चारीतु । शिष्योऽहर हरगिन कार्यं क्रमेण
समिधाधानं कुर्यान् न सावित्र्या । अन्यत्सर्वं समानम् ।) वाना भक्षणम्
(ततोया उपकल्पिताधानास्तिष्ठ स्तिष्ठोगृहीत्वा)—ॐ शन्नो भवन्तु वा-
जिनो हवेपुदेव तातामितद्द्रवः स्वर्क्षाः । जम्भयन्तो हिं वृकः रक्षा
॥ ६ ॥ इति मन्त्रेण दन्तै रम्या
दन्तः प्रारनीयुः ॥ ततो-द्विराचनम्) दधिभक्षणम्—ॐ दधिकावर्णोऽ
अकारिपिङ्गिर्जणोऽरश्स्वश्यन्वाजिनः । सुरभि नो मुरा करत्तः प्रणऽ
आयुः पिता रिपत् ॥ १० ॥ इति मन्त्रेण दधि भक्षेयुः) ॥ द्विराचनम् ।
(तत आचार्यो यावन्तशिष्यगणं आत्मन इच्छेत्तावतस्तिलान्गणयित्वा
आकर्षफलकेना वदाय)—ॐ शुक्ल ज्योतिरस्र । चित्त्यग्न्योतिश्च
सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्च शुक्लारचऽष्टतपा वात्यः ॥ ११ ॥ इत्या-
द्यनु वाकेन सावित्र्या वा जुहुयात् । ॐ तत्सवितुः ॥ १२ ॥ स्वाहा
इदं सवित्रे नमम ॥ (सं स्रवप्रक्षेपः । ततो धानाम्यः स्विष्टकृन्)—
ॐ अभयेस्विष्ट कृते स्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृतेनमम ॥ भूराद्या नवा
हुतयः—(आग्नेयं जुहुयात् । सर्वत्र त्यागान्ते द्रव्यं प्रक्षेपः । तद्यथा—
॥ १ ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नयेनमम ॥ २ ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं
वायवे नमम ॥ ३ ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय नमम ॥ ४ ॥ ॐ
त्वनोऽग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽ अबयासि सीमाऽः ।
यजिष्ठो वह्निश्चमः शोशुवानो विस्त्रा द्वेपा ॥ सिष्णुमुमुग्ध्य
स्मत्स्वाहा ॥ १३ ॥ इदमग्नी वरुणाम्यां नमम ॥ १४ ॥ सत्त्वन्नो-
ऽग्ने वमो भवोती नेदिष्ठोऽस्याऽऽपसो व्युष्टी । अय यत्त्व नो वरुण
॥ रराणो वीहि मृडोक ॥ सुहवो नऽधि स्वाहा ॥ १४ ॥ इदमग्नी वरुणा
म्या नमम ॥ ६ ॥ अया रचग्नेस्यनभिस्तृपाश्च सत्यमित्त्वमयाऽ
असि । अया नो यज्ञं वहस्यानो धेदि मेपज ॥ स्वाहा । (सौप्तमन्त्रः) ।
इदमयाय नमम । [इदमग्नये अयसे नमम इति] केचित् ॥ ७ ॥
येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञयाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो-
अय सवितो व विष्णु विंशवे पुरञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्षाः स्वाहा ।

[सोत्रमन्त्रः] । इदं वक्ष्यामि सवित्रे पिण्डये विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरु-
द्भ्यः स्वर्केभ्यस्त्वन मम ॥ ८ ॥ उदुत्तमं व्यद्वेषाश मस्मद्वधर्म-
विमध्यम ॥ अथा चयमादित्य त्रये तवा नागसोऽदितये
स्याम स्वाहा ॥ १५ ॥ इदमादित्यादितये न मम ॥ ६ ॥ उपांशु ।
ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम । [संख्य प्राशनम्] आ-
मनम् । पवित्राभ्यां मार्जनम् । अग्नी पवित्र प्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे
पूर्ण पात्रदानम्,—यथा,—ब्रह्मन् अस्योपाकर्मणोऽङ्ग तयाविहित पूर्णं
पात्रं प्रति गृह्यताम् । ॐ होस्त्वाद्दातु धृद्विद्योत्या प्रतिगृह्णातु इति
मन्त्रस्य ब्रह्मा जपं कुर्यात् । (प्रणीता विमोक्तः । ततोऽग्निमुत्तरेण कुशेण
प्रत्यहं मुन्यो पविष्टेभ्यः शिष्येभ्यः प्राङ्मुख आचार्यः योद्धारमुक्त्वा
विरुव सावित्री मनु त्र्यान्)—यथा—ॐ वत्सविं० द्यान् ॥ १ ॥ (इति
निः) इवेत्यादि ईशावास्थान्तम् । तत्र मुपैष्यन्नित्यादि सरंमन्त्र ब्राह्मण
योऽप्यपि प्रन्यात् । बह्व चाष्टपिमुत्तानि । पर्वणि छन्दोगानाम् । सूक्त-
न्यरंणा नाम् । (एवं सर्वं पठित्वागुरुः शिष्याश्च जपन्ति) ॥ ॐ
सहनोस्तु, सहनोऽस्तु सहनोऽस्तु वीर्यं वदस्तु ब्रह्म इन्द्रस्वदेव येन यथा
न विद्विषामहे ॥ इतिमन्त्रं जपित्वा नि रात्रमभ्युद्यतं लोम नरया नमति
कृन्तनमवपनं च करिष्या महे ॥ इति सर्वेषां सङ्कल्पः ॥) प्रागुत्सर्गा द्वा
नियमो लोमनस्त निरुत्तनम् । उत्सर्गा वधि लोमनत्वा नाम कृन्तन महे
करिष्ये इति । छन्दः सामुत्सर्गाः प्राङ्मुख ब्राह्मण योरभ्युद्यतम् ॥ इत्यु
पाकर्म प्रथेभाः ॥

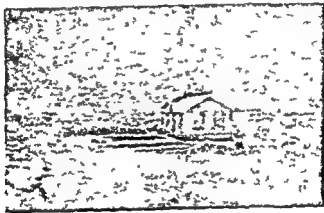
अथ तीर्थ आह्व विधिः

वाचस्पत्योः—आह्वया दीयते यस्मात् आह्वं येन निगद्यते । तित्थं
नैमित्तिकं काम्यं पुष्टि आह्वययेच ह पार्वण्य चेति मनुना आह्व पञ्च
विध स्तुतम् ॥ अहन्नेकादशोऽप्ये पार्वण्यन्तु विधीयते ॥ तीर्थेषुनाह्वणा
नेत्र परीक्षेत कदा चन ॥ अन्नापिन्न मनु प्रार्थं भोज्यं न मनुर त्रवात् ।
सकृन्मि पितृदानं च संयावे पायसे न वा । कर्त्तव्यं सृष्टिभि दिष्टं पिण्या
केन गुदे न वा ॥ देवन्तु तिलपिण्याहं शक्ति मद्भिर नरेः सदा ॥ आह्वैतु
तत्र कर्त्तव्यं मयावाहनं वर्जितम् ॥

अथ पार्वण्य तीर्थ आह्वम्

अथ तीर्थेति कर्त्तव्यता पूर्वं तीर्थं प्राप्ति काल एव तीर्थं साष्टांग
प्रणम्य नारिकेत फल पुष्पा च्चकारिकं आदाय अमुक तीर्थाय नमः
इति नियमः ॐ एतेषु तीर्थं पृष्ट्वा ॐ नमोस्तु देव देवाय शिति
कृष्टाय इष्टिदेवे रुद्राय पाप हृष्टाय चक्रिणेवेधते नमः । सरस्वती च

सावित्री वेद माता गरीयो । सत्रि धात्री भवत् वत्रः तीर्थे पाप प्राणा-
 शिनी ॥ तीक्ष्ण द्रष्टृ महाकाय कल्यान्त दहनो यम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्य
 मनुदा दातु महसि ॥ इति मन्त्रेण क्षेत्रपाल गणेशं च नमस्कृत्य सचैलं
 स्नायात् ॥ ततः त्रिभिना पूर्ववत् तीर्थस्नानं देश काल कीर्तनान्ते यथो-
 क्तेन स्नायात् ॥ इति स्नायायात् ॥ इति स्नात्वा ॥ प्रायश्चित्तार्थे गो भू
 हिरण्या दिक् दद्यात् ॥ द्यौर कुर्यात्-तत्र मन्त्रः—यानि कानि च पापानि
 नष्टाहत्या समानि च । केशानां अित्यतिष्ठन्ति तस्मात्केशान्वपाम्यहम् ॥ ततः
 प्रथमं दक्षिण कर्णं मास्थ्य वामकर्णं पर्यन्तं उदकं सस्थम् केशववप-
 नम् ॥ ततः श्मश्रु ह्योम नखा ग्राणा क्रमेण वपनम् । उपानां केशादीनां
 जले गर्तेषु प्रक्षेप. ततः मृत्तिका स्नायात् तत्रमन्त्रः.. ओं अन्व क्रान्ते-
 रय क्रान्ते विष्णु क्रान्ते वसुन्धरे मृत्तिके हरमे पाप यन्मया दुष्कृत
 कृतम् ॥ मृत्तिके ब्राह्मणा दत्ता काश्यपेयाभि मन्त्रिता ॥ मृत्तिकेदेहिमे पुष्टि.



श्री हंसकुण्ड ब्रह्मतीर्थ

त्वद्भवे प्रतिष्ठितम् ॥ ओं इदं विष्णुर्वि० इति मन्त्रेण । तत्र निभज्योन्म-
 ज्य जलादुत्तीर्य धौते वाससी परिधाय भस्मादीना त्रिपुण्ड्रोर्ध्व पुण्ड्रादिकं
 कृत्वा संध्या सुपास्य ॥ तर्पणे कुर्यात् ततः सभादिते रूपकरणैस्तोयं भाद्र
 भारभेत् तत्राय विधिः ॥

भाद्रस्थानम्.—मनु.—युचि देशं विचिक्नुं, गोमये नोप लेपयेत् ।
 दक्षिणा प्रवण रचैव प्रयत्रे नोप पादयेत् ॥

भाद्रस्थले देवस्य सं निधापनम्—पादमे—शिवस्य नार्मदलिङ्ग
 गामिप्रामशिला चयः । पीठे मस्थापयित्वा तु भाद्रञ्च कुरेते नरः ।
 पितर स्तस्य तिष्ठन्ति कल्प कोटि शतदिवि ॥

कुशप्रवण मंत्र — विरिञ्चिनासहोत्पन्न परिमैष्टि निसर्गत्र
बुद सर्गाणि पापानि दर्म ? स्वास्ति करो भवः ॥

द्विविधपये—आगो मूच यच्छादय माप मुदग विवर्जितम् ।
तैल पक्वैर्न रहित कृतमप्य कृत भवेत् ॥

सूतके—विष्णु स्मृतौ—त्रय यज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे ।
आरब्धे सूतकं नस्यात् अनारब्धे तु सूतकम् ॥

विधवा कर्तृक श्राद्धम् ॥ —स्वभर्तृ प्रमिति त्रिभ्ये स्वपितृभ्य
स्यैवच । विधवा कारयेच्छ्राद्धं यथा काल मतिव्रिता ॥ आमन्त्रे
ननु शूद्रस्य तृष्णातुद्विज पूजनम् । कृत्वा श्राद्धन्तु निर्वाप्य सजति
नाशये दध ॥

आचम्य हरिस्मृत्वा ॥ शुक्ल वापीत वस्त्र परिधाय आशानो परि
क्षपविरय दीपं धृत्वा तिल तैलवा प्रज्वाल्यरक्षोध्नदीपाय नमः इतिसम्पूज्य
[दीपं दक्षिणभिमुखं सस्थाप्यश्राद्धकर्ता पूर्वभिमुखं उपविरय] पुण्याक्षत
सहित नमस्कृतम्—यन्मन्त्र वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधान पुरुषस्तयान्ये
विरजोव्रते कारणमीश्वरम्भा तस्मै नमोविघ्नविनाशनाय ॥ शुक्ला-
घर धरं विष्णु शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रशन्नवदनध्यायेत् सर्वं त्रिनो
पशान्तये इति नमस्कृतम् ॥ स्ववामभागे गन्धादिना भूमौ चतुष्कोण
मण्डलं विधाय तत्र शङ्ख चक्र च ७।४। विलिख्य तत्र कुशानास्तीर्ष्य
वा त्रयमुष्टिवण्डलधृत्वा—तदुपरि कर्मपात्रे सस्थाप्य ॥ [ताम्रनील्य रत्नं]
पात्रे पवित्रम्—दक्षपाणिने—ॐ पवित्रे स्थी वैष्णव्यो सवितुर्वर्चः सव
उत्तपुनान्यद्विद्वेरेण पवित्रेण सूर्यस्य रस्मिभिः तस्मै पवित्रपते पवित्र
पूतस्य यत्तकामपुने तच्छ्रेयम् ॥ इति मन्त्रेण पवित्रं क्षिपेत् इयं दक्षिण
हस्ता नामिकाया पवित्रे स्थ इति मन्त्रेण उश पवित्रो मय
धारयेत् ॥ पात्रे च शन्नो देवीति जलम्—ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो
भजन्तु पीतय शार्दूलभिश्रजन्तुन इति मन्त्रेण पात्रे तु जलक्षिपेत् ॥ इति
मन्त्रावात् यजोसीति यजान्—ॐ यजोसियवयास्मद् द्वे पो यवयारातिदिव
स्यान्तरिक्षायत्वाऽथिवे त्वा शुन्धताब्जोऽऽ पितृपदना पितृपदन मसि ॥
इति यजान्क्षिपेत् ॥ तिलोऽसीति तिलान् तिलोपी सोम देवत्यो गोसवो
देवनिर्मितं प्रत्नमद्भिः पृष्टस्त्वय्यापितृन्लोकां नीणादिन स्वाहा
इति तिलान्क्षिपेत् । तत्र वरुणा गहनं उर्यानि—आवाहयाम्यहं देवीं
मात्वा त्रैलोक्यमावाम् ॥ यस्या स्मरणमात्रेण मन्त्रपाप प्रणामनम् ॥
ॐ नमः स्व वरुणा देवता इहाच्छ दरातिष्टमु प्रविष्टोऽरखोभय ॥
गन्धाक्षत (मुद्गरात्र) रतेतपुण्यादिभिः तृप्तिनिधिष्य । गन्धद्वारेति
गन्धम् । श्री गणतन्त्रिण्य ॐ नमः पापं मु सम्पन्नं भवतु । इतिमन्त्रा

पृच्छेत् [अस्तुसु सम्पन्नं मिति यजमानोब्रूयात्] प्रतिवचनम् ॥ ततः
 तज्जलेन ॐ अपाचेतः पवित्रो या सर्वा ० इति मन्त्रेण आद्वीयवस्तना-
 त्मानां च सिंचेत् पुण्डरी काक्षं स्मृत्वा इतितत् आद्वेदेरे सामाग्री आत्मानं
 च सम्प्रोक्त इति ॥ ततः कुरादिक आदाय ॐ अवेत्यादि प्रधान सङ्कल्य
 सिद्धिरस्तुदेश काल कीर्ति नान्ते अमुक गोत्राणा मस्मत्पितृ पितामह
 प्ररिता महानांममुकामुक शर्मणां वा (ब्रह्मणां वा गुप्तानां) यथायोग्य
 सपरनीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां अक्षय तृप्त्यर्थं पार्वण आद्व विधानेन
 धूरि लोपन सञ्जक विश्वेदेव पूर्वकं अमुक तीर्थं प्राप्त निमित्तकं सपिण्डक
 मामात्रं तीर्थं आद्वं करिष्ये ॥ ॐ कुरु चेति प्रत्युक्तिः ॥ ॐ देवताभ्य
 पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एवंच ॥ नमः स्वधायै स्वाहायै नित्य मेव नमो
 नमः इतिषि । सप्त व्यापादशार्णं पुमृगाः कालञ्जरे गिरौः चक्रः वाकाशर-
 द्वीपे हंसा सरसिमानसे । तेपि जाता कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेद्यागाः ॥
 प्रस्थित दीर्घ मध्याह्नयू यं किमवतीदयः ॥ आद्वारम्भे गयाध्यात्वाध्यात्वा
 देवगदाधरम् । उभाभ्यां च नमस्कृत्य ततः आद्व समाचरेत् ॥ गया गया
 गयादित्यो गायत्री च गदाधरः गया गयासुरश्चैव पद्मगया मुक्तिदायकाः
 ईशान विष्णु कमला सन कार्तिकेय वह्नि त्रयार्क रजनी शरणेश्वराणाम् ॥
 क्रौञ्चामरेन्द्र कलशोद्भव कर्यपानां पादान्तमामि सततं पितृ मुक्तिहेतोः ॥
 ॐ गयायै नमः ॐ गदाधरायै नमः । ततः कृष्णकव्यमिदं रक्षमदीय
 मिति अप्सस्तब्धेन शिगवन्धनं कुर्यात्-तिल सहित मोटकं आदाय तिलान्
 पूर्वाक्षिकमेण धिकिरेत् ओं अग्निष्वात्ताः पितृमणाः प्राचीरक्षन्तु मे
 दिशम् ॥ अपहता असुरा रक्षा धंसि वेदि पद् । ओं तथा वह्नि पद्
 यान्तुयान्त्राये पितरः स्थिता ॥ अपहता असुरा रक्षा धं सिन्धवेदिपदः ॥
 ओं उद्दीची मपि सोमपः पितरः यान्तु ॥ अपहता असुरा रक्षा धं सिन्धवे-
 दिपदः ओं ऊर्ध्वं तस्त्वयमा रक्षेत्कव्यवाडनलोप्यधः ओं रक्षोभूत पिशा-
 चेभ्य स्तथैवाऽसुर दीपतः ॥ सर्वतः रक्षधिपस्तेषां ॥ यमो रक्षा
 करोतुमे ॥ इति मन्त्रैस्तिलान्त्रिकीर्यदिगवन्धन मोटक मनेन
 वक्ष्यमाण मन्त्रेण वाम कर्त्र्याचारेयत् ओं निहन्मि सर्व पदमेध्ववद्
 भजेद्धतारक्षसर्वेऽसुरदानवामया ॥ रक्षांसि यक्षाः स पिशाच गुह्यकाहता

आदे वैश्व देव — पातुषाः सामगाः पूर्वं आदमप्ये क्षार्पणः वह्निरुचाः
 आद्वशेषेण कुर्युर्वैश्वदेवकम् ॥ वैश्वदेवकम् ॥ वैश्वदेव अङ्गुली प्रमाणं माक्ष
 अग्निः—निर्यग्यवोदरान्वष्टावूर्ध्वं वागद्वियस्त्रयः । अङ्गुलीः सेव विधेयः श्रोते
 स्नातं च कर्मणिः ॥ इति वचनात् ॥ भार्यारजस्वलासत्वे—दिन चतुष्टयं प्रति
 पालयेत् । रजस्वला तीर्थे देवमन्दिरादीरञ्जमदिनेन गन्तव्यम् ॥

मया पातुयान्मस्त्य सर्वे इति ॥ ततस्तिल सहित कुशत्रयं गृहीत्वा-प्रयान्ते
 दूरतः सर्वदेवैश्चरानवास्तया ॥ सर्वं विघ्नो परान्नयथं । चण्डामित्रः
 कुशा स्तितान् इति मन्त्रेण दक्षिणस्या क्षिपेत् ॥ ततः सव्य-कृत्वा हव्य
 मिदं रत्नमदीय इति सव्यं कृत्वा हविं स्मरेत् ॐ नमो नमस्ते गोविन्द
 पुराण पुरुषोत्तम । इदं आद्वं हृषी केश ! रत्नं सवतो दिशः ॥
 अथा सतम्—ततः सव्येन कुशादिक मादाय ॐ अबोहामुक् गोत्राणां
 मम रिक्तं पितामहं प्रपितामहानाममुकामुक् शर्माणां
 [ब्रह्मणां गुप्ताणां] यथायोग्यसप्तली कानां वसुधैव कुटुम्बकम्
 तथा द्वितीय गोत्राणामस्मन्मातामहं प्रमातामहं वृद्धं प्रमाता महानां
 अमुकामुक् शर्माणां यदायोग्य सप्तली कानां वसुधैव कुटुम्बकम् स्वरू-
 पाणां आद्वं शम्भुनिजनाधूरि लोचनं शङ्करानां त्रिभुवणं देवानामिदं
 माघनं मस्तु । इदं कुरारूप आसन आस्यतां आस्ये इत्यासनं दत्त्वा ।
 ततः अचनम्—कुशोसि कुरुपुत्रोसि ब्राह्मणा निर्मितः पुरा । त्वया चितः
 सोचितीस्तु यस्याहं नाम कीर्तये ॥ पूर्ववत् अपसव्येन मोटक
 मादाय—ॐ अबोहामुक् गोत्राणामस्मत्पितृ पितामहं प्रपिता मशाना-
 नमुका मुकामुक् शर्माणां [ब्रह्मणां गुप्ताणां] यथा योग्य सप्तली
 का नां वसुधैव कुटुम्बकम् द्वितीय गोत्राणां मस्मन्माता-
 महं प्रमातामहं वृद्धं प्रमातामहानां अमुकामुकामुक् शर्माणां सप्तलीकानां
 वरुण प्रजापत्यग्नी स्वरूपाणां अद्य कर्त्तव्यामुक् दीर्घं आद्वे इदं
 मोटक रूप आसनं पादः विभज्य पुष्पं स्वधा, इदं मोटक रूप
 ग्रामन आस्यतां आस्ये इत्यासनं दत्त्वा । ततः सव्येन ॐ कुशोसि
 कुरा पुत्रोसि ब्राह्मणा निर्मितः पुरा । त्वया चितः सोचितीस्तु
 यस्याहं नाम कीर्तयेति अर्चयिष्ये इति पृष्ट्वा ॐ अर्चयेति प्रयुक्ता
 ॐ नमोस्त्य नन्ताय सहस्रमूर्त्येति मन्त्रेणान्ध पुष्पाक्षत धूप दीप
 नैवेद्यादिभिः सम्पूज्य । कुशादिक मादाय ॐ अक्षामुक् गोत्राणां
 मस्मत्पितृ पितामहं प्रपितामहानाममुकामुक् मुकामुक् शर्माणां (ब्रह्मणां-
 गुप्ताणां) यथा योग्य सप्तलीका नां वसुधैव कुटुम्बकम् स्वरूपाणां आद्वं
 शम्भुनिजनाधूरि लोचनं शङ्करानां त्रिभुवणं देवानामिदं माघनं मस्तु ।
 ततः सव्येन ॐ अर्चयिष्ये इति पितृ ब्राह्मणां पृष्ट्वा ॐ—
 अर्चयेति प्रयुक्ताः सन्धादिभिः सम्पूज्य धूप द्वितीयाक्षरं येन । पिता-
 माहणां सम्पूज्य ॥ ॐ पितृ पितामहं प्रपितामहानां यथा योग्य
 मयतो येभ्यो नमः । ॐ नमोः मातामहं प्रमातामहं वृद्धं प्रमाता-

महाना यथा योग्य सपत्नी का ना तथा च आप्त समस्ताना पूजन
 कुर्यात् ॥ कुश भोटकादिक मादाय ओं अद्यामुक गोत्रा अस्मत्पितृ
 पितामह प्रपितामहा अमुकामुकामुक शर्माण (ब्रह्मा गुप्तो) यथा
 यथा योग्य सपत्नीका वसु रुद्रादित्य स्वरूपा तथा अमुक गोत्रा
 अस्मन्मातामह प्रमातामह बृद्ध प्रमाता महा अमुकामुकामुक शर्माण
 यथायोग्य सपत्नी का वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपा अथ कर्त्तव्या
 मुक तीर्थ भ्रात्रे पतान्यर्चनान्यत्र गन्ध पुष्पाक्षत ताम्बूलपूगीफत
 यज्ञोपनीत धूप दीप नैवेद्यादीनि पोढा विभज्य युष्मभ्य स्नधा इत्यु
 त्सृजेत् । ओं अर्चनविधे सर्वपरिपूर्णं मस्तु इति जल दद्यात् ओं
 अस्तु परिपूर्णं इति प्रति वचनम् । अथ अन्नसकल्प । सव्यन
 सोपस्कर मन्त्र सम्प्रोक्ष्य सोपस्कर यव जल घृत मधुयुत मन्त्र
 उपनीय मधुनामिधायं ऋजुहस्ताभ्या अन्न पात्र आलभ्य पृथिवीते
 पात्र द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृत जुहोमि स्वाहा । इ
 विष्णुविचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्, समूढ मस्य पा ६ सुरेस्वाहा ।
 ओं कृष्ण इव्यमिदं रक्ष मदीयमिति पठित्वा । ओं इदं अन्नं इति
 अन्ने इमा आप इति जलं इदं आज्यमिति घृते ॥ इदं हविरिति
 पुनरन्ने पतानि उपकारणानि इति क्रमेण अन्न जल घृतेषु विप्र घरे
 दक्षिणा इष्टनिवेद्य ॥ ओं यवोसियववारम द्वेषो यववारिति मन्त्रेण
 यवात्रोपरि विकीर्य कुश यव जलान्यादाय—वाम हस्ताङ्गुल्यङ्गुष्टे
 क्रमेणान्नमापरचपुष्टवा ओं अद्यामुक गोत्राणामस्मत् पितृ पितामह
 प्रपितामहानाममुकामुकामुक शर्माण (ब्रह्मा गुप्तो) यथायोग्य सपत्नी
 का ना वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणा तथा द्वितीय गोत्राणा अस्मन्मातामह
 प्रमातामह बृद्ध प्रमाता महानाममुकामुकामुक शर्माण यथा योग्य
 सपत्नी का ना वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपाणा भ्रात्रे सन्वन्धिम्य
 धूरि लोचन सङ्गक विश्वेभ्य देवेभ्य इदं मन्त्रं अमृत स्वरूपेण
 सपद्यता नमः स्वाहा ॥ इति कुशादिक उत्तसृजत् ॥ अपसव्यन ॥
 सोपस्करं तिल घृत मधुजल युत मन्त्र उपनीय मधुना विधायं
 अधो मुक्ताभ्या व्यस्ताभ्या पाणिभ्या अन्न पात्र आलभ्य पृथिवीते
 पात्र द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृत जुहोमि इ विष्णु-
 विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढ मस्य पा ६ सुरेस्वाहा ओं कृष्ण
 इव्यमिदं रक्ष मदीयमिति पठित्वा ओं इदं अन्नं ओं इमा आप ओं
 इदं आज्यं ओं इदं हविरिति पुनरन्ने । ओं—एता न्मुत्कारणानि
 क्रमेण अन्न जल घृतेषु विप्र दक्षिणा ऋष्ट निवेद्य । ओं हव
 हता अमुरा रक्षा ६ सिन्धेदिपद इति ब्राह्मणं नाम प्रतो भूमायै ।

विज्ञानं विकीर्णं मोटका दीन्यादाय वाम हस्ताङ्गुष्ठगुलिभिः क्रमे-
णाक्षं अपरच स्पृष्ट्वा ओं अथोद्दामुक गोत्रेभ्यः आत्मसिन्धु
पितामह प्रफितामहेभ्यः अमुकामुकामुक शर्मभ्यः [ब्रह्मा-गुत्रेभ्यः]
यथा योग्य सपत्नी केभ्यः वसु रुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः तथा
द्वितीय गोत्रेभ्यः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः यथा
योग्य सपत्नी के भ्यः वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपेभ्यः इदं मामार्ज
सजलं सोपस्करं परि विष्टं परि वेक्ष्यमाण मक्ष्य तृप्ति हेतोस्तेयथा यथा
भारं विभज्यभुज्यते स्वधा ॥ इति पितृ ब्राह्मण समीपे मोटकादिकमुत्त-
रेत् । सकृत् अपोदत्त्वाः ततः सव्ये न देव ब्राह्मण करयोः ओं भवन्तौ
प्राशयन्तो मित्य पोरान चैरवदेष्ट ब्राह्मणं जलं दद्यात् ॥ अपसव्येन
भवन्तः प्राशयन्तु इति पितृ ब्राह्मणाय जलं दद्यात् ॥ अन्नहीन क्रिया
हीनं विधि हीनं च यदुभवेत् तत्सर्वं मन्त्रिन् मन्तु इति जपेत् ॥ सव्येन
गायत्रीं जपित्वा ओं मधुगवाता ऋतायवे मधु करन्ति सिन्धवः । माथीनः
सन्धोपयी । ओं मधुनक्त सुतोपसो मधुमन् पायिषध रजः ॥ मधुघोर-
श्नुतः पिताः ॥ ओं मधुमान्नोन्धनसतिर्मधु माँः अस्तु सूरवैः । माथी
गाँवो भवन्तुतः ॥ ओं मधु मधु मधु इत्ये पत्न्या । ओं अन्नहीनं क्रिया
हीनं विधिहीनं चयद्वयेत् । तत्सर्वं मन्त्रिन् मन्तुश्रीभारकरस्य प्रसादतः । ओं
नमस्तुभ्य विरुपाक्ष नमस्तेऽनेक चक्षुसेः । नम पिनाक हस्ताय वज्रहस्ताय
वै नमः इति पठेत् ॥ यथा सुखं जुषभ्यम् इति वचना नन्तरं ते ब्राह्मणा
मोनिनो भूत्वाभुज्जीर संज्ञया च भक्ष्यं प्रायेयेयुः ॥ ततोऽर्धेष्वासीनः
गायत्रीं मधुगवाता इत्यादि ऋचम् ओं मधु मधु मथीति च जपेत् । ततः
पृथुग्वपाञ्चः मिति रक्षोम्नी ऋचं पठेत् [ऋचं अमेद्रष्टव्यः] ततः
स्तिज्ञा न्भूमीक्षित्वा ओं उदीरता मित्यादिपितृ मन्त्रान् ओं सदस्व शीर्षे
स्यादि पुरुषं मूकम् ओं आगुः शिशानू इत्यादिकम् प्रति रवं मधुगवाता
इत्यादि पितृभूक्तं च नमस्तेऽह इत्यादि रुचिः ॥ य. पविनाशि । अमेद्रष्टव्यः)
यथा शक्तिजपेत् । नमस्तुभ्य विरुपाक्ष नमस्तेवेकचक्षुषे नमः पिनाक हस्ताय
वज्र हस्ताय वै नमः ॥ इति पठेत् अन्यद्वापिद्वि गोवादि पारायणं पठेत् ॥
अपसव्येन पिण्डदानार्थं वेदिकां निर्माय ओं ये न्यासि प्रतिमुखमाना
अमुराः मन्तुः स्वजयारचरन्ति । परापुत्रं त्रिपुरो जे भारन्त्यन्तिऽल्लोकात्र
प्रगुशान्त्यम्मान् इति मन्त्रेण ज्वलद्द्वारं ध्यामयि-या । तद्द्वारं दक्षिणपार्श्वं
क्षिपेत् ॥ ततः पिण्डिकायां रेखां करणम् ।—वामेन पाणिनां दर्भं
पिञ्जली गृहीत्या मध्येन अग्रगृहेत्वा—ओं अथवा अमुरा रक्षाक्षितः
दिपद् । इति दक्षिणायां रेखां कृत्वा मुचरं तदक्षिपेत्, ततो जलेन
ओं शम्भो देवोऽपि विष्टिष्टं आसिष्य, तदनुदिनं नृस्युतामाप्सोर्वै ।

सव्येन ओं देवताभ्य इतित्रि. पठित्वा अपसव्येनयवपिष्ट मयान्
 पिण्डान्निर्माय-मोटकादिक मादाय ओं अद्यामुक गोत्रअस्मत् पितृ अमुक
 शर्मन् [ब्रह्मा-गुप्त] वसुस्वरूप अमुक तीर्थं आद्धे पिण्डस्थाने अत्रावने
 नित्यतेस्वधा । एव पितामह. प्रपितामहा (अम्बात्रितय) मातृ पितामहि
 प्रपितामह (सपत्नजननी) मातामहप्रमातामहा वृद्धप्रमातामहा एतेसरित्रय
 औ-पुत्र-पुत्री-पितृव्य सखी मातुलसपत्नीक. स्वभ्रातासपत्नीक पितृ स्वपा-
 सापि अपत्यधवयुक् सापत्या सधवा, मातृष्वसा-आत्मव्यसा-रवसुर.
 गुरुःशिष्या आप्तभित्तिणि-उमस्त (अन्न शस्त्र-वाहनादि) पितृभ्यो
 वसुस्वरूपेभ्य आद्यकर्तव्य अमुक तीर्थं आद्धे पिण्डस्थानेऽअत्रावने
 नित्यते स्वधा इति अवने जन क्षिन्त मूत्र कूरोपरिदद्यात् ॥ तत सव्येन
 भो ब्राह्मण युष्मदनुजया पिण्ड प्रदान महं करिष्ये इति परने ओं
 कुह्येत्यनुज्ञात् ॥ अपसव्येन यव,पेष्टमयान् निर्माय पिण्ड मोटकादि
 सहितप्रथम पिण्ड आदाय-ओंअद्येहेत्यादि पूर्व सकल्पमुच्चार्य अमुक
 गोत्रऽअस्मत्पितृ अमुक शर्मन् (ब्रह्मन् वागुष्णो) वसु स्वरूपाय कर्त्तव्य
 अमुक तीर्थं आद्धे एव पिण्डोरअमृत स्वरूपोऽक्षय्य तृप्तिहेतोस्ते स्वधा ।
 इदमुदक गागम्-ओं गङ्गे चेत्यादि गङ्गा जलम् । ओं अद्येहे त्यादि
 पूर्व सकल्प मुच्चार्य अमुक गोत्र. अस्मत्पितामह अमुक शर्मन् रुद्रस्व-
 रूपाय कर्त्तव्य अमुक तीर्थं आद्धे एव पिण्डो अमृतस्वरूपोऽ अक्षय
 तृप्ति हेतो स्वधा । इद मुदक गागम् ॥ २ ॥ ओं अद्येहेत्यादि पूर्व
 सकल्पमुच्चार्य अमुक गोत्र अस्मत्पितामह अमुक शर्मन् आदित्य
 स्वरूपाय कर्त्तव्य अमुक तीर्थं आद्धे एवपिण्डो अमृतस्वरूपोऽअक्षय
 तृप्तिहेतोस्ते स्वधा । इद उदक गागम् गगेश्व यमुनेत्यादि ॥ ३ ॥ ओं
 अद्येहे त्यादि पूर्व सकल्प सिद्धिरस्तु अमुक गोत्राय अस्मन्मात्रे. अमकी
 देवी गायत्री स्वरूपे (सापत्ये) अद्य कर्त्तव्य अमुक तीर्थं आद्धे एव
 पिण्डो अमृतस्वरूपेऽक्षय तृप्तिहेतोस्ते स्वधा । इद मुदकं गागम् ॥ ओं
 अद्येहे त्यादि पूर्व सकल्प सिद्धिरस्तु अमुक गोत्राय अस्मन्पितानदी
 अमुकी देवी (सापत्यादेवो) सावित्रीस्वरूपेऽद्य कर्त्तव्य अमुक तीर्थं
 आद्ध एव पिण्डोअमृत स्वरूपे अद्य तृप्ति हेतोस्ते स्वधा, इदमुदकं
 गागम् ॥ ओं अद्येहेत्यादि पूर्व सकल्प सिद्धिरस्तु अमुक गोत्राय
 अस्मत्प्रपितामहो अमुको देवी (सधवादेव्य) सरस्वती स्वरूपे
 अद्य कर्त्तव्य तीर्थं आद्धे एव पिण्डो अमृतस्वरूपे अक्षय तृप्ति
 हेतोस्ते स्वधा ॥ एव सपत्न जननी ॥ इद मुदरुगागम् गगे चेत्यादि ॥
 त्रितोयगोत्रम् ओं अद्येहेत्यादि पूर्व सकल्प मुच्चार्य अमुक गोत्रा
 अस्मन्माता मह अमुक शर्मन् यथा योग्य सपत्नीक वसु स्वरूपाय

कर्त्तव्यं अमुक तीर्थं आद्रे एष पिण्डो अमृतस्वरूपो अक्षय तृप्ति
हेतोस्ते स्वया इह मुदक गागम् ॥ ओं अद्यहेत्यादि पूर्वं सफल
मुच्चार्य अमुकगोत्राः अस्मन्प्रमाता मह अमुक शर्मन् यथा योग्य सप्तलीक
वसु स्वरूपाय कर्त्तव्य अमुक तीर्थं आद्रे एष पिण्डो अमृत स्वरूपो
अक्षय तृप्ति हेतोस्ते स्वया ॥ ओं अद्यहेत्यादि पूर्वं सफलमुच्चार्य
अमुक गोत्राः अस्मन्वृद्ध प्रमातामह अमुक शर्मन् यथायोग्य सप्तलीक
वसु स्वरूपाय कर्त्तव्य अमुक तीर्थं आद्रे एष पिण्डो अमृत स्वरूपो
अक्षय तृप्ति हेतोस्ते स्वया । इह मुदक गागम् गोत्रे चेत्यादि तीर्थं मन्त्रो-
क्तः ॥ एतं श्री वनवादि पुत्र पुत्र्याऽपि पितृव्यं ज्येष्ठ कनिष्ठ यथायोग्य
सप्तलीकः, मातृक, मोऽपि सखी, पुत्रपुत्रसा-मातृपुत्रसा आत्मवत्सा
(यथायोग्या) ज्ञायापिताः गुरु शिष्य- आश्रमिज समस्त पितृव्य
वाहन-अथ राजादि, आश्रमकर्त्तव्य अमुक तीर्थं आद्रे एषपिण्डो अमृत-
स्वरूपोऽन्नमय तृप्तिहेतोस्ते स्वया । इह भूमिरिति । इह मुदक गागम्
गणेचेत्यादि तीर्थं मन्त्रेण पुन एक पिण्डमादाय—ओं आश्रमणौ ये
पितृ वरा जाता मातृस्तथा वरा भवामदीयाः । कुल द्वये ये ममदासभूता
भूत्यास्तमेयाश्रित सेवकाश्च मित्राणि सख्यः पशुरव पुत्रा पुत्रारच
दृष्टारच कुतो पकारा, जन्मान्तरे ये मम सगताश्च तेभ्य स्वया पिण्ड मिमं
ददामि ॥ इति दत्ता । पुन एष पिण्डमादाय ओं पिता पितामहश्चैव तथैव
प्रपितामह । माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही ॥ मातामहा ताति-
ताचप्रमाता मइता इव । तेभ्यो पिण्डो मया दत्त म्यत्तव्य सुपतिष्ठताम्
इति वचना ॥ तत आत्तकुश मूलेन ओं क्षेत्र भागिना भय भागोस्तु
इति लेप भागिम्य, प्रवि पक्ति लेप भागं च, दद्यात् इति करं प्रोक्ष्य
मध्यं कृत्वा द्विराचम्य हरिश्चरेन् तत अपमज्जने प्रत्यग्ने जनम् ।
मोदकमादाय ओं अद्यामुक गोत्र अस्मत्पित, अमुक शर्मन् वसु स्वरूप
अथ कर्त्तव्य अमुक तीर्थं आद्रे पिण्डे प्रत्यक्ने जनन्ते स्वया, एतं इति
दत्ताऽन्त्येभ्योपिपिण्ड प्रत्यग्ने जन दत्वा दज्येन आचम्य पुण्याक्षत
गुहोश्वा दद्याय ओं अत्र पितरो माद यक्षं यथा आगमा दद्यादध्वम्
इति उत्तराभि मुख पठित्वा स्वाम् नियम्य भारकार मूर्तीन्
पिण्डान्यापन् ॥ —ॐ अमोमन्-न पितरो यथा भागमा दद्यादध्वम् इति
पठित्वा पुण्यादिकानि पिण्डोपरिनिक्षिपन् । नीला त्रिस्रस्य । मज्ज्येन
आचम्य हरिश्चरेन् अस्मज्ज्येन मूत्राख्यादाय-यामेन पाणिनाभृत सूय
दक्षिणेन आदाय ॐ नमोः२ पिता रसाय नमोः२ पितरः शोषाय
नमोः२ पितरा बीजान नमोः२ पितर, स्वरायै नमोः२ पितरो पोषाय
नमोः२ पितरो मन्यये नमोः२ पितर, पितरो नमो योगदान्, पितरोदत
नमोः२ पितरोऽन्त्ये वद पितरो वाम इति मन्त्रेण प्रत्येक पिण्डो परित्यज्य

दद्यात् । ततः क्रमेण प्रत्येक पिरडान् गन्धादिभिः सम्पूज्य धूपदीप नैवेद्यादि निवेद्य ॐ पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यो नमः ॐ मातृ पितामहि प्रपितामहिभ्योनमः ॐ मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महेभ्यः अमुका मुकामुक शर्मभ्यः सपत्नी केभ्यः वसु रुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः तथाः अन्येभ्यः आराधय समस्तेभ्यः दत्त पिरडेभ्यः आराधय अमुक तीर्थ आद्वेभ्यः एतानि पिरडार्चनानि अत्र वस्त्र सूत्र गन्ध पुष्पाक्षत धूप दीप उपायन द्रव्य नैवेद्य ताम्बूल यज्ञोपवीत वासांसि अनेकधाभागं विभज्य युष्मभ्यः स्वधा ॥ इति पिरडे उत्सृजेत् । ततः आशिषः प्रार्थयेत् सव्येन ॐ गोत्रन्तोवर्धताम् ॐ वर्धताम् इति प्रति वचनम् । ओं दातारो नो भिवर्धताम् ॐ वर्धन्ताम् । ओं वेदावर्धन्ताम् । ॐ सन्वति वर्धन्ताम् ।—प्रोवर्धन्ताम् । ॐ श्रद्धा चनो माव्य गमत् ॐ मागात् ॐ बहुदेयं चनोस्तु ॐ अस्तु । ॐ अन्नं चनो बहुभवेत् ॐ अतिथीं रचलभे महि । ओं लभश्चम् । ॐ याचिताररचनः सन्तु ओसन्तु । स्व तिलकं सत्त्वा नुष्टान सन्पन्नाः सर्वदा यज्ञ बुद्धयः पितृमातृ परारचैव सन्त्वस्मत् कुलजा नरा । ॐ यं कामकामयते सोऽस्मै काम समुद्यतां मिति ब्राह्मण हस्तेनैव तिलकं [देव ब्राह्मण (वैश्वदेव) रश्मि पूर्वकं] कारयेत् । ततः अपसव्येन ॐ स्वधावाच विष्टे ॐ वाच्यताम् । रिक्ताञ्जलिना ॐ अयामुक्त गोत्रेभ्योऽऽस्मत्पितृ पितामह प्रपिता महेभ्योऽअमुका मुकामुक शर्मभ्यः यथायोग्य सपत्नी केभ्यः वसु रुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः । तथा अमुक गोत्रेभ्यः अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमाता महेभ्योऽमुकामुकामुक शर्मभ्यः यथायोग्य सपत्नी केभ्यः वसु रुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः तथा अन्येभ्यश्च समस्तेभ्योऽस्य पिरडेभ्योः अमुक तीर्थ आद्वेभ्यः स्वधोऽध्यताम् ॐ अस्तु स्वधा । ॐ ततः सपयस्कं पुटकं वाम हस्ते कृत्वा ॐ ऊर्जवहन्तो रमृतं घृतं पयः कीलालं परिश्रुतम् । स्वधास्थ तर्पयन् मे पितृन् ॥ इति दक्षिणाग्रां पयोधारां दत्वा पृच्छेत् । ओं पिरडाः सम्पन्नाः ओं सुसम्पन्ता ओं पिरडान्नुत्थाय यामि, ॐ उत्थापयस्व । ततः नम्री भूय पिरडान् सव्येना प्राह । अपसव्येनोत्थापयेत् । पिरडाधार कुशानुलमुक्त च बहोक्षिपेत् । ततः सव्येन पिरिडिकायां शङ्ख चक्रं च ७ । ४ विलिख्य ॐ शलायनमः । ॐ अश्वाय नमः । ॐ शंख चक्राभ्यां नमः इति यवैः अपसव्येन पिरडान् पिरिडिको परि तिधाय गयायां पितृ रूपेण स्वयमेव जनार्दनः उ दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्षं मुच्यते च शृणुत्रयात् इतिः सव्येन पूजयेत् ॐ वसन्ताय नमस्तुभ्यं प्रीष्माय च नमो नमः ॥ वर्षाभिरश्च शरत्संज्ञं श्रुतवेच नमोनमः । हेमन्ताय नमस्तुभ्यं नमस्ते क्षिशिराय च । मास सम्बत्सरेभ्यश्च दिवसेभ्यो नमो नमः ॥ इति वसन्तादिषु १२ शतुभ्यो नमः एव दक्षिणाद्रव्यणि आदाय पूजयेत्—हिरण्यं गर्भं गर्भस्थं हेमवी० इक्षियेद्रव्यावभन० । ततः कुशादि

सहितं दक्षिणाद्रव्यं आदाय ॐ अद्यामुक गोत्राणा मस्मत्पितृपितामह प्रपि
तामहानाममुकामुकामुक शर्माणा यथा योग्य सपत्नीकाना वसु रुद्रा दित्य
स्वरूपाणा तथा अमुक गोत्राणामस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता
महानाममुकासुकासुका शर्माणा (वा) यथा योग्य सपत्नीकाना वरुण
प्रजापति अग्नि स्वरूपाणा कृतैतत् अमुक तीर्थं पिण्डदान प्रतिष्ठाप्य
दक्षिणा द्रव्यं यथा नाम दैवत यथा नाम गोत्रायेत्यादि नाधिश्वेदेव
ब्राह्मणाय दद्यात् । पुन कुशादि सहितं दक्षिणा द्रव्यं आदाय ॐ अद्या
मुक गोत्राणा मस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानाममुका मुका मुक शर्माणा
(वा) यथायोग्य सपत्नी काना वसु रुद्रादित्य स्वरूपाणा तथा (द्वितीय
गोत्राणा मस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महानाम मुका मुका मुक
शर्माणा (वा) यथा योग्य सपत्नी काना वरुण प्रजापति अग्नि स्वरू
पाणा तथा अन्येषासमस्त पितृ णा कृतैतत् अमुक तीर्थं श्राद्धे पिण्ड
दान प्रतिष्ठार्थमिदं सुपूजितं हिरण्यं यजानाम दैवत यथा नाम गोत्रेभ्य
यथा यथा नाम शर्मान्य पितृ ब्राह्मणेभ्य यथा यथा भाग विभज्य दातु
मह मुत्सृजे ॥ पुन भूयसी दक्षिणामादाय ॐ अद्यामुक गोत्राणामस्म
त्पितृपितामह प्रपितामहानाम मुका मुका मुक शर्माणा (वा) यथायोग्य
सपत्नीका ना वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणा द्वितीय गोत्राणा अस्मन्मातामह
प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महानाम मुका मुका मुक शर्माणा (वा) यथा
योग्य सपत्नीकाना वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपाणा अथ कृतैतद् मुक-
तीर्थं श्राद्ध सागता सिद्धये न्यूनाति रिक्तपूतये च अमुक द्रव्यं ममुक दैवत
ममुकामुकासुकासुका गोत्रेभ्योऽअमुका मुकामुकानाम शर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथा
भाग विभज्य यथा काले दातुमह मुत्सृजे इति ब्राह्मणेभ्यो दद्यात् । तव
भूरि लोचन विश्वे देववा प्रीयन्ता मिति प्रणमेत् । अपसव्येन वाजे २ वत
रात्रिनो धनेषुविप्राऽमृता ऋतज्ञा अस्यमध्वा पियमादध्वं तृप्ताध्यात
पयिभिर्दध यानै । इति मन्त्रेणपितृ न्विस्तृजेत् ॥ सव्येन ॐ इपताभ्य
पितृभ्योऽधश्च महायोगीश्वरे वच नम स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो
नम । इति त्रिपठेत् अपसव्येन दीप आदाय । सव्येन हस्तौ पादौ प्रक्षाल्या
चम्य इति पठेत् । ॐ यत्कृतम् तत्सुकृतं मस्तु यन्न कृतं तद्विच्छी प्रसादात्
ब्राह्मणवचनान् परिपूर्णम् स्तु अस्तुमरि पूर्णम् इति ब्राह्मणा । ॐ प्रमादा
कुर्वन्ता कर्म प्रच्य तताभ्यरपु चस्मरणा न्ववादिष्वा सम्पूर्णा स्यादिति
ध्रुति ॥ आयु पूजा धन विद्या स्वर्ग मोक्ष मुग्धा निच प्रयच्छन्त तथा राज्य
पितर — श्राद्ध तपिता ॥—॥ ततो वक्ष्यमान् आयश्चस्त्वम् पर्यन्तं दयपि
पितृ मानवा दीनृत्तिलोदकाञ्चलिभिस्तर्पयेत्—ॐ आयश्चस्त्वम् पर्यन्त
दैवपितृमानवा । तृप्यन्तु पितर ॐ माता माता महादय ॥ १ । ॥ ॥

वशे मृतायेव मातृ वशे तथैवच । गुरुस्वसुर वन्धूना ये चाऽप्येवान्धवा
 स्मृता । २२ ॥ ते तृप्ति मखिलायान्तु ये चास्मत्तोय काञ्चक्षिण ये । २३ ॥
 बान्धवायेऽन्यजन्मनि बान्धवा । २४ ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तुमदत्तेनाम्बुनाऽखि-
 ता ॥ देवामुरास्तया यक्षानागागन्धर्वराक्षसा ॥ २५ ॥ पिशाचागुह्यका सिद्धा
 कूष्माण्डास्तर वस्त्रगा ॥ जलेचराभूमि चरा वाय्वहाराश्च जन्तव ॥ २६ ॥
 ते तृप्तिमखिलायान्तुमदत्तेनाम्बुनाऽखिला नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थि-
 ता ॥ २७ ॥ तेषां माया यनायेतदीयते सलिल मया ॥ अतीत कुलकोटीनां
 सप्तद्वीपनिवासिभ्यः ॥ आवल्य भुवना, लोका निदमस्तु ततो दकम् ॥
 यत्र क्वचनसस्यानालु तृष्णोपहतात्मनाम् ॥ २८ ॥ इदं मत्तय मेवास्तु मया दत्त
 तिलो दकम् ॥ इति मन्त्रेण तिल मिश्रित चारि धारा या दद्यात् ।
 यत्र बस्त्र निष्पीडन विधाय-एके चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो
 रिमता । ते पिष्यन्तु मया दत्त बस्त्र निष्पीडनो दक मिति मन्त्रेण
 वज्रल भूमौ निक्षिपेत् ॥ ततः सर्वं कृत्वा पूर्वाभि मुखो भुत्वा
 प्राचम्य जले ब्रह्मादि देवान् पूजयेत् ॥—ॐ ब्रह्म यज्ञान्मन्त्रथम
 पुरस्ताद् द्विषी मत सु रुचोऽग्नेन ऽआव ॥ सवुष्ण्या उपमाऽ
 अथ विष्टा शतरश्च योनिम शतरश्चिब्यव ओं ब्रह्मणे नम आ
 इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् ॥ समूढमस्य पा ५ सुरे
 स्वाहा ॥ ओं विष्णवे नम ॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्य वऽवतोऽऽपये
 नम ॥ बाहुभ्यां मुतते नम ॥ ओं रुद्राय नम ॥ ओं भूर्भुव
 स्व तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोद
 यात् ॥ ओं मित्राय नम ॥ ओं वरुण स्तोतम्भनासि वरुणस्य
 ऽश्रुतसदच भासीद् ॥ ओं वरुणाय नम ॥ अथोत्थाय सूर्या
 यार्थं दद्यात् ॥ अर्घपत्रे जलगन्धपुष्पादीनि निक्षिप्य ॥ ओं एहि सूय
 महस्त्राशोतेजो राशो जगत्पते ॥ अनुकम्पय मा भक्त्यागृहाणान्यं
 दिवाकर इति मन्त्रेण अर्घ्यं दद्यात् ॥ ततः उत्थायेव सूर्यो पस्था
 नम् । ओं अहः मस्य केतवोऽग्निरस्मयोऽन्नो ऽ अनु ॥ आजन्तोऽ
 अग्रो यथा ॥ उपमाय गृह तोसि सूर्यायत्वाऽआजायैषते योनि
 सूर्यायत्वा आजाय ॥ सूर्योऽआजिष्ट आजिष्ट त्व-देवेऽग्निसिञ्चा
 निष्पेदस्मनुष्येषु भूयासम् ॥ ॐ इध स गृचिपदसुरन्तरिच सदोता
 वेदि पदतिथि दुर्गोणसत् ॥ नृपद्वर सहव सद् व्योम सदवन
 गोजा श्रुतजा ऽ अद्रिनाऽऽश्रुतगृहम् इति मन्त्राभ्यां सूर्यं सुपस्थाये
 प्रदक्षिणी कृत्वादिग्यो दिग्देवेभ्यश्च प्रणमेत् । ओं आरुच्यं दिशानम् । ओं
 इन्द्राय नम । ओं आग्नेये ऽग्ने नम । ओं अग्नये नम । ओं दिक्षिणस्येन्द्रो
 नम ओं यमाय । ओं नैऋत्येन्द्रो नम ओं निऋत्ये नम । ओं

प्रतीच्यैदिशे नमः वरुणाय नमः ॥ ओं वायव्यै दिशे नमः ओं
 वायव्ये नमः ॥ ओं उद्वेच्यै दिशे नमः ओं कुबेराय नमः ॥ ओं
 ईशान्यैदिशे नमः ओं ईशानाय नमः ॥ ओं उर्ध्वायैदिशे नमः—ओ
 ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ अग्नौदिशे नमः अग्नन्ताय नमः ॥ ततः
 उपविश्य प्रणमेत् ॥ ओं ब्रह्मणे नमः । ओं अग्नये नमः ओं
 इन्द्रायै नमः । ओं आपविभ्या नमः । ओं उषे नमः । ओं वाचस्पतये
 नमः । ओं विष्णवे नमः । ओं महद्भ्यो नमः । ओं अद्भ्यो
 नमः । ओं अपाम्बुतते नमः । ओं वरुणाय नमः । ओं सम्यक्सप्त
 यसा सन्तनु भिरगन्महि मनसा स ॥ शिव ॥ दृष्ट्वा तु देवो
 विषदधातु रायो लुमाण्डुं तन्वो यद्विलिष्टम् ॥ इति मन्त्रेण सप्त
 ऋद्रयेन सुप्तं विभूर्य । तच्चक्षुरीति मन्त्रेण चक्षुः स्पर्शं कुर्यात् ॥
 ओं तच्चक्षुः ईषदितम्पुरस्ताच्छुम् सुचरत् । परयेम शब्दं शतजीवम
 शब्दं शत ॥ ११ ॥ याम शब्दं शत प्रवृत्तं याम शब्दं शतमदीना
 श्याम शब्दं शतम्भूयश्च शब्दं शतम् ॥ इति मन्त्रेण नामिकाङ्क
 गुण्ढाम्ना चलं स्पृष्ट्वा, चक्षुः स्पर्शं निदधीत । ततः ॐ देवामातु
 विप्रो गातुं चित्त्वागातुमित् ॥ मनस्वतः ॐ मन्त्रेण चक्षुः स्पर्शं कुर्यात्
 इति मन्त्रेण फित्त्वा तिसृष्य कायनं वाचेति मन्त्रेण स्पर्शं कुर्यात्
 कायेन वाचा मनसश्चिद्वैद्यायुष्यात्मनाया प्रकृतिं स्वमाप्नोत् ॥ कोमि
 यद्यत् सकलं परस्मै नारायणा यति समपयेति ११ कमपास्य कुर्यात्
 ऋग् भूभाषुत् सृजन् ॥ यत्स्यस्मृत्या चना मोक्षया तपोयज्ञ क्रिया
 विष्णु । च्युतं सम्पूर्णं वा याति सद्यो बन्धे वनच्छ्रुत् ॥ चतुर्भिश्च
 चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च ह्युक्तं च पुनर्द्वाभ्यां सद्यो विष्णु
 प्रसीदन्तु इति पठेत् ततः गन्धाक्षुतं पुष्पाक्षुतं वाच्यं माणं मन्त्रा
 पठित्वा गन्धादिभिः यजमानस्य तिस्रः कुर्यात् ॥ वैदिक मन्त्रा ओं
 शतमिन्तु शब्दोऽभ्यन्तिदेवा यथा न श्वका जरसन्तु नाम ॥ पुत्रा
 मोघं पित्रो मयन्ति मानोमय्यारी रिपतायुर्मन्तो ॥ १ ॥ अदिति
 र्गार्द्विति रन्तं रिञ्जं मदिति मन्ता मफिता सपुत्रा ॥ त्रिरदेवाऽ
 अदिति पञ्च जनाऽअदिति ज्ञात अदिविजनि सवयम् ॥ स्वादु
 प ॥ मद्रं पित्रो ययोधा क्रुद्धं भित शक्ता रन्तो गभीरा । पित्र
 मनाऽऽपुत्रताऽअमृता मतो यीरा जरयो ग्राह माहा ॥ ३ ॥ आद्येण
 ॥ पित्र सौम्या सः शिवो यथा वा प्रथिता अनेहसा ॥ पूषा न
 यानुदुरिता ह्यथा श्रुता रक्षा माफिमोऽअगस्तऽइत्यतः ॥ ४ ॥ पितृभ्य
 म्या यिम्यः स्वयानम पिनामहम्य म्यायिम्य म्य सानम । प्रथिता
 महम्य म्यायिम्य स्वयानम । अगस्तं पित्रो मादन्तं पित्रोती

तृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ५ ॥ पुनन्तुमा पितरः सोम्यासः
पुनन्तुमा पितामहा पुनन्तु प्रपिता महा ॥ पवित्रेण शता युपा ।
पुनन्तुमा पिता महाः पुनन्तु प्रपिता महाः । पवित्रेण शतायुपाविश्व
म् आयुष्यं शनवै ॥ ६ ॥ ततो यजमानो गृहीत तिलको ब्राह्मण पादान्
प्रक्षाल्य पादोदकं गृहीत्वा ॥ तान्ब्राह्मणान् पायसादिभिर्भोजयित्वा
तेभ्यो लब्ध्वाभ्यनुक्तः सपरिवार स्वयं मपि भुञ्जीतः ॥ तत् ॥ आद्वीयद्रव्या-
णि ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत् तद्भावे जलेवानिच्छिपेत् इति सगृहीतम् ॥
१० धेनुं अ० द्रष्टव्य ।

अथ पितृसूक्तम् ॥

ॐ मधुमधु मधु ॐ मधुव्रतामृतवाय वे मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः
सन्त्वोपधीः ॥ १ ॥ मधुनक्त मुत्तोपसो मधु मत्पाधिंव ॥ रज मधुघो
रस्तुनः पिता ॥ २ ॥ माधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमो ॥ २ ॥ ऽअस्तु सूर्यः
माध्वीर्गावो भवन्तुनः ॥ ३ ॥ ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा सोमाय
पितृ मते स्वाहा अपहृता असुरक्षा ॥ सि वेदि पदः ॥ ४ ॥ ये रूपाणि
प्रति भुजचमाना । अमुराः सन्तस्त्वधया चरन्ति परा पुरोये भरन्त्यग्निष्टो
ल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥ ५ ॥ अत्र पितरो मादयध्वम् । यथाभागमा
वृषायध्वम् । अमीमदन्त पितरो यथा भागमा वृषायिपत् ॥ ६ ॥ ॐ
नमोवः पितरोरसाय नमोवः पितर शोषाय नमोवः पितरोजीवाय-
नमोवः पितरः स्वधायै नमोवः पितरो योराय नमोवः
पितरो मन्यवे, पितर पितरो, ननोयो गृहाज्ञः पितरो दत्त सतोवः पितरो
दैर्घ्यै तद्गः पितरोव्वास आधत्त ॥ ७ ॥ आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्कर
स्रजम् । यथेह पुरुषोऽपत् ॥ ८ ॥ उज्जं वहन्तीर धृतं धृतं पवः कीलालं
परिश्रुतम् स्वयारवतर्षयतमे पितृना ॥ ९ ॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिम्यः स्वधानमः
पितामहेभ्यः स्वधायिम्यः स्वधानमः अक्षत्र पितरोऽमीमदन्त पितरोऽमी
तृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ १० ॥ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु
मो पिता महाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुपाः पुनन्तु मा पिता-
महाः पुनन्तु प्रपितामहा पवित्रेण शतायुपाविश्वं आयुष्यं नवै ॥ ११ ॥
अग्न आयूषपि पवसः ऽआसु वोर्ज धिय वनः आरे वाधस्व दुच्छ-
नाम् ॥ १२ ॥ पुनन्तु मा देव जनाः पुनन्तु मनसा धियः पुनन्तु विश्वा
भूतानि जाव वेदः पुनोहिमा ॥ १३ ॥ पवित्रेण पुनी हिमा शुक्लेण देव
दीपत् अग्ने कृत्वा क्व १ दस्तु यत्ते पवित्रं मधिष्यन्ते विवत मन्तरा
ब्रह्मतेन पुनातु मा ॥ १४ ॥ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षाणि ।

यः पोता मपुत्रातुमा ॥ १६ ॥ उभाम्यदेव सवितः पवित्रौ न च मां
 पुनोद्विषिरवतः ॥ १७ ॥
 वैश्व देवी पुनती दैन्यागा धस्यामिमा बहुवः स्तन्वोतपृष्टाः । तथा-
 मदन्त सद्यमा देपुवय ॥ स्वाम पतयोरवीणाम् ॥ १८ ॥ ये समानाः समनसः
 पितरो यमराज्ये तेषां लोकाः स्वयानमो यतो देवेषु कल्पताम् ॥ १९ ॥
 ये समाना समनसो जीवा जीवेषु मामकाः तेषां ॥ श्रीर्मयि कल्पता
 मर्हिमलोके शत ॥ समाः ॥ २० ॥ द्वेस्तुवी असृखं पितृणामह देवानां
 सुतमर्त्यानाम् ताम्यामिद्विष्व मेजस्तमेतिथ पितरं मातरं च ॥ २१ ॥
 इह ॥ इविः प्रजननं मे आस्तु दश वीर ॥ सर्वं गण ॥ स्वस्तये आत्म
 सति । प्रजासति यशु सति लोक मन्य भयसति । अग्निः प्रजां
 बहुलां मे करोत्वस पयोरेतो अस्मा सुवत्त ॥ २२ ॥
 उदीरता मकर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः असुय ईशुर वृका
 अन्तास्तेनोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ २३ ॥ अङ्गिरसोऽनः पितरो नषत्वा
 अथर्षाणो भृगवः सोम्यासः तेषां वयं ॥ सुमती यक्षिवाता मपि भद्रे
 सोमनमे स्वाम ॥ २४ ॥ ये नः पूर्वं पितरः सोम्यासोऽन् ह्विरे सोमपी
 र्धं वसिष्ठः तेमिर्यमः सऽरखणो हवी ॥ २५ ॥ राक्षु शक्तिः प्रति काममत्तु
 ॥ २६ ॥ त्वं सोम प्रचिकितो मनीषा स्वर्ध रजिष्ठ मनुनेपि पन्थाम
 तव प्रणीती पितरो न इन्द्रोः देवेषु रत्न मभ जन्त धीरा ॥ २७ ॥ त्वयहि
 नः पितरः सोम पूर्वं कर्माणि चक्रुः पयमान धीराः ॥ बन्वन्न वातः
 रविर्धोऽरपोर्णु वीरेमि रस्वै मधवा भवानः ॥ २८ ॥ त्वं सोम पितुमिः
 तंविशानोऽनुयाया पृथिवीः आतवन्व ॥ तस्मैत इन्द्रो इक्षिषा विधेन वय
 ॥ स्वाम पतयो रयीणाम् ॥ २९ ॥ बर्हिषद्ः पितरऽऽत्यर्वागिमायोद्व्या
 च कुमा जुषध्वम् ॥ ३० ॥ आगता वसा सन्त मेना धातः शोयोरपोदघात
 ॥ ३१ ॥ आह पितृन्मुविदत्रां ॥ ३२ ॥ अविस्तेन पात च विक्रमयन्व
 पिण्डो बर्हिषदेये सवया सुतस्य भग्नश्च पितृस्त इहा गमिष्ठा ॥ ३३ ॥
 उपहृताः पितरः सोमासो बर्हिष्येषु तिर्धिषु ज्येषु ॥ त आगमन्तु त इह
 भ्रूयन्वपि प्रयन्तु वेऽन्वस्व स्मान् ॥ ३४ ॥ आगमन्तुः पितरः सोम्यासो
 ऽग्निध्याताः पथिर्विदेवयानेः । अस्मिन् यज्ञे त्वपया मन्दन्तोऽपि
 नृबन्तुवेऽक्वन्वस्मान् ॥ ३५ ॥ अग्निध्याता पितर पद् गज्जत सवः सदा
 मदतनु प्रणतयः अत्ताद्वर्वाक्षिप्रयता निवर्हिष्यवारवि ॥ सत्रं वीरं वधावता
 ॥ ३६ ॥ ये अग्निध्याता ये अग्निध्याता गन्धे दिवः स्वययापादयन्ते
 तेभ्यः गवश्च मुनीर्विमेतायथा वयन्वर्कल्पयति ॥ ३७ ॥ अग्निध्याता नृनुय
 तोस गमहे नाऽरा ॥ मे सोमपी र्धं य आशुः । तेनो विप्रासः सुहृवा मन्तु
 यय ॥ स्वाम पतयो रयीणाम् ॥ ३८ ॥ आच्य जालु बर्हिष्यवो

प्रत्यमदायितः ॥ ६ ॥ नमस्येऽहं पितृभ्यो वै तर्प्यन्तेऽररं वासिभिः ।
 वन्यैः धातुं र्यता हारैस्त्वपो निधूतं किन्त्वपैः ॥ ७ ॥ नमस्येऽहं पितृभ्यो
 नैष्टिकं ब्रह्म वारिभिः ये सं संयतात्मभिर्नित्यम् सं तर्प्यन्ते समाधिभिः ॥
 नमस्येऽहं पितृभ्यो ह्ये राजन्या स्वर्पयन्ति यान् कन्यैर शोषैर्विधिव श्लोक
 त्रय फल प्रदान् ॥ ८ ॥ नमस्येऽहं पितृभ्यो ह्ये स्पर्शन्ते मुविषे सदा
 हरकर्मभिरैतैर्नित्यं पूष्य धूपान् वारिभिः ॥ ९ ॥ नमस्येऽहं पितृभ्यो ह्ये
 ये शूद्रै रवि भक्तिः सन्तर्प्यन्ते जगत्पत्र नास्ना ज्ञाताः सु कालिनः ॥ १० ॥
 नमस्येऽहं पितृभ्यो ह्ये पाताले ये महा सुरैः सन्तर्प्यन्ते स्वधा हारात्पुष्प
 दम्भ पदेः सदा ॥ ११ ॥ नमस्येऽहं पितृभ्यो ह्ये स्पर्शन्ते ये रसावले ।
 भोगैर शोषैर्विधि यन्नागैः कामा नभीष्मुभिः ॥ १२ ॥ नमस्येऽहं पितृ-
 भ्यो ह्ये सप्तः सन्तर्पितान्सदा । तत्रैव विधि यन्मत्र भोग संपत् सम-
 न्यतेः ॥ १३ ॥ पितृभ्यो नमस्येति सन्ति सावान् ये वेद श्लोके च त्वान्त
 रिणे ॥ महातले ये च सुरादि पूष्याः तेनेप्रयच्छन्तु मयोपनीतम् ॥ १४ ॥
 पितृभ्यो नमस्ये परमांश भूता ये वे विमाने निवसन्ति मूर्ताः । यजन्ति
 यानस्तमलैर्मनोभिर्मोक्षिरश्मिः क्लेश विमुक्ति हेतुम् ॥ १५ ॥ पितृभ्यो नमस्ये
 दिनि ये च मूर्ताः ॥ स्वधा भुजः काम्य फलाभि सन्धौ ॥ प्रदान शक्ताः
 स क्लेशविषयानां वि मुक्ति दायेऽनभि सहितेषु ॥ १६ ॥ तृप्यन्तु तेऽस्मिन्पि-
 तरः सनस्ता इच्छावतां ये प्रदिशान्ति कामान् ॥ सुखमिन्द्रत्वमवोऽधिकं
 वा, सुगन्धशु न्यानिजल गृहाणि ॥ १७ ॥ सोमस्यये रश्मिपुष्पेऽहं विन्ने,
 शुभले विपार्नेव सदा धसन्ति ॥ तृप्यन्तु तेऽस्मिन्पितरोऽन्त तोयैर्गन्धा
 दिनामुष्टि मित्रोजन्तु ॥ १८ ॥ येषां हृत्वेऽनौहविषा च तृप्तिः ये मुञ्जते
 बित्र शरीरभाजः ये पिण्ड दानेन सुदं प्रयान्ति तृप्यन्तु तेऽस्मिन्पितरो-
 न्तोयैः ॥ १९ ॥ ये सडिगमांसिनसुरैरभीष्टैः कृष्यैस्तिलैर्हव्यमतो हरैरच ।
 कालेन शास्त्रेन महापिण्डैर् संवीणि वा तैर्मद्र मन्त्रायान्तु ॥ २० ॥ इत्यान्य
 शेषाणि वयान्यमीषा न्यतोष तेषा ममेराचितानाम् । तेषान्तु सानिध्य
 मिहास्तुपुष्प, गन्धाश्चुभोज्येषु मयापितेषु ॥ २१ ॥ दिनेयेषु विपुलैः पुष्पां ।
 मासान्त पूष्या सुपुष्पेऽहं ह्ये, येषस्तस्यन्तेऽहं पुष्पे च पूष्या प्रयान्तु ते
 मे पितरोऽहं नृपि ॥ २२ ॥ पूष्या द्विजाता कुमुदेन्दुमासो ये चरिया-
 गाञ्च नमस्कं यणोः । तया विशये कनरा यज्ञात् नीलीनिभा शूद्र
 जनस्य येष ॥ २३ ॥ तेऽस्मिन्समस्ता मय पुष्प गन्ध, धूपान् वोषादि
 भिर दनेन, तयाश्च होमेन चयान्तु नृपि सदा पितृभ्यः प्रणमोऽस्मि
 नम् ॥ २४ ॥ ये देव पूर्वाण्यति नृपि होतोरनन्ति कन्यानि शुभा
 दृष्टानि, पुष्पा मयं भूति मृचो मयन्ति नृप्यन्तु तेऽस्मिन्पितरोऽहं
 नमः ॥ २५ ॥ रक्षाभि भूतान्य मुखास्तपोषान् निष्ठांश यन्तस्त्य दिव

प्रजानाम् । आद्याः सुराणाममरेशपूज्यास्तृप्यन्तुऽस्मिन्प्रणतोऽस्मितेभ्यः ॥ २७ ॥
 अग्निष्वात्ता वर्हि पदः आज्यपाः सोमपास्तथा । व्रजन्तु तृप्तिं श्राद्धे-
 ऽस्मिन् पितर स्तर्पिता मया ॥ २८ ॥ अग्निष्वात्ताः पितृ गणाः प्राची
 रत्नन्तु मे दिशाम् । तथा वर्हि पदः पान्तु याम्याः ये पितरस्तथा ॥ २९ ॥
 प्रतीची माज्यपा स्तद्ध दुदोची मपि सोमपाः ऊर्ध्व्वत् स्वयमा रक्षेत्कव्य
 वाहनतोऽप्यधः ॥ ३० ॥ विश्वे देवाअवः पान्तु ऊर्ध्वपाः न्तुमरुद्गणाः । रक्षो
 भूत पिशाचेभ्यस्तथैवा सुर दोषतः । सर्वतश्चाधिप स्तेषां यमो रक्षां
 करो तु मे । ३१ ॥ विश्व विश्व सुगाराभ्यो धर्मो धन्यः शुभा ननः ।
 भूतिदो भूति कृद्भोतः पितृणां वे गणा नवः ॥ ३२ ॥ कल्याणः
 कल्पदः कर्ता कर्तवः कल्पतरा अयः कल्पना हेतु रनघाः पद्मिमे ते गणा
 स्मृताः ॥ ३३ ॥ वरो वरेण्यो वरदः पुष्टिद स्तुष्टिद स्तथा । विश्व पाता
 तथा धाता सजै वैते तथा गणाः ॥ ३४ ॥ महान्महात्मा महितोमहिमः
 बान् महाबलः । गणाः पञ्च तयै वैते पितृणां पाप नाशनाः ॥ ३५ ॥
 सुखवो धनश्चान्यो धर्म दोऽन्यरश्चभूतिदः । पितृणां कथ्यते चैत तथा
 गण चतुष्टयम् ॥ ३६ ॥ एक त्रिंशत्पितृगणा यैर्व्याप्त मखिलं जगत् ।
 तेमेऽनु तृप्तापितरस्तृप्यन्तु च सदा हितम् ॥ ३७ ॥ क्षोत्रेणाने नव नरो
 योर्ध्वो स्तोष्यति भक्तिः तस्य तुष्टा नय भोगान्दास्यामो ज्ञानमुत्तमम्
 ॥ ३८ ॥ तस्मा देव स्वया श्राद्धे विप्राणा मुञ्जतां पुरः श्रावणीय महा-
 भाग अस्माकं तृप्ति कारकम् ॥ ३९ ॥ इति रुचिस्तवः ॥

अथ रक्षोघ्नीर्चनपठेत् ॥

ॐ कृणुष्व पाजः प्राप्तिं न पृथ्वीं याही रोजेचामर्वा इमेन ॥
 त्रिष्वी मनु प्रसितिं हुणानोस्तासि विष्वक् सस्त पिष्टे ॥ १ ॥ तव
 भ्रमास आशु या पतन्त्य नुस्पृशायुषता शोशु चानः ॥ वपूष्यग्ने जुह्वा
 पतङ्गा न सन्दिता विश्वज विष्व गुल्काः ॥ २ ॥ प्रतिस्पृशो विसृज तृप्तिं
 तपो भवा पायुर्विशो अस्या अर्द्धघः । योनो दूरेऽग्रधश १० सोयो-
 ऽन्यन्त्यग्ने माकिष्टेव्यधिरा दधर्पात् ॥ ३ ॥ उदग्ने तिष्ठ प्रत्याते नुध्वन्य
 मित्रा ओपत्तात्तिष्म ह्येते ॥ यो नो अराति १० समिवान चक्रेन नीचा
 तंधदयरा सन्न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वो भव प्रतिविन्दुषा द्ययस्मदा विष्कृ-
 णुष्व देव्यान्त्यग्ने ॥ अवस्थिरा तनु हियांतु जूनां जामिमजा
 मिम्प्रमृणी हि शत्रून् ॥ अग्नेश्वा तेजसा सादयामि ॥ इति
 रक्षोघ्नी श्रवम् ।

गर्गः—कृष्णे भाद्रपदे मासि श्राद्धं प्रति दिनं भवेत् । पितॄणां प्रत्यहं
कार्यनिपिद्धा हेऽपि तर्पणम् ॥

अथ तर्पण प्रयोगः ॥

आचम्य प्राणा नायम्य कुरा पवित्र धारणाम्—(दक्षिणहस्तस्या
नामिक यां—ॐ पवित्रे स्त्वो वैष्णव्यौ सवितुर्व्योमसवऽउत्तपुनाम्य
द्विद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः—॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य
यस्कामः पुने तव केयम् ॥ १ ॥ मन्त्रेण धारयेत्, सन्धः ॐ विष्णवे
नमः—अथ पूर्वोच्चारित एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ
ममाश्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं देव ऋपि मनुष्य पितृ
तर्पणा महं करिष्ये ॥ आभ्र पात्रे रौप्य पात्रे वा तर्पणार्थं तद्वत् पूरणम्—
(एतत्पात्रे प्रथमं श्वेतगन्धं यवान्ऽतद्भावेतत्तदुत्तान्) सुगन्ध पुष्पाणि
तुलसी दल सद्दिनानि निदध्यात् तदन्तरं तत्पात्रो परि हस्त प्रमाणान्
प्रादेश प्रमाणान् वा श्रोत्रं कुरात् प्राग्मान् स्थापयित्वा पश्चान्मन्त्रेण
तत्पात्रं जलेन पूरयेत् ॥—ॐ विश्वान्देवान् भवत्सु (केपाश्चिन्मरोः
भाद्र कर्माणि कुर्यात् नतु तर्पणे ।) आवाहयिष्ये ॐ आवाहय ॥ ॐ
विश्वेदेवासऽआगत शृणुतामऽहमेधं हवम् । पदम्बर्हिर्निषीदत ॥ २ ॥
विविश्वेदेवासः । शृणुतेमं हवाम्मे येऽअन्तिरिक्ते यऽउत्पदयविष्ठ ।
येऽअग्निं जिह्वाऽउत्त वा यजत्राऽआसदयास्मिन्नवर्हिर्षिं मादयध्वम्
॥ ३ ॥ ततो देवानामा वाहनम्—(पूर्वं पात्रो परिस्थापित त्रीन्कुरात्
तुलशीदल संयुक्तानदक्षिण कर सम्पुटे धृत्वा तदनन्तरं तस्योपरि वाम
हस्त मयो मुलं कृत्वा पश्चा देवाना वाहयेत् ॥) आगच्छन्तु महाभागा
विश्वेदेवा महायताः ये तर्पणेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तुते ॥ ३ ॥
ॐ भवामः ॥ देव तर्पणम्—ॐ ब्रह्मास्तृप्यताम् । ओं विष्णुस्तृप्यताम् ।
ओं रुद्रस्तृप्यताम् । ओं प्रजापतिस्तृप्यताम् । ओं देवास्तृप्यताम् ।
ओं इन्द्रा एहि सि स्तृप्यताम् । ओं वेदास्तृप्यताम् । ओं ऋषय-
स्तृप्यताम् । ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यताम् । ॐ गन्धर्वास्तृप्यताम् । ॐ
इतरा चार्यास्तृप्यताम् । ॐ सम्बन्धः सावयवस्तृप्यताम्, ॐ देव्य
स्तृप्यताम् ॐ अप्सरस्तृप्यताम् । ॐ देवानुगास्तृप्यताम् । ॐ नागा
स्तृप्यताम् । ॐ सागरास्तृप्यताम् । ॐ पर्वतास्तृप्यताम् । ॐ सरित-
स्तृप्यताम् । ॐ मनुष्यास्तृप्यताम् । ॐ यक्षास्तृप्यताम् । ॐ रक्षा-
स्तृप्यताम् । ॐ पिशाचास्तृप्यताम् । ॐ सुपर्णास्तृप्यताम् । ॐ

भूतानिस्तृप्यन्ताम् । ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् । ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् ।
 ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम् । ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम् । ॐ भूतग्रामश्चतु
 विधस्तृप्यन्ताम् । (तैः कुशैः) प्रांगमैः पूर्वाभिमुखो दक्षिण हस्तस्य
 सर्वाङ्गुल्यग्रैर्देवतीर्थेनान्य पात्रे एकैकाञ्जलिं क्षिपेत् ॥) ॐ तीर्थानि
 तृप्यन्ताम् । ॐ तीर्थ देवास्तृप्यन्ताम् । ॐ विश्वेदेवास्तृप्यन्ताम् । ॐ
 मोदास्तृप्यन्ताम् । ॐ प्रमोदास्तृप्यन्ताम् ॐ । ॐ सुमुखा
 स्तृप्यन्ताम् । ॐ दुर्मुखास्तृप्यन्ताम् । ॐ अविघ्नास्तृप्यन्ताम् । ॐ
 विघ्न कर्तारस्तृप्यन्ताम् ॥ मालाकारे यज्ञोपवीत विधाय - मनुष्यदेव
 तर्पणम् ॥ (ततो निबोतं कृत्वा पूर्वोक्त कुशानुदगग्रामदक्षिणा हस्तस्य
 कनिष्ठका मूल प्रदेशो धृत्वा पश्चादुत्तराभिमुखं मनुष्य देवेभ्यो द्वौ द्वाव
 ङ्जली कायवीर्थेन देयौ ॥) यथा ॐ—सनकस्तृप्यतु । ॐ सन० ॥
 ॐ सनन्तस्तृप्यतु । ॐ सनन्दन० ॥ ॐ सनातनस्तृप्यतु । ॐ
 सना० ॥ ॐ कपिलस्तृप्यतु । ॐ कपि० ॥ ॐ आसुरिस्तृप्यतु । आसुः ॥
 ॐ वोदुस्तृप्यतु । ॐ वोदु० ॥ ॐ पश्चशिखस्तृप्यतु । ॐ पञ्च० ॥
 पितृ तर्पणम्— पूर्वोक्त कुशान्द्रिभुगनान्दक्षिणाम् मूलान् द्विगुणी कृत्या-
 ङ्गुष्ठ तर्जनी मध्य प्रदेशो (दक्षिण हस्तस्य) धृत्वा दक्षिणाभिमुखं
 पूर्वमन्त्रित् पात्र जले अपसव्येन कृष्णतिल मिश्रणं तेन जलेनाया सद्येन
 पितृवीर्थेन पितृ स्त्रीं स्त्रीनञ्जलीन् दद्यात् ।) यथा—ॐ कन्यवाङ्
 नतस्तृप्यताम् । ॐ कन्यवा० ॐ क० ॐ सोमस्तृप्यातम् ॥३॥ ॐ यमस्तृ
 प्यताम् ॥ ३ ॥ ॐ अर्यमास्तृप्यताम् । ३ ॥ ॐ अग्निष्वात्ताः पितर
 स्तृप्यताम् । ३ ॥ ॐ वह्निपदः पितरस्तृप्यताम् । ३ ॥ यमतर्पणम् ॥—
 (यमाश्चैकेत्री स्त्रीमञ्जुलीन्दद्यादित्याहुः ।) यथा—ॐ यमायनमः ।
 ॐ यमाय० ॐ यमाय० ॐ यमंगायनमः ॥३॥ ॐ मृत्यवेनमः ॥२॥ ॐ
 अन्तकाय नमः । ३ ॥ ॐ वैधस्वनाय नमः । ३ ॥ ॐ कालायनमः । ३ ॥
 ॐ सर्वभूत क्षयायनमः । ३ ॥ ॐ औन्दुम्भरायनमः । ३ ॥ ॐ दृग्नाय
 नमः । ३ ॥ ॐ नीलायनमः । ३ ॥ ॐ परिमेषिते नमः । ३ ॥—ॐ
 वृकोदरायनः । ३ ॥ ॐ चित्राय नमः । ॐ चित्रागुप्ताय नमः । ३ ॥
 मनुष्य पितृतर्पणम्— (स्वस्व पितृणां गोत्र नामो धारं कृत्वा पितृ
 तीर्थेन प्रत्येकत्रो ह्योनञ्जलीन्दद्यात् ॥) उशान्तस्तेत्या याहनम्—ॐ
 उशान्तस्त्वा । निधी मह्यशान्तऽसमिधी महि । उशान्तु रातऽअश्वह
 पितृन्द्द्विपेऽअत्तरे ॥ ४ ॥ नमस्तपिना वाहयित्वे—ॐ आवाहय—(तर्प-
 णेतु प्रथमा विभक्त्यन्त पद योजयेत् ॥) यथा ॐ उशोरका मरुऽ
 उत्परासऽउन्मउपमाऽ पितरः सोम्यासः । अनुप्यऽनुसुष्टऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
 षास्ते नो वन्तु पितरो ह्येषु ॥ ८ ॥ ॐ अयेहा मरुगोरोऽस्मत्तिनऽ

मुकुशर्मा (वा) वसु स्वरूप सृष्टयता मिद तिलोदक तस्मैस्वधा ॥
 प्रथमाञ्जलिम् ॥ अत्रिरसोन । पितरो नवगवाऽऽबध्वाऽसोभुगवऽ
 सोम्यास - ॥ तेषाञ्चय ५ सुमती यज्ञियानामपिभुद्रे सौधतस
 स्यात् ॥ ६ ॥ ओं अघोहामुक गोत्रोऽस्मत्पिताऽमुक शर्मा वसु स्वरूप
 सृष्टयतामिद तिलोदक तस्मैस्वधा । इति द्वितीयाञ्जलिम् ॥ ओं आस्तु ।
 नऽ पितर-सोम्यासो गिप्यात्ताऽ परिभिर्देवयानैऽ । अस्मिन्मन्त्रे
 ययामवन्तोभिर्ब्रु वन्तुतेनन्वात्मान्वा । आयाच्यो हामु रगोत्राऽस्मत्पितामुक
 शर्मान् वसु स्वरूपसृष्टयता मिद तिलोदक तस्मैस्वधा ॥ इति त्रितियाञ्जलि
 पित्रे दद्यात् ॥ ओं ऊर्जं वदन्ती रघुतङ्गधृतम्पय- कीलालम्परिस्तुतम् ।
 त्वधास्थ तर्पयत मेभित् ॥ ८ ॥ ओं अघोहामुक गोत्रोऽस्मत्पितामहोऽ
 मुक शर्मा (वा) रुद्र स्वरूप सृष्टयता मिद तिलोदक तस्मैस्वधा ॥ इति
 प्रथम । पितृभ्य-स्वधायिभ्य । स्वधा नमः+ पितामहेभ्य+स्वधा
 यिभ्य+स्वधा नमः+पितामहेभ्य+स्वधापित्र्यस्वधानमः+ अहन्मित्रो
 श्रीमदन्त पितरोवा त्वन्तपितरऽ पितरऽ गुण्यदम् ॥ ११ ॥ ओं अघोहामुक
 गोत्रोऽस्मत्पितामहोऽमुक शर्मारुद्र स्वरूपसृ० ॥ इति द्वितीया
 ञ्जलिम् ॥ ओं ये चेद पितरो येच नेद योश्चन्विजन्तयाऽ ॥ उच न
 पजिदम् । त्वग्नेदेव यतित जातयेदऽ रवामिष्यंश्च ५ मुक्तनञ्जुपन ० ॥
 ओं अघोहामुक गोत्रोऽस्मत्पितामहोऽमुक शर्मारुद्र स्वरूपसृ० । इति त्रि
 तोयपितामहाय, दद्यात् ओं मधुव्रताऽष्टतायते मधुस्रान्ति सि-वन्व ।
 माद्रीर्नऽ सन्त्रागवाऽ । ओं अघोहामुक गोत्रोऽस्मत्पितामहोऽमुक शर्मा
 (वा आदित्य स्वरूपसृष्टय मिद तिलोदक तस्मैस्वधा । इति प्रथमाञ्ज
 लिम्) ॥ ॐ मधुनक्त मुषो पसो मधु मर्याविव ॥ रव- । मधु रघो
 रस्तु नऽ पिता ॥ १२ ॥ ॐ अघोहामुक गोत्रोऽ स्मत्पिता
 महोऽमुक शर्मा आदित्य स्वरूपसृ० ॥ इति-द्वितीयाञ्जलिम् ॥
 ॐ मधु मान्तो व्रतस्यविर्मधुमा १२ ॥ अस्तु सुखं - । माद्री
 गोवामधु नऽ ॥ १३ ॥ अघोहामुक गोत्रोऽ स्मत्पितामहो
 भुम शर्मा आदित्य स्वरूपसृ० ॥ इति प्रथमा महाय सूतोवाञ्जलि
 दद्यात् ॥ ॐ आमात्रास्य प्रसवो नयम्या ये याया दृयिवी
 विररूप ॥ आमा गन्ताम्पितरा मातरा आमा सोमा अकृत एतेन
 गम्यात् ॥ ॐ अघोहामुक गोत्रोऽस्मत्पितामहोऽमुक शर्मा (सायत्यसववा)
 गायत्री मन्त्रा तृप्यता मिद तिलोदक तस्मै स्वधा ॥ इति प्रथमा
 त्रितिर्याञ्जलिम् ॥ अत नैव पाक्यन मात्रे द्वितीया त्रितोया त्र्यकी
 दद्यात् ॥ ॐ आमा ज्वात्स्वप्यसरो जगम्या तमे याया दृयिवी
 विररूपे ॥ आमा गन्ताम्पितरा मातरा आमा सोमा अकृत एतेन

गम्यात् ॥ ॐ अयेहामुक गोत्राऽस्मदस्तिपतामही अमुक दा (वा-
यथा योग्या) सवित्री स्वरूपा स्तूप्यता मिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ॥
इतिपितामहौ प्रथमा वज्रलि दद्यात् ॥ अने नैव वाक्येन द्वितीय
त्रितीया, वज्रली दद्यात् ॥ ततः—आमा व्वाजस्यप्सवो जगम्या
देमे द्यावा पृथिवी त्विष्वरूपे ॥ आमागन्ता म्पितरा मातरा चामा
सोमो अमृत त्वेन गम्यात् ॥ ॐ अयेहामुक गोत्राः अस्मत्प्रपि-
तामही अमुकदा (यथा योग्या) सरस्वती स्वरूपा तृप्यतामिदं
तिलोदकं तस्यै स्वधा ॥ इति प्रपिता महौ प्रथमा वज्रलि दद्यात् ॥
अने नैव वाक्येन प्रपितामहौ द्वितीय तृतीयाञ्जली दद्यात् ॥ ॐ
मधु । मधु । मधु । तृप्यध्वम् । तृप्यध्वम् । तृप्यध्वम् ॥ ॐ
नमो व ऽः पितरो रसाय नमोव ऽः पितर ऽः शोषाय नमोव ऽः
ऽः पितरो जीवाय नमोव ऽः पितर ऽः स्वधायै नमोव ऽः पितरो
पोषाय नमो व ऽः पितरो मन्त्र्यवे नमो व ऽः पितर ऽः पितरो
नमो वो गृहाञ्ज ऽः पितरो दत्त सतोव ऽः पितरो देव्यै तद्वत्
पितरो व्वास (आधत्त) ॥ १४ ॥ ॐ अयेहामुक गोत्राः अस्मन्माता
महोऽमुक शर्मणाः (वा) यथायोग्य सपत्नीकः वरुण स्वरूपः
स्तूप्यता मिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ इति माता महाय सपत्नी
काय प्रथमाञ्जलि दद्यात् । एवं एव नमोवः इति मन्त्रेण माता
महाय (यथायोग्य सपत्नीकाय) द्वितीय तृतीयाञ्जली अपि देये ॥
ॐ नमो वः इति मन्त्रं समग्रं पठित्वा ॐ अयेह अमुक गोत्रोऽ-
स्मत्प्रमाता महोऽमुक शर्मा (वा) यथायोग्य सपत्नीकः प्रजापति
स्वरूपः स्तूप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ इति प्रमाता महाय
प्रथमाञ्जलि दद्यात् ॥ एतदेव वाक्य मुचार्य द्वितीय तृतीयाञ्जलि
अपि तस्मै देये ॥ ॐ नमो वः इति मन्त्रं समग्रं पठित्वा ॐ
अयेहामुक गोत्रोऽस्मद् बृद्ध प्रमाता महोऽमुक शर्मा (वा) यथा-
योग्य सपत्नीकः अग्नि स्वरूपः स्तूप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥
इति बृद्ध प्रमाता महाय सपत्नी काय प्रथमाञ्जलि दद्यात्—द्वितीय
तृतीयाञ्जलि अपि एतदेव वाक्य मुचार्य देये ॥ [ततो वक्ष्य माण-
श्लोका ऽनुसारेण तावाम्वा इति जेष्ठ कनिष्ठादोन्सपत्नी कार्श्व
तर्पयेत् ॥ अयेहऽमुक गोत्राः अमद् सपत्न जननी (उपमाता)
अमुकदा वसुरुपा तृप्यता मिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा । इदं तिलो-
दकं तस्यै स्वधा । इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ॥ अयेहामुक गोत्रा
ऽस्मद् पत्नी अमुक दा वसुरुपा तृप्यता मिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ।
इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ॥ इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ॥ अयेहा-

मुक गोत्रेः अस्मत्सुतः अमुक शर्मा (वा) वसुरूप स्तृप्यता मिदं
 तिलो दकं तस्मै स्वधा । इदंति० ॥ अमुक गोत्रा अस्मत्कन्या
 अमुकदा (यथायोग्या) वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥
 ३० । ३० । अमुक गोत्रः अस्मत्पितृभ्यः अमुकशर्मा यथा योग्य
 सपत्नीक (ज्येष्ठ कनिष्ठ) वसु स्वरूप स्तृप्यता मिदं मिदं तिलो
 दकं तस्मै स्वधा नमः ॥ ३० । ३० । अमुक गोत्रः अस्मन्मातुलः अमुक
 शर्मा यथा योग्य सपत्नीक वसुस्वरूप स्तृप्यता मिदं ॥ ३० । ३० ॥
 अमुक गोत्रः अस्मद्भाता अमुक शर्मा (वा) यथायोग्य सपत्नीक
 वसुरूप स्तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥ अमुक गोत्रः अस्मत्सापन्नभाता
 अमुक शर्मा (वा) यथा योग्य सपत्नीक वसुरूप स्तृप्य-
 तामि० । ३० । ३० ॥ अमुक गोत्रा अस्मदात्म भगिनी
 अमुकदा (यथायोग्या वसु रूपा तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥
 अमुक गोत्रा अस्मन्मातु भगिनी अमुकदा (यथायोग्या) वसु रूपा
 तृप्यतामि० । ३० । ३० ॥ अमुक गोत्रा अस्मदात्म भगिनी अमुकदा
 (यथायोग्या) वसु रूपा तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥ अमुक गोत्रा अस्म
 सापन्न भगिनी अमुकदा (सापत्या) वसुरूपा तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥
 अमुक गोत्रः अस्मच्छ्वशुरः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥
 अमुक गोत्राः अस्मद्गुरुः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यतामि० । ३० । ३३ ॥
 अमुक गोत्रः अस्मच्छ्वशुरः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यता मि० । ३३ । ३० ॥
 अमुक गोत्रः अस्मन्मित्रः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यता मि० । ३३ । ३० ॥
 अमुक गोत्रः अस्मदाप्यः । अमुक शर्मा वसु रूपस्तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥
 ततो यदयमाणां आभ्यस्तस्मै पर्यन्त देवर्षि पितृ मानवा दीन तिलो
 दका ऋत्विभि स्वर्पयेत् ॥ यथा—भी आब्रह्मस्तस्मै पर्यन्त देवर्षि पितृ
 मानवाः । तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ माता महादेव, पितृ वंशे मृता वेष
 मातृ वंशे तथै वष । गुरुवशुर वन्धूना ये बान्ये बान्यवा स्मृताः ॥ ते
 तृप्ति मायिता यान्तु ये वास्मत्तोयञ्चरु चिष्टः ॥ ये बान्यथा बान्यथा वा
 ये ऽन्य जन्मनिषान्यथा ॥ ३ ॥ ते सर्वे तृप्ति मायान्तु वरुणे नान्युताऽ
 पिताः ॥ देवागुहाः स्वया वसुता नागा वन्धर्व राक्षसाः ॥ ४ ॥ पिशाचा
 गुहकाः सिद्धा कृष्णावडास्तर यः यगाः । जलेष्वा भूमि चत्वा यादवा
 हाराश्च जन्वकः ॥ ५ ॥ ते तृप्ति मायिता यान्तु वरुणे नान्युताऽपिताः ।
 नरकेषु समस्तेषु यादवा मुषवेस्थिताः तेषामाप्या यनायेतदीयते सजितं
 मया ॥ भनीत कुत्र कोटीनां सप्तर्षीष निवासिनः ॥ ७ ॥ आब्रह्म भुवनो
 न्तोकादिष मन्तु तिलोदकम् ॥ यत्रः स्वपन्न संस्थानां तु तृप्यो
 महात्मानाम् ॥ ८ ॥ ॥ मध्य मेवास्तु मवादत्तं तिलोदकम् ॥ अथपरत्र

विमार्जनम् (शुद्धोदकेन) ओं संस्वर्चसा पयसा सन्तनू भिरगन्महि
मनसा सध्र शिवेन ॥ स्वष्ट्य सुद्वोर्विदधातुरायोनोर्माण्डु तन्नवो यद्वि
लिष्टम् ॥ २४ ॥ विसर्जनम्-ओं देवा गातु विदोगातुर्व्वित्त्वागातुमित ।
मन्तसम्पत्तऽऽमन्देव यज्ञ ॐ स्वाहाज्वातेषा ऽः ॥ २५ ॥ अर्पणम्—अनेन
यथा शक्तिं देव अपि मनुष्य पितृ तर्कशाय्येन कर्मणा भगवान् मम
समस्त पितृस्वरूपे जनार्दन बासु देवः प्रीयतां नमः । ॐ तत्सद्महाप्रेम
मस्तु । श्री गदाधरस्तूष्यतु । ओं विष्णवे नमः इतित्रिः इति तर्पण प्रयोग

श्री चक्र पूजनम् ॥

श्री गणेशाय नमः । अथ देव्यार्चनम्—आचम्य प्राणा नाथस्य
गुशान्ति मवतु ॥ ॥ मङ्गलोच्चारणम् ॐ स्वस्तिनऽऽइन्द्रो वृद्धरश्वाऽः
स्वस्ति नः पूषा निर्वरश्च वेङ्गऽः स्वस्तिनः स्तार्योऽक्षरिष्ठ नेमिऽः स्वस्तिनो
वृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ भद्रद्रक्कणैभिऽऽशृणुयाम देवा भद्रद्रन्पश्ये मा
तृभिर्व्यज्जनाऽऽस्थिरै रङ्गैस्तुष्ट वा ६ सस्तनूभिर्व्यरो महि देव हित
व्यदायु ः ॥ २ ॥ तम्भस्कोभिरनुगच्छेभदेवा ऽः पुत्रै व्र्रातृ भिरत
वा हिरण्यैऽना कङ्क वन्धनाऽः सुकृतस्य लोके तृत्तीये शृष्टेऽअधिरोचने-
विवाऽः ॥ ३ ॥ नमस्काराः । श्रीमन्महा गणाधिपतये नमः । १२ देवता-
भ्यो नमः । कुल देवताभ्यो नमः । ग्राम देवताभ्यो नमः । स्थान देवताभ्यो
नमः । वास्तु देवताभ्यो नमः । वाणी हिरण्य मर्मभ्यां नमः । श्री लक्ष्मी-
नारायण भ्यां नमः । श्री ब्रह्मामहेश्वराभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां
नमः । मातृ पितृ चरण कमलाम्यां नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।
निर्विघ्न मस्तु । सुमुख रचैक दन्तश्च कपिलो गज कर्णकः । लम्बो-
दरश्च विकटो विघ्न नाशो गणाधिपः । धूम्रकेतुर्गणायज्ञोभाल चन्द्रो
गजाननः । द्वादशी तानि नामानियः पठेच्छृणुयादपि ॥ विद्यारम्भे
विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न
जायते ॥ शुक्लां न्वर धरं देवं शशि वेणुं चतुर्भुजम् प्रशन्नः वदन
ध्यायेत् सर्व विघ्नो पशान्तये ॥ अभित्सितार्थं सिद्धयर्थं पूजितोयः सुरा-
सुरैः सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः । सर्वमङ्गल माङ्गल्यै शिवै
सर्वार्थ साधिके शारण्यै त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते । सर्वदा
सर्व कार्येषु नास्तिस्तेषां ममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलाय
तनम् हरिः तदैव लग्न सुदिनं तदैव तारावर्तं चन्द्र वर्तं तदैव ॥ विद्या
वर्तं दैव वर्तं तदैव लक्ष्मी पते तेऽङ्घ्रि युगं स्मरामिः ॥ लाभस्तेषां
जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषां मिन्दी वर स्यामो हृदय स्थो जना-
ईनः ॥ यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः तत्र भीर्बिजयो भूक्ति
ध्रुवा नीति प्रतिर्मम ॥ सर्वेष्वारब्ध कार्येषु त्रयस्रो भुवनेश्वराः । देवादि
सन्तुनः शिद्धि व्रद्धेशान् जनार्दना ॥ विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म विष्णु-
मङ्गेश्वरान् । मरम्बतीं प्रणम्यामौ सर्वकार्यार्थं सिद्धये ॥ सङ्ग्रहः ॥—

श्रीं विष्णु २ः श्री मद्भगवतो महा पुरुषस्य विष्णुराज्ञाया प्रवर्तमानस्य
 अथ ब्रह्मणे द्वितीये परार्द्धे श्रीरथेव वराहकल्पे वैवस्वत् मन्वन्तरेऽष्टा-
 विंशति तमे युगे कलि प्रथम चरणे भारतखण्डे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे आर्या
 वर्तमानगन् दिग्वत् प्रवर्तक देशे केदार खण्डे वाटिका धर्मे शुभे
 दक्षिण पार्श्वे सरस्वती मन्दा किन्यामध्ये श्री शालिवाहन शास्त्रे
 गौड्या वतारे अस्मिन्वर्त माने पट्टी सम्बत्सराणां मध्ये अमुक नाम
 मन्वरसरे अमुकाऽयने अमुकर्तु अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक
 रात्रौ अमुक तिथौ अमुक मन्त्रे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक
 राशि स्थिते श्री सूर्ये अमुक राशि स्थिते देव गुरौ शेषेषु ग्रहेषु
 यथा ययं राशि स्थान स्थितेषु सप्तसु एवं गुणा विशेषण विशि-
 ष्टायां शुभ पुण्य तिथौ ममात्मन भुति स्मृति पुराणोक्त
 कृत प्राप्स्यथ मम ऐश्वर्याभिः वृष्यथ अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्स्य
 प्राप्स्य लक्ष्म्यारिचर काल संरक्षणार्थम् एकल मन इक्षित कामना
 मं सिद्धयर्थम् लोके वा सभायां राज द्वारे वा वा सरत्र यशो
 विजय लामादि प्राप्स्यथ इह जन्मनि जन्मान्तरे बाल्य यौवन
 वार्धक्या वस्थासु वाक्पाणि पाद पायू पथ्य ग्राह्या रसना वक्ष
 भोज हरान मनोभिः स्वरित ज्ञाता ज्ञात कामा काम महापातकौ
 पापादिकादि सञ्चिन्तानां पापा नां अन्वतत् सं सगं रूप महापात
 का नां दृष्टा दृष्ट सक्तौ करण अपात्रो करण जाति भरा
 करण रस रिक्त्य ना विक्त्य खरोष्ट्र विक्रय सहिषि विक्रय
 अन्नादि पशु विक्रय प्राप्नोत दुर्भाषणे निर्वर्क दुःख प्लेदन इमानया
 कृत्यं प्रदत्त इत्येव जाति भ्रंश करण रवि देवराज स्वाप इत्येव
 प्राप्नोत निन्दा वेद निन्दा देव निन्दा शिवनिन्दा
 अमन्य भक्षण अभोध्य भोज्य अपोष्याऽऽपोषणम् अपेया पानम्
 अराशय स्पर्शनम् अप्राज्यम् अक्षय अप्रेया प्राणं महित्याऽहि-
 मनम् अवन्म्याऽऽवन्मनम् अचिन्त्या चिन्तनम् अयाच्याऽऽयाप-
 नम् अपुत्र्यो पुत्र नम इवत्तिक मातृ पितृ तिरस्कारम् स्त्री पुरुष
 भक्ति भेदनम् मित्र्या वशाद् पर द्रोह पर हानि चौर्यकरणमतेषाम
 संघातण श्लेच्छ संघा सनम् प्रदग्नेयणम् स्वामि भेदनम् मित्र
 वचन भाषां निन्दनम् पराप्र भोजनम् ॥ गणिकान्न भोजनम् वन
 पात्रपात्र भोजनम् वृष्टान्न भोजनम् पक्षि भेदादि करण तथा
 च परि रोषादि भोजनम् अन्याभ्योपि शोषान सकम् पुरितो पराम
 नार्थे तथा च गोशो वारणस्य पितृ पितामह प्रभिता महानो
 अमुका मुका मुक रागाद्या यमायोग्य (मासस्य मरुत) मप्यो

बोध्यु कुरा ॥ समानऽप्रायुऽप्रमोषोऽः । आस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं स
परिवारं सायुधं सशक्तिमा वा हयामि ततः-कलशं प्रार्थनादेव वानव
सम्वादे मध्यमाने महीदधौ । उत्पन्नोऽसि सदा कुम्भं विधृतो विष्णुना
स्वयम् त्वत्तोये सर्वं तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति
भूतानि त्वयि प्राणं प्रतिष्ठिताः । शिव स्वयं त्वये वाऽपि विष्णुस्त्व च
प्रजापतिः आदित्या वसवोरुद्रा विश्वे देवाः स पैत्रिकाः त्वयि तिष्ठन्ति
सर्वेऽपि यतः कामः फलं प्रदाः । त्वत्प्रसादा दिमां पूजां, कर्तुं मीहे
जलो द्रवः सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा । प्रमन्नो
भव ॥ वरदो भव ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कलशस्थ वरुणाय नमः ।
आवा हयामि यथा मिलितो पचरार्यं गन्धं क्षत पुष्पाणि
समर्पयामि । नमस्करोमि । अनन्तरम् । कलशोदकेन पूजां द्रव्या
णि तथा ऽऽत्मानं च अपवित्रं पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः
यः स्मरेत्पुण्डरीं काक्षं सवाद्याम्यन्तरः शुचिः ॥ ॐ आपोहिष्ठा
मयो भुवः स्थानं ऽ उर्जे दधातु । महे रणाय चक्षुसे ॥ यो वनं शिव
तमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशतीरि व मातरं तस्मात्तद्गं मा
मवो यस्य क्षयाय जिन्तथ । आपो जन यथा चन ऽः ॥ इति
सम्प्रोक्त्य ॥ पश्चात् कलशं मुद्रां प्रदर्श्य ॥ शङ्खं पूजनम्-शङ्खद्वौ
पन्द्र देवस्यं कुक्षौ वरुणं देवतां पृष्ठे प्रजापतिं शैव आमे गङ्गा
मरुत्पती । त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाङ्गया । शङ्खे
तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छङ्खः प्रचोदयात् । ॐ अग्निर्हृदि ऽः
पव मान ऽः पाळव जन्म ऽः पुगे हितः तमी महे महा गयम
ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खस्थ देवतायै नमः आवा हयामि सर्वोप-
चारार्थं गन्धं पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि । शङ्खं मुद्रां प्र- ।
घण्टा पूजनम्-आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् । घण्टा
नादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टा प्रपूजयेत् । ॐ सुपर्णोसि गरुत्स्व भोस्त्रि
वृत्ते शिरो गायत्रं ऋचं जुष्टं हृदयन्तरे पक्षी । स्वीम ऽऽत्मा तं तां जन्दा-
॥ स्यद्गानि यजु ॥ पि नाम ॥ सामते तनू वामदेव्यं व्येज्ञा य-
क्षियं म्युक्षन्धिष्यया ऽः शफा ऽः सुपर्णोसि गरुत्स्वमान्दिवद्गच्छ स्व-
पत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्वाय गरुडाय नमः आवा हयामि ।
सर्वोपचारार्थं गन्धं पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि । घण्टा मुद्रां

घण्टास्य गरुड मुद्रा-उत्पन्नोऽसि करो कृत्वा ग्रंथं विंशति कनिष्ठ के पुनश्चा-
धो मजो कृत्वा तर्जनी योऽप्येषयोः । मध्यमा नामिके द्वे पञ्चाविंशतिना-
लये ॥ मध्ये पञ्चरात्रस्य सर्वावेभ्यनिगदिष्यी ॥

प्रदर्श्य ॥ दीप पूजनम्—त्रिनेत्रमा रक्त तनुः, सु शुक्लः वस्त्रं
सुवर्णं खज माले मीढे ॥ वरामय स्वक्ति क शक्ति हस्तं पद्म
स्थ मा कल्प समूह युक्तम् ॥ ॐ आग्नि ज्योति ज्योति ज्योति
रग्नि ऽः स्वाहा सूर्यो ज्योति ज्योति ऽः सूर्य ऽः स्वाहा ।
अग्निर्व्यर्चो ज्योति व्यर्च ऽः स्वाहा, सूर्यो व्यर्चो ज्योति व्यर्च ऽः
स्वाहा । ज्योति ऽः सूर्य ऽः सूर्यो ज्योति ऽः स्वाहा ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः दीप स्थ देवतायै नमः आवाहयामि सर्वो पचारार्थे
गन्धा क्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥

गुं गुरुभ्यो नमः ॥ अथान्यक ध्यानम्—हस्ताभ्योऽङ्गुलीभ्यो युगल-
द्वन्द्वतयोः शिरः सिन्धुस्थं करयोऽङ्गुलीभ्यो हृदयं स्वांशे कुम्भौ करो ॥
अक्षरं मृगहस्त मन्त्रज गतं मूर्धस्थं चन्द्र स्रवं पीयूषो नत्तनुभजे सगि-
रिजं मृत्युञ्जयं अम्बकम् ॥ इति अम्बकं नत्वा ॥ तारादि नमोन्तं मूल
मन्त्रम्—माला मन्त्रम्—ह्रीं क्लीं ऐं सौः श्रीं ह्रीं श्रीं क ए इ ला ह्रीं
ह स कहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं स्वाहा ॥ जपित्वा वा
स्व १ माला मन्त्रम् जपेत् ॥ अस्य श्रीत्रिपुर मुन्दरी मन्त्रस्य दक्षिणा मूर्ति
ऋषिः पंक्तिः छन्दः श्री मन्त्रिपुर मुन्दरी देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं
कोलकं ममाभिष्टसिद्धयर्थे जपे विनिर्गोः ॥ आन्यान्त्यान्यासानाह—दक्षिणा
मूर्तये नमो मूर्ध्नि । पक्तये नमो मुखे । त्रिपुरं मुन्दर्यै नमो हृदि । ऐं बीजाय
नमो गुह्ये सौः शक्तये नमः पादयोः । क्लीं कीलकाय नमो नाभौः । इति
मुन्यादि न्यासः ॥ कर शुद्धि न्यास माह—ह्रीं श्रीं अं मध्यमाभ्यां नमः ।
ह्रीं श्रीं आं अनामिकाभ्यां नमः । ह्रीं श्रीं सौः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ह्रीं
श्रीं अं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं श्रीं आं तर्जनीभ्यां नमः । ह्रीं श्रीं सौः
करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः अयं कर शुद्धि न्यासः ॥ आसन न्यासः ॥
आसन न्यासमाह देवीति—ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः देव्यासनाय नमः पादयोः
ह्रीं श्रीं ह्रीं- ह स क्लीं ह सौः चक्रासनाय नमः जंघयोः । ह्रीं श्रीं ह सै ह स क्लीं
ह सौः सर्व मन्त्रासनाय नमः जानुनोः । ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं साध्य सिद्धा
सनाय नमोऽङ्गुलीभ्योः इत्यसन न्यासः । स तारादि नमोन्तं मूलम् (माला

पङ्कग—हृदय गुलिभ्यं न्यस्ये तर्जनीयादि द्वयंतुके । शिखापदे रो पाङ्कग
दशाङ्ग ल्पस्तु त्रयाणि ॥ हृदय नेत्रं पूर्वं मध्यं सक्ति रङ्गस्य मुद्रिका ॥ प्रता-
रिताभ्यां हस्ताभ्यां कुन्वा ताल त्रयं मुखा ॥ तर्जनीय गुष्ठयो रग्रे स्फालयं च घया
दशः ॥ पर लोभाय दण्डनी मुद्रा लक्ष्मम्—नाभे मुद्रिं हृदं घ्या तर्जनी
प्रविष्टारयेत् । भ्रामये द्वाभ कर्णान्ति मुद्रा लोभाय दण्डनीति । इयं द्वयोर्मणि
मुद्रामिति ॥

मन्त्रम्) मध्यमा नामिकाभ्या शिरसि न्यसेत् ॥ पद्म माह—श्रीं ह्रीं क्लीं
 ऐं सो ह्रये । ओं ह्रीं श्रीं शिर-आद्य कूटेन शिखा । मध्य कूटेन कञ्च ।
 त्रितिय कूटेन नेत्रम् । सौ ऐं श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्रम् ॥ इति पद्मम् ॥ पुन
 सगरादि नमोन्त मूल मध्याग नामिकाभ्या (सुधास्रवन्ती दीपाङ्गा
 वृद्धा रुद्राद्या सौभाग्य दा देवीमाध्याग) शिरसिन्यसेत् ॥ पुनर्वाम कर्णे
 पर शौभाग्य दण्डनी मुद्रा कृत्वा राम पार्श्वे मूर्धादिपादान्तम् तारादि
 नमोन्त मूल न्यसेत् ॥ पर रौभाग्य दण्डनी मुद्रा एवं क्षोभणी मुद्रा ॥
 स तारादि नमोन्त मूल न्यसेत् ॥ दर्शयेत् ॥ रिपु जिह्वा मुद्रा एवं
 द्वाविणि मु० (तारादि नमोन्त मूल सहित न्यसेत्) दर्शयेत् । त्रिजगदा
 मुद्रा एवं कर्णिकी मुद्रा प्रत्येक तारादि नमोन्त मूल न्यसेत् ॥ मुखे ॥
 वेष्टय स्तारादि नमोन्त मूल दक्ष कर्णो तो वामान्त कण्ठा-मुखे तमन
 मेव न्यसेत् ॥ पुन प्रणव पुटा विद्या सर्वाङ्गे न्यसेत् ॥ (विद्या अ
 आ० इत्यादि) मुखे योनि मुद्रा बन्धा तथैव देवीन्यसेत् ॥ अयं जग-
 द्दशीकरणान्यास ॥ देवी कात्या विश्व रक्त ध्यायन अगुष्टा नामिका भ्या
 प्रद्वार-ध्रे मणि बन्धे ललाटे विद्या न्यसे दितिसमोद्हनो न्यास ॥
 अ नम पादयो । आ नम जययो । इ नम जानुनो । ई नम कटि
 भागयो । उ नम लिंगे । ओं नम पृष्ठे । कु नम नाभिदेशे । ऋ नम
 पार्श्वयो । लृ नम स्तनयो । लृ नम अंशयो ए नम कर्णयो । ऐ नम
 प्रद्वार-ध्रे । ओं नम वन्के ओं कर्णपेष्ठेमि अ नम नेत्रयो । अ नम
 कर्णशृङ्गुली ॥ अथ सहार न्यास ॥ वाग्देवता न्यास माहपोढरा
 स्वर पूर्व कतद्वीज पूर्वा वशिनी शिरसि न्यसेत्—यथा अ आ इ ई उ
 ऊ ऋ ॠ लृ ए ऐ ओं ओं अ अ ऋ वशिनी वाग्दे वतायै
 नम शिरसि ॥ कवर्गस्य कामेश्वरी बीजाद्य भाले न्यसेत्—कं खं गं घं ङ
 चो ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवतायै नमो ललाटे ॥ चवर्गेण मोहनीं बीजन
 ध्रु मध्ये न्यसेत् ॥—यथा—च छ ज झ ञ न्वलीं मोहनी वाग्देवतायै
 नमो ध्रु मध्य ॥ टवर्गेण स्तद्वीजस्य विमलां कटेन्यसेत् ॥ ट ठ ड ढ या
 दल् विमला वाग्देवतायै नम कटे ॥ तवर्गे बीजाभ्या अरुणा हृदि

रिपु जिह्वा मुद्रा—यथा—अ गुह्य गर्भित मुष्टि ब चीरया दक्षपाणिना ।
 रिपु जिह्वा महा कथय मुद्रोक्ता शत्रु नशि नीति मुद्रा वाम पाद वेग इत्येति
 इय द्वाविषी मुद्रा ॥ त्रिजगदा (अमे)

त्रिजगदा मुद्रा लक्षणम्—परिवारं करो सध्या वगुष्टी कारयेत्तमो ॥
 अनामान्यगते इत्या तत्रैवो दृढिता हृदी । कनिष्ठके त्रिपु जीत
 निरापाने यक्षशरी ॥ दितयदेय यमाह्वाता त्रिपुरा हान कर्माणिः

न्यसेत् ॥ यथा—तं धं दं धं नंज्ज्रीं अरुणा वाग्देवतायै नमो हृदि ॥
 पवर्गं बीजाभ्यां जयितीं नाभौ न्यसेत् ॥ यथा—पं पं वं भं मं हसल्लयू
 जयन्ती वाग्देवतायै न्यसेत् ॥ पवर्गो बीजाद्य सर्वेश्वरीं मूलाधारे न्य
 सेत् ॥—यथा—यं रं लं वं इत्थं स रौश्वरीवाग्देवतायै नमो मूलाधारे ॥
 शादयो बीजाभ्यां कौलिनी उवादि पादान्तं न्यसेत्—स च यथा—पां पं सं हं
 लं चन्द्रां कौलिनी वाग्देवतायै नमः ऊवादि पादान्तम् ॥ वाग्देवतायै नमः
 इति पदम् ॥ सृष्टि न्यास माह—ब्रह्म रन्ध्र इति अं ब्रह्म रन्ध्र इति ॥ आं ल
 लाटे । इं नेत्रयो । इं कर्णयो । उं नासौ । ऊं गंडयो । ऋं हन्तेषु ।
 ऋं ओष्ठयो । लृं जिह्वायां । लृं मुख मध्ये । एं षष्ठ्ये । ऐं सर्वांगे ओ
 इति । औं स्तनयो । अं कुक्षौ । अः लिंगे ॥ स्थिति न्यास माह—करि-अं
 अगुष्टाम्यां नमः । आं तज्जिनीभ्यां नमः । इं मध्यमाभ्यां नमः । इं
 अनामिकाभ्यां नमः । उं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ऊं ब्रह्मरन्ध्रे । ऋं मुखे ।
 ऋं हृदि । लृं नाभ्यादि पादान्तम् । लृं कंठादिनाभ्यन्तम् । एं ब्रह्म
 रन्ध्रात्कंठात् । ऐं पंच पादां गुलिषु ॥ (ऐं-ओं-औं-अं-अः) परवायुनि-
 न्यासमाह—अं आं मूर्ध्नि वक्त्रं । इं नेत्रयोर्द्वे । उं ऊं श्रुत्योर्द्वे,
 ऋं ऋंसोर्द्वे, लृं लृं गंडयोर्द्वे । एं ऐं ओष्ठयोर्द्वे । औं औं मुखमध्ये ।
 अं हन्त पंक्ते । अः वदने विन्यसेत् ॥ द्वितीय माह—अं शिखा । आं
 शिरः । इं भाले । इं भ्रूः । उं नासाः । ऊं मुखे । ऋं ऋं-लृं लृं एं ऐं
 ओं औं अं अः दक्षकर सन्ध्यमेषु पंच पत्रं वामे पंच ॥ तृतीय माह—
 अं शिरः । आं ललाटे । इं इं नेत्रयो उं मुखे । ऊं जिह्वायां । ऋं ऋं
 लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः दक्षपाद अंगुलिषु संध्यमे पंच पत्रं वाम-
 पादे पंच ॥ चतुर्थ माह—अं ललाटे । आंगले । इं हृदि । इं नाभौ । उं
 मूलाधारे । ऊं ब्रह्मरन्ध्रे । ऋं मुखे । ऋं गुदे । लृं आधारे । लृं हृदये ।
 एं ब्रह्मरन्ध्रे । ऐं ओं करयो । ओं-अं पादयो । अः हृदि ॥ पंचम
 माह—प्रणव पुटितां विद्यां सर्वांगे न्यसेत् नमोतां हृदि च—श्री अं
 ललाटे । ह्रीं आंगले । क्लीं-इं हृदि । ऐं-इं नाभौ । सौ वं मूला-
 धारे । ओं ऊं ब्रह्मरन्ध्रे । ह्रीं ऋं मुखे । श्रीं ऋं गुदे । आद्यकूटेन लृं
 आधारे । मध्यकूटेन लृं हृदि । तृतीय कूटेन एं ब्रह्म रन्ध्रे । सौः एं ऐं

इति कर्पणीति त्रिलयदया मुद्रया तु भाले मूलं न्यसेत् ॥ त्रैलोक्यस्या
 खिलं स्यादं कर्तेति स्वं विचित्र येत् ॥ योनि मुद्रा अग्रे द्रष्टव्य-
 मुखे योनि मु०—मियः कनिष्ठि के बध्वा तज्जिनीभ्यां अनामिको अनामि
 कोर्ध्वं सरिलष्ट दोषं मध्य मयोरधः अङ्गुष्ठान् दयं न्यस्ये योनि मुद्रे यमीरि
 तेति ॥ अयं जगद्गणैः करण न्यासः ॥

ओं करयो । क्लीं ह्रीं-ओं अं पादयो । श्रीं अ हृदि ॥ पोढान्यासादयो
 निस्तरभया-नोक्तास्ते उच्यन्ते ॥ यथा—गणेशप्रह नक्षत्र योगिनी राशि
 पीठ लक्षण पोढा न्यासा ॥—गणेश मातृ का मंत्र स्य दक्षिणा मूर्ति
 ऋषि गायत्री छन्द श्री मातृ का सुन्दरी देवता ममो पास्य श्री विद्या
 गत्नेन पोढा न्यासे विनियोग ॥ अरु ख ग घ ङं आ ऐं इत् । इ च० ५
 क्लीं शिर । उ ट० ५ ऊ सी शिरा । ए त० ५ ऐं सो कवचम् ॥
 ॐ प० ५ ओं क्लीं नेत्रम् ॥ अं यं १० अ ऐं अक्ष ॥ ध्यानम्—
 उदास्तूर्य सहस्रांश पीनोन्नत पयोधरा ॥ रक्त माळा वरा लेप रक्त
 भूषण भूषिता ॥ पारा कुरा धनुर्बाण मास्थत्पाणि चतुष्टया
 रक्त नेत्र त्रया स्वर्ण मुहुटोद्भासि चन्द्रिका ॥ एव ध्यात्वान्यसेद्वीज
 पूर्वं ग अ त्रिनेश ह्रींभ्या नम । ग आ विघ्न राज श्रीभ्या नम ।
 इत्यादि मातृ का स्थले न्यसेत् । अथग्रह मातृ का मंत्रस्य दक्षिणा
 मूर्ति ऋषि गायत्री छन्द श्री मातृ का सुन्दरी देवता ममो पास्य
 श्री विद्या गत्नेन पोढान्यासे विनियोग । ध्यानम्—रक्त स्तेत
 तथा रक्त स्वाम पीत वपादुरम् धूम्र कृष्णं च धूम्र च
 रूम धूम्र विचिन्तयेत् ॥ रवि मुख्यान्काम रूपान्सर्वा भरण भूषि
 तान् ॥ वामो रुन्यस्त हस्ताश्च दक्षिणे नर प्रदान् ॥ अ १६
 न्याय रेणुका वायै नम हृदि ॥ य ४ चन्द्राया मृता वायै नम
 धूम्रये । ऋ ५ मंगलाय धामा वायै नमो नेत्रयो ॥ च ८ बुधाय
 ज्ञान रूपा वायै नमो हृदि ॥ व ५ वृद्धस्तये यशस्विन्य वायै नमो
 हृदयोपरिभागे । त ५ शुक्राय शक्र्य वायै नम कटे ॥ प ४
 शनैश्चराय शक्र्य वायै नमो नाभौ । शं प स ह राक्षे वृष्णा
 वायै नमो मुखे । लं च केतवेधूम्रा वायै नमो गुदे ॥ अथ
 नक्षत्र मातृ का मंत्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषि गायत्री छन्दो नक्षत्र
 रूपिणी सुन्दरी देवता विद्या गत्नेन न्यासे विनियोग ध्यानम्—उत्त
 र्धातामि सकाशा ममो भरण भूषिता । नवि पापयोऽस्मिनी
 मुख्या मरदा भय पाणय ॥ अ आ आश्विन्येनमो ललाट । इ

१ तस्यां गणेश आनाक्षपूरये दासना दिभि । अन्वचर्य पुनुरेताय कुर्या
 दा वरणाचनम् ॥ आग्नेया दिपु कोषेषु हृदय च शिर हिरा । वमाम्बुचाय
 नेशादिदप स्थापूत्रये-मुचो ॥ द्वितीयावरणे पूजा प्रागाद्यष्टे व रतप ।
 शिवादिमा विपात्री च मोगदा विघ्न वाहिनी ॥ निवि प्रदीप पावाघ्नी
 पुण्या पा म-वृष्टिमा । दक्षामेषु वक्र तु ड एक दंष्ट्रो महादर ॥ गनास्य
 सम्पादकी विष्टा विघ्न वा । भूषाणंस्त दक्षेपु रक्षायाप्राप्तयेयुंदा ।

भरार्यैनमोदक्षनेत्रे उइं ऊंकृत्तिकायैनमो वामनेत्रे । ऋं ऋं लूं लूं रोहिरायै
नमोदक्षनेत्रे । एंमृगशिरसेनमो वामकर्णे । ऐंआद्रायैनमोदक्ष नसि । ॐ औं
पुनर्वसवेनमो वामनासि ॥ कं पुष्पाय नमः कंठे । खं गं आश्लेषायै नमो दक्ष
स्कन्धे । घं डमघायैनमो वामस्कन्धे । चंपूर्वा फाल्गुन्यैनमो दक्ष कूर्परे ।
छं जं उत्तरा फाल्गुन्यै नमो वाम कूर्परे । मं भं हस्ताय नमो
दक्षिण मणि वन्धे । टं ठं चित्रायै नमो वाम मणि वन्धे । डं
स्वात्यै नमो दक्ष हस्ते । ढं णं विशाखायै नमो वाम हस्ते । त
थं दं अनुराधायै नमो नाभौ । धं ज्येष्ठायै नमो दक्ष कटौ ।
नं पं फं मूलाय नमो वाम कटौ । बं पूर्वाषाढायै नमो दक्षौरी
। भं उत्तराषाढायै नमो वामौरी । मं श्रवणाय नमो दक्ष ।
जानुनि । यं रंधनिष्ठाय नमो वाम जानुनि । लं शतभिषायै
नमो दक्ष जंघायाम् । वं शं पूर्वाभाद्रपदायै नमो वाम जंघायाम् ।
पं सं हं उत्तरा भाद्रपदायै नमो दक्ष पादे । हं झं झः
रेवत्यै नमो वाम पादे । इति नक्षत्रमातृकाः सर्वेषु न्यासे
ष्वाद्यौ माया श्री बीजे योज्ये ॥ न्यासा न्सर्वा न्मकूवीत्
माया श्री बीज पूर्व कानित्युक्त स्वात् ॥ योगिनी न्यास माह—
योगिनी न्यासस्य मुनि छन्दसी पूर्वोक्ते । योगिनी रूपा सुन्दरी देवता
श्री विद्यां गत्वेन न्यासे विनियोगः । ध्यानम्—सिता सिता हृषा वभ्रू
चित्रा पीतारव चितयेत् ॥ चतुर्भुजाः समैर्बक्त्रैः सर्वाभरण भूषिताः
एवं ध्यात्वान्यसेत् ॥ ह्रीं श्रीं डां डीं डंमल वर यूं पूं डाकिन्यै नमः । अं
१६ मम त्वचं रक्ष २ त्वगात्मने नमः कंठ देशे विशुद्धौ ॥ १ ॥ ह्रीं श्रीं
रां रां रं मल वर यूं पूं राकिन्यै नमः । कं १२ मम रक्तं रक्ष २
अस्तुगात्मने नमः द्व्यनाथा हस्ते ॥ २ ॥ लीं लीं लं मलवर यूं पूं लाकि-
न्यै नमः । कं १० मम मांसं रक्ष २ मांसत्मने नमः नाभौ मणिपुरे ॥ ३ ॥
कां कीं कं मल वर यूं पूं काकिन्यै नमः । वं ६ मम मेदो रक्ष २ मेद
आत्मने नमः लिङ्ग मूले स्वाधिष्ठाने ॥ ४ ॥ शां शीं शं मल वर यूं पूं
शाकिन्यै नमः वं ४ ममास्थि रक्ष २ अस्थ्यात्मने नमः गुदे मूलाधारे
॥ ५ ॥ हां हीं हं मलवर यूं पूं हाकिन्यै नमः हं हं मम मज्जां रक्ष २
मज्जात्मने नमो भ्रूमध्ये आह्ला चक्रे ॥ ६ ॥ यां यो यं मल वर यूं पूं
याकिन्यै नमः ॥ अं मम शुक्रं रक्ष २ शुक्रात्मने नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥ २ ॥
इति योगिनी मातृकाः ॥ राशि मातृका न्यास माह—राशि मातृका
मन्त्रस्य मुनि छन्दसी पूर्वोक्ते । राशि रूपा सुन्दरी देवता श्री विद्यां
गत्वेन न्यासे विनियोगः ॥ ध्यानं—रक्त रवेत हरि इर्ण मांडु चित्रासिता-
न्मरेत् ॥ पिरांग पिंगली वज्र कर्बुरा शितधूम्रवान् ॥ एवं ध्यात्वान्यसेत् ।

अं अं इं इं मेपाय नमः दक्ष पाद गुल्फे ॥ १ ॥ उं ऊं ऋं वृपाय नमः
दक्ष जातुनि ॥ २ ॥ अं लं लृं मिथुनाय नमः दक्ष वृषणे ॥ ३ ॥ एं
ऐं कर्कोय नमः दक्ष कुक्षौ । औं औं सिंहाय नमः दक्ष स्कन्धे । अं अः
शं ष सं हं कन्याये नमः दक्ष शिरो भागे ॥ कं खं गं घं ङं तुलायै
नमो । वाम शिरो भागे ॥ चं छं जं झं ञं धृषिकाय नमः वामस्कन्धे ।
टं ठं डं ढं णं धन्विने नमः वामकुक्षौ । तं थं दं धं नं मकराय नमः
वाम वृषणे । पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः वाम जातुनि । यं रं लं वं
वं मीनाय नमो वाम गुल्फे । इति राशि मातृकाः ॥ पीठ मातृकाः ॥
माह—पीठ मातृका मन्त्रस्य मुनि छन्दो गानि श्री मातृका पीठ रुपिणी
सुन्दरी देवता श्री विद्यां गत्वेन न्यासे विनियोगः ॥

ध्यानं—सिता सिता रुपा रयामा हरिस्पीतान्धनुक्रमात् । पुनरेतत्क्रमा
देवी पंचाशत् स्थान शंचये ॥—ह्रीं श्रीं अं कामरूप पीठाय नमः ॥ १ ॥
ह्रीं श्रीं आं वाराणसी पी० ॥ २ ॥ ह्रीं श्रीं इं नेपालपी० ॥ ३ ॥ ह्रीं श्रीं
ईं पीठ वर्धनपी० ॥ ४ ॥ ह्रीं श्रीं उं कारमीर पी० ॥ ५ ॥ ह्रीं श्रीं ऊं
कान्य कुब्ज पी० ॥ ६ ॥ ह्रीं श्रीं ऋं पूर्णागिरी पी० ॥ ७ ॥ ह्रीं श्रीं ॠं
अवुं दाचल पी० ॥ ८ ॥ ह्रीं श्रीं लृं आंघ्रात केरवर पी० ॥ ९ ॥ ह्रीं श्रीं
लृं एकान्न पी० ॥ १० ॥ ह्रीं श्रीं एं तिस्रोत पी० । ह्रीं श्रीं ऐं काम कोठ-
पी० ॥ १२ ॥ ह्रीं श्रीं ओं कैलाश पी० । ह्रीं श्रीं औं भृगु पी० ॥ १४ ॥
ह्रीं श्रीं अं केदार पीठा० ॥ १५ ॥ ह्रीं श्रीं अः चंद्रपुर पी० ॥ १६ ॥ ह्रीं
श्रीं कं भी पी० ॥ १७ ॥ ह्रीं श्रीं खं ओं हारपी० ॥ १८ ॥ ह्रीं श्रीं गं जाल-
धर पी० ॥ १९ ॥ ह्रीं श्रीं घं मालव पी० । ह्रीं श्रीं ङं कुलान्तपी०
ह्रीं श्रीं चं देवी कोट्टक पी० ॥ २२ ॥ ह्रीं श्रीं छं गोफर्णा पी० ॥ २३ ॥
ह्रीं श्रीं जं माहोत्तरपी० ॥ २४ ॥ ह्रीं श्रीं झं अट्टहास पी० । ह्रीं श्रीं
ञं विरज पी० ॥ २५ ॥ ह्रीं श्रीं टं राजगृह पी० ॥ २६ ॥ ह्रीं श्रीं ठं महापथ
पी० ॥ २७ ॥ ह्रीं श्रीं डं कोसलगिरि पी० ॥ २८ ॥ ह्रीं श्रीं ढं पलापुर
पी० ॥ २९ ॥ ह्रीं श्रीं णं कालेरवर पी० ॥ ३० ॥ ह्रीं श्रीं तं जयंती
पी० ॥ ३१ ॥ ह्रीं श्रीं थं उज्जयिनी पी० ॥ ३२ ॥ ह्रीं श्रीं दं चरित्र
पी० ॥ ३३ ॥ ह्रीं श्रीं धं चौरि का पी० ॥ ३४ ॥ ह्रीं श्रीं नं हस्तिनापुर पी०

प्रायः संयमः ॥ पूर्वं बत्-हृद्यत्रुल्लिखं चन्वस्ये त्यादि ॥ मुद्राः वतस्य
मुच्यते—वर्य-उन्माद-महाकुल-महायोगि ॥ वर्य-पुटाकागे करो कृत्वा
उन्मादं संकुशाद्वती ॥ परिकुल्य क्रमेणैव मध्यमे तदधो गतो क्रमेण रेति ते देव
इतिहा नामिका दंयः ॥ संयोगं निविद्धाः सर्वा ग्रंथुष्टा यमदेवतः मुदेरं वरमे
रानी सर्वं वर्य कपी मरेति ॥ मुद्रा (ग्रमे)

॥ ३६ ॥ ह्रीं श्रीं वं सदीश पी० ॥ ३७ ॥ ह्रीं श्रीं क प्रयाग पी० ॥ ३८ ॥
 ह्रीं श्रीं वं पष्ठीश पी० ॥ ३९ ॥ ह्रीं श्रीं मं मायापुर पी० ॥ ४० ॥ ह्रीं
 श्रीं मं मलय पी० ॥ ४१ ॥ ह्रीं श्रीं वं श्री-सैल पी० ॥ ४२ ॥ ह्रीं श्रीं रं
 मेरु पी० ॥ ४३ ॥ ह्रीं श्रीं लं गिरि पी० ॥ ह्रीं श्रीं वं माहेन्द्र पी० ॥ ४४ ॥
 ह्रीं श्रीं रं वामन पी० ॥ ४५ ॥ ह्रीं श्रीं वं हिरण्यपुर पी० ॥ ४६ ॥
 ह्रीं श्रीं सं महा लक्ष्मी पी० ॥ ४७ ॥ ह्रीं श्रीं हं उड-
 याण पी० ॥ ४८ ॥ ह्रीं श्रीं लं छाया पी० ॥ ४९ ॥ ह्रीं श्रीं हं
 छत्रपुर पीठाय नमः ॥ ५० ॥ इति पीठ मातृकाः आदि शब्दात्काम
 मातृकादयो ज्ञेयाः ॥ (अमे स्पष्टा) एवं न्यासान् कृत्वासुद्राः प्रदर्शः ।
 पठवम् ॥ ध्यानमाह—बालर्कायुत तेजसां त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासनीं
 नाना लंकृति राजमान वपुषं बालोद्भवाद् गेखाम् । हस्तैरिष्टु धनुःसृष्टिं
 शमशरं पाशं मुद्रा विभ्रती भी चकस्थित सुन्दरी त्रिजगताभाभार
 भूतस्मरेत् ॥

प्रात्रस्थापन माह—

ॐ वज्रोद् के हुं फडितिजल ग्रहणम् ॥ ॐ ह्रीं स्वाहेति पाद प्रक्षाल-
 नम् । ॐ ह्रीं सु विशुद्ध धर्म सर्व पाप निशान्त्या शेष विकल्पान्त्य
 नय स्वाहेत्या च मनम् श्रीं मणि धरि वज्रिणि शिरारिणि सर्व वरां करिणि
 हुं फट् स्वाहेति शिखावन्धनम् । श्रीं रत्न २ हुं फट् स्वाहेति विज्ज
 वारणम् ॥ श्रीं पवित्र वज्र भूमे हुं स्वाहेति भूमि निमग्नम् ॥ श्रीं आसु
 रेखे वज्र रेखे हुं स्वाहेतिमंडलम् ॥ श्रीं यथा गताभिषेक समान्ति मेहुं
 फडिति पुष्परशोधनम् ॥ श्रीं श्रीं ह्रीं स्वाहेति चिप शोधन मंत्रः । कलश
 स्थापनम्—श्रीं रत्न २ फट् स्वाहा भूमि सं शोभ्य ॥ तत्र-श्रीं आसु
 रेखे वज्र रेखे हुं स्वाहा मण्डल मंत्रेण-वृत्त त्रिकोणवतुष्कोणात्मक
 मण्डलं कुर्यात् । तत्राधार शक्ति—यथा—विश्व शक्त्यै नमः ॥
 ॐ महाशक्त्यै (माया) नमः ॥ कूर्मा सन्नाय नमः ॥ ॐ योगास-
 नाय नमः ॥ श्रीं अनन्ता सन्नाय नमः । ॐ विमला सन्नाय नमः ।
 मध्ये ॐ परम सुप्रोय नमः । ॐ भूभुवः स्वः आत्मासन्नाय

अर्नाद मुद्रा लक्षणम्—समुच्चैर्तु करौ कृत्वा मध्यमा मध्यमभुजे ॥ अना-
 मिके हुं सरले उदयस्तर्जनीद्वयम् ॥ दंडा कारौ वर्तेतुष्ये मध्यमा नस्य देहगो ॥
 मुद्रेशान्मादनी नामकलेदिनी सर्व बोधिता ॥ महां कुरा मुद्रा लक्षण यथा—
 अस्यास्तव नामिका शुभं भवः कृत्वा कुरा कृति ॥ तर्जया वधिते श्वेद त्रयेण
 विनियो अयेत् ॥ एवं कुरा मुद्राः सर्व कामार्थं वाप्नोति ॥

नम । इति आधार शक्ति कूर्म रोपान् सम्पूज्य ॥ एक त्रिंश
 चर मन्त्रेण धार पूजयेत्-तमाह- ॐ रा रीं रं र मल वर यूर
 अग्नि मण्डलाय धर्म प्रद दश कलात्मने ऐं कलशा धाराय नम ।
 तदुपरि पात्राधारो परि आप्रेयो दश कला अर्च ये चा एवाह-
 हव्य कन्यादिका बहा ॥ य धूम्राक्षि कला श्री पादुका पूजयामि ।
 र उष्मा कला श्री पा० ॥ ल ज्वलनी कला श्री पा० ॥ व
 ज्वालिनी कला श्री पा० ॥ म विष्कु लिङ्गिनी कला श्री पा० ॥
 र सुधे कला श्री पा० ॥ रु सुरुपाये कला श्री पा० रीं कपि
 लाये कला श्री पा० ॥ रा हव्याये कला श्री पा० ॥ ॐ कन्याये
 कला श्री पा० ॥ स्वर्णादिनिमित् कलशाम्-ॐ हा ह्रीं हू ह्रमल
 व्यू ह सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने स्त्री कलशाय नम ।
 तत्रार्क कला स्तपिन्याद्या सम्पूज्य । क भं इत्यादि विलोमे मूल
 मातृके जपन् जलै स्त सम्पूर्ण । क भ तपिन्यै नम । ल वं
 तापिन्यै नम । गं फ धूम्रायै नम । ध प मरीच्यै नम । ऊ न-ज्वालि
 न्यै नम । च ध रुच्यै नम । छ रं सुपुम्नायै नम । जल भोगदायै नम ।
 मं त विरवायै नम ॥ न णं बोधिन्त्यै नम ॥ ण दंधारिण्यै नम ॥
 ठ ड-क्षमायै नम ॥ इत्यर्क मण्डलं सम्पूज्य । मूल मन्त्र पठन् सुधा
 दुध्या सो य सम्पूर्ण तत्रगन्ध पुष्पाक्षतान् मं तपनी कला श्री पादु
 का पूजयामि नम । य तापिनी कला श्री पा० ॥ सू धूम्राक्षी कला
 श्रीपा० ॥ ह मरिचि कला श्री पा० । व्यू ज्वालिनी कला श्री पा० ।
 ल रुच्ये कला श्री पा० । म सुपुम्नायै कला श्री पा० ॥ ह भोगदायै
 कला श्री पा० ॥ ह विश्वे कला श्री पा० ॥ ह्रीं बोधिन्त्यै कला श्री
 पा० । हा धारिण्यै कला श्री पा० ॥ ॐ क्षमायै कला श्री पा० ॥
 मिति प्रयोगे मिस्रण्डा मुद्रा बन्धोक्ता ॥ मूलविद्या च मन्त्र वित
 ॐ सोम मण्डलाय येति कलशा मृताय नम तत ॐ सा सी सू
 समल व्यू ॥ सोम मण्डलाय कामप्रद षोडश कलात्मने सो कलशा

महा योनि मुद्रा लवणम्-मध्यमे कुटिले कृत्वा तज्जन्तु परि वस्थिते ॥
 ग्रन्थमिका मध्य गतेक्षये बहि कनिष्ठिके ॥ सर्वो एकत्र सवाग्या अङ्गुष्ठ परि
 लोकिता ॥ एषा तु प्रथमा मुद्रा महायोग मिषा मते ॥ त्रिलपदा मुद्रा ।
 ध्याता ॥ लोके मन्त्रेण ॥ गणे चत्यादि सुषवा अ कुरा मद्रया-शुभ्रनी
 मध्य मिका कृत्वा सर्वनी मध्य पयसि ॥ सयोग्या कु स्वये रिचिमुद्रया कुरा
 वडि धाम् ॥ मत्स्य मुद्रास्त-नासो परिधा स्वस्याप्य दक्ष हस्त प्रसारयेत्
 अङ्गुष्ठो सुषयोः शङ्ख मास्य मन्त्रे यनी रितेति ॥ मूला मुद्रा (अमे) दक्ष-
 म-

मृताय नमः मन्त्रेयं जलाघये । षोडशस्वरवाद्या, रवान्त्रीः कलास्तज्जले
चयेत्ता आह अमृतेति ॥ अं अमृतायै कला श्री पादुकां पूजयामि । आं
मानदायै कला श्री पा० ॥ इं पूषायै कला श्री पा० ॥ ईं तुष्टै कला श्री
पा० । उं पुष्टै कला श्री पा० ॥ ॐ रत्ने कला श्री पा० । ऋधृत्यै कला
श्री पा० ॥ ॠं शशिन्यै कला श्री पा० ॥ लृं चन्द्रिकायै कला श्रीपा लृं
कात्यै कला श्री पा० ॥ एं जोत्स्न्यायै कला० ॥ ऐं विश्वे कला श्रीपा
ओं प्रीत्यै कला श्री पा० । ओं अंगदायै कला श्री पा० ॥ अं पूर्वायै कला
श्री पा० ॥ अः पूर्णामृतायै कला श्री पा० इत्यर्घ्यसम्पूज्य ॥ तत्र तन्घट
स्थापने तृप्ति मुद्रया गंगे चेत्यादि तीर्थ मन्त्रेणां कुरामु द्रया अर्कं
मण्डलमा तोर्यमावाह्य त्वद्धरो देव मा वाहयेत् ॥ एका दशार्णेन मन्त्रेणां
एवारं जलं मंत्रयेत् सा यथा—ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हूं फट् हसौः
हूं मिति मन्त्रेणाष्टवार जलं मन्त्रयेत् ॥ वतो-ह्रीं बीजेन (सुभां)
प्रक्षिप्य (इति तोये अमुकां प्रक्षिप्य) । कुम्भ योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् । तत्र
सम्पूज्याघ जले हसत्तमलेति स्वरूपं पानीयवः । भरेव मन्त्रं आह-यथा-
हसत्तमलव्यं आनन्द भैरवायवौषट् । (दशार्णेन इति स्वरूपम्) हसयो
वैपरित्य-सहज मल व्यं सुधा देव्यै वौषट् ॥ इति सप्ताहं पूजयेत् ॥ मुद्रा-
प्रदर्शयेत् ॥—मत्स्य-अस्त्र-कवच-घेनु-संरोधिण्यां-सन्निहभ्य-मुशल-
वक्र-महामुद्रा-योनि मुद्रा-कुम्भ-पुनः अमृति मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ अर्घ्यं
इति—आदयः षोडशस्वरवाः । कादयोऽन्ता (कं० तपयन्तं) धाद्यो
रान्ताः (थं० यः पर्यन्त) तै रर्घ्यं त्रिकोणं संबिन्द्य ॥ की दशा ॥
इक्ष्वाभ्यां मध्ये शोभितं तत्र ऐं ह्रीं सौः रिति वालां संपूजयेत् । ओं ह्रीं
हंसः सौह स्वाहा ॥ इति मन्त्रेण देवीं ज्योतिमयीं यजेत् । मूलं त्रिपुजने
कुर्यात्कुर्यात्मुद्रा समीरिताः ॥ समीरिता मुद्राः मत्स्य-अस्त्र-कवच-घेनु-अमृ-
तिसंरोधिनीऽसन्निहभ्य-रंज-मुशल-वक्र-इति नव मुद्राः कुर्यात् अर्घ्यादि-
केन-पूजा वस्तूनि आत्मानं च सम्प्राप्त्य मूल मंत्रं सरन् । राक्ष पञ्च

मुशल मुद्रा—मुष्टि कृत्वा तु हस्ताभ्यां कामरुणे परि दक्षिण्याम् । कुर्यात्
मुशल मुद्रेय सर्वं विघ्न निवारिणाति ॥ चक्र मुद्रा—हस्तौ तु धनुस्तौ कृत्वा रं
लाम्नी ॥ प्रसारितौ । कनिष्ठा गुह्यको लाम्नी मुद्रेपाचक्रं वष्टि तेति ॥ अस्त्र मुद्रा—
दक्षस्य तर्जनी मध्ये सव्येक्षरं तले विधेत् अभिवातेन शब्द स्या दस्य मुद्रा समी-
रिता ॥ कवच मुद्रा—द्वेनेत्र त्रिभिरा लयातं द्वाभ्या अस्त्रं शिरोमदम् । अङ्गुष्ठं
न शिखलेया दिग्भिः कवच मीरितिम् ॥ इति पदगानि न्याय मुद्रान् ॥

अमृती मुद्रा—परिवृत्त्य करौ परचाचर्जनी मध्यमे युते कीमप्यनामिकाङ्गं धत्ते
परस्परं युतं कुरुः तेषु मुद्रे यमा स्थावा अमृती करणं भवेत् ॥ अर्घ्यं द्रव्यं कृत-

अथ पदं च प्रयोज्य ॥ मधुपर्कम्-वाग्ने तुमधुपर्कस्य दध्याग्न्य मधुचक्षि-
पेन् । मूत श्लोकं सुगामनेद्व्यात्तं वदने प्रमोः ॥ सुधा मंत्रं-सहस्रमल-
व्यूःसुधादेव्य धौषट् । मुन्यक्षरः सत्त्वाणाम् पूजयेत् । मधु पर्कं मिदं देव
कल्पयामि प्रसीदमै । पुनराचमनं दद्यात्तल श्लोकान्तर पठन् । शुद्धि
माप्नोति तस्मैतेपुनरा च मनीयकम् । स्नानं यस्त्रो पनीतान्ते नेवेद्यान्ते
वितस्मृतम् ॥ पुनरा चमनं-उच्छिष्टांष्य शुचि र्वापियस्यस्मरणमा-
श्रवाः ॥ शुद्धि माप्नोति तस्मैते पुनरा च मनीय कम् ॥

पीठ पूजा माह—

द्वार निर्णयः—मात्स्ये—बह्वी पूर्वतः स्थाप्यो वक्षिणेतु यजुर्विंदो ।
सामागौ पश्चिमे तद्दुत्तरेत्त्वथर्वणौ । इति वचनात् ॥ (सुधाण-
वासनं परचा यजेत्प्रेताग्नेभ्युजासनम्) दिव्या सन चक्रासनं सर्वं मन्त्रा
सनं ततः साध्य सिद्धा सनं प्रान्त्यं चक्र राजप्रपूजयेति ॥ इति मंत्र
महोदधिम् ॥

तार मात्रा त्रयाद्यम् ।—

अं ऊं म त्र्यं सोमाग्नि मण्डलं गुणान् सत्त्वं रज तर्मांस स्त-
वर्णा धान् । सं सत्त्वाय नमः र रजासाय नमः त तमसाय नमः ।

नमः...पाय द्रव्यायथाह—दूताङ्गरेति । आचमनीय द्रव्यायथाह, लरंगेति । कंठोस
मुग-व द्रव्येमसौकोनम् । तत्र सर्वं वाग्नेद्विषेद्वातिगदर्भाप्र तर्पयान् । यद्यपुष्पा,
दान् गण तेनार्घ्यैर्मूर्तिषा चरेत् ॥

येन मुक्ता-वामागुलिवा मध्येषु दक्षिणा गुली रथावा सं योज्य तर्जनीजिन
दक्ष। मध्य मया वामया तथा दक्ष मध्य मया वामां तर्जनी चनियो जयेत् ।
दक्षुवा वामया वामा कनिष्ठ्या चिनियो जयेत् ॥ विरितापो मुक्तोनेपायेन मुद्रा
पक्षीति तेषि । अमृत रीजत, वनितिर्व जेन सं यथिन्या मुद्रया वा यथा-अगुष्ट
गमिषी मेव सन्नि रोरे लयीरतेति ॥ अगुष्टं गर्भे मुष्टि हृषं हृषयः । महा-
मद्रापया-नरको कृत्य करया रंगुलो क्षमप्य करो विषो जयेदिति योनि मुद्रा—
दक्षाम्रष्ट्र वामागुष्टयिषा हस्तद्वये नच शाय कया (मध्य शल्या) मुष्टि वा
कुमांर वा कक्ष मद्रया ॥

आत्मान्मित्यादीन् । मात्रात्रयादीन्—अं आत्मने नमः । ऊं अन्तरात्मने
 नमः । मं परमात्मने नमः । ज्ञानात्मानं—ह्रीं ज्ञानात्मने नमः । मायातत्त्वा-
 दीनि स्ववर्णा द्यानि । मां मायातत्त्वाय नमः । कला तत्त्वाय नमः
 विद्यातत्त्वाय नमः । प्रपूजयेत् । ब्रह्मप्रेताय नमः विष्णु प्रेताय नमः
 रुद्रेस्वर प्रेताय नमः ॥ पीठ शक्ती राह—कामिन्धै नमः । कामदायिन्धै
 नमः । रत्यै नमः । रतिप्रयायै नमः । नन्दायै नमः । मनोन्मतायै नमः
 परायै नमः । वराभय करायै नमः । इति पूर्वोक्ते पीठ मातृके आदि शब्दा-
 त्कामानूकादयो (ज्ञेयाप्रयोगेषु) ततः आसन मंत्रेण पूजये चक्र नाय-
 कम्—पीठ मन्त्र मुद्रावतिस्वरूपमन्यत् यथा ऐं परोप्रे अपरायै परा परायै
 हसौ सदाशिव महा प्रेतपद्मा-सनायनमः इति ॥ एवंपीठसमभ्यर्चदद्यात्पुष्पां
 ऋजलिततत्त्वात्पुष्पाञ्जलि मंत्र माह ।—ह्रीं श्रीं प्रफट गुप्ततर सत्प्रदाय
 कुलनिगर्भं रहस्यासि रहस्य परा पर रहस्य संज्ञक श्री चक्र गत योगिनी
 पादुकाभ्यो नमः । इति पुष्पाञ्जलिम् ॥ इति ॥

आवरणार्थ—उपचार पूजनम् ॥

पूजनप्रयोगः त्रिलम्बा मुद्रोक्ता ॥ आवाहन मंत्र माह—
 ध्यानपूर्वकपुष्पं गृहित्वा—सङ्ग चक्र गदेषु चाप परिघा वृक्षलमुशुण्डी
 शिरः शालं संन्धतीं करेस्त्रि नयनां सर्वाङ्ग भूषा घृताम् ॥ नीला-
 रमद्युति मास्यपाद दशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौ स्वपिते
 हरोकमल जो हन्तु मधु कैटभम् ॥ १ ॥ ॐ हिरण्य वर्णा
 हरिणीं सुवर्ण रजत भ्रजम् । चन्द्रां हिरण्य मयीं लक्ष्मीं जातवेदीय
 मा वह ॥ १ ॥ ऐवेशि भक्ति मुल्लभेसर्वा वरण सं युते । यावत्त्वां
 पूज यिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिराभव ॥ इदमा वाहनं प्रोक्तं ततः
 स्थापनमा चरेत् ॥ भैरवी मंत्र मुच्चार्य श्री मन्त्रपुर सुन्दरि ॐ भूभुवःस्वः

मधु पर्व मन्त्रः—ओ दधिवक्त्रावयोऽग्रकारिषजिष्णोऽरभवंस्य ध्याजिर्नमः ॥
 सुरमिना मुखाकरत्पयःप्रायं ॥ १ ॥ विदारिवत् ॥ पात्रे तु दधि क्षिपेत् ॥ अ।
 घृतमिमिदं घृतमस्य योनिव्यूते ! शिशवो घृतमम्बस्यघातं । अतुष्ववमा
 वरं मादसं म्र म्रम्रा इदं नृपप नृत्ति रन्ध्रम् ॥ इति घृतं क्षिपेत् ॥ ओ
 मधु धाताऽश्रुताय ते मधुं चरन्ति सिन्धवः । माध्वदीर्घऽः सन्त्वोपधीऽः ॥
 मधुनक्तपुत्रोषं सो मधुं मत्कार्यिवध्रजः । मधुहो रस्तुनऽः पिता ॥ मधुं
 नाभोभवन्स्त्वितिर्मधुमां ॥ २ ॥ अस्तुसूर्यः । याद वीर्गावोभवन्तुनः । मधुं क्षिपेत् ॥

त्रितर्प यित्वा—शुक्ल पक्षे तु—अष्टिं क्लीं ह्रीं ॐ नमः कामेश्वरि १८३।
 काम फल प्रदे सर्व सत्त्व वशं करि सर्व अगत्योभय करि हुं हुं हुं द्रा दीं ह्रीं

श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः ध्यानावाहनसमर्पयामि नमः ॥ इति प्रयोगे ॥

अथ आसनम्—ॐ अक्षयक् परशु मदेपु कुलिपं पद्म धनु
कुण्डिका दण्डं शक्ति मखि च चर्म जल ज घण्टा सुराभाजनम् ॥
रत्न पाश शुद्धशने च दधती इत्यै प्रसन्ना नना सेवे सै रिम
मर्दिनीमिह महा लक्ष्मीं सरोवस्थिताम् ॥ २ ॥ ता ऽ आवाह जात
वेदो लक्ष्मी मनप गामिनीम् । यस्या दिव्य विन्देय गामस्य पुरुषा
नहम् ॥ अनेक रत्न सयुक्त नाना मणि गणान्वितम् । कातम्बर
मय दिव्य आसन प्रति गृह्याम् ॥ ॐ भू भुव स्व श्री महा
त्रिपुर सुन्दर्यै नमः ध्यान पुण्य सहित आसन सगपयामि नमः ॥
इति पुष्प स० ॥ तत आसन मुद्रा स्थापन्यादि दशयेत् । चक्रे
स्मिन्कुह सात्रिभ्ये नमोन्त स्थापने मनु दशयेन्स्थापति मुद्रा
सन्निधि सत्रिरोधनम्—सुमुखीं मुद्रा मन्त्रविदु दशयेत् ॥

पद्मगङ्गम् न्यसेत्—सफली करण त्विदम् अव गुण्डा मृतीकार
परमी कृत्यमहा मुद्रा न्प्रदर्शयेत् ॥ मुद्रा न्पूर्व प्रयोगे ब्रह्म
पात्र स्थापनादि प्रयोगम् ॥

पाद्यम्—उद्यत्मानु सहस्र कान्ति मण्डप क्षोमा शिरो मालिका
रक्ता लिप्त पयोधरा नप पटी विद्या मभीति वराम् ॥ वरुणाब्जे वध
तीर्त्रिनेत्र विलसद्भकार विंद श्रिय देवी वद्ध हिमाशु रत्न मुकुटा वन्दे
सुम द रिमताम् ॥ ॐ अथ पूजां २५ मध्या इति नार प्रमोदिनीम्
श्रिय त्वी सुप ह्वये धीर्मा देवीं जुपताम् ॥ गङ्गादि सय तीर्थेभ्यो
मयाप्रार्थ नया हवम् वीर्यने तसमुख स्पर्शपाद्यार्थ प्रतिगृह्य ताम् ॥
भो भू भुव स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः पाद्य ससर्पयामि नमः ।
अर्घ्यम् कालाभ्रामा कटाक्षै ररि हत भयदा मौलि वद्धन्दु रेखा शल
चक्र कृपाणा विशिख मपि करे रुद्ध हन्ता त्रिनगाम् ॥ सिद्ध स्फुटधि
रुद्रा त्रिभुवन मखिला तेजसा पूरयन्ती ध्यायेद् दुर्गां जया २५ त्रिदश

भू स लो क्ती ऐ २५ कामेश्वरि निया धी वादुक्षं पूज यामि तर्प यामि
नम एव प्रयोग ॥ कृष्ण पक्षे तु विधिपाद्या कामेश्वर्यां नवानका ॥ इति
माता ॥ विषयका मुद्रा उक्ता ॥ उप तापूना प्रिलयदा मुद्रा—मुद्रा त्रिदश
५ ताप पुष्पावशादाय चाञ्चो ॥ प्याता पूर्वा दिता देवी मूल विद्या समुच्च
२५ ॥ चेतयं हृदयमलम नाविह रम निगतम् ॥ तद रंभस्य मामाण योजित
कुमुदा मलो ॥ महा पद्म वनां तस्य कामया नद त्रिपदे ॥ सर्व भूत रते माय
रमदि परमेश्वरि ॥ १ ॥ महा पूजाम चेतस्य सयुक्त कुमुदा जलिम् ॥ ५ ॥
५५ रात्रे चैतन्य तत आक द्वयं पठत् । ४ ॥

परिवृतां सोवितांसिद्धि कामैः ॥ कौसौस्मितांहिरण्यप्रकारामाद्रान्यलन्तीतृप्तां
 तर्पयन्तीम् ॥ पद्मे स्थितां पद्म वर्णां तामिहो पद्मये श्रियम् ॥ निधीनां
 सर्वं रत्नानां त्वय नर्भ्यगुणा ह्यसि ॥ सिद्धो परि स्थिते देवि । गृदाणाघ्यं
 नमोस्तुते ॥ ४ ॥ ओं भू भुवः स्वः श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः अर्घ्यं समर्प-
 यामिनमः ॥ आचमनीयम्—घटा शूल हन्तावि शंख मुशले चक्रं धनु
 रसायक हस्ताब्जैर्दधतां घनान्त विलम्बज्जीवांशुतुल्य प्रभाम् ॥ गौरी देह
 समुद्भवां त्रिजगताभावारभुतामदापूर्वा मन्त्र सरस्वती मनुमजे शुभादि
 दैत्यादिनीम् । चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रिय लोके देव जुष्टा मुदाराम् ।
 तां पद्मनेमी शरणं महं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नन्यतां त्वा वृणोमि । स्वरूपं दे-
 वी सुगन्धेन सुगन्धि स्वादु शीतलम् । तौष्ण्यमा चमनी यार्थं देवि । त्वं
 प्रति मृद्वताम् ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः आचमनीयं
 समर्पयामि नमः ॥ ५ ॥ मलाय कर्पण स्नानम्—नागाधीश्वर विष्टरो पणि-
 फणोत्तं सौररत्नावली भास्वदेह लतां शिवाकर निभां नेत्र त्रयोद्भासिताम् ।
 माला कुम्भ कपालनी रज कर्ण चन्द्रार्द्ध चूडां परां सर्वज्ञेश्वर भैरवाङ्क-
 निलयां पद्मावतीं चिन्तये ॥ आदित्य वर्णे तपसोधि जातो वनस्पतिस्तव
 त्रिलोऽथ विलसः तस्य कलानि तपसानु दन्तुमायान्तरायारचवाद्याऽभल-
 क्षमीः ॥ मन्दाकिन्याः समानीतेर्हेमां बोरुह भासितैः स्नानं कुरुष्व देवेशि ।
 सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः
 स्नानं समर्पयामि नमः ॥ ६ ॥ मधुपर्कम्—पात्रे तु मधु पर्कस्य दद्याद्य मधु
 चक्षिपेत् । मूल श्लोक सुधा मंत्रं दद्यात्तं वदने प्रभोः ॐ मधुव्वाता
 रितायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माञ्जवीर्न सन्तोषधीः ॥ दधि घृतमधु
 समायुक्तं पात्र युक्तं समन्वितम् मधु पर्कं गृहाणत्वं शुभदाभव शोभने ॥
 ॐ भू भुवः स्वः श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः ॥ ७ ॥ शुद्धोदक स्नानम्—
 ओं आपो अस्मान्मातरः सुन्दर्यन्तु घृतेय नो घृतस्वः पुनन्तु ॥ विवरवध
 पिरश्रिम्पत्रहन्ति देवी रुदिदाम्बः शुचिरा पूतपभि । दीक्षां पसस्तिन्
 रति र्यां तां शिवा ॐ शगमा परिदधे भद्रं वर्णं पुष्टम् ॥ परमानन्द
 बोधाब्धि निमग्न निजमूर्तये । सांगोपांग मिदं स्नानं कल्पम्यहमीशिते ॥
 ॐ भू भुवः स्वः श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः मधुपर्कं स्नानान्ते शुद्धोदक
 स्नानं स्नो ॥ पुनरा च मनीयम्—तीक्ष्णोष्ण शुचि र्वापि यत्प्राप्स्ये
 मन्त्रतः शुद्धिमाप्नोति तस्मैते पुनरा चमनीयकम् ॥ सर्वं लोकस्य या शक्ति
 म्रंदा विष्णु महेश्वराः । दद्यान्वा च मन्त्रं तस्यै देव्यांस्तुभ्य मनोऽरम् ॥
 ॐ भू भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः आचमनीयं समर्पयामि नमः ।
 सुगन्धित स्नानम्—ओं काष्ठाकाष्ठापरो हन्ती परुषः परुषस्परि ॥
 दशानो बुर्वे प्रवृत्तं सद्यैव शक्ते नवः । ओं स्नेहागृहाण स्नेहेन लोकेऽररि

महा नये, सर्व लोकेषु शुद्धात्मन वधामि स्नेह मुक्तम् ॥ ओं भू भुवः स्वः
श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि नमः ॥ ६ ॥ दुष्ट
स्नानम्—ओं मयः शयिष्याम्यव औपधौ धीपुप्यो दिव्यन्तरिक्षे पयोः
भाः ॥ पयः स्वधौः प्रविशः मन्तुमहम् ॥ कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां
जीवन पम् । पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थं मर्पितम् ॥ १० ॥ ओं
भू भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः पय स्नानं समर्पयामि नमः ॥
पय स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं—ओं आपो अस्मान्मातरः सुन्ध यन्तु
घृतेन नो घृतस्यः पुनन्तु ॥ निरवर्तं हिरिषिप्रवहंति देवी रुदिदाम्ना
शुचिरापूत एमि । दिक्षान्तं पसरित नू रसि स्वां वां शिवा ओं रागमा
परिक्षे भद्रवर्ण पुष्पान् स्नानार्थं शुद्धोदकं समर्पयामि नमः । स्नानान्ते
वशिष्ठोप्यसिति पुनर्वाचमनीयं समर्पयामि नमः ॥

वधिस्नानम्—ॐ वधि क्वाण्ये अक्षरिपे त्रिषणोश्चस्य वाजिनः
सुरभिनी मुखा करत्मण आयुः ॥ त्रिवारिपत् ॥ ॐ पय सस्तु समुद्भू-
तं मधुरान्तं राशि प्रभम् । दध्यानीतं मया देवी । स्नानार्थं प्रतिगृह्य-
ताम् ॥ पुन शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते ।
मन्त्रो धार्य पूर्वकं आचमनीयं समर्पयामि नमः । इति वधिम् ॥
घृतस्नानम्—ॐ घृतं घृत पावनः निपत व्यर्सा यसा पावनः पिवता-
न्वारिच स्य हवि रसि स्वाहा । विराः प्रविशः उद्भादिरोविदिशः शिरो
दिग्मयः स्वाहा ॥ नव नीत समुत्पन्नं सर्वं सन्तोष कार कम् । घृत
तुभ्यं प्रदा स्यामि स्नानार्थं प्रति गृह्य ताम् ॥ पुनः पूर्वोक्तं
मन्त्रोधार्य विधेशुद्ध स्नानम्, शुद्ध स्नानान्ते चमनीयम् ॥ इति घृतम् ॥

मधुरस्नानम्—मधु नक्त मुतो पसो मधु मत्त पार्थिव ॥ राजः मधु
पोरस्तु नः पिताः ॥ तनु पुष्यं समुद्भूतं सु स्वादु मधुरं मधुरं मधु ॥
तेजः पुष्टि करं दिव्यं स्नानार्थं प्रति गृह्य ताम् ॥ मन्त्रोधार्य
पूर्वकं पुनः शुद्धोदक स्नानम्—स्नानान्ते आचमनीयम् ॥ इति मधुः ॥
शर्करास्नानम्—ॐ आपा ६ रसमुद्वयसः ५ मूर्धं सन्तः ५
ममाहित ॥ आपा ६ रसस्य यो रमस्त स्यो गृहाण न्युताम् सुव-
याम गृहातो मोन्त्रायन्ता जुष्ट गृहाभेयते योजि रिन्त्रायन्ता जुष्ट
समम् ॥ इत्युक्तं समुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका । मन्त्रा पदार्थ
दिन्या स्नानार्थं प्रति गृह्य ताम् ॥ आपो अस्मान्मिति शुद्धोदकं
अर्चयामिति आचमनीयं समर्पयामि नमः । ॐ भू भुवः स्वः श्री
महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः शर्करा मन्त्रेणा मुक्ता मुक्त द्रव्यं सदिह
१५ पञ्चाघृत स्नान समर्पयामि नमः ॥ इति पू० मं० ॥ पञ्चाघृतम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वती मपयन्ति स स्रोतसः । सरस्वतीतु पञ्च-
धासो देशे भवत्सरित् ॥ पयो दधि घृतं चैव मधुच शर्करान्वितम् ।
पञ्चामृतं मया नीतं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ पुनः आपो अस्मान्
मिति शुद्धोदक स्नानं ॥ वच्छिष्ट मिति आचमनीय ॥ ॐ मूर्ध्निः
स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि नमः ॥
गन्ध स्नानम्—ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्पां क्रीपिलीम्
ईश्वर्यै सर्व भूतानां तामिहो पङ्कजे श्रियम् ॥ मलय चत सन्भूतं
चन्दना गन्ध सन्भवम् ॥ चन्दनं देवि देविशः । स्नानार्थं प्रति गृह्य-
ताम् ॥ पुनः आपो अस्मान् मिति शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।
स्नानान्ते वच्छिष्ट मिति आचमनीयम् ॥ उद्धर्तनम्—ॐ अ ६ सुनाते
अ ६ शुः पृच्छतां परुषा परुः गन्धस्ते सोमम् भवतु मदाय रसोऽ
अच्युतम् ॥ नाना सुगन्धि द्रव्याणि चन्दन रजनी युतम् । उद्धर्तनं
मया इत्त स्नानार्थं प्रति गृह्य ताम् पुनः शुद्धोदक स्नानम्—आपो
अस्मान्मातरः सुन्ध यन्तु मिति शुद्धोदक स्नानं ॥ वच्छिष्ट मिति आच-
मनीयम् ॥ ॐ भूः भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः उद्ध-
र्तनं समर्पयामि नमः इति । तदुपरि ॐ सहस्रं शीर्षं त्यादि पुरुष
शुक्तेन श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः (मूर्ध्नि) राजबिरोधा
र्थं समर्पयामि नमः ।

द्वय वस्त्रम्—प्रायेयं सरपीठे शुक कलफटितं शृङ्खलीं रयाम
लांगी, न्यस्तो कान्ति सरोजे शशि शकल वर्यं यन्तकीं बाल वंतीम् ॥
कलहारा वद्धमालानियमितविलसच्चन्द्रिकांक वस्त्रांमातंगी शम्भुपात्रां
मधुर मधु मदां चित्रको द्वासिमात्राम् ॥ उपेतु मां देव सखः कीर्तिं
रच मणिना सह । पादु भूतो सुगच्छस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥
यद्वक्तुं युगं देवि । कंचुकेव समान्वितम् । परिधेहि कृपां कृत्वा
देवी । दुर्गतिं नारिणि ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्रीमहात्रिपुर सुन्दर्यै
नमः वस्त्रः द्रव्यं समर्पयामि नमः ॥ वच्छिष्टमिति आचमनीयं सम-
र्पयामि नमः ॥ अथ—यज्ञोपवीतमभिरुणं करुणं तरङ्गि ताक्ष्णीं धृत
पाशां कुश मुख्य चाप हस्ताम् । अणिमा विभिरावृताम् मूर्ध्नि सह मित्ये वधि
भावये भवानीम् ॥ क्षुत् पिपासा मल्लो ज्येष्ठाम लक्ष्मीं नारायण्यहम् ।
अभूति मसृष्टिं च सर्वो निष्ठुं मे गृह्णात् । नवमिस्त्वनुभिर्युक्तं त्रिशूलं
त्रिपुरेमयिम् । उपवीतं चोत्तरीयं गृह्णाण परमेश्वरि ॥ ततः स्वयं आचम-
नीयम् । ॐ भू भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः यज्ञोपवीत (शूत्र)
समर्पयामि नमः । उद्धोवपुष्पम् ॥ गन्धम्—वन्द्यं—काञ्चन निम्बं नव

रात्मापाशा कुशौ च नरदं निज बाहु दृष्टे । विभ्राण मन्दु शक्ता
भगवति नेत्र मन्वाविके शम निश वपुरा भयामि ॥ गन्धद्वारादुपधौ
नित्य पुष्टा करीषिणीम् । ईश्वरौ सर्व भूताना वामिहो पद्वये शिवम् ॥
परमानन्द सौभाग्य परिपूर्णं दिगन्तरे । गृहाण परम गन्ध कृपया परम
श्वरि ॥ ओं भू भुव स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम गन्ध समर्पयामि नम ।
शौभाग्य सूत्रम्-ओं सौभाग्य सूत्र वरदे । सुवर्णमणि सयुतम् । वटे
वक्षामि देवेशि ? सौभाग्य देहि मे सदा ॥ ओं भू भुव स्व सुत्र
श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नम कण्ठ सूत्र समर्पयामि नम । अक्षतम् अक्षत
मोमन्त हृदयप्रियाऽ अक्षय । अस्तोपत स्वभानजोन्विता नविष्या
मता यो ज्ञानिवन्त्रतेहरो ॥ अक्षता निमला गुह्या मुक्तामणि समन्विता
गृहाणे मान्महादेवो ? देहिमे निर्मला पियम् ॥ इति छेपकम् ॥ ओं
भू भुव स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम अक्षता-समर्पयामि नम ॥
हरिद्राचूर्णम् ॥ हरिद्रा रञ्जिते देवी । सुख शौभाग्य दामिनि ॥ तस्मा
त्त्या पूजयाम्यत्र दुःखशान्ति प्रयच्छमेत् ॥ ओं भू भुव स्व श्री महा
त्रिपुर सुन्दर्यै नम परिमल द्रव्य समर्पयामि नम कुङ्कुम् कुङ्कु मम् फान्तिद
दिव्यं कामिनी कामराज्यम् । कुङ्कुमे नाचिते देवि । प्रशिद्ध परमेश्वरी ।
ओं भू भुव स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम कुङ्कुम् समर्पयामि नम ॥
सिन्दूर-सिन्दूर मङ्गला भास जवा कुशुम सन्निभ । पूजितासिमयो
देवि ? प्रसोद परमेश्वरि ॥ ओं भू भुव स्व श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नम
सिन्दूर समर्पयामि नम । कज्जला-वस्तुभ्यां कज्जलं स्म्य सुभगे । शान्ति
कारके । कपूर ज्योति रत्न-न गृहाण परमेश्वरि ॥ ओं भू भुव स्व श्री
महात्रिपुर सुन्दर्यै नम कज्जला समर्पयामि नम ॥

दुर्वाङ्गुलम्-उत्तम हन रुचिरा रवि चन्द्र बहि नेत्रा धनुर्धार
गुहा कुरा पाश शूबम् ॥ रम्येभुजैरव दधता शिव शक्तिरूपा
कामेशा इदमनामि धृतन्दु क्षराम् ॥ ॐ आशौ पुष्करणी पुष्टि
सुरणा हेम मालिनीम् । स्याद्विष्णुमया लक्ष्मी वात वदा ममा
॥ ॐ काण्डा रक्षणं त्वरा हन्तो परुष परुषस्पर्श एवानो दुर्वै
प्रतनु मह्येण शत नव ॥ दुर्वो दले स्यामलस्त्व मदी रूपे हरि
प्रिय ॥ अतो दुर्वाभिर्नर्त्ता, मयामि सदा शिव ॥ ॐ शुभुर
व्य भा महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम । दुर्वो कुर समर्पयामि ॥ यि
पत्रम्-आश य करिणी यष्टि पिङ्गला पद्मगात्रिताम् । चन्द्रा
द्विष्टमया लक्ष्मी वातवदाम आरद ॥ ॐ नमो विनिम्न र कथिन
नमो धर्मिणी च यक्षिणी च नम-रुद्राय च श्रुत मताय च नमो
दुन्दुभ्यश्च वा इतप्रथा यत्र नमो हृण्यावे । यमुना इत्य भा युवा

महा देवि । प्रियः सदा ॥ विल्व पत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरे
 रवरि ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः विल्व
 पत्रं समर्पयामि नमः ॥ पल्लव अर्पणम्-ताम्रऽश्रावहं जात देवो
 गच्छमी मनप गामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दाम्घो
 स्तान्निन्देयं पुरुषा नहम् ॥ ॐ अश्वत्थेपो निषदनं पर्णवो व्यसति
 रकृता ॥ गोभाज गोभाज इत्किलासथयः स नवयपुरुषम् ॥ गृह द्वारे
 धोम-पि दुष्टासुर निवर्हिणि ॥ पूजां करोमि चार्चयामि पल्लवान्
 नन्दनोद्भवैः ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्रीमहा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः पल्लवान्-
 समर्पयामि नमः । फलमालां-ॐ महादेवी चविद्वाहे विष्णु पत्नी व
 धीमही ॥ तन्नो देवी प्र० ॥ ॐ याः फलाफलनीर्याऽ अफला दारिच पुदि-
 पणी ॥ पृष्ठपति प्रसूता स्तानो मुञ्चन्त्य दंडसः ॥ शरत्काले समुद्रतां
 निशुम्भे मर्दिते त्वया ॥ फल मालां वरां देवि । गृहाण सुर पूजिते ।
 ॐ भू भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः फलमालां स० ॥
 रत्नमालां-ॐ परि वाज पतिः कवि रश्मि हृष्या न्वक्रमीत् ॥
 तर्धद्रत्नानिदा श्रुपे ॥ ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सभ्रम कर्दम । श्री
 य वा सयमे गृहे मातरं पद्म मालिनीम् ॥ मुक्ताफल युतां मालां
 रत्न वैडूर्य सु प्रभाम् ॥ माणिक्यं स्वर्णं प्रयितां गृह्यतां वरदे ।
 नमः । ॐ भू भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः रत्न मालां स० ॥
 पुष्प मालां-आपः खजन्तु स्निग्धानि बिह्वीत वसमे गृहे । निष
 देवी मातरं श्रियं वा सयमे कुते ॥ ॐ श्री रचते कच्छमी रश्मि पत्न-
 कया बहो रात्रे पार्ष्वे नः ॥ पद्म शंखजपुष्पादि शत पत्रै विधिव
 ताम् ॥ पुष्प मालां प्रयेच्छामि गृहाण त्वं सुरे रवरि ॥ ॐ भू-
 भुवः स्वः श्री महत्रिपुर सुन्दर्यै नमः पुष्प मालां स० ॥ अथ पुष्पं-
 वालर विद्यति मिन्दु किरीटा तुङ्ग कुवां नयन त्रयं युक्ताम् । स्मेर
 सुखी वरदां कुरापाशा भीति करी प्रभजे भुवनेशीम् ॥ मनसः काम
 मा कृति वाचः सत्य मशीमहि । पशूनां रूप मन्त्रयस्य मयि धीः भयनां यशः
 ॥ पुष्पे नांता विधेर्दिव्यैः कुमुदै रथ चम्पकैः ॥ पूजार्थं नीयते तुम्बं
 पुष्पाणि प्रतिगृह्य ताम् ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री म० पुष्पं स० ॥
 अलंकारम्-विद्यु दाम सम प्रभां मृग पतिं स्कन्ध स्थितां भीषणां
 कन्याभिः कर काल सेट-विलस द्रुता भिरा सेवितां ॥ दस्तै रश्म
 गदासि खेट विशिखां श्रापं गुणं तर्जनीं विघ्राणामन लातिमकां
 शशिघां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥ हार करुण केयूर मेखला कुरडना-
 दिभिः । रत्नादय कुरडलो पेटं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भू भुवः
 स्वः श्री म० अलंकारं स० ॥ सुगन्ध द्रव्यम् वालार्क मण्डला भापां

चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ॥ पाशा क्लृपयामोर्ध्वं स्वारयन्तीं शिरां
भवे ॥ ॐ अहि रिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्ञाया हेति परि बाय
मानः ॥ इन्द्रो विश्वान् युनानि विद्वान्यु मान्युमा ॥ सम्परि पात
विश्वतः ॥ चन्द्रना गरु कर्पूर कुङ्कुमं रोचनं तथा । कस्तूर्यादि सुग
न्धारय सर्वाङ्गेषु विक्षेपनम् ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री म० सुगन्ध
द्रव्य (उत्तर) स० ॥ अथ भूपम्—यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुया वाग्य
मन्वदम् । सूक्त पञ्च दश पञ्च श्री कामः सततं जपेत् ॥ ॐ पृ
रभो धूतं धूवेत् न धूवेत् यो ध्या धूर्वं वीत धूर्वयं यय धूर्वामः । देवानां
मसि वसि म ॥ सस्ति तमं प्रपित मजुष्ट तमन्देवदू तमम् ॥ दशाङ्ग
गुगुलं धूपं चन्द्रना गरु संयुक्तम् समर्पितं मया भक्त्या महादेवे प्र
गुह्याताम् ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री महावि० धूपं स० ॥ अथ दीपम्—
ॐ अग्निज्योतिं ज्योति रग्निं स्वाहाः सूर्यो ज्योतिं ऽ सूर्यं ऽ
स्वाहाः अग्निं ज्योतिं ज्योति र्ज्योतिं ऽ स्वाहाः सूर्यो ज्योतिं ज्योतिं
ज्योतिं ऽ स्वाहा । ज्योतिं ऽ सूर्यं ऽ सूर्यो ज्योतिं ऽ स्वाहा ॥
सर सिञ्ज नित्ये सरोज हस्ते धवल वरांशुक गन्ध माह्व शोभे ।
मगवति हरि कल्लमे मगोमे त्रिभुवन भूति करि प्रसीद मह्यम् ॥
पृ० वतिं समा युक्तं महा तेजो महो ज्वलम् । दीपं दास्यामि देवेसि
सुशेताभक्त सर्वदा ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री महा श्री० दीपं समर्प-
यामि नमः । अथ नैवेद्य—नैवेद्यं निवेद्यामि नमः । जलेना म्मुच ॥
गन्ध पुष्पा भ्या माद्याथ ॥ धेनु मुद्रया अर्चतो कृत्य ॥ योनि मुद्रां
प्रक्ष्ये ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ वदानाय स्वाहा,
ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा, ॐ आर्द्रां पुष्करिणि
पुष्टिं सुगर्भां देम मालिनीम् । सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदो
म मा यद् ॥ अन्नं चतुर्विधं स्नातु रस्तेः पद्भिः समन्वितम् । नैवेद्यं
गृह्णातां देवि । भक्ति मे ह्यवकां कुरु । ॐ भू भुवः स्वः श्री महा
त्रिपुर सुन्दरं नमः नैवेद्यं स० ॥ मध्ये पानीयम्—ॐ यत्पुनरेण
हविषा देवा यद्म म० ॥ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिबन्तां पद्म मालि
नीम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदोम आचह ॥ आचम्यतां
त्वया देवि भक्ति मे ह्यवकां कुरु । इष्टितं मे । वरं देहि परब्रह्म
परां गतिम् ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर पा नीयम्
स० ॥ करो ह्वेनम्—करोद्धतं कं देवि सुगर्भे परि
पायितेः इष्टितं मे वरं देहि पर ब्रह्म परां गतिम् । ॐ

मुद्राः—धेनु-अमृती-योनि-धूपं प्रयोगे दृश्यः ॥

भू भुवः स्वः श्री महात्रि० ॥ इति च गन्धसमर्पयामिः ।
 हस्त मुख प्रक्षालनार्थं जलं-गन्धतोय समानीतं सुवर्णं कलशोस्थितम् ।
 हस्त प्रक्षालनार्थं पानीयं निवेदयेत् ॥ पुनः शत्रो देवोति मंत्रस्य
 उत्तरा पोसनार्थं-करमुखप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि नमः ॥ ऋतुकलम्-
 याः फलिनीयाऽअफलाऽअयुष्मायाश्च पुष्पिणीः । वृहस्पति प्रसूतास्तानो
 मुञ्चन्तं ॥ हस्तः ॥ द्वाक्षाग्रजूरं कदलीपत्र साग्रकं प्रपि थकम् । नारिके
 लेखु जंबादी फलानि प्रतिगृह्णवाम् ॥ ॐ भूभुवः स्वः श्री महात्रि० ऋतु
 फलं स० ॥ ताम्बूल पूगीफलम्—ॐ सप्तास्यासन् परिधय० । ॐ तामऽ
 आवह जातयेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । गस्याहिरयं प्रभूतिं गावो दास्यो
 श्वान्धिन्वेयं पुरुषानहम् ॥ एता लवंग कस्तूरं कपूरैः पुष्पधामितावीटि
 का मुख वासार्थं मर्पयामि सुरेश्वरि ॥ ॐ भूभुवः स्वः श्री महात्रि०
 ताम्बूल पूगीफलं सम० ॥ दक्षिणाद्रव्यं—हिरण्यं गर्भं गर्भस्थं हेमवीजं
 विभावसौः । अनन्त पुण्य फलद भवः शान्तिं प्रयच्छमे ॥ हिरण्यं गम्भ्वं
 समवत्तं ताम्रे भूतस्य जातऽः पतिरेकऽआसीत् । सदाधार पृथिवीन्धमुते
 माङ्गुस्मैदेवः य हविषाब्धिधेम ॥ भूजाफल समुध्ययं तवाग्ने स्वर्णामोरवरी
 स्थापितं तेनमे प्रोता पुष्पाङ्कुल मनो रथान् ॥ ॐ भूभुवः स्वः श्री
 महात्रि० पूजन पूर्वकं दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामिनमः ॥ कपूरा रात्तिक्यम-
 ॐ इदं हविऽअजतनम्मेऽअभुदशवीरं सर्वगणं स्वस्तये । आत्कम
 मनिप्रजासनि पशुशनि लोक सन्ध्यामय सनि ॥ आग्निऽऽप्यहुनाभ्यलाम्भे
 करो च्वन्नम्-पयोरेतोऽअस्मासुधत्त ॥ नीराजनं सुमांगल्यं कपूरेण सम-
 न्वितम् । चन्द्राकं वह्नि सदृशं महादेवि ! नमाऽस्तुते ॥ ओ भूभुवः स्वः
 श्री महा० कपूररात्तिक्यं समर्पयामिः ॥ प्रदक्षिणम्—ॐ मानस्तोके तनये० ।
 ॐ याति कामि च पापानि जन्मान्तर कृतानि वै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु
 प्रदक्षिण पदे पदे । सर्व पापा प्लुतये प्रदक्षिणां करोमि ॥ ॐ भूभुवः
 स्वः श्री महा त्रि० प्रदक्षिणां स० ॥ पुष्पाञ्जलिम्—ॐ विश्वतरचक्षुः ॥
 विरजतो मुखो विरजतो बाहुस्त विरज तत्पात् । संवाहुम्याधमति सारत्रे
 र्धावा भूमि जनयन देवएकः ॥ नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवा
 निव । पुष्पाञ्जलिं मया दत्तां गृहाण परमेश्वरि ॥ ओ भूभुवः स्वः
 श्री महात्रि० पुष्पाञ्जलिं समर्प- यामि नमः । ततः सफलार्थं-पुष्पगृह्णित्वा-
 भ्यानम्-काला भ्रात्रां कटाक्षं ररि कुलभयदां मौलिवद्धेन्दु रेखांरालं चक्रं
 कृपाणां विशिष्य मपि करै रुद्रहन्तां त्रितेजाम् । सिंहस्कन्धाधि रुद्रां त्रिभु
 वन मञ्जिलं वेजसा पूरयन्तोष्वावेद् दुर्गा जयाख्यां त्रिदरा परि वृतां मेविगां-
 सिद्धि कामैः ॥-ऋषिकृष्ण ॥ १ ॥ शम्भोदय मुर गणा निहतेऽति धीर्ये
 तस्मि दुरात्मनि मुगारि बलेऽ देव्या ॥ तां तुष्टयुः प्रवृत्तिन् शिरोधरांसा

वाग्भिः प्रहर्षं पुलकोद्गम वारुदेहाः ॥ २ ॥ देव्या यय तत मिदं जगत्त्रात
 शक्त्या निजोपदेवगण शक्ति समूह मूर्त्या, तमन्विक्का मखित देव मर्षि
 पूज्या भक्त्या नता स्म त्रिदयातु गुमा निशानः ॥ ३ ॥ यस्याः प्रभाव मतुल
 भगवानतन्जो ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तु मलं वस्तञ्च ॥ सावर्णिक्का
 खिल जगत्परि पाल नाथ नाशाय चा शुभ भयरवमतिं करोतु ॥ ४ ॥
 या श्रीः स्थयं सुकृति नां भुवने खलचमोः । पापात्मनां कृतघ्नीनां
 हृदये सु बुद्धिः ब्रह्मा सत्तां कुत जन प्रमत्तस्य लज्जा, तां त्वां
 नताः स्म परि पालय देवि विरजम् ॥ ५ ॥ किं रण्यवाम सव रूप
 मचिन्त्य मेतत्किं चाति वीर्यं मसुर ह्य कारि भूरि ॥ किं बाह्वेषु
 चरितानि तथाति यानि सर्वेषु देव्य सुर देव गणादिक्षेपु ॥ इतः
 समस्त जगतां त्रिगुणाऽपि दोषे नञ्जायसे हरि हरानिभि रण्य पारा ॥
 श्रया श्रया ऽक्षित मिदं जगदं शम्भूः मरुता कृतादि परमापटुति
 स्त्वमाया ॥ १ ॥ यस्मै समस्त सुता समुद्रो रणेन वृष्टि प्रवाति
 सञ्जलेषु मरेषु देवि ॥ स्वाहा ऽसि वै पितृ गणस्य च तृति
 हेतु दधार्य से त्वमत एव जनैः स्वधाच ॥ या मुक्तिं हेतु रवि
 चिन्त्य महा व्रतात्त्वगम्यस्य से सुनियतेन्द्रिय वन्द्य सारः ! मोक्षार्थि-
 भिर्मुनिभिरस्त समस्त दीपैर्विधा ऽसि साभगवती परमादि देवि
 ॥ ६ ॥ शब्दादिमरुता सु विमलग्न्यनुपां निभान मुग्दी धाम्यपद
 पाठ यतो वसामनाम् ॥ देवी ययी भगवती भव भावनाय बाता
 च सर्व जगतां परमातिं इन्नीः ॥ १० ॥ मेधाऽसि देवि विदिता
 विज्ञा शास्त्र सारा दुर्गासिदुर्गा भव मातर नीरसया ॥ श्रीः कैट-
 मारि हृदये ककुवाधि वासा गौरी त्वमेव राशि मौलिभूत प्रतिष्ठा
 ॥ ११ ॥ ईशसहा सममलं परि पूणं चन्द्र विम्बालु कारि फलसो
 क्षम हान्ति कान्तम् ॥ अत्यद्भुतं पदवमा चरुपा तथा ऽपि पञ्च
 यिन्नोन्मय स्रष्टा महिषा सुरेण्य ॥ १२ ॥ लम्बालु देवि कृषितं धुकुटी
 फलाल मुचच्छरा सदाश श्रवि यन्न सयः ॥ प्राणान्मुमोच
 मक्षिपस्तद वीच चित्रं कैर्जीव्यतेहि कुपिता न्तक दरां नेन ॥ १३ ॥
 देव प्रसीद परमा भवती मवाय सद्यो विनाश यसि कोपवती
 कुलानि ॥ विद्यावते नद धुनेव चरत्स मेत शीत वलं सु विभुलं
 महिषा सुरस्य ॥ १४ ॥ ते स मता जन पदेषु पनात्रि तेषां तेषां
 परांसि न च मो क्षति धर्म वरा धन्यास्त यत्र निभृतात्मन भूय
 दारा येषां सदा ऽम्युद यदा भवती प्रशान्ता ॥ १५ ॥ धर्म्याणि देवि
 मरुतानि सन्तेव कर्मावस्था इवः प्रतिदिनं सुकृतां करोति ॥ स्वर्ग-
 प्रयाति च यतो भवती वसादा लोक्यथे ऽपि फलदा ननु देवि तेन

॥ १६ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि मीति मशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता
मति वतीथ शुभांदासि- दारिद्र्य दुः खमय हारिणि का त्वदन्या
सर्वोत्कार करणाय सदात्रं चित्ता ॥ १७ ॥ एभिर्हर्तैर्जगदु पैति सुखं
तथैते, कुर्वन्तु नाम नरकाय चिरायपापम् ॥ संग्राम मृत्यु मवि
गम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति नून महिषा न्विनि हंसि दधि ॥ १८ ॥
दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वा मुरा नः रिपु यत्प्रहिणोषि
शस्त्रम् ॥ लोका न्प्रयान्तु रिपवो ऽपिहि शस्त्र पूता इत्थं मति
भवंति तेष्व हितेषु साध्वी ॥ १९ ॥ खड्ग प्रभानिकर विस्फुरयौ
स्तयोमेः शूलाम फान्ति निवहेन दशो ऽसुराणाम् ॥ यन्ना गता बिल
यमं शुमदिन्दु खण्ड योग्या ननं तत्र बिलोक यतां तदे तत् ॥ २० ॥
दुर्धृत्त वृत्त समनं तव देवि शीलं रूपं तथै तद् विचिन्त्य मतुल्य मन्यैः ॥
धीर्य च हन्तु इत देव परा क्रमाणां वैरि ध्वापि प्रकटितैव दया
त्ययेत्यम् ॥ २१ ॥ केनो पमा भवतु ते ऽस्य परा क्रमस्वरूपं चरातु-
भयं कार्यति हारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समर निष्ठु रता चदृष्टा-
स्त्वय्येव देवि वरदे भुवन त्रयेऽपि ॥ त्रैलोक्य मे तद् खिलं रिपु
नाशनेन, त्रातं त्वया समर मूर्द्धनि तेऽपिहत्वा । नोता दिवं रिपु-
गणा भय मप्य पास्त मत्मा कमुन्मद सुगारिवं नमस्ते ॥ २३ ॥
शूलिन पाहिनी देवि पाहि पङ्केन चाम्बिके । घण्टा स्वनेन स्तः
पाहि ना पञ्चानिः स्वनेन च प्राच्यां रक्ष प्रसी क्त्वा च चण्डिके
रक्ष दक्षिणे, भ्रामणे नात्म शूलस्य उत्तरस्यां तथे श्वरि ॥ २५ ॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्यविचरन्ति ते, यानि चां स्वर्ग घोणणे
तै रक्षा स्मा तथा भुवम् । खड्ग शूल गदा दोनि यानि चाञ्जाणि तेभ्यके,
कर पञ्चव संगीनि तैस्मा नक्ष सयं व ॥ २७ ॥ भूमौप्रादेशं कृत्वा प्रणमेत् ॥
इति मन्त्रेणार्घ्यं स्थं पूगीफलं श्वेष्टा । सम्मुखे निवेद्यः । ॐ अनेन सफलार्घ्येण
दास्तु सदा ममः ॥ इत्य शूल विरापाध्यां दकेन देवतां स्नापयेत् ॥ ॐ भूमौ वा
स्वः भ्रामहात्रिपुर सुंदर्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि नमः ॥ ततः मूलमंत्रेण ग-
न्धाक्षत पुष्पधूप दीपत्रिपूजयेत् । पुनः संतर्पयेत्-मूल मन्त्रेण पुष्पान्तान्-
शुक्त पत्रेत्-यथा आं ऐं क्लीं सौः ॐ नमः कमिस्वरि इच्छा काम फलप्रदे
सर्वधत्तवशं करि सर्व जगत्क्षोभणकरिहुं हुं हुं द्रा द्रीं क्लीं ब्लूं सौ क्लीं ऐं
४६ कामेस्वरिनित्यां श्रीपादुका पूजयामिति द्वां हस्तेन । माला मन्त्रं संतर्प-
येत् । (वामे पां भूमि निक्षिपेत्) इतित्रिः ॥ अं आं ॐ अः पर्यन्तं ॐ भूः भुवः
स्वः श्री महात्रिः । पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमः ॥ इति पुष्पाञ्जलिम् ।
ॐ पुनः पुनः पुनः माला मन्त्रं पूजयामि नमः कामेस्वरिं तर्पं ॐ पुनः स०
प्रार्थनाम्-ॐ विष्णु राम समप्रभां मृग पतिं स्तब्धशिवतां भीषणाम्

कन्याभिः कल्याण रोटे विलम्बस्तुभिरा सेविताम् ॥ हस्तैश्चक गदाभि
रोटे विशिख्यं चार्धं गुणं वर्जनीम् विभ्राया मनलात्मिकां शशि धरो दुर्गा
घिनयां भजे ॥ सर्वं स्वरूपे ! सर्वेशे सर्वं शक्ति स्वरूपिणि । पूजां
गृहाण-कोमारि ! जगन्मावर्तमोऽस्तुते ॥ ओं भू भुवः स्वः श्रीमहाविपु
मुन्दये नमः प्रार्थनां स० ॥ तथा च । वैदिकं धार्मिकं सूक्तं प्रार्थनैव
समर्पयामिः ॥ नमो देव्यै महादेव्यै० वा श्री शुक्लं प्रा] अथ आवाहार्चनादि
परिवार पूजनम्-शुक्ल पद्मेयजेन्नित्या कामेश्वर्यादि पोटश ॥ कृष्णपद्मे
विशिष्टायाः कामेश्वर्यं सदानकाः ॥ इति वचनान् ।-प्रयोगो यथा-

भगमातिनी माह-आं ऐं भग भुगेभगिति भगो हरिभगमाजे भगवदे
भग गुणे भग योने भगनिपाविनि सर्वं भगवशंकरि भगहृये नित्यक्लिन्ने
भग स्वरूपे सर्वं भगानि मेघानय वरदे रेते सुरतेभगक्लिन्ने क्लिन्न द्वे
क्लेदय द्रावय अमोये भगविष्णे लुभङ्गो भय सत्रं सत्वान् भगेरगि ऐं
व्लूं व व्लूं मे व्लूं ओ व्लूं हैं क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय
स्त्री हरेत्ये हा भगमातिनी नित्या आ पादुका पूजयामि नमः ॥
नित्यक्लीञ्चा मन्त्र माह-शिराचर एकां दशार्णः । इहो नित्य
क्लिन्ने मन्त्रे स्थाहा नित्यक्लिन्ना नित्या श्री पादुका पू० ॥
भेनडामंत्रमाह-इं ओं क्रों क्रों क्रों चों छों ओं ज्ञां स्थाहा भेक-
डानित्या श्री पा० । वह्नि वासिनीर्मंत्रमाह-सावेति-ॐ हा वह्नि
वासिन्यैनमः वह्नि वासिनि नित्या श्री पादुका पूजयामि नमः ॥
महाविषे श्री मंत्र माह-ॐ हां क्रों सः नित्य क्लिन्ने मन्त्रे
स्थाहा ॥ महाविषेश्वरेनित्या श्री पा० ॥ शिव दूती मंत्र माह-
ॐ हां शिव दूत्ये नमः ॥ शिव दूतीनित्या श्री पा० ॥ त्रिवि
मंत्र माह-ॐ हां हुं रे च छे छः ओं हुं छे हां फट् त्रिवि-
नित्या श्री पा० । कुत सुन्दरी मंत्र माह-लूं ऐं स्त्री सौं
कुत सुन्दरीनित्या श्री पा० ॥ नित्य मंत्रमाह-लूं ऐं स्त्री सौं
ह्रीं० सक्री हरौ मीं लीं ऐं लीं व्लूं सः नित्या श्री पा० ॥
नील पञ्चार्जुनी मन्त्रमाह-ओं हां क्रों हूं हां क्रों नित्य मदद्रेहुं
क्रों नील पञ्चार्जुनीनित्या श्री पा० ॥ विजया मंत्र माह-ऐं हरेन्न
विजयाये नमः विजयानित्या श्री पा० ॥ मंत्र मन्त्र मंत्र माह-ओं
ओं मंत्रमन्त्राय नमः सौं मन्त्राय श्री पा० ॥ आस्ता माजिन मंत्रमाह-
ओं नमोभगवतो न्यात्रा माजिनि देवि सर्वं भूत संहारकारिके जात वेदभि
प्रर्नान्त प्रमलनि अल यन्मन्त्रमल हुं रं हुं फट् आस्ता माजिनो
नित्या श्री पा० ॥ विजय मन्त्र-माह अं वक्रों विजया नित्या श्री
पा० ॥ एता र्पच दरा नित्या ॥ एता ॥ शिख्योये र्पच दरा र्पय

विन्दौ मूलेन पोडशीं यजेत् ॥ अं मूल महा त्रिपुर सुन्दरी नित्या
 श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ विन्दुत्रिकोण यो मध्ये त्रिभंगीभिः
 पंक्तिं त्रयेणगुरु न्यजेत् ॥ ते त्रिविधा इत्याह ॥ यथा-पर प्रकाशा नन्दनाथ,
 श्री पादुकां पूजयामिः ॥ पर शक्त्यं वा श्री पा० भोगदा नन्दनाथ श्री०
 पा० ॥ गगनदा नन्द नाथ श्री पा० ॥ भोग शक्त्यम्वा श्री पा० ॥
 त्रिन्दो प्रागादि दिक्षु पूर्वा म्नाय देवता की पा० ॥ दक्षिणा त्राय
 देवता श्री पा० ॥ पश्चिमा त्राय देवता श्री पा० ॥ उत्तरा त्राय
 देवता श्री पा० ॥ ततः पंच पंचिकाः पूजयेत् ॥—तत्राय पंचके ।
 मूलेन श्री विद्या मध्ये पूज्या ॥ दिक्षु लक्ष्म्या द्याः लक्ष्मी मंत्र
 माह—श्री लक्ष्मी श्री पा० । इति पूर्वे । महा लक्ष्मी मंत्र माह—
 ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलेकमला लये प्रसीदर श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा लक्ष्-
 म्यै नमः महा लक्ष्मी श्री पा० ॥ दक्षिणे ॥ त्रिशक्ति मंत्र माह—
 श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिशक्ति श्री पा० ॥ पश्चिमे ॥ सर्व साम्राज्या संप्रमाह—
 श्रीं सहकल ह्रीं श्रीं सर्व साम्राज्या श्री पा० ॥ उत्तरे ॥ द्वितीय
 पंचके—पर ज्योतिर्-मंत्र माह—ॐ ह्रीं हंसः सोहं स्वाहा परं ज्योतिः
 श्री पा० ॥ पूर्वे ॥ पर निष्कल शाम्भवी मंत्र माह—ॐ परनिष्कल
 शाम्भवी श्री पा० दक्षिणे ॥ अजयामाह—हंसः अजया श्री पा० ॥
 पश्चिमे ॥ आदिज्ञांत वर्णास्तु म.तुकाः ॥ अं आ० हं मातृका
 श्री पा० उत्तरे ॥ तृतीय कल्प लता पंचके ॥—स्वरिता मंत्र माह—
 ॐ ह्रीं हुं त्वेच्छेच्छः स्वीं हुं चे ह्रीं फट् त्वरिता श्री पा० ॥
 पूर्वे ॥ परि जातेरचरी मंत्र—माह ॥ ॐ ह्रीं हंसकल ह्रीं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै
 नमः पारि जातेरचरी श्री पा० । दक्षिणे ॥ त्रिपुटा मंत्र माह—श्रीं ह्रीं क्लीं
 त्रिपुटा श्री पा० ॥ पश्चिमे । द्वां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः पंच बाणेशी श्री पा०
 उत्तरे ॥ कामधेनु पंच के ॥ अमृत पीठेशी मंत्र माह—ये क्लीं सौः अमृत
 पीठेशी श्री पा० ॥ पूर्वे ॥ सुधा श्री मंत्र माह—ह्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं
 सुधा श्री पा० । दक्षिणे ॥ अमृते श्वरी माह—सौः क्लीं हे अमृते
 श्वरी श्री पा० ॥ पश्चिमे । अन्नपूर्णे श्वरी मंत्रमाह—ॐ ह्रीं श्रीं
 क्लीं नमो भगवतिमाहेश्वरि अन्न पूर्णे स्वाहा अन्न पूर्णा श्री पा० ॥
 उत्तरे ॥—रत्न पंचके—सिद्ध लक्ष्मी मंत्र माह—ये विज्ञाने क्लीं मद-
 द्ये कुले हसौः सिद्ध लक्ष्मी श्री पा० । पूर्वे । दक्षिणे मातंगी—ये क्लीं
 सौः ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवती मातंगीश्वरि सर्वं जन मनोहरि सर्वराज
 पशं करि, सर्वं दुष्टं मृग वशं करि सर्वं लोक व शं करि ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं
 मातंगी श्री पादुकरं प्र० ॥ दक्षिणे ॥ मुञ्जेश्वरी माह ह्रीं—मुञ्जेश्वरी श्री
 पा० ॥ पश्चिमे ॥ चाणदी मंत्र माह—ॐ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि

वाराहवाराहमुखि ऐं ह्रीं ऐं अघेअं विनिनमः । रुधेहं धिनिनमः । जमेजोभिनि
नमः मोहे मोहिनि नमः स्तमे स्तंभिनि नमः ऐं ह्रीं ऐं सर्वं दुष्टं प्रदुष्टानां
सर्वेषां सर्वं वाक्चित्तचक्षुर्मुखगति जिह्वा स्तम्भं कुरु २ शीघ्रं वरा
कुरु २ ऐं ह्रीं ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा वाराही श्री पा० उत्तरे ॥
एवं पंच पंचिकाः सम्पूज्य दर्शनानि यजेत् ॥ शिव दर्शन श्री पा० ॥
शक्ति दर्शन श्री पा० ॥ ब्राह्म दर्शन श्री पा० ॥ सौर सोगतम् ॥ अं
मूलेन त्रिस्तव्येत् ॥ अङ्गुष्ठ तर्जनी योगे ज्ञान मुद्रां प्रदर्शयेत् । भूवन्व
माख्य बिन्दु पर्यन्तं ॥ प्रतिलोमे नया वरण पूजा आवरण देवता नामादी
मा पा श्री चोले अनेतु श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ अग्नीशा द्युवायव्यं
पुरोदिद्वय पूजनम् ॥ आग्नेये इत् ॥ ईराः शिरः । नैरित्ये शिखावायव्ये
कवचं । पुरो नेत्रे । दिद्वय ॥ प्रयोगो यथा—ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः
इदं वाग्देवता श्री पा० । आग्नेये ॥ ॐ ह्रीं श्रीं शिरः वाग्देवता श्री
पा० ॥ ईराः ॥ कयेइत ह्रीं शिखा वाग्देवता श्री पा० । नैरित्ये ॥ इस
कद्वय ह्रीं कवचं वाग्देवता श्री पा० ॥ सकलह्रीं नेत्रमग्नेदेवता श्री पा० ॥
पुरी ॥ नौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं दिद्वय ॥ श्री पादुकां पूजयामि वाग्देवायै
नमः ॥ अक्षम् ॥ त्रिरेखं भूँ गृह मस्ति । वस्थाधर रेखायां अष्ट
विभु ऊर्ध्वं भधरचाणिमाया दरा सिद्धीयजेत् ॥ ह्रीं श्रीं अष्टिमायै शिद्धि
अष्टिमां श्री पादुकां पू० ॥ ह्रीं श्रीं महिमायै शक्तिर्महिमां श्री पादुकां पू० ॥
ह्रीं श्रीं लघि मायै शिद्धिलघिमा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं निरिमायै शिद्धिगिरिमां
श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं प्राप्तयै शिद्धि प्राप्तयै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं प्राकाम्यै शिद्धि
प्राकाम्यां श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं इप्तिमायै शिद्धि ईप्तिमां श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं
वसितायै शिद्धि वसितां श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ ध्यानम्—तत्
हेम समानाभाः पारांक्राधरा शुभाः । सावकेभ्यः प्रवच्छन्ति रत्नोष
णं विवर्तयेत् ॥ पाद्य गन्धाक्षत पुण्यादिभिर्नैवद्यान्तं सम्पूजयेत् ॥

भूगृह द्वितीय रेखायां परिचमादि प्राङ्माया अष्ट मान्ययेत् ॥
ह्रीं श्रीं माद्री मानुका श्री पादुकां पूजयामि नमः । ह्रीं श्रीं मादेवरी
मानु का श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं कौमारी मानुका श्री पा० । ह्रीं श्रीं
वेष्णायी मानु का श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं वाराही मानु का श्री पा० । ह्रीं श्रीं
श्री इन्द्राणीमानु का श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं चामुण्डा मानुका श्री पा० ॥
ह्रीं श्रीं महा लक्ष्मी मानु का श्री पा० ॥ ध्यानम्—प्रियां शूलं
शक्तिं चक्रे वरां चक्रं हि ददाम् ॥ यद्यं क्रमेण देवताः मया भिष्ट
प्रदायिष्यः । पापान्ध्या घन गुण्य दिभिः नैवेद्यान्तं सम्पूजयेत् ॥
वस्यन्तु गन्ध वृत्तीय रेखायां विभु ऊर्ध्वमगद्वय दरा संक्षोभाया दरा

मुद्रा यजेत् ॥ ह्रीं श्रीं सोमण मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं द्रावण
मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं कर्ण मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं वरग-
मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं उन्माद मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं महा कशाः
मुद्राः श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं रेखरीमुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं बीज
मुद्रा श्रीपादुकां पू० ह्रीं श्रीं योनि मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं
विलम्बामुद्रा श्री पादु० ॥ एवं ॥ सोम मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ प्रार्थना—
ॐ अग्निष्ट सिद्धि म्यै देहि शरणां गत वत्सला । भक्त्या समर्पये
तुभ्यै मिदमा, वरणा चंनम् । इदमा वरणा चंनम् ॥ उतः पाषा-
दिसि नैवेद्यान्नं संपूज्यः अं० मूलेन पुण्या जलिदद्यात् ॥ ततः
पोडशारे विलो मेन परिचमादि पोडश कामा कर्षणः पाः राक्षीः
पूजयेत् ॥ तर्पयेत् ॥ यथा—ह्रीं श्रीं कामा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥
ह्रीं श्रीं बुद्ध्या कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अर्धं कारा कर्षणी-
शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं शब्दाकर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं स्पर्शा
कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं स्पर्शा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं
रूपा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं गन्वा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥
ह्रीं श्रीं विद्या कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं धैर्या कर्षणी शक्ति श्री
पा० ॥ ह्रीं श्रीं नामा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं बीजा कर्षणी
शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अमृता कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं स्तुत्या
कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं शरीरा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं
भात्मा कर्षणी शक्ति श्री पा० ॥ प्रार्थना—अग्निष्ट सिद्धि म्यै देहि शरणां-
गत वत्सला । भक्त्या समर्पये तुभ्यै द्विविधा वरणाचंनम् । इति संप्राप्य ॥
एताः पोडश गुप्त योगिन्यः पूजितास्तर्पिताः संतिवत्युक्त्वा ॥ द्रावणो मुद्रां
दर्शयेत् ॥ अष्टवर्गा न्वितेः षोडशपूर्वाद्यु लोमेना नंग कुरामा पाः पूज-
येत् ॥ यथा—ह्रीं श्रीं अनंग कुशला श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग मेखला श्री
पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग मृदला श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग मृदला
तुरा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग रेखा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग वेगा
श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग डकुंशाः श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग
माहिनि श्री पा० ॥ एवं तृतीया वरणीः सम्पूज्य सप्त सं सोमणे
पठे एता अष्टौ गुप्त तर योगिन्यः पूजिताः सन्तु ॥ प्रार्थना—

चोरबी मुद्रा—बामे मुष्टि दृढं बद्ध्या उर्ध्वीं प्रविष्टार येत् । आनन्देशाम
अर्चा तं मुद्रा लोभाच्च दवदनोत्तिष्ठन्नोपणी मुद्रां इति ॥

द्राविणी मुद्रा—अगुष्ट गर्भित मुष्टि बन्धेन इव पालिता । विपुत्रिका
परारम्भेन मुद्रात्का शब्द नाहिनीति मुद्रा वाम पाद तले पृतातः ॥

अभिष्टु शिद्धिं मे देहि शरणागन् वत्सकः । भक्त्या समर्पये तुभ्यं
तृतिया वरणाचने ॥ इति सं प्रात्प्य ॥ पाद्यगन्धाक्षत पुष्पादिभिः
नेत्रेद्यान्त सम्पूज्य इत्युक्त्वा कर्पण मुद्रां दर्शयेत् ॥ पुनः तपयेत् ॥—

उत्तरचतुर्था वरणे चतुर दशारे कादि चतुर्दशार्ण युते । इत्
गोपेद्याद्युक्त रूपा कर्पण पाशरर वाम कराः । पान पात्रां कुतबा
दक्षकराः सर्वे सं चोभयथां या रचतुर्दश शक्तम् ॥ शक्ति पदादिका-
परिचमादि विलोमतः पूज्याः ॥ यथा—ह्रीं श्रीं सं चोभरणी शक्ति-
श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं शशिणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं कर्पणी शक्तिः
श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं हृद् करी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सं मोहिनी-
शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं स्तनन कारिणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं
श्रीं जम्भनि का शक्ति श्री पा० ह्रीं श्रीं वशं करी शक्ति श्री पा० ॥
ह्रीं श्रीं रञ्जनि का शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं शर्वो न्मादिनि वा
शक्तिः श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वायं सावित्री शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं
श्रीं सर्वं सम्पत्ति रूपिणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं मन्त्रमयी
शक्ति श्री पा० ह्रीं श्रीं सर्वद्वन्द्वं चय करो शक्ति श्री पा० ॥ पर चतुर्था
रण माराय मयं सौभाग्य दे चक्रे इमा चतुर्दशमम्प्राय योगिन्यः ।
पूजिता सत्त्वि त्युक्त्वा गृह्य मुद्रा दर्शयेत् ॥ प्रार्थना—अभिष्टुशि-
द्धिमे देहि । मरणा गत वत्सन्ते भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्था वरणा-
चने ॥ इदमा वरणा चनम् ॥ पाद्यगन्धाक्षत पुष्पादिभिः सम्पूज्य ।
मूले पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा । वरयमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ पूजितास्तपिता
इमा ॥ एादि दश वर्ण युते दशारे पश्चिमादि व्युत्क्रमेण
सर्व सिद्धिप्रदाया या देवी प्रदाया वरा पूजयेत् ॥ यथा—
ह्रीं श्रीं सप्त सिद्धि प्रदा यादेवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व सम्प-
त्प्रदा देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व प्रिय
करी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व मंगल कारिणी देवी श्री पा० ॥
ह्रीं श्रीं सर्व काम प्रदा देवी श्रीपा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व दुःख विमो ।

कर्पण मुद्रा—परि कर्षं करो सप्त्या वंगुप्ती कारये ममो ॥ अनामा त्व-
गेते इत्वा उर्जस्यो कृदिला इती ॥ कनिष्ठके त्रिषुं वीर निव स्थाने महे-
रारी ॥ त्रिलोके देवं वमाग्राता त्रिपुरा हान कर्मणिः इति कर्पणी ॥

वरयमुद्रा—पुष्टा हारी करो इत्ता उर्जस्यो वंगुप्ती इती ॥ परि कर्षं
करो येन मध्यमे उदरो गते ॥ कर्मेण देवि ते नेत्रकनिष्ठ नामिका दयः ॥
क्यान्त्र निरिहा । कर्षां अगुप्ता वम देवताः मन्त्रेण परमे शक्ती कर्षं वरय करो
मर्ति ॥ इति वरय मुद्रा कर्पणम् ।

त्रिनी देवी श्रीपादुका० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं मृत्यु प्रशमनी देवी श्री
पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं विघ्न निवारिणी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं
सर्वाङ्ग सुन्दरी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं शौभाग्य दायिनी देवी
श्री पा० ॥ एवं पंचमा वरण सम्पूज्य सर्वार्थ साध के चक्रे इमा
दश कुलयोगिन्यः पूजिताः सन्तिव त्युक्त्वा ॥ प्रार्थना—अभिष्ट सिद्धि
म्मे देहि शरणां गत वत्सलेः भक्त्या समर्पितुम्यं पंचमा वरणा
चंनम् ॥ पाद्य गन्धाक्षत पुष्पादिभिः नैवेद्यान्तं सम्पूज्य ॥ उन्माद
मुद्रां दर्शयेत् ॥ ततो परे दशारे प्राचरणयुक्ते ज्ञान मुद्रा वर दक्ष
कराः तंकरा पाश वाम करा उद्यन्नविनिभाः सर्वज्ञा या देव्याद्या दश-
पूजयेत् ॥ यथा—ह्रीं श्रीं सर्वज्ञा देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व
शक्ती देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व ऐश्वर्य्य फल प्रदा देवी श्री
पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व ज्ञान मयी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व व्याधि
विनाशिनी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वा धार स्वरूपा देवी श्री
पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व पापहरा देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वा नन्द
मयी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व रक्षा स्वल्पिणी देवी श्री पा० ॥
ह्रीं श्रीं सर्व सितार्थ फलदा देवी श्री पा० ॥ इति परिचमादि विलो-
मगाः ॥ एवं पष्ट मा वरण मय्यर्च्य सर्व रक्षा करे चक्रे इमा
दश निर्गम योगिन्यः पूजिता सन्तिव त्युक्त्वा कुरा मुद्रां दर्शयेत् ॥
प्रार्थना—अभिष्टसिद्धिम्मेदेहि—शरणां इत वत्सलेः भक्त्या समर्पये
त्तुम्यं पष्टमा वरणा चंनम् इति सं प्रार्थ्यः पाद्यगन्धाक्षत पुष्प धूपदीप
नैवेद्यान्तं सम्पूज्यां कुरा मुद्रयाम्प्रदर्शयेत् ॥

ततोष्टारे रक्तं यत्र वाणधर दक्ष करा धनु विद्या वाम करा
न्यासोक्ता अष्ट वसिन्या या तंकरा वीज पूर्विका यजेत् ॥ ह्रीं श्रीं
अं आ० अः क्लृं वशिनी वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अं
आ० अः क्लृं ह्रीं कौमारी वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अं-
आ० अः क्लृं मादिनी वाग्देवता श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अं आ०

उन्माद मुद्रा—संमुखीनु करो कृत्वा मध्यमा मध्यमे मुजे ॥ अनामिके
तु सरले तदध स्तर्जनी द्वयम् ॥ दंडा कारो ततो गुप्ठी मध्यमा नख
देशगो ॥ मुद्रेशा न्मादनी नाम वस्त्रेदिनी सर्वं योषिता ॥

अंकुरा मुद्रा—धृज्वी मध्यमिकाकृत्वा तर्जनी मध्य पर्वणि । संयोग्या
कुन्तये त्रिचिन्मुद्रैपांकुरासंज्ञिकम् ॥

सेचरी मुद्रा—मध्यदक्षिण हस्तेतु सम्य हस्तेतु दक्षिणम् । बाहू कृत्वा-

अ एतू विमला वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अ आ० अ
 श्रीं अरुणा वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अ आ० अ हस्तं
 जयनीवावाग्देवतायै श्रीपादुका० ॥ ह्रीं श्रीं अ आ० अ हस्तं शर्वेशी
 वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अ आ० अ हस्तिकौलिनीवरावतायै श्री पा०
 एव सप्तमा वरण भिष्टवा सर्व हरे चक्रे इमा अष्टारैहस्य योगिन्य
 पूजिता सत्वि त्युक्त्वा ॥ प्राथना अभिष्ट सिद्धिमे देहि शरणा गत
 वत्सल भक्त्या समर्पयेत्तुभ्य सप्तमा वरणार्चनम् ॥ इति प्रार्थयेत् ॥
 पाद्य गन्धाक्षत पुष्पादिभि नैवेद्यान्त सन्पूज्य । रेचरी मुद्रा दर्शयन् ॥

स्तोऽकथादि वरणरचिते त्रिकोणे पश्चिमाद्यनु लोमेन चतुर्दक्षस्व स्व
 बीजपूर्वकान् जभ मोह वसस्तभ विशेषण विशिष्टान् कामेश्वर कामेश्वर्यां
 वर्ण धनु पाशाकुशान्पूजयेत् ॥

यथा—ला वा सा द्वा द्वी क्लीं ब्लू स कामेश्वर कामेश्वरी जभय
 वाणश्री पा० ॥ पश्चिमे ॥ ध य कामेश्वर कामेश्वरी मोहन धनु श्री
 पा० ॥ उत्तरे ॥ आ ह्रीं कामेश्वर कामेश्वरीवशीकरवाश श्रीपा० ॥ पूर्वे ।
 क्रीं कामेश्वर कामेश्वरी स्तम्भनाकुश श्री पा० ॥ दक्षिणे अग्नि दक्षिण
 धामकोणे पुकूटत्रय, क० ह० स० ॥ पूर्वे रुद्रविष्णु ब्रह्माशाकृत्याश्वतिस्र कामे
 श्वरीवज्रे श्वरी भगमालिनीसद्मा पूज्या ॥ प्रयागोयथाक एई० हं कामरूप
 पीठे क मेश्वरी रुद्र शक्ति श्री पा० ॥ ह सकल ह्रीं पूर्वागिरी पीठे वज्रे
 श्वरी विष्णु शक्ति श्री पा० ॥ सकल ह्रीं जाल-धरो पीठे भग मालिनी
 ब्रह्म शक्ति श्री पा० ॥ एव मष्टमा वरण भिष्टवा सर्व सिद्धि प्रदे चक्रे
 इमा अर्त रहस्य योगिन्य पूजित सान्त्वित्युक्त्वा मन्त्रेण पुष्टाब्जलि
 दत्वा बीज मुद्रा प्रदर्शयेत् ॥ यथा प्रायना -अभिष्ट सिद्धिमे देहि शरणा-
 क्तवत्सने भक्त्या समर्पयेत्तुभ्य अष्टमा वरणार्चनम् ॥ इदमा वरणा
 र्चनम् ॥ पाद्य गन्धाक्षत पुष्प धूपधीप नैवेद्यादिभि सन्पूजयेत् । मूले
 पुष्पाब्जलिदत्वा मुद्रा प्रदर्शयेत् ।

तदा -अ आ० इत्यादिमूल विद्या पठित्वा ध्यात्वा विन्दौ श्री मन्त्रि-

महा -वि हस्तो स परि वर्धय ॥ कनिष्ठ नामिदा देहि पुत्राजे न क्रमेश
 तजनीम्यासमाना-न्तेकवर्षमविमध्यमे । अंगुष्ठी तुमहा दि विसरता कारयत्सम ।

बीज मुद्रा -अगुष्ट गर्भिणी सेव सक्षिराध समीरितेति अगुष्ट गर्भ नृष्टिद्वय
 इ यम ॥ गीनि मुद्रा नमंथ कनिष्ठि वे यथा तजनीम्या अनामि के ॥ अना
 मिनीर्ध्वं सक्षिराध दार्ध मध्य मया रथ । अगुष्टाद्वय न्यस्य योनि मुद्रेयने
 रिवेति ॥ ३० वशीकरण-पाठ ॥

पर सुन्दरी शङ्कुको पूजयामि इति यजेत् ॥ एवं नवमावर्ण्य माराध्य सर्व
काम प्रदे वक्रं सर्वाभीष्ट दायिनी परा पर इहस्य योगिनी श्री मन्त्रिपुर
सुन्दरी पूजितास्त्वित्युक्त्वा योनि मुद्रां प्रदर्श्य त्रिस्तंभयित्वा धूपदीपा
दीनि दत्त्वा अग्नोवावाह्य हुत्वोदासयेत् ॥ अग्नि स्थापनम् । (प्र० ३०)

पार्थना-अभिष्ट सिद्धि म्ये देहि शरणां गत वत्सलेः भक्त्या
समर्पये तुभ्यं नवमा वरणार्चनम् ॥ इति सं प्रात्यर्च्यः ॥ पाद्यगन्धाक्षत
धूप दीप नैवेद्य पुष्पै नानाविधैर्दिशेत् । वह्निसम्पूज्य पूर्वोक्त श्रीमद्
त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ॥ योनि मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ अथ शत वरदी

श्री सत् चण्डिविधानम् ।

विधानं प्रयोगो यथा-शास्त्रोक्त विधिना शङ्कुतलये भवान्या लयेवा ॥
मंडपं वेदि मध्ये निर्माय ॥ प्रतीच्यां कुण्ड मध्येवा कृत्वा-सकल्पं
विधाय ॥ कृत नित्य क्रियो मुक्त कामः शत चण्डी विधान महं
करिष्य इति ॥ मातृ स्थापन नांदी आद्यं विधाय स्वस्ति वाचनं
कृत्वा ॥ उक्त लेखणान् दश विप्रान् मधु पक्वं वस्त्र हेम दाना-
दिना धुणुपात् ॥ तेष यजमान दत्ता सनेषु दत्तमालाभिः समाहि-
ताः सुमन सोमगवतीं स्मरं तः सप्त स्तीमूल मन्त्रेण वेद्यां कुंभ-
सस्थापयित्वा तत्र दुर्गा मा वाह्य पोडरो पचारैः सम्पूज्य तदग्रे
प्रत्येकं दश कृत्वः सप्तसती म युतं च नवार्ण्य जपेयुः ॥ हविष्य
भोजन ब्रह्म चर्चमू शयना स्मृत्यास्पर्शादि नियमां रच चरेयुः ॥ यजमान
अ द्वि वर्षा या वक्रतक्षणा अधि कांगी त्यादि दुर्लक्षणा रहिताः
कुमारी त्रिमूर्तिकल्याणादिनाम्नी दश कन्या भोजन वस्त्र हेम दाना
दिनामंत्रा चार मयो मित्यादि मंत्रेणा वाह्यजगत्पूज्ये स्वादि स्व० स्व०
पंचैः पूजयेत् ॥

नवार्ण्य चण्डिका मंत्रं जपेयु आ युतं पृथक् ॥ यजमानः पूजयेच्च
कन्यानां दशकं शुभम् ॥ द्वि वर्षा या दशा व्दावाः कुमारीः परि
पूजयेत् ॥ नाचिष्यं गीन हीनांतीं कुष्टिनीं च व्रणां क्षिदाम् ॥
अथां कारणां केकरां च कुरुषां रोम युक्त लुम् ॥ दासी जावां
रोगयुक्तां दुष्टां कन्यां न पूजयेत् पित्रांसर्वेष्ट सं सिद्धे यशते चत्रियो
ज्ञवाम् ॥ वैश्यानां धन लाभाय पुत्राप्त्यै शुद्धजायजेत् ॥ द्विवर्षा सा
कमा र्युक्ता त्रिमूर्तिं हायन त्रिका ॥ चतुर्वेदा तु कल्याणी पंचवर्षां
तुरोहिणी । पञ्चदा कालिका प्रोक्ता चण्डिका सप्त हस्त्यनी ॥ दष्ट
वर्षा शान्भवी त्या र्हा च नव शायनी ॥ सुभद्रा दश वर्षोक्ता

स्ता मंत्रैः परि पूजयेत् ॥ एकान्दा याः प्रोक्त्य भावो रुद्राब्दास्तुवि-
वजिताः ॥ तासां मा वाहने मंत्राः प्रोच्यन्ते शङ्करो दिताः । मंत्रा-
क्षमयो लक्ष्मीं मातृणां रूपवारिणीम् ॥ नव दुर्गात्मिकां साक्षात्कन्या
मा वाहयाम्यहम् ॥ कुमारि कादि कन्यानां पूजा मंत्रा न्नुवेऽधुना ॥
जगत्पूज्ये जगद्गद्ये सर्वं देव स्वरूपिणि ॥ पूजागृहाण कुमारि जग-
न्मातरं नमो स्तुते ॥ त्रिपुरात्रिपुरा धारां त्रिवर्गं ज्ञान रूपिणीम् ।
त्रैलोक्य यन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजया म्यहम् ॥ कलार्त्मिकां कला ती-
तां कान्त्यङ्गदयां शिवाम् ॥ कल्याणं जननीं देवीं कल्याणीं
पूजयाम्यहम् ॥ अणिमादि गुणाचारा मकारा चक्षरात्मिकाम् ॥ अन-
तो शक्ति कां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ कामचारां शुभां
कान्तां काल चक्र स्वरूपिणीम् ॥ कामवां करुणो दारां कालिकां
पूजयाम्यहम् ॥ चण्डवीरां चण्ड मायां चण्ड मुण्ड प्रमज्जनीम् पूजयामि
महा देवीं चण्डिकां चण्ड विक्रमाम् ॥ सदा नन्द करीं शांता सर्व
देव नमस्कृत्याम् ॥ सर्व भूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजया म्यहम् ।
दुर्गे दुस्तरे काम्ये भवाण्यं विनाशिनि ॥ पूजयामि सदा भक्त्या
दुर्गा दुर्गातिं नाशिनीम् ॥ सुन्दरीं स्वर्ण वणां भां सुख सौभाग्य
दायिनीम् ॥ सुभद्रा जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ एतै
मंत्रैः पुराणोक्तैः स्नातां कन्यां प्रपू जयेत् ॥ गंधै पुष्पैर्भक्ष भोज्यै

त्रिमूर्तिपूजनम् ॥

ब्रह्मैरा भरणै रपि ॥ वेद्यां विरचिते रन्ये सर्वं तो भद्र मण्डले ॥
घटं संस्थाप्य विधि वत्तत्रा वाह्य शय्ये च्छिवाम् ॥ तदमं कन्यका
श्चापि पूजये द्राघक्षणा नपि ॥ उपचारे स्तु विविधैः पुर्वोक्त वारणा
न्यपि ॥ एवं तु द्राघक्षणाः पूज्याः अन्यथा होम मा चरेत् ॥ पाय
मात्रे स्त्रि मध्वक्ते द्राक्षरभा फले रपि ॥ मानु लिंगे रिनु खंडे
नारि केलैः पुरे स्तिलैः ॥ जारो फले रात्र फले रन्ये मंधुर यस्तुभिः
सप्त शत्या दशा दृत्या प्रति रजोक्तं द्रुवं चरेत् ॥ अयुर्व च
नवार्थेन स्थापितान्नो दिक्कान्तः ॥ अर्चयति कथम् ॥ ततः आचरण
देयता नाम मंत्रे स्तारादि स्वाशं वे रेकेका मादृति दृत्वा ॥ सर्वष्ट
मिद्धिः कामराज्यविद्याः हवनीय द्रव्य प्रयोगे द्रष्टव्यः च—
उन्मनीयम् ॥

उन्मनीयं—इयं कल ही कल ही एक सद्म ही मकल दल ही भी स्त्री

कृष्णाय गोविन्दाय गोपी जन वल्लभाय स्वाहा ॥ मिति पुष्पा हुति
कृत्या देवी कुम्भ स्थासम्पूज्य । आवाञ्ज जुहुया द्रव्यं पंचविंशति सं-
यया ॥ ईशानाग्रेय नैर्ऋत्य वायुकोणेषु चक्र मातृ ॥ श्री चक्रस्य
वर्ति दद्यात् हुत शेषेण संयुतः (ईशानादि कोणेषु वटुक योगिनी
क्षेत्र पाल गणेशेभ्यो नमः) । वटुक बलि मंत्रमाह—ऐशेहि देवी
पुत्र वटुक नाथ कपिल जग्न भार भासुर विनेत्र ज्वाला मुख सब
विघ्ना भ्राशाय २ सर्वो पचार सहितं बलिं गृह्ण २ स्वाहेति ॥

श्री वटुकादि पूजनम् ॥

योगिनी बलि मंत्र माह—ऊर्ध्वं प्रक्ष्वाड तो वा त्रिविगगन त-
लेभूतले निष्कले वा पातालले वा नलेवा सलिल पवन यो र्यत्र
कुत्रस्थितावा ॥ क्षेत्रे पीठो व पीठा विबुध कृत पद्म धूप दीपादि
केन प्रीता देव्येः सदानः शुभ बलि विधिना पातु वीरेभ्यः वंधाः ॥
वां योगिनीभ्यः स्वाहांवां भूमि नंदाक्षरो मनुः । योगिनी नां बलि
दद्यात् अनेन विधि पूर्वकम् ॥ क्षेत्र पाल बलि मंत्र माह—छां क्षी
छं क्षी क्षी क्षः हुस्थाने क्षेत्र पालेश सर्व काम पूरय स्वाहेति ॥
गणेश बलि मंत्र माह—ॐ गांगी गूं गं गणपतयेः—
वर वरद सर्व जन मे वशमानाय सर्वो पचार सहितं

बलिं गृह्ण २ स्वाहेति ॥ किंचिद्वक्त्री कृता मध्या गणनाय बलीस्मृता ॥
अनामा सम्यग्मां गुप्ता योगिनां तु बली पुनः ॥ एवं सम्पूज्य संस्तुत्य ॥
नत्वात्मन्युप सं हरेत् ॥ सिद्ध मंत्रः प्रकुर्वीत प्रयोगान् शिवभाषितान्
इत्यादि श्री चक्रस्य बलिं दद्यात् हुत शेषेण संयुतः ॥ आचार्यादि परिवार
पूजनं समर्पयामि नमः ॥ नतोर्नमस्कारान् ॥ ऋत्विगभ्यः प्रत्येकं निष्कमकौ
सुवर्णापित सुवर्णं सवत्सगा दानादिकं दद्यात् ॥ ततो विप्रः कलशो
वरुन यज्ञमानं निगम पुराणोक्त मंत्रै रभिमन्त्रेपुराशिपरच दद्याः ततः
शतं विप्रान्नाना विधान्भोजयेत् । तेभ्योपि यया शक्ति दक्षिणां
दद्यात् ॥ गृह्या दाशिपस्तवः ॥ शुभम् ॥

चंडीविधेः प्रकार माह—

स्तचंडी विधानं दशगुणं सहस्र चंडीतत्र शतविप्रप्रवरणम् ॥ ते शत-

विप्राःप्रत्येकदशदशसप्तशती पाठान्कुर्युः । अयुतमयुतंनवार्या जपंचतुर्युः ॥
शत कन्या श्वभोज्याः पूज्याः ॥ एवंदश दिनेषु संपाद्य एकादशेहि सप्त-
शती शता वृत्या प्रति श्लोकं तल्लक्षणं सख्यं नवार्येन च होमः ॥
श्रुत्विभ्योपि दश २ निष्क मितं सुवर्णं प्रत्येकं दद्यात् ॥ शेषं पूर्वोक्तवत् ।
इति सहस्र चंडी विधिः ॥ एतत्फलं—एवं सहस्र संख्याकं मिति ।
एतद्युतचंडी विधानं लक्ष चण्डी विधानयो रूपं लक्षणं सहस्र चंडीदश
गुणोऽयुतचंडी विधिः सदशगुणो लक्षचंडी विधिः । जपे होमे दक्षिणा यां
कन्यासु विप्रभोजने च दशगुणत्वम् ॥ इति चंडीपाठ विधिः । वर्णनम् ॥

श्री देव्या आर्तिः ॥

आरती वक्तिका ॥

ढका—जे अम्बे गौरी मय्या जय अम्बे गौरी ।

तुमको निशदिन घ्यावे हरी ब्रह्मा शिवजी ॥

भाग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को ।

उज्ज्वल से दोऊ नयना चन्द्र वदन नीको ॥ टेक

कमक समान फलेवर रक्षांवर राजे ।

रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर साजे ॥ टेक

वेइरि वाहन राजे राइग राप्पर धारी ।

सुर नर मुनि जन शेवत तिनके दुःख हारी ॥ टेक

फानन कुण्डल शोभन नासामे मोठी ।

फोठिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ॥ टेक

रांभु निशुंभ विहारे महिषा सुर पाठी ।

धूम्र विलो वन नयनां निशिदिन मदमाति ॥ टेक

पौसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरों ।

वाजत ताल मूर्दगा श्रीर वाजत ढमरू ॥ टेक

भुजा चार अति शोभत राइग राप्पर धारी, मन वाञ्छित फल पाये

संयत नर नारी ॥ टेक ॥ कण्ठन बाज विराजत अमर कपूर पाठी ।

भीमाल केतुमे राजत फोटी गल ज्योति ॥ टेक ॥ यह अम्बे की आती जो

फोई नर माये । भनत शिवानन्द स्वामी सु खमम्पति पाये ।

टेक—जे अम्बे गौरी मय्या जय अम्बे गौरी ॥ से० विरवनाथ रामा

श्री अग्नि स्थापनम्

अग्नि स्थापन विधिमाह—आसनम्—वागीशी वागीश्वर्यो योंग
पीठात्मने नमः ॥ मायादिकः पीठ मज्जस्तयोस्ते नाशनं दिशेत् ॥ यजेतौ
तारनायाम्नां गंधाद्यै रुपचारकैः ॥ १ लक्ष्मी नारायणौ त्वर्धे द्वैष्ट्यवे होम-
कर्माणि ॥ सूर्य कान्ता दरणितः श्रोत्रिया गारतो पिवा ॥ पात्रेण पिहिते
पात्रे वह्नि मानाय ये ततः ॥ अस्त्रेण दाय वत्पात्रं वर्मणो द्वादये तुतम् ॥
अस्त्र मन्त्रेण नैश्वत्ये कव्यादां शनत स्तज्जेत् ॥ मूलने पुरतो घृत्वा संस्का-
राश्च ततरचरेत् ॥ वीक्षणाद्यान्पुराप्रोक्ता नर्त्तनं प्रोक्षणं मा चरन् । पर-
मात्मा नलेनाथ जाठरेणापि वह्निना ॥ भ्रमरैः स्न्यं वह्नि वीजा ब्रैतन्यं
योजयेत्ततः ॥ तारेण चाभि मज्ज्याग्निं सुधया धेनु मुद्रया ॥
अमृतीकृत्य संरक्षेदस्त्र मन्त्रेण मंत्र वित् ॥ मुद्रयात्वव गुंठिन्या
कवचेना व गुंठयेत् ॥ कुण्डो परितवो वह्नि भ्रामयेद्भिध्रुव
(ॐ) पठन् ॥ नवार्णं मुद्गरति ॥ शय्यागता मृतुस्नाता नीलेदोवर
धारिणीम् ॥ देवेन भुज्य मानांतां स्मृत्वा तद्योनि मण्डले ॥ इशारे चोधिया
व ह्निस्थापये दात्म सं मुद्रम् ॥ मूलं नवार्णं चपठ आनु सृष्टधरातल-
तरेकार्पाशेन्दु संयुक्तं गगनं वह्नि चैततः ॥ तन्याय हृदया तोय नवार्णोग्नि
निधापनेः विश्राण्या च मनं देवी देवयोज्वालये ह्रसुम् ॥ चतुर्विंशतिवर्षेण
मन्त्रेण श्रपणा^१ विभिः । चित्तिगल हना द्वादह युग्मं पचद्वयम् ॥
सर्वाज्ञा ज्ञापय स्वाहा मन्त्रो वेद भुजाक्षरः प्रदेश्यं ज्वालित्नीं मुद्रामुत्थाय
विहितां जलिः ॥ श्लोक रूपेण मन्त्रेण हुपतिष्ठे हु तारानम् ॥

क्रव्या दाशं मासाशि नो कन्देयस्तत्र भागस्त मज्जत्यजेत् ॥ बान्ह
वीजात्—रमिति वीजात् ॥ सुधया व वीजेन धेनु मुद्राः अपि गुंठिन्या अपि
वक्ष्यते ॥ कवचेन दुर्वीजेन ॥ त्रिधुवं प्रणयम् ॥ (ओ)

१ हौ वागीशी वागीश्वर यो योंग पीठात्मने नमः ।

२ ओ हौ लक्ष्मीनारायण म्या नमः ॥

हुं वह्नि चैतन्याय नम इत्यग्नि स्थापने नवाक्षरो मंत्रः ॥

चतुर्विंशति वर्षा मुद्गरति—चित्तिगलहन २ दह २ पच २ सर्पशा शायप
स्वाहा । वेद ४ भुजा रक्षा श्वतुर्विंशति वर्षाः ॥

ज्वालित्नी मुद्रा लक्षणम्—मणि कन्ध युती चैत्वा प्रसृता गुणिकी करो ॥
कनिष्ठा गुष्ठ युगुले मिलित्वातः प्रसारित ॥ ज्वालित्नी नाम मुद्रेयं वैश्वानर
प्रिय करीति ॥

१ हुं वह्नि चैतन्याय नम २ अग्निम् ३ आयदादिभिः ॥ ३ ॥

श्राफ रूप अग्नि मंत्र माह—अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जात वेदं हुता
शनम् ॥ सुवर्णं वर्णं ममल समिद्धं विश्व रचतो मुखम् ॥ अथाग्नि
मंत्रं विन्यस्येत्तद्विधानं मुदीर्यते ॥ वैश्वानरति जातेति वेदंते स्याद्विहा
यद् ॥ लोहि ताक्ष पदात्सर्वं कर्माण्य तेषु साधय ॥ वह्नि प्रियांतो
मंत्रोय पडिश्शस्य क्षणन्वितः ॥ अग्निं शङ्खन्दो देवतास्य भृगुर्गायत्र
पात्रकाः । रं वीजं ठ द्वयं शक्ति हं वने विनि योजनम् ॥ लिंगे
पायी मूर्ध्निवक्त्रे नसि नेत्रे खिलांगुले ॥ वह्ने जिह्वाः स्वबीजा
द्वयान्यमेन्द्रेता नमो न्विताः ॥ हिरण्या गगना रक्ता कृष्णा सुप्र
भयान्विता । बहु रूपाति रक्तेति जिह्वा दमुन सोमताः क्षीपि का नल
वायु स्थाः साद्या नरण मिलोमतः । सेन्दवः सप्त जिह्वानां सप्तानां
योजता गताः ॥

१ गीर्वाण पितृ गन्धर्वं यक्ष नाग पिशाचकाः । राक्षसा श्चेतिजि
ह्वानां देवतास्तत्पले न्यसेत् ॥ व्यासे चने व्युत्क्रमः स्या द्बहु
रूपाति रिक्तयोः । नेत्रेति रिक्तान्य स्वव्या सर्वांगे बहु रूपिका ॥
मदस्त्राचिपे हृदयं स्वस्ति पूर्णाय मस्तकम् । उत्तिष्ठ पुरुषा येति
शिखामंत्रोयमीरितः ॥ धूम्रान्ते व्यापिने वर्मं सप्त जिह्वाय नेत्रकम् ।
अस्त्रं वसुधरा येति पटंगानि समाचरेत् ॥ मूर्ध्नि वामे सकं पार्श्वे
कटौ लिंगं कटौ पुनः । दक्षे पार्श्वे सके न्यसे मूर्ती रष्टौ विभा-

अग्निमंत्र माह—वैश्वानर जात वेद इहा य लोहिताक्ष सर्वं कर्माणि
साधय स्वाहेति । ठ द्वयं स्वाहा । देन्ता भतुर्प्यताः जिह्वा बीजा न्युपरति ।
क्षीपिकेति । एतेषु स्थिताः सकाराद्याः विक्षोभ धर्माः स य ॥ बलस्येति
सेन्दवो नुस्वारद्या इने सप्त हिरण्यादि जिह्वानां बीजानीत्यर्थः । तदश्च ॥
स्व' हिरण्यायै नमः । ध्य' गगनायै नमः ॥ ध्य' रक्तायै नमः ॥
अ' कृष्णायै नमः । ह्य' मुप्रेमायै नमः । प्र' बहुरूपायै नमः । ध्र'
अग्नेः सप्त जिह्वी नामानि ॥ ध्र' ध्र' र' ध्र' ह्र' प्र' ध्र' अग्ने-
आनेरिक्तायेनम् जिह्वा बीजानि ।

गीर्वाण दयो जिह्वाधि देवा जिह्वा स्थानेषु पस्यान्यस्ता ॥ मुरेभ्यो
नमः लिंगे इत्यादि । जिह्वाय देवता नामानि । प्रयोगोस्तु । ध्र'
ध्र' र' ध्र' ह्र' प्र' र' हिरण्याय नमो लिंगे । ध्र' र'
ध्र' ह्र' प्र' र' गगनायै नमः पात्रे ॥ र' ध्र' ह्र' प्र' र'
रक्तायै नमः मूर्ध्नि । ध्र' ह्र' प्र' र' कृष्णायै नमः ॥ वक्त्रे ।
ह्र' प्र' र' मु प्रकारे नमः । नधि । प्र' र' बहु रूपायै नमः
नेत्रे ध्र' अतिरिक्तायै नमः अजिलागे ॥ मस्तके शिरो मंत्रः । सद्व्याधिपे

वसोः ॥ ताराग्रये पदा द्यास्ता श्चतुर्थी ममसान्विताः ॥ जातवेदाः
सप्त जिह्वो हव्य वाहन इत्यपि ॥ अश्वो दारज संहोन्य स्तथा
वैश्वानरा हव्यः । कौमार तेजाः स्या द्विष्व सुप्रो देव मुस स्तथा ॥
ततो न्यसे जिजे देहे पीठं हाट करे तमः । वह्नि मण्डल पर्यन्त
मण्डू कादि ययो दितम् ॥

पीता श्वेता शृणा कृष्णा धूमा तीव्रा सु लिंगिनी । हविरा
ज्वालिनी चेति कृशानोः पीठ शक्तयः ॥ बीज बन्धुया सनायेते
द्वंद्वं तः पीठमन्त्रकः । एवं विन्यस्य पीठान्तं पावर्क चिंतयेत्तनौ ॥
ध्यानम्-त्रिनेत्रमारक्तं तनुं सु शुभं वस्त्रं सुवर्णं स्रजं मणि मीढं ।
वराभयं स्वस्तिकं शक्तिं हस्तं पद्मस्थं मा कल्पं समूहं युक्तम् ॥ एवं
भ्यास्वा चर्चनं कुर्वन्मानसं विधिं बद्धसोः ॥ परिधिं च तत् स्तोत्रैः
कुण्डं स्थण्डिलं मेववा ॥ दर्शनं परि स्तरे दर्शितं प्राग्मे रत्नं गणकैः ।
प्रत्यङ्मुखिणं सौम्यास न्यसे श्रीं परिधीं न्कृत्वा ॥ पालाशाश्वि-
स्वर्जां स्तोत्रं मन्त्रं विष्णुं शिवायन्यजेत् । बह्वी तत्पीठं मभ्यर्च्य
वाहयेत्स्वहृदो नलम् ॥ गन्धादिभिः समभ्यर्च्य पूजयेत्पावर्कं
प्रती । पठ् सु कोणेषु मण्ये च जिह्वा स्त देवता यजेत् ॥ ईशा-
नादिषु वाय्वंत कोणेषुपठ समर्चयेत् ॥ हिरण्याद्य तिरङ्कां ता
मण्येतु बहु रूपिणीम् ॥ केसरे प्वंग पूजा स्याहले ध्वष्ट स्वमूर्तयः ।
माचरोष्ठीं दत्तां तेषु भैषाः- सु स्तदग्रतः ॥

धरा पुरेतु शक्राद्या यज्ञाद्या युधसंयुताः । एतमा वरणं युक्तं सप्त

पीठाद्या पीठ शक्तयः । बीज मिति रं बद्धपाठनाय नमः । इति-
पीठ मंत्रः ॥ ध्यानं त्रिनेत्र मिति ॥ वर स्वस्ति कौ दक्षवैः । अभीति
शक्तिं कामयोः ॥ आकलनं आभरणानि क्लृप्तं पुनम् ॥

हृदयम् । स्वस्तिः मन्त्रम् । उत्तिष्ठ पुरुषाय शिवा, पूजं व्यापिने
कर मन्त्रं जिह्वाय नेत्रम् । पनुर्भराय अक्षयम् श्रीं अग्रये जात वेदने नमो
मूर्त्ति । श्रीं अ० उ० योन । श्रीं अ० हव्यवा० अंसके । अश्वीद-
राय फार्वे । वैश्वानराय कटो । कौमार ते० लिंगे । विश्व मू० कटो ।
देव मु० दक्ष पक्षे ॥ ततो न्यसे जिजे देहे ॥ पठ हाटक रत्नः ॥

तीर्थ मन्त्रेण ॥ मन्त्रेण यमुने नैव गात्रानरि सरस्वति नवदे
विष्णुकायेरि नजोस्ति न्स्वविधिं कुर्वत्य नेन ॥ ययवाग्रदुष्ट मुद्रया ॥
युग्मी मध्य भिक्षा कृता तर्जनी मण्यर्चयि संयोग्या कुंभे द्विचित्र
मूरेषां कुरा कञ्जिदेवि हृदयम् ॥

भिः पावकं यजेत् असि तांगो रुग् रुचंढः क्रोध सन्मत्त संज्ञकः
कपाली भीषण इवापि संहार इवाष्टमैरवाः ॥ वामे कुशा नथा
स्तीर्य तत्र वस्तूनि निक्षिपेत् । प्रणीता प्रोक्षणीपात्रे आज्य स्थालीं
स्रुवं स्रुचम् ॥ अघो मुखानि चैतानि होम द्रव्यं घृतं कुशान् ॥
समिधः पंच पाताशी रन्य दप्युप योगियत् ॥ कृत्वा पवित्रे
मूलेन प्रोक्षेत्तानि शुभांभसा । उत्तानानि विधां याथ प्रणीतां
पूरये ज्वले ॥ तीर्थमग्रेण तीर्था नि सूरया तत्रा हुयेत्सुधीः ॥
पवित्रे अक्षतां स्तत्रनिक्षिप्योत्पवनं चरेत् ॥ अघो दीर्घ्यां निधायै
तां प्रोक्षण्यां तज्जलं क्षिपेत् ॥ हवनोर्य द्रव्य जात मुत्ते तोयैः
पवित्रगैः ॥ मूलेन मूल गायत्र्या यद्वा इदमंत्रवतः । दक्षिणे पीठ
मासाद्य तत्र मङ्गाय माह्वयेत् ॥

अग्नि माषाः सिद्धयोष्टीव्रह्मणः पीठदेवताः । तारहत्पूर्वकोष्ठे तो ब्रह्मो-
मंत्रोस्य पूजने ॥ हस्ताभ्यां स्रुक् स्रुवौ धृत्वात्तापयेन्नित्ररधो मुखौ ।
वाम हस्तेन वौधृत्वा दर्भदंष्ट्रेण मार्जयेत् । सं प्रोक्ष्यं प्रोक्षणी तीर्थैः
प्रतप्य पूर्णं वस्तुनः । न्यस्याप्नो मार्जनान्दर्मां स्तयोः शक्ति त्रयंन्यसेत् ॥
इच्छा ज्ञान क्रिया संज्ञा चतुर्थी नम सान्निता ॥ दीर्घत्रयन्दु युग्मयोम
पूर्णकं स्थान कत्रये ॥ हृदायुस्तु चिन्यसे १ च्छक्तिं स्रुधे शंभु तत स्तुतौ ।
मूत्र त्रयेण सं घेष्ठथ संपूज्य कुसुमा दिभिः ॥ कुशोपरिन्यसे इत्ते तयोः
संस्कार इत्यतः । अग्नोक्षितायामाग्न्यस्थ स्थाल्या मार्ज्यं विनि क्षिपेत् ॥
विक्षिणादिक संस्कार संस्कृतं मूल मंत्रवतः । गोमुद्रया मृत् कृत्य पट-
संस्कारां स्तत्रचरेत् ॥

कुण्डोद्धूते वायु कोयो स्थितेगारे विनिक्षिपेत् ॥ इदंतिशोपनं प्रोक्तं
दर्भ युग्मं प्रदीपितम् ॥ आज्ये क्षिप्त्वाह दा बहो पवित्री करणं क्षिपेत् ॥
आश्वी नीरा जये दीप्त दर्भ युग्मेन वर्षणा ॥ अभिष्टो वन मुक्तं तदीप्तं
दर्भं त्रयं घृते ॥ दर्शये दस्त्रेणो हयोते गृहीत्वा घृत पात्रिकाम् ।

अग्निमाषा ऋष्टमे वक्ष्यते ॥ अक्ष मंत्र मुद्ररति ॥ तारेति । ओ नमो
ब्रह्मणे इति ॥ स्रुक् स्रुव संस्कार माह ॥ हस्ताभ्यामिति ॥ शक्ति त्रय माह ॥
इच्छेतिः दीर्घत्रयन् आह क भ्योमहः ॥ तत्पूर्वं आह इच्छा शक्ते नमो मूले ॥
॥ शानशक्ते नमः मध्ये ॥ इदं क्रिया शक्ते नमः अंते ॥ गोमुद्राः धेनु मुद्रा ॥

१—ओ नमो ब्रह्मणेः २ नमः शक्ते नमः शमवे ॥

नाही त्रय मिति ॥ हृदा मितला मुपुष्पा ख्या ॥ तृतीया मध्ये विधाया ॥
हृदा ॥ नम इति मन्त्रेण ॥ अग्नये स्वाहेति दक्षुनेत्रे ॥ सोमाय स्वाहेति
वामे ॥ तदा इति अनुष्ठये नाम्ने तैत्र मुख प्राक् सोमवतोऽयमर्थः ॥

संयोज्यामनौ तदंगारान्सलिलं संस्पृशेत्सुधीः ॥ अंगुष्ठा नामिकाम्यान्तु
दर्भावा दायिनि क्षिपेत् । त्रिरग्निं संमुखे त्याज्य मस्त्रेणोत्पवनं त्विदम् ॥
इदात्म संमुखं तद्वदाज्य क्षेपस्तु संज्ञवः ॥ नीराजनादि संस्कारे प्वग्नौ
दर्भान्विनिक्षिपेत् ॥ दर्भं द्वयं ग्रंथि युतं घृतमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ वाम दक्षिण
योः पक्षौ स्पृष्ट्वा नाडी त्रयं स्मरेत् । दक्षिणा द्वाभ्यतो मध्या द्वादशाय घृतं
सुधीः ॥ अग्नयेऽग्निं प्रिया सोमाय स्वाहेत्यग्निं नेत्रयोः ॥ जुहुया दग्नी
पोमान्यां स्वाहेत्यदिण तृतीयके ॥

पातये वाहुतेः शेषमाहुतिं ग्रहण स्थले ॥ भूयो इदा वत्त भागा
दादा याज्यं मुखे यजेत् ॥ अग्नये स्विष्ट कृते तस्मै प्राश्यो द्वादनं
मवम् ॥ नरसिंहं विनाविष्णु मन्त्रे नेत्र द्वयं यजेत् ॥ नरसिंहा
न्य देवेषु बह्वे नेत्र त्रयं स्मृतम् ॥ महा व्याहृतिभिर्व्यस्त समस्-
ताभि चतुष्टयम् ॥ आहुती ना त्रयं बहिर् मन्त्रेणै वत तश्चरेत् ॥
घृता हुतिं भिरष्टाभि रेकैकां संस्कर्ति चरेत् ॥ ओमत्याग्रे रमुं
संस्कारं करो म्यग्निं बलभा ॥ इत्थं मनुं जपन्गर्भा धानं पुंस वनं
ततः ॥ सीमंतोन्नयनं जात कर्म कृत्वा ततश्चरेत् ॥ बह्वो पच समि-
द्धीमा भ्राता पनयनं उसोः ॥ कुर्या देवाभिधानेन पूर्ववन्नाम शुष्मणः ॥
नामानन्तर मे तस्य पितरौ स्वर्पये द्वादि ॥ अन्न प्राशं तथा घौलो-
पनयो दारयो जनम् ॥ संस्काराः स्युर्विवाहान्ता मृत्यताः क्रूर कर्मणि ॥
एकै का माहुतिं कुर्या बह्वे जिह्वागमूर्तिभिः ॥ इन्द्रादिभिरच वज्रा-
यै द्विठातै जुहुया ततः ॥ सुवेणा ज्यं चतुर्वारं निधाय सुवितां
सुधीः ॥ अपि धाय सुवे ऐतौ गृही यात्कर युग्मतः ॥ निष्ट-
न्मूलं तयो नर्भौ रुक्वामे कुगुमक्षिपेत् ॥ वामस्त ना तं तन्मूलं

शौ अस्याग्रे गर्भाधान संस्कारः कराभि स्वाहेत्यादि ॥ पंच समिधा
होमा इवो रमोः नालाग्नयना स्य. संस्काराः ॥ देवाभिधानेन देव
नाम्ना शुष्मणाम् नोम पूर्ववत् ॥ घृता हुत्वष्ट केन कुर्यात् ॥ रामाभिः
कुण्डाभि रित्यादि ॥ एतस्याग्रेः पितरौ वागीशी वागीशी कुण्डात् स्व
द्वादि भ्यसेत् ॥ उपनयन मुक्तीवम् । दार याजनम् विवाहः ॥

१ नरसिंहश्च अन्ये देवा भवेषु । २ भूः स्वाहा भुवः स्वाहा स्वः
स्वाहा नू भुवः स्वः स्वाहा । ३ वैभानर जात वेद इहा षड लोहि
ताय सर्व कर्माणि साधय स्वाहा ॥

इदुम पुष्पन् ॥ दशधा म्पत्नेन विभजेन ॥ तमेव विभाग माह ॥
पूर्वेति ॥ नोत्र पटक् ॥ नाद्याः नायका पदेव । नृगप. ५५३ ॥

कृत्वाग्निं मनुना सुवीः ॥ जुहुया द्वौ पङ्क्तेन संपत्स्यथं मतं द्वितः ॥
महागणेश मंत्रेण व्यस्तेन दशधा ततः ॥ जुहुयाच्चसमस्तेन चतुर्वारं
घृता हुवीः । पूर्वं पूर्वं युतं बीजं पट्कं वाणाश्च सायकाः ॥ मुनयो
मार्गणाश्चेति विभागस्तन्मनोः स्मृतः ॥ वारो लक्ष्मी गिरिसुता
कामोभूर्गण नायकः ॥ चतुर्थ्यं तो गणपति वंरांते वरदे तिव ॥
सर्वांते जन मित्युक्त्वा मेव शान्ते तु मानय ॥ स्वाहां तो वसु
युगमार्गो महा गणपतेमनुः । एवं कृत्वाग्निं सस्कारं पीठं देवस्य पूजयेत् ॥

श्री अग्नि पूजनम्

तत्रोष्ट देव मा वाह्य मुद्रा आवाहनादिकाः ॥ प्रदर्श्य वह्निं रूपस्य देवस्य
वदने पुनः ॥ मूलेन जुहुयात्पच नेत्र संख्या घृता हुवीः ॥ वज्रकेवी
करां त्रिभिर्देवयोस्ते न जायते ॥ नाबी संधान सिद्धयर्थं वह्निं देवतयो
स्ततः ॥ जुहुयान्मूल मंत्रेण रुद्र संख्या घृता हुवीः ॥ इष्ट देवस्या घृती
नामे फैका माहुतिं चरेत् । ततस्तु मूल मंत्रेण दशधा जुहुयाद् घृतम् ॥
ततः कल्पोक्त द्रव्येण दशांशं जुहुया ज्ञपात् ॥ होमं समाप्य कुर्वीत पूर्णं

मार्गणाः पंच ॥ गणेश मंत्रमाह ॥ वार इति ॥ १ जिह्वेति स्वदेवता
नामप्युप लक्षणं २ ॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गणपतये वर वरद सर्व
जनं मे वरा मानय स्वाहा ॥ प्रयोगस्तु श्रीं स्वाहा ॥ श्रीं श्रीं स्वाहा ॥
श्रीं श्रीं ह्रीं स्वाहेत्यादि ॥

आवाहनादिका अग्ने र्यक्तव्याः । पञ्चनेत्र संख्या पंचविंशतिः ॥ पवित्राणि
प्रति पजिमाह ॥ बद्धा मिति ॥ विधिं ब्रह्माणां विमुच्य-दक्षिणा दत्वेति शेषः ॥
४ कुर्यान् परिस्तरण सहितान् वसा वग्नी ॥

तर्पण मंत्र माह—मूल मंत्रान्ते कृष्णं तर्पं यामि नमः ॥

कृष्णं अभिषिचामीत्यभिषेके ॥ जरा दशांशं स्तोमः—तदशां शेनाभिषेकः
तदशा शेन विप्र भोजन मिति ॥ पचामं पुरश्चरस्य मिति कनीयान् पचः ॥

अभिषेक वज्रो मध्यमः ॥ तर्पणाभिषेकं वरं स्फुंगउत्तमः पचः होम
दशार्थं द्विज भोजन मिति ॥ किं बहुना ॥

बद्ध मादण्य भोजने देवता प्रसादो भवति ॥ ब्रह्माखन् एवं प्रापनां नमस्तर
गुणस्य द्रव्यं देव अभिष्टमिति ॥

प्रार्थी चंद्र कूर्कर ॥—पवरातीर निवासिनि मिति द्रष्टव्यः ॥

ततः शर्मना मयि भुञ्जीतः ॥ मयद्रुह मिति ॥ विश्वशर्मा लालमो० योयो
पां वा तनुः भक्षया भक्षया० मितियुनना ॥ शुभम्भुषण ॥

हुवि मन-यधीः ॥ होमाऽशिष्टे नाज्येन पूरयित्वा स्तुवं सुधीः । पुष्प
फलं निधायाग्रे स्तुवेणाञ्जयनां पुनः ॥ उत्थितोवौषडं तेन मूलेन जुहुया
दशौ । तद् द्रव्येणा वृत्तो नाञ्च जुहुया दाहुतिं पृथक् ॥ देवं विसृज्य
स्वहृदि वह्नेर्जिह्वांग मूर्तिभिः । जुहुयान्छहृती हुत्वा प्रोक्षोत्तं प्रोक्षणी
जले ॥ सं प्रार्थ्याः नेनमनुना नत्वातं विसृजेद्वदि ॥ भो भो वह्ने महा
शक्ते सर्व कर्म प्रसाधक ॥ कर्मांतरेपि सं प्राप्ते सानिध्यं कुरु सादरम् ॥
वह्नी पवित्रो निक्षिप्य द्रष्टव्यं बुभुधि क्षिपेत् ॥

विधि^१ विसृज्य सकुराण्यरिधीन्विन्यसे दृष्टौ । पर्व होमं समाप्याथ
तर्पये देवतां जले ॥ आवाह्य तद्दशांशेन तर्पणं दग्धिने चनम् ॥ तर्प-
यामि नम स्वेति द्वितीयां तेषु पूषंरुम् ॥ मूलां तेषु पदं देयं सिंचामोत्य-
निपे वने ॥ ततो नामा विधौ रश्मैस्तर्पयेद्विज सत्तमान् । इष्टं रूपान्समा-
राप्य तेभ्यो दद्याच्च दक्षिणाम् । न्यूनं सम्पूर्णता मेति ब्राह्मणाराधनानूणाम्
देवताश्च प्रसीदति सं पद्यते मनोरथाः ॥

श्री शरत्कालीय नवरात्र पूजामाह ॥

तत्रादौ प्रति पदि कृत्यम् ॥ तत्र निर्णयः ॥ अमायुक्ता न कर्तव्या-
प्रतिपत् पूजनेमम । सुहृत्तं मात्रं कर्त्तव्याद्विवीयादि गुणान्वितेति ॥ पुनः ।
देशभक्तो भवे तत्र दुर्भिक्षं चोपजायते ॥ नन्दायां वशा युक्तायां यत्र
यान्मम पूजनमिति वचनात् ॥ भार्गवार्चन चन्द्रिकायाम् । त्वाष्ट्र
वैधृतियुक्ता चेत् प्रतिपत् चण्डिकाचने । तयो रन्ते विधातव्यं कलशो-
रोपणं गृहे । इति वाक्यात् ॥ चित्र नक्षत्र वैधृति योगं समायुक्तं प्रति-
पत्तिर्धि च यजयित्वा शुद्ध प्रतिपत्तिथौ अथवा द्वितीया तिथौ घट
स्थापनं कुर्यात् ॥ वदितु प्रतिपञ्चुष्टा तदाऽमाया मपिकार्यम् ॥ रात्रौ
स्थापनं कुर्यात् च कुम्भाभिषेचन मिति मत्स्यपुराण वाक्यात् । रात्रौ
घटस्थापनं विसर्जनं च नैव कुर्यात् ॥

अथ प्रयोगः—प्रातः समयेस्नान संध्यादि । नित्यं कमं कृत्वा कदल्या
दिस्तम्भैर्वितान तोरण वस्त्र वैष्टितमण्डिते दुर्गागृहे चतुरस्र पतुर्द-
स्ते वेदिको परिसर्वतो भद्रादि मण्डिते शुद्धगूढ भूमि चन्दना क्षतपु-
ष्पधूपदीप नैवेद्य कुशातिल जल सम्पूर्णं सामग्री सम्पाद्य कमारम्भेदीप
पूजन मिश्राचारः ॥ आचम्य कमपात्रं कृत्वा कुशादौ न्यादाय ॥ ॐ

अथ दुर्गा सप्तशती प्रयोगः ॥

ॐ तमश्चण्डिकायै ॥ अथ प्रयोगविधिः ।

मीमांशे शायनमः ॥ अथ प्रयोगान्तराणि काल्यायनी तन्त्रोक्तानि ॥
प्रति श्लोकं माघतयोः प्रणवं जपेन्मन्त्रं सिद्धिः ॥१॥ अग्रे सर्वत्र श्लोक
पदं मन्त्राय लक्षणम् ॥ सप्रणवमनु लोम व्यादिति त्रयमादौ अन्तेतुवि-
लोमं तदित्येवं । प्रति श्लोके कृत्वा शतावृत्तं पाठेऽपि शीघ्रसिद्धिः ॥२॥
प्रतिश्लोकं भाद्रीजात वेदमश्नुषं पठेत् सयंकाम सिद्धिः ॥३॥ अपमृत्यु
वारणाय प्रवक्तु मन्त्रं पठेत् ॥ आश्रावते च शतमित्यर्थः ॥ प्रतिश्लोकं
एनमन्त्रं त्रयश्लोकं ॥४॥ प्रति श्लोकं श्लोकेन पादिनां द्वाविंशतिपाठादय
मृत्यु नाशः ॥ अस्य केवलं स्थापि श्लोकं च लक्ष्मणमुप सदनं

तस्मत् ३ ओं विष्णु ३ नम इत्यादि-देशकालौ संकृत्य अघोहं त्यादि
 अमुकगोत्रस्य सदारापत्यस्यामुक शर्मणे मम अद्य प्रभृति नवमीपर्यन्त
 मुपवामादि नियमैरिष्ट देवता प्रीति द्वारा त्रिवर्ग सम्पत्ति सिद्धये नव-
 रात्र व्रतं महं करिष्ये । तदङ्गतया करिष्यमाण नव दिन पर्यन्त महर्निशं
 दीप प्रज्वालनादि नवरात्रव्रतकर्माणि निर्विघ्नता सिद्धयर्थमश्रोगणेश्वरस्य-
 ययामिलितोपचारैः पूजनमहं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ एकदन्तशूर्पकणं मित्या
 दीनाभ्यात्वा आवाहनासन पाद्याभ्यां जमन वस्त्र यज्ञोपवीत भूषण गन्ध
 पुष्पाक्षत धूप दीप नैवेद्यान्ते गणा नन्त्रे तिमन्त्रोण गणेशं सन्पूज्य
 स्वशक्तया मातृकां च सन्पूज्य पुण्याहा वाचनं कुर्यात् । सम्भवे ग्रहं च
 सस्याप्य तव ॐ यवोषि यवयास्म द्वेप यवया राती दिवेत्त्वान्त रिच्चा
 यथा पृथिव्यैत्या गुण्वतावाँल्लोकाः पितृपदनापितृ पद्वन मसि मन्त्रेण यवं
 प्रक्षाल्य, शुद्ध मृत्तिकायाः मण्डपं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् । अघोहं देव्या-
 स्तुष्टयर्थं यवा रोपण महं करिष्ये ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ यवत्तं यव रूपोसि
 यत्रार्थे निर्मितोऽसिद्धि ॥ देवीनां तृप्ति कारी च तस्मात्त्वं वरदो भव

रात्रं जपे मन्मथुवारणम् ॥ १॥ प्रतिश्लोकं संस्मरणात् नवदीनार्थे त्रिश्लोकपठे-
 त्सर्गं काय सिद्धिः ॥ ६॥ प्रतिश्लोकं करानुसानः शुभेत्पदं पठेत्सर्वं कार्यसिद्धिः
 ॥ ७ ॥ स्वाभिष्ट वर प्राप्तये एषं देव्या वर लब्ध्वे वि श्लोकं पठेत् ॥ ८ ॥
 सर्वां पत्तिवारणाय प्रति श्लोकं दुर्गेस्मृतेति पठेत् ॥ अस्य केवल स्यापि
 श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षय युतं सदस्यं रात्रं वाजपः ॥ ९ ॥ सर्वां
 बाधेत्यस्य लक्षजपे प्रति श्लोक पाठेवा श्लोकोक्तं फलम् ॥ १० ॥ इत्थं
 यथा यथा चायेति श्लोकं जपे महामारी शान्तिः ॥ १० ॥ ततो वज्रे नृपो
 राज्य मिति मन्त्रस्य जपे पुनः स्वराज्य लाभः ॥ १२ ॥ हितास्ति दैत्य
 इत्यनेव सद्योप बलि दाने घटां गंधने च बाल ग्रह शान्तिः ॥ १३ ॥ तेजोसि
 आद्यापृष्णि मनो लोमेन पठित्वा ततो त्रिपर्णा क्रमेण द्वितीया मनु
 लोमेन तृतीया मित्येव मा च च त्रयेणा शीघ्रं कार्यं सिद्धिः ॥ १४ ॥ सर्वा-
 पृत्ति वारणाय दुर्गेस्मृतेत्यर्थं ततो यदे चित्तयश्च दूरके स्त्यं च तदेते वारि-
 द्य दुःसेत्यर्थं मेव कार्यानुसारेण लक्षययुतं सदस्यं सत्त्वं वाजपः ॥ कामो-
 र्मोत्पत्तं प्रति श्लोकं पठेत्तदमी प्राप्ताः ॥ १६ ॥ प्रति श्लोक मन्त्रेणा
 अस्मिन्निदं पठेत्तु परिहारः ॥ १७ ॥ मारणार्थं मेरुमुक्या समुत्प्रेनि
 श्लोकं पठेत् मारणोक्तावृत्तिभिः फलसिद्धिः ॥ १८ ॥ सानिनामपि चेतामि
 इति श्लोक जप मात्रेणसर्वो मोहन मित्य नुमत्र सिद्धम् । प्रति श्लोकं
 वन्द्य श्लोक पाठेत्त्व वरयम् ॥ १९ ॥ रोगान शेषा निवि श्लोकस्य
 प्रति श्लोक पाठे सकल रोग नाशः ॥ तन्मात्र जपेपिष्ठः ॥ २० ॥

जयंती मंगला काली भद्र काली कपालिनी ॥ दुर्गा चामा शिवा धारी
स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥ इति मन्त्रेण यव मारंष्य ॥ शुद्धोदकेन यवो
परि सेचनम् ॥ अथ घटः स्थापनम् ॥—तत्र-संकल्पः—अपेक्ष
ममेह जन्मनि दुर्गा प्रीतिं द्याप सर्वापेक्षान्ति पूर्वक दीर्घायु विपुलपुत्र
पुत्र पौत्रस्य नव द्विज सन्तानि वृद्धिस्थिर वक्ष्यमी कीर्तिं लाभ शत्रु परा-
जय भद्रमोष्ट सिद्धयर्थं शारद नवरात्र प्रतिपादिविः इति कलश स्थापन
पूर्वकं दुर्गा कुमारी पूजन महं करिष्ये । कलश स्थापन विधिना घट
संस्थाप्य । प्रयोगेषु यथा बहवो या नाडी दक्षा वामा वातद्वारेन स्थापे
त्रिकोणादियंत्रे ॥

यंत्रं मालिख्य ॥ तत्रास्त्रं चालितं पात्रा धारं स्थापयेत् ॥ एक
त्रिंशं चर मंत्रेणाधारं पूजयेत् ॥ तमाह—ॐ रां रीं रुं रमल
वर यूरं अमि मण्डलाय धर्मं प्रदद्या कलात्मने ऐं कलशा धाराय
नमः । तदु परि पात्रा धारो परि आग्नेयी दश कला अर्चये त्वा
पवाह ॥ धूर्वाचिरिति ॥ हव्य कव्यादिका वहा । यं धुन्नाभिः कला
श्री पादुकां पूजयामि ॥ रं ऊष्मा कला श्री पा० ॥ लं ज्वालिनी
कला कला श्री पा० ॥ वं ज्वालिनी कला श्री पा० ॥ मं विस्तु
लिगिनी कला श्री पा० ॥ रं सुत्रे कला श्री पा० ॥ रुं सु रूपाय
कला श्री पा० ॥ रीं कपिलाय कला श्री पा० ॥ रं हव्याय कला

इत्युक्ता सा वहा देवी गंभीरेति श्लोकस्य प्रति २ श्लोकं पाठे पृथग्-
जपे वा विष्णु प्राप्तिर्वा, वै कृत्र नाशरच ॥ २१ ॥ भगवत्या कृत्
सर्वं नित्यादि द्वादशो चर शताक्षरामन्त्रः सर्वं कामदः सर्वापि
धारणरच ॥ २२ ॥ देवो प्रपन्नाति हरे इति श्लोक एव यथा कार्यं
लघायुत सईत्न शतान्य तस्य संकथ्या जपे प्रति श्लोकं पाठे वा सर्वा
पन्निरुद्धिः सर्वं कामाप्तिश्च ॥ एषु प्रयोगेषु प्रति श्लोकं दीपमे
केवलमे वनमस्तुष्टेऽपि शोधं सिद्धिः ॥ प्रति श्लोकं काम वीज
सं पुष्टि तस्य एक चत्वारिंशद्दिनं त्रिंश वृत्तौ सर्वं काम सिद्धिः
॥ २३ ॥ एक विंशति दिनं पर्यन्तं मुक्त रीत्या प्रत्यहं द्वादशा वृत्तौ
वरां करणम् ॥ २४ ॥ माया वीज सं पुष्टि तस्य षट् पञ्च
सहस्रस्य गन्ध दिनं पर्यन्तं त्रयो दशा वृत्ता चत्वारिंशत् सिद्धिः
॥ २५ ॥ तद्वदया मेवदिनं अनुष्टय मेका दशा वृत्तौ सर्वोपद्रव
नाशः ॥ २६ ॥ एको न पञ्चाशद्दिनं पर्यं तं प्रति श्लोकं
भौ वीज सं पुष्टि तस्य पंच दशावृत्तौ लक्ष्मी प्राप्तिः ॥ २७ ॥

प्रति २ श्लोकं चाम्पीज ॥ पुष्टिः च शता वृत्तस्य विष्णु प्राप्तिः

श्री पा० ॥ ॐ कल्यायै कला श्री पा० ॥ पूजयेत् ॥ स्वर्गादि-
निर्मित कलशम् ॥ अस्त्रायकविवि प्रक्षाल्य तत्रा धोरन्यसेत् तमुद्ध-
रति ॥ ॐ हां ह्रीं हुं इमल त्र्यूं इं सूर्यमण्डलाय वसु प्रद द्वादश
कलात्मने ह्रीं कलशाय नमः इति । सूर्य कला आह ॥ कं भं
तपिन्यै नमः खं वं तापिन्यै नमः । गं फं धूम्रायै नमः ॥

धं पं मरीच्यै नमः । कं नं उवाकिन्यै नमः चं धं रुच्यै नमः । छं दंसु
पुम्नायै नमः । जं रं भोगदायै नमः । ऋं वं विरवायै नमः । ऋं एं वोधि
न्यै नमः । ढं ढं धारिण्यै नमः । ढं डं क्षमायै नमः । इत्येकं मण्डलं
सम्पूज्यः । पुनः पूर्ववत् मं तपनी कला श्री पा० । यं तापनी
कला श्री पा० । त्रूं धूम्रायै कला श्री पा० ॥ हं मरिचि कला
श्री पा० ॥ त्र्यूं उवाकिनी कला श्री पा० ॥ लं रुच्यै कला श्री
पा० ॥ मं सु पुम्नायै कला श्री पा० ॥ हं भोग वायै कला श्री
पा० ॥ हुं विरवै कला श्री पा० ॥ ह्रीं वोधिन्यै कला श्री पा० ॥
हां धारिण्यै कला श्री पा० ॥ ॐ क्षमायै कला श्री पा० ॥ मिति ॥
मूल मंत्रं पठन् सुधा जुष्या तोयं सम्पूज्यं तत्र गन्धपुष्पा क्ष्वान्-
मं तपनि कला श्री पादुकां पूजयामि स्यादि प्रयोगे विधेत् ॥ मूल-
विधां च मंत्रं वित् कलशा मृदाप तमः । ॐ सोम मण्डलायेति
पूर्वेत्रिप्रण्डा मुद्रां वध्वा ततः ॐ सांसां सं समलं त्र्यूं सं सोम

॥ २८ ॥ अथस्तत चडो विधिः पूर्वोक्त आग्नि स्थापनादि प्रयोगे
द्रष्टव्यः ॥ श्री रस्तु ॥

अथ देव्याः कवचं प्रारम्भते ।—श्री गणेशाय नमः । अद्येत्यादि०
श्री महा काली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं चण्डो सप्त
सती पाठात्यन्तं करिष्ये ॥ तद्गत्वे नादौ कवचागता कीलक पठन
माद्यं तयो रप्येत्तर शतसंख्य नवार्ण्यं अप पूर्वकं क्रमेण रात्रि सूक्त
देवो सूक्त पठनमते छत्रं प्रयपठनं च करिष्ये । इति सकल्पः ॥
प्रथमं नमो देव्यै महादेव्यै शिवायैस्ततः नमः ॥ नमः प्रह्वयै भद्रायै
निश्वा. प्रणोता. स्मताम् ॥ इति मंत्रेण पञ्चो पचारं पुस्तक पूजां
कुर्यात् ॥ आ रस्तु श्रीगणेशाय नमः ॥ ओं नमश्चरिहकार्यै ॥
मांसेष्टेन उवाच । ओं यद् गुप्तं परमं लोके—

सर्वं रक्षा करं नृणां ॥ यन्नकस्य चिदा ख्यातं वन्मेत्रं हि पितामह
॥ १ ॥ प्रमोदाच । अस्ति गुह्यं तमं विप्र सर्व भूतो पकारकम् ॥
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्वमहा मुने ॥ २ ॥ प्रथमं शैल पुत्री च
द्वितीयं ब्रह्म चारिणी । तृतीयं चन्द्र घण्टेति कृष्णारहेति चतुर्थकम्

मण्डलाय कामप्रद पोडश कलात्मने सौः कलशा मृताय नमः ।
मन्त्राय जलार्चने ॥ अमृतेति ॥ अं अमृतायै कला श्री पा० ॥ आं
मानदायै कला श्री पा० ॥ इं पूषायै कला श्री पा० ॥ ईं तुष्टायै कला
श्री पा० ॥ उं पुष्टायै कला श्री पा० ॥ ऊं रत्यै कला श्री पा० ॥ ऋं
धृत्यै कला श्री पा० ॥ ॠं शशिन्यै कला श्री पा० ॥ लृं चन्द्रि-
कायै कला श्री पा० ॥ ॡं काल्यै कला श्री पा० ॥ एं ज्योत्स्न्यायै
कला श्री पा० ॥ ऐंधियैकला श्री पा० ॥ ओं प्रीत्यैकला श्री पा० ॥
औं अंगदायै कला श्री पा० ॥ अं पूर्वायै कला श्री पा० ॥ अः
पूर्णा मृतायै कला श्री पा० ॥ इत्यन्यै सम्पूज्य कुम्भ योनिपुत्रं
प्रदर्शयेत् ॥ तत्र घटो परिप्रतिमां सस्याप्य अथवा तद् भावे दध्य
क्षता संस्थाप्य श्री दुर्गाभावाहयेत् ॥ अथध्यानम्—जटा जूट समा-
युक्तां मूर्ध्नेन्दु कृत शेषराम् लोचन त्रय सम्पन्नां पद्मेन्दु सदृशां
ननाम् ॥ अतसौ पुष्प बर्णा भां सु प्रतिष्ठां सु लोचनाम् ॥ नव
यौवन संपन्नां मदपासुर मर्दिनीम् ॥ त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गं
बाह्वं च वामतः ॥ लोचनं बाह्वं तथा शक्तिं वामतो सन्निवेशयेत् ॥
त्रैलोक्यं पूर्णं चार्यं च पाशमङ्कुश मूर्धजम् ॥ पण्डां च पाशु चापि
वामतः सन्निवेशयेत् ॥ अथस्तां न्यादिपं तद्व द्विरिष्टकं प्रदर्शयेत् ॥
शिरःक्षेत्रे शुक्लवस्त्रं दानयं खड्गं पाणिनाम् ॥ इदि शूलेन निर्भिन्नं
तिथ्यन्मथ विभूषितम् ॥ रक्तं रक्ती कृताङ्गं च रक्त विसंस्कारिते
क्षणम् वेष्टितं नाग पार्श्वेन भ्रुकुटो भीषणा ननम् धनम् हविरपक्व-

॥ ३ ॥ पञ्चमं स्कन्द मातेति पण्डं कात्पायनीति च ॥ सप्तमं काल-
रात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥ ४ ॥ नवमं सिद्धि दात्री च नव
दुर्गाः प्रकीर्तिताः ॥ उक्तान्येवानि नामानि ब्रह्मण्यैवमात्मना ॥ ५ ॥
अग्निनादश्च मानस्तु शत्रुमध्ये गतोरणे विषमे दुर्गमे चैवमथार्वाः
शरणं गताः ॥ ६ ॥ न तेषां जायते किंचिद् दुर्गमं रणसंघटे ॥ नापद्
तस्य पश्यामि शोकं दुःखं भयं न हि ॥ ७ ॥ येस्तु भक्त्या स्मृता नूनं
तेषां वृद्धिः प्रजायते ॥ येषां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ।
प्रेवसं स्थातुं चापुष्टा वागदी मद्विषा सना, येन्त्री गज समा रुद्रा
वैष्णवा गहवा सना ॥ ८ ॥ मादेस्वरी वृषास्त्रा कोमारी शक्ति
पादना लक्ष्मीः पद्मा सना देवी पद्म हस्ता हरि प्रिया ॥ ९ ॥ रवेव
रूपधरा देवी ईश्वरी वृष वाहना ॥ ग्राह्यी हंस समा रुद्रा सर्वा भरण
भूषिता ॥ ११ ॥ इत्येतास्मातरः सर्वाः सर्वयोग समन्विताः ॥ नाना
भरणशोभादया नाना रत्नोप सोभिताः । हरयन्ते रयमा रुद्रा

च देव्या सिंहं प्रदर्शयेत् ॥ देव्यास्तु दक्षिणं पादं समं सिद्धौ
परि स्थितम् ॥ किञ्चिद् दूर्घं तथा वामं मङ्गलं महिषो परि ॥
स्तूयमानं च वद्रूपममरैः सन्निवेशयेत् ॥ अथा वाहनम् ॥ एहि
दुर्गे महा भागे ? रत्नाय मम सर्वदा ॥ आवा ह्याम्यहं देवि ? सर्व-
कामार्थं सिद्धये ॥ अस्यां मूर्तिसमा गच्छ ३३ तिष्ठ ३३ सन्निहिता
भव ३३ स्थिरा भव सुप्रसन्ना भव इत्या वाक्वा पतन्त इति प्रति
प्राप्य । ॐ दुर्गे दुर्गेरघ्वायि ? स्वाहा । जयन्ती मङ्गला कालो
इति मन्त्रेण च दुर्गे देव्यै पाण्याध्यां च मनोय पञ्चामृत स्नान
शुद्धो द्रुक् स्नान वस्त्र यज्ञोपवीत मूपण चन्दन सिन्दूराञ्जना
दर्शादि शोभाय त्रया क्व पुष्प माल्य खिल्व पत्र धूप दीप-
नैवेद्य ताम्बूल दक्षिणादि षोडशो पचारैः पञ्चो पचारैः यथा-

देव्यः क्रोधं ममाकुलाः ॥ १२ ॥ शंखं चक्रं गदां शक्तिं हस्तं च मुक्ता-
मुधम् ॥ खेटकं तोमरं चैव परशुं पारमेष्ठिच ॥ १३ ॥ कुन्ता पुष्पत्रिशू-
लं च शार्ङ्गमां युद्धं मुक्तमम् ॥ खड्गं चर्मत्रिशूलं च पट्टिशं मुद्गरं तथा
॥ १४ ॥ दैत्यानां देहनाशाय भक्तानां ममगाय च ॥ धारं यन्त्या युधा
नीत्यवेधाना च हिता ययै ॥ १५ ॥ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोर
परक्रमे ॥ महा बले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ १६ ॥ त्राहिमां
देवि तुष्येद्ये शत्रूणां भयवर्धिनि ॥ प्राच्यां रत्नं मा मैत्री आग्नेय्यामग्नि-
देवता । १७ ॥ दक्षिणेऽवतु वाराही नैऋत्यां खड्गं धारिणी ॥ प्रतोच्यां
वाहणी रत्ने ह्यायन्यां मृगं वाहिनी ॥ १८ ॥ उदीच्यां पातु कौमारी
ईशान्यां शूलधारिणी ऊर्ध्वं अक्षाणी मे रत्ने दक्षता द्वेष्णवी तथा ॥ १९ ॥

एवं दशदिशो रत्ने चामुपहृदा शिव वाहना ॥ जया मे चाप्रतः
पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ २० ॥ अजिता वामं पार्श्वे तु दक्षिणे
चा पराजिता ॥ शिक्षामेह्योतिनी रत्ने कुमा मूर्ध्नि व्यवाधिता
॥ २१ ॥ माला धरी जल्लाटे च भ्रुवौ रत्ने दशस्त्रिणी ॥ त्रिनेत्रा
वभ्रुवोर्मध्ये यम घन्टा च नासिके ॥ २२ ॥ शंखिनी चक्षुषोर्मध्ये
भोत्रयोर्द्वारं वासिनी ॥ कपोलौ कालिका रत्नेऽर्धं मूले तु शाकरी
॥ २३ ॥ नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्टे च चर्चिका ॥ अधरे
चा मृत कला जिह्वा यां च सरस्वती ॥ २४ ॥ इन्तानुरत्नं कौमारी
कण्ठ देशे तु चण्डिका ॥ घण्टिकाचित्रं घंटा च महामाया च
तालुके ॥ २५ ॥ कामाक्षी चितुकं रत्ने द्वार्यं मे सर्वं मंगला ॥
मोघायां मद्रकाक्षी च पृष्ठे वंशे धनुर्धरी ॥ २६ ॥ नील मोवा
वहिः कण्ठे नालिका मल कुवरी ॥ स्कन्धयोः गङ्गिनी रत्नेऽह मे

सं मनैर्वा दुर्गां दुर्गां सम्पूज्य प्रणम्य शार्थयेत् ॥ आगच्छ देवदेवेशि !
 दैत्य दर्पं निपू दनि ! ॥ पूजां गृहाण सुमुखि ? नमस्ते शङ्कर
 प्रिये ? ॥ सर्वं तोयं मयं चारि सर्वं देव समन्वितम् ॥ इमं घटं
 समागच्छ तिष्ठ देव गणैः सह ॥ दुर्गे देवि ? समागच्छ सान्नि-
 ध्यं कुरुवै ध्रुवम् ॥ बलिं पूजां गृहाण त्वं मष्टाभिः शक्तिभिः
 सह ॥ महिषाक्षि महा माये चामुण्डे मुखे मांलिनि ? ॥ द्रव्य
 मारोग्य विजयं देहि देवि ? नमः सदा ॥ सर्वं मङ्गल माङ्गल्ये-
 शिवे सर्वार्थ साधिके ॥ शरण्या श्यम्बके गौरी नारायणि
 नमोस्तुते ॥ रूपं देहि यशो देहि भाग्यं भगवति देहिमे ॥
 पुत्रं देहि धनं देहि सर्वां कामान् देहिमे ॥ एवं प्रार्थना
 नन्तरं सुमन्त्रि द्रव्यं देयम् ॥ अथ कन्या पूजा ॥—गणेशं वटुकं दुर्गां
 प्रणम्य, संकल्पः अद्यैव मनः प्रीतिः प्रसादाद् धिविव मनोऽभीष्ट कामना
 वासि राज्य करणोत्तर कालिक देवी लोक गमन कामनया कुमारीं वटुकं
 च पूजन एवंकं भोज इत्यामि ॥ मन्त्राक्षर मयीतर्पणीं मातृणां रूपधार-

षत्र धारिणी ॥ २७ ॥ हस्तयो दंष्ट्रिद्वयी रक्षेदम्बिका चांगुलीषु
 च ॥ नखा बद्धेश्वरी रक्षेत्कुक्षीरक्षेत्कुलेश्वरी ॥ २८ ॥ स्तनी
 रक्षेन्महादेवी मनः शोक विनाशिनी ॥

इदं जलिता देवी उदरे शूल धारिणी ॥ २९ ॥ नाभी च
 कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्ये श्वरी तथा ॥ पूतना कामिका मेढू
 गुद्रे महिष बाहिनी ॥ ३० ॥ कट्यां भगवती रक्षेत् जानुनीविन्ध्य
 वासिनी ॥ जंघे महाबला रक्षेत् स्वर्ग कामप्रदायिनी ॥ ३१ ॥ गुल्फयो
 नार्त्तसिद्धी च पाद पृष्ठे तु तैजसी ॥ पादांगुलीषु भी रक्षेत्पादाधः
 स्थल वामिनी ॥ ३२ ॥ दंष्ट्रां करालिनी रक्षेत् केशां स्वैवोर्ध्व
 केशिनी ॥ रोम कूपेषु कौमारी त्वंच वागीश्वरी तथा ॥ ३३ ॥
 रक्त मञ्जा वसा मांसा स्थस्थि मेदांसि पावती ॥ अङ्ग्याणि फाल
 रात्रौ च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥ ३४ ॥ पद्मावती पद्म कोरो कफे
 पूजा नाथिस्वया ॥ ज्वाला मुग्धी नख ज्वाला ममेद्या सर्वं संधिषु
 ॥ ३५ ॥ शुकं ब्रह्मास्त्रं मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ॥ अर्ध
 चारं मनो बुद्धिं

रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥ ३६ ॥ पाङ्गु शनी तथा व्याल मुदा नय समा-
 नरम् ॥ यत्र दस्ता च मेरुदेव्याणं कल्याण शोभना ॥ ३७ ॥ रत्नरूपे च
 गन्धे च रत्नेश्वरी च योगिनी ॥ नक्षत्रं रत्नरत्नं रक्षेत् नारायणी तथा
 ॥ ३८ ॥ प्रागुत्पन्नं वाराहं च मे रक्षेत्तु धैर्यश्री ॥ यथा कीचि च सप्तमी

योम् । नव दुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामा वा हवाम्यहम् ॥ इत्या वाह्य
तत्र पूजा मंत्रश्च ॥ जगत्पूज्ये जगद्धात्रि सर्वं शक्ति स्वरूपिणी पूजां
गृहाण कौमारि ! जगन्मात नमोस्तुते ॥ इति मन्त्रेण पाद प्रक्षालनादिभिः
पूजयेयेत् भोजयेच्च नाना वस्त्र पञ्चाग्रा लङ्कारैः स्व शक्त्या देवी पूजा
नन्तरं नवमी पर्यन्तं प्रत्यहं वा कुर्यात् ॥ एकै कां पूज्येत्कन्यां मेक
घृद्धया तथै वच ॥ द्विगुणा चापि प्रत्येकं नवकं च विशेषतः ॥ द्विवर्ष
कन्या मारभ्य दश वर्षां वधि क्रमात् ॥ पूजयेत्सर्वं कार्येषु यथा विध्युक्त
मार्गतः ॥ अत ऊष्णन्तु या कन्या सर्वं कार्येषु वज्रिता ॥ आयुष्यं वल
घृद्धयथै कुमारि पूजयेन्नरः आयुः काम क्षिमूर्त्तितु त्रिपर्णं स्यफल प्रदाम् ॥
अलक्ष्म्य व्याधि पीडा दुःख दारिद्र्य नाशिनीम् ॥ आरोग्य सुख कामी
च जय कामी तथैव च ॥ यशः कामी नरोनित्यं रोहिणीं प्रति पूजयेत् ॥
विद्यार्थी चा भयार्थी च राज्यार्थी च विशेषतः । शत्रूणां च विना शार्थी
कालिकां पूजयेन्नरः ॥ ऐश्वर्यं सुख कामी च पुत्रा कामी च यो नरः ॥
सङ्गमने जय कामी च चण्डिकां प्रतिपूजयेत् ॥ दुःख दारिद्र्य नाशाय
मृगं समोहना यच ॥ महा पाप विना शायं शाम्भवी च प्रपूजयेत् ॥ सर्वं

च धनं विद्या च चण्डिका ॥ ३६ ॥ गोत्र मिन्त्राणां मे रक्षेत्पशुन्मे रक्ष
चण्डिके ॥ पुत्राव्रक्षेन्महालक्ष्मी भायां रक्षतुभैरवी ॥ ४० ॥ परधानं सुपथा
रक्षेन्मार्गं क्षेम करी तथा ॥ राज द्वारे महालक्ष्मी विजया सर्वतः स्थिता
॥ ४१ ॥ रक्षा हीनं तु यत्स्थानं वाजितं कवचेनतु ॥ तत्सर्वं रक्षमे देवी
जयन्ती पापनाशिनी ॥ ४२ ॥ पद् मेकं नगच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभ मात्मनः ॥
कवचे नावृत्तं नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥ ४३ ॥ तत्र तत्रार्थं
लाभश्च विजयः सर्वं कामिकः ॥ यं यं चिन्तयते कामं तत्तं प्राप्नोति
निरिवतम् ॥ ४४ ॥ परमैश्वर्यं मतुलं प्राप्स्यते मृतते पुमान् ॥
निर्भयो जायते मर्त्यः संमामेध्व पराजितः ॥ ४५ ॥ शैलोक्ये तु भवेत्
पूज्यः कवचे नावृत्तः पुमान् ॥ इदं तु देव्याः कवचं देवानां मपि दुर्लभम्
॥ ४६ ॥ यः पठेत् प्रयतो नित्यं त्रिसंध्यं श्रद्धयान्वितः ॥ देवी कृता भवे
त्तस्य शैलोक्ये चापराजितः ॥ ४७ ॥ जीवेद्वर्षं शतं साम मप मृतपुत्रिय-
जितः नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता विरक्तोदका दयः ॥ ४८ ॥ रथावर-
जङ्गम चैव कुत्रिम चापियद्विपम् ॥ अविचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि
भूतते ॥ भूचराः श्वेचराश्चैव कुलजा रथोपदेशिकाः ॥ ४९ ॥ सहजा
कुजजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ॥ अन्त रिक्त चरा
पीता हाकिन्यश्च मदापन्नाः । २० ॥ मण्ड भूत पिशा - चारच
यच गन्धर्वा राक्षसाः ॥ मण्ड राक्षस वेतालाः ॥

लोकस्यशत्रूणां वपसाधनकर्मणि ॥ दुर्गा तु दुःखनाशाय पूजयेद्यत्नतो बुधः ॥
 शौभाग्यं धनधान्या दिवाच्छिवार्थं फलाप्तये ॥ शुभद्रां पूजयेन्मर्त्यो दाक्षी
 दासादिबृद्धये ॥ अथ त्रिमूर्तिपूजा ॥ त्रिपुरात्रिपुराधारां त्रि वरां ज्ञानरूपिणीम् ॥
 कामदां करुणो दारां कालीं च पूजयाम्यहम् ॥ कल्याणी पूजा मंत्रः ॥—
 कालात्मिकां कला तीतां कारुण्य हृदयां शिवां ॥ कल्याण जननीं
 नित्यं कल्याणां पूजयाम्यहम् ॥ रोहिणी पूजा मंत्रः ॥—अणिमा
 दिगुणा धारा मकारा द्युत्तरात्मिकाम् ॥ अनन्त शक्ति कां लक्ष्मीं रोहिणीं
 पूजयाम्यहम् ॥ कालिका पूजा मंत्रः ॥—कामं वारिशुभा कान्तां कान्तचक्र-
 स्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणो दारां कालीं च पूजयाम्यहम् ॥ चण्डिका
 पूजा मंत्रः ॥—चण्डवीरां चण्ड मायां चण्ड मुण्डप्रभञ्जनीम् ॥
 पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्ड विक्रमम् ॥ शाम्भवी पूजा मंत्रः ॥
 सदानन्द करं शान्तां सर्व देव नमस्कृतम् ॥ सर्व भूतात्मिकां लक्ष्मीं
 शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥ दुर्गा पूजा मंत्रः ॥—दुर्गमे दुस्तरे कार्यं भव-
 दुःख विनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गा दुर्गातिं नाशिनीम्

कुम्भारडा भैरवा दयः ॥ ५१ ॥ नश्यन्ति दुराता तस्य कवचे हृदि-
 संस्थिते ॥ मानो भ्रतिमवेष्टाश्रयं तेजो वृद्धि करं परम् ॥ ५२ ॥ चरासा
 वर्धते सोऽपि कृत्ति मण्डलभूतले ॥ तस्माज्जपेत्सदा भक्त्या कवचं कामदं
 मुने ॥ ५३ ॥ जपेत्सप्त शतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुनः ॥ यावद् भू-
 मण्डलं यत्नो सरील वनका नतम् ॥ ५४ ॥ वावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः
 पुत्र पौत्रकी ॥ देहान्ते परमं स्थानं यस्मुरै रपि दुर्लभम् ॥ ५५ ॥ प्राप्नोति
 पुरुषो नित्यं महामाया प्रसादतः ॥ लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते
 ॥ ५६ ॥ इति वाराह पुराणे हरि हर व्रज विर चितं देव्याः कवचं
 समाप्तम् ॥

ॐ नमस्त्वैकात्म्ये जगती मङ्गला काशी भद्रकाली कपा-
 क्षिनी ॥ दुर्गा चामा शिवा धात्री स्वाहा स्ववा नमोस्तुते ॥ १ ॥ जयत्वं
 देवि वा मुण्डे जय भूतानि हारिणी ॥ जय सर्वं गते देवि काल रात्रि
 नमोऽस्तुते ॥ २ ॥ मधुकैट मन्त्रि द्राविधात् वस्त्रे नमः ॥ रूपं देहि जयं
 देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ३ ॥ महिषासुर निर्घाशि भक्त्याना सुखदे
 नमः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ४ ॥ एक बीज यथे
 देवि चण्डमुण्ड विनाशिनी ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जाह
 ॥ १ ॥ शुभस्यै यनि शुम्भस्य भूमा एतस्य चमर्दिनी ॥ रूपं देहि जयं देहि
 यशो देहि द्विपो जहि ॥ ५ ॥ अचिन्त्य रूपं चरिते सर्वे शत्रु विनाशिनी ॥
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ८ ॥ ननेभ्यः मर्धादा भक्त्या

॥ शुभद्रा पूजन मन्त्रः ॥—सुन्दरीं स्वर्णं वर्णांमां सुख शौभाग्य दायि-
नीम् । शुभद्र जननीं देवीं शुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ भक्तिः कुमारीणां
यत्नत पूजा कार्या ॥ कञ्चुकैश्चैव वस्त्रैश्च गन्ध पुष्पा च्छतादिभिः ॥
नाना विधैर्भक्ष्य भोज्यै भोजयेत् पायासादिभिः ॥ इति कुमारी पूजा ॥
अथ सप्त सती पाठ विधिः ॥ सकल पूजा नन्तरं सप्तसत्यादि
पाठ जपादिकं कुर्यात् ॥ ब्राह्मण द्वारा कुर्यात् ॥ श्रूयद्वा ॥
अथ सप्त सती पाठ वेद पाठानेक पुराणान्तर गत स्तोत्र पाठ
गायत्री जप नवार्णव मन्त्र जाप स्वेष्ट देवता मन्त्र जपादीन् यथा
शक्ति कुर्यात् ॥ अथसंकल्पः ॥ अथेह ममभूत भविष्य वर्तमान
जन्म जन्मान्तराणां दुष्टव नृवृत्ति दुष्टवृत्तौत्य समस्त पाप क्षय शत्रु
वृत्त्यु राज शत्रा न शता यौषहेतुक भया भाव महा मारी समुद्रवा
शेषो प सर्गावगम त्रिविधो स्पातो पशाम सर्वा पच्छान्ति पूर्वक
रक्षो भूत पिशाच ग्रह पर कृत्या बालप्रहादि सकल बाधा शम-
यितो—श्री दुर्गा सान्निभ्य द्वारा सर्वं गुणो त्यप्ति दीर्घायु विपुल
धन धान्य पुत्र पौत्राद्य नव विद्वज्ज सन्तति वृद्धय सकल कुलानन्व
स्थिर लक्ष्मी कीर्ति लाभ सुख प्राप्ति सदभिष्ट सिद्धि मूलक महा
काली महा लक्ष्मी महा सरस्वती प्रीतये मार्कण्डेय पुराणा-न्तर्गत सावर्णिः—

चण्डिके दुरितापहे ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि
द्विपो जहि ॥ ६ ॥

स्तुवद्भ्यो मक्ति पूर्वं त्वा चण्डिके व्याधि नाशिनि ॥ रूपं देहि
जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १० ॥ चण्डिके सततं ये त्वा
मर्च यन्तीह भक्तिः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो
जहि ॥ ११ ॥ देहि सौभाग्य मारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ॥
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १२ ॥ विधेहि
द्विपतां नाशं विधेहि बल मुचकैः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो
देहि द्विपो जहि ॥ १३ ॥ विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां
प्रियम् ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १४ ॥
सुरासुर शिरोरत्ननिघृष्ट चण्डो ऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि
यशो देहि द्विपो जहि ॥ १५ ॥ विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मी
वन्तं जनं कुरु ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि
॥ १६ ॥ प्रपण्ड दैत्य दर्पणे चण्डिके प्रणता यमे ॥ रूपं देहि
जय देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १७ ॥ चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र
संस्तुते परमेस्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो

सूर्यं तनय इत्या राभ्य सावर्णि भंविता मनुः तथा च रहस्यादिः
पर्यन्तं प्राठं कर्तुं मध्या रभ्य नवमी पर्यन्तं ब्रह्मणानां पूजनं वरणं
च करिष्ये ॥ पाठान्ते यथा शक्ति वलिदान छाग कुम्भाण्ड फलैर्वा
वक्ष्यमाण विधिना कार्यम् ॥ अथ द्वितियादि दिन कृत्यम् ॥
द्वितीयायां श्री परमेश्वर्यै षट् केशरज्जुं कङ्कति कां दद्यात् ॥ तृतीयां
दर्पणं सिन्दूरं कज्जलम् ॥ चतुर्थ्यां मधु शर्करा दधि कांश्य पात्राञ्च कांश्य
धाति कांश्य मधु पक्कम् ॥ कज्जलम् ॥ पञ्चम्यामुद्धर्तनं सौवर्णं रौप्यं वा
भूषणमथवा तत्पुष्पं दध्यात् ॥ प्रति संध्यं प्रति पुरादि तिथिषु
पूजनं यथा शक्या ॥ द्वितीयायां मध्याह्नात् ऊर्ध्वं संध्या काला
दूर्वां चाल चन्द्र दर्शनं कुर्यात् । शंखार्घ्यं श्वेत चन्दन दध्यक्षत तैलं
निधानं जानुना वर्ति स्पृष्ट्वा दक्षिण हस्तेन चन्द्रार्घ्यदानम् ॥ तत्र मंत्रः ॥
अत्रि नेत्र समुद्भूतं क्षीरो दाण्डेव सम्भव ॥ गृहाणाव्यं शशां केश
रोहिण्या सहितं प्रभो ॥ प्रणाम मंत्रः ॥ नमः सुधां शये तुभ्य लक्ष्मी

जहि ॥ १८ ॥ कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदांभ्विके ॥ रूपं
देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १९ ॥ हिमाचल सुता नाथ
मंस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ २० ॥
इन्द्राणीपति सद्भाव पूजिते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो
देहि द्विपो जहि ॥ २१ ॥ देवि प्रचण्ड बोधयद् दैत्य दर्पविता-
शिनी ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ २२ ॥ देवि
भक्त जनो हाम दत्ता नन्दो दये ऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि
यशो देहि द्विपो जहि ॥ २३ ॥ पत्नी मनो रमां देहि मनो वृत्ता
नुसारिणीम् । वारिणीं दुर्गं संसार सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २४ ॥
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ॥ सनुसप्त शता संख्याय
रमाप्नोति सम्पदाम् ॥ २५ ॥ इति मार्कण्डे पुराणे अर्गना स्तोत्रं
समाप्तम् ॥ २६ ॥

आ नमः शशिपुङ्गवे—मार्कण्डेय उवाच—विशुद्ध ज्ञानवेदाय त्रिवेदी
दिव्यचतुषे ॥ धेयः प्राप्ति निमित्ताय नमः सोमार्धनारिण्य ॥ सर्वमेतद्वि-
ज्ञानोपा न्महाशामपि नीलम् ॥ मोऽपि चैव ममाप्नोति सकृत्तत्राप्य तत्परः
॥ २ ॥ सिद्धयन्त्यु च्छाटनादीनि यस्तूनि सकृत्ता न्यपि ॥ एतेन
गुरुरां देवी स्तोत्रं भाषेत्सिद्धयति ॥ ३ ॥ न मन्त्रं नोपयं नत्र न किं
पिदपि विनाते ॥ विना जाप्येन सिद्धयेत् मयं शुचनाटना दिक्म्
॥ ४ ॥ समप्राप्यपि सिद्धयन्ति लोकाः शक्या निमां हरः ॥ एतेन
तिनन्त्रया मासं सर्वं मेव मिदं शुभम् ॥ ५ ॥ स्तोत्रं वै पठित्वा

भ्रातर्नमोनमः ॥ निष्कलङ्किन् कलाधारिन् गङ्गाधर शिरो मणे ॥
 शंभोजंटा जूट वासिन् बाल चन्द्र नमो स्तुते ॥ इति दद्यात् ॥ अथ
 पष्ट्यां विल्वनिमग्नविधिः ॥ शुक्ल पष्ट्यां जेष्ठा युवाया सूर्यास्तः
 वेलायां विल्वं तद् सन्निधौगत्वा उपवासादिं कृत् नित्य क्रियपूर्व
 मुखं उत्तरमुखं वा उपविश्याऽऽचम्य सन्ध्या काल समये दीपं प्रज्वाल्य
 संकल्पं कुर्यात् ॥ अथहे० श्री दुर्गा प्रीति कामः श्री वृत्त पूजन पूर्वकं
 विल्व निमग्नणनदकरिष्ये ॥ ॐ भगवति दुर्गे इहा गच्छ-
 इद्विष्टे ह्या बाह्य । पाद्यादि नैवेद्यान्तो पचारैः सम्पूजयेत् ॥ तत्र-
 मंत्रः ।—रावणस्य वचनार्थं रामस्या नुमहायन । अकाले लवणा-
 म्बोधौ त्वया देव्या त्रितः पुरा ॥ अह मप्याश्रितः पष्ट्यां साया-
 न्हे बोधया मयः ॥ पूजयामीह दुर्गे त्वां सर्व शत्रु विनाशिनीम् ॥
 देव देवांश संभूतः ? श्री वृत्तः चाण्डिका प्रियः ॥ आमन्त्रयामि पूजार्थं
 शास्त्रा मेकंयच्छमे ॥ इत्यामंथ्य । यथोक्त विधिना विल्व

चारुतच्च गुप्तं चकार सः ॥ समाप्नोतिः ॥ पुण्येन तां यथा वह्नि
 यन्त्रणाम् ॥ ६ ॥ सोऽपिष्ठेममवाप्नोति सर्वमवे नशशयः । कृष्णं
 वा चतुर्दश्या मष्टम्यां वासुमारितः ॥ ७ ॥ द्वाविप्रति गृह्णाति नान्य
 येषां प्रसिद्धयति ॥ इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८ ॥
 योनिष्कीलाविधार्यनां नित्यं जपति संस्पृष्टम् ॥ ससिद्धः सगणः सोऽपि
 गन्त्रार्थजायतेनरः ॥ ९ ॥ तत्रैवा प्यदत्त स्वस्य भयं क्वापि हि जायते ॥
 नाप मृत्यु वंशयाति मृतो मोक्ष ममाप्नु यात् ॥ १० ॥ ज्ञात्वा प्रारभ्य
 कुर्वीत न कुर्वीणो विनश्यति ॥ ततोऽप्यत्वे च संपन्न मिदं प्रारभ्यते धुषे
 ॥ ११ ॥ सौभाग्यादि च यत्किंचिद् हरयते ललना जने ॥ तत्तत्तत्
 तत्तत्सादेन तेन जाप्य मिदंशुभम् ॥ १२ ॥ शनैस्तु जप्यमानेऽग्निस्तोत्रे
 सम्पत्तिरुच्यते ॥ अथ त्येव समप्रापि ततः प्रारभ्य मेवतन् ॥ १३ ॥
 ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्या योग्य संपदः ॥ शत्रु हानिः परो मोक्षः
 स्मृत्यते सान किं जने ॥ १४ ॥ इतिभगवत्यः कीलक स्तोत्र समाप्तम्
 ॥ ३ ॥ शुभंभूयात् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्री नवार्णमन्त्रस्य ॥ प्रज्ञा
 शिष्टानुज्ज्ञा श्रवणः ॥ गायत्र्युष्णिग नृष्टुभ श्छन्दामि ॥
 श्रीमहा काशी महा लक्ष्मी महा सारस्वत्यो देवताः ॥ ऐं श्रीत्रम् ॥
 ॥ शक्तिः । स्त्रीं कोनकम् । श्री महाकाशी महा लक्ष्मी महा
 सारस्वती प्रीत्यर्थं जने विनियोगः ॥ प्रज्ञाशिष्टानु रद्र यपिग्री
 नमः सिरसि ॥ गायत्र्युष्णिग नृष्टुभश्छन्दोभ्यो नमोऽस्तुते ॥

वृक्षाधिवासं कृत्वा नित्यं गीतं वाद्योत्सवैः रात्री जागरणं
 कृत्वा ततः पुनः । ॐ विंशतिं इहागच्छ इहा तिष्ठे त्वा बाह्यं विलम्बा
 य नमः । इति मन्त्रेण पाचादि सिन्दूरं गन्धं पुष्पाक्षतं धूपं दीपं
 ताम्बूलं नैवेद्यान्तं दधात्, विल्वं वृक्षसङ्घातं मन्त्रं पठेत् । श्री-
 रौलं शिखरे जातः श्री फलः श्री निकेतनः । नेत्रव्योसिसमगच्छ
 पूर्यो दुर्गास्वरूपतः ॥ इति पठेत् ॥ अथ सप्तमी दिनं कृत्यम् ॥ सप्तम्यां
 प्रातरा रम्यं पत्रिकां पूजनान्तरं पर्यन्तं पुस्तकादीं सरस्वतीं पूजयेत् ॥
 मन्त्रं मन्त्रे वक्ष्यते रुद्रं यामलोः—मूलं ऋषे सुगन्धीशं पूजनीयां सरस्वतीं ॥
 इति ॥ सप्तम्यां मूलं युक्तायां वा केवलायां पत्रिकां प्रवेशः । तद्दिने
 प्रातः समये नित्यं कर्म कृत्वा पुनः विंशतिं समीपं गत्वा प्रणम्य प्रार्थयेत् ।
 विंशतिं वृक्षं महाभागं सदात्वं शङ्करं प्रियं ॥ गृहीत्वा तव शाखां च
 पूज्यां दुर्गेति च स्मृतिः ॥ उत्तिष्ठ पत्रिके देवि सर्वं कल्याणं हेतवे ॥
 पूजां गृहाण सत्कृता मरुतां वरदा भव ॥ मेरु मन्दारं कैलाशं हिम-
 वच्छिन्नं गिरी ॥ जाता श्री फलं वृक्षोत्पत्तिं माम्बिका या सदा प्रिये
 इति प्रार्थयेत् ॥ विंशतिं वृक्षस्य दक्षिणस्यां दिशि श्री फलं युगं सदितं
 शाखां गृहीत्वा गन्धादिभिः सम्पूजयेत् ॥ ॐ छिन्दि फलं अस्त्राय नमः ।
 ॐ हुं फलं स्वाहा इति मन्त्रेण सच्छिन्नं वृक्षं खात्रोदत्तं कृत्वा वृक्षं

महा काली महा लक्ष्मी महा सरस्वती देवताभ्यो नमः इति ॥
 ऐं बीजाय नमो गुणे ॥ ह्रीं शक्तये नमः वाद्योः ॥ क्लीं कीलं काय
 नरोत्तमी ॥ इति मूलेन करी संशोध्य ॥ ॐ ऐं वृं गुणाय नमः ॥ ॐ
 ह्रीं तज्जनीम्यां नमः ॥ ॐ क्लीं मध्वीयम्यां नमः ॥ ॐ चामुण्डायै अना-
 मिकाभ्यां नमः । ॐ विष्णे कनिष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ऐं ह्रीं फलीं
 चामुण्डायै विष्णे करवले करं वृक्षाभ्यां नमः ॥ एवं इत्यादि ॥ ततोऽक्षर-
 न्यासः ॥ ॐ ऐं नमः शिखायाम् ॥ ॐ ह्रीं नमो दक्षिण नेत्रे ॥ ॐ
 फलीं नमो वाम नेत्रे ॥ ॐ श्रीं नमो दक्षिण करे ॥ ॐ मुं नमो वाम-
 करे ॥ ॐ हां नमो दक्षिण नासायाम् ॥ ॐ ऐं नमो वाम नासायाम् ॥
 ॐ प्रिन्मोमुत्से ॐ श्रीं नमो गुह्ये ॥ एवं विन्यस्याष्ट वारं मूत्रेन व्या-
 पकं कुर्यात् ॥ ॐ ऐं चामुण्डायै नमः । ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः ॥ ॐ ह्रीं
 नैऋत्यै नमः ॥ ॐ क्लीं प्रतीत्यै नमः ॥ ॐ क्लीं वायव्ये नमः ॐ
 चामुण्डायै उद्वीर्यै नमः । ॐ चामुण्डायै ईशान्यै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
 चामुण्डायै विष्णे उग्रायै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विष्णे भूयै
 नमः । अथ स्नानम् ॥ गङ्गा चक्रं गङ्गेषु चाप परिषान्त्तुलं भुगु वी शिखः
 यत्नं मन्दरी करं वि नयनां मरांश्च भूषां पूजाम् ॥ नैऋत्यं पुनः

देवतीर्थं । कदली स्वम्भ दाडिम धान्य वृक्ष हरिद्र वृक्ष मानक कचूर
 विन्व पत्रा शोण जयन्ती द्रोण पुष्पान्य पुष्प फलं चयल्लभ्यं सम्पूर्णं
 मा हृत्य प्राधयेत् ॥ शाखान्छेदेन यद् दुःखं यत्कृतं हिमया प्रभो ॥
 क्षम्यतां मम वृक्षेश विन्व वृक्ष नमोस्तुते ॥ वृक्ष वृक्ष महाभाग सर्वदा
 राक्षस प्रिय ॥ गृहीत्वा तव शारां च देवी पूजां करोम्यहम् ॥ इति
 प्रार्थनं ॥ ॐ ह्रीं हुं क्रीं चामुण्डे चल चल शीघ्रं त्वम्बिके प्रविश ॥
 चारिश्चत्वं दुर्ग रूपासि सुर तेजा महाबले । प्रविरय तिष्ठ
 यतोस्मिन् यावत् पूजां करोम्यहम् ॥ इति प्रविरयस्थापयेत् ॥
 ॐ स्यां स्यां इति स्थिरोभय । आरोपितासि दुर्गेत्वं मृण्मयं श्री फलतुवा ॥
 स्थिरी भूता च त्वं देवि गृहाण कामदा भव ॥ इति स्थिरी कृत्य पत्रिना
 मुत्थाप्य धालायामारोप्य दोलां स्कन्धे निधाय मौनी सन् गृह समीपे
 आर्तं य नाना चादिवादि मङ्गल पुस्तक पत्रिकायां यथामिलितो पचारैः
 सम्पूज्य ततो देवी गृहान्ध्यन्तरे सायं काले पत्रिकां प्रवेशयेत् ॥ अथ
 सप्तम्यां सन्त्योत्तर कृत्यम् ॥ ततो भूतादीनां कुक्षाराक्षं वलिदधात् ॥
 ॐ भूत इहागच्छेदितिष्टे त्वा बाह्यसंस्थाप्य भूतान्मियो नमः ॥ इति

मास्य पाद दराकां सेवे महा कालिकां यामसौत्स्वपिते हरौ कमल
 जोहन्तुं मधुं कैटभम् ॥ १ ॥ अक्षसक्पराशुं गण्डेषु कुलिशं पद्मं
 धनुः कुण्डिकां दण्डं शक्ति मसिच चर्म जलदं घण्टा-सुरा-भाज-
 नम् ॥ शूल पारा सुदर्शने च वधर्तुं हस्तैः प्रसन्नां नर्तां सेवेसै
 रिभ मर्दिनी मिह महा लक्ष्मीं सराजस्थिताम् ॥ -२ ॥
 घण्टा शूल इलानि शङ्ख मुसले चक्रं धनुः सायकं इस्त्राञ्छेदधर्तुं घनान्त
 वितासच्छीतांशु तुल्य प्रभाम् ॥ गीरी देह सगुह्यं त्रिनयना मागार
 भूतागहा पूर्वा मंत्र सरस्वती मनुभजेच्छुभादि दैत्यादिनीम् ॥ ३ ॥ अष्टो
 चर रात सडयगामंत्राज ... ॐ ह्रीं क्लीं चामुरद्वारैर्विच्ये ॥ प्रोज
 जयायविद्रुभे तत्प्रधानायथोमहेतन्नराकि प्रथो दधान् ॥ १०८ ॥ जपेत् ॥
 इति नवार्ण विधिः ॥

अथ रात्रि सूक्तम् ॥ विश्वस्वरीं जगद्धारिणीं स्थिति संहार कारिणीम् ।
 मित्रां भगवतीं मिष्णोरनुभां तेजसःप्रभुः । १ ॥ मज्जोराच ॥ त्वं स्वाहात्वं
 स्वधा त्वं दि यत् कार स्वराजिका ॥ बुद्धात्वं मज्जे नित्ये त्रिधा माज्जाति
 कास्थिता ॥ २ ॥ अथ मात्रा स्थिता नित्या वानुषाणो मिशेषतः ॥
 त्वमेव धर्म्या मायिषो त्वं देवि जननी पय ॥ ३ ॥ त्वयं न दायते विश्वं
 स्वयैतत्सुखं जगत् ॥ त्वयं तत्तान्यते देवि त्वनस्तन्न न नयंदा ॥ ४ ॥

पाद्यादि नैवेद्यान्तेः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ भूता प्रेता. पिशाच-येव
 सन्त्यज्य मृतले ॥ वेगृह्णन्तु मयादत्तं बलिमे तत्प्रसादितम् ॥ पूजिता बलि
 पुष्पाद्यैस्तपिता बलिमिस्तया देशा दस्माद्विनिः सृत्य पूजां गृह्णन्तु
 यत्कृतम् ॥ एष माप बलिः भूतादिभ्यो नमः सर्पपंच विकीर्णं वत्सु
 परिदोषं प्रज्वाल्य गृहाद्वाहिः स्थापयेत् ॥ ततः सप्तम्यां पुस्तका दी प्रभवे
 वा पत्रिका पूजनानंतरं वा सरस्वतीं स्थापयेत् यथा । वेद शास्त्र पुष्पानि
 स्मृति व्याकरणानि च ॥ ज्योतिषं मन्त्र विद्यां च सर्वं विद्या मनेकधा ।
 त्रितयां पुस्तके मातनिश्चयं कुरुमेगृहे ॥ संजीवन कुलेजातं पुस्तकाप
 नमो नमः । इति मन्त्रादिना पूजयेत् ॥ अष्टादे त्यादि सर्वापच्छान्ति सर्वा
 विध सोम्य प्राप्ति पूर्वक शरत्कालोय नव दुर्गा शाकम्बारी स्थापन मर्ह
 करिष्ये ॥ मृगमयी दुर्गा प्रतिमां सफलां शुक्लव शारतां, कदल्यादि
 नव पत्रिकां च संस्थाप्य पञ्चामृतेन संस्थाप्य पठन्त इति प्रति-
 प्ताप्य पूजयेत् ॥ पत्रिका नामानि । कदली दाहिमं धान्यं हरिद्रा
 मानकं कचम् ॥ विल्वा शोकी जयन्ती च विजेया नवप-
 त्रिका ॥ प्रत्येकं नव पत्रिका पूजनं यथा शक्ति कृत्वा स्नानीयं
 दद्यात् ॥ तद्यथा ॥ आग्नेयो नवदा गङ्गा यमुना च सरस्वती ॥
 शरयू गण्डकी पुण्या रंभत गङ्गा च कीरिका ॥ यती च पातले
 स्वर्गो मन्दाकिनी तथा ॥ सर्वाः सुमन सोभृत्वा शृङ्गारं स्नपयन्तुते ॥

पितृर्धनं सृष्टि रूपा त्वं स्थिति रूपा च पातले ॥ तथा संहति रूपात्वे
 जगतीऽस्य जगन्मये ॥ ८ ॥ महा विद्या महा माया महा मेधा महासृष्टिः ।
 महामोहा चभवती महा देवी महासुरी ॥ ९ ॥ प्रकृतिस्त्व चसर्गस्य गुण
 त्रय भाविभाविनी ॥ काल रात्रिमहारात्रिमोहरात्रिश्च वास्तवः ॥ १० ॥ त्वं क्षी
 त्वर्माशरी त्वं ह्यो सः मुद्दिर्वोच लक्षणा ॥ लज्जा पुष्टि स्तथापुष्टि त्वं
 शान्तिः ज्ञानित्वेव च ॥ ११ ॥ सत्रिनी शुक्लिनी पोरा गदिनी चरिणी तथा
 शक्तिनी चापिनी-वाण मुगुयदी परिषा युधा ॥ १२ ॥ सोम्या सोम्य तथा
 शेष सोम्येभ्यस्तति मुन्दरी ॥ परा पराणां परमात्ममेव परमेश्वरी ॥ १३ ॥
 यमदिवित्त्यचिदम्बुसद सदासिलात्मके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः
 सत्त किं सूर्यसे वदा ॥ १४ ॥ यथा त्वरां जगत्स्रष्टा जगत्पात्यति
 चा जगत् । नाऽपिनिद्राय नोतः कस्त्यांस्नानुते मिद्वेदः ॥
 जिह्वाः शरीर महण मर्ह मीगुन एव च ॥ कारि वास्ते यवोऽ
 वस्त्वा च स्तोतुं शक्ति मान्यते ॥ १५ ॥ सा त्वमित्यं प्रमादेः
 ध्वेददारे रवि मन्त्रुय ॥ मोह येनो दुष्ययं वसुधै मधु केदभी
 । १६ ॥ प्रबोदं च जगत्वासां नोपधानप्युतो जनु ॥ बांध

कदल्यै नमः । कदल्या ब्रह्माणी हागच्छे हतिष्टे त्या बाह्य ब्रह्माण्यै
 नमः इति पाद्यादि तैवेद्यान्त दद्यात् ॥ दाडिम्या रक्त चण्डिकाम् ।
 सर्वेषा मधिपो देव ईशानो नाम नामतः ॥ शूलपाणि महादेवो
 शृङ्गारै स्नपयन्तुते ॥ पूर्व षट् दहागच्छे त्यादिना सम्पूज्येत् ॥
 धान्ये जलमीम् । पुण्यत्वं पुण्य शाखाना मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
 विष्णुना विधृतो नित्य भवः शान्ति प्रयच्छमे ॥ मन्दाकिन्या
 स्तुते वारि सर्व पाप हर शुभम् । स्वर्गस्रोतस्तु वैष्णव्यं शृङ्गा-
 रैस्नपयन्तुते ॥ पूर्व वत्सपूजयेत् ॥ यानके चामुण्डम् । गन्धाढ्यं
 चन्दनं दिव्यं तच्छ्रीरत्न सुरप्रियम् ॥ सर्व पाप हर चैव शृङ्गारै
 स्नपयन्तुते ॥ पूर्ववत्सपूजयेत् ॥ कचै कालिकाम्—सागरा सरितः
 सर्वा सरः स्रोतोदमस्तथा ॥ सर्वोपधीभिः पापघ्ना शतराः स्नप-
 यन्तुते ॥ सर्वाः सुमनसो भूत्वा शृङ्गारैस्न पयन्तुते ॥ पूर्व वत्सम्
 पूजयेत् ॥ बिल्वेशिवाम् ॥ हिमवद्धेन कूटाद्या रचाधिविचरन्तु
 पर्वताः निर्मरोदक पूर्णेन पट्टेन कलरो न्तु । सर्वा सुमन सोभूत्वा
 शृङ्गारै स्नपयन्तुते ॥ पूर्ववत्सम्पूजयेत् ॥ असोके शोक हारिणीम्

श्चक्रियता मत्स्य हन्तु मेतौ महा सुरौ ॥ १५ ॥ इति ॥ श्री
 गणेशाय नमः ॥ अथ सप्त शती न्यासः ॥ अथ प्रथम मध्यमो
 उत्तम चरि त्राणां महा विष्णु रुद्रा ऋषयः । श्री महा काली
 महा लक्ष्मी महा सरस्वत्यो देवताः ॥ गायत्र्युष्णिगं तुष्टु भृङ्ग-
 दासि ॥ नन्दा शाकम्भरी भीमा शक्तयः ॥ रक्त दन्तिका दुर्गा
 भ्रामर्यो बीजानि ॥ अग्निर्वायुः सूयस्तत्त्वानि ॥ ऋग्यजुः साम
 वेदाध्यानानि ॥ सकल कामना सिद्धये श्री महा काली महालक्ष्मी
 महा-सरस्वती देवत प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः । तत्रादौ न्यासः ॥ सङ्गिनी
 शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी वाणं भुशुण्डी
 परिधायुधा ॥ अंगुष्ठाभ्या नमः ॥ शूलेन पाहिनो देविपाहि त्वङ्गेन
 चाम्बिके ॥ घण्टा स्वनेन नः पाहि चापज्यामिः स्वनेनच ॥ तर्जनी म्या
 नमः ॥ प्राच्या रक्ष प्रतीच्या च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणे
 नात्म शूलस्य वचरस्या तृथेश्वरि ॥ मध्यमाभ्या नमः । सौम्यानि
 यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यर्थं घोराणि ते
 रक्षा स्मां स्तथा यशम् ॥ अनामिकाभ्यां नमः ॥ खड्ग शूलगदा
 दीनि यानि चास्त्राणि ते ऽम्बिके ॥ कर पद्मव सङ्गीनि तैरस्मा
 जह्नु सखतः ॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ सर्व स्वरूपे सर्वेशोः स-
 र्व शक्ति समम्बिते ॥ अथेभ्य स्वादि ना देवि दुर्गे देवि नमो

॥ लवणेषु सुरा सर्पिर्दधि क्षीरं जलैः स्तथा ॥ सर्वा सुमनसो भूत्वा
 गृहगारे स्नायन्तुते ॥ पूर्वं वत्सम्पूजयेत् ॥ जयन्त्यां कार्तिकाम् ॥— दुर्गा
 चण्डो श्वरो चण्डो वाराही कार्तिकी तथा ॥ हरसिद्धि तथा कालो रुद्राणी
 वैष्णवी तथा ॥ भद्रकालो विराजालो भैरवी सर्व रूपणी ॥ सर्वा
 सुमनसो भूत्वा गृहगारे स्नायन्तुते ॥ पूर्ववत्सम्पूजयेत् ॥ तत्रैव तत्तत्काले
 द्वाचक्ष्णापयेत् पूजयेत् ॥ तत्तत्काले रचये चान्ये पाताल तल वासिनः ॥
 सर्वा सुमनसो भूत्वा गृहगारे स्नायन्तुते ॥ अनेन प्रकारेण प्रत्येकं पत्रि-
 कान् स्नापयित्वा पूजयेत् ॥ ततो विल्व फल शास्त्रायां श्री परमेश्वरी मा
 वाहयेत् ॥ अथा वाहनम् ॥ आवाहयाम्महं देवीं श्री फले मृगमये तथा ॥
 आयुरारोग्यं मेधैर्धैर्यं देहि देवि नमः सरा ॥ कैलाश शिखरे देवी हिमाद्रे
 हिमपर्वतात् ॥ आगच्छ विल्व शास्त्रायां चाण्डके कुल सन्निधम् ॥ स्था-
 पितासि महादुर्गे ॥ पूजयेत्वा प्रसीदमे ॥ दुर्गे देवि ! इहा गच्छ सान्निध्य
 मम कुरुष्व ॥ यत्न भागान्गुहाखत्तं योगिनी कोटिभिः सह ॥ इत्यावाह्य
 सर्वात्र यत्नं विधीयं ॥ ओदुर्गे-दुर्गे रक्ष स्वाहा दुर्गायै नमः ॥ जयती
 मङ्गला कालो चेति पाद्याभ्यां चमनीय मधुपर्क पञ्चामृत शुद्धस्तान वस्त्रा

ऽस्तुते ॥ करं तलं करं शृङ्गार्यां नमः ॥ एवं इदमादिषु ॥
 खड्गनीं शूलिनीं घोरां दद्यायं नमः ॥ शूलेन पाहिनीं देवीं शिखरे
 स्वाहा ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीक्षां च शिखायै वृ पद ॥ सौम्यानि
 यानि रूपाणि ० कवचाय हुम् ॥ खड्गं शूलं गदां दीनि ०
 नेत्रं प्रयाय वी पद ॥ सर्वं स्वरूपे सर्वं शो ० अस्त्राय पद ॥

अथ ध्यातम्

विशुद्धात्तमं प्रमां मृगं पत्रि स्तब्धस्थितं भीषणां कन्याभिः परं पाल
 श्रेष्ठं विल-सद्वत्ताभिः सेवितम् ॥ हस्तेरचक गदामि श्रेष्ठं विशालां
 श्वायं गुणं तर्जनीं विभ्राणा मनस्तात्त्रिकां शशिचयं दुर्गां त्रिनेत्रां भजे
 ॥ १ ॥ इति ध्यातम् ॥ प्रथमं चरित्रं त्रयं दद्यात् महाकालीं देवता
 गायत्रीचन्द्रः, नन्दा राक्षिः, रक्त दन्तिका बीजम् ॥ अर्चितं चन्द्रम्
 श्रुतं देवः स्वरूपम्, श्री महाकालीं प्रीत्यर्थं प्रथमं चरित्रं जपे योगः विधिः ॥
 अथ ध्यातम् ॥ चक्रं गतेषु पाप परिषाच्छूलं भुगुण्डो शिरः शोचं
 सन्दर्शनीं हरे क्षिप्रयनां सर्वाङ्ग भूषा भूषाम् ॥ नोक्तास्मं पृथि मास्य
 पाद दराक्षं सेवे महाकालिकां यामलोत्पदे हरो कवचं जो हन्तु मयु-
 केतुम् ॥ १ ॥ माकण्डेउवाच ॥ १ ॥ साययिः सुयं तनयो यामनु-
 कल्पेऽऽहम् ॥ निरामय तदु पत्तिं रिस्तारुगतो मम ॥ २ ॥ महामाया

भूपण गन्धाक्षत पुष्प सिन्दूर कज्जलादि द्रव्यं धूप दीप नैवेद्य ताम्बू-
लादि समस्त पत्रिका स्वरूपायै भगवत्यै दुर्गा देव्यै नमः ।

इत्यादीनां दत्त्वा नमस्कारः ॥ अथ चण्डे रुद्र चण्डे चण्डोप्रे चण्ड
नाशिनी ॥ चण्डिके चण्ड वत्याम्ब चण्ड ! तुम्यं नमोनमः ॥ महिषगिनि
महामाये चामुण्डे मुण्ड मालिनि ॥ ज्ञेय मारोग्य मैश्वर्य देहि देवि !
नमोस्तुते ॥ इतिप्रणम्य प्रार्थयेत् ॥ क्लृप्तं पत्र मादाय ॥ सुधोद्भव च श्री
पुङ्गव शङ्करस्य सदा प्रियम् । पत्रिग्रंथे प्रयच्छामि क्लृप्तं । पत्रं सुरेश्वरि
द्रोण पुष्पमादाय । ब्रह्म विष्णु शिवा दीनां श्रेण पुष्प सदा प्रियम् ॥
उत्ते दुर्गे । प्रयच्छामि सर्वं कामार्थं सिद्धये ॥ कुङ्कुमेन समालिप्ते चन्द-
नेन विलेपिते ॥ विष्णु पत्र कृताऽऽपीडे दुर्गे ह' शरणं गतः ॥ रूपं देहि
यशो देहि, भग्नभगवति तथा ॥ पुत्रवान्देहि धनन्देहि सर्वान्कामान्प्रदेहिमे ॥
अथ प्रत्येकं नव पत्रिका पूजा ॥ अघोहेत्यादि नव पत्रिकायां नव दे-
वीनां पूजनं मह' करिष्ये इति संकल्प्य आवाहनादि ताम्बूलान्तैः समूज्य
प्रत्येकं प्रार्थयेत् ॥ कल्पयां ब्राह्मणी पूजा ॥ दुर्गे देवि ! समागच्छ शान्ति-
मिदं कलय ॥ रम्भा रूपेणमेनित्यं शान्तिं कुर्वं सदा शुभे ॥ ब्रह्माय नै-
नमः ॥ दाडिभ्यां रक्त चण्डिकां पूजयेत् ॥ दाडिमि त्वं पुरा युद्धे रक्त बीज-

नुभावने यदा मन्त्रन्तराधिपः । संवभूर्यं महामागः सावर्णिस्तनयो
रवेः ॥ ३ ॥ स्वारी निषेज्वरे पूर्व' चेष्टा वंश समुद्रवः ॥ सुरधो नाम
नाम राजाभून्समस्ते क्षिति मण्डले ॥ ४ ॥ तस्य पालयतः सम्यक्प्रजाः
पुजा निवौ रसान् ॥ बभूवः शत्रवो भूषाः कोला विष्कासिभिर्जितः
॥ ६ ॥ ततः स्वपुर माया यो निज देशा धिपो भवत् ॥ आक्रान्तः समहा-
भागस्तैस्त्रिंश प्रवतारिभिः ॥ ७ ॥ अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर् दुर्बलस्यदुरात्मभिः ॥
कोशो बलं चाप हतं तत्रापि स्वपुरे क्तः ॥ ८ ॥ ततो मृगया व्याजेन
हृत् स्वाम्यः समुपतिः ॥ एकाकी हयमा रुद्र जगाम गहन वनम् ॥ ९ ॥
स तत्रा श्रम मद्राक्षोद्विज्वर्यस्य नेधनः । प्रशान्तश्च पशु कीर्णं
मुनि शिष्यो पशो भिजम् ॥ १० ॥ तस्वो कंचित्स कालश्च मुनिना
तेन सत्कृतः ॥ इत रचेतरश्च विचरस्तस्मिन्मुनि वरा भवे ॥ ११ ॥
सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वा कृष्ट चेवनः नत्पूर्वः पालितं पूर्वमयादीनं
पुरंदि तत् ॥ १२ ॥ मद्रूत्ये स्तैरसद्वचैर्धनतः पाल्यते नवा ॥ न जाने
स प्रधानोमैश्वर हस्ती सदा मद् ॥ १३ ॥ ममं जैरिवशंयातः कान्भोगा
नुपलप्यते ॥ ये ममानुगता नित्यं प्रसादं धनभोजने ॥ १४ ॥ अतुष्टिं
भुङ्क्तेऽप्य कुर्वन्त्यन्यमदी भूताम् ॥ असम्यग्यय शीनेनैः दुर्बद्धि सव
वन्त्यपम् ॥ १५ ॥ संचितः सौख्यं दुःखेन द्रव्यं भोगोमिष्यति ॥ पव-

म्य सम्पुन्ये ॥ उमा कार्यकृतं यस्मा दुर्गे देवि नमो नमः ॥ २ ॥ धान्ये
लक्ष्मीं पूजयेत् ॥ जगतः प्राण रक्षार्थं ब्रह्मणा निर्मितं पुण ॥ उमा प्रीति
करवान्यो तस्माद्रक्षतु सर्वदा ॥ ३ ॥ हरिद्रायां दुर्गा पूजयेत् ॥ हरिद्रेय
वरदे देवि उमा रूपासि सुप्रभे ? ॥ मम विघ्न विनाशाय पूजां चैव
गृहाण भो ॥ ४ ॥ मानकेचामुण्डां पूजयेत् ॥ अस्मिन्नेवि समातिष्ठमान
वृत्ते राक्षसिभ्ये मम चानुमहार्थाय पूजार्जीकरणाय च ॥ ५ ॥ करचूर के
कालिकापूजयेत् ॥ मदिपासुर युद्धेषु कालि भूतासि सुप्रते ! ॥ मम वातु
प्रशार्थाय आगतासि हर प्रिये ॥ ६ ॥ बिल्वे शिवां पूजयेत् ॥ महादेव प्रिय
करो वासुदेव प्रियः नदा ॥ उमा प्रीति करोयस्याद्वित्व वृद्ध ॥ नमो-
स्तुते ॥ ७ ॥ अशोके शोक हारिणीम्—हरप्रिय करो वृद्ध ! सदात्वं शोक
नाशनः ॥ दुर्गा प्रीति करोयस्मात् तस्मात्तम् रक्षमां सदाभिमिति पूजयेत् ॥
जयन्त्यां कार्तिकीं पूजयेत् ॥ निगुम्भ शुम्भ मयने सेन्नेदेव मरौः सद् ॥
जयन्ति । पूजयामित्वा यस्माकं वरदाभव ॥ ८ ॥ इति नव पत्रिकां सम्पुन्य
प्रायेय ॥ छद्म छुरिकाधनुषज पता का शक्ति श्रीमोसि इन्दुभि शङ्ख-
रुद्रारक छत्र चामरे शस्त्रास्त्राणि श्रीदुर्गा समीपे सस्थापयेत् इति-
सध्वन्या पत्रिका प्रवेशः पूजनविधिरच ॥ अथ महाष्टम्यां काल

श्चान्य च सतत चिन्तया मास पार्यवः ॥ १६ ॥ तत्र विप्रा भ्रमाभ्यासो
वैश्यमेकं द्वादशैः सः ॥ सष्टष्टमेन कस्त्वांम्भो हेनुश्चा गमनेऽपकः ॥ १७ ॥
मशोक इव कस्मात्तु दुर्मना इवलक्ष्यसे ॥ इत्या कश्यवचत्तस्य भूपतेः
प्रणयो दितम् ॥ १८ ॥ प्रत्युनाचसवं वैश्यः प्रभया वनतो नृपम् ॥ १९ ॥
वैश्य उवाच ॥ २० ॥ समाधिर्नाम गौरयोऽह मुत्पन्नोऽधिनानां पूते ॥ २१ ॥
पुत्र दारे निरवश्चधनलोभादिसाधुभिः विहीनरचधर्मेदारे, पुत्रे पाप
मेयनम् ॥ २२ ॥ वनमभ्यागतो दुःखो निरस्त रथाध्वजधुभिः ॥ सोऽहं न
येदि पुत्राणां कुराजा कुशलात्मिकाम् ॥ २३ ॥ प्रवृत्तिं स्वव्रतां
नां चदाराणां चात्रास्थितः । किन्तु तेषां गृहे क्षेम मक्षेम किनुतां
प्रति ॥ २४ ॥ कथं ते किन्तु सद् पृथादुर्गताः किन्तु मे मुताः
॥ २५ ॥ रात्रो वाच ॥ २६ ॥ यौरिस्तोभवांस्तुथेः पुत्रारा
दिर्निघ्नीः ॥ २७ ॥ वेकिं भवतः स्नेह मनुवध्नातिमानसम् ॥ २८ ॥
वैश्य उवाच ॥ २९ ॥ एव मेवयथा ग्राह भयानरमद्वतय ॥ ३० ॥ किं
करोमि नवप्यावित्तम निष्ठु स्तामनः ॥ ये सत्याय पितृ स्नेहं धन
गुन्नेर्निराहृतः ॥ ३१ ॥ पति र्वजन हार्दय हार्दितेप्येवमे मनः किमे वप्रा
मिन्नानांमि अन्नमपि महायते ॥ ३२ ॥

यन्मे प्रवचायच विगुणेष्वपि कल्पु ॥ तेषां हृते मेनि र्वातो-

रात्री भद्रिका पूजा निर्णयः ॥ नाष्टमी सप्तमी युक्ता सप्तमी
 नाष्टमी युता ॥ नवम्या सह कार्यास्या दष्टमी सर्वदा बुधैः । अष्टमी
 सप्तमी युग्मे महोत्साहे महोत्सवः ॥ इति वाक्यात् । नवमी युक्तायाः
 प्राशस्त्याभि धानात् सति संभवे सप्तमी विद्धा सर्वथा वर्जनीया ॥
 यदि स सूर्यो दये न स्या नवमी वापरे ऽहनि ॥ तदाष्टमीं प्रकु-
 र्वीत सप्तम्यासहिता नृपः इति ॥ अहं भद्रा चभद्रा च आवयो
 रन्तरं नहि ॥ सत्रं सिद्धिं प्रदास्यामि भद्राया मचिंता प्यहमिति
 वचनं भद्र काल्य चन परेण महाष्टम्यां निशीथ काले पूजा कर्त्तव्या । दक्ष
 यज्ञ रिनाशिन्या अर्द्धं रात्रे प्रादुर्भावात् ॥ तत्राष्टम्यां महा काली
 दक्ष यज्ञ विनाशिनी ॥ प्रादुर्भूता महाघोरा ह्यर्द्धस्ते चन्द्र मण्डले ॥
 इति ब्रह्म वचनात् ॥ सप्तमी विद्धां न कुर्वीत मुख्य शुद्धा-
 ष्टम्यां काल रात्रि कुर्यात् अष्टम्यां सायं सन्ध्योत्तरं देवी पूजा कार्या ॥
 अथेह दुर्भिक्षाविदुः स्वादि निवृत्ति दीर्घा युष्य परमानन्द परम पद गमन
 दशाश्व मेघ फल भोज माला कुल विमान वरा रोहण शाश्वत

दोर्मतस्य च जायते ॥ ३३ ॥ करोमि किं यज्ञ मनस्ते ष्वशीतिषु
 निष्ठुरम् ॥ ३४ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ततस्तौ सहितौ विप्र तं
 मुनिं समुपस्थितौ ॥ ३५ ॥ समाधिर्नाम वैश्यो ऽसौ सच पार्थिवसत्तमः ॥
 कृत्वानु तौ यथा न्यायं यथां हृतेन सविदम् ॥ ३७ ॥ उपविष्टौ
 यथाः कारिच क्वक्लुतु वैश्य पार्थिवौ ॥ ३८ ॥ राजौ वाच ॥ ३९ ॥
 भगवदया मह प्रष्टु मिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥ ४० ॥ दुःखाय
 यन्मे मनसः स्वचित्ता यत्ततांविना ॥ ममत्वं गतराजस्य राज्याङ्गे
 स्वन्विले ष्वपि ॥ ४१ ॥ जानतो ऽपि यथाक्षस्य किमे तन्मुनि
 सत्तम ॥ अयं चर्निहृतः पुत्रे दारौ श्रुत्वा स्तथो जिह्नः ॥ ४२ ॥
 स्वजनेन च स त्यक्त स्तेषु हार्दी तथा प्यति ॥ एव मेप तथा
 इव द्वावप्य त्यन्त दुः खितौ ॥ ४३ ॥ दृष्ट द्रोणे ऽपि विपये
 मन्त्वा कृष्ट मानसौ ॥ तत्किमे तन्महा भाग यन्मोहो ज्ञानिनो रपि
 । ४४ ॥ ममास्य च भव स्येषा विवेकान्ध स्यमूढता ॥ ४५ ॥
 श्रुपेरु वाच ॥ ४६ ॥ ज्ञान भस्ति समस्तस्य जन्तो विषय गोचरे
 ॥ ४७ ॥ विषयाश्च महा भाग यानि चैवं प्रयक्प्रयक् ॥ दिवान्याः
 प्राणिनः केचि द्राता बन्धा स्तथा परे ॥ केचिद्विधा तथा राज्ञी
 प्राणिन स्तुन्य दृष्टयः ॥ ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं नुते नहि
 केवलम् ॥ यतोहि ज्ञानिनः सर्वे पशु पक्षि मृगादयः ॥ ज्ञानं
 च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृग पक्षिणाम् ॥ ५० ॥ मनुष्याणां च

फालाऽवद्विज हर्षं विजय कामः श्री दुर्गा देव्याः पूजनं ध्यानं
चाहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ ततः गणेश दोष पूजनार्थं स्थापनं
कृत्वा ॥ जटा जूट समायुक्ते त्यादि पूर्वोक्त ध्यानं कुर्यात् ॥
अथावाहनम् ॥ एहि दुर्गे महाभागे ? स्तुतयै मम सर्वदा ॥
आशा हवा न्यहं देवि ? सर्वं कामार्थं सिद्धये ॥ अस्यां
मूर्तीं समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे
विश्वेश्वरि ? नमो स्तुते ॥ ॐ एतन्नेति भगवति दुर्गे ? इहागच्छ
इह लिप्तेह सन्निहिता भव इह स्थिरा भव सुप्रशान्ता भव इत्यो
वाह्य ॥ ॐ जयन्ती मङ्गला फालीति दुर्गे दुर्गे रक्षणि ! स्वाहा ॐ दुर्गायै
नमः ॥ इति मन्त्रेण आसन पाद्याभ्यं पञ्चामृत स्नाना चमन शुद्धोदक
स्नान एक वस्त्र भूषण सिन्दूर चन्दना चत पुष्प कज्जल धूपदीप नैवेद्य
ताम्बूल दक्षिणान्तं कृत्वा आचरणं पूजये ॥ देव्या दक्षिण भागे एका
दश गौरीः पूजयेत् ॥ ॐ ह्रीं जयन्ती नमः इति । प्रणवादि नमोन्तं
सर्वत्र श्रेयम् ॥ ॐ ह्रीं मङ्गलायै नमः । ॐ ह्रीं काल्यै नमः । ॐ ह्रीं ह्रीं
मद्र काल्यै नमः ॥ ॐ ह्रीं कपालिन्यै नमः । ओं ह्रीं दुर्गायै नमः । ओं
ह्रीं क्षमायै नमः । ओं ह्रीं शिवायै नमः । ओं ह्रीं धाम्यै नमः । ओं ह्रीं

यत्तेषां तुल्य मन्य सायो भयोः ॥ ज्ञानेऽपि सति परयैता मृतर्हा
ह्यार वंचये ॥ ५१ ॥ फणमोक्ष ह्वान्मोहा त्पीडय माना
नपि जुधा ॥ मानुषा मनुज व्याघ्र साभिलाषाः सुतान्प्रति ॥ ५२ ॥
लोभात्प्रत्यु पकाराय नन्दे तान्किं न पश्यसि ॥ तथापि ममला
वर्षे मोक्ष गतेनिपातिताः ॥ ५३ ॥ महा माया प्रभावेण संसार स्थिति
कारिणा ॥ तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिन्द्रा जगत्पतेः ॥ ५४ ॥
महामाया हरे रचैषा तथा सं मोक्षते जात ॥ शान्तिना मपि वेतांसि
देवी भगवती हि सा ॥ ५५ ॥ यत्नादा कृत्य मोक्षाय महामाया इय-
ञ्चरति ॥ तथा विसृज्यतेविषयं जगदे तथा चरम् ॥ ५६ ॥ सैषा
प्रमत्ता वाक्ता नृणा भवति मुक्तये ॥ सा विद्या परमा मुक्ते हेतुभूता
सनातनी ॥ ५७ ॥ संसारं देवु देवस्य सैव सर्वैरपरेस्वरी ॥ ५८ ॥ राज्ञो
वाच्य ॥ ५९ ॥ भगवान्कादिसा देवो महामायेवियोगिवान् ॥ ६० ॥
मवीति व्यमुत्पन्नासन्माप्यास्वर्गं द्विज ॥ यत्प्रभावा च सा देवीदेव
रूपायतुङ्गवा ॥ ६१ ॥ तत्सर्वं श्रानुमिष्यता म त्वत्तो मद्रविदांर ॥ ६२ ॥
मद्रपिरुवाच ॥ ६३ ॥ नित्येऽसा जगन्मूर्तिस्तथा सर्वमिदं ततम् ॥ ६४ ॥
उमापि तत्समुत्पत्तिं वदन्ता भयनामम् ॥ देवानां कार्यसिद्धयर्थमायिर्भक्ति
जायते ॥ ६५ ॥ उत्पन्नीति वेदालोके मन्त्रिणाप्यभिधीयते ॥ योग निर्दो

स्वादानमः । ओं ह्रीं स्वधा नमः ॥ अर्घ्यादि नैवेद्यान्तः पूजयेत् । देव्यापृष्टं
भागे द्वादश देवी पूजनम् कुर्यात् ॥ ह्रीं मादि नमोन्ताः प्रयोगो यथा—
ह्रीं उग्र चण्डायै नमः । ह्रीं प्रचण्डायै नमः । ह्रीं चण्डोमायै नमः । ह्रीं
चण्डनायिकायै नमः ॥ ह्रीं चण्डायै नमः । ह्रीं चण्डचत्वार्यै नमः ।
ह्रीं चण्डरूपायै नमः । ह्रीं चण्डिकायै नमः । प्रत्येकं सम्पूज्य, दे या
वाम भागे नव देवीः पूजयेत् ॥ ह्रीं उग्र द्रुष्टायै नमः । ह्रीं शुभ-द्रुष्टायै
नमः ॥ ह्रीं करालिन्यै नमः ॥ ह्रीं भीम नेत्रायै नमः ॥ ह्रीं विशाल-दयै
नमः ॥ ह्रीं मङ्गलायै नमः ॥ ह्रीं जयायै नमः ॥ ह्रीं विजयायै नमः इति
सम्पूज्य ॥ देव्यग्रभागे षोडश देवी । पूजयेत् ॥ ह्रीं मङ्गलायै नमः ।
ह्रीं नदिन्यै नमः । ह्रीं रुद्रायै नमः । ह्रीं रुद्रनै नमः ॥ ह्रीं कीर्त्यै नमः ।
ह्रीं यशस्विन्यै नमः । ह्रीं पुष्ट्यै नमः । ह्रीं शिवायै
नमः ह्रीं साध्व्यै नमः ह्रीं यशोवत्यै नमः । ह्रीं शोभायै नमः

यदा विष्णुजगत्स्ये कारणोक्तते ॥ ६६ ॥ आस्तीर्यो शेषमभजत्कल्पान्ते
भगवान्प्रभुः ॥ तदावाव सुरौ घोरौ विख्यातो मधुकैटभौ ॥ ६७ ॥ विष्णु
कर्णं मलोद्भूतौ हन्तुं ब्राह्मणमुद्यतौ ॥ सनाभि कमले विष्णोःस्थितौ
ब्रह्मा प्रजापतिः ॥ ६८ ॥ दृष्टवाताव सुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दम् ॥
तुष्टाव योगं निद्रां सामेकाम हृदयः स्थितः ॥ ६९ ॥ वियोधनार्थाय हरे
हरिर्नेत्रं कृतालयाम् ॥ ७० ॥ विरखेस्वरीं जदधरीं स्थिति संहार करिणीम् ॥
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ७१ ॥ ब्रह्मो वाच ॥ ७२ ॥ त्वं
स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वपदकारः स्वरात्मिका ॥ सुधा स्वमन्त्रे नित्ये
त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ अर्धं मात्रा स्थिता नित्या यानुचार्या विशेषतः ।
त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देविजननी परा ॥ ७४ ॥ त्वये तर्ह्यायते त्रिस्व
त्वयै तस्मै जगत् ॥ ७५ ॥ त्वयेतत् पाल्यते देवित्वं मत्प्रभे च
सर्वदा ॥ विस्तृष्टौ सृष्टिरूपात्वं स्थिति रूपाच पालने ॥ ७६ ॥ तथा
संहति रूपान्ते जगतोस्य जगन्मये ॥ महा विद्या महा माया महामेधा
महास्मृतिः ॥ ७७ ॥ महा मोहा च भवती महा देवी महासुरी ॥ प्रहृ-
तिस्त्वं च सर्वस्य गुणं त्रयं विभाविनी ॥ ७८ ॥ कालरात्रिमहारात्रि मोह-
रात्रिरचक्षुराणां ॥ त्वं श्रीस्त्वमीरवरी त्वं ह्रीं स्त्वं बुद्धिर्बोध लक्षणा ॥ ८॥

लज्जा पुष्टि तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च । खड्गिनी शूलिनी
घोरा गद्दिनी चक्रिणी तथा ॥ ८० ॥ शङ्खिनी चापिनी वाणमुद्युहो
परिघायुधा ॥ सौम्या सौम्य तराश्रेण सौम्येभ्यस्त्वति सुन्दरो ॥ ८१ ॥ परा
परा ॥ परमात्ममेव परमेवरी । यच्च किंचित्क्यचिद्वस्तुसद्दृशसदस्यित्ववत्मिके
तत्त्व सर्वस्यया शक्तिः सात्त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ यथा स्वयं जगत्स्रष्टा जगत्पा-

अथै नमः । ह्रीं धृत्यै नमः । ह्रीं आनन्दायै नमः । ह्रीं मेधायै नमः । ह्रीं नन्दायै नमः । इति पूर्ववत्सम्पूजयेत् देव्याय भागे चतुः पट्टिदेवां ह्रीं बीजायै नमः पूजयामि ॥ ह्रीं मन्त्रलायै नमः पूजयामि ॥ ह्रीं भद्रायै नमः पूजयामि ॥ ह्रीं धृत्यै नमः पू० । ह्रीं शान्त्यै नमः पू० । ह्रीं शिवायै नमः पू० । ह्रीं उमायै नमः पू० । ह्रीं सिद्धे नमः पू० । ह्रीं तुष्ट्यै नमः पू० । ह्रीं पुष्ट्यै नमः पू० । ह्रीं उमायै नमः पू० । ह्रीं श्रियै नमः पू० । ह्रीं श्रद्धे नमः पू० । ह्रीं रत्नै नमः पू० । ह्रीं दीप्तायै नमः ॥ पू० ॥ ह्रीं काश्यै नमः पू० । ह्रीं लक्ष्म्यै नमः पू० ॥ ह्रीं ईश्वर्यै नमः पू० । ह्रीं वृद्धयै नमः पू० । ह्रीं शक्त्यै नमः पू० । ह्रीं जया वत्यै नमः पू० । ह्रीं ब्राह्मे नमः पू० । ह्रीं जयन्त्यै नमः पू० । ह्रीं अपरात्रितायै नमः पू० । ह्रीं

स्पत्तियो जगन् ॥ ८३ ॥ सोऽपि निश्चा वरां नीतः कस्तथा स्तोतु मिह श्वरः ॥ धिष्णुः शरीर ग्रहण मह भीशान एव च ॥ ८४ ॥ कारि तारते यतोऽवस्थां कः स्तोतु शक्तिमान्भवेत् ॥ सात्व मित्वा प्रभावैः स्वै रुद्राै र्देवि संतुता ॥ ८५ ॥ मोक्षयैतौ दुराधर्षा वसुरौ मधुकैटभौ ॥ प्रबोधं च जगत्सामी नीयता मच्युतो लह ॥ ८६ ॥ बोधरश्च क्रियता मस्य हन्तु मेतौ महासुरौ ॥ ८७ ॥ अपिरुवाच ॥ ८८ ॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ ८९ ॥ विष्णोः प्रबोध नार्थायनिहन्तु मधुकैटभौ ॥ नैत्रास्य नामिका बाहु इदमेव्यस्तथोरसः ॥ ९० ॥ निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्त जन्मनः ॥ उत्तस्थौ च जगन्नाथ स्तया मुक्तोजनार्दनः ॥ ९१ ॥ एकाग्रविहिं रायता ततः सद्दर्शो च तौ ॥ मधुकैटभौ दुरात्माना वनि वीर्य पराक्रमौ ॥ ९२ ॥ क्रोधरक्ते सणावत्तु ब्रह्माणं जनितो रमौ ॥ समुत्थाय ततस्त्वाम्यां युयुधे भगवान्हरिः ॥ ९३ ॥ पञ्च वर्षे सहस्राणि बाहु प्रहरणो विभुः ॥ ताप्यति बलोन्मत्तो महाभाया विमोहिनी ॥ ९४ ॥ उक्त वन्ती शरोरमत्तो त्रियता मितिकेरावम् ॥ ९५ ॥ भगवानुवाच ॥ ९६ ॥ भवेता मयमे तुष्टौ मम वध्या कुमां वपि ॥ ९७ ॥ किमन्येन वरे गुणै एतायदि वृत्तं मया ॥ ९८ ॥ अपिरुवाच ॥ ९९ ॥ वाञ्छिताम्यां मिति तदा सर्वा पापो मयै जगन् ॥ विनोम्य ताम्यां गदितो भगवान्कर्मले क्षण, आयां जहि न यत्रोर्वा सलिलेन परिप्लुप्ता ॥ १ ॥ अपिरुवाच ॥ २ ॥ तथेरयुस्त्वा भगवता गंग चक्र मदाश्रुता ॥ कृत्वा पकेण वेदिज्ञे जपने शिरसी तयोः ॥ ३ ॥ एव मेवा समुन् पञ्चा प्रहारा सन्तुता स्वयम् ॥ प्रभाय मस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वरामिते ॥ ४ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे सार्वगिके मन्त्रन्तरे देवी माहात्म्ये मधुकैटभ वधो नाम प्रथमाध्यायः ॥ १ ॥ अथाच ॥ १४ ॥ अर्पणं ॥ २४ ॥ श्लोकं ६६ ॥ एवम् ॥ १८४ ॥

अजितायै नमः पू० । ह्रीं मानस्यै नमः पू० । ह्रीं दित्यै नमः पू० । ह्रीं
 मायायै नमः पू० । ह्रीं महा मयायै नमः पू० । ह्रीं मोहन्यै नमः पू० ।
 ह्रीं रति लालसायै नमः पू० । ह्रीं तारायै नमः पू० । ह्रीं विमलायै नमः पू० ।
 तद्वा ह्रीं गीर्वाणायै नमः पूजयामि । ह्रीं शरण्यायै नमः पू० । ह्रीं कौशिक्यै नमः
 पूजयामि । ह्रीं मत्स्यै नमः पू० । ह्रीं दुर्गायै नमः पू० ॥ ह्रीं क्रियायै नमः ।
 पू० । ह्रीं अकम्प्यै नमः पू० । ह्रीं घण्टायै नमः पू० । ह्रीं कर्णायै
 नमः पू० ॥ ह्रीं कपालिन्यै नमः पू० । ॥ ह्रीं रौद्रे नमः पू० । ह्रीं काल्यै
 नमः पू० । ह्रीं मातुर्यै नमः पू० । ह्रीं त्रिनेत्राय नमः पू० । ह्रीं स्वरूपिण्यै
 नमः पू० । ह्रीं बहु रूपायै नमः पू० ॥ ह्रीं रिपु हन्त्र्यै नमः पू० । ह्रीं
 अम्बिकायै नमः पू० ॥ ह्रीं चर्षिकायै नमः पू० । ह्रीं सुर पूजि-
 तायै नमः पू० । ह्रीं वीवस्वत्यै नमः पू० । ह्रीं कौमार्यै नमः
 पू० । ह्रीं माहेश्वर्यै नमः पू० । ह्रीं वैष्णव्यै नमः पू० । ह्रीं महा-
 लक्ष्म्यै नमः पू० । ह्रीं शिवदूत्यै नमः पू० । ह्रीं कार्तिक्यै नमः पू० ।
 ह्रीं कुशिकायै नमः पू० । ह्रीं चामुण्डायै नमः पू० । इति संपुज्या

मध्यम चरितस्य ॥ विष्णु ऋषिः ॥ महा लक्ष्मी देवता ॥
 उष्णिगु छन्दः ॥ शार्ङ्गभरो शक्तिः ॥ दुर्गापूजम् ॥ वायुतन्त्रम् ॥
 यजुर्वेदः स्वरूपम् ॥ महालक्ष्मी प्रीत्यर्थं मध्यम चरितं जपे विनि-
 योगः ॥ अध्ययानम् । ॐ अक्षतकपर्शुं गवेषु कुत्रिशं पद्मं धनु-
 षिकुण्डिकां दण्डं शङ्खं मणिं च चर्मं जलजं पशुं सुरां भाजतम् ॥
 शूलं पाशं मुद्गरानि च दधतीं हस्तैः प्रसन्ना ननां सेवे शौर्य-
 मर्दिनी मिह महालक्ष्मी सरोज स्थिताम् ॥ १ ॥ ऋषिरुवाच देवा सुर यम्
 दधं पूर्णं मन्द शर्वं पुत्रा ॥ महिषे सुराणाम विषे देवानां च
 पुरं दरे ॥ २ ॥ तत्रा सुरैर्महा वीर्यै देव सैन्यं पराजितम् ॥
 जित्वा चसरुता न्देवानिन्द्रोऽभून् महिषा सुरः ॥ ३ ॥ ततः
 परा जिता देवाः पद्मं योनिं प्रजापतिम् ॥ पुरस्कृत्य गन्तास्तत्र यवेश
 गरुडध्वजौ ॥ ४ ॥ यथा वृत्तं तयोस्तद्वन्महिषा सुर चेष्टितम्
 ॥ ५ ॥ त्रिदशाः कथया मासुर्देवाभिर्भवविस्तारम् ॥ ५ ॥ सूर्ये
 न्द्राग्न्यं निलेन्दुनां यमस्य वरुणा स्यच ॥ अन्येषां चापि का
 रान्स स्वयमेवाभितिष्ठति ॥ ६ ॥ स्वर्गो विराजताः सर्वे तेन देव
 गणा मुनि ॥ विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥ ७ ॥
 एतद्वः कथितं सर्वं ममरारि विचेष्टितम् ॥ शरणं वः प्रपन्नाः
 स्मरेद्य स्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ८ ॥ इत्थं निशम्य देवानां वनां-
 सिमधु सूदनः ॥ चकार कोपं शंभुरज अकृदौ कुटिला ननी,

अष्ट मातृकाणां अष्टदिक्षु पूजनं कुर्यात् ॥ ब्राह्मण्यै नमः । मातृ-
 रवयै नमः । कोमार्यै नमः । वैष्णव्यै नमः । वाराह्यै नमः ।
 इन्द्रायै नमः । चामुण्डायै नमः । महालक्ष्म्यै नमः । मय्यै वरिष्ठ-
 कायै नमः । देव्या अग्रभागे भैरवाय नमः । इति पूजयेत् ॥
 तत्र मन्त्रः ॥ भैरवं परमं देवं सर्वं काम प्रसाधनम् । पूजयाम्-
 र्द्धवो देव्याः सर्वाधिकं फलं प्रदम् ॥ ततः श्री परमेश्वर्यै नमः
 दुग्धं कुशं दधि वस्त्रं तण्डुलं यव सपंपादि दद्यात् सहस्र वर्षां न
 क्षिप्रं दुर्गां लोहं मदी पत्तिस्व काम एषो षाङ्गो ऽर्घो भगवत्यै
 दुर्गां देव्यै मया दत्तः ॥ दुर्गे ? दुर्गे ? रक्षिणि स्वाहा
 दुर्गां देव्यै नमः । इत्यर्घं दत्त्वा चन्दनं दद्यात् ॥ अग्निं षोडश
 यज्ञं फलं फलं प्राप्तिं कामनगा चन्दनेन भगवत्यै दुर्गां देव्यै
 अनुलेपनं दत्तं दुर्गां देव्यै नमः ॥ विद्वत्पत्रं मालां भावाय ॥
 चन्दनेन समाग्निते फुट्टयेन विलेपिते । वित्त्वं पत्रं कुशं मालां
 गृहाण्यमुरं वन्दिते ? ॥ दुर्गां देव्यै नमः । अथ सिंह पूजा ॥ ॐ
 ह्रीं ह्रः ह्रः महा शार्ङ्गं विजानाय विजित लोचनाय नमः ॥

॥ ६ ॥ ततो ऽति कोप पूर्णस्य चक्रिणो वदता ततः ॥
 निरवधं क्राम मह तेजो ब्रह्मणः शंकर स्वयं ॥ १० ॥
 अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ॥ निर्गलं सुमहत्तेजस्तत्तत्तत्
 ममगच्छत् ॥ ११ ॥ अतीव तेजसः कूर्तं अक्षयसिद्धि पर्वतम् ॥
 ददुःशस्ते मुनि स्तत्र व्यासा व्याप्त दिगन्तम् ॥ १२ ॥ अनुलं
 तत्र तत्रैतः सर्वं देव शरीरजम् ॥ पृथग्यं तद भूतारो व्याप्तं
 लोक त्रयं त्रिपा ॥ १३ ॥ यदभूद्ब्रह्माभवं तेज त्वेना जायत
 तन्मुखम् ॥ याम्ये न चाभवन्नेता वाहवो विष्णु तेजसा ॥ १४ ॥
 सीम्येन स्तनयो युग्मं मय्ये चैन्द्रेण चाभवत् ॥ वारुणे न च
 जंघोरु निरन्त्र स्तेजसा भुक् ॥ १५ ॥ प्रक्षय स्तेजसा पादौ तद
 गुप्तो ऽर्द्धतेजसा ॥ वसूनां च कशं मुख्यः क्षीरेण च नासिका
 ॥ १६ ॥ तस्यास्तु दन्ताः संभूताः प्राजापत्येन तेजसा ॥ नयनत्रिरु-
 ज्जले तथा पात्रक तेजसा ॥ १७ ॥ अथो च संध्यो स्तेजः
 श्रवणा वनिष्ठस्य च ॥ अन्येषां चैव देवानां संभय स्तेजसा
 शिवा ॥ १८ ॥ ततः समस्त देवानां तेजो राशिश्च मुद्रयाम् ॥
 तां शिरोऽयमुर्ध्वं प्रातु रम्यं महिषादिभिः ॥ १९ ॥ शूलं गृहाद्विनिष्ठं च
 द्दनीनाये विनाकं पूक् ॥ यत्किंचिद् दत्तं यान्तिष्ठः भगुपादा
 न्न चक्षुः ॥ २० ॥ शंखं च चक्रं शक्तिद्वयो तस्यै दृता-

अथ देव्याः षडङ्ग पूजा । ॐ कालीवज्रे श्री लोह द्रष्टाय
स्वाहा हृदयाय नमः । ॐ काली वज्रे श्री लोह द्रष्टाय स्वाहा
शिरसे नमः । ॐ काली वज्रेश्वरी लो० शिखायै वषट् ॥ ॐ
काली वज्रेश्वरी लो० कवचाय हुम् ॥ ॐ स्वाहा काली
वज्रेश्वरी लोह द्रष्टाय स्वाहा ॥ नेत्राभ्यां वौषट् ॥ श्री काली
वज्रे श्वरी लोह द्रष्टाय स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ अथास्त्र पूजा-
त्रिशूलायनमः । खड्गाय नमः । चक्रायनमः । तीक्ष्ण बाणायनमः ।
शक्तैनमः । इति दक्षिणे ॥ खड्गायनमः पूर्ण चापायनमः । अङ्गुशाय-
नमः । घण्टायै नमः इति वामे । अथ सिंहासन पूजा । वज्र नख द्रष्टाय
धाय महासिंहाय हुं फट् नमः ॥ विजयो जयदो जेता विप्रमेता भयङ्करः ।
दुःखहा धर्मदः शान्तः सर्वारिष्ट विनाशिकः ॥ इत्यष्टौ तव नामानि
तस्मार्सिस्पर्शकराः ॥ तेन सिंहासनो नित्यं नाम्ना देवेषुगीयते ॥ त्वयि
स्थितः शिरः साक्षात्त्वापि शक्तः सुरेश्वरि ! ॥ त्वयि स्थितो हरो देवस्त्व
र्धं तप्यते तपः ॥ नमस्ते सर्वतो भद्रं भद्रतो नय भूपते ॥ त्रैलोक्यं जय
सर्वस्व सिंहासन ! ज्योऽस्तुते ॥ अथ खड्ग पूजा ॥ असि विसर्जनम् ॥
अङ्ग ताक्षणाशरो दुरासदः ॥ श्री गर्भो विजयरचैव धर्म राजस्तथैव च ॥
इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा ॥ नक्षत्रं कृतिकातेतु गुरुदेवो

शतः ॥ मारुतोदत्त वांरचापि बाण पूर्णो तथेपुषी ॥ २१ ॥ वज्र मिन्द्रः
समुत्पाद्यकुलिशा इमराधिपः ॥ ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टा मेरावता
द्रजात् ॥ २२ ॥ कालदण्डाशमोदण्डं पाशं चाम्बु पतिर्ददौ ॥ प्रजापतिरबा-
चमाकां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ २३ ॥ समस्त रोम कूपेषु निजरस्मीन्दिवा-
करः ॥ कालरषदत्त वान्तवङ्ग तस्यान्वर्मच निर्मलम् ॥ २४ ॥ क्षीरोदरचा
मलं हार मजरे च तयान्वरे ॥ चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटका
निच ॥ २५ ॥ अर्ध चन्द्रं तथा शुभ्रं कंयूतन्सर्वं राहुपु ॥ नूपुरी विमलौ
वद्वर्धमेव कमनुत्तमम् ॥ २६ ॥ अगुलीयक रत्नानि समस्ता स्यगुलीपुच ॥
शिरश्चक्रां ददौ तस्यै परशुं चात्रि निर्मलम् ॥ २७ ॥ अस्त्राय नेत्र रूपाणि
तथा मेरुं च दर्शनम् ॥ अम्लान पञ्चजां मालां शिरस्यु रसि चापाम् ॥
अवद्वज्जलधित्वास्त्यै पञ्चजं चाति शोभनम् ॥ हिमवान्वाहनं सिद्धं रत्नानि
त्रिविधाः निच ॥ २८ ॥ ददात्र शून्यं सुरया पान पात्रं घनाधिपः ॥ शेषश्च
सर्जं नागेशो महामणिं विभूषितम् ॥ २९ ॥ नागहारं ददौ तस्यै धनं यः
पृथिवी भिनाम् अन्ये एपि सुरै र्देवी मूषणं रायुवै स्वभा ॥ ३० ॥
समानिवां ननादोचैः साहृ हार्यं मुहुर्मुहुः ॥ तस्यानादेनधारेण रत्नमा
पूरितं नमः ॥ ३१ ॥ अमायताति महताप्रति रज्जो महानभूत् ॥ चन्द्र-

महेश्वरः ॥ रोहिणीश्च शरीरं तेष्वारा देवो जनार्दनः ॥ पिता पिता मही
 देवस्तमा पालयसर्वादा ॥ नीलजी भूत शङ्खाशस्तीक्ष्ण द्रष्टृ कृशोदरः ॥
 विशुद्ध धर्मा सततं तीक्ष्णधारस्तथैवच ॥ इयं येन हता क्षीणी हतश्च
 महिषा सुरः तीक्ष्णधार य शुद्धाय तस्मै स्वद्विगाय ते नमः ॥ अथ क्षुरिका
 पूजा ॥ ॥ सर्वायुधानां प्रथमं निर्मितोसिपिनाकिना ॥ शूला पुष्पो द्विनि
 पृष्ठय कृत्वा मुष्टि मह शुभम् ॥ चण्डिकायै प्रदत्तासि सर्वा दुष्ट
 पिनाशिनी ॥ तथा विस्तारिता चासि देवानां प्रति पादिता ॥
 सर्वं सर्वाङ्ग भूतानि सर्वं दुष्ट निवारिणी ॥ क्षुरस्ते रक्षमां
 नित्यं शान्तिं यन्त्र नमोस्तुते ॥ अथ कट्टार पू० ॥ कट्टारक ।
 जगद्रक्ष ! रक्ष ब्राह्मिणा निच ॥ ममदेहं सदा रक्ष कट्टारक ! नमोस्तुते ।
 अथ धनु० ॥ सर्वायुध महाशस्त्र सर्व देवा रसूत्रन ॥ चाप । मां समरेक्ष
 सायकैः सुरसेवितः ॥ धृतं कृष्णेन रक्षार्थं संहाराय हरे एक ॥ त्रयीमूर्ति
 रच त्वं देव ! धनुरक्ष नमाम्यहम् ॥ अथ चर्म० ॥ चर्मं प्रदत्स्व समरे सर्व
 सैन्यस्य रक्षकः ॥ रक्षमां रक्षणीयो हं त्वयाः नमः ! नमोस्तुते ॥ अथ

सङ्कला लोकाः समुदारय चक्रं पिरे ॥ ३३ ॥ चवाक्ष वसुधा चेलुः
 सकलारच महोदराः ॥ जयेति देवारच मुदात्ता मूचुः सिंह बाहिनीम् ३४ ॥
 तृप्तुवृमुनय रत्नैनां भक्ति नम्राः समर्पयः ॥ दृष्ट्वा समस्तं स लुब्ध
 त्रैलोक्य मपरायः ॥ ३५ ॥ सन्नद्धाखिलसैम्यास्तैः समुत्तस्पृष्टा युधाः ॥
 आः किं मेतदिति क्रोधादाभाप्य महिषासुरः ॥ ३६ ॥ अम्यधावतश्च शब्द
 मशोपैरसुरैर्गृतः ॥ सददर्शं ततो देवी व्याप्त लोक त्रयातिपा ॥ ३७ ॥
 वाग क्रान्तिं नतमुनं किंगीटोलिलविताम्बराम् ॥ क्षोभित शेष पातालां
 धनुर्वाजिः स्वनेनताम् ॥ ३८ ॥ दिशो भुजसहस्रेण समस्ता द्रुपाप्य तांस्थि
 ताम ततः प्रवृत्तेयुद्धं तथा देव्यासुरद्विषाम् ॥ ३९ ॥ शस्त्रारभैर्वहृषा मुक्तै
 रादी पितृदिगन्तव्यम् ॥ महिषा सुर सेन्ननीरिचक्षुराप्त्यो महा-
 सुरः ॥ ४० ॥ इयुधे धामरश्चान्येरक्षतुरग वलान्वितः ॥ रथानां मयुतं
 पद्भिरक्ष मादयो महामुरः ॥ ४१ ॥ अयुष्य ता युवानां वसः स्त्रेण
 महाहनु पञ्चा शङ्खश्च त्रियुतै रसि क्षोमा महासुरः ॥ ४२ ॥ अयुवानां
 शतैः पद्भिर्वाप्लोयुयुते ॥ गज बाजि सहस्रोद्येनेदेः पतिवा
 रितः ॥ ४३ ॥ यूतो रथानां कोट्यां च युद्धे तस्मिन्नुपधन ॥ विद्वान्ना-
 म्कोऽयुवानां पञ्चासि रथयुते ॥ ४४ ॥ युयुधे सयुगे तत्र यानां
 परि वारितः ॥ अन्ये च नप्रायुतसो रथ नम इयुते ॥ ४५ ॥ युयुधेः
 सयुगे देव्या महुतन मदा सुगः ॥ कोटि कोटि सहस्रेभ्यु रथानां
 दन्तिना तथा ॥ ४६ ॥ दयानां च यूतो युद्धे तत्रा गूणमहिषा सुरः । तीमेर

वारण० ॥ खड्गायुधानां त्रातात्वंवारणः सर्वावारणाः॥वीराणां देहिधारीत्वं
वारणं सिद्धिं नायक ! ॥ अथ मर्दल० नर्तकीं नर्तकश्चैव वल्लभ ! त्वं
नृपस्य च । मृदु मर्दलेमा रक्त गम्भीर ध्वनि मर्दल ॥ अथ दुन्दुभि० ॥
दुन्दुभैश्च सपरानां घोषो हृदय कम्पनः ॥ त्वत्पूजकानां सौम्यानां तथा
विजय वद्धनः ॥ यथा जीमूत घोषेण हृष्यान्ति वर वारणाः । तथास्तु तव
शब्देन घोषोऽस्माकं भयावहः ॥ अथ चाण० ॥ कामदेवस्य देवानां
सफलारचाजुनस्य च ॥ रामस्य च यथा चाणास्तथास्मार्कं भवन्तिवह ॥
अथ घोण० । रक्त वृक्ष स्थितं त्वं च पूर्णं मायुध सायकैः ॥ सङ्ग्रामे
विजयं नित्यं ज्ञोष काय नमोस्तुते ॥ अथ कुन्त० ॥ पाश पातय शत्रु त्वं
वनया लोभ मायया ॥ गृहाण जीवितं तेषां मम सैन्यं च रक्षताम् ॥

अथ पताका० ॥ नागकिन्नर गन्धर्वं वक्षुभूत महोरगाः प्रमथारच—
महादेवो भूतेशोभातुभिः सह ॥ शक्र सेनापति स्कन्दो वरुणश्चाश्रित-
स्तयि । ॥ प्रद हन्तु रिपून् सर्वान् विजयं चस गच्छन्तु ॥ यानि मुकानि-
रिपुभि भूषणानि समन्ततः ॥ निहि तानि सदातानि त्वया दुष्प्रियतेजसा

भिन्दि पालेश्च शक्ति भिमुसलैस्तथा ॥ ४७ ॥ युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः
परशु पट्टिरीः ॥ केचिच्च चित्तिपुः शक्तीः केचित्पासांस्तथा परे ॥ देवी
खड्ग प्रहारंस्तु ते तां हन्तु प्रचक्रमुः ॥ सापि देवी तनस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि
चण्डिका ॥ जीतयैवः प्रविष्टेद निजशस्त्रान्न वपिणीं ॥ अनायस्ता
नना देवीस्तूय माना सुरार्थिनः ॥ ४८ ॥ मुमोचा सुर देहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि
पेशवरा ॥ सोऽपि क्रुद्धोधुत सटो देव्या बाहन केसरी ॥ ४९ ॥

चचारा सुर सैन्येषु वनेष्विव हुतापनः ॥ निःशसांस्तुमुचे धारचयुध्य
मानारणोऽम्बिका । त एवसद्यः संभूतागणाः शत सहस्रराः ॥ युयुधुस्ते
परशुभि भिन्दि पालासि पट्टिरीः ॥ ५३ ॥ नाशयन्तोऽसुरगणान्देवी राप्सु
पद्महिता ॥ अवाद्यन्त पटहान्गणाः शंखांस्तथा परे ॥ ५४ ॥ हृदद्गारप
मधेवान्ये वस्त्रिन्युद्ध महोत्सवे ॥ ततो देवी विशूलेन गदयाशक्ति
वृष्टिभिः ॥ खड्गादिभिरच शतशो निजपान महा मुरान् ॥ पातयामास
पैवान्यान्यष्टास्थन विमोहितान् । अमुरान्मुरि पारोत वप्रा चान्या न
कर्षयन् ॥ केचिद्विधाकृता स्त्रीसूरीः सङ्गपातैस्तथापरे । ५७ ॥ विमो-
हिता निपातेन गदया भुषिरोत्तन ॥ वेनुवप केचिद्विधैर् मुसलेनधृशंहता ५८
केचिन्निपातिताभूमीभिन्नाशूलेनयचसि ॥ निरन्तर शरीषेणशूताः केचि-
दाजिरे । सेनानुकारिणाः प्राणान्मुनुचुविशदनाः ॥ केसांश्चिदाह्वयिदन्ना-
रिदन्मोयास्तथा परे ॥ ६० ॥ शिरांभि पेनुान्येगामन्मेमणेरिदरिताः ॥
विच्छिन्न जंषा स्वपरे पेनु दण्डा महाभुग ॥ ६१ ॥ एक

काल नेमिबधे युद्धे तथा त्रिपुर घातने ॥ हिरण्यकश्यपेर्भुङ्क्त यथा
देवासुरे तथा ॥ शोभितासि सुरे कन्या शोभसे संयुगे वतः ॥ नीलांश्वरा
भिर्मां दृष्ट्वा विनश्यन्तु ममारयः ॥ अथध्वजापूजा ॥ शङ्क केतु महावीर
मुवर्यंस्त्वन्युपासितः ॥ दया प्रधान योगानां कुरु रक्षां रिपोर्मयात् ॥
अयं वीणा० शास्त्रा वल्लभे ! त्वं हि अङ्गना शत भूषिते ॥ वीणे । त्वं
रक्षमां नित्यं विदग्ध नृप वल्लभे ॥ अथ जिरह० शर्म दस्त्वं हि समरे
धर्म सैन्य वंशोधने ॥ रक्षमां रक्षणीयोऽहं तवा नय । नमोस्तुते ॥ अथ
कुरङ्गल० ॥ प्राण इन्द्रो रिपुस्त्वं चा मलयाऽऽश्लोकमालया ॥ गृहाण
जीवितन्तेपां सैन्यं यच्च मम रक्षताम् ॥ अथ चामरम् ॥ शराङ्क का
शङ्करो हिमडिण्डि महासुर- प्रोत्सारयाशु दुरितं चामरा मर पूजित ॥
अथ छत्रम् ॥ यथाम्युधं द्वादशति शिवायेमां वसुन्धराम् ॥ तथा
द्वादशमा छत्र विजया रोग्यवद्धये ॥ अथ शङ्ख ॥ पुण्यदः शङ्खः !
पुण्यानां मङ्गलानां च मङ्गलम् ॥ विष्णुना त्वं वृतो नित्य सतः शान्ति

वाङ्महिचरणाः केचिदेव्यादिवा कृताः ॥ छिन्नेऽपि चान्येः शिरसि पतिता
पुनरुत्थिताः कवन्वा युयुधुर्देव्या गृहीत परमा युधाः ॥ ननुतुरचापरे
तययुद्धे तूर्यलयाभिताः ॥ ६३ ॥ कवन्धारिखन्त शिरसः रङ्गशक्यवृष्टि
पाणयः ॥ तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ ६४ ॥ पावितैरथ
नागारचैर सुरैश्च वसुन्धरा अगम्या साऽ भवत्त त्रयत्रा मूत्रमहारणः ६५ ॥
शोणितौघा महानयः सद्यस्तत्र विमुञ्चतुः ॥ मध्ये चा सुर सैन्यस्य वारणा
सुरराजिनाम् ॥ ६६ ॥ क्षणेन तन्महा सैन्यमसुराणां तथाश्विका ॥
निन्येक्ष्य यथा वह्निसृष्ट दाह महाषयम् ॥ ६७ ॥ स चसिद्धो महानाद
मुत्सृजन्धृतकेसरः ॥ शरीरेभ्योऽमराधीना मस्तुतिवविचिन्वति ॥ ६८ ॥
देव्यागणैश्च स्तैस्तत्र कृतं युद्धं तवासुरैः ॥ यथैषां तुष्टुवुर्देवाः पुष्पवृष्टि मुचो
दिवि ॥ ६९ ॥ इतिमार्कण्डेय पुण्ये सावणि के मन्वन्तेर देवी माहात्म्ये
महिषासुर सैन्य वधो नाम द्वितीयोऽध्यायः २ ॥ उवाच ॥ ११ ॥ ६८ ॥
एवम् ॥ ६९ ॥ एव मादितः ॥ १७३ ॥

अथध्यानम्—अद्यद्भानु सहस्र कान्ति मरुण क्षीमां शिरोनालिकां
रक्ताभिप्लव योधरां जपवटीं विशाम भीतिवयम् ॥ हस्ताब्जैर्दपटीत्रिनेत्र
पित्तसद्वयस्मरविन्दश्रियं देवीं वद्धहिमां शूरत्नमुक्तां बन्देसुनन्दास्मिताम् ॥
प्रप्रियवाच ॥ १ ॥ निहन्त्य मानवत्सैन्य मयभोक्य महासुरः ॥ सेनार्ता
रिपुपुर कोपापयोयोद्ध मथान्त्रिरुम् ॥ सर्वेवी शर वर्षण वयसं समरे
ऽसुरः ॥ ययामेक गिरेर्गण्डोप वर्षणयोषदः ॥ २ ॥ तस्मच्छित्वा सतो
देवी क्षीतयेव शोत्स्वान ॥ जयान् तुरगान्याण्योयन्तारं धैरवाजिनाम् ४॥

प्रयच्छमे ॥ इति शखाश्च पूजा ॥ श्रो परमेश्वर्यै नाना पुष्पमाल्य दीप
माला दाना पक्वान्न कदली फलाग्रेषु नारङ्गबीज पूर मूलक कुम्भाण्ड
ताम्बूल पूगी फले त्यादिमिष्टमिष्ट द्रव्यं यथा शक्ति दत्ता ॥ रक्त
पुष्पाञ्जलिमादाय स्तुतिं पठेत् ॥ ॐ दुर्गा शिवां शान्तिं करीं ब्राह्मणीं
ब्रह्मणः प्रियाम् ॥ सर्वं लोक प्रणेत्रीं च प्रणमामि सदा प्रियाम् ॥ मङ्गलां
शोभनां शुद्धानिष्कलां परमां कलाम् ॥ विश्वेश्वरीं विश्वमातां प्रणमामि
सदा उमाम् ॥ सर्वं देवमयीं देवीं सर्वं रोगभया पद्माम् ॥ बहोरा विष्णु
नमितां चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ विन्ध्यस्थां विन्ध्य निलया दिव्य स्थान
निवासिनीम् ॥ योगिनीं योग जननीं चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ ईशान
मातरं देवी मोरवरी मोरवर प्रियाम् ॥ प्रखलास्मिन्सदा दुर्गासंसारार्णव वारि
णीम् ॥ गङ्गां पठ तत्त्वोक्तं स्तुत्या द्वापियो नरः ॥ समुक्तः सर्वापास्तुमोदते
दुर्गायासह ॥ इति स्तुत्या प्रणमेत् ॥ यत्र नस्याद्विलिखान्तत्र गोव्रजमीरितम्
अयाग्निस्थापन विधिना अग्निस्थापनं कृत्वा होमं कुर्यात् अथ बलिदान
विधिः ॥ प्रथमं ज्ञाग सेचनं ॥ स्वयंभूर्वासुदेवरच शङ्कररचमहोदयः सदा
रारररचस पुशारच सगणारचस शक्तयः ॥ प्रोक्षन्तु त्वां पशु
मेष्ट मेते विश्वैक हेतवः ॥ ज्ञागाय नमः इति अर्घ्यं चन्दन पुष्प
धूप दीप नैवेद्यान्तैः पूजां विधाय खड्गाय नमः इति खड्गं संपूजयेत् ॥
अत्र प्रसङ्गवद्भागमहिपात्रि कथि रेण कृषिमाह ॥ मेघतधिरैण एकवर्ष

चिच्छेदचयनुसयो ध्वजं चाति समुन्निद्धम् ॥ विश्वाध चैवगात्रे पुच्छिन्न
धन्वा नमाशुगैः ॥ ५ ॥ सच्छिन्नधन्वा विरथो हतारवो हतसारथिः ॥
अभ्यधा वतर्ता देवीं सद्र चमधरोऽसुरः ॥ ६ ॥ सिंह माहृत्य राक्षसेन वीक्ष्य
धारेण मूर्धनि ॥ आजघान भुजे सव्ये देवी मध्यति वेगवान् ॥ ७ ॥
तस्याः स्वप्नो भुजं प्राप्य फाल नृप नन्दन ॥ तवो जमाह शूलं
सकोपा दुरुण लोचनः ॥ ८ ॥ चित्तेषु च ततस्तत्तु भद्रकाल्या महासुरः ॥
जाम्बवत्य मानं तेजोमी रवि विन्धु मिवाश्वरात् ॥ दृष्ट्वा तदा
पतच्छूलं देवीशूलममुच्छ्रुत ॥ तच्छूलं रातधातेन नीवं सच महासुरः ॥ ९ ॥
हते वस्त्रिन्महावीर्ये महिषस्य वधू पती ॥ आज गाम गजारुदरचामर
न्निदरादनः ११ ॥ सोऽपि शक्तिं मुमो पाथ देव्यास्वामभिवकाद्रुतम् ॥
हु काराभि हतां भूमौ पातया मासनिष्प्रभाम् ॥ १२ ॥ भन्नां शक्तिं निपततां
दृष्ट्वा क्रोध समन्वितः ॥ चित्तेषु चामरः शूलं बाधैस्त्वदपि साच्छिन्नम् १३
ततः सिंहः ममुत्तरगज कुम्भान्तरे स्थितः ॥ यादु युद्धेन युयुषे नेतुर्बहि
दशारिणा ॥ १४ ॥ युष्मन्मानो तवस्त्वोतु तस्मान्नागान्महा गती ॥
युयुधातेऽति संख्यां महारै रवि दारुण्यैः ॥ १५ ॥ तवो वेगात्तरमुत्तय

तृप्तिः॥ त्रागरुधिरैस्सदशवर्षतृप्तिः॥ महिपरुधिरैस्तत्तवर्षतृप्तिः॥ स्वदेहरुधि-
रेणसहस्रवर्षतृप्तिः ॥ अथ ब्रह्मगोत्सर्गसंकल्पः ॥ ॐ श्रीमद्बुद्धिर्गार्गदर्शनाभिवन्दन
स्पर्शं तपेण जनन पूर्वकं सदा रापत्यस्य ममाखिला' पञ्चान्ति नानाविध
कल्याणोत्पत्ति दीर्घायुष्य वल पुष्टिवृद्धि दुर्गाप्रोतिकाम. श्रीदुर्गादेव्यैः अमुक
द्वाग वलिं वह्निं दैवतं नमः ॥ पशुं गायत्रीं आवयेत् ॥ ॐ पशु पाशाय
विदुर्महेशिस्त्व्येदायधीमहि तन्नो पशुः प्रचोदयात् ॥ अञ्जलिबद्धा पशुं
प्रायेयेत् । अन्तर्धे पशवः सृष्ट्या यज्ञार्थं पशु घातनम् ॥ अतस्त्वां घात
यिष्यामि तस्माद्यज्ञे बधोऽयधः ॥ शिवा दत्तं रिमैः पिण्डै रतस्त्वं शिवतां
गतः ॥ अपत्यं च पशोर्हित्वं चाशिवं च शिवो मिहि ॥ पशुत्वं वाप्य
रूपेण मम भाग्यादुपस्थितः ॥ चण्डिकाप्रीति दानेन मम चापाङ्गिनाशनम् ।
पशुरूप परित्यज्यगन्धर्वस्त्वं स्वरूपधृक् गोरी लोकं समा साद्य मम
कल्याण दो भव । पशु पाराविमोक्षाय हेम कूटस्थिता यव । परावे च
नमः स्तुभ्य नमस्ते वलि रूपिणे ॥ छेदो लि वलि रूपस्त्व माह्वया

निपत्य च मृगाख्या ॥ कर प्रहारेण शिररचामस्य पृथक्कृतम् ॥ १६ ॥
चक्रप्रचरणे देव्या शिला वृक्षादिभिर्हृतः ॥ दन्त मुष्टि तलैरचैव करा-
लक्ष निपातितः ॥ १७ ॥ देवी क्रुद्धागदापातैरचूर्णया माम बोद्धवम् ॥
वाङ्मूर्त्तिभिन्दि पालेन वायोस्ताम्रं तथागन्धकम् । उग्राम्बुमुप्रवीर्य चतुर्थै व
चमहा हनुम् ॥ त्रिनेत्रा चक्षुर्गुलेन जघान परमेश्वरी ॥ १८ ॥
विडालस्या क्षिप्त्वा कावात्पातया मास वैशिराः ॥ दुर्धरं दुर्मुखं चोभी शरै
र्निन्ये यमक्षयम् २० ॥ एवं सञ्जीव मायेतु स्वसैन्ये महिषा सुरः ॥ माहि-
पेण स्वरूपेण श्रासयामासतान्गणान् ॥ २१ ॥ काश्चित्पुण्ड्र प्रहारेण तुरक्षे वै
स्तथा परान् ॥ लांगूले तडितारचान्याञ्छद्भ्रान्त्यां च विदारितान् ॥ २२ ॥
वेगेन कारिषद् पराजानेन भ्रमणे नच : निः स्वासपवने नान्या म्पातया
मासभूतले ॥ २३ ॥ निपात्य प्रमथा नीक मध्यघावतसोऽसुरः ॥
भिद् हन्तु महदेव्याः कोपं चक्रे ततोऽन्विका ॥ २४ ॥ सोऽपि कोपान्महा
वीर्यः पुर लुण्ठयमहीतल ॥ शृङ्गाम्नां पर्वतानुशांरिचक्षे पच ननाद्वच ॥ २५ ॥
वेग भ्रमण विनुरण्णा मही तस्य व्यसोर्यत ॥ लांगूले नाह तरचाभिः
प्लावयामास भवतः ॥ २६ ॥ घुतश्रविभिन्नास्च ररत्तं ररत्तययुर्वनाः ॥
श्वामानिनास्ताः शनशानिपेत्तु जभसोः चलाः ॥ इति क्रोध समाध्यात
मातंगं महा सुरम् ॥ दृष्ट्वा मा चण्डिका कोपं तदुपाय तदाऽकरोत् ॥
माहिपत्या तस्यै पाशं वधयन् महासुरम् ॥ तस्यात्र माहिपं रूपं सोऽपि
पटो महाभूय ॥ २७ ॥ वनः सिंहाऽमयतसोपायचक्षुःस्थितिका शिरः ॥ दिन.
पि जायतुरप. यद्ग पाशीर ददस्यत ॥ ३० ॥ यत पशाय पुनर्प देयी

पेर्या गुरोः ॥ ह्येदभेरोद्ध्वं दुःखं चमस्य पशुस्त- धृक् ॥ पशु योनि
प्रशूतोसि पूजा होमादि कर्मणि ॥ तुष्टा भवति सादेवी सारकैः पिशिते
तवः ॥ इति स्तुतिः ॥ ॐ काली काली वज्रोत्तरो लोह दण्डाय नमः ॥
पूर्वोक्तैरसि विसर्जनादिमन्त्रैः खड्गप्रणम्य ॥ श्री परमेश्वरीध्यात्वेक
प्रहारेणच्छिन्द्यात् ॥ कपूर्वमश्रितं रुधिरं समर्पयेत् ॥ अथ पुनर्गोतमोक्त
द्वागोत्सर्गं विधिः ॥ कुशाप्रश्नं द्वागं प्रोक्ष्य ॥ ॐ अग्निः पशु रासी चेना
यजन्तस पतँल्लोकमजयस्मिन्नग्निरः सते लोको भविष्यति तन्तेस्यसि
पियैता अपः ॥ ॐ वायुः पशुरासी चेना यजन्त सप्तँल्लोक मजयस्मिन्
ग्निरः सते लोको भविष्यति तन्तेष्यसि पियैता अपः ॥ ॐ सूर्य पशु-
रासी चेना यजन्तस पतँल्लोक सजयस्मिन्नग्निरः सते लोको भविष्यति
तन्तेष्यसि पियैता अपः (औचरहः पशुरासी दित्यादि ॥ ॐ गन्धर्गः
पशुरासी दित्यादिना ॥) द्वागं हस्तेन स्पृशेत् ॥ ॐ वाचं ते शुन्यामि ॥
ॐ शिरस्ते शुन्यामि ॥ गृध्रते शुन्यामि जुस्ते शुन्यामि ॥ ॐ कर्णो वि
शुन्यामि ॥ ॐ यक्षं ते शु० ॥ ॐ कण्ठे ते शु० ॥ ॐ मेढू ते शु० ॥
ॐ सर्वा गात्राणि ते शुन्यामि इति अक्षतान् पशु गात्रे निक्षिप्य ॥ ॐ वाक्

ते आप्यायिच्छेदसायकैः ॥ तं तत्र चर्मणः सार्धं वतः सोऽभून्महागजः ॥ ३१ ॥
करोणं च महासिंहं तं चाकर्षं जगजं च ॥ कर्पतस्तु कर् देवी हृद्वेन निर
कृन्तत ॥ ३२ ॥ ततो महासुरो मूयो माहिषं वपुःस्थितः ॥ तच्चैव ह्योभया
मास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ ३३ ॥ ततः क्रुद्धा जगन्माता परिहृष्ट
पानमुत्तमम् ॥ वर्षा पुनः पुनश्चैव जहासारुणं लोचना ॥ ३४ ॥ ननर्द
वामुः सोऽपि बल वीर्यं मदीदृतः ॥ विषाणभ्यां च विक्षेप परिहृष्टां
प्रेति भूधरान् ॥ साचता न्प्रक्षिता स्तेन चूर्णं यन्तो शरोत्करैः वयाचतं
मदीद धूतं सुप्त रागा कुत्रा वरम् ॥ ३५ ॥ देव्युयाच ॥ ३६ ॥ गर्जगर्ज
चूर्णं मूढं नष्टु यावत्पिबाम्यहम् ॥ मयात्वयिहवेऽत्रैव गात्रिण्यं त्यागु
देवताः ॥ ३७ ॥ श्रुपिठवाच ॥ ३८ ॥ पयं मुक्ता समुत्पत्य साऽऽन्दा
तं महा सुधम् ॥ पादेना क्रम कण्ठे च शूलं नैनं मत्ताडयन् ॥ ४० ॥ ततः
सोऽपि पदा क्रान्तनया निज मुखा ततः ॥ अथ निष्पान्त पयसो
देव्या धीरेण सखतः ॥ ४१ ॥

अथ निष्पान्त पयसो बुध्यमानो महासुरः ॥ तया महासिना देव्या
शिरादिक्षत्वा निषानितः ॥ ततो हाहा कर्त्तुं सर्वं देव्यं सैन्यं नारा ॥ ४२ ॥
प्रदं च परं त्रयुः सक्तः देवता गणाः ॥ ४३ ॥ तुष्टु धुक्तां मुरा देवी
सह दिव्यं मंदिरिभिः ॥ त्रयुर्गन्धर्व पतयो ननृते श्वाप्सरो गणाः
॥ ४४ ॥ इति भास्करे पुराणे मातृलिङ्गे मन्वन्तरे देवी साहाय्ये महिषा-

धत्ताम् ॥ ॐ शिरस्ते आप्याताम् ॥ ॐ शृङ्गे त आप्याताम् ॥ ॐ
चक्षुभ्य आ० ॥ ॐ कर्णोर्ध्वं आ० ॐ वक्त्रं च आ० ॥ कर्णोर्ध्वं आ० ॥
मेढ्रं च आ० ॥ ॐ सर्वा गात्राणि आप्यायताम् ॥ पशोरुपरि पुष्पाणि
निक्षिप्य प्रार्थयेत् ॥ शिरः कण्ठे ललाटे च पादयोर्जङ्घयोस्तथा ॥ नेत्रयोः
मर्गगात्रेषु मुरचन्तुषु देवताः ॥ अनेन न्द्वारं मोक्षं पशुगायत्री श्राव-
येत् ॥ ॐ पशु पाशाय विद्महे शिरस्त्रेदाय धीमहि ॥ तन्नोद्वागः प्रचो-
दयान् ॥ पुष्पाक्षतैः पूजयेत् ॥ सक्लीं फेवारि सरस्वति लीयतां नमः फ-
ट् वीपट् ॥ इत्यादि क्रमेण सां पादयोः पृथिवी लीयताम् ॥ सां पायी मित्रो
लीयताम् ॥ सां चक्षुपोस्तेजो लीयताम् ॥ सां उपस्ये जलं लीयताम् ॥ सां कर्णो-
र्ध्वं लीयताम् ॥ सां सर्वाङ्गे पुद्गलो लीयताम् ॥ सां मनसि काली लीयतां
फट् वीपट् ॥ इति वचस्त्याने लीनं कृत्वा वचदशाङ्गं सृशेत् ॥ ॐ वामुष्टायै
नमः कपाले ॥ ॐ यमायनमः गृह्ययोः ॥ ॐ राशिभास्कराभ्यां नेत्रयोः ॥

सुर वधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ उवाच ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ ४१ ॥
पद्यम् ॥ ४३ ॥ एवमादितः ॥ २६७ ॥

अथ ध्यानम् ॥ काला भ्रामां कटाक्षै ररि कुल भयदां मौलि बद्धेन्दु
रेखां शंखं चक्रं कृष्णं विशिरामपि करै रुद्ध हन्ती त्रिनेत्राम् ॥ सिंह
रुक्म्याधि रुदां त्रिभुवन मखिलं तेजसा पूरयन्ती ध्यायेद् दुर्गा जयाख्यां
त्रिदश परि पृतां सेवितां निद्रि कामैः ॥ ४ ॥

अपिकृषाच ॥ १ ॥ शक्रादयः सुर गणा निहितेऽपि कीर्ये ॥ तस्मिन्दु-
रामनि सुरारि बले च देव्या ॥ तां तुष्टुबुः प्रणयति नम्र शिरोधरांसां ।
वाग्भिः प्रहर्षं पुनकोद्गम श्वाह देहाः ॥ २ ॥ देव्या यया तव
मिदं जगदात्म शक्त्या । निःशेष देव गण शक्ति समूह मूल्यां ।
तामन्विष्टा मखिल देव महर्षि पूज्यां । भक्त्या नताः स्मविद्धानु
शुभानिधान ॥ ३ ॥ यस्याः प्रभाव मतुलं भगवान ननन्तो । प्रह्ला
दरत्न नहि धस्तु मलं वर्लच ॥ सा वरिहृष्टाऽरिख जगत्तरि पाल नाय
नाशाय चा शुभ भयध्यामोतिं करोतु ॥ ४ ॥ या ध्योः स्वयं मुहूर्ति नां भवः
नेष्व लक्ष्मीः । पापहमना कृतघियां हृदयेषुमुक्तिः ॥ भद्रा मतां कुल जन
प्रमदस्य कजातां त्यां नताः स्म परि पालय देविद्विगम्य ॥ ५ ॥ किं
धरायाम तव रूप मधिन्वयेतु । किं चाति वीर्यं मसुर धव काशिभूरि ॥
किं पादेषु परि वानि तथाति यानि, सर्वेषु देव्य मूर देवगणा दिहेषु ॥ ६ ॥
हेतुः ममस्त जगतां त्रिगुणाऽपि कोपे । मेधावमे हरि हरदिनिर्घयपारा ॥
सर्वोभयार्थमिदं जगदशानूत । मन्वाऽह्ना हि पमा प्रवृत्तिस्त्रमाशा ॥
यस्याः ममस्त मुख ममुदीरणेन । नृदिं प्रयाति महेष्पु मंगेषुहेति ॥

बृहस्पतये० कर्णयोः ॥ ॐ चन्द्राय० रूपोलयोः ॥ ॐ अधिरवदनाय० मुरे ॥ ॐ रक्त
दन्ति वा येनमः दन्ते ॥ ॐ पृथिव्यै० नासिकयो० महादेवाय० कण्ठे ॥ ॐ धिव्यै०
उदरे ॥ ॐ प्रजापतये० मेदसि ॥ ॐ कूर्माय० पृष्ठे ॥ ॐ साङ्गोपाङ्गाय नमः पुच्छे ॥
ततः पूर्वोक्त यज्ञार्थे पशवः मृष्टा इति मन्त्रेण पशुं प्रार्थयित्वा खड्गं
पाशा दिना संपूज्य ॥ ॐ मध्ये ब्रह्मणे नमः ॐ अग्ने महादेवाय नमः ।
ॐ पृष्ठे यमाय नमः ॥ ॐ आधारे कालाय नमः ॥ पूर्वोक्तं असिबिम्बजं
पठित्वा ॥ छागश्चन्द्रे षपयेत् यावद् गात्र शिरो वल्लिं न चान यति ताप-
द्वलोकाल्यै नम इति मन्त्रेण जलं प्रक्षिपेत् । अथ रुविर सेठ संकल्पः ॥
ॐ अयोह दश वर्षा वक्षिन्न दुर्गा प्रीति कामनया इदं छाग रुधिरं भग
वत्यै मया दत्तम् ॥ अजमेयमहिषा दिवलिदानेतु ॥ अशमः ॥ पटन्यामद्धरात्रे मम-
सर्वापचान्ति पूर्वकं सर्वं कल्याणोत्पत्तिदारुणगृहपीडोपशमनशत्रु मारण
पूर्वकं दिग्विजय राष्ट्र प्राप्ति कामनया इमं महिषं यम दैवतमजं वह्नि
द्वत्तं मेघं वरुण दैवतं वृक्षयज्ञ विनाशिन्ये महाधोरायै कौटि योगिनी परि
भूतायै भद्र काल्यै ह्रीं-दुर्गे । रक्षणि स्वाहा श्री दुर्गादेवी प्रसिधे घातयित्वे ॥
ततो नाम मन्त्रेण कृष्णालं संपूज्य ॥ अग्रेष्ठ समील वनका ननदान जन्य

स्वाहाऽसि वै पितृगणस्य च तृप्ति हेतु । रुधायं से त्वमत एव जनैः
स्वधा च ॥ ८ ॥ यामुक्ति हेतु रवि चिन्त्य महा व्रता स्त्र । मम्यस्यसे मुनि-
यतेन्द्रिय तत्त्व सारैः ॥ मोक्षार्थमिमुं निभिरस्वसमस्तदोषै । विद्याऽसि सा
भगवती परमाहि देवि ॥ ६ ॥ शब्दार्थिकासु विमलग्ने जुषां निधान ।
मुग्दीधरस्य पदपाठ वतांचसान्नाम् ॥ देवी त्रयोभगवतो भवभायनाय वार्ता च
सर्वं जगतां परमार्ति हन्त्री ॥ १० ॥ मेधाऽसि देवि विदिता मित शास्त्र
सारा दुर्गासि दुर्गा भव सागर नीर संग ॥ भोः कैट भारि हृदये कृत्वाधि
वासा । गौरी त्वमेव शशिमीलि कृत प्रतिष्ठा ॥ ११ ॥ इपत्सहा सममलं
परि पूषां चन्द्र विम्यानु कारि फनकोवम कान्ति कामम् ॥ अत्यद्भुतं
प्रदत्त मातरुपा तथाऽपि वक्त्रं विलोम्य सहसा महिषामुरेण ॥ १२ ॥
दृष्टवानु देवि कुपितं भ्रुकुटी कालं मुद्यच्छराः सुसदराच्छ्रवि यन्न सद्यः ॥
प्राणान्मुमोच महिषस्तद तीवचित्रं कैर्जायते हि कुपितान वरु दरां
नेन ॥ १३ ॥ देवि प्रसोद पाशा भयतो भयान सद्यो विनाशयसि कोप
यती कुलानि ॥ प्रियावमे वदधुनेत्र यदस्व मेतन्नीलं श्लेष्मु विपुलं महिषा
सुरस्य ॥ १४ ॥ ते संमता अन पदेषु वनानि तेषां तेषां यशांसि न पसी
दति पर्नं वगैः ॥ धन्यास्त एव निभृत्तनज्जुह्वर दारा येषां सदाऽमुदय
दायरी प्रमत्ता ॥ १५ ॥ धर्म्याणि देवि स्रक्तानि सदैव कर्मादयत्या
दयः प्रतिदिनं मुहूर्ती करोति ॥ स्वर्गं प्रयाति च ततो भयतो प्रसारा ।

फलं प्राप्तिं कामैः कुष्माण्डं फलं वनस्पतिं दैवतं भगवत्यै दुर्गा देव्यै
मया दत्तम् इति संकल्प्य । कुष्माण्डं फलं देवी प्रीतये दद्यात् ॥ ततो
महिष रुधिरं दानं संकल्पः । अद्यशतवर्षा वल्लिन्न दुर्गा प्रीतिं काम
नया इदं महिष रुधिरं भगवत्यै दुर्गा देव्यै मया दत्तं नमः ॥ पशु
कपालं देव्या पुरतो धाम आगे संस्थाप्य पुष्पाक्षतयुतं दीपं
तरुपालो परि दद्यात् ततोवशिष्टं रक्तं धृत्वा कुशाविमिश्रघा विभज्य
तेन पूर्वं चा मुण्डां तर्पयामि ॥ तदक्षिणे योगिनीं तर्पयामि ॥ प-
श्चिमे ङाकिनीं तर्पयामि ॥ उत्तरे भैरवीं तर्पयामि ॥ आग्नेये
विदारिकां तर्पयामि ॥ नैऋत्ये पाप राक्षसीं तर्पयामि ॥ वायव्ये
पूतनां तर्पयामि ॥ ईशाने कालिकां तर्पयामि ॥ इति सन्त-
प्य ॥ खड्गाय खलनाशाय भक्त कार्वाय तत्परः ॥ पशु च्छेद-
स्त्रया कार्वायै खड्ग रुपिन्न मोस्तुते ॥ इति खड्गं प्रणमेत् ॥
बहुशोज महिषा घाते अद्यत्संख्या वर्षा व ल्लिन्न दुर्गा प्रीतिं काम-

श्लोक त्रयोऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ १६ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीति
मशोप जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि ॥ दारिद्र्यदुःख भय
हारिणि का त्वदन्या । सर्वो पकार करणाय सदा त्रिचिन्ता ॥ १७ ॥
एभिर्हृत्तैर्जगद्दु पैति सुखं तथैते कुर्वन्तु नाम नर काय विराय
पापम् ॥ संप्राम मृत्यु मधिगम्य दिव प्रयान्तु मत्स्येति नूनमहिता
भ्विनि हंसि देवि ॥ १८ ॥ हृष्टैर्वकिं न भवती प्रकरोति भस्म ।
सर्वा सुरा नरिषु यत्प्रदिशोपि शस्त्रम् ॥ लोकान्प्रयान्तु रिपवो
ऽपि हि शस्त्रपूता ॥ इत्थं मति भवति तेष्व हितेषु स्वाध्वी ॥ १९ ॥
खड्ग प्रभानिकर त्रिस्फुरणैस्त्वयोप्रेः शूलाम कान्ति निवहेन दृशो
ऽसुराणाम् ॥ यन्नागता विल यमं शुभविन्दु खण्ड ॥ योग्या ननं
तव विलोक यतां तदे तम् ॥ २० ॥ दुर्वृत्तं वृत्त शमनं तव देवि
शीलं । रूपं तथै तदविबिन्त्य मनुज्य मन्येः ॥ वीर्यं च हस्त इव
देव परा क्रमाणां येरि ध्वनि प्रकटि तैव दयात्वयेत्यम् ॥ २१ ॥
केनो पमामवतु ते ऽस्य परा क्रमस्य । रूपं च शत्रुभय कारयति
हारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरनिष्ठता च दृष्टा त्वय्येव देवि
वरदे मुवन त्रयेऽपि ॥ २२ ॥ प्रलोक्य मेतद् विलं रिपु
नाशनेन । त्वत् त्वया समर मूर्धनि ते ऽपि दत्ता । नीता दिवं
रिपु गणाभयमप्य पास्त मस्मा कमुन्मद सुस्फारि भवं नमस्ते
॥ २३ ॥ शूतेन पादितो देवि पादि पट्टेन चाम्बिके । पण्डा
स्तेन सः पादि आपादयानि स्वदे नय ॥ प्राच्यां रव म-

नया एतान्धागान् वह्निदैवतान् एतान्मेघान् वरुणं दैवतान् एतान्
महिषान् यम दैवतान् श्रो दुर्गा देव्यै प्रीतये अहं घातयिष्ये ॥
महिष त्वेन कुमारं वीजपूरं नर स्ततः ॥ छागा भावे कर्कटी
स्यान्मत्स्या भावे तु मूलकं ॥ मधु त्रयं घृत मधु शर्करा परि कीर्त्ति-
तम् ॥ नारि केलोदकं पुण्यं रदस्यहि शिवोदकम् ॥ इति विशेष
वाच्यं नर महिष द्वाग मत्स्या भावे वीज पूरकं कूष्माण्ड कर्कटी
फलम् मूलकं घृत मधु शर्करा नारि केलोदिकं भगवत्यै दुर्गा
देव्यै क्रमेण निवेदयेत् ॥ कर्वालो घृन्ताकं जम्बीरं नारङ्ग कोशातक
च दद्यात् ॥ अथ स्तुतिः ॥ जयदेवि जगन्मात जय पापीष
हारिणी ॥ जय जन्म जरा व्याधि तृष्णा दावा नला कृते ? ॥
जय सर्व विपत्तिघ्नि जयत्रिदश वन्दिते ? ॥ जय नित्या नन्द रूपे जय
कल्याण दायिनि ? ॥ जय शत्रु क्षय करि जय रोग प्रणां शिनी ? ॥

ती ज्यां च चरिडके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणे नात्म शूलस्य उत्तर-
स्यां तथे श्वरि ॥ २५ ॥ सौम्यानि यानिरूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति
ते । यानि चात्यर्थं घोरानि तैरक्षा र्मां स्वया भुवम् ॥ खड्ग शूल
गदा द्वानि यानि चास्त्राणि ते ऽम्बिके । कर पल्लव संगीनि तै
रस्मान् रक्षसर्गतः ॥ २७ ॥ श्रुपिह वाच । २८ ॥ एवं स्तुता
सुरै दिव्यैः कुसुमै नन्दनोद्भवेः ॥ अर्चिता जगतां धात्री तथा
गन्धानु लेपनैः ॥ २९ ॥ भक्त्या समस्तैस्त्रि दशै दिव्यै धूर्पैः
सुधूपिता ॥ प्राह प्रसाद सुमुखी समस्तान्प्रणतान्मुरान् ॥ ३० ॥
देव्यु वाच ॥ ३१ ॥ त्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्म त्तो अभिषा
क्षितम् ॥ ददा म्यह मति प्रीत्या स्तवे रेभिः सुपूजिता ॥ ३३ ॥
देवा ऊचु ॥ ३३ ॥ भग वत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते ।
यदयं निहतः शत्रु रस्माक महिषा सुरः ॥ ३४ ॥ यदि चापि वरो
देयस्त्वया ऽस्माक महे श्वरि ॥ संस्पृतासस्पृता त्वंनो हिंसयाः परमा-
पदः ॥ ३५ ॥ यश्च मर्त्यः स्तव रेभिस्त्वां स्तोष्यत्य मजा नने ॥
तस्य वित्तद्धि विभवे — धनदारादिसंभदाम् ॥ ३६ ॥ वृद्धये ऽस्मत्प्रसन्ना
त्वंभवेयाः सर्वदाभिके ॥ ३७ ॥ श्रुपिह वाच ॥ ३८ ॥
इति प्रसादिता देवै जंगतो ऽर्थे तथात्मनः ॥ तथे त्युक्त्वाभद्रकाली बभूवा
न्तर्हिता नृप ॥ ३९ ॥ इत्येतत्कथितं भूपसभूता सा यथा पुरा ॥ देवी देव
शरीरेभ्या जगत्त्रय हितैषिणी ॥ ४० ॥ पुनरवगौरी देहात्सा समुद्रभूता
यथाऽभवत् ॥ वधाय दुष्ट दैत्यानां तथा शुम्भ निशुम्भयोः ४१ । रक्षणाय
चलोकानां देवानामुपकारिणी ॥ उच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथा वक्तव्यम् ॥

जय-भीमे जया घोरे जय सङ्कट वारिणि । ॥ जयामृत रसा स्वाद
तुन्दिला नन्दविपद् ! ॥ त्रिनेत्रे विकरालास्ये सुण्डमाला विभूषिते ! ॥
सरसुर क्षय करि खड्गखट्वाङ्गधारिणि ! ॥ महाघोरे महारात्रे दैत्य
दपं निपूदिनि ! ॥ इमं पशु बलि ! देवि गृहीत्वा काल रात्रि के ! ॥
प्रोताभव महा चण्डि रत्नमां शरणागतम् ॥ आयुर्देहि धन
देहि भाग्यं कीर्ति च देहिमे ॥ स्त्रियं देहि सुतान् देहि सर्वाङ्का-
मार्श्वदेहि मे ॥ उग्र चण्डेप्र चण्डासि प्रखड्गकर बालिनी ॥ महा
चण्डोप्रदोर्दण्डे विश्वेश्वरी नमोस्तुते ॥ रत्नमां शरणागतं स्वभार्ता त
मानसम् ॥ हर पापहर क्लेशहर शोकं हरा सुखम् ॥ हर रोगं हर
क्षोभं हर दैन्यं हर प्रिये ॥ स्तुति मेवां पठित्वैव दण्डवत् प्रणमेद् भुवि ।
गुह्य कालि जगद्धात्रि सर्वान्तर्गामिनीस्वरि ! ॥ गृहि त्वेनं पशु बलि
यथोक्त फलदा भव ॥ कायेन मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिमम ॥ अन्त

मिते ॥ ४२ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणेसावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये
शकादिस्तुति नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ उवाच ॥ ५ ॥ अथ ॥ २ ॥
श्लोक ॥ ३५ ॥ एषम् ॥ एष मादितः । २५६ ॥

उत्तम चरितस्य ॥ रुद्र ऋषिः ॥ महा सरस्वती देवता ॥ अनुष्टु
पुञ्जः ॥ भीमाशक्तिः ॥ आमरी बीजम् । सूर्यस्तत्त्वम् ॥ सामवेदः
स्वरूपम् । महा सरस्वती प्रीत्यर्थं उत्तम चरित जपे विनियोगः ॥ अथ
ध्यानम्—चण्डा शूरा इलानि शम्भु मुशले चक्रं धनु रत्नायक इस्ताम्बैर्दधतीं
चनान्त त्रिलसङ्कीर्णशु तुल्य प्रभाम् ॥ गौरीदेह समुद्रां त्रिगतां
माधार भूतां महा पूर्वा मंत्र सरस्वता मनुमजे शुम्भादि देत्यादिनीम् ॥ ५ ॥

ऋषि उवाच ॥ १ ॥ पुराशुम्भनि शुम्भाभ्यामसुराभ्यांशचीपते प्रे लोक्त्वं-
यज्ञभागाश्च दत्तामद यत्ना अयात् ॥ तावेर सूर्यतां तद्वद्भि कारं तथैन्दवम् ॥
कोवेर मय याम्यं च चक्राते बहणस्य च ॥ तावेवपन नाधि च चक्रतु-
बंदि कर्मच ॥ तवां देवा विनिर्मुवा भ्रष्ट रात्र्याः पराजिताः ॥ ४ ॥ इवा-
धिकाता त्रि दरां त्वाभ्या सर्वे निराकृताः ॥ महासुराभ्यां तां देवी संस्तर
म्य पराजिताम् ॥ ५ ॥ तयाऽऽत्मार्क वरो दत्तो यथापत्मुस्त्वाऽऽक्षिताः ॥
भयतां नाश विभ्यामि तत्तत्तत्परमापवः ॥ ६ ॥ इति कृत्या मतिं देवा
हिम वन्त नगेश्वरम् ॥ जग्मुस्तत्र ततो देवी विष्णु सायां प्रनुष्टुबुः ॥ ७ ॥
देवा शत्रुः ॥ ८ ॥ नमो देव्ये महा देव्ये शिवायै सततं नमः ॥ नमः
प्रष्टये भद्रायै नियवाः प्रणतः स्मवाम् ॥ ९ ॥ रीद्रायै नमो नित्यायै गौरी
भाष्यै नमो नमः ॥ ज्योत्स्नायै चेन्दुर्लपिष्यै सुरायै सततं नमः ॥ १० ॥
कल्याणै प्रष्टया नृदयै मिदयै कुर्मो नमो नमः ॥ नैश्वर्ये भूषां

वेतालाः पूतना जम्भका दृढः ॥ ते सर्वे तृप्ति मायान्तु वलिदानेन
तर्पिताः ॥ इति वलि दद्यात् ॥ क्षेत्रपालाय कृच्छरान्तं वादध स्रुत
वलि दत्त्वा होमं समाप्य होमन्ते श्री परमेश्वर्या निशेषतः स्नानं कुर्यात् ॥
इति महाप्रम्यां काल रात्रि विधिः ॥

अथ महा नवमी पूजा विधिः ॥ सातु पूर्व युता प्राञ्च तद्यथा हेमाद्रौ
स्कान्दे ॥ पूर्व विद्धा प्रकर्तव्या नवमी वलि कर्मणि ॥ न कुर्यान्नवमी वात
दशमी संयुतां सदेत्यादि वचनात् ॥ पूर्व विद्धा शुभेति प्रति भावि ॥
अष्टमी दशमी सन्वी तृतीय खलु कथ्यते ॥ तस्मिन्कृते वलिदाने पुन-
नाशो भवेद्भूयाः इति ॥ नवम्या मपरा ह्येतु वलि दानं प्रशस्यते ॥ इति
धौम्य वचनात् ॥ शुद्धा नवमी महा नवमी न विद्धा ॥ शुद्धाया अभावे
अपराह्ये यत्र नवमी तत्रै वेत्ति ॥ नवम्या मपरा ह्येतु वलिदानं
प्रशस्यते ॥ दशमीं वज्रये तत्र नात्र कार्या विचारणेति मदन श्लोक्तत्वात्
ब्रह्म वैवर्त्तण्डि ॥ नन्दायां ज्वलते वह्निः पूर्णायां पशुघातनम् ॥ भद्रायां
गोकुल धीका तत्र राज्य विनश्यति ॥ यदातु नवमी त्रुटित्ता तदाष्टम्यां

सन्धिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४७ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४८ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः
॥ ४९ ॥ या देवी सर्व भूतेषु भद्रा रूपेण सन्धिता ॥ नमस्तस्यै ।
॥ ५० ॥ नमस्तस्यै ॥ ५१ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५२ ॥
या देवी सर्व भूतेषु कान्ति रूपेण सन्धिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५३ ॥
नमस्तस्यै ॥ ५४ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ५५ ॥ या देवी सर्व भूतेषु
लक्ष्मी रूपेण सन्धिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५६ ॥ नमस्तस्यै ॥ ५७ ॥ नमस्तस्यै
नमोनमः ॥ ५८ ॥ या देवी सर्व भूतेषु वृत्ति रूपेण सन्धिता ॥
नमस्तस्यै ॥ ५९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६१ ॥ या
देवी सर्व भूतेषु श्रुति रूपेण सन्धिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६२ ॥ नमस्तस्यै
॥ ६३ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ६४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु दया रूपेण
सन्धिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६५ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६६ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः
॥ ६७ ॥ या देवी सर्व भूतेषु तुष्टि रूपेण सन्धिता ॥ नमस्तस्यै
॥ ६८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६९ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ७० ॥ या देवी सर्व-
भूतेषु मान्द रूपेण सन्धिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७२ ॥
नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ७३ ॥ या देवी सर्व भूतेषु धान्ति रूपेण सन्धिता ॥
नमस्तस्यै ॥ ७४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७५ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ७६ ॥
इन्द्रियाण्य मण्डिप्राग्नी भूतानां या गिरीषु या ॥ भूतेषु यत्तत् तस्यै
व्याप्ये दद्या नमोनमः । चित्ति रूपेण या कृत्स्न मेव दद्यात् स्थिता
उपत ॥ नमस्तस्यै । ७८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७९ ॥ नमस्तस्यै नमो-

नवमी पूजा कार्या ॥ तत्र पूजन विधिः ॥ अयोहासिन्य शुक्ल महा
नवम्बां सकल पाप क्षय पूर्वक धर्म यशो दीर्घायुष्य ब्रह्म लोक गमन
ब्रह्मेन्द्र रुद्र विष्णादि प्राप्य परम पद प्राप्ति काम
स्त्रि शूलिनी दुर्गा चण्डिका पूजन महं करिष्ये ॥ ॐ त्रिशूलिनी हा
गच्छेद्द तिष्ठेत्या वाह्य त्रिशूलिन्य नमः ॥ इति मन्त्रेण पाद्यादि नेपेधान्तैः
सम्पूज्य तत्र दुर्गा शिवां शङ्करां चण्डिकां च सम्पूज्य अष्टम्यानिबोक्त
प्रकारेण बलिदानं कुमारो पूजनं शङ्खाच्च पूजनं कुर्यात् ॥ इतिमहा
नवमी विधिः ॥

अथ दशम्यामपराजिता पूजा ॥ अवषार्चण संयुक्ता दशमी शुक्ल
पक्षगा इषे मासि स्थिता ज्ञेया विजया दशमी तिथिः सा नवमी विद्धा
कर्तव्या नत्वेकादशी युक्ता ॥ मध्याह्ने विजय मुहूर्त इति केषां चिन्मतम् ॥
सन्ध्यासमये केषां चिन्मतम् ॥ विजया रयोऽष्टमस्मृत इति वशान्तराजः ॥
किंचित्सन्ध्या मत्तिकन्य किरिचटुत्पन्न तारकः ॥ विजयो नाम योगोयं
सर्व कर्मसु सिद्धदः ॥ इति गर्ग संहिताया मुक्तम् । अवषय युक्ता शुद्धा

नमः ॥ ८० ॥ स्तुता सुरैः पूर्वं मभोष्टसंभया । तथासुरेन्द्रेणदिनेषु सेविता ॥
करोतु सानः शुभ हेतुतोत्तरी । शुभानि भद्राण्य मिहन्तु चापदः ॥ ८१ ॥
या सांप्रतं चोद्धत दैत्यतापितैरस्माभिरिप्सा च सुरैर्नमस्यते ॥ या वस्तुता
तरणणमेव हन्तिनः सर्वा पदंभक्ति विनम्र मूर्तिभिः ॥ ८२ ॥ अपिहृषाच
॥ ८३ ॥ एवं तत्वादि युक्तानां देवानां तत्र पार्वती । स्वातु मन्था ययोतोये
जाह्नव्या नृप नन्दन ॥ ८४ ॥ साऽप्रवोत्तान्पुरासुभ्रूमवद्विः स्तुयतेश्वरा
शरीर कोश वरचास्याः समुद्धता ब्रवीच्छिवा ॥ ८५ ॥ स्तोत्र ममेतत्कि-
यते शुम्भ दैत्य निरा कृतैः ॥ देवैःसमेतैः समरे निगुम्भेन पराजितैः ८६॥
शरीर कोशाघतस्याः पार्वत्या जिः सुताम्बिका । कौशिकीवि समस्तेषु
यतां लोकेषु गीगते ॥ ८७ ॥ तस्यां विनिर्गतायांतु कृष्ण भूतापि
पार्वती ॥ कालिकेति समाख्याता हिमाचल कृताभया ॥ ततोन्मिकां परं
रूपं विभ्राणां सुमनो हरम् ॥ इदं पण्डो मुखहर च भूत्योशुभ
निशुभयोः ॥ ८८ ॥ ताभ्यां शुभाय चाख्याता श्रीविष सुमनो दश
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमा चलम् ॥ नैवतारक क्वचिद्रूपं
केन चिदुत्तमम् ॥ ज्ञायतां काप्यसी देवी गृहतां चा सुरेश्वर ॥ ८९ ॥
स्रोतनमति पार्वद्भो योतयती दिशस्त्रिधा ॥ सातुजिष्टि दैत्येन्द्र तां भवा-
द्रुप महवि ॥ ९० ॥ याविरत्नानि मखयो गजाश्वा दीनि वैप्रभो ॥
त्रैलोक्ये तु समस्ता निसां प्रवं प्रांति ते गृहे ॥ ९१ ॥ पयवतः समानी
यो गज रत्न पुरात ॥ पारिजात वरुचायं तथैवोषैः रच बाहय ॥ ९२ ॥

दशमी ॥ अथवा नवमी युता वा विजया दशमी अद्यावन्त शुक्ल
दशम्याम पराजिताया विजय सिद्धयर्थं नवदुर्गा पूजाया न्युनाति रिक्त
परि पूरणार्थं मपराजिता देवी पूजन पूर्वक विसर्जन मई करिष्ये चन्दने
नाष्ट दलं लिखित्वा तन्मध्ये मृगमय पात्र त्रयं सस्थाप्यावाहयेत् ॥
अथवा पूगीकृत पुष्पाक्षतेज्वाहयेत् । मध्ये ॐ अपराजितायै नमः ॥
दक्षिणे क्रियासिद्धये जयायै नमः ॥ वामे ॐ उमायै विजयायै नमः ॥
नाम मन्त्रे प्रतिष्ठाप्या वाह्य । चतुर्भुजां पीत वस्त्रां सर्वा भरण भूषि-
ताम् ॥ इत्यादिना खड्गचर्म घरां वराभय हस्तां त्रिनेत्रा श्रीवत्प्रहस्तै
वदनां सर्पाङ्ग सुन्दरी मपराजितां श्री भगवतीं ध्यात्वा ॐ अपराजितायै
नमः ॥ ॐ जयायै नमः ॥ ॐ विजयायै नमः इति नाम मन्त्रः ।
पाठार्था चमन वस्त्रा भूषण चन्दनाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बू-
लादि वृत्तिणान्तं कृत्वा, पाथयेत् ॥ चारुणा मुख पद्मेन विविध
कनको ज्वला ॥ जया देवी शिवे भक्त्यै चर्चान्कामान्ददातु मे ॥ काश्चि-
नेन विचित्रेण केयूरेण च भूषिता ॥ जय प्रदा महा माया शिव-

विमानं संयुक्त मेतविष्टति तैश्मणे ॥ रत्न भूत मिहा भीत यवासीद्वेषसो-
द्भुतम् ॥ ६५ ॥ निधि देव महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ॥ किं
जलिकर्ता ददौ चार्वाधिर्माता मन्तान पंकजाम् । ह्यत्रते वाक्ये गेहे कंचन
स्नावतिष्ठति ॥ तथार्थं स्यदन धरो वः पुरासीत्यजायते ॥ ६७ ॥
मृत्योर्हरकान्ति दा नाम शक्तिगिरा त्वया हता ॥ पाशः सतिष्ठ
राजस्य धातुस्तव परिगृहे ॥ ६८ ॥ निशुभस्याधि जातारच समस्ता रत्न
जातवः ॥ वह्नि रपि दशै तुभ्य मग्नि शोचै च यासमी ॥ ६९ ॥ एवं
दैत्येन्द्र रत्नानि समस्ताभ्या इतानिते ॥ स्त्री रत्नमेवा कल्याणी
त्वया करमाग्न गृह्णते ॥ ७० ॥ अग्नि रुदाय ॥ १ ॥ निशम्येति
यचः शुभः सतदा चंड मुण्डयोः ॥ प्रेषयाभास सुमीयं दूतं देव्या
महासुम् ॥ २ ॥ इति चेति यवकस्यासागत्या यचनाग्मम ॥ यथा
चान्येति मं प्रीतया तथा कार्यं रयया लघु ॥ ३ ॥ न सख रात्वा यत्राद्रस्ते
शौको देशेऽस्ति शोभने ॥ सा देवी वा सतः प्राह स्तुतं मधुर या
गिरा ॥ ४ ॥ दूत जवाच ॥ ५ ॥ देवि दैत्येश्वरः शुभ स्त्रोक्तये परमे-
श्वरः ॥ दूता इप्रेपि तस्तेन वत्सकाश मिहा मृतः ॥ ६ ॥ अध्या इतानः
सर्वाभयः सदा देव चोत्तिषु ॥ निर्जिता खिल दैत्याः म यदा हभगुत्वा
तनु ॥ ७ ॥ मम शौकोक्त मग्निं मम देवा यथा नृगाः ॥ यथा भागा
नहं सतां तु पाशानि पृथक् पृथक् ॥ ८ ॥ शौकोक्तये वररत्नानि मम
वरपान्त्र शेषकः ॥ नयेव मर्त्य रत्नं च इदं देवेन्द्र वाहनम् ॥ ९ ॥ श्रीराम

भाषित चेदसा ॥ विजयात्र महाभागा ददातु विजयं मन ॥ हारेण
 शुचि चित्रेण भास्वरकनक मेखला ॥ अपरेण कद्रता करोतु विजयं
 मन ॥ इति मन्त्रैः संप्राप्य हस्ति सपंष दूर्वा युक्त पीत वस्त्र पोटलिकां
 पात सूत्रेण ॐ कार मुचान वद्मवा एतन्तेति प्रतिष्ठयामि मन्त्रयेत् ॥
 सदा पराजिते यस्मात् त्वं लक्ष्मी मुक्तामा स्मृता ॥ सर्वाकामार्थं सिद्धयर्थं
 तस्मात् त्वां पूजया म्यहम् ॥ भवा पसजिते देवि ! मम सर्वं समृद्धये ॥
 पूजितायां त्वचि भ्रियो ममास्तु दुस्तिं हव मिति मन्त्रेणापराजितां देवीं
 समीपे अभिमन्त्र्य ॥ अय धारय मन्त्रः ॥ जयदे वरदे देवि ! इक्ष्म्याम
 पराजिते ? ॥ धारयामि मुजे दत्ते जय लाभामि वृद्धये ॥ बलमा रोहि
 बलय मायशर्षो पराजयम् ॥ वद्वारणात्मवे युर्म धनधान्य समृद्धयः ॥
 इति मन्त्रेण दक्षिण बाहौ धारयेत् ॥ ततो मूत्र देवीं सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥
 रूपं देहि यशो देहि भगं भवति देहिमे ॥ पुत्रान्देहितया मातः सर्वाङ्कामा
 श्वदेहिमे ॥ महिषाग्नि महाभाये चासुरदे मुष्टं नासिति ? ॥ आयुरा

मधुनोद्भूत मध्वत्स ममामरैः ॥ उच्चैः श्रव ससहं तत्प्राणित्य
 समर्पितम् ॥ १० ॥ रानि चान्यानि देवेषु गंवर्षं पुरगेपुच ॥ रत्न भूतानि-
 भूतानि तानि मध्येव शोभने ॥ ११ ॥ खी रत्न भूतां त्वां देवि लोके
 मन्यामहे वयम् ॥ सात्व मस्मा नुपा गच्छ यतो रत्न मुजो वयम्
 ॥ १२ ॥ मां वाममानुजं वापिनि शुम्भ मुरु विक्रमम् ॥ भजत्वं चञ्चला
 पांगि रत्न भूता चिबेयतः ॥ १३ ॥ परमैश्वर्यं मतुल प्राप्त्य सेमत्पदि-
 मदात् ॥ पतद् बुद्धया समा लोक्य मत्परि ग्रहतां व्रज ॥ १४ ॥ श्वपि-
 त्वाच ॥ १५ ॥ इत्युक्त्वा सा तदा देवी गंभीरां वः स्मिता जगौ ॥ दुर्गा
 भगवती भद्रावयेद् धार्यते जगत् ॥ १६ ॥ देव्युवाच ॥ १७ ॥ सत्य
 मुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किं चित्त्वयो दितम् ॥ त्रैलोक्याधि पति शुभो
 निशुम्भ इवापि वादशः ॥ किं तत्र गत्वति ह्याव मिथ्या तद्विक्रयते कथम् ॥
 भूयता मत्प युद्धित्वात्प्रतिज्ञा चा वृता पुरा ॥ १८ ॥ योमां जयति
 सप्रामे योमे दर्प इषपो हवि ॥ योमे प्रति बलो लोके समे भर्ता
 भविष्यति ॥ २० ॥ तदा गच्छतु शुम्भोत्र निशुम्भो वा महासुरः ॥ मां
 जित्वा किंचिरे खात्र पाणि गृह्णातु मे जघु ॥ २१ ॥ दूत उवाच ॥ २२ ॥
 अब लिप्तासिमै वं त्वा देवि ब्रह्म माप्रतः ॥ त्रैलोक्ये कपुमां स्तिष्ठे
 दमे शुम्भ निशुम्भयो ॥ २३ ॥ अन्येषा मपि दैत्यानां सर्वे देवा नवी
 युधि तिष्ठन्ति समुत्ते देवि किं पुनः स्त्री त्वयेकिम् ॥ २४ ॥ दम्नाद्याः
 सकला देवा स्वस्त्युर्षेयां न सयुगे । शुम्भदीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यामि
 संमुखम् ॥ २५ ॥ सात्वा गच्छ मयैकोन पाशं शुम्भ निशुम्भयोः ॥

रोग्य मेध्वर्यं देहि देवि ! नमोस्तुते ॥ ततः प्रणमेत् ॥ इयं पूजा मया
देवि ; यथा शक्या निवेदिता ॥ रक्षार्थं तत्प्रसादाय यत्रत्र स्वस्थान
मुत्तमम् ॥ इति प्रणाम्य ॐ कारेण विसर्जयेत् ॥ ॐ दुर्गे
देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते ! ॥ सन्वत्सरे द्योति
तु पुनरा गमनं तव ॥ इति विसृज्य देवी मुत्यापये
तत्तिष्ठ देवि चरहेति ? शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व मम
कल्याणमृष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्था-
नं देवि चरिडके ? ॥ अजस्रोतो जलं दृष्ट्वे स्पीयतां च जले
स्थया ॥ ततो जपपाठ नव रात्र ग्रत देवी पूजनादि कृत्य
सम्पूर्णं कर्मणो दक्षि ॥ संकल्पं कुर्यात् ॥ पूर्वं स्थापित पत्रिकां
मृदमय प्रतिमाञ्चोत्थाप्य शिवकादि शुभयानो परि सन्निवेश्य गीत
यादिप्र निः स्वनेजल समीपे गत्वा पूर्वोक्त दुर्गे देवि जगन्मात-
रिति श्लोकेन इमां पूजां मया देवि ? इति श्लोकेन च जले

केना कर्णया निधूत गौरवामा गमिष्यसि ॥ २१ ॥ देव्युवाच ॥ १२७ ॥
एवमेत द्रुलो शुभो निशुभ रचाति वीर्यं वान् ॥ किं करोमि प्रति
हामं वदन्ता लोचिता पुरा ॥ १२८ ॥ सत्संगच्छ मयोक्त ते यदेतत्सर्वं
माहव ॥ तदा चक्षुः सुरेन्द्राय सच युक्तं करोतु यत् ॥ १२९ ॥ इति श्री
मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिगे मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये देव्यादूत संवारी
नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ॥ उवाच ॥ ६ ॥ मयैकानि ॥ ६६ ॥ श्लोका
॥ २४ ॥ एष ॥ १२६ ॥ एवमादिबः ॥ ३८८ ॥

अथ ध्यानम्

नागाधीश्वर विष्टरं पण्डि कणोत्तसंकर रत्ना वली आस्रदेह लतादिवाकर
निभां नेत्र प्रयो द्वासितान् ॥ माला कुम्भ कपालनी रत्नकरा ब्रह्मादं
नृतां परां सर्वज्ञे रवरभेवाष्ट निसर्गा यद्वा यतां चिन्तये ॥ ६ ॥
श्रुपिह वाच ॥ १ ॥ इत्या कर्ण्य वचो देव्याः सद्गुणो मर्षरितः ॥
समा चरु समागम्य ईश्वराभाय विस्तरान् ॥ २ ॥ तस्य दूतस्य
वद्वाक्य माह्वर्यो मुरगाट ततः । स कोयः प्राड दत्वा ता मधिरं
धूपतोवनम् ॥ ३ ॥ हे धूप लोचनाशु त्वं ह्य सेन्य परि
पारितः । तामा नय यत्नाद् दुष्टां केशा कर्णल विद्धताम् ॥ ४ ॥
तस्य रेभाण्डः रुद्रिचदियोतिष्ठते ऽपरः । स हन्वव्यो ऽपरो नापि
वपुो गन्धर्व एव वा ॥ ५ ॥ श्रुपिह वाच ॥ ६ ॥ तेना श्रुत
भक्तः शोभं स देव्यो भूषण लोचनः । शूनः पट्टगान्ध्याया
गमुषाण्डुधे ययो ॥ ७ ॥ स दृष्ट्वा तां यतो रसो गुह्यिना पत

प्रवाहयेत् ॥ ततो अपराजिता पत्र त्रयं तंडुल त्रयं च ॐ सः हू
 सहक वरा हों, सः हुमितिमंत्रेण प्राशयेत् ॥ ततः शमी वृक्षान्ते
 गत्वा पूजा कार्या ॥ मंत्रः ॥ शमी शम यते पार्प शमीलोहित
 कण्टका ॥ धारिण्यर्जुन बाणनां रामस्य प्रिय वादिनी ॥ करिष्यमाण
 यात्रायां यथा कालं सुखं मया ॥ तत्रनिर्विघ्न कर्त्री त्वं भव श्री
 राम पूजिता ॥ इति मन्त्रेण शमी पूजयित्वा ॥ पुष्पाणि साक्षता
 माद्रां शमी मूल गतां मृदम् ॥ शमी शाखां च गृहित्वा शिवि-
 कादि यानो परि सन्नि वेश्य गीतवादित्रनिर्घोषैः स्वगृहं प्रस्था
 नयेत् ॥ ततः स्वजनैः सह वेदोक्त पुराण मन्त्र रभिषेकं कृत्वा
 यत्न भूषण विलका दिक् धारयेत् ॥ ततो जल समीपे ॥ गोष्ठे
 नशां वा खञ्जनं विलोकयेत् ॥ प्रणाममन्त्रः । नीलमीव शुभ
 मीव सर्वं काम फल प्रदं ? ॥ इधिव्या भव वीर्णोऽसि खञ्जरीट ?
 नमोस्तु ते ॥ इति प्रणम्य ब्राह्मणेभ्यो ? ? दक्षिणां दत्वा आशी-
 र्वादं गृहीत्वा यथा सुखं विहरेत् । इति शरत्कालिकं दुर्गोत्सव

संस्थिताम् । जगादोषैः प्रया हीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ८ ॥ न
 चेत्प्रीत्याय भवती मङ्गलार्थं मुपैष्यति । ततो बला ब्रह्माम्येव केशाकर्षण
 विद्वताम् ॥ ९ ॥ देव्यु वाच ॥ १० ॥ दैत्येश्वरेण प्रहितो बल बान् यल
 संबुतः । बलान्नयसि मामेव ततः किं तेकरो म्यहम् ॥ ११ ॥ अर्पित वाच
 ॥ १२ ॥ इत्युक्तः सोम्याथा वत्ता मसुरो धुन्न लोचनः ॥ हुंकारेणैवतं भस्म
 साच कारां विका ततः ॥ १३ ॥ अथ क्रुद्धं महासैन्य मसुराणां
 तथास्त्रिका ॥ ववर्ष सायकै स्तीक्ष्णै स्तथा शक्ति पर स्वधैः
 ॥ १४ ॥ ततोऽधुव सटः कोपात्कृत्वा नादं मुभैरवम् ॥ पशव मुर
 सेनार्या सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥ १५ ॥ कारिषत्कर प्रहारेण
 दैत्यां नास्येन वा परान् ॥ आक्रुत्या बाधरेणान्या न्सप्रधानमहा-
 सुरान् ॥ १६ ॥ केषां पित्याटया मास नरैः कोप्यानि केसरो ॥
 तथा तल प्रहारेण शिरांसि कृतवान्ययक् ॥ १७ ॥ विच्छिन्न पाद
 शिरसः कृतास्तेन तथा परे ॥ पपीषदधिर् कोप्या दन्देषाधुत
 केसरः ॥ १८ ॥ छयेन उद्धतं सर्वं छये नीतं महात्मना ॥ तेन
 के सरिणा देव्यावाहने नाति कोपिना ॥ १९ ॥ भूरा तम सुरे
 देव्या निहत्तं पूष लोचनम् ॥ पलं च छयितं छत्स्नं देवो केसरि-
 णावतः ॥ २० ॥ चुकोप दैत्याधिपतिः शुभः प्रभुस्त्रितापरः ॥
 आशापयास च लो चरड मुंश्चो महा मुणे ॥ २१ ॥ दं रयड

पूजा विधिः ॥ ॥ शुभम् भूयात् ॥ ले०सेवकविश्वनाथ शर्मा ।

स्त्री कर्तुं—दीप दान प्रयोगः ।

स्वेष्ट देवता समीपे निवेद्य ॥ अब स्तब्ध वर्तिका दीप दान विधिः ॥
कर्त्ता शुचिरा चान्तः दीपं प्रज्वाल्य नमोस्तु नन्तायेति दीपं सम्पूज्य ॥
अर्घ्यं स्थापनं कुर्यात् ॥ अर्घ्यं स्थापन माह ॥ स्ववामाग्रेत्रिकोणपट्कोण
वृत्त चतुरस्राणि कृत्वा शंख मुद्रयास्तमयेत् ॥ ततः पुष्पाक्षतैरग्न्यादिपु
पङ्क्तानि सम्पूज्यास्तत्र चालित माधारं मन्वद्वि मंडलाय दश कलात्मनेदे-
वाय पात्र सनाय नम इत्याधारं त्रिकोणे स्थापयेत् ॥ तत्राग्नेः कला
भूत्राचि रायाः पूजयेत् शल मन्त्रचालितं शंखम् ॥ असूर्य मंडलाय द्वादश

दे मुण्ड बलेर्बहुभिः परि वारितौ ॥ तत्र गच्छत गत्वा च सासमा
नीयतां लघु ॥ २२ ॥ केशेष्या कृत्वा बद्ध्वावा यदि वः स
शायोयुधि ॥ वदा रोषा युचे स्वयैर सुरै विनि हन्य ताम्
॥ २३ ॥ तस्यां हतायां दुष्टायां सिद्धे च विनि पातिते ॥
शीघ्र ता गम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वाता मथात्रिकाम् ॥ २४ ॥
इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्मये धूर्ज-
त्लोचन वधो नाम पटोऽध्यायः ॥ ६ ॥ इति ॥ ४४ ॥ अर्घ्यं ॥ ॥ ॥ श्लोक २९
एवम् २४ ॥ एवमादितः ॥ ४१२ ॥

अध्यातम्—ध्यायेयं स्तन पीठे शुक्ल कर्त पठित भूयवती श्याम
लांगी न्यस्ते काष्ठी सरोत्रे शशि राक्ता धरां वल्लर्का वाद यन्तीम् ॥
कृत्वा वदमाता नियमित विलसन्चूडिकां रक्त वस्त्रां मातंगी शंख पात्रां
मधुर मधु मदां चित्रकोद्भासि भालाम् ॥ ५ ॥ अर्घ्यं रुवाच ॥ १ ॥
आकृष्टाभे सतो देव्या स्वयम्भुवः पुरोगमाः ॥ चतुरंगः पलोपेताययुरभ्यु-
द्यता युधाः ॥ २ ॥ दृष्ट शस्ते ततो देवी भीषद्भासा व्यवस्थिताम् ॥ सिंहस्यो
परिशैलेन्द्रगजे महति काचने ॥ ३ ॥ वेदष्टवा वांसमादातुमुद्यमं च
क्रुशताः ॥ आकृष्ट चापा सिधरास्तवान्ये तत्समोपगाः ॥ ४ ॥ ततः कोप
च क्रोर्यै रविका वानरीन्प्रति । कोपे न चास्या वदनमधोवर्षामभूत्तदा ५
भ्रूवटी वृष्टिलात्ताया ललाट फलकाद् द्रुतम् ॥ जाली फलज पदना
विनिष्क्रांता सिपाशिनी । ६ । विचित्र सङ्काश धरानर मालाविभूषणा ॥
द्वीपि चमपरोधाना शुक्ल मासाविभूषणा ॥ ७ ॥ अति विस्तार वदना
जिह्वा लज्जन भीषणा ॥ निमग्नारक्त नयना नादा पूर्वदिक् मुखम् ॥ ८ ॥
। मयेगेनाभिपतितापात्ततो महासुरान् ॥ सेन्ये तत्र सुरारोणामभर

कलात्मचेदेवार्घ्या पात्राय नमः इति तमाधारे स्थापयेत् ॥ अक्षिवर्णं वां
 स्त्रयोविंशति वर्णः अमुक पदस्थाने इष्ट देवता नामोच्चार्य रामार्घ्यं त्यादि
 राख मत्र माह ॥ ॐ क्लीं महाजल वरायहुं फट् स्वाहा पावन्याय
 नम इति ॥ कामः क्लीमिति अक्षिवर्णः उत्तरार्धं कलास्तपिन्य याः सम्पूज्य
 विलोमे मूल मातृके कं भं तपिन्यादिकान्जपन्जलेत्वं सम्पूर्णं ॥ ॐ सोम
 मण्डलाय पौडशाकलात्मनेदेवार्घ्या मृतायनमइत्यर्घ्यसंपूज्य तत्र तन्मंत्रं सृष्टि
 मुद्रया गंगे चेत्यादितीर्थं ॥ त्रेणकुशमुद्रयाऽ कं मंडलात्तीर्थमा वाद्यस्वद-
 दोदेवमावाहयेत् ॥ अर्धकुशमुद्रा ॥ लक्षणं मुकुम्भा ॥ मत्स्यमुद्रोक्ता ॥ अंगुष्ठतर्जनी
 स्कोटं धोरिका मुद्रा ॥ वाम मुष्टिनिगर्ततर्जनीकंकृत्वा शंखोपरिभ्रमणमवगुं टन
 पनमुद्रा ॥ ब्राह्मणाहुं ॥ बीजेन गोमुद्रायेतुमुद्राम् ॥ साउक्ता ॥ अमृतधीजत.वमिति
 बीजेन संरोधिन्यामुद्रायाः ॥ तत्रार्घ्यमुद्रा.शंखाद्याः ॥ शखमुशलचक्रमुद्रा वक्ताः ।
 महामुद्राकुर्वन् ॥ परमीश्वरकरयोरगुलीसमप्यकरैकियोजयेदिदमिहामुद्रं का
 करं गुह्य प्राणि बक्ती कृत्य संमुखं योजि तानि गालिनी मुद्रा गरुडमुद्रा
 उक्ताः ॥ तेन प्रोक्षणी जलेन निजांग मुक्षेत् सिचेत् ॥

ततः प्रलम् ॥ ६ ॥ । ६ ॥ पाप्मिणमाहां कुशमाहि योध घंटा समन्विताम् ॥
 नमदायैक हस्तेन मुखे धिचेप वारणान् ॥ १० ॥ तयैवघोवं तुरगै रथं
 सारथि ना सह ॥ निक्षिप्य वक्त्रे दशनैरघर्वचं द.ति भैरवम् ॥ ११ ॥ एकं
 जपाह के शेषु प्रीवाया मथ चापरम् ॥ पादेनाक्रम्य चैवान्य मुर सान्य
 मपीययन् ॥ १२ ॥ तै मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि ववासुरैः ॥ मुन्ये
 न जमा हरुपा दशनैर्मथिता न्यपि ॥ १३ ॥ वलितां तडलं सर्वं मसुराणां
 दुरात्मनाम् ममर्दाभक्ष्यषान्या नन्यांरषा तापयदा ॥ १४ ॥ असिना
 निहताः केचित्केचित्छट् बांग वाह्विताः ॥ जग्मुर्बिनाराममुराद्वामाभि हिता
 स्वधा ॥ १५ ॥ छलेन तडलं सर्वं मसुराणां निरातितम् ॥ दृष्ट्वा चंडो
 भिदुद्रायतां काला मतिभीषणाम् ॥ १६ ॥ शरवर्षैर्महाभीमेर्भो
 माक्षीतां महासुरैः ॥ छादयामासचक्षेत्रं मुंडयितेः सहस्र राः ॥ १७ ॥
 तानि चक्रारयनेकानि विरामानानि तन्मुसम् ॥ वगुर्यवार्कं विवानि
 सुखं निपतो द्रुम् ॥ १८ ॥ ततो जहामा विदया भीमं भैरव
 नादिनी ॥ काली कराज वक्रांत दुर्दंशं दुराणोज्ज्वला ॥ १९ ॥ उत्थाय च
 महा सिद्ध देवी चंडं मधावत ॥ गृहीत्वा पात्यके शेषु शिरस्ते
 नामिनाञ्चिदनम् ॥ २० ॥ अथ मुषडोन्मथावर्षां दृष्ट्वा चंडं निपातिनम् ॥
 तमप्य पातयद् भूमौ सा दृष्ट्वा गाभिहतंरुपा ॥ इत रोषं ततः मैत्र्य
 दृष्ट्वा चंडं निपातितम् ॥ मुंडे चमु महावीर्यं दिशो भेजेनया कृतम्
 ॥ २२ ॥ शिरश्चंडस्य काली च गृहीत्वा मुरडं भैरव ॥ ग्राह प्रपदडा-

अथ संकल्पः ॥ अद्येत्यादि मम समस्त जन्म बाल्य योवन वार्धक्या
वध्यो पार्जित कायिक वाचिक मानसिक सां खर्गिक सकल पाप क्षय
पूर्वाकैदिकानेक विधि निरवधिक भोगा नु भवानन्तरे श्री परमेश्वर प्रीति
द्वाराब्रह्मा शिव विष्णु सायुज्य पद प्राप्ति कामोलक्षवर्त्तिकाप्रज्वालनतदङ्ग
भूत दीप कलश गणेश पूजन पूर्वाक नह्य विष्णु महेश्वरं पूजनं प्रधान
देवता पूजनं चाह करिष्ये ॥ दीपं सम्पूज्य कलश गणेश पूजनं च
कुर्यात् ॥ अन्य फलश मन्त्रे इत्वं विष्णु रिति मन्त्रेण हेम सिंहासन स्थितं
भिया सहितं विष्णुं पूजयेत् ॥ तद्वर्त्तिते ब्रह्म यज्ञाननमिति सावित्री
सहितं ब्रह्मार्थं पूजयेत् ॥ तद्वत्तरे नमः शम्भवायेति मन्त्रेण उमा
सहितं शिवं पूजयेत् ॥ प्रधान देवतां गङ्गा च पोडरी पवारैः सम्पूज्य ॥
ततः मनो जूति रिति मन्त्रेण प्राणं प्रतिष्ठाप्य ॥ ॐ सहस्र शीर्षेति

दृढासनि श्रमभ्येत्य चट्टिकाम् ॥ २३ ॥ मया तवात्रोपहतौ चण्ड मुहो-
महापशु ॥ युद्ध यज्ञे स्वयं शुभं निशुभं वह्निष्यसि ॥ २४ ॥ अपि-
रुवाच ॥ २५ ॥ तावानीती यतो दृष्ट्वा चण्ड मुण्डौ महासुरौ ॥ उवाच
कातां कल्याणी कलितं चट्टिकावचः ॥ २६ ॥ यस्मा चट्टं च मुण्डं च
गृहीत्वा त्वमुपागता ॥ चामुदेतिततो लोकेक्याता देवि भविष्यसि ॥ २७ ॥
इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये चण्ड मुण्ड
वयो नाम सप्तमाध्यायः ॥ ७ ॥ उवाच ॥ २ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥ एवम्
२७ ॥ एवमादितः ॥ ४३६ ॥ अथ अष्टमः ॥

अथ ध्यानम्—अरुणां करुणां तरङ्गिताक्षीं ध्रुव पारा कुंश मुक्त्यं
चाप इस्ताम् ॥ अग्निमा दिभिरा श्रुतां मयूरीहृद मित्ते वविभावये भवा-
नीम् ॥ ८ ॥ अपिरुवाच ॥ १ ॥ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनि-
पादिते । यदुक्तेषु च सैन्येषु क्षयिते प्लसुरे खराः ॥ २ ॥ ततः कौप
परायोन चेताः शुम्भः प्रतापवान् ॥ उद्योगं सर्वं सैन्यानां दैत्या नामादि-
देराह ॥ ३ ॥ अथ सजं बले दैत्याऽपदशीतिरुदायुधाः कम्बूनां चतुरा
शीतिं निर्यान्तु स्वर्गले वृताः ॥ ३ ॥ कोटि बीर्याणि पद्माराद सुराणां
कुलानिधे । शतं कुलानि धोत्राणा निर्गच्छन्तु ममाग्रया ॥ ५ ॥ कालका
दीदृश मीयोः कात्रकेयास्तया मुयः युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आग्रया
रक्षिता मम ॥ इत्याम्नाप्या सुरपतिः शुम्भो नैरव शासनः ॥ निर्ज-
गाम महासैन्यं सह्यै र्द्विभिरुतः ॥ ७ ॥ आयान्तु चण्डिका दृष्ट्वा
करोम्य मति नोपयाय । उपासकैः पूरयामास परयो गमनाचरम् ॥ ८ ॥
ततः भिक्षां दशानाद मनीष कृतवान्पुत्र ॥ पश्यता मनेन तस्माद् मग्निंका
चापं वृहन् ॥ ९ ॥ अनुभवां सिद्ध पश्यता नारापूतिं दिङ्मुखा ॥

आसनम् ॥ ॐ पुरुष एवेति उपवेशन् ॥ ॐ एतावानस्येति पादम् ॥ ॐ
 त्रिपादूर्ध्वेति अर्घ्यम् ॥ ॐ ततो विराडिति आचमनीयम् ॥ ॐ तस्माद्यज्ञादिति
 स्नानम् ॥ त माद्यज्ञात्समिति आच्छादनम् ॥ ॐ तस्मादखेतियज्ञोपवीतम् ॥ ॐ तं
 यज्ञमिति गन्धम् ॥ ॐ यन्मुहुरिति पुष्पम् ॥ बृहस्पते ० इति वस्त्रम् ॥ यज्ञोसीत्ये-
 चान् ॥ ॐ ब्राह्मणोऽस्येति पूषम् ॥ ॐ चन्द्रमामनसोऽतिवीर्यम्, ॐ नभ्याऽभासी
 दितिनैवेद्यम् ॥ ॐ यत्पुरुषेण इति अञ्जलि करणम् ॥ ॐ सप्तास्यासन्निति-
 मवृत्तिगा ॥ इति सम्पूज्य ॥ गरुडं हंसं वृषभं च सम्पूज्य ॥ ततोऽङ्ग-
 पूजा ॥ कालाय नमः शिरः पूजयामि ॥ ॐ विष्टुवे नमः ललाटं पूज-
 यामि ॥ ॐ बह्वये नमः नेत्रं पूजयामि ॥ ॐ रवेये नमः
 कर्णौ पूजयामि ॥ ॐ दीप्ताय नमः नासिकां पूजयामि ॥ ॐ
 निशा कराच नमः मुसं पूजयामि ॥ ॐ शत्राय नमः कण्ठं
 पूजयामि ॥ ॐ शोषाय नमः स्कन्धं पूजयामि ॥ ॐ जगद्वापिने

निनादेर्भूपयोः काली जिह्वे विस्तारिता नना ॥ १० ॥ तं निनादं मुप-
 ध्रुय दैत्य रीन्यैरवतु दिशम् ॥ देवी सिंहस्त्रया काली सरोषीः परिवा-
 रिता ॥ ११ ॥ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुर द्विषाम् ॥ भवयाभार
 सिंहाना मति वीर्यं वल्लान्विताः ॥ १२ ॥ ऋषेश गुहविष्णुनां तथेन्द्ररथ
 शक्तयः ॥ शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैरचण्डिकां ययुः ॥ १३ ॥ यस्य
 देवस्य यद्रूपं यथा भूयस्य वाहनम् ॥ वददेवदितच्छक्तिं सुरान्योद्-
 धुमाययी ॥ १४ ॥

हंसयुक्त विमानाग्रे साधसूत्र कमण्डलुः । आयाता ग्रन्थः शक्ति
 ब्रह्मणी समिधीयते ॥ १५ ॥ मादंरवरी वृषा रुद्राग्निशूल वरपा-
 रिणी । महादिवलयामाप्ता चन्द्ररेखा विभूषणा ॥ १६ ॥ कीमारी
 शक्ति हस्ता च मयूर वर वाहना । योद्धूमन्याययी दैत्य नाभिका
 गुरुपिणी ॥ १७ ॥ तथैव वेणुयो शक्ति गुरुदो परि सास्त्रिवा ।
 शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्गं सहस्र हस्ताभ्युपा ययी ॥ १८ ॥ यय
 पाराहमनुलं रूपं या विभ्रतो हरेः ॥ शक्तिः साध्या ययी तत्र
 पाराही विभ्रवोऽनुम् ॥ १९ ॥ नार सिंहो नृसिंहस्य विभ्रती सररां
 ययुः । प्राप्ता तत्र सटाक्षेपछिन्न नयनं संहतिः ॥ २० ॥ यत्र हस्ता
 तथे वैन्द्री गत्र राज्ञो परि स्थिता । प्राप्ता सहस्र नयना यथा
 शक्र स्तयैव सा ॥ २१ ॥ तवः परिपृक्त विरो शानो देव
 शक्तिनिः ॥ हन्यन्तामसुखः शीघ्रं मम प्रीत्याह परिदहाम् ॥ २२ ॥
 ततो देवो रातोरात् विनिष्कान्ताणि भोषणा ॥ परिदह्य शक्तिं त्वयुमा
 मिषा रावन्निदिनी ॥ २३ ॥ सा पादं धूय जटिल माशय

नमः बाहू पूजयामि ॥ ॐ वेज्रो रूपाय नमः स्तम्भो पूजयामि ॥
 ॐ महेश्वराय नमः नाभिं पूजयामि ॥ ॐ विश्वरूपाय नमः कटो
 पूजयामि ॥ ॐ जगत्प्रभवे नमः गुदं पूजयामि ॥ ॐ स्वप्रका-
 शाय नमः उरु पूजयामि ॥ ॐ स्वयं व्यासिने नमः जानुनी पूजयामि ॥
 ॐ चतुर्व्यूहाय नमः गुल्फौ पूजयामि ॥ ॐ जनविपाय नमः पार्श्वौ
 पूजयामि ॥ ॐ परब्रह्मणे नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥ ॐ धात्रे नमः पार्श्वौ
 पूजयामि ॥ विधात्रे नमः जङ्घे पूजयामि ॥ छाप्रे नमः उरु पूजयामि ॥
 ॐ प्रजापतये नमः भेदू पूजयामि ॥ ॐ परमेष्ठिने नमः कटौ
 पूजयामि ॥ ॐ अग्नि रूपाय नमः नाभिं पूजयामि ॥ ॐ पद्म
 नाभाय नमः हृदयं पूजयामि ॥ वेद्यसे नमः बाहूपूजयामि ॥ ॐ
 शमोदराय नमः कण्ठं पूजयामि ॥ ॐ हिरण्य गर्भाय नमः
 मुक्षं पूजयामि ॥ ब्रह्मणे नमः शिरं पूजयामि ॥ विष्णवे नमः
 सर्वाङ्गम् पूजयामि ॥ विशेषो पहारादि समपयेत् । अथ दीप

नपराजिता ॥ दूत स्वगच्छ भगवान्पारव शुम्भ निशुम्भयोः
 ॥ २४ ॥ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दीनवा वति गर्वितौ । ये चान्ते
 दानवा स्तत्र युद्धाय समुपरिधनाः ॥ २५ ॥ नैत्योक्ष्य मित्रो लभतां देवाः
 सन्तु हविर्भुजः ॥ यूय प्रयात पातालं यदि जीवितु मिच्छस्य ॥ २६ ॥
 वलावले पादय चेद्भवन्तो युद्ध काङ्क्षिणः ॥ तदागच्छत तप्यन्तु
 मच्छिन्वाः विशितने वाः ॥ २७ ॥ यवो नियुक्तो दैत्येन तथा
 देव्या शिवः स्त्रियम् ॥ शिव दूरीति लोके ऽस्मिं स्वतः साध्याति
 मागता ॥ २८ ॥ ते ऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाण्यात् महा-
 मुराः ॥ अमर्षापूरिता जग्मुर्गतः कात्यायनी स्थिता ॥ २९ ॥ ततः
 प्रथममेवामे शर शक्त्यष्टि युष्टिभिः ॥ ववर्षु हृदयामपां स्तान्देवी
 ममराध्यः ॥ ३० ॥ सा च ताम्ब्रहितान् बाणा ऋतुल शक्ति पर
 रथान् ॥ चिच्छेद् लीलयाभ्याव धनुर्मुक्ते महेषुभिः ॥ ३१ ॥
 तस्मात्प्रवत्तया काली शूल पात्र विदारि तान् । सट्वाङ्ग पोथितां
 रषारोन् कुर्वन्ती प्यचर क्षश ॥ ३२ ॥ कमण्डलु जला छेप हव
 वीर्यान्दीतो जसः ॥ अस्त्राणो चाकरो च्छत्र न्येन येनरम धायति
 ॥ ३३ ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा बभ्रुषु वैष्णवी ॥ देव्याज्जवान
 कीमारी तथा राक्ष्यादि कोपना ॥ ३४ ॥ ऐन्द्री कुलिश पानेन
 शतशो देव्य दन्तयाः ॥ पेषु विदारिताः शृष्ट्यां त्रिधौपप्रवर्षिणः
 ॥ ३५ ॥ नुस्त्र पद्मारिष्यन्ता दम्प्राय छत रघुम ॥ चाराह मूर्त्या-
 न्यपतं रक्षणेण च विदारिता ॥ ३६ ॥ नदी विदारिता रचान्वा-

दान सकल्पः ॥ अद्यदेत्यादि पूर्वं सकल्पं सिद्धिं रस्तु अमुक
 गोत्रायाः अमुक नाम्नी देव्या ममसमस्त जन्म बाल्य यौवन
 वार्धक्या वस्थो पार्जित कायिक वाचिक मानसिक सां सगिक
 सकल पापत्रय पूर्वकैहि कानेक विष निर वधिक भोगा
 नुभावा नन्तरं श्री परमेश्वर प्रीतये तिल तैला कान् घृताकान्
 स पाद लक्ष संख्य कान् प्रज्वालितान् दीपान्
 अमुक देवता राधन पक्षे ब्रह्मणे विष्णवे, ईश्वराय, देव्यै गङ्गायै, तुलस्यै,
 सूर्याय, गणपतये समर्पया मीति शर्मपयेत् ॥ अथ कांस्य पात्र रौप्य
 पात्रस्य हेम वत्तिका दान मंत्रः ॥ रौप्य पात्र स्थित दीपं हेम वत्तिं
 समन्वितम् ॥ कांस्य पात्रेण सहितं ददामि व्रत पूर्त्तये ॥ ततो भूयमी
 वत्तिणा दानम् ॥ इदं व्रतं मया देव कृतं प्रित्यै तव प्रभो ! न्यूनं सम्पूर्णं
 वांयातु प्रसादा तव केशव ! ॥ गृहीत्वाऽपि व्रतदेव यद्य पूर्णं करोम्यहम् ॥

न्भक्तवन्दो महा सुरान् । नार सिंही चचाराजी नादा पूर्ण
 दिगम्बरा ॥ ३७ ॥ अष्टा दृष्टा सैरसुराः शिव दूत्यभि दू-
 पिताः ॥ पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तोश्चलादाथ सात्तदा ॥ १८ ॥ इति मान्
 गणं कर्द्ध मद्यन्त महा सुरान् ॥ दृष्ट्वाम्यु पायैर्विविधैर्नशुदेवारि
 सैनिकाः ॥ ३६ ॥ पलायन परान दृष्ट्वा दैत्यान्मातृ गणादितान् ॥ योद्धु
 मम्या ययौ कर्द्धो रक्त बीजो महासुरः ॥ ४० ॥ रक्तविन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य
 सरीरतः ॥ समुत्पलति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः ॥ ४१ ॥ युयुधे सगरा
 पाणि रिन्द्र शक्त्या महासुरः ॥ तत्तत्तन्म्रीत्स्व वज्रेण रक्त बीजमवाडयत् ३२
 कुलिशेनाहवस्यायु बहु मुक्ताव शोणीवम् ॥ समुत्तस्थुस्तवो योधास्तद्रू
 पास्तत्पराक्रमाः ॥ ४३ ॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीरांद्रक्त विन्दवः ॥
 यावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यं वल्ल विक्रमाः ॥ ४४ ॥ ते चापि युयुधुस्तत्र
 पुरुषा रक्त मम्भराः ॥ समं मातृभिरन्त्यम शस्त्रपाताति भीषणम् ॥ ४५ ॥
 पुनश्च वज्र पातेन क्षतमस्य शिरोयदा । यदाह रक्तं पुरुषास्ततो
 जाताः सद्गन्तः ॥ ४६ ॥ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणामिजपानह ।
 गदया वाडया मासरेन्त्री तममुरेखाम् ॥ ४७ ॥ वैष्णवी चक्र भित्तस्य
 ठधिर स्ताव सम्भवेः । सद्गन्त शो जगद्गुप्यतं तत्प्रमाये मंहासुरैः ॥ ४८ ॥
 शक्त्या चपान कौमारो वाराही च तयासिना ॥ नादेर्यथे प्रियलेन
 रक्त बीजनहासुम् ॥ ४९ ॥ न चापि गदया दैत्यः सर्वा पशु हनत्यथक ॥
 मान् कोषा समाविष्टोरक्त बीजो महासुरः ॥ ५० ॥ तस्या हतस्य
 वदुषा शक्ति शुक्लादिभि मुपि ॥ पपान यो देरक्षीयमेतत्सद्गन्तः ॥
 ५१ ॥ तेषामसुराम् सन्तर्जितं तव । सत्त्वं जगत् ॥ ध्यात्वा

तन्मेभवतुसम्पूर्णं त्वप्रसादाञ्जनार्दनः ॥ यस्यस्मृत्येतिकायेनवाचेत्यादि नाप-
रमेष्ट्वरसमर्प्यततोविसर्जनं कुर्यात् ॥ इतिलक्ष्मिचरितकादीपदानविधि.समाप्ताः ॥
पूर्वोक्तविधिभिर्मन्त्राचित्रानामन्यादेव्यासङ्कल्पोक्तदेवानां चार्पणं कृतम् ॥

अथ महाष्टमी प्रवर्तिता ॥ सर्वतो भद्र मण्डलैक
देशे कलशं सम्पूज्य ॥ तदुपरि सुवर्णं प्रविमां तत्पूजाविधिना
सम्पूज्य रात्रौ जागरणं प्रातर्देव्या उत्तर पूजां विधाय ॥ ॐ अथ महाप्रभे
अग्ने अम्बिकेति १०८ होमं समाप्य प्रार्थयेत् ॥ महिषासि ! महा माये
चामुण्डे मुखे मालिनि ! ॥ द्रव्यमारोग्य विजयं देहि देवि ! नमोस्तुते ।
भूतप्रेत पिशाचेभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरी ! देवभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्यो
क्षमा सदा ॥ सर्वं मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ॥ उमे ब्रह्माणि
कौमारी विरयरूपे ! प्र प्रसीद मे ॥ इतिसंप्राप्त्यर्थं ॥ नव ब्राह्मणेभ्यो यथा
शक्ति रक्त व अङ्गुलिणादि दानं कुर्यात् ॥

मासीत्ततो देवाभयमाजगमुक्तमम् । ५२॥ तान्विपण्यान्सुरान् दृष्ट्वावशि-
ङ्का प्राद्वसत्परा ॥ तवाच काली चामुण्डेविस्तरवदनं कुरुः ॥ ५३॥ मच्छस्त्र-
पात सम्भू तान् रक्तविन्दून्महासुरान् ॥ रक्तविन्दोः प्रवीच्छत्यवक्त्रेण नेत-
वेगिता ॥ ५४॥ भवयन्ती चरणे ददुपजान्महा सुरान् ॥ पक्षमेव क्षयं दैत्य-
घ्नीणरक्तो गमिष्यति । ५५॥ भव्यमाणा स्वया चोमा न चोत्पत्स्यति
चापरे ॥ इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूले नाभि जपानवम् ॥ ५६॥ मुदेन काली
जगूहेरक्तवीज्रस्त्रशोणितम् ॥ ततोऽसावाजघानाथगङ्गातत्रचण्डिकां ॥ ५७॥
न चास्या वेदनां चक्रे मदा पातोऽल्पि कामपि ॥ तस्या हृत्स्य
देशात्तु यद्गु सुन्नाथ शोणितम् ॥ ५८॥ यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा
सम्प्रवीच्छति । मुले समुद्रतयेऽस्या रक्त पावान्महासुराः ॥ ५९॥ तत्रिच-
खादाथ चामुण्डा पपी तस्य च शोणितम् ॥ देवी शूलेन वज्रेण वाणी
रक्षिभि र्दृष्टिभिः ॥ ६०॥ जघान रक्त बीजं तं चामुण्डा पीत शोणि-
तम् ॥ ६१॥ पपात महोष्ट्रे शस्त्रसङ्घं सभाहतः ॥ ६२॥ नीरक्तञ्च मर्द्दी-
पाल रक्त बीजो महासुरः ॥ ततस्ते हर्षं मनुजमवापु छि दशा नृप ॥ ६३॥
तेषामानुगणो जातो ननर्वास्तु मदीदृतः ॥ ६४॥ रवि मार्कण्डेय पुराणे
मार्याणिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये रक्तबीज यतो नामाष्टमोऽध्यायः ।
उवाच ॥ १ ॥ अर्था ॥ १ ॥ रक्तोक्त ६१ ॥ म० ६३ ॥ यत्रमादितः ॥ ५०२॥

अथ ध्यानम्—इत्तूक्त काश्चन निमांरुचिराच्च मायापाशाङ्कुरी च
यार्दा नित्र बाहु दृष्टैः । विधाण मिन्दुशकल भरणां त्रिनेत्रामम्बिके
शमनिर्वा यपुर भयामि ॥ १ ॥ यजोनाथ ॥ १ ॥ विधिप्र मिदमादयाव
भगवन्भयनामम ॥ देव्यारचयित माहात्म्यं रक्तबीज वधाधितम् ॥ २ ॥

अथ कुमारी पूजनम् . .

सु तिष्ठ भूमौ स्थापिता सनेषु प्राङ्मुखोः कुमारीः संस्थाप्य संकल्पं
 कुर्यात् ॥ अचेत्यादि मम कृतस्या मुक्ताष्टमी व्रतस्यो घापन कर्मणः
 प्रतिष्ठा साङ्गता सिद्धये देवी प्रीत्यर्थ एतावत्संख्याक कुमारीणां यथा
 सादत्त सामप्रिणां पूजन पूर्वकं भोजनं चाहं करिष्ये ॥ तासां पाद्
 प्रक्षालनम् ॥ जगत्पूज्ये ! जगद्वन्द्वे सर्वशत्रुविनाशिनि ! ॥ पूजां गृहाण
 कौमारि ! जगन्मात नमोस्तुते ॥ इति मन्त्रेण पाद्यादि नैवेद्यान्तं
 समर्च्य विभवानुसारेण सौभाग्य द्रव्य वस्त्र भूषणा दीनि दद्यात् ॥
 खण्ड मोदक घृत दुग्धं दधि मधुनि यथा सुखं शनैः शनैः भोजयेत् ॥
 तासां दत्ता च मनीया नां करेण चत पुष्पादिकं दत्त्वाप्रतिगृह्याविसर्जयेत्

भूयश्चेष्टाम्यहं श्रोतुं रक्त बीजे निपातिते ॥ चकार शुभो यत्कर्म
 निशुभ रचाति कोपनः ॥ ३ ॥ ऋषिठ वाच ॥ ४ ॥ चकार कोपमतुलं
 रक्त बीजे निपातिते ॥ शुभा शुरो निशुभश्च हवेश्वन्वेषु वाहये ॥ ५ ॥
 इत्य मानं महा सैन्यं बिलोक्या मर्षमुद्रहन् ॥ अभ्यधा चन्नि
 शुभोय मुरज्यया सुरसेनया ॥ ६ ॥ तस्यापत स्तथाष्टे पारव योरथ
 महासुतः संदष्टोष्ट पुताः क्रुद्धाहतुं देवी मुपा ययुः ॥ ७ ॥
 आज गाममहावीर्यः शुभोपि स्वशले द्रुतः ॥ निहतुं चण्डिकां
 कोपात्क्रुत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ ८ ॥ ततो युद्ध मती वासी देव्याः
 शुभ निशुभयोः ॥ शर वर्ममती बोधं मेषयो रिय वर्पतो ॥ ९ ॥
 चिच्छेत्ता स्ताङ्गरां स्ताभ्यां चण्डिका स्वरोत्तरैः ॥ ताडया मास
 चांगेषु शस्त्रौघे रसुरेश्वरी ॥ १० ॥ निशुभो निशितं स्वर्णं चर्म
 चादाय सुषमम् ॥ अताड यन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहन मुत्तमम्
 ॥ ११ ॥ ताडिते वाहने देवी तुरगेणासिमुत्तमम् ॥ निशुभस्वा
 यचि च्छेद चर्म वा छुट्ट चन्द्रकम् ॥ १२ ॥ क्षिप्ते चर्मणि
 स्वर्गेय शक्ति चित्तेपमोमुरः ॥ तामप्यसद्विधा चक्रे चक्रेणाभि
 मुत्सा गताम् ॥ कोपाम्पातो निशुभोय यत्नं जगद् दानवः आयातं
 मुष्टिपातेन देवी वषाप्य चूर्णयत् ॥ १४ ॥ आग्निद्वयाध गदां
 सोपि चित्तेप चण्डिकां प्रति ॥ सापि देव्या त्रिगजेन भिन्नाभय
 रनागता ॥ १५ ॥ ततः परशु हस्तं व मायान्तं देत्य पुङ्
 गयम् ॥ आहत्य देवी बाणौघे स्पात यत भूतले ॥ १६ ॥
 तस्मिन्नि पतिते भूमौ निशुम्भे भीम विग्रहे । धातयंतोर संक्रुद्धः
 प्रययौ हन्तुर्नविकाम् ॥ १७ ॥ सरयस्य स्वधा त्रुर्भृद्भीत पद्मावनेः ॥

अथ श्री विष्णु पूजन प्रयोग

आचाम्य प्राणा नाचाम्य भूतादि शुद्धिं संविधायशु शान्तिं भवंतु ।
मङ्गलोच्चारणम्—ॐ स्वस्तिनऽऽइन्द्रोन्वृद्धश्चवा ऽः । स्वास्तिनऽपूपा
विवरश्च वेदा ऽऽ स्वास्तिनऽस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिऽ स्वस्तिनो बृहस्पति
र्देवानु ॥ १ ॥ भद्रद्रुह्येभिऽ ग्यगुयाम देवा भद्रद्रुह्येमा क्षमिष्ये
जघ्ना ऽः स्थिरै रक्षै स्तुष्टुवा धं सस्तनूभिर्व्यशे महि देव
हितं व्यदायुः ॥ २ ॥ तम्पत्तकोभि रतुगच्छेम देवाऽपुत्रैर्वर्मातृभि-
रुत बाहिरण्यैऽ । नाकङ्कृष्णानाऽ सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधि

भुजै रष्टाभि रतुलै र्व्याप्यां शेषं बभौ नभः ॥ १८ ॥ तमायान्तं समालोक्य
देवीं शङ्ख मवा दयन् ॥ व्या शब्दं चापि धनुषश्चक्राः खोवदुःसहम् १९ ॥
पूरयामास ककुभोनिज घण्टास्वने नच ॥ समस्त दैत्य सैन्यानां तेजौ
यथ विधायिना ॥ २० ॥ ततः सिंहो महा नादैस्त्याजितेभ महामदैः ॥
पूरयामास गगनं गां तथेव दिसोदश ॥ २१ ॥ ततः काली समुत्पत्य गगनं
दमामताडयत् ॥ कराम्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्तेतिरोहिताः ॥ २२ ॥
अट्टाट्टा सम शिवशिव दूती च कारह ॥ तैः शङ्खैरसुरार्त्रैः पुः शुम्भः
कोशं परंययौ ॥ २३ ॥ दुरात्मतिष्ठतिष्ठेतिव्याजह्वाराम्बिका यदा ॥
तदा जयेत्यभिहितं देवैरा काशसंस्थितैः ॥ २४ ॥ शुभेनागत्यया शक्ति
मुक्ताम्बालाविभीषणा ॥ आयांती बह्मिष्ठ भासानिरत्वा महोरकया ॥
सिंहनादेन शुभस्य व्याप्तं लोक त्रयान्तरम् ॥ निर्वातनिः स्वनो घोरो
जितया नयनी पते ॥ २५ ॥ शुभमुक्ताच्छिरान्देवी शुभस्तस्प्रहिताच्छरान् ॥
चिच्छेदस्वशरीरुभैः शत शोध सहस्रशः ॥ २७ ॥ ततः सा चरिद्धमा
क्रुद्धा शूलैः नाभिजघानतम् ॥ सतदा निहतो भूमौ मूर्छितो निप-
पातह ॥ २८ ॥ ततो निशुम्भः संप्राप्य चेतनामात्तकामुङ्कः ॥ आजघान
शरीरं देवीं फाली के शरिण तथा ॥ २९ ॥ पुनस्तच्च कृत्वा बाहूना भयुवं
दनुजेश्वरः ॥ चक्रायुधेन दितिजघ्नादया मास चण्डिकाम् ॥ ३० ॥ ततो
भगवतो क्रुद्धा दुर्गा दुर्गाति नाशिनी ॥ चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः
सायकैश्चतान् ॥ ततो निशुम्भोयेगेन गदा मादाय चण्डिकाम् ॥ अभ्यधा
यतये इतुदैत्य मेना ममा धृतः ॥ ३२ ॥ तस्या पतत पद्माशु गर्द
निच्छिदेद चण्डिका ॥ खड्गेन शिरघारेण सच शूलं समादरे ॥ ३३ ॥
शूलं हस्तं समायांते निशुम्भ ममगर्दनम् हृदि विज्वाधशूलेन येचिद्वेनचण्डि-
का ॥ ३४ ॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयाग्निः सूर्योपरः ॥ महावतो
महावीर्येभ्यश्चैव पुरुषोवदन ॥ ३५ ॥ तस्य निष्कामतो देवीप्रदस्यस्त्रन

रोचनेदिवऽ ॥ ३ ॥ नमस्काराः—श्री मन्महा गणाधि पतये नमः ।
 इष्ट देवताभ्यो नमः । कुल देवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो
 नमः । वास्तु देवताभ्यो नमः । वाणी हिरण्य गर्भभ्यां नमः ।
 श्री चामादेस्वराभ्यां—नमः । श्री लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः ।
 शची पुरन्दराभ्यां नमः । मातृ पितृ चरणकुमलेभ्यो नमः । सर्वे-
 श्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । निविघ्न—मस्तु ॥
 सुमुख रचैक तन्त्रश्च कपिलो गज कर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्न
 नाशो गणाधिपः ॥ धूम्र केतुर्गणाध्यक्षो भाल चन्द्रो गजाननः ॥
 इत्यादिभि र्मन्त्रैर्गणेशं सम्पूज्य तत्र—सकृत्पुनः—ॐ विष्णु ३—

वत्ततः ॥ शिरश्चिच्छेदस्वङ्गेन ततो साय पतङ्गुवि ॥ ३६ ॥ ततः सिंह
 रचस्त्रादोमदंष्ट्राक्षुण्णशिरोऽग्रान् ॥ असुरपस्तांस्तथा काली शिवदूती
 तथा परान् ॥ ३७ ॥ कौमारी शक्ति निभिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ॥
 मङ्गलाणो मंत्र पूतेन त्रयो नान्ये निराकृताः ॥ ३८ ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन भिन्नाः
 पेतुस्तथा परे ॥ वाराही तु त्र्यंशतेन केचिच्चूर्णा कृता भुवि ॥ ३९ ॥
 खड्गखड्ग च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ॥ वज्रेण चैत्रो हस्ताम
 विमुक्तेन तथा परे ॥ ४० ॥ केचिद्विने शूर सुराः केचिन्नष्टा महाहवात् ॥
 भवितारचापरे काली शिव दूतीमृगाधिपेः ॥ ४१ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे
 सारणि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये निशुम्भ वधो नाम त्रयोऽध्यायः
 ॥ ६ ॥ अथाथ ॥ २ ॥ श्लोकः ॥ ३२ ॥ परं ॥ २१ ॥ परमा-
 दितः ॥ ५४३ ॥

अथव्यानम्—उत्तष्ठ हेम रुचिरां रवि चन्द्र वद्वि नेत्रां धनुश्शरयुता
 कुरा पारा शुलम् ॥ रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिव शक्ति रूपां कामेश्वरीं हृदि
 भजामि धृतेन्दु लेखाम् ॥ १० ॥ अष्टिरुवाच ॥ १ ॥ निशुम्भ निहतं
 दृष्ट्वा भ्रातरं प्राण समितम् ॥ हन्यमानं यत्नं चैव शुभं क्रुद्धोऽग्रणी
 द्वयः ॥ २ ॥ बला यत्ने पादु दुष्टे त्वं मादुर्गे गर्वाभा बह ॥ अन्यासां यत्न
 ना भित्त्य युद्ध संयाति मानिनी ॥ ३ ॥

• देव्युवाच ॥ ४ ॥ एकैवाहं प्रगल्भ्य द्वितीया काममापरा ॥ परैता
 दुष्ट मध्येऽ रिसत्यो मद्रिभूतयः ॥ अष्टिरुवाच ॥ ५ ॥ ततः
 समस्ता स्तादेवो प्रज्जालि प्रमुखावयम् ॥ ६ ॥ तस्या देव्यास्तनी
 जामुरेके वासीत्तदाविष्ठा ॥ ७ ॥ देव्युवाच ॥ ८ ॥ अहं विभूत्या बहुभि
 रिद रूपे यदास्थिता ॥ तस्मै ह्यहं मये केवतिष्ठा म्यात्री स्थिते मय
 ॥ ९ ॥ अष्टिरुवाच ॥ १० ॥ ततः प्रवृत्तो युद्धं देव्याः शुभस्य
 योगयोः ॥ परस्तां सर्व देवानाम सुराणां च ददाम् ॥ ११ ॥ ततः वर्यः

श्री मद्भगवतो महा पुस्तस्य विष्णु राज्ञ्या प्रवर्त्तमानस्य अथ
ब्रह्मणः द्वितीये पार्ये श्री स्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे
अष्टा विंशति तमे युगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भारतखण्डे वटिका
अमे भारत वर्षे आर्या वर्ता न्तर्गतहिमपर्वतैक देशे केदार खण्डान्तर्गत
पुण्य क्षेत्रे अलक नन्दामन्दाकिन्यो मध्ये बौद्धा वतारे अग्निन्व-
तमाने अमुक नाम संवत्सरे अमुका ऽग्ने अमुकती अमुक
मासे अमुक पक्षे अमुक वासरे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे
अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशि स्थिते श्री सूर्ये अमुक
राशि स्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा वयं राशि स्थानस्थि-
तेषु सप्तसु एवं गुणविशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम ऽत्मनः

शिवैः रास्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः तयोर्बुद्धं मभूद्भूयः सर्वं लोकं मयं
करम् ॥ १२ ॥ दिव्यान्वस्त्राणीस वरतो मुमुचे शान्त्यान्विका ॥ व
भञ्जवानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रवीणात कर्तुमि ॥ १३ ॥ मुक्तानि तेन वास्त्राणि
दिव्यानि परमेस्वरी ॥ व भञ्जलीलयै वीम हुंकारोष्माया दिभिः
॥ १४ ॥ ततश्च शतैर्देवी माच्छादयत सो सुरः ॥ सापि तच्छुषिता
देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥ १५ ॥ द्वित्रे धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा राक्षि
मया ददे ॥ चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करेस्थिताम् ॥ १६ ॥
ततः सङ्ग मुपावाय शत चन्द्रं च भानुम् ॥ अग्न्यावतदादेरीदृत्याना-
मधिपेश्वरः १७ ॥ तस्यापततपयाशुलङ्गचिच्छेद चडिका ॥ धनुर्मुक्तैः शिवै-
र्वासीधर्मकाकंकरामलम् ॥ १८ ॥ हवास्व सतदा दैत्य रिद्धप्रधन्वाविरा
रधिः ॥ जमाइ मुद्रं घोरमविका निधनोद्यतः ॥ १९ ॥ द्वित्रेदापततस्तस्य
मुद्रं निशितैः शरीः ॥ तथापिसोम्यथा वतां मुष्टि मुद्यम्य वेग
यान् ॥ २० ॥ समुष्टि पातयामास हृदयेदैत्य पुत्रयः ॥ दिव्यास्तं
चापि सा देवी तलेनो रस्य ताडयत् ॥ २१ ॥ तल प्रराराभिद्वौ
निप पातमक्षौ तले ॥ स दैत्य राजः सहसा पुन रेव तथोत्थितः
॥ २२ ॥ उत्तरय च प्रगृह्णाषेर्देवौ गगन मास्थितः ॥ तत्रापि
मानिरायाय युयुपे तेन चडिका ॥ २३ ॥ नियुद्धस्ते तदा दैत्यरद-
दिदृष्टाच परस्परम् ॥ चक्रतुः प्रथम सिद्ध मुनिविस्मय कारकम् ॥
ततोनिमुद्धं मुचिरं कृत्वा तेनाविका सह ॥ २४ ॥ कृत्वादेव भ्रामया
मास चित्तेषु धरणी तले ॥ २५ ॥ सत्तिष्ठो धरणीं प्राप्य मुष्टि
मुद्यम वेगितः ॥ अग्न्यावत दुष्टात्मा चडिका निपने चक्रवा
॥ २६ ॥ जमा यातं ततो देवौ मयं दैत्य जने श्वम् । जगत्यां
पातया मास भित्ता गजेन वचसि । २७ ॥ सगतां सुः पपा

श्रुति स्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं (मम ऐश्वर्याभि वृद्धयर्थम् । अप्राप्तलक्ष्मी-
प्राप्त्यर्थम् । सकलमनर्हं पितृकामनासंसिद्धयर्थम् । लोकेवासभायां राजद्वारे वा
सर्वत्रयशो विख्यलाभादिप्राप्त्यर्थम् इह जन्मान्तरे वा सकलदुःखितो मशमनार्थं
तथा मम सभायस्य सुपुत्रस्य सुबाधवस्य अखिलकुटुम्ब सहितस्य स पशोः
समस्त भव व्याधि जरापीडामृत्यु परि हार द्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभि
वृद्धयर्थम् । तथा मम जन्मराशेर खिल कुटुम्बस्य वा जन्मराशेः सकाशाद्ये
कैचिद्बहु चतुर्पाष्टमद्वादशस्थान स्थित क्रूर प्रहस्तैः सूचितं सूचियिष्य
माणां च यत्सर्वारिवृष्टं तद्विनाशद्वारा एकादश स्थान स्थिर वच्छुभ फल

तोऽर्था देवी इत्याम विवित ॥ चाल यन्स कलां पृथ्वीं साप्ति
द्वीपांसपर्वताम् ॥ २८ ॥ ततः प्रशन्नमखिलं हते वास्मिन्दुरात्मनि ॥ जगत्स्वास्थ्य-
तीवापनिर्मलं चाभवन्नभः उत्पातमेधास्सोल्काये प्रागादस्ते शर्म ययुः ॥
सरितो मार्गं वा हिन्यस्तवा सस्तत्र पातिते ॥ ३० ॥ ततो देवा गणाः
सर्गे हर्ष निर्भरमानसाः ॥ बभूवुर्निहते तस्मिन्नाधर्वा ललितं जगुः
॥ ३१ ॥ अवाद्यं स्तेषु वान्ये नष्टु आप्सरोगणाः ॥ बबुः पुण्यास्तथा
त्वत्स्वतासु प्रभो भूदिव करः ॥ जङ्गलुरवाग्नरक्षताः गपन्शांताः शांत दिग्जनिः
॥ ३२ ॥ इविमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुभ वधो नामाद-
शमोऽध्यायः ॥ १० ॥ उवाच ॥ १ ॥ अर्थः ॥ १ ॥ श्लो ॥ २७ ॥ एवमादितः ॥ ५७६ ॥

अध्यायानम्—वातर विद्युति मिन्दु किरीटां तुङ्ग कुचां नयन प्रय
युक्ताम् ॥ स्मेरमुखी वरदां कुश पाशा भीति करीं प्रभजे भुवनेशोम्
अपि हवाच ॥ १ ॥ देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सैन्नाः सुरा बहि पुरोग
भास्ताम् कात्यानीं तुष्टुव रिष्ट लाभादिकासि वक्रताब्जस्विकासि
ताशाः ॥ २ ॥ देवि प्रपन्नातिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर जगतो गिरलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं । त्वमीश्वरी देवि चरा चरस्य ॥ ३ ॥
आधार भूता जगत्स्वमेका । मही स्वरूपेण यतः स्थितासि अपां स्वरूप
स्थितया त्वयेत दाप्यायते कृत्स्नमलक्ष्यवीर्यं ॥ ४ ॥ त्वं येष्वणुवी शक्ति
रन्तं वीर्यो विश्वस्य वीजं परमासि माया । सं मोहितं देवि समस्त मेत
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥ ५ ॥ विद्याः समस्ता स्तव देवि भेदाः
त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ॥ त्वयैक्या पूरितमं वयेतत् । कावेस्तुतिः
स्तव्य परापरोक्तिः ॥ ६ ॥ सर्वभूतायदा देवो स्वर्गं मुक्तिं प्रदायिनी ॥
त्वं श्रुताश्रुतये काया भवन्ति परमोक्यः ॥ ७ ॥ सर्वार्थं बुद्धि रूपेण
जनस्य इति संस्थिते ॥ स्वर्गां परमं देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ८ ॥
कला काष्ठादि रूपेण परिणाम प्रदायिनि ॥ विश्वस्यो परवीराक्ते नारायणि
नमोऽस्तुते ॥ ९ ॥ सर्वं मंगलमा मंगल्ये शिरे सर्वार्थं साधिहे ॥ शारद्वे

प्राप्त्यर्थम् । पुत्र पौत्रादि सन्तते रविच्छिन्न बुद्धयर्थम् । आदित्यादि
नवमहानु कूललता सिद्धयर्थम् । तथा इन्द्रादि दशदिक्पाल प्रसन्नता
सिद्धयर्थम् । अधिदेविकाऽधिमीतिकाऽध्यात्मिकत्रिविध तापो पराम
नार्थम् । धर्माय काममोक्ष फलावाप्त्यर्थं च ॐ भूर्भुवःस्वः श्री लक्ष्मी
नारायण अनन्तो प्रीत्यर्थं यथा ज्ञानेन यथामिलितोपचार द्रव्यैः पुरुष
सूक्तेन—ध्याना वाहनादि षोडशोपचार सहितस्य अनन्तोपचारैः पूजन
महं करिष्ये ॥ तत्रादोषद्वय न्यास पूर्वकं पुरुष सूक्त षोडशाङ्ग न्यास
पूर्वकं वा । कलशादि पूजन करिष्ये ॥ ॐ भूर्भुवः कलशास्य कलशास्य
नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

अथैके गौरि नारायणी नमोस्तुते ॥ १० ॥ सृष्टि स्थिति विना शानां शक्ति
भूतेशना तनि ॥ गुह्यश्रयेगुह्यमये नारायणि नमोस्तुते ॥ ११ ॥ शरणागत
वीनातं परित्राण परायणे ॥ सर्व स्याति हरदेवि नारायणि नमोस्तुते १२ ॥
हंसयुक्त विमान स्थे मङ्गाणी रूपधारिणि ॥ कोराभिः क्षीरके देवि
नारायणि नमोस्तुते ॥ १३ ॥ त्रिशूल चन्द्रादि धरे महावृषभ वाहिति
माहेश्वरी स्वरूपेण नारायणि नमोस्तुते ॥ १४ ॥ मयूर कुक्कुट वृते
महाराक्षि धरे नभे ॥ कीमती रूप संस्थाने नारायणि नमोस्तुते ॥ १५ ॥
शंख चक्र गदा शङ्ख गृहीत परमा युगे प्रसीद वैष्णवी रूपे नारायणि
नमोस्तुते ॥ १६ ॥ गृहीतोपमहाचक्रे दृष्टोद्धृत वसुंधरे ॥ वाराह रूपिणि
शिखे नारायणि नमोस्तुते ॥ १७ ॥ नृसिंहरूपेणो हन्तुं दैत्यान्क-
तोपमे त्रैलोक्य त्राणसहिते नारायणि नमोस्तुते ॥ १८ ॥ किरीटिनि
महा वज्रे सहस्र नयनोज्ज्वले ॥ वृष प्राणहरे चैत्रिनारायणि नमोस्तुते
॥ २० ॥ दंष्ट्रा कराल घटने शिरोमाला विभूषणे ॥ चामुडे मुंड मयने
नारायणि नमोस्तुते ॥ २१ ॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये धृष्टे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ॥
महारात्रि महाविद्ये नारायणि नमोस्तुते ॥ २२ ॥ मेघे सरस्वति वरे
भूतिवाग्निवितामसि ॥ नियते त्वं प्रसीदरोनारायणि नमोस्तुते । २३ ॥
सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्व शक्ति समन्विते ॥ भयम्यस्त्राहिनोदेवि दुर्गे
देवि नमोस्तुते ॥ २४ ॥ एतत्ते वदनसाम्यं लोचनं त्रय भूषितम् ॥ पातुनः
सर्वभीतिभ्युः कात्यायनि नमोस्तुते ॥ ग्वाला कराल मत्पुत्र मरोपामुर
सूदनम् ॥ त्रिशूल पातुनोमोदिभेद काळि नमोस्तुते ॥ २६ ॥
दिनस्त्रि दैत्य तेजांसि त्वनेना पूर्वया जगन् ॥ सार्पदा पातुनो देवि
पापेभ्योनः सुतानिध ॥ २७ ॥ असुर सृष्टयस्य पंक चर्षितस्ते करोज्ज्वलः ॥
गुनाय सङ्गोभवतु चैविके त्वां नवायम् ॥ २८ ॥ रोगा न शेष नपि
हंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्मकला नभीष्टान् ॥ स्वामाभितानां न विप-

नमस्करोमि । अनन्तरं कललशोदकेन पूजा द्रव्याणि तथाऽत्मानं च—
अपवित्रः आपोहिष्टा । इत्यादि मन्त्रेण वासम्प्रोक्ष्य यथा—अपवित्रः ॥
पवित्रो वासर्वा वस्थां गतोऽभिवा । यःस्मरेत्युण्ढरी काङ्क्षं स बाह्याभ्यन्तरः
शुचिः ॥ ॐ आपोहिष्टा मयो । भुवस्तानऽऽर्ज्जं देवातन । महेरणाय
चक्षुरो ॥ ५ ॥ यो व ÷ शिव तमो रसस्तस्य भाजयतेहन ÷ उशतीरि
वमातरः ÷ ॥ ६ ॥ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यवयावजिन्वय । आपो
जनयथा चनऽः ॥ ७ ॥ परचात्कलकलशशमुद्रां प्रदर्श्य ॥ शङ्खपूजनम्—
शङ्खादौ चन्द्र दैव्यं कुक्षौ वरुण देवता । पृष्टे प्रजापतिश्चैव अमेगङ्गा
सरस्यती । त्रैलोक्ये यानितीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया । शङ्खे विष्टन्ति
विप्रेन्द्रवस्माच्छङ्खं प्रपूजयेन् । त्वम्पुरासागरोरान्नोविष्णुनामिधृतःरुरे । नि-
मित्तःसर्वदेवैश्च शङ्खजन्यायनमोस्तुतेपाञ्चजन्यान्विद्महेपावमानायधीमहि।

नराणां त्वामा श्रिताद्याश्रयतां प्रयांति ॥ २६ ॥ एतत्कृतंयत्कदनं त्वयाऽद्य
धर्मं द्विषां देवि महासुराणाम् ॥ रूपैरनेकैर्वहुधात्ममूर्तिं । कृत्वाऽन्विके
तत्प्रकरोतिकाञ्ज्या ॥ ३० ॥ विद्यासु शास्त्रे पुर्विकं दीपे । प्लाघेषु
वाक्येषु चका त्वदन्या ॥ ममत्वगर्तेति महांधकारे । विभ्रामयस्ये तदनीव
विश्वम् ॥ ३० ॥ रक्षांसि यत्रोपविपारच नागा यशारयो दस्यु बलानि
यत्र ॥ दावा नलोयत्र तथाब्धि मध्ये तत्रस्थिता त्वं परि पासि विश्वम्
॥ ३२ ॥ विश्वेश्वरित्वं परि पासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति
विश्वम् ॥ विश्वेश वन्द्या भवती भवति ॥ विश्वा भयायेत्वयिमक्ति नान्नः
॥ ३३ ॥ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभोते नित्यं यथा सुखधा दधुनैव
सद्यः । पापानि सर्वं जगतां प्रशमं नयाशु । उत्पात्ताक जनितांश्च
महोपसगान् ॥ ३४ ॥ प्रणतानां प्रसीदत्वं देवि विश्वातिं हारिणी ॥
त्रैलोक्य वासिना मोक्ष्ये लोकानां वरदा भव ॥ ३६ ॥ देव्युवाच ॥
॥ ३७ ॥ वर दाहं सुर गणा वरं यंमनसेच्छ्रय ॥ तं युगुप्सां प्रयच्छामि
जगतामुपकारकम् ॥ ३७ ॥ देवाऽऽबुः ॥ ३८ ॥ सर्वा वाधा प्रशमनं
त्रैलोक्यमया स्त्रिजेश्वरि ॥ एव मेरुतया कार्यं मस्मदैरि शिनाशनम्
॥ ६९ ॥ देव्युवाच ॥ ४० ॥ वैवस्वते वरे प्राप्ते अष्टा विश्रान्तिमेयुगे ॥
शुभां निशुभं स्त्रेजान्या वुत्तस्तेवे महानुते ॥ ४१ ॥ नह गोत्र गृहं
जाता यशोदा गर्भ संभवा ॥ तवस्तौ नाश विष्ण्वानि विद्या यज्ञ निवा-
सिनी ॥ ४२ ॥ पुनरप्यति रीद्रेण रूपेण पृथिवी तजे ॥ अथ वीर्यं
हनिष्यामि यैष चित्तांस्तु दान वान् ॥ ४३ ॥ भव्यंत्वारचतापान्यैष
चित्तान्महासुरान् रक्षा दन्ता भविष्यन्ति दादिनी इमंमोपनाः ॥ ४४ ॥
यतो मां देवताः स्वर्गे नित्यं लोके च नानराः ॥ स्तुतंशो ज्योह रिष्यन्ति

तत्र राह्व प्रचोदयात् ॥ ॐ अग्नि ऋषिः परमानऽ पाञ्चजन्यऽ
पुरोहितऽ तमीमह महागयम् ॥ ८ ॥ ॐ भूभुव स्व राह्वस्थ देवताये
नम आवा ह्यामि सर्वो पचारार्थे गन्ध पुष्पाणि समर्पयामि
नमस्करोमि । राह्वमुद्राप्रदर्थ्य ॥ (घण्टा पूजनम्) आगमार्थं तु देवाना
गमनार्थं तु रक्षसाम् । घण्टा नार्द्रं प्रकुर्वीत परचाद् घण्टा प्रपूजयेत्)
ॐ सुपर्णोसि ॥ गरुत्कमास्त्रि वृत्ते शिरो गायत्र्यञ्जतु-वृद्धद्रथन्तरे
पक्षौ । स्तोमऽध्यात्ममा छन्वा ॥ स्यज्जानि यजू ॥ पिनाम । सामते
तनु-र्वां नेत्र्यप्येज्ञायज्ञियमुञ्चन्विषदयाऽ राफाऽ ॥ सुपर्णोसि
गरुत्कमान्दि वज्र-च्छस्व-पत ॥ ६ ॥ ॐ भूभुव स्व घण्टास्थाय
गरुडाय नम आवाहयामि । सर्वो पचारार्थे गन्ध पुष्पाणि समर्पयामि
नमस्करोमि । घण्टामुद्रा प्रदर्थ्य ॥ अथ चोपकम्—ततो दीप पूजन
भक्त्यादीप प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । राहि मानिरयाद् घोरा
दीप ज्योति नमोऽस्तुते ॥ ॐ अग्नि ज्योति ज्योति राग्निऽ
स्वाहा सूर्यो ज्योति ज्योतिऽ सूर्योऽ स्वाहा अग्नि ज्योति
ज्योतिऽ ज्योतिऽ स्वाहा सूर्यो ज्योतिऽ ज्योतिऽ स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ भूभुव स्व

सप्तत रक्त दतिकाम् । ४४ ॥ भूयश्च शतवर्षिक्या मनाशुष्ठ्या मनभसि ॥
मुनिभि सभृता भूनी सभविस्वाम्य योनिना तव शतेन नेत्राणा
निरोक्षिषामि य-मुनोन् ॥ कीर्तयिष्यन्ति मनुजा रावाक्षी नितिमावव
॥ ४५ ॥ वतोऽहम जित लोकमात्म वे सभृद्वे ॥ भरिष्यामि सुग
शाकैरा दृष्टे प्राण भारकैः ॥ ४६ ॥ शार्क भरोति विषयाति तदावास्या
म्यद् भुवि ॥ तत्रैव यधिष्यामि दुग्माख्यमहामुम् ॥ ४७ ॥ दुर्गादीतीति
विदयातवमेताम भविष्यति । पुनरचाद् पद्माभीम रूपं कृत्वा हिमावले ५०
रवाक्षिभञ्ज यिष्यामि मुनीना प्राण कारणात् ॥ तदामो मुनय सर्वे स्तो
त्र्यत्या नम्रमूढय ॥ ५१ ॥ भीमा देरोति विष्यात तन्मे नामभविष्यति ॥
बराकृष्णान्यर्त्तलाक्ये महाप्राधा करिष्यति ॥ ५२ ॥ तदाह भ्रानर रूपं
कृत्वा मण्डयपट् पदम् ॥ त्रैलोक्यस्य हितावय यधिष्यामि महा
मुम् ॥ ५३ ॥ भोमोति चमा लोकास्वदास्तोष्यनुसर्त ॥ इत्य यदा
यदा याजा ६७ मोदया भविष्यति ॥ ५४ ॥ तदा तदा ययीयाह करिष्य
म्यरि स ७५म् ॥ ५५ ॥

इति मार्कण्डेय पुराणे सायणि क म चत्तरेर देवी माहात्म्ये देवीः
श्या नागपथा गुर्वनाम पञ्चादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ उवाच ॥ ४ ॥
अपे । १ । रजोक्त । २० । पाम् । ४५ । पामादिन ॥ ६३० ।

दीपस्थ देवतार्थे नमः आवा हयामि सर्वो पचारार्थे गन्धा-
क्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्क रोमि ॥ ध्यानम्—
शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगन
सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् । लक्ष्मी कान्त कमल नयनं योगि-
भिर्भ्यान्तं गम्यं वन्दे विष्णु भवमय हरं सर्वं लोकैकनाथम् ।
अथ—ॐ विष्णोराष्टमसि विष्णोऽऽश्नाप्त्रे स्थो विष्णोऽस्यूरसि विष्णो
दुर्वोसि ॥ वैष्णव मसि विष्णवेत्वा ॥ ११ ॥ अथ विष्णोरावा हनम् ।—
आवाहयेत्तं गरुडो परिस्थितं रमार्धं देहं सुरराजं वन्दितम् । कन्सान्तकं
चक्र गदाञ्ज हस्तं भजामि देवं वसुदेव सूनुम् । ॐ विष्णुर्विचक्रमेत्रेधा
निदधे पद्मम् । समूढ मस्य पा ॐ सुरे स्वाहा । आवाहनम्—आगच्छ
भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव । यावत्पूजां करिष्यामि ताक्त्व
सन्निधौ भव ॥ ॐ सहस्रशीर्षायुरुप ऽः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥

अथ ध्यानम्—विद्युराम समप्रभां सृगपति स्कन्धस्थितां भीषणां
चम्याभिः कर बालरोट विलसद्भस्ताभिः सेविताम् ॥ हस्ते चक्र गदासि
रोट विविशिराश्चापगुणं तर्जनीं विभ्राणामनलात्मिका शशिधरां दुर्गा
भिनेत्रां भजे १२ ॥ देव्युवाच ॥ १ ॥ पभिः तवैश्वर्यां नित्यं स्तोप्यते यः
समाहितः ॥ तस्याहं सकृन्नां वाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ॥ २ ॥ मधु
ह्रेतम नाशं चमहिषासुरघातनम् ॥ कीर्तयिष्यंति ये तद्वचं शुभं निशुमयोः ॥
३ ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चर्कं चेतसः ॥ श्रोष्यति
चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ४ ॥ नतेषां बुद्धिर्त
किंचिद्बुद्धौ स्थानं चापदः । भविष्यति नदारिद्र्यं नचै वेष्टयिष्यो
जनम् ॥ ५ ॥ रात्रौ न भयं तस्य दूरयुवोवा नराजतः ॥ न राज्ञा नलतो
योपात्कृदाचित्सं भविष्यति । ६ ॥ तस्मान्ममेतन्माहात्म्यं पठि तस्य
समाहितैः । श्रोतव्यं न सदाभक्त्या परं स्वस्त्ययनं हितम् ॥ ७ ॥ वरसर्गा
न रोषांस्तु महाभारौ सनुद्वयान् ॥ तथा त्रिविधं मुत्पातं माहात्म्यं
समयेन्मनः ॥ ८ ॥ नेत्रैः तत्स्मर्यते सम्यक् नित्यमाय जनमम । सदानं तद्गो-
दयामिसानिध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ९ ॥ बलिप्रदाने पूजाया मणिद्वयं
महोरसरे ॥ सर्वमैतद्वरितमुच्चार्य भाव्यमेव च ॥ १० ॥ जानता जानता
वापि बलिपूजां तथा कृतवाम् ॥ प्रतोधिष्याम्यहं प्रीत्यावडि होमं तथा
कृतम् ॥ ११ ॥ रात्रौ काले महापूजादियतेयाश्च वापि कीर्तया मने तन्माहात्म्यं
भुत्वा नक्ति समन्वितः ॥ १२ ॥ मरं वाधाविनिमुक्तो धनधान्य
मुतान्वितः सन्तुष्टो मत्प्रसादेन भविष्यति न सशयः ॥ १३ ॥ भूतेश ममेतन्
माहात्म्यं तथा चोत्पद्य. शुभाः ॥ १४ ॥ ममं च पुण्यं जायते

म भूमिं सत्त्वं तस्मिन्नात्यतिष्ठदशाङ्गलम् ॥ ॐ ॥ भूर्भुवः
स्वः श्री विष्णुनारायण (अनन्त) देवताभ्योनमः
आवाहन पूर्वकं ध्यानं समर्पयामि ॥ आसनम् ॥ स्म्यं सुभनं
दिव्यं सर्वं सौख्यं करं शुभम् । आसनं च मयादत्तं
गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ पुरुषोत्तम ॥ मन्त्रं यद्गतं यच्च भाग्यम् ।
उवाच तत्त्वस्येशानो यद्वत्ते नातिरो हति ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु
लक्ष्मीनारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि । पादम्—
उपलोक निर्मलं च सर्वं सौगन्ध्यं संयुतम् । पादं प्रक्षालनाय
दत्तं ते प्रति गृह्णताम् ॥ — ॐ एतां चान्त्यं । महि मातो
ज्यार्या रश्मिरूपः ॐ । पादो स्यद्विरश्वा भूतानि त्रिपादभ्या
मृतन्दित्रि । ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त)
देवताभ्यो नमः पादं समर्पयामि ॥ अर्घ्यम्—अर्घ्यं मृदाणं देवेश
गन्ध पुष्पाक्षतैः सह । करुणा करं मेरेव गृहाणाध्यं नामो
ऽस्तुते ॥ ॐ त्रिपादं दृष्ट्वा उवाच पुरुषः ॐ । पादो स्यदा भवच-
पुनः ततो विष्णुर्दृष्टः— व्यक्ता मत्सा शाना नशाने ऽस्माभि
। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवता-

निर्मयः पुमान् ॥ १४ ॥ रिपवः सक्षयं याति कल्याणं चोपपद्यते ॥
नं हते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम श्यवताम् ॥ १५ ॥ शान्तिः क्रमं
सर्वं तथा दुः स्वप्नं दर्शने ॥ महं पीडा शुचो मासु माहात्म्यं
सृणुयान्मम ॥ १६ ॥ उपसर्गाः शर्मं याति महं पीडाश्च दाहकाः ॥
दुः स्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुप जायते ॥ १७ ॥ घातं प्रहामि
भूतानां वाकानां शान्तिं कारकम् ॥ सघातभेदे च नृणां मेत्री
करणमुत्तमम् ॥ १८ ॥ दुष्टं च नाम शेषाणां बलहानि करं परम् ॥
रक्षां नृत् विद्यावानां पठना देव नारायणम् ॥ १९ ॥ सर्वं ममेतत्
माहात्म्यं मम सन्निधिं कारकम् ॥ पशुपुष्पाक्षं रूपं रत्नगणं दीप्तं
स्तवो त्तमैः ॥ २० ॥ त्रिपादां भोजनं होमैः प्रोत्तुखीयेदेहनिशम् ॥
अन्यं रक्षयिष्ये भोगैः प्रदानं दास्यरेणयम् ॥ २१ ॥ प्रीतिम
क्रियते सास्मिन्सहृदु हस्ति श्रुते ॥ भूत हरति पापानि तथा
रामं प्रयच्छति ॥ २२ ॥ रक्षां करोमि भूनेभ्यो जन्मनां क्रीतनमम ॥
मुद्धेषु शरीरं यन्मे दुष्टं दैत्यं निवर्हणम् ॥ २३ ॥ दास्मि कुरुते
देहि त्वं भवं पुंसां न जायते ॥ युष्माभिः मृतयो नारय
वारय प्रदार्पयिषिः कृपः ॥ २४ ॥ प्रदद्याच्च कृत्वास्तासु प्रयच्छन्ति
रुभामविम् ॥ अरण्यं प्रान्तरे वापि दावामि परिवारितः ॥ २५ ॥

म्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ आचमनम् — सर्वं तोयं समायुक्तं
 सुगन्धिं निर्मलं जलम् । आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमे-
 श्वर ॥ — ॐ तवो विराड् जायते विराजो ऽग्रि पुरुषः । स
 जातो ऽअत्यरिचयत् परब्रह्म मयो पुनः ॐ भूमिवः श्री लक्ष्मी
 नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि । स्नानम्-
 गङ्गा — सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्वदा जले । स्नापितो ऽसि मया
 देव तथा शान्तिं कुरुष्वमे ॥ ॐ तस्माद्यज्ञा रसयद्वतः ऽः सम्भृत-
 म्यूषा जयम् । पशूँ स्तौ रचके वायव्या नारयाम्ना म्या श्वये ॥
 ॐ भूमिवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः स्नानं स-
 मर्पयामि ॥ [अथ क्षेपकम् — पञ्चासृतस्नानम् — पयो दधि घृत चैवं भु च
 शर्करायुतम् । पञ्चासृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रति गृह्णाम् ॥ — ॐ पञ्चनद्यः ऽ
 सरस्वती मयि यन्ति सस्त्रोत्तसः ऽ । सरस्वती तु पञ्च ग मोदंशो भवत्सरित् ॥

दस्युभिः वांरुतः द्युये गृहीतो वारि शत्रुभिः ॥ सिंह व्याघ्रा
 लुया तोय वनेवा वन इतिभिः ॥ २६ ॥ राजा क्रुद्धे नचा हृष्टो
 यो वं धगतोपिवा । आङ्गुलिषोवा वातेन विवतः पोत महार्णवे । २७ ॥
 पतस्तु चापि रास्त्रेषु संभामे भुरा दारुखे ॥ सर्वं बाधा सुयोरासु
 वेदनाभ्यर्चितो पिवा ॥ २८ ॥ स्मरम्मर्मतचरितं नरो मुच्येत संनटात् ॥
 भम प्रभासति सहाया दस्यवो वेरिण स्तथाः दूरा देव पलायन्ते
 स्मरत इचरितं मम ॥ ३० ॥ आपन्न वाच ॥ ३१ ॥ दस्युश्चा
 माभगवतो चडिडा चंडविक्रमा ॥ ३२ ॥ परयता मेव देवानां
 तथैवां तदोयतः ॥ तेषि देवा निरा तकाः स्वाधि काय न्वधा
 पुरा ॥ ३३ ॥ यज्ञ भाग भुजः सर्वे चक्रुर्गिनि हतारयः ॥ दैत्याश्च
 दैव्या निश्चे शुभे देव रिगैयुधि ॥ ३४ ॥ जगद्विभंस के तस्मि
 न्महाप्ते तुन विक्रमे । निशुभेच महा वीर्ये रोषाः पातात मा
 ययुः ॥ ३५ ॥ एवं भगवतो देवी सा नित्यापि पुनः पुनः ॥ संभूर
 कुरुत भूज जगतः परिपालनम् ॥ ३६ ॥ तवेनमो ज्योतिरश्च मेव रिस्व प्रसूते ॥
 सायाचिता चविज्ञानं तुष्टा अद्वि प्रयच्छति ॥ ३७ ॥ कल्पं तयेतस्त-
 क्तं प्रसाद मनुजे भर ॥ महा काला महा काले महाभारो
 स्वरुपा ॥ ३८ ॥ सैव काले महाभारो मेव मृष्टि भैरव्या ॥
 स्थिति कुरुति भूतानां सेव कात्रे मनस्तनो ॥ ३९ ॥ भव काले
 नृणां शिव लक्ष्मी वृद्धि प्रदा गृहे ॥ सेवा भावे तथा लक्ष्मीर्विना
 शायो पशयते ॥ ४० ॥ सुता संपूजिता पुत्रे भूपे गन्धादिभि
 स्तथा ॥ इति विविधं पुराण मन्त्रिर्मे गति गुणाय इति श्री माहेंद्रे

ॐ भू भुवः स्व. श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः एक
मन्त्रेण पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानम्—ॐ आपो
अस्मान्मातरः सुखं यन्तु घृतेन नो घृतस्वः पुनन्तु ॥ त्रिरव १३ हरि
प्रिम्प्रवदन्ति देवीं रुदि दाम्यः शुचिरा पूत एमि । दीक्षान्तं पसस्ति
नूराशित्वां तां शिवा ॥ ॐ शगमा परि वृषे भद्रं वर्णं पुष्पन् ॥ परमा-
नन्द बोधादि निमग्नं निजमूर्त्यि । सांगो पांग मिदं स्नानं कल्पयाम्यह
मोशिते ॥ ॐ भू भुवः स्व. श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त)
देवताभ्यो नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयम्—
ऊर्द्ध्वपटोप्य शुचि चापि यस्यस्मरणं । मातुरः शुद्धि माप्नोति
तस्मैते पुनराचमनीयकम् ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री लक्ष्मीनारा-
यण (अनन्त) देवताभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि ॥ अधवा-
पृथग्मन्त्रेण पञ्चामृत स्नानम्—तत्र-पयः स्नानम् कामधेनु समुत्पन्नं
सर्गेपां जीधनं परम् । पावनं यज्ञ हेतुरथ पयः स्नानार्थं मर्षितम् ॥-

पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देव्याश्चरित माहात्म्य नाम-द्वादशोऽध्यायः
॥ १२ ॥ उवाच २ अर्घ २ श्लोक ३७ एवम् ४१ एवमादितः ६३१ ॥
अथप्यानम्—वालाकं भरडला माषा चतुर्धाहुं त्रिलोचनाम् ॥ पशा-
ङ्कुश वरा भीती द्वांर यन्ती शिवांभजे ॥ १३ ॥ अष्टपुरुषाव ॥ ११ ॥
एतत्ते कथितं भूप देवी माहात्म्यमुत्तमम् ॥ एवं प्रभावा सादेवी यथेदं
वार्यते जगत् ॥ २ ॥ विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णु मायया । तथा
तमेव वैरयश्च तथै वान्ये विवेकिनः ॥ ३ ॥ मोक्षं ते मोक्षितारथैव मोक्ष
मेत्येति चापरे ॥ तामु पैदि महाराज शरणं परमेध्वरीम् ॥ ४ ॥ आरा-
धिता सैव नृणां भोगस्वर्गा पवर्ग दा ॥ ५ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ६ ॥
इति तस्यवचः श्रुत्वा सुरधः सनराधिपः ॥ ७ ॥ प्राणिपत्यमहाभाग
तन्मृषि सांशित प्रोक्तम् ॥ निर्विरलोति ममत्वेन राज्यापहरणे नप ॥ ८ ॥
जगाम सपस्तपस्ते सच वैश्यो महागुणे ॥ सं र्शर्त नार्थं मे वाया नदी
पुलिनमारियतः ॥ ९ ॥ सच वैरयस्तपस्तेपे देवी सूक्तं परं जपन् ॥ वी
मस्मिन्पुलिते देव्याः कृत्वा मूर्तिमहो मयीम् ॥ अहंणा चक्रनुरतस्याः
पुष्पा भूषाणि तपण्येः ॥ निरा हारी यदा हारी तन्मन्त्रो समादिती
॥ ११ ॥ इदं तुस्मो वलि चैव नित्र माया मृगु चितम् ॥ एवं समाता-
भयतो स्त्रिभिर्भण्येयत्तात्मनोः ॥ १२ ॥ परिनुष्टा जगदात्री प्रत्यक्षं माह
पण्डिता ॥ १३ ॥ देव्युवाच ॥ १४ ॥ यस्मात्पुनर्त्त त्वया मूषतयाच कृष्ण
मन्दन ॥ १५ ॥ ॥ इत्यन्तु प्राप्यतां सर्वं परिगुप्ता ददा मत्त ॥ १६ ॥
मार्कण्डेय उवाच ॥ १७ ॥ ततो प्रो नृपोमाय मस्मिन्मन्त्रेण जन्मनि

ॐ पयःशयिव्याम्पयऽग्रीषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधा ५ । पयः
स्वतोऽऽदिशःसन्तु मङ्गम् ॥ ॐ भूभुवःस्वः श्री लक्ष्मी नारायण
(अनन्त) देवताभ्यो नमः पयः स्नानं समर्पयामि ॥ पयः स्नानाते
शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्प-
यामि ॥ दधिस्नानम्—पथसस्तु समुद्धूतं मधुराग्लं शशिप्रभम् ॥
दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥—ॐ दधिवक्राण्योऽअक्रा
रिष ऋषिणोऽरश्चस्यन्वालिन + । सुरभिर्नो मुखा करप्रणऽआयू
धं पितारिपत् ॥ ॐ भूभुवःस्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त)
देवताभ्योनमः दधि स्नानं समर्पयामि ॥ दधि स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं
समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ मधुस्नानम्—
नवनीत समुत्पन्न सर्वसम्भोष कारकम् । घृतं तुभ्य प्रदास्यामि स्नानार्थं
प्रति गृह्यताम् ॥—ॐ घृतम्भिमित्ते घृतमस्य पानिघृतोर्भक्तो घृताम्भस्य

॥ १८ ॥ अग्नी षच निलं रात्र्यं हत शत्रु बलं वलात् ॥ सौपि नैरयस्ततो
ज्ञानं बवेनिर्विण्णामा नसः ॥ १९ ॥ ममेत्यह मितिप्राज्ञः संग विच्युति
कारकम् ॥ २० ॥ देव्युवाच ॥ २१ ॥ सत्पथे रहोमि नृपते स्वराज्यं
प्राप्तयेते भवान् ॥ हस्वारिपूत स्वर्गतं तव तत्र भविष्यति ॥ २२ ॥
सुतरश्च भूयः सं प्राप्य जन्म देवादिवत्सवः ॥ २३ ॥ सारणिर्को नाम
मनुर भवान्भुवि भविष्यति ॥ वैरय वयस्वयायश्च वरोऽहमतोभिवाक्षितः
॥ २४ ॥ तं प्रयच्छामि सं सिद्धये तव ज्ञानं भविष्यति ॥ २५ ॥
मार्कण्डेय उवाच ॥ २६ ॥ इति दत्त्वा तयो देवी यथाभिलषितं
ब्राम् ॥ २७ ॥ वभूवावर्हिता सद्यो भक्त्या वाभ्यामभिष्टुता ॥ एवं
देव्या वरं लब्ध्वा सुराः क्षत्रियर्षभः ॥ २८ ॥ सूर्याङ्गम समासाद्य
सारणिर् भवितामनुः ॥ २९ ॥ सारणिर् भवितामनु रिति द्विरुच्चारणीयः ॥
इति मार्कण्डेय पुराणे सारणिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सुरथ नैरय
पोर्नर प्रदर्शनं नाम त्रयो दशोऽध्यायः ॥ उवाच ॥ ६ अर्षाणि ॥ ११ ॥
श्लोकाः ॥ १२ ॥ एवम् २६ एवमादितः ॥ ७०० ॥—अथोत्तर-
न्यासाः ॥—मङ्गिनी शूलिनी—षोरा० इदयायनमः । शक्तेनपाहिनो
देवो० शिरसे स्थाप्य ॥ प्राच्यां दक्षऽतोऽध्यां च० शिरवायं यद् ॥
सौम्यानि यानि रुपाणि० कवचाय द्वं कस्यद्ग यत्न ॥ ११
दीनि० नेत्रप्रयापवोपट्सर्वांस्वरूपे मर्ज्यो० अस्याय फट् ॥

अथ सन्त्रोकदेरीन्सम्—

अथ ध्यानम्—त्रिशङ्खम समप्रभांशुं पतिस्कन्धासियांभीषणं कन्याधिः
कलाजम्बेद्विन्मसदम्भाभिरासेविताम् ॥ इतैश्चक्रादासि मेट विशिष्टा

धाम । अनुष्णप्रधमावह मादवस्य स्वाहा कृतं वृषभन्वत्तिहम्पम् ॥ ॐ
 भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः घृत स्नानं
 समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ मधु स्नानम्—
 तरु पुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजः पुष्टि करं दिव्यं
 स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ मधुःव्राताऽऽवृतायतेमधुत्तरन्ति सिन्धवः ।
 माद्रीन्नः सः सन्तोषयीः ॥ मधुनक्त मुतोपसोमधुमत्पायिवंभरजः ।
 मधुद्वयोरनुनःपिता ॥ मधुमान्नाव्यनस्यतिर्ममधुर्मा ॥ २ ॥ ॐ
 मृत्यु + । माद्रीर्गावो भवन्तुनः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण
 (अनन्त) देवताभ्यो नमः मधु स्नानं समर्पयामि स मधु स्नानान्ते शुद्धो-
 दक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥
 शर्करास्नानम्—इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका । मलापहारिका
 दिव्यास्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ अपां रसमुद्वयसंमृत्युं सन्धे
 मसादितम् । अपा ॐ रसस्य यो रसस्तं वंशं गृह्णाम्युत ममुपधाम

श्चापं गुणं तर्जनीं विज्राणामन लात्मिकांशशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रांभजे । नमो
 देव्यै महादेव्यै शिवायै सत नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणवाः
 स्मृतम् ॥ १ ॥ रीद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ज्योतितायै चन्द्रुल्-
 पियै सुयायै सतं नमोः ॥ २ ॥ कल्याणैवप्रणवांवृद्ध्यैसिद्धयैकुर्मो नमो
 नमः नैष्ठिक्यै भूभुतां लक्ष्मैतर्जायै ते नमो नमः ॥ ३ ॥ दुर्गायैदुर्गा पारायै
 नमः । सारायै सब कारिण्यै । स्यात्यै तथैव कृष्णायै धूमायै सततं नमः ॥ ४ ॥
 अति सौम्यायै रीद्रायै नमस्तस्यै नमो नमः । नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै
 कृत्यै नमो नमः ॥ ५ ॥ या देवी सर्वं भूतेषु विष्णु मायेति शब्दवा नम-
 स्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेषु भिजीयते ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धि रूपेण
 संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८ ॥ या देवी सर्वं
 भूषु निद्रा रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ९ ॥
 या देवी सर्वं भूतेषु सुखा रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः
 ॥ १० ॥ या देवी सर्वं भूतेषु छाया रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ११ ॥ या देवी सर्वं भूतेषु शक्ति रूपेण
 संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १२ ॥ या देवी सर्व
 भूतेषु गूणा रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १३ ॥
 या देवी सर्वं भूतेषु चान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै
 नमो नमः ॥ १४ ॥ या देवी भूतेषु जाति रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १५ ॥ या देवी सर्वं भूतेषु

गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं तमम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण
(अनन्त) देवताभ्यो नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि ॥ शर्करानानान्ते
आचमनीयं समर्पयामि ॥ पष्टं गन्धोदक स्नानम्—मलया चल सम्भूतं
चन्दना गरु सम्भवम् चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रति गृह्णाम् ॥—ॐ गन्ध
द्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरी सर्वं भूतानानां तामिहो
पह्वयेधियम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवता
भ्या नमः षष्टं गन्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक दक स्नानम् ।
स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ उद्धर्तन स्नानम्—नाना सुगन्धि द्रव्यं
च चन्दनं रत्नानी युतम् । उद्धर्तनगया दत्तं स्नानार्थं प्रति गृह्णाम् ॥—ॐ
थ ध शुना ते अ ध शु ऽः पृथ्व्या स्वरूपा पर ऽः गन्धस्ते
सोम मवतु मदाय रमो ऽग्रज्युत ऽः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री
विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः उद्धर्तनस्नानं
समर्पयामि ॥ उद्धर्तन स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक
स्नानान्ते आचमनं समर्पयामि ॥ विशेषम् ॐ भूर्भुवः स्वः श्री
विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः पञ्चामृतस्नानान्ते
शुद्धोदकं शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

लज्जा रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ १६ ॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्ति रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमो नमः ॥ १७ ॥ या देवी सर्व भूतेषु श्रद्धा रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १८ ॥ वा देवी सर्व भूतेषु कान्ति रूपेण
संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १९ ॥ या देवी
सर्व भूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो
नमः ॥ २० ॥ या देवी सर्व भूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नम-
स्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २१ ॥ या देवी सर्व भूतेषु स्मृति रूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २२ ॥ या देवी सर्व भूतेषु दया
रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २३ ॥
या देवी सर्व भूतेषु तुष्टि रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २४ ॥ या देवी सर्व भूतेषु मान् रूपेण
संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २५ ॥
या देवी सर्व भूतेषु भ्रान्ति रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमः
स्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २६ ॥ इन्द्रियाणां मधिष्ठात्री भूतानां
चाक्षिलेपुया । भूतेषु सततं तस्यै व्याप्यै देव्यै नमो नमः ॥ २७ ॥
विविध रूपेण या कृत्स्न मेव द्वायप्य स्थिता जगन् । नमस्तस्यै नमस्त-

ततः—पञ्चामृतादि स्नानाङ्गं पूजां — ॐ भूमिभ्यः स्वः श्री
 भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः
 वस्त्रोप वस्त्रार्थं अक्षतान् समर्पयामि । यज्ञो पवीतार्थं
 उक्षतान् समर्पयामि । गन्ध समर्पयामि । माना परि मल सौभाग्य
 द्रव्याणि समर्पयामि । यथा ऋतुकालो दूत पुण्याणि समर्पयामि ।
 धूपं दर्शयामि । दीपं दर्शयामि । शकरो पद्मार नैवेद्यम्—ॐ प्राणा-
 यत्नाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्याना य त्वाहा । ॐ
 समानाय स्वाहा । उदानाय आहा । नैवेद्यं समर्पयामि । नैवेद्या-
 न्ते हृदय प्रक्षालनं मुख, प्रक्षालनं च समर्पयामि । करो-वर्तनार्थं
 चन्दनं समर्पयामि । मुखं वासार्थं पूगीफल ताम्बूलं समर्पयामि ।
 हिरण्य मुद्रा दक्षिणां समर्पयामि । कपूरं आरार्थिक्यं दर्शयामि ।
 प्रदक्षिणाः समर्पयामि । मन्त्र पुष्प युक्त नमस्कारं समर्पयामि ।
 विरोषाढ्यः—रत्न रत्न गणाय च रत्न त्रैलोक्य रत्नक । भक्तानां

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २८ ॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टं स
 श्रया चया सुरैः त्रेणादिनेषु मेविता । करोतु सा नः शुभहेतुरी
 श्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ २९ ॥ या सा प्रतं चोदत
 दैव्य तापितैरध्माभिरीशा च सुरैर्न मस्यते । याचस्मृता तत्क्षण मेव
 हृन्निनः सर्वा पदं भक्ति विनम्र मूर्तिभिः ॥ ३० ॥

इति तन्नोक्त देवो सूक्तं समाप्तम् ।

अथ प्राधानिक-रहस्यम् ।

राजो वाच—भगवन्नवतारा मे चरिदृक्ता या त्वयो रिताः । एतेषां
 प्रदिवि मङ्गलप्रधानं वक्तु महसि । १ ॥ आराध्य यन्मया देव्याः
 स्वरूपं येन चरिदृक् । विधिना प्रदि सफलं यथायत्न्य तत्स्वमे
 ॥ २ ॥ अथिदेवाच—इदं रहस्यं परमं भगवत्येयं प्रचक्षते । भक्तो
 उसीति नेमे द्विद्विचतुषार्थं नराधिप ॥ ३ ॥ सर्वं स्याद्यामहाज्ञदनी
 रिगुणा परमेश्वरी । लक्ष्य लक्ष्य स्वरूपा सात्त्व्याप्य कृत्स्नं व्यव-
 रिष ॥ ४ ॥ मनु लिङ्ग गदां गेटं पान पात्रं च विप्रवी ।
 नती त्रिष्टं च यानि च विप्रवी नृप मूर्धनि ॥ ५ ॥ सप्त काञ्चन
 यण्डाभा लज्जकाञ्चन भूषणा । गन्धं तद्वस्त्रं स्वेन पूरया मास
 मेमगा ॥ ६ ॥ गन्ध—तद्वस्त्रं लीलां विज्ञोक्त्य परमेश्वरी ।
 बनार परमं रूपं तमगा देवते नदि ॥ ७ ॥ मा विमोघन संक्षारा
 दैर्दृष्टिः पयनना । विमोघन शोचना नारी पनूयन्तु मध्यमा ॥ ८ ॥ मङ्ग
 पात्रेतिः गेटेतिः मङ्गल पञ्चमं । एवम् शरं शिरसा विमोघना इदि

ममयं कर्ता प्रातामवभवांर्णं वात् । वरद स्तं वरं देहि वाञ्छितं
 वाञ्छितार्थद । अनेन सफला र्छेण फलदो ऽस्तु सदा मम ॥ प्रार्थनां
 समर्पयामि ॥ अर्पणम्—अनेन पश्चामृतादि स्नानाङ्ग भूत पूजनं कृतेन
 ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त)
 देवताः प्रीयन्ता न मम ॥ निर्मात्यं विसृज्य । पुनरच—
 ततः अभिषेकः कार्यः । स्नापन धारा पात्राय गन्धाक्षत पुष्पं
 (तुलशीदलं) समर्प्य । तदनन्तरं अभिषेकार्थं देवानां गन्धाक्षत
 पुष्पाणि समर्पयेत् ॥ शालि-ग्रामोपरि आसनार्थं पूजार्थं च तुलसी-
 दलं तद्वत्समर्प्य ॥ स च—यथा—हरिःॐ—ॐ सहस्र शीर्षा० ॥
 पुरुष ऽष्ट० ॥ एतावान० ॥ त्रिपादद्वर्द्ध ५० ॥ ततोऽविराड् ॥
 तस्माद्यज्ञात्स० ॥ तस्मादथशा षसत्सर्वद्वुत ऽष्टच ५ः सामानि जज्ञिरे-
 छन्वा ६ सि जज्ञिरे तस्मा दथजु स्वस्मा दजायत ॥ तस्मा-
 दथधा ५ अजा यन्त येके चोभया दत्त ५ः । गायो ह जज्ञिरे
 तस्मान्तस्मा ज्ञाता ऽअजावयः तं यज्ञं स्वर्हिषिषौ जज्ञपुरुष
 वजात ममत्तः ५ । तेनदेवाऽअजयन्त साद्वथाऽष्टषय रचये ॥ यत्पुनर्यं
 व्यदधुः ५ कतिधाव्यकल्पयन् । सुराङ्गिमस्यासीत्किम्बाहू किमू पादः ५
 वक्षयेते ॥ ब्राह्मणोस्य मुख मासोद बाह्वराजत्रयःकुन ५ । ऊरुतदस्य
 यद्वैश्यःपदद्वय ६ राहोऽअजायत ॥ चन्द्रमा मनसो जातरचक्षोः ५
 सूर्योऽअजायत । रथोन्वा द्वायुश्च प्राणश्च मुखोदग्नि रजायन् ।

शिरः स्रजम् ॥ ६ ॥ सां प्रो वाचमहा लक्ष्मी तामसो प्रमदोत्तमा । मामकर्म
 वमे मात देहि तुभ्यं नमोनमः ॥ १० ॥ सां प्रोवाच महालक्ष्मी
 तामसो प्रमदोत्तमाम् । ददामि तव नामनि यानिकर्माणि वानिते
 ॥ ११ ॥ महामाया महाकाली महामारी लुधा तृपा । निशे
 तृष्णा चैक वीरा काल रात्रि दुर्लभ्या ॥ १२ ॥ इमानि तव नामानि
 प्रति पाद्यानि कर्मभिः । एभिः कर्माणि तेज्ज्ञात्वा योऽधीते
 सोऽनुते सुखम् ॥ १३ ॥ तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृपम् ।
 सत्त्वाख्येनाति शुद्धेन गुण्येनेन्दु प्रभन्द्यौ ॥ अक्षमालाङ्ग शय्या वीणा
 पुस्तक धारणी । सा वभूव वरा नारी नामान्यस्यैवमा ददौ । १५ ॥ महा
 विद्या महावाणी भारती वाक्ससरस्वती । आर्या ब्राह्मी कामधेनु वीज-
 गर्भा च धीश्वरी ॥ १६ ॥ अयो वाच महालक्ष्मी महाकाली सरस्वतीम् ॥
 युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्नानु रूपवः ॥ १७ ॥ इत्युस्त्रात महालक्ष्मीः
 समर्ज मिथुन स्वयम् दिव्य गर्भो रुचिरो सौ पुंसो कमलासतो ॥ १८ ॥
 मङ्गलविधे विद्वद्भिरिति धातु रित्याह तं नरम् । श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मी त्याह

नाम्याऽथासी दन्तरिच ॐ शीर्षोद्दयौ ऽऽ समवर्तत । पद्माभूमिदिशि ऽऽ
 भोज्जातथा लोकाँ २ ॥५ अकल्पयन् । यत्पुरुषेण हविषा देवा यत्
 मतत्रयत् । वसन्तोस्यासी दाज्य ऊग्रीष्मऽइध्वा ऽऽ शरद्वि ऽऽ ॥
 सप्तास्या सन्नपरिध चास्त्रि ऽऽ सप्त समिधः कृता ऽऽ । देवा यव्यजन्त-
 त्रवानाऽअवध्दन्पुरुषम्पशुम् ॥ यत्नेन यज्ञमय जन्त देवास्तानि धर्माणि
 पथमान्या सन् । वेद नाकम्महिमानं सचञ्च यत्र पूठो साद्विधा ऽऽ
 सन्ति देवा ऽऽ । अथा वसरे राहू पूरितोदककेन—ॐ इदं विष्णु
 विचक्रमे त्रेधा निक्षेपयम् । समूढमस्य पा ॐ सुरे स्वाहा ॥ इति
 मन्त्रेण शान्तिप्राप्तं स्तापयेत् । परचात् स्तापनघारापात्रो द्द्वेन श्री भगवान्
 विष्णु नारायण (अनन्त) देवतानां शान्त्याभिषेकं कुर्यात् सच यथा—
 ॐ धी ऽऽ शान्ति रन्तरिच ॐ शान्तिं प्रृथिवी शान्ति राप ऽऽ—शान्ति
 रोप धय ऽऽ शान्तिं ॥ ज्वनस्पतय ऽऽ शान्तिर्विश्वे देवा ऽऽ शान्तिर्ब्रह्म
 शान्ति ऽऽ सव्य ॐ शान्ति ऽऽ शान्ति रेव शान्ति ऽऽ सामा

मावा चतां स्त्रियम् ॥ १६ ॥ महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह ।
 एतयो रपि स्पाधि नामानि च वदामिते ॥ २० ॥ नील कण्ठं रक्त बाहुं
 श्वेताङ्गं चन्द्र शेखरम् । जनया मास पुरुषं महाकाली सितास्त्रियम्
 ॥ २१ ॥ सरुद्रः शङ्करः स्थाणु कपर्दी च त्रिलोचनः । त्रयी विद्या कान-
 धेनुः सास्त्री भाषाचराक्षरा । २२ । सरस्वती मित्रयं गौरी कृष्ण च पुरु-
 नृप । जनया मासनामानितयो रपि वदामिते । २३ । विष्णुकृष्णोदपीकेशो
 वासुदेवो जनार्दनः । चमा गौरी सती चरुडी सुन्दरी सुभगा शिवा ॥ २४ ॥
 एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपदिरे । चतुष्मन्तोऽनुपश्यन्ति नेतरे तद्विदो
 जनाः ॥ २५ ॥ ब्रह्मणो प्रदक्षी पत्नीं महा कल्मी नृप त्रयोम् । रुद्राय
 गौरी वरदा वासुदेवाय च भियम् ॥ २६ ॥ स्वरया सह संभूय
 विश्वयोश्च मज्जी जनत । विभेद भगवान् रद्रसह भोयो सह वीर्यवान्
 ॥ २७ ॥ अष्टमध्ये प्रधानादि कार्यं जाय मभून्नृप । महा-
 भूतात्मकं सर्वं जगत्थाय च जग्नमम् ॥ २८ ॥ पुरोप गजया
 मास वल्लभस्या मद्र केशवः संजहार जगत्तमर्थं सहस्रीशं महेश्वरः ॥ २९ ॥
 ॥ बालकमीमं हारात्र सर्वं सत्त्वं मयीस्वगी । निराकारा च साकारा मे
 नाता भिषानृन ॥ ३० ॥ नामान्तरे त्रिर्लोकानाम्नामान्येन कुत्रचिन् ॥ ३१ ॥
 इति ध्यानिक रक्षार्थं समाप्तम् ।
 अथ वैकृतिक रक्षम्—

श्रुतिरुपाय—त्रिगुणा कामसीदंशी साक्षिरष्टोयात्रिभोदिता । मा मवां

यतो यतऽः समी हसे ततो नोऽयमचङ्क न । शत्रु कुरूपजाभ्योऽभयः
 पशुभ्यः ॥ ॐ सर्वेषां वा ऽ एष वेदना छ रसोक्तसाम सर्वेषामेवै नमे
 वेद वेदना छ रसेनाभिपिब्वति ॥ (ब्राह्मण मन्त्रः) ॥ ॐ शान्तिः
 शान्तिः सुरान्ति भवतु । सर्वारिष्ट शान्ति भवतु ॥ ॐ अमृताभिपेकोऽस्तु ॥
 ॐ भूभुवः स्वः श्री विष्णु नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः अभिपेकं
 समर्पयामि ॥ इतिक्षेपकम् ॥ परचातु देवतीर्थं धृत्वा । ततो देवाद्या-
 चमनम्—ॐ केशवाय नमः स्वाहा ॐ नारायणाय नमः स्वाहा । ॐ
 माधवाय नमः स्वाहा । इत्वा चमनं समर्पयेत् ॥ हस्त प्रक्षालनम्—ॐ
 गोविन्दाय नमः ॥ चक्षुः—सर्व भूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे ।
 मयोप विवेकस्य वासतोप्रति गृह्यताम् ॥ ॐ तस्मा इयञ्जानन्वहुतऽ
 ऋचः ॥ ना० ॥ ॐ—भूभुवः स्वः श्री विष्णु नारायण (अनन्त) देवताभ्यो
 नमः ॥ यज्ञोपवीताऽभावे तिलऽक्षतान्समर्पेयामि ॥ यज्ञोपवीतम्—नवभिस्तनु-
 भिपुक्तत्रिगुणं देवता मयम् ॥ उपवीतं चोत्तरीयं गृह्णाण परमेश्वर ॥ ॐ
 तस्मादस्तरा ऽ अ० ॐ भूभुवः स्वः श्री विष्णु नारायण (अनन्त)
 देवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं (यज्ञोपवीताऽभावेऽक्षतान्) समर्पयामि ॥

चण्डिकादुर्गाभिद्रा भगवतीयंते ॥ १ ॥ योग निन्द्रा हरे रुक्ता महाकाला
 तमोगुणा । मधुकैटभ नाशार्थं यां तुष्टा वान्धुजस्तनः ॥ २ ॥ दश वक्त्रा
 दशभुजा दशपाशज्जनप्रभा । विशालया राज माना विशालोचन
 मालया ॥ ३ ॥ स्फुरद्गान दंष्ट्रासा भीम रूपापि भूमिप । रूप सौभाग्य
 कान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाभियः ॥ ४ ॥ गङ्गा वाङ्मगदा शूल शङ्ख चक्र
 मुरण्डिभूत । परिधं कामुकं शीघ्रं निश्चयो तदुधिरं दधौ ॥ ५ ॥
 पपासा वैष्णवी माया महा काली दुरत्यया आराधिता वशी कुर्यात्पूजा
 रुतुरचरा चम् ॥ ६ ॥ सर्वदेव शरीरेभ्योयाऽविभूताऽभित प्रभा ।
 त्रिगुणामा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥ खेतानना नील भुजा
 मुखेनस्तन मण्डला रक्त मभ्या रक्त पादा नील जङ्घोरुहन्मदा ॥ ७ ॥
 सुचित्र जघना चित्र मान्वाम्बर विभूषणा चित्रानुलेपना कान्ति रूप
 सौभाग्य शान्तिनी ॥ ८ ॥ अष्टादश भुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ।
 आयुषान्मय वक्ष्यन्ते दक्षिणावः कर क्रमात् ॥ १० ॥ अक्षमाला चक्रमलं
 वाणोऽस्तिः कुलिशं गदा । चक्रं त्रिशूलं परशु शङ्खो घण्टा च पाराका
 ॥ ११ ॥ शक्तिर्दण्डस्त्वर्चं चापं पान पात्रं कमण्डलु । अलङ्कृत भुजामे
 मिरायुद्धैः कमलासना ॥ १२ ॥ सर्व देव मयी मीशां महालक्ष्मी मिमां
 नृप । पूजयेत्सर्वं लोकानां सदेवानां प्रनुभवित् ॥ १३ ॥ गीरीदेहात्समुद्भूता
 या सत्त्वं गुणात्रया । साक्षात्सरस्वलोपीका शुभासुर निवर्दिनी ॥ १४ ॥

गन्धम्—श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुर
श्रेष्ठ चन्दनं प्रति गृह्यताम् ॥ ओं तंयक्ष्मन् ॥ ओं भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु
नारायण (अनन्त) देवेभ्यः गन्धं अक्षता सहितं सौभाग्य द्रव्यादीनि
अनामिकां कृष्टेन समर्पयामि ॥ अथ क्षेपकम्—अक्षताः (यव, अक्षतार
सुर श्रेष्ठ कुङ्कुमाक्षतः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण
परमेश्वर ॥ तिलान् ओं अक्षतमीम दन्तहाह्वयप्रियाऽअधूपत । अस्तोपत
स्वभानवो विष्णो न विप्रया मतो यो ज्ञान्विन्दने हरी ॥ ओं भूर्भुवः स्वः
श्री विष्णु नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः अक्षतान्समर्पयामि ॥
इति क्षेपकम् पुष्पाणि—मालयादीनि सुगन्धीनि मालत्या दीनि वै प्रभो ।
मया तोतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ ओं पद्मरुपं ॥ ओं भूर्भुवः स्वः
श्री विष्णु नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः पुष्पाणि (सौभाग्यद्रव्य
सहितं च) समर्पयामि । (शालि प्रामत्यासनार्थं तुलसी दलं ॥
सनर्थं ।) एवं यवविता ऽक्षतान्समर्पयामि । तुलशीदलापणम्—
तुलशीहैमरूपां चरल रूपां चमञ्जरीम् । भव मोक्ष प्रदां तुभ्यमर्पयामि
हरिं प्रियाम् ॥ — ॐ विष्णोः कर्माणि । परयत यतो ज्ञूतानि
पश्यशे । इन्द्रस्य युज्यते ऽ सरवा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान्
विष्णु लक्ष्मीनारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः तुलशीदलं समर्प-
यामि ॥ गृथक मन्त्रेण सौभाग्य द्रव्यम्—हरिदां कुङ्कुमं वैवस्विनं
कज्जला निरतम् । सौभाग्य द्रव्य संयुक्तं गृहाण परमेश्वरी ॥ ॐ
अद्विष्टि भोगैऽऽ पश्येति पादुं च्छयाया हेतिम्परि पादमानः ।
हस्तग्नोदिरश्वा ज्युतानि विरदन्नुमानसुमा ॥ सम्परि पादुं विर-

दधौ पादुं भुजा वाण मुसन्ने शूल चक्र भूत । शङ्खं घण्टां लाङ्गलं
च कामुकं वसुधाधिप ॥ १५ ॥ एषा संपूजिता भक्त्या सर्वक्षत्वं
मय ऋषति । निशुम्भ मयिनी देवी शुम्भा सुर निवहिंणी ॥ १६ ॥
इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तत्र पार्यय । उपासनां जगन्मातुः
श्रवणासां निशा मय ॥ १७ ॥ महा लक्ष्मीं यदा पूजया महाकाली
सरस्वती । दक्षिणोत्तरयोः पूजयेत्प्रप्तो मिथुन प्रयम् ॥ १८ ॥
विरिञ्चिः मरया मध्ये कठो गौर्या च दक्षिणे । यामे लक्ष्म्या
हृषीकेशः पुस्तो देवता प्रयम् ॥ १९ ॥ अष्टादशभुजा मध्ये
यामे वायवा दशानना । दक्षिणे ऽष्टभुजा लक्ष्मीमंद नोति समर्पयेत्
॥ २० ॥ पूर्यादि दक्षतः पूज्या अति लाङ्गादि भैरवाः । अष्टादश भुजा
धेया पश्चादध्या नतयिष ॥ २१ ॥ दशानना पादुं भुजा दक्षिणे चरयो
भद्रा ॥ दशा नना यदा पूज्या दक्षिणे चरयो रतदा ॥ २२ ॥ कात्र

वर्त ÷ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण
(अनन्त) देवताभ्यो नमः सौभाग्यं द्रव्याणि समर्पयामि ॥
इति स्तोत्रम् ॥

धूपम्—वनसपाति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आग्नेय-
सर्व देवानां रूपो ऽप्यप्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू
राजजयः कृतः । उरू तदस्य यद्वैश्वः पद्भ्यां च शूद्रो
ऽभजायत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारा-
यण (अनन्त) देवताभ्यो नमः धूपं दर्शयामि ॥ घृत पूरित नीरा-
जनरीपम् आग्र्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण
देवेश त्रैलोक्य तिमिरा पद् ॥ ॐ चन्द्रमा मनसो जात शशचक्षो-
सूर्यो ऽभजायत । श्वोत्राद् द्यायुरध्वप्राणश्च मुखा अग्निरजायत ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो
नमः घृत पूरित नीरा जन दीपं दर्शयामि ॥ नैवेद्यम्—शर्करा घृत
संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् । उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रति गृह्य-
ताम् ॥ ॐ नाग्या ऽग्रासी इन्तरीक्षं च शीर्ष्णो यो ऽः समवर्त्तत ।
पद्भ्याम्भूमिर्हि ऽः श्रोत्रा तथा लोकाः ॥ २ ॥—ऽभकल्पयन् ॥ ॐ
प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ
वदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भग-

मृत्यु च संपूज्यं सर्वा रिष्ट प्रशान्तये ॥ यदा चाष्ट भुजा पूज्या
शुभा सुरनिबहिणी ॥ नवास्याः शक्तयः पूज्या स्तदाकृत्रिणाय कौ ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महा लक्ष्मीं समर्चयेत् ॥ २४ ॥
अवतार त्रयाचार्यां स्तोत्र मन्त्रां स्तदा श्रयाः ॥ अष्टादश भुजा
चैषा पूज्यामहिप मदिनी ॥ २५ ॥ महालक्ष्मीं मंहकालीं सैव प्रोक्ता
सत्स्वती ॥ इक्ष्वरी पुण्य पापानां सर्वं लोक महेश्वरी ॥ २६ ॥
महिषान्त करी येन पूजितास जगत्प्रभूः ॥ पूजये जगतां धात्रीं चरिड-
कां भक्त यत्सलाम् ॥ २७ ॥ अद्या दिभि रल कौर गन्ध पुष्पै
स्तथोत्तमैः ॥ धूपै दीपैश्च नैवेद्यै र्नाना भक्ष्य समन्वितैः ॥ २८ ॥
रुधिराक्तै रवलिना मां से न सुरया मृष ॥ बलिमासा दे पूजये विप्र
वर्ज्या मयेरिता ॥ २९ ॥ तेषां किल सुरा मांसे नोक्ता पूजा
नृप क्वचित् ॥ प्रणामा चमनी यैश्च चन्दनेन सुगन्धिना ॥ ३० ॥
सकपूरैश्च ताम्बूलैर्महि भाव समन्वितैः ॥ वाम भागे गतो देव्यास्त्रिज-
शीर्षामहासुर ॥ ३१ ॥ एजयेन्महिषं येन प्राप्तं सानूज्यं भीशया ।
दक्षिणे पुरतः सिद्धं मममर्धम् मीरचरम् ॥ ३२ ॥ बाह्वर्णं पूजये ददेन

वानविष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः नैवेद्यं
 समर्पयामि । नैवेद्य मध्ये पानीयम्—एतो शीर लवङ्गादि
 कर्पूर परि चास्त्रितम् । प्रारानार्थं कृतं तोयं गृहाण पत्मे-
 श्वर ॥ उत्तरा पोशानं हस्त प्रचालनं मुख प्रचालनं आचम-
 रेधि ॥ नीयञ्चसमं पयामि । करोद्धतं नार्थं चन्दनं समर्पयामि ॥ मुग्र
 वासार्थं ताम्बूलम् पूगीफलं महादिन्यं नागवल्लीदलैर्गुतम् एता
 चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ यक्ष पुरुषेण । हविषा
 देवायज्ञ मनन्वत, ज्वसन्तो स्यासी दाक्ष्यङ्ग्रीष्मऽऽश्मऽऽशरदेविः ॥
 ॐ भूर्भुवः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो
 नमः ताम्बूलं समर्पयामि ॥ फलम्—इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरस्तत्पर ।
 तेनमे मफला याग्निर्भ वेज्जन्मनि जन्मनि ॥ ॐ याऽः फलिनीर्थाऽ
 अकृताऽप्रपुष्पाद्वारय पुष्पिणीऽः । बृहस्पतिऽसूतस्तानो मुञ्च
 न्वध हसऽः ॥ ॐ भूर्भुवः स्यः श्री भगवान् लक्ष्मी नारायण (अनन्त)
 देवताभ्यो नमः फलं समर्पयामि ॥ दक्षिणा—हिरण्य गन्धं गर्भार्थं हेमपीठ
 विभावसोः । अनन्त पुण्य फलद मतः शस्त्रि प्रयच्छमे ॥ ॐ हिरण्य
 गर्भऽः समवर्त्त ताम्भे भूतस्य जातऽः पतिरेकऽप्रासीत् सदाधार
 पृथिवीन्धामुने मद्भस्मेदेवाय हविषाविधेम ॥ ॐ
 भूर्भुवःस्तःभगवान् श्रीभ०विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो

धृतं येन चरा परम् ॥ ततः कृताञ्जलि भूत्वा स्तुवीत चरितरिमः ॥ ३३ ॥
 एकैतवा मध्यमेन नेत्रेण तथोरिदं ॥ चरितार्थं न जपेज्जपरिज्ञ मवा
 प्नुयात् ॥ स्तोत्र मन्त्रीः स्तुवी तेषां यद्विना जगदम्बिकाम् ॥ प्रदक्षिणा
 नमस्कृष्टान् कृत्वा भूधिं कृताञ्जलिः ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्री मुहुर्मुहुरव
 त्रितः ॥ प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायनं निल सर्पिषा ॥ जुहुयात्त्रोत्र मन्त्रीर्वा
 चरिङ्गराये शुभं हविः ॥ भूया नाम पदे देवी पूजयेत्सु ममाहितः ॥ ३४ ॥
 प्रयतः प्राञ्जलिः प्राहः प्राणा नारायण आत्मनि ॥ सुनिर्भ भावयेदी
 चरिङ्गरा तन्मयो भवेत् ॥ ३५ ॥ परं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेस्वरीम्
 भुक्त्वा भोगान्यथा कामं देवी सायुज्यमाप्नुयात् ॥ ३६ ॥ यो न पूजयेत्
 नित्यं चरिङ्गरां भक्त यत्तताम् ॥ भक्तोऽकृत्वास्य पुण्यानिनिर्दोषत्मे-
 रगरी ॥ तस्मापूजय भूपाल सर्व लोक महेश्वरीम् ॥ यथोक्तेन विधानेन
 चरिङ्गरां मुग्धमाप्नुयति ॥ ४१ ॥

इति वैकुण्ठिकं रक्षस्य ममाधम् ॥

अथ नृनि उदयम् ॥

अपि कथा ॥ नमो भगवतो नामया परिध्याति नन्द्या । स्तुतापूजिताश्च

नमः दक्षिणां समर्पयामि ॥ कपूरार्तिव्ययम्—कदली गर्भं सम्भूतं कपूरं च
प्रदीपितम् । आरात्तिव्ययम्—कुर्वेपश्यमेव रदोभव ॥—ओ३द३ हविऽऽप्यजन-
नम्मेऽअस्तुदशवीर३सर्वगण३स्वस्तयो॥ आत्मसन्निपज्जानिपशुसन्लोक
सन्नय भयसनि ॥ अग्निऽऽप्यजान्वहुलाग्ने करोस्त्वन्नम्ययोरेतोऽअस्मासु
धत्त ॥ ओं भू भुवः स्वः श्रीभगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त)
देवताभ्यो नमः कपूरार्तिव्ययं ददायामि । मन्त्र पुष्प युक्त प्रदक्षिणा—
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि वै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु
प्रदक्षिण पदे पदे ॥ ओं सप्तास्या सन्परि—धयस्त्रिऽऽ सप्त समिधः
कृताऽऽ देवापहयज्ञान्त्वानाऽअवद्धनन्पुरुषपण्यशुम् ॥ ओं भू भुवः
स्वः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो
नमः आरात्तिव्यय सहितां मन्त्र पुष्प युक्त प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ मन्त्र
पुष्प युक्त नमस्कारः ।—नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि-

भक्त्या यशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ १॥ कनकोत्तम कान्तिः सा सुकान्तिकनका-
म्बरा । देवी कनक वर्णाभा कनकोत्तम भूषणा ॥ २ ॥ कमलाङ्कुश
पाशाञ्जैरलंकृत चतुर्भुजा ॥ इन्दिरा कमला लक्ष्मी सा श्रीरम्भाम्भुजा
सना ॥ या रक्त दन्तिका नाम देवी प्रोक्तमयाऽनघ ॥ तस्याः स्वरूप
वक्ष्यामि शृणु सर्वं भया पहम् ॥ ४ ॥ यच्छ्रुत्वा सर्व पापेभ्यो मुच्यते
नात्र संशयः ॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्त सर्वाङ्ग भूषणा ॥ ५ ॥ रक्तायुधा
रक्त नेत्रारक्त केशातिभीषणा ॥ रक्त तीक्ष्ण नखा रक्त रसना रक्त दन्ति
का ॥ ६ ॥ पतिं नारी वानुरक्ता देवी भक्तं भजेऽजनम् ॥ वसुधेव विशा-
लासा सुमेरु युगलस्तनी ॥ ७ ॥ दीर्घोलम्बावति स्थूलोतापतीवमनो
हरौ ॥ कर्करावति कान्तौ तौ सर्वा नन्द ययोनिधी ॥ ८ ॥ भक्तान्सं
पाययेद्देवी सर्व कामदुर्धोस्तनौ ॥ लङ्का पात्र शिरः सेतैरलं कृत चतुर्भुजा
आरुह्याता रक्त वा मुखदा देवी योगेश्वरीति च ॥ अनया व्याप्त मखिलं
जगत्पादर जङ्गमम् ॥ १० ॥ इमांयः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चरा
चरम् ॥ भुक्त्वा भोगा न्यथा काम देवी सा युज्य माप्नुयात् ॥ अधीतेय
इमं नित्यं रक्त दंत्या वपुः स्तनम् ॥ तं सा परि चेद्देवोपतिं प्रियमि-
वांगना । ॥ २ ॥ शार्ङ्गभरी नीलवर्णा नीलोत्पल विलोचना ॥ गभीर
नाभि क्षिरनीविभूषित तनूदरा ॥ १३ ॥ सुकेशसमोत्तुग वत्त पीन
घनस्तनी ॥ मुष्टी शिखी मुखे पूर्ण कमल कमला लया ॥ १४ ॥ पुष्प
पल्लव मूलादिफलाढ्यं शाक सचयम् ॥ काम्या न्दुत्तर सैर्युक्तं क्षुत्तप्तपु
जरा पहम् ॥ १५ ॥ कामुकं चक्षुःकाति विध्रति परमेश्वरी ॥ शार्ङ्गभरी
शवाक्षी सा सेव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ १६ ॥ नमो गौरी सवी चण्डी

५ । पुष्पाञ्जलि मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ यज्ञेन यत्न मय जन्त
देवा स्नानि धर्माणि प्रथमान्या सन् । तेह नाकम्महिमानं सचन्त
यत्नपूर्वं सादृश्या ऽऽ सन्ति देवा ऽऽ ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री विष्णु
लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलि युक्त
नमस्कारं समर्पयामि ॥ विशेषार्घ्यः रक्ष रक्ष सुरः श्रेष्ठः रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।
भक्ताना मनसं कर्ता वाता भव भवार्ण वान् ॥ वरद त्वा वरं देहि
वाञ्छितं वाञ्छितार्थद (एतेन मन्त्रेण पृथ्वीफल हिरण्य गन्धाक्षत
पुष्पैः संयुक्त जलेन अर्घ्यं मेकं दद्यात् ।) अनेन सफलार्थेण फलदीप्तु
सदा नमः ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री विष्णु लक्ष्मीनारायण (अनन्त)
देवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ॥ प्रार्थना—रुच कुच चुबु कामे
पाणिषु व्यास्येपु प्रथम जलनि पुत्री सद्गमेऽनग्न धाम्नि, प्रथि
तनि विदनीवी बन्धनी मोंक्षार्थं चतुरधिक कराशः, पातुवरच
क्रपाणिः ॥ यद्विम्ब मम्बर मणि रंदांप्रशति नक्तं निपिञ्चति यदग्न

कालिका साच पार्वती ॥ शक्रभरी स्तुवग्न्यायज्जन पन्स पूजयन्नमन्
॥ १० ॥ अक्षय मरुते शीघ्र मन्न पाना मृतं जलम् ॥ भीमाऽपि नील
यर्षा सा दंष्ट्रा दशन भासुरा ॥ १८ ॥ विशाच लोचना नारी शूतरीन
पयोवय ॥ चन्द्र हासं च दमकं शिरः पात्रं च विध्रती ॥ १६ ॥ एक
वीरा काल रात्रिः संगोक्ता कामदा स्तुता ॥ तेजो मण्डल दुधुर्पां भ्रामरी
चित्र धाम्नि भुत् ॥ २० ॥ चित्रं भ्रमर संकाशामहामारीविगीयते ॥
इत्येता पूर्वयो देव्या व्याख्याता यमुधाधिप ॥ जगन्मानु रचडिकाया
कीर्तिताः कामधेनवः ॥ इदं रहस्य परमं न वाच्यं कस्य विराया ॥ २२ ॥
व्याख्यानं दिव्य मूर्तीना मधीष्टर वहितः स्वयम् ॥ पतस्पास्त्वं प्रसादेन
सममान्यो भविष्यसि ॥ २३ ॥ सर्व रूप मयी देवी सर्वं देवी मय
जगत् ॥ अतोहं विषय रूपां तां नमामि परमे स्वरीम् ॥ २४ ॥ इति
मूर्ति गृह्यं समाप्तम् ॥ श्री जगद्गवार्पणमस्तु ॥

श्री पार्वती पूजनम्

सा च दमंगे यस्य यः धनं स्वर्कात् व्यापिनी विधिरिति पद्मपु पमो
कर्मणश्च व्यापिनीमाद्या ॥ पूर्वामिमुखोन्मत्वा ऽऽ बभूव दीपं दृगस्य
मन्दारं कुर्यात् ॥ ॐ अग्रेतामुद्योगासुक्त नाभो अहं यम रात्रि
वापिद-मानमिद-यावद-दूरां करण रात्रु पीर मिद मयादि भवनिराग
प्रनरापम पेनात् पूष्पाञ्ज भूव प्रेभ पुत्रपान्त-शाकिन्यादि कीर्तन-

जैतूनानिशासु हिम धाम्नि चयन्मयूखः पूषापुराण पुरुषः ॥
 नमो ऽस्तु तस्यै ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान्विष्णु तदेती
 नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः प्रार्थना समर्पयामि ॥ (इयं प्रार्थना
 कृतास्ति) ॥ राज्ञ भ्रामणम्—राज्ञ मध्येस्थितं तोयं भ्रामितं केशवो
 परि । अङ्ग लम् मनुष्याणां ब्रह्म हत्यां व्यपोइति ॥ एवं राज्ञो
 दकेन-स्वशरीरं मार्जयेत् ॥ अथ ग्रन्थि पूजनम्—ॐ अग्नये नमः । मोहिन्यै
 नमः पद्मिन्यै नमः ॥ महावलायै नमः । अजायै नमः । इन्द्रायै
 नमः । वरदायै नमः । शुभायै नमः ॥ जयायै नमः । विजयायै नमः ।
 जयन्त्यै नमः । पापनाशिन्यै नमः । विश्वरूपायै नमः । सर्वमङ्गलायै
 नमः । इति ग्रन्थि सम्पूज्यः ॥ अथाङ्ग पूजा ॥—मत्स्यगयनमः पादौ
 पूजयामि ॥ कूर्माय नमः गुत्फौ पूजयामि नमः । वराहाय नमः जानुनी
 पूजयामि नमः । नार विहाय नमः । ऊरु पूजयामि नमः वामनाय नमः
 कटि पृ० ॥ रामाय नमः उदरपूज० ॥ श्री रामाय नमः हृदयं पृ० ॥ कृष्णाय
 नमः मुखाय पृ० । सहस्र सिरसे नमः शिरः पृ० । श्रीमदुनन्ताय-

मृत्यु सन्निपात-राज यक्ष-विषय उग्र-ज्वरादि सारादि-दुग्ध-दुग्धौगिनी-
 दुः स्वप्नादि-पीडानिषृति पुन विप्र-भृत्यगजास्व-क्षेत्र धन-धान्य
 रत्नादि-सम्पद् भोगान्तर- गन्धर्वाप्सरोगण-संगीतादि-जात-मञ्जरी
 मानादि-शोभित-विमाना रोहण-पूर्वकं भगवतः श्री मद् ज्योतिर्लङ्क
 स्वरूपिणः सदाशिवस्य परम सायुज्य-भुक्ति कामा श्री पार्वती देवता
 प्रीतयेयेभि र्यया मिलितोप चारै स्तद् अथाङ्ग भूत देवता यारच पूजन महं
 करिष्ये । [भा सूर्याय अथ स्वस्थानी प्रवृत्तं कर्तुं तदङ्गत्वेन जगत्साक्षिणे
 श्रीसूर्यायपदोर्ध्वः समर्पयामि ।] वामे अर्घ्यस्थापनम् ॥ दक्षिणे
 राज्ञस्थापनं च ॥ नमोस्तु नन्तायेति दीर्घं सम्पूज्य गणानां त्वेति
 पणपतिं सम्पूजयेत् ॥ अथ कलश पूजा ॥ भूरिति भूमिशोधनम् ॥
 धान्यननसीतिधान्यम् ॥ आजिघ्रेति अग्रणं कलशं स्वेत्याप्य वरुणस्यो-
 त्पन्नमिति निर्मलं तीर्थादि जलं प्रक्षिप्य ॥ ओषधीरिति सर्वोषधीः ॥
 हिरण्यगर्भेति पञ्चरत्नानि । या फलिनीरिति फलम् ओषधीयः समितिय-
 वान् । गन्ध द्वासा मिति चन्दनम् ॥ काण्डाटकाण्डादिति दूर्वा ॥ स्योना
 पृथिवीतिः ॥ मृदः ॥ अस्त्येवेतिपञ्चपल्लवैस्तनुस्त्वं मान्द्यायवृहस्पत
 इति वस्त्र युग्मेन कलशं वेष्टयित्वा तत्वायामीति वरुण मा वा प पूजयेत् ॥
 ततः कलशोद्गाहोत्तरं ॥ सर्वे समुद्राः सन्निस्तीर्थाणि जलदा नदाः ॥
 आयान्तुयजमानस्य दुस्सिद्धय कारकाः ॥ इति ॥ मन्त्रेणावाहयेत् ॥
 ततः कलशाभिमन्त्रणम् ॥ कलशस्य मुखेविष्णुः कण्ठे रुद्रः समा धत ॥

नमः-सराङ्ग प० इत्यङ्गम् सम्पूज्य ॥ अथा वरणपूजा-अनन्तरं
दक्षिण पार्श्वे रमायै नमः ॥ वामपार्श्वे भूम्यै नमः । इति प्रथमा
वरणम् ॥ आवरण देवता मा वाह्य इत्थं प्रक्षाल्य ॥ गन्ध पुष्प
तर्जनी मध्यमा ऋष्टे धृत्वा मध्ये शङ्खोदकं गृहीत्वामन्त्रान्ते शंखोदकं
भूमौ निक्षिप्य पुष्पे देवो परिनिक्षिपेत् ॥ दद्याद्वे ? आहि संसार
लक्ष्मेशो शरणागतम् ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमा वरणार्चनम् ॥
इति मन्त्र मुष्पाय जलं त्यक्त्या पुष्पं देवो परि न्यसेत् ॥ एवमने
ऽपि ॥ १ ॥ पूर्वादि ऋमेण वृद्धोत्काय नमः । मङ्गलोत्काय नमः ।
शतोत्काय नमः । सहस्रोत्काय नमः ॥ दद्याद्वे ? आहि संसार लक्ष्मेशो
सराणागतम् भक्त्या समर्पयेतुभ्यं द्वितीया वरणार्चनम् इति ॥ २ ॥ तथैववा-
सुदेवाय नमः । सङ्कल्पेणाय नमः । प्रद्युम्नाय नमः । अनिरुद्धाय- नमः ॥
दद्यान्नेत्रादि संसार लक्ष्मेशो शरणागतम् । भक्त्या समर्पयेतुभ्यं त्रिविधवर-
णार्चनम् ॥ ३ ॥ प्राच्याम्-केशवाय नमः । नारायणाय नमः । माधवाय नमः ।
गोविन्दाय नमः । गङ्गा सुदनाय नमः त्रिविक्रमाय नमः । यामनाय नमः ॥
श्री धराय नमः । हृषीकेशाय नमः । पद्म नाभाय नमः । दामोदराय नमः ।
दक्षिणेनाहि संसार लक्ष्मेशो शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं

मूले त्वत्पुत्रि त्वतो ब्रह्मामयेमानुगयाः स्मृताः-॥ कुक्षोतु सागराः सर्वे सत्त्व-
द्रापा वसुन्धरा ॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदो सामर्वेदोऽथथर्वणः ॥ अङ्गेऽथ
महिताः सर्वे कलशान्तु समाधिताः ॥ कलशोदेवद्वार पूजा । ॐ गणपतये
नमः ॥ ॐ गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ चैत्रपालाय नमः ॥ ॐ नन्दिने नमः ॥
ॐ महाकालाय नमः ॥ ॐ शृङ्गवे नमः ॥ ॐ त्रिनायकाय नमः ॥ ॐ
स्कन्दाय नमः ॥ ॐ वरदाय नमः ॥ ॐ दिव्ये नमः ॥ इति मन्त्रैः
पादादीनि समर्पयेत् ॥ ततः पुनर्दशगुह्यभिः कलशसुप्तमाच्छाद्य पूजयेत् ।
इति शिष्टाः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ महेश्वराय
नमः ॥ ॐ गङ्गायै नमः ॥ ॐ यमुनायै नमः ॥ ॐ सरस्वत्यै
नमः ॥ गणेशायै नमः ॥ ॐ ज्ञानदेव्यै नमः ॥ ॐ तर्कदायै नमः ॥ सप्त
सागरैभ्यो नमः ॥ ॐ नारयणायै नमः ॥ ॐ आदिवादि
नवमहेश्वरैभ्यो नमः ॥ ॐ अक्षयवामाष्टनिर्जोविभ्यो नमः ॥ अक्षिष्वादि
नक्षत्रैभ्यो नमः ॥ विष्णुभ्यो नमः ॥ सप्तविंशतिर्यं गेभ्यो नमः ॥ मेधादि द्वादश
राशिभ्यो नमः ॥ मृत्युञ्जयाय महेश्वरीमहिताय नमः ॥ सम्पूर्ण कलशाय
नमः ॥ इति मन्त्रैः पादादीनिर्प्रेत मूर्तयेत पुष्प समर्पयेत् ॥ एवो
गणेश पूजा । ॐ गणपतये नमः ॥ विष्णवे वराय नमः । एतद् दद्यात्
नमः । मूषक उद्दनाय नमः । पुष्पयोदनाय नमः । गङ्गायनाय नमः ॥

चतुर्था वरणाचनम् ॥ ४ ॥ पूर्वोद्दि क्रमेण । मत्स्वाय नमः । कूर्माय
नमः । वराहाय नमः । नारसिंहाय नमः । वामनाय नमः । परसु
रामायनमः । श्री रामाय नमः । कुष्माण्डायनमः । ब्रह्मायनमः । कल्के
नमः अनन्ताय नमः । विश्वरूपिणे नमः दयाव्ये त्राहि संसार
लक्ष्मेशो सरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावख्यानम् ॥ ५ ॥
पूर्वादिक्रमेण—अनन्तायनमः । दक्षिणस्या ब्रह्मणेनमः । पश्चिमायां वायवे
नमः । उत्तरस्यां मीशानाय नमः । आग्नेयां वारुण्ये नमः । नैऋत्यां
गायत्र्ये नमः ॥ वायव्यांभारत्ये नमः । ऐशान्यां गिरिजायै नमः ।
ध्रुवराक्षसाय नमः । वामे सुपुण्याय नमः । दयाव्ये । त्राहि संसार
लक्ष्मेशो सरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमा वरणा-
चनम् ॥ ६ ॥ पूर्वोद्दि क्रमेण—इन्द्राय नमः । अमन्ये नमः । यमय नमः । तिष्ठत्ये-
नमः । वरुणाय नमः । सोमाय नमः । ईशानाय नमः । दयाव्ये । त्राहि
संसार लक्ष्मेशो सरणागतम् ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमा वरणा-
चनम् ॥ ७ ॥ आग्नेयां शेषाय नमः । नैऋत्याविष्णवे नमः । वाय-यां
विषये नमः । ऐशान्याप्रजापतये नमः । दयाव्ये ! त्राहिसंसार लक्ष्मेशो
सरणागतम् ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमा वरणाचनम् ॥ ८ ॥ अग्नेय्या

शुद्धस्वाय नमः । सिद्धि विनायकाय नमः । पार्वती नन्दाय नमः ।
मनोरथ दायिने नमः ॥ इति मन्त्रैः रक्त सूत्रं रक्तपुष्पं च समर्पयेत् ।
ततो गोधाम पूजा ॐ नन्दायै नमः । सुभद्रायै नमः । सुमन्तेनमः ।
सुरोलाय नमः । सुभगायै नमः । पञ्चगोमाथ्यो नमः ॥ इति मन्त्रैः कपिल-
सूत्रं कपिल पुष्पं च समर्पयेत् ॥ ततः कौमारीपूजा ॥ ॐ ब्रह्मण्यै
नमः ॥ माहेश्वर्यै नमः ॥ कौमार्यै नमः ॥ वैष्णव्यै नमः ॥ वाराह्यै नमः ॥
इन्द्रायै नमः ॥ आमुण्डायै नमः ॥ महालक्ष्म्यै नमः ॥ शक्ति हस्तायै
नमः ॥ मरूता सनायै नमः ॥ रक्त कौचनार्यै नमः ॥ पराशक्त्यै नमः ॥
इमां मूर्त्यै नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनि रक्त सूत्रं रक्त पुष्पञ्च
समर्पयेत् ॥ ततोमोहिनी पूजा ॥ ॐ सगं जनमोहिन्यै नमः ॥ जगन्मोहि-
न्यै नमः सगं मोहिन्यै नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनि पीत सूत्रं पीत पुष्पञ्च
समर्पयेत् ॥ ततोऽष्टचिरञ्जीवि पूजा ॥ ॐ अलक्ष्म्यै नमः ॥ यम्यै
नमः ॥ व्यासाय नमः ॥ हनुमन्त्यै नमः ॥ विभीषणाय नमः ॥ कृपा-
धायिण्यै नमः ॥ परशुरामाय नमः ॥ भार्गवदेवाय नमः ॥ उमापतये नमः ॥
इति मन्त्रैः पाद्यादीनि रक्त सूत्रं रक्त पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततः पद्म-
पति पूजा ॥ जगद्गर्भपिपासनेन पद्म पति निर्वाय ॥ सिन्दूर मलक
त्वा पूजयेदिति शिष्टम् ॥ ॐ गङ्गापतये नमः ॥ यदुकाय नमः ॥

गणपतये नमः । नैऋत्यां सप्तमातृभ्यो नमः । वायव्यां दुर्गायै नमः ।
 ऐशान्यां क्षेत्राधिपतये नमः । दयाल्ये ! त्राहिसंसारलक्ष्मणेशो सरणागतम् ।
 भक्त्या समर्पये तुभ्यं नमः । वरप्रार्चनम् ॥ ६ ॥ मध्ये ब्रह्मणे ॥—
 भारद्वाज्य नमः । शोणय नमः । सर्वव्यापिने नमः । ईश्वराय नमः ।
 विश्वरूपाय नमः । महाकाशाय नमः । सृष्टि कत्रे नमः । कृष्णाय
 नमः । हरये नमः । शिवाय नमः । स्थिति कारकाय नमः । अन्तकाय
 नमः ॥ दयाल्ये ! त्राहि संसारलक्ष्मणेशो सरणागतम् । भक्त्या समर्पये
 तुभ्यं दशमा वरप्रार्चनम् ॥ १० ॥ शीरसे नमः । वैकुण्ठाय नमः ।
 महारजाय नमः । पुरुषोत्तमाय नमः । अजाय नमः । पद्मनाभाय नमः ।
 मंगलाय नमः । द्वयोक्तेषाय नमः । वरदाय नमः । मधुसूदनाय नमः ।
 प्रद्युम्नाय नमः । अनन्ताय नमः । गोविन्दाय नमः । विजयाय नमः ।
 अपराजिताय नमः । कृष्णाय नमः । दयाल्ये ! त्राहि संसारलक्ष्मणेशो
 सरणागतम् भक्त्या समर्पये तुभ्यं एकादशा वरप्रार्चनम् ॥ ११ ॥
 अनन्ताय नमः । कपिलाय नमः । शोणाय नमः । सङ्कर्षणाय नमः ॥
 इलायुषाय नमः । तारणाय नमः । शीर पाण्डये नमः । बलभद्राय नमः ॥
 दयाल्ये ! त्राहि संसारलक्ष्मणेशो सरणागतम् । भक्त्या समर्पये

योगिनीभ्यो नमः ॥ क्षेत्रपालाय नमः ॥ पतस्त्यानाधिपतये नमः । अस्मि-
 ताङ्गाघट भैरवेभ्यो नमः ॥ युकोदर क्षेत्रपालाय नमः ॥ रक्तकेश क्षेत्र-
 पालाय नमः ॥ लम्बोदर क्षेत्रपालाय नमः ॥ सर्व क्षेत्र पालेभ्यो नमः ॥
 सर्व पिशाचेभ्यो नमः ॥ सर्व भूतेभ्यो नमः ॥ इति मन्त्रैः प्राणादीनि
 कृष्ण सूत्रं कृष्ण पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततोः सूर्यादि पूजा ॥ ॐ सूर्याय
 नमः ॥ सदा शिवाय नमः ॥ गृहलक्ष्मै नमः ॥ इष्ट देवताय नमः ॥
 नागेभ्यो नमः ॥ इति मन्त्रैः प्राणादीनि पञ्चपर्यायं सूत्रं पञ्च वर्षं
 पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततो देवाग्ने सनकादि पूजा ॥—ॐ सनकादि
 ऋषिभ्यो नमः ॥ ऋषि पुत्रेभ्यो नमः ॥ दिव्याभनेभ्यो नमः ॥ इति
 मन्त्रैः प्राणादीनि श्वेत सूत्रं स्येतपुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततो देवाग्ने
 गोमयोद्भूत प्राणायामं वृद्ध प्राणायाम पूजा ॥ ॐ दिव्यरूपायै नमः ॥
 दिव्याभयरायै नमः ॥ देवमहिम्न्यै नमः ॥ सुभूषायै नमः ॥ जटिलायै
 नमः ॥ वधिरायै नमः ॥ अति वृद्धायै नमः ॥ कुम्भायै नमः ॥ अति-
 दीर्घायै नमः ॥ इति मन्त्रैः प्राणादीनि श्वेत सूत्रं श्वेत पुष्पञ्च समर्प-
 येत् ॥ पुनस्तत्रैव नवरात्र पूजा—ॐ नवरात्रायै नमः ॥ मातृपुत्रजाय
 नमः । मुञ्जनायिकाय नमः ॥ पुत्रप्राप्ताय नमः ॥ सुमन्त्रायै नमः ॥ प्रियं
 पद्माय नमः ॥ इति मन्त्रैः प्राणादीनि श्वेत पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततः

तुभ्य द्वादशा वरणाञ्जनम् ॥ १२ ॥ त्र्योऽग्नि शायिने नमः । अच्युताय
नमः । भूयःपराय नमः । लोकनाथाय नमः । फणमणि विभूषणाय-
नमः । सहस्रमूर्ध्ने नमः । सहस्राक्षिणे नमः ॥ दयाल्ये ! त्रपि
संसारान् । लक्ष्मेशो सरणा गतम् । भक्त्या समर्पये
तुभ्यं त्रयोदशा वरणाञ्जनम् ॥ ३ ॥ केशवादि चतुर्विंति
नामभिः ॥ केशवाय नमः केशिदायनमः । हरये नमः ।
कामदेवाय नमः । कामपालाय नमः । काम्याय नमः । कान्ताय नमः ।
कृतागमाय नमः । अनिर्देश्याय नमः । वपुषे नमः । विष्णु वीगाय
नमः । अनन्ताय नमः । धनञ्जयाय नमः । ब्रह्म व्याय नमः । ब्रह्म
कुट्ट ब्रह्माय नमः । ब्रह्म २ विवर्धनाय नमः । ब्रह्म विदु ब्राह्मणाय
नमः । ब्रह्मो ब्रह्मज्ञाय नमः । ब्राह्मण प्रियाय नमः । महा-कर्मो महा
कर्माय नमः । महा तेजाय नमः । महोद्भाय नमः । महा क्रतु
महायज्ञाय नमः । महा यज्ञो महा हविरे नमः ॥ २४ ॥ दयाल्ये !
ब्राह्मि सत्सत् सप्तान्मांसखा गतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्दशा
वरणाञ्जनम् ॥ इति मन्त्र मुखाय जलं त्यक्त्वा पुष्पं देवी परि
न्यमेत् ॥ अथ पूजा ॥—कृष्णाय नमः । पलास पत्रं समर्पयामि ॥
विष्णवे नमः श्रीन्दुम्बर पत्रं समर्पयामि ॥ हरये नमः आस्वस्थपत्रं
समर्पयामि ॥ राम्यवे नमः भृङ्गरात्र पत्रं समर्पयामि ॥ ब्रह्मणे ।

पापिनी पूजा कृत द्वांजा रोहणां पापिनी कुण्डं निगमनां पूजयामिति
शिष्टाचारः ॥ नरराजपत्न्यै नमः ॥ पापमूर्त्यै नमः ॥ कुशीलायै
नमः ॥ कुम्भा पिण्डायै नमः ॥ धर्मद्वैपिय्यै नमः । इति मन्त्रीः पाषादीनि
कृष्ण मूर्ध्नां कृष्ण पुष्पाञ्जलं समर्पयन् ॥ ततो देवाग्ने अक्षरः पूजा ॥
ॐ ऊर्ध्वे नमः ॥ मेतदायै नमः ॥ रम्भायै नमः ॥ चन्द्र रेखायै
नमः ॥ त्रिकोत्तमायै नमः ॥ वपुष्मत्यै नमः ॥ कान्ति मत्यै नमः ॥
सीतारत्यै नमः । उत्पन्नवारत्यै नमः ॥ पुतायै नमः ॥ चन्द्रवर्णायै
नमः ॥ धर्मवत्यै नमः ॥ बहोरात्र्यै नमः ॥ इति मन्त्रीः पापदिनि
पीत मूर्ध्नां पीत पुष्पञ्जलं समर्पयन् ॥ ततोभार वादपत्रा ॥—ॐ धर्म
शोभाय नमः । धर्म कर्मणे नमः ॥ धर्म पत्रये नमः ॥ धर्म रत्नाय-
नमः ॥ इति रथेत् मूर्ध्नां रथेत् पुष्पञ्जलं समर्पयन् ॥ ततः नाग नदी-
पूजा ॥ सप्त समुद्रेभ्यो नमः ॥ अष्ट नाग राजेभ्यो नमः ॥ नदी-
भ्यो नमः ॥ इति मन्त्रीः इति मूर्ध्नां इतिपुष्पञ्जलं समर्पयन् ॥ ततः
चित्रादि पूजा ॥—ॐ अक्षरराग्ये नमः ॥ जनयेनमः । व्यासाय
नमः ॥ हनुमन्ते नमः ॥ विभीषणाय नमः ॥ कृपा चापराय नमः ॥

नमः । जटा धार पत्रं समर्पयामि ॥ भास्वरवतनमः अशोकपत्रं
समर्पयामि ॥ शैषाय नमः कपिलपत्रं समर्पयामि ॥ सर्वव्यापिने
नमः वट पत्रं समर्पयामि ॥ ईश्वराय नमः आम्रपत्रं समर्पयामि ॥
विश्वरूपिणे नमः कदली पत्रं समर्पयामि ॥ महाकालाय नमः अपामार्ग
पत्रं समर्पयामि ॥ सृष्टि कर्त्रे नमः कर्वीर पत्रं समर्पयामि ॥ स्थिति
कर्त्रे नमः पुत्रागपत्रं समर्पयामि ॥ अन्तर्काय नमः नागवल्ली पत्रं
समर्पयामि ॥ अवपुष्प पूजा—अनन्ताय नमः पद्म पुष्पं समर्पयामि ।
विष्णवे नमः ज्ञाति पुष्पं समर्पयामि ॥ अक्षयाय नमः कद्धार पुष्पं
समर्पयामि । सहस्रजिते नमः 'केतकी पुष्पं समर्पयामि ॥ अनन्ते
रूपिणेनमः वज्रपुष्पं समर्पयामि । इष्टाय नमः शतपुष्पं समर्पयामि विशिष्टाय
नमः पुत्रागपुष्पं समर्पयामि । शिष्टेष्टाय नमः करवीरपुष्पं समर्पयामि । शिव-
रिडने नमः धत्तूरपुष्पं समर्पयामि ॥ विश्ववाहवेनमः मल्लिका पुष्पं समर्प-
यामि । मही धराय नमः मालती पुष्पं समर्पयामि । उच्युताय

परशुरामाय नमः ॥ मार्कण्डेयाय नमः ॥ प्रजापतये नमः ॥ इति मन्त्रैः
स्वेन सूत्रं स्वेत पुष्पं समर्पयेत् ॥ ॐ अरवत्याम द्यारिचरजीविनः सु
प्रतिष्ठिताः सन्तो वरदाः भक्तु इति मन्त्रेण लावाः क्षिपेत् ॥ ततः सिन्दूर
भाण्डे पूजा ॥—आर्चयेन्नमः ॥ गौर्यै नमः ॥ सौभार्य वृद्धि कर्त्र्यै
नमः ॥ इति रक्त सूत्रं रक्त पुष्पं समर्पयेत् ॥ शिवपूजा ॥
महेश्वराय नमः ॥ ईश्वराय नमः ॥ सदा शिवाय नमः ॥
इति स्वेत सूत्रं स्वेत पुष्पं समर्पयेत् ॥ अथ मूल देवता पूजा ॥
ध्यानम् ।—मन्दार माला कृतिता लकार्ये कपाल माला हृत शेरराय ॥
दिव्याम्बरराये च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ॐ
सहस्र शीर्षत्या वाहनम् । पुरुष पयस्वता सनम् ॥ ॐ आचार
शक्तये अमृतदाय नमः ॥ रुद्राय नमः ॥ नारायणाय नमः ॥
पद्माय नमः ॥ पूर्य्यो नमः ॥ वरिष्ठायै नमः ॥ केशरिभ्यो नमः ॥
पूराय नमः । सिद्धाय नमः ॥ इति मन्त्रैः पञ्चादीनि समर्पयेत् ॥
यथायानस्येति पाठम् ॥ विषादूर्ध्वेष्टयम् ॥ ततो त्रिराष्ट्रिया चमनम् ॥
पयः पूषिभ्यो० दधि घ्राण्यो० पूषमि मित्रे नमः पुष्पातो० अथाधे रस-
मित्र्यादिभिः पञ्चामृतम् ॥ आपो अस्मादिति शुद्धे रस स्नानम् ॥
प्रकृति पुरुष सत्त्वाग्ना शक्ति शिवाभ्यामिदं मनुष्यै समर्पयामिति
मनुष्यै ॥ गुरुभ्यो इति रसनम् । तस्माद्यथाकारं कृतः संस्तु-
तिनि रक्त सूत्रं स्वेत मूलम् ॥ तस्मा दग्धा इति यमो-
धोम् ॥ देवी द्वारे नि सिन्धु देवी द्वाराय नमः । शिवाय

नमः काशीं वार पुष्पं समर्पयामि । अन्तकाय नमः कदली पुष्पं
समर्पयामि ॥ अथा अष्टोत्तर सत्त नामभिः पूजयेत् ।
अनन्ताय नमः । अच्युताय नमः । अद्भुत कर्मणे नमः ।
अदिति त्रिक्रमाय नमः । अपरा जिताय नमः । अस्त्रायाय नमः ।
अग्नि नमः । अग्नि वपुषे नमः । अहस्याय नमः । अजि पुत्राय
नमः । अनन्तकुत्राय नमः । अनाशिने नमः । अवन्तीलाय नमः ।
अहर्हाय नमः । अष्टमूर्तये नमः । अनिरुद्धाय नमः । अनिविष्टाय नमः ।
अचक्षुषलाय नमः । शब्दातिगाय नमः । अक्षर रूपाय नमः । अजित
घाय नमः । अव्यक्ताय नमः । अनुरूपाय नमः । अभये कराय नमः ।
अक्षताय नमः । अवपुषे नमः । अयोनिजाय नमः । अरविन्दाय नमः ।
अक्षत वज्रिताय नमः । अघोक्षजाय नमः । अदिति पुत्राय नमः ।
अभिकापतिपूर्व जाय नमः । अपस्मार नाशिने नमः । अव्ययाय नमः ।
अनादये नमः । अग्नेयाय नमः । अघशत्रवे नमः । अमरारिजाय नमः ।
अनाश्वराय नमः । अजाय नमः । अघोराय नमः । अनादि
निघनाय नमः । अमर प्रभवे नमः । आभाषाय नमः । अक्राय नमः ।
अनुत्तमाय नमः । अरूपाय नमः । अह्ने नमः । असोधाधि पतिभ्य नमः ।
अजाय नमः । अक्षयाय नमः । असृताय नमः । अघोर वीर्याय नमः ।
अव्यङ्गाय नमः । अविष्णाय नमः । अतिमिद्वयाय नमः । अग्नि

इति मन्त्राभ्यामदर्शं चामरं व्यञ्जनानि ॥ तं यज्ञं मिति
चन्दनम् ॥ अक्षतं मीत्य क्षता ॥ वत्सुरूपमिति पुष्पाणि ॥
ततः पुष्पम् ॥ माहोन्वितं यथा पुष्पं पर्व वर्यैः सुगन्धिभिः ॥ विशिष्ट
मथितं माला-गृह्णाता परमेश्वरी ॥ ततो विल्वं पत्रम् ॥ पद्मान्तु
सद्वर्त्मस्य सन्ध्यादत्तस्य यकलम् ॥ तत्कलं लभते पत्रं दत्त्वा विल्वस्य
शोभनम् ॥ चक्षुः ॥ एक पत्रं पुष्पेष्टाय पूजयति शङ्करम् ॥ सर्वपाप
विनिर्मुक्तं शिवभोक्तं भङ्गीयते ॥ दूर्वा ॥ दूर्वाङ्कुरं यस्तु शम्भो पूजा काले-
त्रेयन्दति ॥ पाकं शतगुणं सदा प्राप्नोति मानवः ॥ कमलम् नमः
शम्भवाय इति मन्त्रेण नील-कमलम् ॥ देवो द्वारेति मन्त्रेण ज्ञाति
पुत्रम् ॥ नमः शम्भवायेति मन्त्रेण च देवन पुष्पम् ॥ क-दर्पं भस्मस
जातं पवित्रं दत्तं न शुभम् गृहीतं श्री महेशानो भक्त्या दत्तं मया शिवो ।
सद्वत्सूत्रम् ॥ वार्षाभ निमित्तं सूत्रं पवित्रं सु मनोहरम् ॥ सर्वपाप
विनाशाय शिवेशाभ्यां नमो नमः नमस्ते देव देवेश सुरासुर नमस्तु ॥
नमस्ते जगतामातृ पार्वति । वरदायिनि ॥ इति मन्त्रेणाष्ट वार सद्-
मोक्षं कुन्दं पुष्पं पर्वती सादवाय शङ्कराय नमः ॥ शम्भवे गिरिजा

तेजसे नमः । अमिते नमः । अष्टमूर्तये नमः । अनिलायनमः । अवशाय
 नमः । अणोरणीयसेनमः । अशोकाननमः । अरविन्दाज्ञायनमः । अधिष्टाय
 नमः । अमितनयनाय नमः । अरस्यवासिने नमः । अप्रपत्तायनमः । अनन्त-
 रूपायनमः । अनलायनमः । अनिमिषायनमः । अक्षरूपायनमः । अप्रमदरायनमः ।
 अप्रमितायनमः । अनन्तकायनमः । अचिन्त्यायनमः । अपरनिधयेनमः । अतिमुन्द-
 रायनमः । अमरप्रियायनमः । अष्टसिद्धिदायनमः । अरविन्दप्रियामनमः । अकि-
 न्दोद्भवाय नमः । अनयायनमः । अर्थायनमः । अक्षोभ्यायनमः । अवि-
 धत्ते नमः । अनेक मूर्तये नमः । अनेक ब्रह्माण्डपतये नमः । अमन्त
 शयनाय नमः । अमराविपतये नमः । अनाधाराय नमः । अनन्त
 तान्त्रे नमः । अनन्तश्रिये नमः । अचराय नमः । अमात्याय नमः । आश्रम
 स्थानायनमः । आश्रमातीतायनमः । अन्नदायनमः । आत्मयोनये नमः ।
 अवनी पतये नमः । अवनीधराय नमः । अनादये नमः । आदिस्थाय
 नमः । अमृताय नमः । अष्टवर्ग प्रदाय नमः । अन्यक्ताय नमः ।
 अनन्ताय नमः । इत्यष्टोत्तर शतनाम पूजा ॥ अथ धूपम्—दशार्ज
 गुणुलोद्भूतं चन्दनागह संयुतम् ॥ सर्वेषां उत्तमं त्वं गृहाण सुर पूजि-
 तम् । यत्पुरुष मिति धूमम् ॥ दीपम्—सागं चर्वति संयुक्तं बह्विना
 योनिर्तमया । दीप । गृहाण देवेश ! त्रीलोक्यविमिरापहम् ॥ आद्यणोस्य
 मुक्तभासीत् इति दीपम् ॥ नैवेद्यं—मन्त्रं चतुर्विधं स्वादुपयो दधि
 धृतेयुष्टम् ॥ नाना व्यञ्जन शोभाह्वं नैवेद्यं प्रतिगृह्णताम् ॥ चन्द्रमा
 ममस इति नैवेद्यम् ॥ नैवेद्य मध्ये पानीयम् । उत्तरपोषणार्थं ते, दक्षि
 तीर्थं पुषाक्षितम् । गृहाण सुमुखो भूत्वा अनन्ताय नमो नमः । उत्त-

सहिताय नमः । महेश्वराय उमासहिताय नमः । ॐ महादेवाय गौरी
 सहिताय नमः । ॐ स्थाणुर विशालाक्षी सहिताय नमः ॥ ॐ शिवाय
 श्रीमुखी सहिताय नमः । पशुपतये नारायणी सहिताय नमः । उमाय
 मायवी सहिताय नमः ॐ शुभ सत्वाय श्री सहिताय नमः । ईश्वराय
 मङ्गल सहिताय नमः ॥ रुद्रायाम्बिका सहिताय नमः ॥ वृषभजाय महिषी
 सहिताय नमः ॥ ॐ चार्वत्यै नमः ॥ सर्वाण्यै नमः ॥ ॐ अन्विष्यै
 नमः ॥ सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ स्वस्थानीपरमेस्वर्यै नमः ॥ इति मन्त्रैः
 पाद्यादिति समपयेत् ॥ आद्यणो गेति धूपम् ॥ चन्द्रमा ममस इति दीपम् ।
 नाग्या अस्तीदिति नैवेद्यम् ॥ पुनराचमनं वाञ्छुनादि त्रयं निवेदयेत् ॥
 दिशस्य गर्भेति द्रव्यम् ॥ यानि ज्ञानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ॥
 तानि २ प्रक्षयन्ति प्रदक्षिणं पदे पदे ॥ इति प्रदक्षिणं । अग्निदेवेति
 नारायणम् ॥ अथ कपूरम् ॥ सूर्येन्दु तारका वङ्गि तेजः पुञ्जविराजितम् ॥

रापोपणम् ॥ मुखं प्रचालनम्—इत्थं प्रचालनम् । करोद्धर्तनं कदेवभया
 दत्तं हि भक्तिः ॥ चारुचन्द्रप्रम दिव्यं गृहाण जगदीश्वर ! ॥ इति
 करोद्धर्तनम् ॥ फलम् इदं—फलं मया देव ! स्थापितं ध्रुवस्तव ॥ तेनमेस
 फला वास्त्रिभवेऽजन्मनिजन्मनि ॥ ताम्बूलम्—पूगो फलं महादिव्यं
 नागवल्गुं दत्तं यत्तम् ॥—रूपं रैला समायुक्तं ताम्बूलमिति गृह्यताम् ॥
 ॐ हिरण्यं गर्भेति हचिणाम् ॥ यानि कानि चपापानि जन्मान्तरं कृतानि
 च ॥ तानि तानि विनश्यन्ति प्रवक्षिण्य पदे पदे ॥ नाभ्या आसोदिति
 भद्रचिणाम् ॥ नमस्कारम्—नमस्ते भगवन्भूयो नमस्ते चरणीश्वर ! ॥
 नमस्ते सर्वं देवेश ! नमस्ते मधुसूदन ! ॥ सप्तास्यासन्—इति नमस्का-
 रात् ॥ मन्त्रं पुष्पम्—नमस्ते देव देवेश ! नमस्ते गरुडध्वज ! ॥ नमस्ते
 कमला कान्त ! अनन्ताय नमो नमः ॥ यज्ञेन यज्ञमयं जं० इति मन्त्र-
 पुष्पम् । प्रार्थना—अनन्ताय नमस्तुभ्यं सहस्र शिरसे नमः नमोस्तुपद्म-
 नाभाय नागानां पतये नमः ॥ अनन्त कामदः कामा नान्तो मे
 प्रयच्छतु ॥ अनन्तो दोर रूपेण पुन पौत्रान्प्रवर्धतु ॥ इति सप्ताभ्यं
 दोरकं गृहीत्वा—अथ दोरकं बन्धनं मन्त्रः ॥—अनन्त संसार महासमुद्र
 सततं समभ्युद्वेष्टासुदेव ! ॥ अनन्त रूपे विनि योजयस्व धनन्त सूत्राय
 नमो नमस्ते ॥ वक्षीयात् ॥ जीर्णदोरं ममु देवं विसृजेद्देवं वासया ॥ इति
 विसृजेत् ॥

अथ वायनमन्त्रः ।—गृहाणेद् द्विज धेनुं वायनं दक्षिणां
 युतम् ॥ स्वप्नसादादं देवं ? मुच्छेदं कर्म बन्धनात् ॥ प्रति युक्तं

वीर्यं देवेश ! गृहाण परमेश्वरः ! ॥ अथ पुण्याकृत्यः ॥—नमोस्तुते
 वमारेवि स्वस्थानि परमेश्वरि ॥ त्रैलोक्य जननि ! नित्ये सत्त्वानां
 पाप क्षारिणि ॥ विपुलं महादेव ! भक्तवत्सल ! विरच-
 क्त ! ॥ नमस्करोमि देवेश ब्रह्माप्यथ बन्धित ! ॥ इति नमस्कारः ॥
 अन्यथा शरणं नास्ति युवां वैशरण्यं मम ॥ तस्माद्वाङ्मय भावेनस्तुतां
 परमेश्वरो ॥ विसर्जनम् ॥ आवाहनं न जानामिति ॥ पुनः सूर्योपम् ॥—
 स्वस्थानी ब्रह्मस्य सम्पूर्णं फलावाप्तये जगत्सत्त्वित्ये श्री सूर्याय इदमर्थं
 समर्पयामि नमः ॥ अथ दक्षिणा संकल्पः ॥—अथैह अनेक जन्मकृत
 पाप क्षयार्थं साम्प्रतसरिकं श्री पार्वतो (स्वस्थानी) माय ध्रुव पूजा
 साङ्गचा मित्रवर्गं भिमां दक्षिणां नात्र सत्यं श्री मूर्यं दैवतं रजतं वा
 सोम्यं यथा नाम गोमयव्यादि ॥

इति पद्म पुराणोक्तं माय युक्त पौर्णमास्यां स्वस्थानी प्रव. पूजा विधिः-
 समाप्तः ॥ ले० इमारी गायत्री देवीनां चार्पणं कृतम् ॥

द्विज श्रेष्ठ ? अनन्तफल दायक ! ॥ पञ्चरात्र फल संयुक्तं
 दक्षिणां घृतं मं युतम् ॥ वायनं द्विज वर्याय दास्यामि त्रत पूर्तये ॥
 अथ जीर्णं दोरकं दानं मन्त्रः—अनन्तः प्रवि गृह्णाति अनन्तो वै
 ददाति चः अनन्तस्तारको माम्या मनन्तायनमो नमः । इति
 दद्यात् । ततो यथा शक्तिं ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ अनेन कृत्तपूजनेन
 धी-भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताप्रियताम् न
 मम ॥ मन्त्र पुष्पं, नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।
 पुष्पाञ्जलिः शुभा देया देवता प्रीत्यै सदा ॥ इति ॥
 आर्ति—कल्याणारा वारं कलि मलपरि हारम् । कद्रु सुत रायितारं
 कर्ध्वत कङ्कारम् । धनपट लाभ शरीर कमलोद्भववितरम् । कलये-मुष्णु
 मुदारं कमलाभवारम् । विरचनिहारं नाद ? निहारम् भवपारम् ॥

देवी प्र० होम ब्रह्मम् ॥

नवा दृष्टि युतां सर्वां कामा निश्चा नवाप्नुयान् ॥ अथ प्रयोगा
 वक्ष्यते साधकाभीष्टसिद्धिदाः ॥ नव कक्ष जपेनास्य रुद्ररूपो नरो
 भवेत् । मल्लिका मालवी पुष्पैर्होमा द्वावीश तामियात् ॥ करवीर
 जपा पुष्पैर्होमा न्मोहयते जगत् । चन्द्र (कपूर) कुंकुम
 वस्तूरी होमान् कामाधि-कोभवेत् ॥ संपकैः पाटलैरिव वशमानयते
 डचिरान् । काञ्चा होमोरास्य दायी मधुनोपद्रव क्षयः ॥ निशि
 च्छाग पलैर्होमो रिपु सैन्य-विनाश कृत् । दध्यास्य दुग्धमधुभि-
 क्रमाद्यो माद माप्नुयान् ॥ आरोग्यं संपदं प्राप्तं धनशर्करा यामु-
 गम् ॥ कमलार्धन संपत्तिं द्वादिमे राजवश्य ताम् ॥ चित्रियामातु
 लिगेऽपु वैश्या नारंगजैः फलेः । शूद्राः कुष्माण्ड संभूतैर्घस्याः भु
 र्विषा दुर्लभैः ॥ पनसानां लक्ष होमा दृश्यास्तु रश्मि वतिनः ।
 ब्राह्म कर्त्ते रिष्ट सिद्धि रभाभि मंत्रिणो वशाः ॥ नारिकेलैस्तु
 संपत्तिं स्तुतेः सर्वेष्ट सिद्धयः । गुग्गुलेदुः ख नाशः स्यात् सर्वेष्ट
 शर्करागुदेः ॥ पायसै धन धान्यास्ति बन्धकैः प्राणिनो वशाः ।
 पञ्चवीरचूर्णैर्होमा लक्षमात्रा द्रव्यवशा ॥ जषणैराजका युक्तैर्होमा-
 दृष्ट विनाशनः । कपूर होमा लभते वाक् पतिस्त्रं नरो डचिरान् ॥
 करं पत्र होमेन भूतप्रेतादयो वशाः । विरुचैः स्या दनुना लक्ष्मी
 रिन्दुर्लभैः मुग्धाप्ययः ॥ घृत होमादीप्तिवाप्तिः शान्तिः स्यान्निल
 तडुलेः । कि वक्रकेन-देवीरा सर्वेष्ट साधिता मृगाम् ॥ ३२ ॥ मन्त्र
 वृष्ट त्रिके भेदा यणान्तर नियो जनान् । पद्मो म्भेन गदिता

रतो दक पान विधि ।

ॐ हूँ चूँ छूँ हूँ चूँ छूँ हूँ ॐ इति मन्त्रः ॥ दिशा न्यास माह ॥—दिशा
 न्यासमहा देवि कथया मितया नये । ॐ कारं विन्यसेद्भूदे ऊर्ध्वतः पापनाश-
 नम् ॥ १ ॥ हूँ कारं पूर्व दिग्भागे बह्वौ चूँ कारमेव च । हूँ कारं धर्मराजे
 चः चूँ कारं नेष्टते तथा ॥ परिचमे चैव हूँ कारं चूँ कारं
 वायु के तथा ॥ हूँ कारं उत्तरे चैव हूँ कारं स्त्रीशं दैवते ॥ ३ ॥
 ॐ कारं तु अथ श्चैव दिङ् न्यासं तत्र कारयेत् । दिङ् न से च
 कृते देवि कुरुष्व न्यासं विच क्षणः ॥ ४ ॥ अङ्ग न्यासं यथा कुर्या
 तथा च शृणु पात्रेति—ॐ कारं विन्यसे न्मूदिष्णं हूँ कारं नेत्रयो
 स्तथा ॥ ५ ॥ चूँ कारं वक्त्र मध्ये तु हूँ कारं कंठ देशतः । चूँ
 कारं स्कन्धयोर्देशे हूँ कारं हृदये तथा ॥ ६ ॥ चूँ कारं गुह्य
 देशे तु हूँ कारं जंघयो स्तथा । हूँ कारं सर्वसंधौ च ॐ कारं
 पादयोस्तथा ॥ ७ ॥ अथ कर न्यासः । देह न्यासे कृते देविकर
 न्यासं तु कारयेत् । वामाङ्गुष्ठे न्यसेद् भूदे ॐ कारं तु त्रि दैवतम्
 ॥ ८ ॥ हूँ कारं वह्नि बीजं च तर्जनीं तु न्यसे तथा । मध्यमायान्तु
 चूँ कारं पवित्रा यां न्यसे च हूँ ॥ ९ ॥ कनिष्ठा यां च चूँ कारं
 दृष्टां गुप्ते त्रि दैवतम् । तर्जनीया देवि हूँ कारं चूँ कारं मध्यत-
 स्तथा ॥ १० ॥ हूँ कारं च पवित्रा यां कनिष्ठायां तमे वहि ॥ इत्थं
 न्यासे कृते देवि सर्वं सिद्धि भवेत्ततः ॥ इति न्यासविधिः ॥ अथ
 प्राशन विधिः ॥—उत्पिबेद्भक्ति संयुक्तो मन्यैव हित चेतसा । दक्षिणे
 नैव हस्तेन त्रीन् वारान् च सुरे श्वरी । ईशानाभि मुक्तो भूत्वा पिबेद्
 वामेन पाणिना दक्षिणे न ततः पीत्वा पिबेन्त चूपभो यथा ॥
 भूमिमागत्य जानूभ्यां हस्त युग्म प्रसार्य च । ईषन्मार्च च चाराम्नीं
 त्रिवाक्कांठ तु कारयेत् । अर्द्धं ब्रह्मा स्मरह विष्णु र्हं रुद्रो
 महेश्वरः कर स्फोटं ततः कृत्वा वदेद् वै सायको क्षमः ॥ इति
 रेतोदक प्राशनविधिः ॥ गुं गुरुभ्यो नमः पूजयेत् ॥ ॐ भ्रम्यक
 मिति प्रार्थयेत् ॥

मथ गौतम भीतिवतः ॥ ५३ ॥ मेरा नाह-सर्वेष्ट सिद्धेरच मुख्ये
 पर्व काम राज विद्या ॥ यथा—इसकल परैल हौं इसकल परैल हौं
 सहक परैल हौं इसकल परैल हौं सहकल परैल हौं कल-
 कल परैल हौं ॥ एतत्कोपेरो इयं कृत इयंकाम राजीयम् ॥

अथाऽभिपेक विधिः ।

अश्वत्थपल्लवैः वा आग्रपल्लवैः ब्राह्मण. वरुण जल यजमान शरीरे । अभिषिञ्चन् कुट्यात् ॥ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णु महेश्वराः । यामुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणी विभुः । प्रशुम्नश्चानि रुद्रश्च भवन्तु विजयाय ते । आस्रएडलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निश्चरति स्तथा । वरुणः पवनश्चैव धनाय्यक्षस्तथा शिवः । ब्रह्मणा सहित. शेषो दिक्पाला पातु ते सरा । कीर्तिलक्ष्मीधूर्तिर्मेधा पुष्टिः खड्गा क्रियामति । बुद्धिर्लज्जा वप. शान्तिर्माया निद्रा च भावनाः । एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यस्त्वमागताः । आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः । महास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुकेतुश्चतर्पिताः देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः । ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च । देवपत्न्यो द्रुमा नागादैत्याश्चाप्सरसोगणाः । अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च । औषधानि च रत्नानि कालस्य वयश्चरचये । सरित् सागरा. शैलास्तीर्थानिजल दानदाः । एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये । यथाविधि कलायास विधानमथ कथ्यते । निवृत्तिम् जानुष्यन्तं न्यसेत्पादतलाकलात् । जायादि नाभिपर्यन्तं प्रतिष्ठा विन्यसे ततः । नाभ्यादि कण्ठपर्यन्तं ततो विद्या प्रभिन्यमेत् । कण्ठात्कलाटपर्यन्तं ततः शान्तिकला न्यसेत् । कलाटात् ब्रह्मरध्याते शक्त्या शीता ततो न्यसेत् ॥ इति अभिपेकम् ॥

अथ आशीर्वादमन्त्राः

॥

हरिः ॐ प्रविश्याऽग्रहमुदन्तरिक्षमाग्रहमन्तरिक्षादिवमारुहम् । इवो माकस्य पृष्ठात्स्वर्गयोऽङ्गि रगा गहम् ॥ १ ॥ स्वर्ग्यन्तोनापेक्षन्ऽग्राहणं ॥ रोहन्ति रोदसी । यक्ष योन्विरचतोधारऽ सोम्विर्तनिरे ॥ ३ ॥ अग्ने ष्वेहि ष्वेहि ष्वधमो देवयताञ्चतुर्देवा नामुत मर्त्यानाम् । इयत्तमाण म्युगुभिऽ सजोपाऽ स्वर्ग्यन्तु यजमानाऽ स्वस्ति ॥ ३ ॥ योधा मे । ऽभस्यवचसोपविष्ट्रमहिष्ट्रस्यभसुतस्यस्रधावऽ । पीयतिस्त्रोऽभ्यनुत्पो गृणाति व्रन्दाकष्ट्रे तान्व व्रन्देऽअग्ने ॥ ४ ॥ सरोधि । मूर्तिमधवाव सुपते व्यसुतायन् । पुनोदयस्मद्वृषा ६ सिधिरश्चकर्मणो स्वाहा । ५ । एनास्त्वा । दित्यारुद्राधसवऽ समिन्धनाम्पुनश्मन्नाणो व्रमुनीध यज्ञेऽ धूतेन सन्तमन् वर्ययस् मर्याऽ सन्तु यजमानस्य

कामा ऽ ॥ ६ ॥ यथेमान्वाच कृत्वाणी मा वदानि जनेभ्यः । महारा-
जन्त्या भ्या ॐ शुद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च । पियो देवा-
नान्दक्षिणायै दातुरिह भूयासमय-म्येकाम ऽ समृद्धयता मुप मादो
नमतु ॥ ७ ॥ स्वस्ति नऽऽ इन्द्रो बृद्धश्रया ऽ स्वस्ति न ऽ पूषा निरश्व-
वेदाऽ । स्वस्ति न स्वात्तद्व्योऽअरिष्टनेमिऽ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्हिरातु
॥ ८ ॥ शक्तं भवति शक्त्यायुर्वै पुरुषः शक्तेन्द्रियऽआयुरेवेन्द्रिय वीर्यमात्म-
न्धत्ते ॥ इत्याशीर्वादमन्त्राः ॥

ग्रंथकर्तुं वंशाष्टकम्

ग्रामे च शोणितपुर नाम ध्येये, चभूय करिषन्निज वंश दीपः ।
श्री देवि दीन स्तनय स्तदीपो, भवानि दीनो यजु वाजपेयः १ ॥
तस्य पुत्रा त्रयो भूवन्दातारामोगुणान्वितः ।

राम चन्द्रामिध त्वैकस्तृतीयोविदुषांप्रियः ॥ २ ॥

नारायणदत्त शास्त्री विद्यालय प्रवर्तकः ॥

श्रीदाताराम तनयो सम्पापा देवि दीपकः ॥ ३ ॥

पुरोहिषोस्ति श्री केदारे नेपाल देश वासिनाम् ॥

लालमोहरिया प्रसिद्धया वीविदितो दिवि देवना ॥ ४ ॥

विचक्षणो नीति गुणै विचचनाथ इवापरः ॥

कर्मकाण्डरतो धोमाञ्छ्रीमान् विनय वारिधिः ॥ ५ ॥

तेनेयं रचिता तीर्थविधान चन्द्रिका नृणाम् ॥

श्री देव्यार्चन विधौ नवरात्र विधानम् ॥ ६ ॥

ज्ञात्वायां कृत कृत्या वाजायन्ते भुवि मानवाः ॥

गत्वा तीर्थे पिण्ड दानं विधि यत्तपणादिकम् ॥ ७ ॥

गृह मेत्य प्रकर्त्तव्या देवी पूजा च मुक्तिदा ॥

पितृणा मात्मनोर्ये वा सर्वेषामुप कारिका ॥ ८ ॥

(इति नामपुर थाला ग्रामस्थो भोलावत्त निवेदकः)

ग्रन्थ समाप्ता

मन्त्रा गां पठन्ते विधान मखिलं जानन्ति यस्माद् बुधाः ।
तत्सर्वं सुविचार्य शास्त्र निचयं श्री कर्म ठानां मुदे ॥
श्रुत्वा ह्येव तमं सुरास्त्र विहित लोको प्रकार क्षमम् ।
ग्रन्थोऽयं प्रकटी कृतो निजधिया श्री विश्वनाथैर्महान् ॥ १ ॥

द्वय सदस्य नवाधिक वत्सरे त्वसित के मधु मासि अमावसी ।
कृति रियञ्च भमापि सु पूजिता, पशुपतेश्च विशेषत आशिषा ॥ २ ॥

इति अखिल महर्षि प्रणीता नेक ग्रन्थ सम्मता सर्व साधारण जना

द्वादिनी तीर्थ विधान पद्धतिः समाप्ता

(लौकिके पाप नाशाय वैदिके स्वर्ग माप्नु यात् ॥) इति ॥ सम ॥

महता प्रयत्नेन इमा विरच्या विदुषा ममे-

प्रकाशते त्रुटिस्तु तत्त दर्शयि विद्मः

शोधनीयेति कामयेत ग्रन्थकारः ॥

श्रीकेशरनाथो जयति ॥

शुभमस्तु ॥

प्रकाशक—

ग्रन्थ स० विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया

पता—

पं० विश्वनाथ नेत्रप्रसाद शर्मा लालमोहरिया

शंकरपुर पो० गुप्त काशी

गुरुबाल उधर प्रसाद

